Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका

(तृतीय खण्ड)

[लब्धिसार-क्षपणासार एवं उसकी भाषाटीका]

प्रकाशक

साहित्य प्रकाशन एवं प्रचार विभाग

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट

ए-४ बापूनगर जयपुर-३०२०१५

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती विरचित लब्धिसार-क्षपणासार
की आचार्यकल्प पण्डित प्रवर टोडरमलजीकृत भाषाटीका

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

(तृतीय खण्ड)

लब्धिसार-क्षपणासार एवं उसकी भाषा टीका

सम्पादक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.

प्रकाशक :
सत्साहित्य प्रकाशन एवं प्रचार विभाग
श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट
ए–४, बापूनगर, जयपुर–३०२०१५

प्रथम संस्करण : २२००
[२७ अप्रैल १९९०, अक्षय तृतीया]

मूल्य : पच्चीस रुपया
मुद्रक : श्री बालचन्द्र यन्त्रालय, जयपुर-१८

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Thanks & Our Request

This shastra has been donated by an Anomyous AtmaArthi from London who has paid for it to be "electronised" and made available on the internet.

Our request to you:

1) Great care has been taken to ensure this electronic version of Samyag Gnaan Chandrika Part 3 (Hindi) is a faithful copy of the paper version. However if you find any errors please inform us on rajesh@AtmaDharma.com so that we can make this beautiful work even more accurate.

2) Keep checking the version number of the on-line shastra so that if corrections have been made you can replace your copy with the corrected one.

Version History

Version Number	Date	Changes
001	28 Mar 2011	First electronic version

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रकाशकीय

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती विरचित लब्धिसार-क्षपणासार की आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत भाषाटीका, जो सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका के नाम से विख्यात है के तृतीय खण्ड का प्रकाशन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

दिगम्बराचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती करणानुयोग के महान् आचार्य थे। गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, लब्धिसार, क्षपणासार, त्रिलोकसार तथा द्रव्यसंग्रह ये महत्व-पूर्ण कृतियाँ आपकी प्रमुख देन हैं। पण्डितप्रवर टोडरमल जी ने गोम्मटसार जीवकाण्ड व कर्मकाण्ड तथा लब्धिसार व क्षपणासार की भाषाटीकाएं पृथक-पृथक बनाई थीं। चूंकि ये चारों टीकाएं परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित तथा सहायक थीं; अतः सुविधा की दृष्टि से उन्होने उक्त चारों टीकाओं को मिलाकर एक ही ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत कर दिया तथा इस ग्रंथ का नामकरण उन्होंने 'सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका' किया। इस सम्बन्ध में पण्डित टोडरमल जी स्वयं लिखते हैं—

या विधि गोम्मटसार, लब्धिसार ग्रन्थनिकी,
भिन्न-भिन्न भाषाटीका कीनी अर्थ गायकैं।
इनिकै परस्पर सहायकपननौ देख्यौ
तातैं एककर दई हम तिनकौ मिलायकै।।
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका धर्यो है याकौ नाम,
सोई होत है सफल ज्ञानानन्द उपजायकै।
कलिकाल रजनीमें अर्थ को प्रकाश करै,
यातै निजकाज कीजै इष्टभाव भायकै।।

इस ग्रंथ की पीठिका के सम्बन्ध में मोक्षमार्ग प्रकाशक की प्रस्तावना लिखते हुए डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल लिखते हैं—

"सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका विवेचनात्मक गद्यशैली में लिखी गई है। प्रारम्भ में इकहत्तर पृष्ठ की पीठिका है। आज नवीन शैली के क्षेत्र में लगभग दो-सौ बीस वर्ष पूर्व लिखी गई सम्यग्ज्ञान-चन्द्रिका की पीठिका आधुनिक भूमिका का आरम्भिक रूप है। किन्तु भूमिका का आद्यरूप होने पर भी उसमें प्रौढ़ता पाई जाती है, उसमें हलकापन कहीं भी देखने को नहीं मिलता। इसके पढ़ने से ग्रंथ का पूरा हार्द खुल जाता है एवं इस गूढ़ ग्रंथ के पढ़ने में आनेवाली पाठक की समस्त कठि-नाइयाँ दूर हो जाती हैं। हिन्दी आत्मकथा साहित्य में जो महत्व महाकवि पण्डित बनारसीदास के 'अर्द्धकथानक' को प्राप्त है, वही महत्व हिन्दी भूमिका साहित्य में सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की पीठिका का है।"

इस ट्रस्ट द्वारा गतवर्ष सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका का प्रथम भाग (गोम्मटसार जीवकाण्ड) प्रका-शित किया गया था, जिसका समाज ने बड़े आदर के साथ स्वागत किया और अल्पकाल में ही

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

इस बृहत ग्रंथ की हजारों प्रतियाँ बिक गईं। अब इसका यह तृतीय भाग (लब्धिसार) प्रकाशित किया जा रहा है।

इस ग्रंथ का प्रकाशन बड़ा ही श्रम साध्य कार्य था, अतः इसे सम्पादित करने हेतु ब्र० यशपाल जी को तैयार किया गया। उन्होंने अथक परिश्रम कर इस गुरुतर भार को वहन किया, इसके लिए यह ट्रस्ट सदैव उनका ऋणी रहेगा।

ग्रंथ का प्रकाशन इस विभाग के प्रभारी श्री अखिल बंसल ने बखूबी सम्हाला है, अतः उनका आभार मानते हुए जिन महानुभावों ने इस ग्रंथ की कीमत कम करने में आर्थिक सहयोग दिया है उनके नाम ग्रन्थ के अन्त में दिये गये हैं; उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

श्री भगवानजी कचराभाई शाह ट्रस्ट, थाणा का विशेष उल्लेख किए बिना नहीं रह सकता जिन्होंने इस ग्रन्थ की १००० प्रतियों की लागत के तीस प्रतिशत के रूप में ६६५१) रु० की सर्वाधिक राशि प्रदान की है। एतदर्थ हम उनके हार्दिक आभारी हैं।

इस ट्रस्ट के विषय में तो अधिक क्या कहूँ, ट्रस्ट की गतिविधियों से सारा समाज परिचित ही है। तीर्थक्षेत्रों का जीर्णोद्धार एवं उनका सर्वेक्षण तो इस ट्रस्ट के माध्यम से हुआ ही है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है श्री टोडरमल दि० जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जिसके माध्यम से सैकड़ों विद्वान जैन समाज को मिले हैं और निरन्तर मिल रहे हैं।

साहित्य प्रकाशन एवं प्रचार विभाग के माध्यम से भी अनुकरणीय कार्य इस ट्रस्ट द्वारा हो रहा है। आचार्य कुन्दकुन्द के पंचपरमागम समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड़ तथा पंचास्तिकाय संग्रह जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन तो इस विभाग द्वारा हुआ ही है साथ ही – मोक्षशास्त्र, मोक्षमार्ग प्रकाशक, श्रावकधर्मप्रकाश, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, ज्ञानस्वभाव-ज्ञेयस्वभाव, छहढाला, समयसार-नाटक, चिद्‌विलास, वीतराग-विज्ञान प्रवचन भाग–१, २, ३ व ४ आदि का प्रकाशन भी इस विभाग ने किया है। प्रचार कार्य को भी गति देने के लिए विद्वानों को नियुक्त किया गया है जो गांव-गांव जाकर विभिन्न माध्यमों से तत्वप्रचार में संलग्न हैं।

इस अनुपम ग्रंथ के माध्यम से आप अपना आत्म कल्याण कर भव का अभाव करें ऐसी मंगलकामना के साथ—

—नेमीचन्द पाटनी

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सम्पादकीय

करणानुयोग के महान् आचार्य श्री नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती ने ग्यारहवीं शताब्दि में गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, लब्धिसार और क्षपणासार ग्रन्थों की रचना प्राकृत [गाथाओं] में की, जिन पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने अठारहवीं शताब्दि में ढूंढारी भाषा में "सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका" नामक भाषाटीका लिखी है। त्रिलोकसार एवं सुप्रसिद्ध लघु ग्रन्थ द्रव्यसंग्रह भी आचार्य श्री नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती की ही रचनाएँ हैं।

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका का प्रकाशन इससे पूर्व मात्र एक ही बार जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था, कलकत्ता से हुआ था, जो कि बहुत वर्षों से अनुपलब्ध है। इसलिए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर ने इसका पुनर्प्रकाशन करके करणानुयोग के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शास्त्र की दीर्घकालीन सुरक्षा का उत्तम उपाय किया है। सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की महिमा के सम्बन्ध में पण्डित टोडरमलजी के समकालीन स्वाध्यायशील ब्र० पण्डित राजमल्लजी ने अपने "चर्चा संग्रह" में जो विचार व्यक्त किये हैं, वे द्रष्टव्य हैं :—

"सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की महिमा वचन अगोचर है, जो कोई जिनधर्म की महिमा और केवलज्ञान की महिमा जाणी चाहौ तो, या सिद्धान्त का अनुभव करो। घणी कहिता करि कहा।"

इस ग्रन्थ की महिमा एवं विशेषता को समझने के लिए उपरोक्त विचार ही पर्याप्त हैं, अपनी ओर से और कुछ लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

सम्पूर्ण सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका का एकसाथ एक ही खण्ड में प्रकाशन करने से इसका आकार बहुत ही बड़ा हो जाता, जिससे स्वाध्याय में असुविधा हो सकती थी; इसलिए इसका तीन भागों में प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। उसमें से प्रस्तुत संस्करण में लब्धिसार की सम्यग्ज्ञान-चन्द्रिका टीका को तृतीय भाग के रूप में प्रकाशित किया है।

इस ग्रन्थ के सम्पादन के लिए सर्वप्रथम हमने छह हस्तलिखित प्रतियों से इसका मिलान किया। मिलान करते समय हमारे सामने जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित और पं० गजाधरलाल जैन, न्यायतीर्थ एवं श्रीलाल जैन, काव्यतीर्थ द्वारा सम्पादित प्रति ही मूल आधार रही है। अन्य छह हस्तलिखित प्रतियों का विवरण इसप्रकार है :—

१. (अ) प्रति–श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरह पंथियान, जयपुर (राज०)।

काल–पण्डित टोडरमलजी की स्वहस्तलिखित विक्रम संवत् १८१० की प्रति के आधार से विक्रम संवत् १८६१ में लिखी हुई प्रति।

लिपिकार–अज्ञात (अक्षर सुन्दर व सुस्पष्ट हैं)।

२. (ब) प्रति–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भदीचन्दजी, जयपुर (राज०)।

काल–अज्ञात।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लिपिकार–अनेक लिपिकारों द्वारा लिखित एवं पण्डित टोडरमलजी द्वारा संशोधित प्रति ।

३. (क) **प्रति**–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आदर्शनगर, जयपुर (राज०) ।

काल–विक्रम संवत् १८२६, आषाढ़ सुदी तीज, गुरुवार ।

लिपिकार–गोविन्दराम ।

४. (ख) **प्रति**–श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर, फिरोजाबाद (उ०प्र०) ।

काल–विक्रम संवत् १८१८ ।

लिपिकार–अज्ञात ।

५. (ग) **प्रति**–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर संघीजी, जयपुर (राज०) ।

काल–विक्रम संवत् १९७०, माघ शुक्ला पंचमी ।

लिपिकार–श्री जमनालाल शर्मा ।

६. (घ) **प्रति**–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान भदीचन्दजी, जयपुर (राज०) ।

काल–विक्रम संवत् १९६१, पौष वदी बारस ।

लिपिकार–श्री लालचन्द महात्मा देहा, श्री सीताराम के पठनार्थ ।

इस ग्रन्थ का सम्पादन करते समय हमने जिन बातों का ध्यान रखा है, उनका उल्लेख करना उचित होगा । वे बिन्दु इसप्रकार हैं :—

(१) छह हस्तलिखित प्रतियों से मिलान करते समय जहाँ पर भी परस्पर विरुद्ध कथन आये, उनमें से जो हमें शास्त्र सम्मत प्रतीत हुआ उसे ही मूल में रखा है और अन्य प्रतियों के कथन को फुटनोट में दिया है । और जहाँ निर्णय नहीं कर पाये हैं, वहाँ छपी हुई प्रति को ही मूल में रखकर अन्य प्रतियों का कथन फुटनोट में दिया है ।

(२) पीठिका में विषयवस्तु के अनुसार सामान्य प्रकरण, गोम्मटसार (जीवकाण्ड) सम्बन्धी प्रकरण, गोम्मटसार कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रकरण, लब्धिसार-क्षपणासार सम्बन्धी प्रकरण, लब्धिसार भूमिका–ये शीर्षक हमने अपनी तरफ से दिये हैं, मूल में नहीं हैं ।

(३) सम्पूर्ण ग्रन्थ में स्वाध्याय की सुलभता के लिए विषयवस्तु के अनुसार बड़े-बड़े अनुच्छेदों (पैराग्राफों) को विभाजित करके छोटे-छोटे (पैराग्राफ) बनाये हैं । साथ ही टीका में समागत प्रश्नोत्तर अथवा शंका-समाधान भी अलग अनुच्छेद बनाकर दिये हैं ।

(४) गाथा के विषय का प्रतिपादक शीर्षकात्मक वाक्य मूल टीका में गाथा के बाद टीका के साथ दिया है, लेकिन गाथा पढ़ने से पूर्व उसका विषय ध्यान में आये–इसीलिए उस वाक्य को हमने गाथा से पहले दिया है ।

(५) मूल गाथा तो बड़े टाइप में दी है, साथ ही टीका में भी जहाँ पर संस्कृत या प्राकृत के कोई सूत्र अथवा गाथा, श्लोक आदि आये हैं, उनको भी ब्लैक टाइप में दिया है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

(६) गाथा का विषय जहाँ भी धवलादि ग्रन्थों से मिलता है, उसका उल्लेख श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, आगास से प्रकाशित पं० फूलचन्दजी द्वारा सम्पादित लब्धिसार के आधार से फुटनोट में किया है।

सर्वप्रथम मैं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामन्त्री श्री नेमीचन्दजी पाटनी का हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के सम्पादन का कार्यभार मुझे देकर ऐसे महान् ग्रन्थ के सूक्ष्मता से अध्ययन का सुअवसर प्रदान किया।

डॉ हुकमचन्द भारिल्ल का भी इस कार्य में पूरा सहयोग एवं महत्त्वपूर्ण सुझाव तथा मार्ग-दर्शन मिला है, इसलिए मैं उनका भी हार्दिक आभारी हूँ।

हस्तलिखित प्रतियों से मिलान करने का कार्य अतिशय कष्टसाध्य होता है। मैं तो हस्त-लिखित प्रति पढ़ने में पूर्ण समर्थ भी नहीं था। ऐसे कार्य में शांतस्वभावी स्वाध्यायप्रेमी साधर्मी भाई श्री सौभागमलजी बोहरा दूदूवाले, बापूनगर, जयपुर का पूर्ण सहयोग रहा है। ग्रन्थ के कुछ विशेष प्रकरण अनेक बार पुनः-पुनः देखने पड़ते थे, फिर भी आप आलस्य छोड़कर निरन्तर उत्साहित रहते थे। मुद्रण कार्य के समय भी आपने प्रत्येक पृष्ठ का शुद्धता की दृष्टि से अवलोकन किया है। एतदर्थ आपको जितना धन्यवाद दिया जाय, वह कम ही है। आशा है भविष्य में भी आपका सहयोग इसीप्रकार निरन्तर मिलता रहेगा। साथ ही श्री रूपचन्दजी गंगवाल, जयपुर का भी इस कार्य में सहयोग मिला है, अतः वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड तथा लब्धिसार-क्षपणासार के "संदृष्टि अधिकार" का प्रकाशन पृथक् ही होगा। गणित सम्बन्धी इस क्लिष्ट कार्य का भार ब्र० बिमला-बेन ने अपने ऊपर लिया तथा शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद भी अत्यन्त परिश्रम से पूर्ण करके मेरे इस कार्य में अभूतपूर्व योगदान दिया है, इसलिए मैं उनका भी हार्दिक आभारी हूँ।

हस्तलिखित प्रतियाँ जिन मन्दिरों से प्राप्त हुई हैं, उनके ट्रस्टियों का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने ये प्रतियाँ उपलब्ध कराई। इस कार्य में श्री विनयकुमार पापड़ीवाल तथा सागरमलजी बज (लल्लूजी) का भी सहयोग प्राप्त हुआ है, इसलिए वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में इस ग्रन्थ का स्वाध्याय करके सभी जन सर्वज्ञता की महिमा से परिचित होकर अपने सर्वज्ञस्वभाव का आश्रय लेवें एवं पूर्ण कल्याण करें–यही मेरी पवित्र भावना है।

ब्र० यशपाल जैन

महावीर जयन्ती
७ अप्रैल, १९९०

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विषय-सूची

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका पीठिका १–६८

मंगलाचरण, सामान्य प्रकरणं १

प्रथमानुयोग, पक्षपाती का निराकरण ५

चरणानुयोग पक्षपाती का निराकरण ६

द्रव्यानुयोग पक्षपाती का निराकरण ६

शब्दशास्त्र पक्षपाती का निराकरण ११

अर्थ पक्षपाती का निराकरण १२

काम भोगादि पक्षपाती का निराकरण १३

शास्त्राभ्यास की महिमा १५

जीवकाण्ड संबंधी प्रकरण १७-३०

कर्मकाण्ड संबंधी प्रकरण ३१-४०

अर्थसंदृष्टि प्रकरण ४६-४७

लब्धिसार, क्षपणासार संबंधी प्रकरण ४८-५५

परिकर्माष्टक संबंधी प्रकरण ५५-६८

भाषाटीकाकार का मंगलाचरण ६९

लब्धिसार भूमिका ७०–६८

पहला अधिकार–दर्शनलब्धि अधिकार ९९–१५३

प्रथमोपशम सम्यक्त्व का प्ररूपण

मंगलाचरण एवं प्रथमोपशम सम्यक्त्व विधान ९९

पांच लब्धियों के नाम तथा क्षयोपशमादि तीन लब्धियों का स्वरूप १००–१०३

प्रायोग्य लब्धि में प्रकृति बंधापसरण के ३४ स्थान एवं
१४८ प्रकृतियों के बंध, उदय, सत्वादि गर्भित वर्णन १०३–११३

करणलब्धि एवं उसमें तीन करणों का स्वरूप ११३–११४

अध:करण में चार आवश्यकों का वर्णन ११४–१२०

अपूर्वकरण का स्वरूप एवं उसके चार आवश्यकों का वर्णन १२०–१३९

अनिवृत्तिकरण के कार्य तथा उसमें २५ अल्पबहुत्व १३९–१४७

चारों गतियों में उपशम सम्यक्त्व प्राप्ति का विधान १४८–१५३

दूसरा अधिकार–क्षायिक सम्यक्त्व प्ररूपण १५४–१८६

क्षायिक सम्यक्त्व के योग्य सामग्री आदि का कथन १५४–१७२

अंत:काण्डक का विधान १७३–१८१

दर्शनमोहनीय की क्षपणा के ३३ अल्पबहुत्व के स्थान १८१–१८५

क्षायिक सम्यक्त्व का महात्म्य १८५–१८६

तीसरा अधिकार–चारित्रलब्धि १८७–२०५

चारित्रलब्धि का स्वरूप एवं भेद १८७

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

देशचारित्र का विस्तृत वर्णन १८७-१९३
देशसंयम में परिणामों की विशुद्धतारूप लब्धि के अल्पबहुत्व १९३-१९७
सकलचारित्र के प्ररूपण के अन्तर्गत प्रतिपात आदि
तीन स्थान एवं पांच क्षायोपशमिक चारित्रों का वर्णन १९८-२०५

चारित्रोपशमना अधिकार २०६-३०६

उपशम चारित्र का वर्णन २०६
आठ अधिकारों द्वारा चारित्र मोह उपशमना का विधान २०७-२१३
तीन करण का विधान एवं बंधापसरणादि का स्वरूप २१४-२६७
उपशांत कषाय से पड़ने का वर्णन २६७-२९०
उपशमश्रेणी चढ़ने वाले बारह प्रकार के जीवों की क्रिया में विशेषता २९०-३०६

क्षपणासार ३०७-४५५

भाषाटीकाकार का मंगलाचरण ३०७
चारित्रमोह क्षपणा में अधिकारों के नाम एवं अध:करण का स्वरूप ३०८-३१२
अपूर्वकरण में चार आवश्यकों का स्वरूप ३१२-३१८
अनिवृत्तिकरण का कथन ३१८-४५५
स्थितिबंधापसरण का क्रमश: वर्णन ३२०-३२६
स्थितिसत्वापसरण का वर्णन ३२६-३२८
कषाय क्षपणा प्रारम्भ ३२८-३३०
देशघातिकरण एवं अंतरकरण का स्वरूप ३३०-३३३
मोहनीय कर्म संक्रमण वर्णन ३३३-३४४
अश्वकर्ण (अपवर्तनोद्वर्तन करण, आंदोलकरण एवं अपूर्वस्पर्धक का वर्णन ३४४-३७३
कषायों में बादर और सूक्ष्म कृष्टियों का स्वरूप ३७३-३९६

कृष्टिवेदना अधिकार ३९६-४६७

प्रथम, द्वितीयादि समयों में कृष्टिवेदक का क्रम ३९६-४०४
संक्रमण द्रव्य विधान के अन्तर्गत आय-व्यय द्रव्य विभाग ४०४-४०७
अनुसमय अपवर्तन की प्रवृत्ति का क्रम ४०७-४०८
स्वस्थान-परस्थान गोपुच्छ रचना के अन्तर्गत आय-व्यय-घात द्रव्य
एवं संक्रमण द्रव्य और बंध द्रव्यादि का विधान ४०८-४५५
सूक्ष्म साम्पराय का कथन ४५५-४६७
क्षीण कषाय का कथन ४६७-४७६
सयोग केवली का वर्णन ४७६-४९७
अयोग केवली का वर्णन ४९९
संसारातीत सिद्धों का स्वरूप ५००-५०२
आचार्य नेमिचन्द्र का परिचय तथा अन्तिम मंगल ५०३

गाथा-सूची ५०४-५१३

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजीकृत

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

पीठिका

।। मंगलाचरण ।।

बंदौं ज्ञानानंदकर, नेमिचन्द गुणकंद ।
माधव वंदित विमलपद, पुण्यपयोनिधि नंद ।। १ ।।
दोष दहन गुन गहन घन, अरि करि हरि अरहंत ।
स्वानुभूति रमनी रमन, जगनायक जयवंत ।। २ ।।
सिद्ध सुद्ध साधित सहज, स्वरससुधारसधार ।
समयसार शिव सर्वगत, नमत होहु सुखकार ।। ३ ।।
जैनी वानी विविध विधि, वरनत विश्वप्रमान ।
स्यात्पद-मुद्रित अहित-हर, करहु सकल कल्यान ।। ४ ।।
मैं नमो नगन जैन जन, ज्ञान-ध्यान धन लीन ।
मैन मान बिन दान घन, एन हीन तन छीन ।। ५ ।।[1]
इहविधि मंगल करन तैं, सबविधि मंगल होत ।
होत उदंगल दूरि सब, तम ज्यौं भानु उदोत ।। ६ ।।

सामान्य प्रकरण

अथ मंगलाचरण करि श्रीमद् गोम्मटसार द्वितीय नाम पंचसंग्रह ग्रंथ, ताकी देशभाषामयी टीका करने का उद्यम करौ हौं । सो यहु ग्रंथसमुद्र तौ ऐसा है जो सातिशय बुद्धि-बल संयुक्त जीवनि करि भी जाका अवगाहन होना दुर्लभ है । अर मैं मंदबुद्धि अर्थ प्रकाशनेरूप याकी टीका करनी विचारौं हौं ।

सो यहु विचार ऐसा भया जैसैं कोऊ अपने मुख तैं जिनेंद्रदेव का सर्व गुण वर्णन किया चाहै, सो कैसैं बनै ?

इहां कोऊ कहै – नाहीं बनै है तो उद्यम काहे कौं करौ हौ ?

ताकौं कहिये है – जैसैं जिनेंद्रदेव के सर्व गुण कहने की सामर्थ्य नाहीं, तथापि भक्त पुरुष भक्ति के वश तैं अपनी बुद्धि अनुसार गुण वर्णन करै, तैसैं इस ग्रंथ का संपूर्ण अर्थ प्रकाशने की सामर्थ्य नाहीं । तथापि अनुराग के वश तैं मैं अपनी बुद्धि अनुसार (गुण)[2] अर्थ प्रकाशोंगा ।

१. यह चित्रालंकारयुक्त है ।
२. गुण शब्द घ प्रति में मिला ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि कोऊ कहै कि – अनुराग है तो अपनी बुद्धि अनुसार ग्रंथाभ्यास करो, मंदबुद्धिनि कौं टीका करने का अधिकारी होना युक्त नाहीं ।

ताकौं कहिये है – जैसैं किसी शिष्यशाला विषैं बहुत बालक पढ़ैं हैं । तिनिविषैं कोऊ बालक विशेष ज्ञान रहित है, तथापि अन्य बालकनि तैं अधिक पढ्या है, सो आपतैं थोरे पढ़ने वाले बालकनि कौं अपने समान ज्ञान होने के अर्थि किछू लिखि देना आदि कार्य का अधिकारी हो है । तैसैं मेरे विशेष ज्ञान नाहीं, तथापि काल दोष तैं मोतैं भी मंदबुद्धि हैं, अर होंहिंगे । तिनिकैं मेरे समान इस ग्रंथ का ज्ञान होने के अर्थि टीका करने का अधिकारी भया हौं ।

बहुरि कोऊ कहै कि – यहु कार्य करना तो विचार्या, परन्तु जैसैं छोटा मनुष्य बड़ा कार्य करना विचारै, तहां उस कार्य विषैं चूक होई ही, तहां वह हास्य कौं पावै है । तैसैं तुम भी मंदबुद्धि होय, इस ग्रंथ की टीका करनी विचारौ हौं सो चूक होइगी, तहां हास्य कौं पावोगे ।

ताकौं कहिये है – यहु तौ सत्य है कि मैं मंदबुद्धि होइ ऐसे महान ग्रंथ की टीका करनी विचारौ हौं, सो चूक तौ होइ, परन्तु सज्जन हास्य नाहीं करैंगे । जैसें औरनि तैं अधिक पढ़्या बालक कहीं भूलै तब बड़े ऐसा विचारैं हैं कि बालक है, भूलै ही भूलै, परंतु और बालकनि तैं भला है, ऐसैं विचारि हास्य नाहीं करै हैं । तैसै मैं इहां कहीं भूलोंगा तहां सज्जन पुरुष ऐसा विचारैंगे कि मंदबुद्धि था, सौ भूलै ही भूलै, परंतु केतेइक अतिमंदबुद्धीनि तैं भला है, ऐसैं विचारि हास्य न करैंगे ।

सज्जन तो हास्य न करेंगे, परन्तु दुर्जन तौ हास्य करैंगे ?

ताकौं कहिये है कि – दुष्ट तौ ऐसैं ही हैं, जिनके हृदय विषैं औरनि के निर्दोष भले गुण भी विपरीतरूप ही भासैं । सो उनका भय करि जामैं अपना हित होय ऐसे कार्य कौं कौन न करैगा ?

बहुरि कौऊ कहै कि – पूर्व ग्रंथ थे ही, तिनिका अभ्यास करने-करावने तैं ही हित हो है, मंदबुद्धिनि करि ग्रंथ की टीका करने की महंतता काहेकौं प्रगट कीजिये ?

ताकौं कहिये है कि – ग्रंथ अभ्यास करने तैं ग्रंथ की टीका रचना करने विषैं उपयोग विशेष लागै है, अर्थ भी विशेष प्रतिभासै है । बहुरि अन्य जीवनि कौं ग्रंथ अभ्यास करावने का संयोग होना दुर्लभ है । अर संयोग होइ तौ कोई ही जीव के अभ्यास होइ । अर ग्रंथ की टीका बनै तौ परंपरा अनेक जीवनि कैं अर्थ का ज्ञान होइ । तातैं अपना अर अन्य जीवनि का विशेष हित होने के अर्थि टीका करिये है, महंतता का तौ किछू प्रयोजन नाहीं ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि कोऊ कहै कि इस कार्य विषैं विशेष हित हो है सो सत्य, परंतु मंदबुद्धि तैं कहीं भूलि करि अन्यथा अर्थ लिखिए, तहां महत् पाप उपजने तैं अहित भी तो होइ ?

ताकौं कहिए है – यथार्थ सर्व पदार्थनि का ज्ञाता तौ केवली भगवान हैं। औरनि कैं ज्ञानावरण का क्षयोपशम के अनुसारी ज्ञान है, तिनिकौं कोई अर्थ अन्यथा भी प्रतिभासै, परंतु जिनदेव का ऐसा उपदेश है – कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्रनि के वचन की प्रतीति करि वा हठ करि वा क्रोध, मान, माया, लोभ करि वा हास्य, भयादिक करि जो अन्यथा श्रद्धान करै वा उपदेश देइ, सो महापापी है। अर विशेष ज्ञानवान गुरु के निमित्त बिना, वा अपने विशेष क्षयोपशम बिना कोई सूक्ष्म अर्थ अन्यथा प्रतिभासै अर यहु ऐसा जानै कि जिनदेव का उपदेश ऐसैं ही है, ऐसा जानि कोई सूक्ष्म अर्थ कौं अन्यथा श्रद्धै है वा उपदेश दे तौ याकौं महत् पाप न होइ। सोइ इस ग्रंथ विषैं भी आचार्य करि कहा है –

सम्माइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं, अजाणमाणो गुरुणियोगा ।।२७।। जीवकांड ।।

बहुरि कोऊ कहै कि – तुम विशेष ज्ञानी तैं ग्रंथ का यथार्थ सर्व अर्थ का निर्णय करि टीका करने का प्रारंभ क्यों न कीया ?

ताकौं कहिये है – काल दोष तैं केवली, श्रुतकेवली का तौ इहां अभाव ही भया। बहुरि विशेष ज्ञानी भी विरले पाइए। जो कोई है तौ दूरि क्षेत्र विषैं हैं, तिनिका संयोग दुर्लभ। अर आयु, बुद्धि, बल, पराक्रम आदि तुच्छ रहि गए। तातैं जो बन्या सो अर्थ का निर्णय कीया, अवशेष जैसैं है तैसैं प्रमाण हैं।

बहुरि कोऊ कहै कि – तुम कही सो सत्य, परंतु इस ग्रंथ विषैं जो चूक होइगी, ताके शुद्ध होने का किछू उपाय भी है ?

ताकौं कहिये है – एक उपाय यहु कीजिए है – जो विशेष ज्ञानवान पुरुषनि का प्रत्यक्ष तौ संयोग नाहीं, तातैं परोक्ष ही तिनिस्यों ऐसी बीनती करौं हौं कि मैं मंद बुद्धि हौं, विशेषज्ञान रहित हौं, अविवेकी हौं, शब्द, न्याय, गणित, धार्मिक आदि ग्रंथनि का विशेष अभ्यास मेरे नाहीं है, तातैं शक्तिहीन हौं; तथापि धर्मानुराग के वश तैं टीका करने का विचार कीया, सो या विषैं जहां-जहां चूक होइ, अन्यथा अर्थ होइ, तहां-तहां मेरे ऊपरि क्षमा करि तिस अन्यथा अर्थ कौं दूरि करि यथार्थ अर्थ लिखना। ऐसैं विनती करि जो चूक होइगी, ताके शुद्ध होने का उपाय कीया है।

बहुरि कोऊ कहै कि तुम टीका करनी विचारी सो तौ भला कीया, परंतु ऐसे महान ग्रंथनि की टीका संस्कृत ही चाहिये। भाषा विषैं याकी गंभीरता भासै नाहीं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताकौं कहिये है – इस ग्रंथ की **जीवतत्त्वप्रदीपिका** नामा संस्कृत टीका तौ पूर्वै है ही। परन्तु तहां संस्कृत, गणित, आम्नाय आदि का ज्ञान रहित जे मंदबुद्धि हैं, तिनिका प्रवेश न हो है। बहुरि इहां काल दोष तैं बुद्ध्यादिक के तुच्छ होने करि संस्कृतादि ज्ञान रहित घने जीव हैं। तिनिके इस ग्रंथ के अर्थ का ज्ञान होने के अर्थि भाषा टीका करिए है। सो जे जीव संस्कृतादि विशेषज्ञान युक्त हैं, ते मूलग्रंथ वा संस्कृत टीका तैं अर्थ धारैंगे। बहुरि जे जीव संस्कृतादि विशेष ज्ञान रहित हैं, ते इस भाषा टीका तैं अर्थ धारौ। बहुरि जे जीव संस्कृतादि ज्ञान सहित हैं, परंतु गणित आम्नायादिक के ज्ञान के अभाव तैं मूलग्रंथ वा संस्कृत टीका विषैं प्रवेश न पावै हैं, ते इस भाषा टीका तैं अर्थ कौं धारि, मूल ग्रंथ वा संस्कृत टीका विषैं प्रवेश करहु। बहुरि जो भाषा टीका तैं मूल ग्रंथ वा संस्कृत टीका विषैं अधिक अर्थ होइ, ताके जानने का अन्य उपाय बनै सो करहु।

इहां कोऊ कहै – संस्कृत ज्ञानवालों कैं भाषा अभ्यास विषैं अधिकार नाहीं।

ताकौं कहिये है – संस्कृत ज्ञानवालों कौं भाषा वांचने तैं कोई दोष तो नाहीं उपजै है, अपना प्रयोजन जैसैं सिद्ध होइ तैसैं ही करना। पूर्वै अर्धमागधी आदि भाषामय महान ग्रंथ थे। बहुरि बुद्धि की मंदता जीवनि के भई, तब संस्कृतादि भाषामय ग्रंथ बने। अब विशेष बुद्धि की मंदता जीवनि कैं भई तातैं देश भाषामय ग्रंथ करने का विचार भया। बहुरि संस्कृतादिक का अर्थ भी अब भाषाद्वार करि जीवनि कौं समझाइये है। इहां भाषाद्वार करि ही अर्थ लिख्या तो किछू दोष नाहीं है।

ऐसैं विचारि श्रीमद् **गोम्मटसार** द्वितीयनामा **पंचसंग्रह** ग्रंथ की 'जीवतत्त्व प्रदीपिका' नामा संस्कृत टीका, ताकै अनुसारि **'सम्यग्ज्ञानचंद्रिका'** नामा यहु देशभाषामयी टीका करने का निश्चय किया है। सो श्री अरहंत देव वा जिनवाणी वा निर्ग्रंथ गुरुनि के प्रसाद तैं वा मूल ग्रंथकर्ता नेमिचद्र आदि आचार्यनि के प्रसाद तैं यहु कार्य सिद्ध होहु।

अब इस शास्त्र के अभ्यास विषैं जीवनि कौं सन्मुख करिए है। हे भव्यजीव हौ ! तुम अपने हित कौं वांछौ हौ तौ तुमकौं जैसें बनै तैसें या शास्त्र का अभ्यास करना। जातैं आत्मा का हित मोक्ष है। मोक्ष बिना अन्य जो है, सो परसंयोग-जनित है, विनाशीक है, दुःखमय है। अर मोक्ष है सोई निज स्वभाव है, अविनाशी है, अनंत सुखमय है। तातैं मोक्ष पद पावने का उपाय तुमकौं करना। सो मोक्ष के उपाय सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र हैं। सो इनकी प्राप्ति जीवादिक के स्वरूप जानने ही तैं हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सो कहिए है – जीवादि तत्त्वनि का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है । सो बिना जानैं श्रद्धान का होना आकाश का फूल समान है । पहिलें जानै तब पीछें तैसें ही प्रतीति करि श्रद्धान कौं प्राप्त हो है । तातैं जीवादिक का जानना श्रद्धान होने तैं पहिलैं जो होइ सोई तिनके श्रद्धान रूप सम्यग्दर्शन का कारण जानना । बहुरि श्रद्धान भए जो जीवादिक का जानना होइ, ताही का नाम सम्यग्ज्ञान है । बहुरि श्रद्धानपूर्वक जीवादि जानैं स्वयमेव उदासीन होइ, हेय कौं त्यागै, उपादेय कौं ग्रहै, तब सम्यक् चारित्र हो है । अज्ञानपूर्वक क्रियाकांड तैं सम्यक्चारित्र होइ नाहीं । ऐसैं जीवादिक कौं जानने ही तैं सम्यग्दर्शनादि मोक्ष के उपायनि की प्राप्ति निश्चय करनी । सो इस शास्त्र के अभ्यास तैं जीवादिक का जानना नीकैं हो है । जातैं संसार है सोई जीव अर कर्म का संबंध रूप है । बहुरि विशेष जानैं इनका संबंध का जो अभाव होइ सोई मोक्ष है । सो इस शास्त्र विषैं जीव अर कर्म का ही विशेष निरूपण है । अथवा जीवादिक षड् द्रव्य, सप्त तत्त्वादिकनि का भी या विषैं नीकैं निरूपण है । तातैं इस शास्त्र का अभ्यास अवश्य करना ।

अब इहां केइ जीव इस शास्त्र का अभ्यास विषैं अरुचि होने कौं कारण विपरीत विचार प्रकट करै हैं । तिनिकौं समझाइए है । तहां जीव प्रथमानुयोग वा चरणानुयोग वा द्रव्यानुयोग का केवल पक्ष करि इस करणानुयोगरूप शास्त्र विषैं अभ्यास कौं निषेधै हैं ।

तिनिविषैं प्रथमानुयोग का पक्षपाती कहै है कि – इदानीं जीवनि की बुद्धि मंद बहुत है, तिनिकैं ऐसैं सूक्ष्म व्याख्यानरूप शास्त्र विषैं किछू समझना होइ नाहीं तातैं तीर्थंकरादिक की कथा का उपदेश दीजिए तौ नीकैं समझैं, अर समझि करि पाप तैं डरैं, धर्मानुरागरूप होइ, तातैं प्रथमानुयोग का उपदेश कार्यकारी है ।

ताकौं कहिये है – अब भी सर्व ही जीव तौ एक से न भए हैं । हीनाधिक बुद्धि देखिए है । तातैं जैसा जीव होइ, तैसा उपदेश देना । अथवा मंदबुद्धि भी सिखाए हुए अभ्यास तैं बुद्धिमान होते देखिए है । तातैं जे बुद्धिमान हैं, तिनिकौं तौ यहु ग्रंथ कार्यकारी है ही अर जे मंदबुद्धि हैं, ते विशेषबुद्धिनि तैं सामान्य-विशेष रूप गुणस्थानादिक का स्वरूप सीखि इस शास्त्र का अभ्यास विषैं प्रवर्तौ ।

इहां मंदबुद्धि कहै है कि – इस गोम्मटसार शास्त्र विषैं तौ गणित समस्या अनेक अपूर्व कथन करि बहुत कठिनता सुनिए है, हम कैसें या विषैं प्रवेश पावैं ?

तिनिकौं कहिये है – भय मति करौ, इस भाषा टीका विषैं गणित आदि का अर्थ सुगमरूप करि कह्या है , तातैं प्रवेश पावना कठिन रह्या नाहीं । बहुरि या

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

शास्त्र विषैं कथन कहीं सामान्य है, कहीं विशेष है, कहीं सुगम है, कहीं कठिन है; तहां जो सर्व अभ्यास बनै तौ नीकै ही है, अर जो न बनै तौ अपनी बुद्धि के अनुसार जैसा बनै तैसा ही अभ्यास करौ। अपने उपाय में आलस्य करना नाहीं।

बहुरि तैं कह्या – प्रथमानुयोग संबंधी कथादिक सुनैं पाप तैं डरै हैं, अर धर्मानुरागरूप हो हैं।

सो तहां तौ दोऊ कार्य शिथिलता लीए हो हैं। इहां पाप-पुण्य के कारणकार्यादिक विशेष जानने तैं ते दोऊ कार्य दृढता लिए हो हैं। तातैं याका अभ्यास करना। ऐसैं प्रथमानुयोग के पक्षपाती कौं इस शास्त्र का अभ्यास विषैं सन्मुख कीया।

अब चरणानुयोग का पक्षपाती कहै है कि – इस शास्त्र विषैं कह्या जीव-कर्म का स्वरूप, सो जैसैं है तैसें है ही, तिनिकौं जानैं कहा सिद्धि हो है? जो हिंसादिक का त्याग करि व्रत पालिए, वा उपवासादि तप करिए, वा अरहंतादिक की पूजा, नामस्मरण आदि भक्ति करिए, वा दान दीजिए, वा विषयादिक स्यों उदासीन हूजै इत्यादि शुभ कार्य करिए तो आत्महित होइ। तातैं इनका प्ररूपक चरणानुयोग का उपदेशादिक करना।

ताकौं कहिए है – हे स्थूलबुद्धि! तैं व्रतादिक शुभ कार्य कहे, ते करने योग्य ही हैं। परंतु ते सर्व सम्यक्त्व बिना असै है जैसै अंक बिना बिंदी। अर जीवादिक का स्वरूप जानैं बिना सम्यक्त्व का होना ऐसा जैसे बांझ का पुत्र। तातैं जीवादिक जानने के अर्थि इस शास्त्र का अभ्यास अवश्य करना। बहुरि तैं जैसैं व्रतादिक शुभ कार्य कहे अर तिनितैं पुण्यबंध हो है। तैसैं जीवादिक का स्वरूप जाननेरूप ज्ञानाभ्यास है, सो प्रधान शुभ कार्य है। यातैं सातिशय पुण्य का बंध हो है। बहुरि तिन व्रतादिकनि विषैं भी ज्ञानाभ्यास की ही प्रधानता है, सो कहिए है–

जो जीव प्रथम जीव समासादि जीवादिक के विशेष जानै, पीछै यथार्थ ज्ञान करि हिंसादिक कौं त्यागि व्रत धारै, सोई व्रती है। बहुरि जीवादिक के विशेष जानै बिना कथंचित् हिंसादिक का त्याग तैं आपकौं व्रती मानै, सो व्रती नाहीं। तातैं व्रत पालने विषैं ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है।

बहुरि तप दोय प्रकार है – एक बहिरंग, एक अंतरंग। तहां जाकरि शरीर का दमन होइ, सो बहिरंग तप है, अर जातैं मन का दमन होइ, सो अंतरंग तप है। इनि विषैं बहिरंग तप तैं अंतरंग तप उत्कृष्ट है। सो उपवासादिक तौ बहिरंग तप है। ज्ञानाभ्यास अंतरंग तप है। सिद्धांत विषैं भी छह प्रकार अंतरंग तपनि विषैं चौथा स्वाध्याय नाम तप कह्या है। तिसतैं

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उत्कृष्ट व्युत्सर्ग अर ध्यान ही है । तातैं तप करने विषैं भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है । बहुरि जीवादिक के विशेषरूप गुणस्थानादिकनि का स्वरूप जानैं ही अरहंतादिकनि का स्वरूप नीकैं पहिचानिए है, वा अपनी अवस्था पहिचानिए है । ऐसी पहिचानि भए जो तीव्र अंतरंग भक्ति प्रकट हो है, सोई बहुत कार्यकारी है । बहुरि जो कुलक्रमादिक तैं भक्ति हो है, सो किंचिन्मात्र ही फल की दाता है । तातैं भक्ति विषैं भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है ।

बहुरि दान चार प्रकार है – तिनिविषैं आहारदान, औषधदान, अभयदान तौ तात्कालिक क्षुधा के दुःख कौं वा रोग के दुःख कौं, वा मरणादि भय के दुःख ही कौं दूर करै है । **अर ज्ञानदान है सो अनंत भव संतान संबंधी दुःख दूर करने कौं कारण है ।** तीर्थंकर, केवली, आचार्यादिकनि कैं भी ज्ञानदान की प्रवृत्ति है । तातैं ज्ञानदान उत्कृष्ट है, सो अपनैं ज्ञानाभ्यास होइ तो अपना भला करै, अर अन्य जीवनि कौं ज्ञानदान देवै । ज्ञानाभ्यास बिना ज्ञानदान देना कैसैं होइ ? तातैं दान विषैं भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है ।

बहुरि जैसैं जन्म तैं ही केई पुरुष ठिगनि के घर गए – तहां तिन ठिगनि कौं अपने मानैं हैं । बहुरि कदाचित् कोऊ पुरुष किसी निमित्त स्यों अपने कुल का वा ठिगनि का यथार्थ ज्ञान होनैं तें ठिगनि स्यों अंतरंग विषैं उदासीन भया, तिनिकौं पर जानि संबंध छुड़ाया चाहै है । बाह्य जैसा निमित्त है तैसा प्रवर्त्तै है । बहुरि कोऊ पुरुष तिन ठिगनि कौं अपना ही जानैं है अर किसी कारण तैं कोऊ ठिग स्यों अनुरागरूप प्रवर्तैं है । कोई ठिग स्यों लड़ि करि उदासीन भया आहारादिक का त्यागी होइ है ।

तैसैं अनादि तैं सर्व जीव संसार विषैं प्राप्त हैं, तहां कर्मनि कौं अपने मानै हैं । बहुरि कोइ जीव किसी निमित्त स्यों जीव का अर कर्म का यथार्थ ज्ञान होनैं तैं कर्मनि स्यों उदासीन भया, तिनिकौं पर जानने लगा, तिनस्यों संबंध छुड़ाया चाहै है । बाह्य जैसै निमित्त है तैसैं वर्त्तै है । ऐसैं जो ज्ञानाभ्यास तैं उदासीनता होइ सोई कार्यकारी है । बहुरि कोई जीव तिन कर्मनि कौं अपने जानै है । अर किसी कारण तैं कोई शुभ कर्म स्यों अनुराग रूप प्रवर्तै है । कोई अशुभ कर्म स्यों दुःख का कारण जानि उदासीन भया विषयादिक का त्यागी हो है । ऐसें ज्ञान बिना जो उदासीनता होइ सो पुण्यफल की दाता है, मोक्ष कार्य कौं न साधे है । तातैं उदासीनता विषैं भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है । याही प्रकार अन्य भी शुभ कार्यनि विषैं ज्ञानाभ्यास ही प्रधान जानना । देखो ! महामुनीनि कैं भी ध्यान-अध्ययन दोय ही कार्य मुख्य हैं । तातैं शास्त्र अध्ययन तैं जीव-कर्म का स्वरूप जानि स्वरूप का ध्यान करना ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि इहां कोऊ तर्क करै कि – कोई जीव शास्त्र अध्ययन तौ बहुत करै है। अर विषयादिक का त्यागी न हो है, ताकैं शास्त्र अध्ययन कार्यकारी है कि नाहीं ? जो है तौ महंत पुरुष काहेकौं विषयादिक तजैं, अर नाहीं है तो ज्ञानाभ्यास का महिमा कहां रह्या ?

ताका समाधान – शास्त्राभ्यासी दोय प्रकार हैं, एक लोभार्थी, एक धर्मार्थी। तहां जो अंतरंग अनुराग बिना-ख्याति-पूजा-लाभादिक के अर्थि शास्त्राभ्यास करै, सो लोभार्थी है, सो विषयादिक का त्याग नाही करै है। अथवा ख्याति, पूजा, लाभादिक कै अर्थि विषयादिक का त्याग भी करै है, तौ भी ताका शास्त्राभ्यास कार्यकारी नाहीं।

बहुरि जो अंतरंग अनुराग तैं आत्म हित के अर्थि शास्त्राभ्यास करै है, सो धर्मार्थी है। सो प्रथम तौ जैन शास्त्र ऐसे हैं जिनका धर्मार्थी होइ अभ्यास करै, सो विषयादिक का त्याग करै ही करै। ताकै तौ ज्ञानाभ्यास कार्यकारी है ही। बहुरि कदाचित् पूर्वकर्म का उदय की प्रबलता तैं न्यायरूप विषयादिक का त्याग न बनै है तौ भी ताकैं सम्यग्दर्शन, ज्ञान के होने तैं ज्ञानाभ्यास कार्यकारी हो है। जैसै असंयत गुणस्थान विषैं विषयादिक का त्याग बिना भी मोक्षमार्गपना संभवै है।

इहां प्रश्न – जो धर्मार्थी होइ जैन शास्त्र अभ्यासै, ताकै विषयादिक का त्याग न होइ सो यहु तौ बनै नाहीं। जातैं विषयादिक के सेवन परिणामनि तैं हो है, परिणाम स्वाधीन हैं।

तहाँ समाधान – परिणाम ही दोय प्रकार है। एक बुद्धिपूर्वक, एक अबुद्धिपूर्वक। तहां अपने अभिप्राय के अनुसारि होइ सो बुद्धिपूर्वक। अर दैव – निमित्त तैं अपने अभिप्राय तैं अन्यथा होइ सो अबुद्धिपूर्वक। जैसै सामायिक करतैं धर्मात्मा का अभिप्राय ऐसा है कि मैं मेरे परिणाम शुभरूप राखों। तहां जो शुभपरिणाम ही होइ सो तौ बुद्धिपूर्वक। अर कर्मोदय तैं स्वयमेव अशुभ परिणाम होइ, सो अबुद्धिपूर्वक जानने। तैसै धर्मार्थी होइ जो जैन शास्त्र अभ्यासै है ताको अभिप्राय तौ विषयादिक का त्याग रूप वीतराग भाव का ही होइ, तहां वीतराग भाव होइ, तौ बुद्धिपूर्वक है। अर चारित्रमोह के उदय तैं सराग भाव होइ तौ अबुद्धिपूर्वक है। तातैं बिना वश जे सरागभाव हो हैं, तिनकरि ताकैं विषयादिक की प्रवृत्ति देखिये है। जातैं बाह्य प्रवृत्ति को कारण परिणाम है।

इहां तर्क – जो ऐसैं है तो हम भी विषयादिक सेवेंगे अर कहेंगे – हमारे उदयाधीन कार्य हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताकौं कहिये है – रे मूर्ख ! किछू कहने तें तौ होता नाहीं ! सिद्धि तौ अभिप्राय के अनुसारि है। तातैं जैन शास्त्र के अभ्यास तें अपना अभिप्राय कौं सम्यक्‌रूप करना। अर अंतरंग विषैं विषयादिक सेवन का अभिप्राय होतैं तौ धर्मार्थी नाम पावै नाहीं।

ऐसें चरणानुयोग के पक्षपाती कौं इस शास्त्र का अभ्यास विषैं सन्मुख कीया।

अब द्रव्यानुयोग का पक्षपाती कहै है कि – इस शास्त्र विषैं जीव के गुणस्थानादिक रूप विशेष अर कर्म के विशेष वर्णन किए, तिनकौं जानैं अनेक विकल्प तरंग उठैं, अर किछू सिद्धि नाहीं। तातैं अपने शुद्ध स्वरूप कौं अनुभवना वा अपना अर पर का भेदविज्ञान करना – इतना ही कार्यकारी है। अथवा इनके उपदेशक जे अध्यात्मशास्त्र, तिनका ही अभ्यास करना योग्य है।

ताकौं कहिये है – हे सूक्ष्माभासबुद्धि ! तैं कह्या सो सत्य, परंतु अपनी अवस्था देखनी। जो स्वरूपानुभव विषैं वा भेदविज्ञान विषैं उपयोग निरंतर रहै, तौ काहेकौं अन्य विकल्प करने। तहां ही स्वरूपानंदसुधारस का स्वादी होइ संतुष्ट होना। परन्तु नीचली अवस्था विषैं तहां निरन्तर उपयोग रहै नाहीं। उपयोग अनेक अवलंबनि कौं चाहै है। तातैं जिस काल तहां उपयोग न लागै, तब गुणस्थानादि विशेष जानने का अभ्यास करना।

बहुरि तैं कह्या कि - अध्यात्मशास्त्रनि का ही अभ्यास करना, सो युक्त ही है। परन्तु तहां भेदविज्ञान करने के अर्थि स्व-पर का सामान्यपनैं स्वरूप निरूपण है। अर विशेष ज्ञान बिना सामान्य का जानना स्पष्ट होइ नाहीं। तातैं जीव के अर कर्म के विशेष नीकै जानैं ही स्व-पर का जानना स्पष्ट हो है। तिस विशेष जानने कौं इस शास्त्र का अभ्यास करना। जातैं सामान्य शास्त्र तैं विशेष शास्त्र बलवान है। सो ही कह्या है– **"सामान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान् भवेत्।"**

इहां वह कहै है कि – अध्यात्मशास्त्रनि विषैं तौ गुणस्थानादि विशेषनिकरि रहित शुद्धस्वरूप का अनुभवना उपादेय कह्या है। इहां गुणस्थानादि सहित जीव का वर्णन है। तातैं अध्यात्मशास्त्र अर इस शास्त्र विषैं तौ विरुद्ध भासै है, सो कैसें है ?

ताकौं कहिये है नय दोय प्रकार है – एक निश्चय, एक व्यवहार। तहां निश्चयनय करि जीव का स्वरूप गुणस्थानादि विशेष रहित अभेद वस्तु मात्र ही है। अर व्यवहार-नय करि गुणस्थानादि विशेष संयुक्त अनेक प्रकार है। तहां जे जीव सर्वोत्कृष्ट, अभेद, एक स्वभाव कौं अनुभवै हैं, तिनकौं तौ तहां शुद्ध उपदेश रूप जो शुद्ध निश्चयनय सो ही कार्यकारी है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि जे स्वानुभव दशा कौं न प्राप्त भए, वा स्वानुभवदशा तैं छूटि सविकल्प दशा कौं प्राप्त भए ऐसे अनुत्कृष्ट जो अशुद्ध स्वभाव, तिहि विषैं तिष्ठते जीव, तिनकौं व्यवहारनय प्रयोजनवान है। सोई आत्मख्याति अध्यात्मशास्त्र विषैं कह्या है–

सुद्धो सुद्धादेसो, णादव्वो परमभावदरसीहिं।
ववहारदेसिदो पुण जे दु अपरमेट्ठिदा भावे ॥[१]

इस सूत्र की व्याख्या का अर्थ विचारि देखना।

बहुरि सुनि ! तेरे परिणाम स्वरूपानुभव दशा विषैं तौ प्रवर्तैं नाहीं। अर विकल्प जानि गुणस्थानादि भेदनि का विचार न करैगा तौ तू इतो भ्रष्ट ततो भ्रष्ट होय अशुभोपयोग ही (विषैं) प्रवर्त्तैगा, तहां तेरा बुरा होयगा।

बहुरि सुनि ! सामान्यपनैं तौ वेदांत आदि शास्त्राभासनि विषैं भी जीव का स्वरूप शुद्ध कहैं हैं, तहां विशेष जानैं बिना यथार्थ-अयथार्थ का निश्चय कैसैं होय ? तातैं गुणस्थानादि विशेष जानैं जीव की शुद्ध, अशुद्ध, मिश्र अवस्था का ज्ञान होइ, तब निर्णय करि यथार्थ का अंगीकार करै। **बहुरि सुनि ! जीव का गुण ज्ञान है, सो विशेष जानैं आत्मगुण प्रकट होइ, अपना श्रद्धान भी दृढ़ होय। जैसैं सम्यक्त्व है, सो केवलज्ञान भए परमावगाढ नाम पावै** है। तातैं विशेष जानना।

बहुरि वह कहै है – तुम कह्या सो सत्य, परंतु करणानुयोग तैं विशेष जानैं भी द्रव्यलिंगी मुनि अध्यात्म श्रद्धान बिना संसारी ही रहै। अर अध्यात्म अनुसारि तिर्यंचादिक कैं स्तोक श्रद्धान तैं भी सम्यक्त्व हो है। वा तुषमाष भिन्न इतना ही श्रद्धान तैं शिवभूति मुनि मुक्त भया। तातैं हमारी तौ बुद्धि तैं विशेष विकल्पनि का साधन होता नाहीं। प्रयोजनमात्र अध्यात्म अभ्यास करेंगे।

याकौं कहिये है – जो द्रव्यलिंगी जैसैं करणानुयोग तैं विशेष जानै है, तैसैं अध्यात्म-शास्त्रनि का भी ज्ञान वाकै होय, परंतु मिथ्यात्व के उदय तैं अयथार्थ साधन करै तौ शास्त्र कहा करै ? शास्त्रनि विषैं तौ परस्पर विरुद्ध है नाहीं। कैसैं ? सो कहिये है – करणानुयोगशास्त्रनि विषैं भी अर अध्यात्मशास्त्रनि विषैं भी रागादिक भाव आत्मा के कर्म निमित्त तैं उपजे कहे। द्रव्यलिंगी तिनका आप कर्त्ता हुवा प्रवर्तै है। बहुरि शरीराश्रित सर्व शुभाशुभ क्रिया पुद्गलमय कहीं। द्रव्यलिंगी अपनी जानि तिनविषैं त्यजन, ग्रहण बुद्धि करै है। बहुरि सर्व ही शुभाशुभ भाव, आस्रव बंध के कारण कहे। द्रव्यलिंगी शुभभावन को संवर, निर्जरा, मोक्ष का कारण मानै है। बहुरि

१. समयसार, गाथा १२

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

शुद्धभाव संवर, निर्जरा, मोक्ष का कारण कह्या, ताकौं द्रव्यलिंगी पहिचानै ही नाहीं। बहुरि शुद्धात्मस्वरूप मोक्ष कह्या, ताका द्रव्यलिंगी के यथार्थ ज्ञान नाहीं। ऐसैं अन्यथा साधन करै तौ शास्त्रनि का कहा दोष है ?

बहुरि तैं तिर्यंचादिक कैं सामान्य श्रद्धान तैं कार्यसिद्धि कही, सो उनकैं भी अपना क्षयोपशम अनुसारि विशेष का जानना हो है। अथवा पूर्व पर्यायनि विषैं विशेष का अभ्यास कीया था, तिस संस्कार के बल तैं हो है। बहुरि जैसैं काहूने कहीं गड्या धन पाया, सो हम भी ऐसैं ही पावैंगे, ऐसा मानि सब ही कौं व्यापारादिक का त्यजन न करना। तैसैं काहूनैं स्तोक श्रद्धान तैं ही कार्य सिद्ध किया तो हम भी ऐसैं ही कार्य सिद्धि करैंगे – ऐसैं मानि सर्व ही कौं विशेष अभ्यास का त्यजन करना योग्य नाहीं, जातैं यहु राजमार्ग नाहीं। **राजमार्ग तौ यहु ही है – नानाप्रकार विशेष जानि तत्त्वनि का निर्णय भए ही कार्यसिद्धि हो है।**

बहुरि तैं कह्या, मेरी बुद्धि तैं विकल्पसाधन होता नाहीं, सो जेता बनैं तेता ही अभ्यास कर। बहुरि तू पापकार्य विषैं तौ प्रवीण, अर इस अभ्यास विषैं कहै मेरी बुद्धि नाहीं, सो यहु तौ पापी का लक्षण है।

ऐंसै द्रव्यानुयोग का पक्षपाती कौं इस शास्त्र का अभ्यास विषैं सन्मुख कीया। अब अन्य विपरीत विचारवालों कौं समझाइए है।

तहां शब्द-शास्त्रादिक का पक्षपाती बोलै है कि – व्याकरण, न्याय, कोश, छंद, अलंकार, काव्यादिक ग्रंथनि का अभ्यास करिए तो अनेक ग्रंथनि का स्वयमेव ज्ञान होय वा पंडितपना प्रगट होय। अर इस शास्त्र के अभ्यास तैं तो एक याही का ज्ञान होय वा पंडितपना विशेष प्रकट न होय, तातैं शब्द-शास्त्रादिक का अभ्यास करना।

ताकौं कहिये है – जो तू लोक विषैं ही पंडित कहाया चाहै है तौ तू तिन ही का अभ्यास किया करि। अर जो अपना कार्य किया चाहै है तो ऐसे जैनग्रन्थनि का अभ्यास करना ही योग्य है। बहुरि जैनी तौ जीवादिक तत्त्वनि के निरूपक जे जैनग्रन्थ तिन ही का अभ्यास भए पंडित मानैंगे।

बहुरि वह कहै है कि – मैं जैनग्रंथनि का विशेष ज्ञान होने ही के अर्थि व्याकरणादिकनि का अभ्यास करौं हौं।

ताकौं कहिए है – ऐसैं है तो भलै ही है, परंतु इतना है जैसैं स्याना खितहर अपनी शक्ति अनुसारि हलादिक तैं थोड़ा बहुत खेत कौं संवारि समय विषैं बीज

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

बोवै तौ ताकौं फल की प्राप्ति होइ । **वैसैं तू भी जो अपनी शक्ति अनुसारि व्याकरणादिक का अभ्यास तैं थोरी बहुत बुद्धि कौं संवारि यावत् मनुष्य पर्याय वा इंद्रियनि की प्रबलता इत्यादिक वर्तैं हैं, तावत् समय विषैं तत्त्वज्ञान कौं कारण जे शास्त्र, तिनिका अभ्यास करेगा तौ तुझकौं सम्यक्त्वादि की प्राप्ति होयगी ।**

बहुरि जैसैं अयाना खितहर हलादिक तैं खेत कौं संवारता संवारता ही समय कौं खोवै, तौ ताकौं फलप्राप्ति होने की नाहीं, वृथा ही खेदखिन्न भया । तैसैं तू भी जो व्याकरणादिक तैं बुद्धि कौं संवारता संवारता ही समय खोवेगा तौ सम्यक्त्वादिक की प्राप्ति होने की नाहीं । वृथा ही खेदखिन्न भया । बहुरि इस काल विषैं आयु बुद्धि आदि स्तोक हैं, तातैं प्रयोजनमात्र अभ्यास करना, शास्त्रनि का तौ पार है नाहीं । बहुरि सुनि ! केई जीव व्याकरणादिक का ज्ञानबिना भी तत्त्वोपदेशरूप भाषा शास्त्रनि करि, वा उपदेश सुनने करि, वा सीखने करि तत्त्वज्ञानी होते देखिये हैं । अर केई जीव केवल व्याकरणादिक का ही अभ्यास विषैं जन्म गमावैं हैं, अर तत्त्वज्ञानी न होते देखिये हैं ।

बहुरि सुनि ! व्याकरणादिक का अभ्यास करने तैं पुण्य न उपजै है । धर्मार्थी होइ तिनका अभ्यास करै तौ किंचित् पुण्य उपजै । बहुरि तत्त्वोपदेशक शास्त्रनि का अभ्यास तैं सातिशय महत् पुण्य उपजै है । तातैं भला यहु है – असे तत्त्वोपदेशक शास्त्रानि का अभ्यास करना । ऐसैं शब्द शास्त्रादिक का पक्षपाती कौं सन्मुख किया ।

बहुरि अर्थ का पक्षपाती कहै है कि - इस शास्त्र का अभ्यास किए कहा है ? सर्व कार्य धन तैं बनै हैं, धन करि ही प्रभावना आदि धर्म निपजै हैं । धनवान के निकट अनेक पंडित आनि (आय) प्राप्त होइ । अन्य भी सर्वकार्यसिद्धि होइ । तातैं धन उपजावने का उद्यम करना ।

ताकौं कहिए है - रे पापी ! धन किछू अपना उपजाया तौ न हो है । भाग्य तैं हो है, सो ग्रंथाभ्यास आदि धर्म साधन तैं जो पुण्य निपजै, ताही का नाम भाग्य है । बहुरि धन होना है तौ शास्त्राभ्यास किए कैसैं न होगा ? अर न होना है तौ शास्त्राभ्यास न किए कैसैं होगा ? तातैं धन का होना, न होना तौ उदयाधीन है । शास्त्राभ्यास विषैं काहे कौं शिथिल हूजै । बहुरि सुनि ! धन है सो तौ विनाशीक है, भय संयुक्त है, पाप तैं निपजै है, नरकादिक का कारण है ।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अर यह शास्त्राभ्यासरूप ज्ञानधन है सो अविनाशी है, भय रहित है, धर्मरूप है, स्वर्ग मोक्ष का कारण है । सो महंत पुरुष तौ धनकादिक कौं छोड़ि शास्त्राभ्यास विषैं लगैं हैं । तू पापी शास्त्राभ्यास कौं छुड़ाय धन उपजावने की बड़ाई करै है, सो तू अनंत संसारी है ।

बहुरि तैं कह्या - प्रभावना आदिधर्म भी धन ही तैं हो हैं । सो प्रभावना आदि धर्म हैं सो किंचित् सावद्य क्रिया संयुक्त हैं । तिसतैं समस्त सावद्य रहित शास्त्राभ्यास रूप धर्म है, सो प्रधान है । ऐसैं न होइ तौ गृहस्थ अवस्था विषैं प्रभावना आदि धर्म साधते थे, तिनि कौं छांड़ि संजमी होइ शास्त्राभ्यास विषैं काहे को लागै है ? बहुरि शास्त्राभ्यास तैं प्रभावनादिक भी विशेष हो है ।

बहुरि तैं कह्या - धनवान के निकट पंडित भी आनि प्राप्त होइ । सो लोभी पंडित होंइ, अर अविवेकी धनवान होइ तहां ऐसैं हो है । अर शास्त्राभ्यासवालौं की तौ इंद्रादिक सेवा करै हैं । इहां भी बड़े बड़े महंत पुरुष दास होते देखिए हैं । तातैं शास्त्राभ्यासवालौं तैं धनवान कौं महंत मति जानै ।

बहुरि तैं कह्या – धन तैं सर्व कार्यसिद्धि हो है । सो धन तैं तौ इस लोक संबंधी किछू विषयादिक कार्य ऐसा सिद्ध होइ, जातैं बहुत काल पर्यंत नरकादि दुःख सहने होइ । अर शास्त्राभ्यास तैं ऐसा कार्य सिद्ध हो है जातैं इहलोक विषैं अर परलोक विषैं अनेक सुखनि की परंपरा पाइए । तातैं धन उपजावने का विकल्प छोड़ि शास्त्राभ्यास करना । अर जो सर्वथा ऐसैं न बनै तौ संतोष लिए धन उपजावने का साधनकरि शास्त्राभ्यास विषैं तत्पर रहना । ऐसैं अर्थ उपजावने का पक्षपाती कौं सन्मुख किया ।

बहुरि कामभोगादिक का पक्षपाती बोलै है कि - शास्त्राभ्यास करने विषैं सुख नाहीं, बड़ाई नाहीं । तातैं जिन करि इहां ही सुख उपजै ऐसे जे स्त्रीसेवना, खाना, पहिरना, इत्यादि विषय, तिनका सेवन करिए । अथवा जिन करि यहां ही बड़ाई होइ ऐसे विवाहादिक कार्य करिए ।

ताकौं कहिए है – विषयजनित जो सुख है सो दुःख ही है । जातैं विषय सुख है, सो परनिमित्त तैं हो है । पहिले, पीछैं, तत्काल आकुलता लिए है, जाके नाश होने के अनेक कारण पाइए है । आगामी नरकादि दुर्गति कौं प्राप्त करणहारा है । ऐसा है तौ भी तेरा चाह्या मिलै नाहीं, पूर्व पुण्य तैं हो है, तातैं विषम है । जैसे खाजि करि पीड़ित पुरुष अपना अंग कौं कठोर वस्तु तैं खुजावै, तैंसे इंद्रियनि करि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पीड़ित जीव, तिनकी पीड़ा सही न जाय तब किंचिन्मात्र तिस पीडा के प्रतिकार से भासै – ऐसै जे विषयसुख तिन विषैं झंपापात लेवै है, परमार्थरूप सुख है नाहीं ।

बहुरि **शास्त्राभ्यास करने तैं भया जो सम्यग्ज्ञान, ताकरि निपज्या जो आनन्द, सो सांचा सुख है । जातैं सो सुख स्वाधीन है, आकुलता रहित है, काहू करि नष्ट न हो है, मोक्ष का कारण है, विषम नाहीं ।** जैसें खाजि न पीडै, तब सहज ही सुखी होइ, तैसें तहां इंद्रिय पीड़ने कौं समर्थ न होइ, तब सहज ही, सुख कौं प्राप्त हो है । तातैं विषय सुख छोड़ि शास्त्राभ्यास करना । (जो) सर्वथा न छूटे तौ जेता बनै तेता छोड़ि, शास्त्राभ्यास विषैं तत्पर रहना ।

बहुरि तैं विवाहादिक कार्य विषैं बड़ाई होने की कही, सो केतेक दिन बड़ाई रहेगी ? जाकै अर्थि महापापारंभ करि नरकादि विषैं बहुतकाल दुःख भोगना होइगा । अथवा तुझ तैं भी तिन कार्यनि विषैं धन लगावनेवाले बहुत हैं, तातैं विशेष बड़ाई भी होने की नाहीं ।

बहुरि शास्त्राभ्यास तैं ऐसी बडाई हो है, जाकी सर्वजन महिमा करें, इंद्रादिक भी प्रशंसा करैं अर परंपरा स्वर्ग मुक्ति का कारण है । तातैं विवाहादिक कार्यनि का विकल्प छोड़ि, शास्त्राभ्यास का उद्यम राखना । सर्वथा न छूटै तो बहुत विकल्प न करना । ऐसें काम भोगादिक का पक्षपाती कौं शास्त्राभ्यास विषैं सन्मुख किया । या प्रकार अन्य जीव भी जे विपरीत विचार तैं इस ग्रंथ अभ्यास विषैं अरुचि प्रगट करैं, तिनकौं यथार्थ विचार तैं इस शास्त्र के अभ्यास विषैं सन्मुख होना योग्य है ।

इहां अन्यमती कहै है कि – तुम अपने ही शास्त्र अभ्यास करने कौं दृढ किया । हमारे मत विषैं नाना युक्ति आदि करि संयुक्त शास्त्र हैं, तिनका भी अभ्यास क्यों न कराइए ?

ताकौं कहिए है – तुमारे मत के शास्त्रनि विषैं आत्महित का उपदेश नाहीं । जातैं कहीं शृंगार का, कहीं युद्ध का, कहीं काम सेवनादि का, कहीं हिंसादि का कथन है । सो ए तौ बिना ही उपदेश सहज ही बनि रहें हैं । इनकौं तजें हित होई, ते तहां उलटे पोषे हैं, तातैं तिनतैं हित कैसे होइ ?

तहां वह कहै है – ईश्वरनै असै लीला करी है, ताकौं गावैं हैं, तिसतै भला हो है ।

तहां कहिये है – जो ईश्वर कै सहज सुख न होगा, तब संसारीवत् लीला करि सुखी भया । जो (वह) सहज सुखी होता तौ काहेकौं विषयादि सेवन वा

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

युद्धादिक करता ? जातैं मंदबुद्धि हू बिना प्रयोजन किंचिन्मात्र भी कार्य न करै। तातैं जानिए है – वह ईश्वर हम सारिखा ही है, ताका जस गाएं कहा सिद्धि है ?

बहुरि वह कहै है कि – हमारे शास्त्रनि विषै वैराग्य, त्याग, अहिंसादिक का भी तौ उपदेश है।

तहां कहिए है – सो उपदेश पूर्वापर विरोध लिए है। कही विषय पोषे हैं, कहीं निषेधे हैं। कहीं वैराग्य दिखाय, पीछै हिंसादि का करना पोष्या है। तहां वातुलवचन-वत् प्रमाण कहा ?

बहुरि वह कहै है कि वेदांत आदि शास्त्रनि विषै तो तत्त्व ही का निरूपण है।

तहां कहिए है – सो निरूपण प्रमाण करि बाधित, अयथार्थ है। ताका निराकरण जैन के न्यायशास्त्रनि विषैं किया है, सो जानना। तातैं अन्यमत के शास्त्रनि का अभ्यास न करना।

ऐसैं जीवनि कौं इस शास्त्र के अभ्यास विषै सन्मुख किया, तिनकौं कहिए है–

हे भव्य ! शास्त्राभ्यास के अनेक अंग हैं। शब्द का वा अर्थ का वांचना, या सीखना, सिखावना, उपदेश देना, विचारना, सुनना, प्रश्न करना, समाधान जानना, बार बार चरचा करना, इत्यादि अनेक अंग हैं। तहां जैसैं बनै तैसैं अभ्यास करना। जो सर्व शास्त्र का अभ्यास न बनै तौ इस शास्त्र विषैं सुगम वा दुर्गम अनेक अर्थनि का निरूपण है। तहां जिसका बनै तिसही का अभ्यास करना। परंतु अभ्यास विषै आलसी न होना।

देखो ! शास्त्राभ्यासकी महिमा, जाकौं होतैं परंपरा आत्मानुभव दशा कौं प्राप्त होइ – सो मोक्ष रूप फल निपजै है; सो तौ दूर ही तिष्ठौ। शास्त्राभ्यास तैं तत्काल ही इतने गुण हो हैं। १. क्रोधादि कषायनि की तौ मंदता हो है। २. पंचइंद्रियनि की विषयनि विषैं प्रवृत्ति रुकै है। ३. अति चंचल मन भी एकाग्र हो है। ४. हिंसादि पंच पाप न प्रवर्तैं हैं। ५. स्तोक ज्ञान होतैं भी त्रिलोक के त्रिकाल संबंधी चराचर पदार्थनि का जानना हौ है। ६. हेयोपादेय की पहिचान हो है। ७. आतमज्ञान सन्मुख हो है (ज्ञान आतमसन्मुख हो है)। ८. अधिक-अधिक ज्ञान होतैं आनंद निपजै है। ९. लोकविषैं महिमा, यश विशेष हो है।१०. सातिशय पुण्य का बंध हो है – इत्यादिक गुण शास्त्राभ्यास करतैं तत्काल ही प्रगट होई हैं।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तातैं शास्त्राभ्यास अवश्य करना। बहुरि हे भव्य ! शास्त्राभ्यास करने का समय पावना महादुर्लभ है। काहे तें ? सो कहिए हैं—

एकेंद्रियादि असंज्ञी पर्यंत जीवनिकें तौ मन ही नाहीं। अर नारकी वेदना पीड़ित, तिर्यंच विवेक रहित, देव विषयासक्त, तातैं मनुष्यनि कें अनेक सामग्री मिले शास्त्राभ्यास होइ। सो मनुष्य पर्याय का पावना ही द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव करि महादुर्लभ है।

तहां द्रव्य करि लोक विषैं मनुष्य जीव बहुत थोरे हैं, तुच्छ संख्यात मात्र ही हैं। अर अन्य जीवनि विषैं निगोदिया अनंत हैं, और जीव असंख्याते हैं।

बहुरि क्षेत्र करि मनुष्यनि का क्षेत्र बहुत स्तोक है, अढाई द्वीप मात्र ही है। अर अन्य जीवनि विषैं एकेंद्रिनि का सर्व लोक है, औरनिका केते इक राजू प्रमाण है। बहुरि काल करि मनुष्य पर्याय विषैं उत्कृष्ट रहने का काल स्तोक है, कर्मभूमि अपेक्षा पृथक्त्व कोटि पूर्व मात्र ही है। अर अन्य पर्यायनि विषैं उत्कृष्ट रहने का काल – एकेंद्रिय विषैं तो असंख्यात पुद्गल परिवर्तन मात्र, अर और विषैं संख्यातपल्य मात्र है।

बहुरि भाव करि तीव्र शुभाशुभपना करि रहित ऐसे मनुष्य पर्याय कौं कारण परिणाम होने अति दुर्लभ है। अन्य पर्याय कौं कारण अशुभरूप वा शुभरूप परिणाम होने सुलभ है। ऐसैं शास्त्राभ्यास का कारण जो पर्याप्त कर्मभूमिया मनुष्य पर्याय, ताका दुर्लभपना जानना।

तहां सुवास, उच्चकुल, पूर्णआयु, इंद्रियनि की सामर्थ्य, नीरोगपना, सुसंगति, धर्मरूप अभिप्राय, बुद्धि की प्रबलता इत्यादिक का पावना उत्तरोत्तर महादुर्लभ है। सो प्रत्यक्ष देखिए है। अर इतनी सामग्री मिले बिना ग्रंथाभ्यास बनै नाहीं। सो तुम भाग्यकरि यहु अवसर पाया है। तातैं तुमकौ हठ करि भी तुमारे हित होने के अर्थि प्रेरै हैं। जैसैं बनै तैसैं इस शास्त्र का अभ्यास करो। बहुरि अन्य जीवनि कौ जैसैं बनै तैसैं शास्त्राभ्यास करावौ। बहुरि जे जीव शास्त्राभ्यास करते होंइ, तिनकी अनुमोदना करहु। बहुरि पुस्तक लिखावना, वा पढ़ने, पढ़ावनेवालों की स्थिरता करनी, इत्यादिक शास्त्राभ्यास कौं बाह्यकारण, तिनका साधन करना। जातैं इनकरि भी परंपरा कार्यसिद्धि हो है वा महत्पुण्य उपजै है।

ऐसैं इस शास्त्र का अभ्यासादि विषैं जीवनि कौ रुचिवान किया।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

गोम्मटसार जीवकाण्ड सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि जो यहु **सम्यग्ज्ञानचंद्रिका** नामा भाषा टीका, तिहिंविषैं संस्कृत टीका तैं कहीं अर्थ प्रकट करने के अर्थि, वा कहीं प्रसंगरूप, वा कहीं अन्य ग्रंथ का अनुसारि लेइ अधिक भी कथन करियेगा। अर कहीं अर्थ स्पष्ट न प्रतिभासैगा, तहां न्यून कथन होइगा ऐसा जानना। सो इस भाषा टीका विषैं मुख्यपनैं जो-जो मुख्य व्याख्यान है, ताकौ अनुक्रमतैं संक्षेपता करि कहिए है। जातैं याके जानैं अभ्यास करने-वालौं कैं सामान्यपनै इतना तौ जानना होइ जो या विषैं ऐसा कथन है। अर क्रम जाने जिस व्याख्यान कौ जानना होइ, ताकौ तहां शीघ्र अवलोकि अभ्यास करैं, वा जिनने अभ्यास किया होइ, ते याकौं देखि अर्थ का स्मरण करैं, सो सर्व अर्थ की सूचनिका कीए तौ विस्तार होई, कथन आगैं है ही, तातैं मुख्य कथन की सूचनिका क्रम तैं करिए है।

तहाँ इस भाषा टीका विषैं सूचनिका करि कर्माष्टक आदि गरिगत का स्वरूप दिखाइ संस्कृत टीका के अनुसारि मंगलाचरणादि का स्वरूप कहि मूल गाथानि की टीका कीजिएगा। तहां इस शास्त्र विषैं दोय महा अधिकार हैं – एक जीवकांड, एक कर्मकांड। तहां जीवकांड विषैं बाईस अधिकार हैं।

तिनिविषैं **प्रथम गुणस्थानाधिकार** है। तिस विषैं गुणस्थाननि का नाम, वा सामान्य लक्षण कहि तिनिविषैं सम्यक्त्व, चारित्र अपेक्षा औदयिकादि संभवते भावनि का निरूपण करि क्रम तैं मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थाननि का वर्णन है। तहां मिथ्यादृष्टि विषैं पंच मिथ्यात्वादि का सासादन विषैं ताके काल वा स्वरूप का, मिश्र विषैं ताके स्वरूप का वा मरण न होने का, असंयत विषैं वेदकादि सम्यक्त्वनि का वा ताके स्वरूपादिक का, देश संयत विषैं ताके स्वरूप का वर्णन है। बहुरि प्रमत्त का कथन विषैं ताके स्वरूप का अर पंद्रह वा अस्सी वा साढ़े सैंतीस हजार प्रमाद भेदनि का अर तहां प्रसंग पाइ संख्या, प्रस्तार, परिवर्तन, नष्ट, समुद्दिष्ट करि वा गूढ यंत्र करि अक्षसंचार विधान का कथन है। जहां भेदनि कौ पलटि पलटि परस्पर लगाइए तहां अक्षसंचार विधान हो है। बहुरि अप्रमत्त का कथन विषैं स्वस्थान अर सातिशय दोय भेद कहि, सातिशय अप्रमत्त कैं अधःकरण हो है, ताके स्वरूप वा काल वा परिणाम वा समय-समय संबंधी परिणाम वा एक-एक समय विषैं अनुकृष्टि विधान, वा तहां संभवते च्यारि आवश्यक इत्यादिक का विशेष वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ श्रेणी व्यवहार रूप गणित का कथन है। तिसविषैं सर्वधन, उत्तरधन, मुख,

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भूमि, चय, गच्छ इत्यादि संज्ञानि का स्वरूप वा प्रमाण ल्यावने कौं करणसूत्रनि का वर्णन है। बहुरि अपूर्वकरण का कथन विषैं ताके काल, स्वरूप, परिणाम, समय-समय संबंधी परिणामादिक का कथन है। बहुरि अनिवृत्तिकरण का कथन विषैं ताके स्वरूपादिक का कथन है। बहुरि सूक्ष्मसांपराय का कथन विषैं प्रसंग पाइ कर्मप्रकृतिनि के अनुभाग अपेक्षा अविभागप्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धक, गुणहानि, नाना-गुणहानिनि का अर पूर्वस्पर्द्धक, अपूर्वस्पर्धक, बादरकृष्टि, सूक्ष्मकृष्टि का वर्णन है। इत्यादि विशेष कथन है सो जानना। बहुरि उपशांतकषाय, क्षीणकषाय का कथन विषैं तिनके दृष्टांतपूर्वक स्वरूप का, सयोगी जिन का कथन विषैं नव केवललब्धि आदिक का, अयोगी विषैं शैलेश्यपना आदिक का कथन है। ग्यारह गुणस्थाननि विषैं गुणश्रेणी निर्जरा का कथन है। तहां द्रव्य कौं अपकर्षण करि उपरितन स्थिति अर गुणश्रेणी आयाम अर उदयावली विषैं जैसे दीजिए है, ताका वा गुणश्रेणी आयाम के प्रमाण का निरूपण है। तहां प्रसंग पाइ अंतर्मुहूर्त के भेदनि का वर्णन है। बहुरि सिद्धनि का वर्णन है।

बहुरि दूसरा जीवसमास अधिकार विषैं – जीवसमास का अर्थ वा होने का विधान कहि चौदह, उगणीस, वा सत्तावन, जीवसमासनि का वर्णन है। बहुरि च्यारि प्रकारि जीवसमास कहि, तहां स्थानभेद विषैं एक आदि उगणीस पर्यंत जीवस्थाननि का, वा इन ही के पर्याप्तादि भेद करि स्थाननि का वा अठ्याणवै वा च्यारि सै छह जीवसमासनि का कथन है। बहुरि योनि भेद विषैं शंखावर्तादि तीन प्रकार योनि का, अर सम्मूर्च्छनादि जन्म भेद पूर्वक नव प्रकार योनि के स्वरूप वा स्वामित्व का अर चौरासी लक्ष योनि का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ च्यारि गतिनि विषैं सम्मूर्च्छनादि जन्म वा पुरुषादि वेद संभवै, तिनका निरूपण है। बहुरि अवगाहना भेद विषैं सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त आदि जीवनि की जघन्य, उत्कृष्ट शरीर की अवगाहना का विशेष वर्णन है। तहां एकेंद्रियादिक की उत्कृष्ट अवगाहना कहने का प्रसंग पाइ गोलक्षेत्र, संखक्षेत्र, आयत, चतुरस्रक्षेत्र का क्षेत्रफल करने का, अर अवगाहना विषैं प्रदेशनि की वृद्धि जानने के अर्थि अनंतभाग आदि चतुःस्थानपतित वृद्धि का, अर इस प्रसंग तैं दृष्टांतपूर्वक षट्स्थानपतित आदि वृद्धि-हानि का, सर्व अवगाहना भेद जानने के अर्थि मत्स्यरचना का वर्णन है। बहुरि कुल भेद विषैं एक सौ साढा निण्याणवै लाख कोडि कुलनि का वर्णन है।

बहुरि तीसरा पर्याप्त नामा अधिकार विषैं – पहलै मान का वर्णन है। तहां लौकिक-अलौकिक मान के भेद कहि। बहुरि द्रव्यमान के दोय भेदनि विषैं, संख्या

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मान विषैं संख्यात, असंख्यात, अनंत के इकईस भेदनि का वर्णन है। बहुरि संख्या के विशेष रूप चौदह धारानि का कथन है। तिनि विषैं द्विरूपवर्गधारा, द्विरूपघनधारा द्विरूपघनाघनधारानि कै स्थाननि विषैं जे पाइए हैं, तिनका विशेष वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ पणट्ठी, बादाल, एकट्ठी का प्रमाण, अर वर्गशलाका, अर्धच्छेदनि का स्वरूप, वा अविभागप्रतिच्छेद का स्वरूप, वा उक्तम् च गाथानि करि अर्धच्छेदादिक के प्रमाण होने का नियम, वा अग्निकायिक जीवनि का प्रमाण ल्यावने का विधान इत्यादिकनि का वर्णन है। बहुरि दूसरा उपमा मान के पल्य आदि आठ भेदनि का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ व्यवहारपल्य के रोमनि की संख्या ल्यावने कौं परमाणू तैं लगाय अंगुल पर्यंत अनुक्रम का, अर तीन प्रकार अंगुल का, अर जिस जिस अंगुल करि जाका प्रमाण वरिणए ताका, अर गोलगर्त के क्षेत्रफल ल्यावने का वर्णन है। अर उद्धारपल्य करि द्वीप-समुद्रनि की संख्या ल्याइए है। अद्धापल्य करि आयु आदि वर्णिए है, ताका वर्णन है। अर सागर की सार्थिक संज्ञा जानने कौं, लवण समुद्र का क्षेत्रफल कौं आदि देकर वर्णन है। अर सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगत्श्रेणी, जगत्-प्रतर, (जगत्घन) लोकनि का प्रमाण ल्यावने कौं विरलन आदि विधान का वर्णन है। बहुरि पल्यादिक की वर्गशलाका अरु अर्धच्छेदनि का प्रमाण वर्णन है। तिनिके प्रमाण जानने कौं उक्तम् च गाथा रूप करणसूत्रनि का कथन है। बहुरि पीछैं पर्याप्ति प्ररूपणा है। तहां पर्याप्त, अपर्याप्त के लक्षण का, अर छह पर्याप्तिनि के नाम का, स्वरूप का, प्रारंभ संपूर्ण होने के काल का, स्वामित्व का वर्णन है। बहुरि लब्धिअपर्याप्त का लक्षण, वा ताके निरंतर क्षुद्रभवनि के प्रमाणादिक का वर्णन है। तहां ही प्रसंग पाइ प्रमाण, फल, इच्छारूप त्रैराशिक गणित का कथन है। बहुरि सयोगी जिन कैं अपर्याप्तपना संभवने का, अर लब्धि अपर्याप्त, निर्वृति अपर्याप्त, पर्याप्त के संभवते गुणस्थाननि का वर्णन है।

बहुरि चौथा प्राणाधिकार विषैं – प्राणनि का लक्षण, अर भेद, अर कारण अर स्वामित्व का कथन है।

बहुरि पाँचमां संज्ञा अधिकार विषैं – च्यारि संज्ञानि का स्वरूप, अर भेद, अर कारण, अर स्वामित्व का वर्णन है।

बहुरि छट्ठा मार्गणा महा अधिकार विषैं – मार्गणा की निरुक्ति का, अर चौदह भेदनि का, अर सांतर मार्गणा के अंतराल का, अर प्रसंग पाइ तत्त्वार्थसूत्र टीका के अनुसारि नाना जीव, एक जीव अपेक्षा गुणस्थाननि विषैं, अर गुणस्थान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपेक्षा लिऐं मार्गणानि विषैं काल का, अर अंतर का कथन करि छट्ठा गति मार्गणा अधिकार है। तहां गति के लक्षण का, अर भेदनि का अर च्यारि भेदनि के निरुक्ति लिए लक्षणनि का, अर पाँच प्रकार तिर्यंच, च्यारि प्रकार मनुष्यनि का अर सिद्धनि का वर्णन है। बहुरि सामान्य नारकी, जुदे-जुदे सात पृथ्वीनि के नारकी, अर पाँच प्रकार तिर्यंच, च्यारि प्रकार मनुष्य, अर व्यंतर, ज्योतिषी, भवनवासी, सौधर्मादिक देव, सामान्य देवराशि इन जीवनि की संख्या का वर्णन है। तहां पर्याप्त मनुष्यनि की संख्या कहने का प्रसंग पाइ "**कटपयपुरस्थवर्णै**" इत्यादि सूत्र करि ककारादि अक्षररूप अंक वा बिंदी की संख्या का वर्णन है।

बहुरि सातमां इंद्रियमार्गणा अधिकार विषैं – इंद्रियनि का निरुक्ति लिए लक्षण का, अर-लब्धि उपयोगरूप भावेंद्रिय का, अर बाह्य अभ्यन्तर भेद लिए निर्वृत्ति-उपकरणरूप द्रव्येन्द्रिय का, अर इन्द्रियनि के स्वामी का, अर तिनके विषयभूत क्षेत्र का, अर तहां प्रसंग पाइ सूर्य के चार क्षेत्रादिक का अर इंद्रियनि के आकार का वा अवगाहना का, अर अतींद्रिय जीवनि का वर्णन है। बहुरि एकेन्द्रियादिकनि का उदाहरण रूप नाम कहि, तिनकी सामान्य संख्या का वर्णन करि, विशेषपने सामान्य एकेन्द्री, अर सूक्ष्म बादर एकेंद्री, बहुरि सामान्य त्रस, अर बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइंद्रिय, पंचेन्द्रिय इन जीवनि का प्रमाण, अर इन विषैं पर्याप्त-अपर्याप्त जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि आठमां कायमार्गणा अधिकार विषैं – काय के लक्षण का वा भेदनि का वर्णन है। बहुरि पंच स्थावरनि के नाम, अर काय, कायिक जीवरूप भेद, अर बादर, सूक्ष्मपने का लक्षणादि, अर शरीर की अवगाहना का वर्णन है।

बहुरि वनस्पती के साधारण-प्रत्येक भेदनि का, प्रत्येक के सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित भेदनि का, अर तिनकी अवगावहना का अर एक स्कंध विषैं तिनके शरीरनि के प्रमाण का, अर योनीभूत बीज विषैं जीव उपजने का, वा तहां सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित होने के काल का, अर प्रत्येक वनस्पती विषैं सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित जानने कौं तिनके लक्षण का, बहुरि साधारण वनस्पती निगोदरूप तहां जीवनि के उपजने, पर्याप्ति धरने, मरने के विधान का, अर निगोद शरीर की उत्कृष्ट स्थिति का, अर स्कंध, अंडर, पुलवी, आवास, देह, जीव इनके लक्षण प्रमाणादिक का अर नित्यनिगोदादि के स्वरूप का वर्णन है। बहुरि त्रस जीवनि का अर तिनके क्षेत्र का वर्णन है। बहुरि वनस्पतीवत् औरनि के शरीर विषैं सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठितपने का, अर स्थावर, त्रस

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जीवनि के आकार का, अर काय सहित, काय रहित जीवनि का वर्णन है। बहुरि अग्नि, पृथ्वी, अप्, वात, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित प्रत्येक-साधारण वनस्पती जीवनि की, अर तिनविषैं सूक्ष्म-बादर जीवनि की, अर तिनविषैं भी पर्याप्त-अपर्याप्त जीवनि की संख्या का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ पृथ्वी आदि जीवनि की उत्कृष्ट आयु का वर्णन है। बहुरि त्रस जीवनि की, अर तिनविषैं पर्याप्त-अपर्याप्त जीवनि की संख्या का वर्णन है। बहुरि बादर अग्निकायिक आदि की संख्या का विशेष निर्णय करने के अर्थि तिनके अर्धच्छेदादिक का, अर प्रसंग पाइ "**दिण्णछेदेणवहिद**" इत्यादिक करणसूत्र का वर्णन है।

बहुरि नवमां योगमार्गणा अधिकार विषैं – योग के सामान्य लक्षण का अर सत्य आदि च्यारि-च्यारि प्रकार मन, वचन योग का वर्णन है। तहां सत्य वचन का विशेष जानने कौं दश प्रकार सत्य का, अर अनुभय वचन का विशेष जानने कौं आमंत्रणी आदि भाषानि का, अर सत्यादिक भेद होने के कारण का, अर केवली के मन, वचन योग संभवने का अर द्रव्य मन के आकार का इत्यादि विशेष वर्णन है। बहुरि काय योग के सात भेदनि का वर्णन है। तहां औदारिकादिकनि के निरुक्ति पूर्वक लक्षण का, अर मिश्रयोग होने के विधान का, अर आहारक शरीर होने के विशेष का, अर कार्माणयोग के काल का विशेष वर्णन है। बहुरि युगपत् योगनि की प्रवृत्ति होने का विधान वर्णन है। अर योग रहित आत्मा का वर्णन है। बहुरि पंच शरीरनि विषैं कर्म-नोकर्म भेद का, अर पंच शरीरनि की वर्गणा वा समय प्रबद्ध विषैं परमाणूनि का प्रमाण वा क्रम तैं सूक्ष्मपना वा तिनकी अवगाहना का वर्णन है। बहुरि विस्रसोपचय का स्वरूप वा तिनकी परमाणुनि के प्रमाण का वर्णन है। बहुरि कर्म-नोकर्म का उत्कृष्ट संचय होने का काल वा सामग्री का वर्णन है। बहुरि औदारिक आदि पंच शरीरनि का द्रव्य तौ समय प्रबद्धमात्र कहि। तिनकी उत्कृष्ट स्थिति, अर तहाँ संभवती गुणहानि, नाना गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्तराशि, दो गुणहानि का स्वरूप प्रमाण कहि, करणसूत्रादिक तैं तहां चयादिक का प्रमाण ल्याय समय-समय संबंधी निषेकनि का प्रमाण कहि, एक समय विषैं केते परमाणू उदयरूप होइ निर्जरैं, केते सत्ता विषैं अवशेष रहैं, ताके जानने कौं अंकसंदृष्टि की अपेक्षा लिये त्रिकोण यंत्र का कथन है। बहुरि वैक्रियिकादिकनि का उत्कृष्ट संचय कौनकै कैसै होइ सो वर्णन है। बहुरि योगमार्गणा विषैं जीवनि की संख्या का वर्णन विषैं वैक्रियिक शक्ति करि संयुक्त बादर पर्याप्त अग्निकायिक, वातकायिक अर पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्यनि के प्रमाण का, अर भोगभूमियां आदि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जीवनि कै पृथक् विक्रिया, अर औरनि कै अपृथक् विक्रिया हो है, ताका कथन है। बहुरि त्रियोगी, द्वियोगी, एकयोगी जीवनि का प्रमाण कहि त्रियोगीनि विषैं आठ प्रकार मन-वचनयोगी अर काययोगी जीवनि का, अर द्वियोगीनि विषैं वचन-काययोगीनि का प्रमाण वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ सत्यमनोयोगादि वा सामान्य मन-वचन-काय योगनि के काल का वर्णन है। बहुरि काययोगीनि विषैं सात प्रकार काययोगीनि का जुदा-जुदा प्रमाण वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्माण के काल का, वा व्यंतरनि विषैं सोपक्रम, अनुपक्रम काल का वर्णन है। बहुरि यहु कथन है (जो) जीवनि की संख्या उत्कृष्टपनैं युगपत् होने की अपेक्षा कही है।

बहुरि दशवां वेदमार्गणा अधिकार विषैं – भाव-द्रव्यवेद होने के विधान का, अर तिनके लक्षण का, अर भाव-द्रव्यवेद समान वा असमान हो है ताका, अर वेदनि का कारण दिखाई ब्रह्मचर्य अंगीकार करने का अर तीनों वेदनि का निरुक्ति लिये लक्षण का, अर अवेदी जीवनि का वर्णन है। बहुरि तहां संख्या का वर्णन विषैं देव राशि कही। तहां स्त्री-पुरुषवेदीनि का, अर तिर्यंचनि विषैं द्रव्य-स्त्री आदि का प्रमाण कहि समस्त पुरुष, स्त्री, नपुंसकवेदीनि का प्रमाण वर्णन है। बहुरि सैनी पंचेन्द्री गर्भज, नपुंसकवेदी इत्यादिक ग्यारह स्थाननि विषैं जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि ग्यारहवां कषायमार्गणा अधिकार विषैं – कषाय का निरुक्ति लिये लक्षण का, वा सम्यक्त्वादिक घातने रूप दूसरे अर्थ विषैं अनन्तानुबंधी आदि का निरुक्ति लिए लक्षण का वर्णन है। बहुरि कषायनि के एक, च्यारि, सोलह, असंख्यात लोकमात्र भेद कहि क्रोधादिक की उत्कृष्टादि च्यारि प्रकार शक्तिनि का दृष्टांत वा फल की मुख्यता करि वर्णन है। बहुरि पर्याय धरने के पहलै समय कषाय होने का नियम है वा नाहीं है सो वर्णन है। बहुरि अकषाय जीवनि का वर्णन है। बहुरि क्रोधादिक के शक्ति अपेक्षा च्यार, लेश्या अपेक्षा चौदह, आयुबंध अर अबंध अपेक्षा बीस भेद हैं, तिनका अर सर्व कषायस्थाननि का प्रमाण कहि तिन भेदनि विषैं जेते-जेते स्थान संभवैं तिनका वर्णन है। बहुरि इहां जीवनि की संख्या का वर्णन विषैं नारकी, देव, मनुष्य, तिर्यंच गति विषैं जुदा-जुदा क्रोधी आदि जीवनि का प्रमाण वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ तिन गतिनि विषैं क्रोधादिक का काल वर्णन है।

बहुरि बारहवां ज्ञानमार्गणा अधिकार विषैं – ज्ञान का निरुक्ति पूर्वक लक्षण कहि, ताके पंच भेदनि का अर क्षयोपशम के स्वरूप का वर्णन है। बहुरि तीन मिथ्या ज्ञाननि का, अर मिश्र ज्ञाननि का अर तीन कुज्ञाननि के परिणमन के उदाहरण का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वर्णन है । बहुरि मतिज्ञान का वर्णन विषैं याके नामांतर का, अर इंद्रिय-मन तें उपजने का अर तहां अवग्रहादि होने का, अर व्यंजन-अर्थ के स्वरूप का, अर व्यंजन विषैं नेत्र, मन वा ईहादिक न पाइए ताका, अर पहले दर्शन होइ पीछै अवग्रहादि होने के क्रम का अर अवग्रहादिकनि के स्वरूप का, अर अर्थ-व्यंजन के विषयभूत बहु, बहुविध आदि बारह भेदनि का, तहां अनिसृति विषैं च्यारि प्रकार परोक्ष प्रमाण गर्भितपना आदि का, अर मतिज्ञान के एक, च्यारि, चौबीस, अट्ठाईस अर इनतें बारह गुणे भेदनि का वर्णन है । बहुरि श्रुतज्ञान का वर्णन विषैं श्रुतज्ञान का लक्षण निरुक्ति आदि का, अर अक्षर-अनक्षर रूप श्रुतज्ञान के उदाहरण वा भेद वा प्रमाण का वर्णन है । बहुरि भाव श्रुतज्ञान अपेक्षा बीस भेदनि का वर्णन है । तहां पहिला जघन्यरूप पर्याय ज्ञान का वर्णन विषैं ताके स्वरूप का, अर तिसका आवरण जैसैं उदय हो है ताका, अर यहु जाकै हो है ताका, अर याका दूसरा नाम लब्धि अक्षर है, ताका वर्णन है । अर पर्यायसमास ज्ञान का वर्णन विषैं षट्स्थानपतित वृद्धि का वर्णन है । तहां जघन्य ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कहि । अर अनंतादिक का प्रमाण अर अनंत भागादिक की सहनानी कहि, जैसैं अनंतभागादिक षट्स्थानपतित वृद्धि हो है, ताके क्रम का यंत्र द्वार तें वर्णन करि अनंत भागादि वृद्धिरूप स्थाननि विषैं अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण ल्यावने कौं प्रक्षेपक आदि का विधान, अर तहां प्रसंग पाइ एक बार, दोय बार, आदि संकलन धन ल्यावने का विधान, अर साधिक जघन्य जहां दूणा हो है, ताका विधान, अर पर्याय समास विषैं अनंतभाग आदि वृद्धि होने का प्रमाण इत्यादि विशेष वर्णन है । बहुरि अक्षर आदि अठारह भेदनि का क्रम तें वर्णन है । तहां अर्थाक्षर के स्वरूप का, अर तीन प्रकार अक्षरनि का अर शास्त्र के विषयभूत भावनि के प्रमाण का, अर तीन प्रकार पदनि का अर चौदह पूर्वनि विषैं वस्तु वा प्राभृत नामा अधिकारनि के प्रमाण का इत्यादि वर्णन है । बहुरि बीस भेदनि विषैं अक्षर, अनक्षर श्रुतज्ञान के अठारह, दोय भेदनि का अर पर्यायज्ञानादि की निरुक्ति लिए स्वरूप का वर्णन है ।

बहुरि द्रव्यश्रुत का वर्णन विषैं द्वादशांग के पदनि की अर प्रकीर्णक के अक्षरनि की संख्यानि का, बहुरि चौसठ मूल अक्षरनि की प्रक्रिया का, अर अपुनरुक्त सर्व अक्षरनि का प्रमाण वा अक्षरनि विषैं प्रत्येक द्विसंयोगी आदि भंगनि करि तिस प्रमाण ल्यावने का विधान अर सर्व श्रुत के अक्षरनि का प्रमाण वा अक्षरनि विषैं अंगनि के पद अर प्रकीर्णकनि के अक्षरनि के प्रमाण ल्यावने का विधान इत्यादि वर्णन है । बहुरि आचारांग आदि ग्यारह अंग, अर दृष्टिवाद अंग के पांच भेद, तिनमैं परिकर्म के पांच

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

भेद, तहां सूत्र अर प्रथमानुयोग का एक-एक भेद, अर पूर्वगत के चौदह भेद, चूलिका के पांच भेद, इन सबनि के जुदा-जुदा पदनि का प्रमाण अर इन विषैं जो-जो व्याख्यान पाइए, ताकी सूचनिका का कथन है। तहां प्रसंग पाइ तीर्थंकर की दिव्यध्वनि होने का विधान, अर वर्द्धमान स्वामी के समय दश-दश जीव अंतःकृत केवली अर अनुत्तरगामी भए तिनकानाम अर तीन सौ तिरेसठि कुवादनि के धारकनि विषैं केई कुवादीनि के नाम अर सप्त भंग का विधान, अर अक्षरनि के स्थान-प्रयत्नादिक, अर बारह भाषा अर आत्मा के जीवादि विशेषण इत्यादि घने कथन हैं। बहुरि सामायिक आदि चौदह प्रकीर्णकनि का स्वरूप वर्णन है। बहुरि श्रुतज्ञान की महिमा का वर्णन है।

बहुरि अवधिज्ञान का वर्णन विषैं निरुक्ति पूर्वक स्वरूप कहि, ताके भवप्रत्यय-गुणप्रत्यय भेदनि का, अर ते भेद कौनकै होय, कौन आत्मप्रदेशनि तैं उपजै ताका, अर तहां गुणप्रत्यय, के छह भेदनि का, तिनविषैं अनुगामी, अननुगामी के तीन-तीन भेदनि का वर्णन है। बहुरि सामान्यपनै अवधि के देशावधि, परमावधि, सर्वावधि भेदनि का, अर तिन विषैं भवप्रत्यय-गुणप्रत्यय के संभवपने का, अर ए कौनकै होइ-ताका, अर तहां प्रतिपाती, अप्रतिपाती, विशेष का, अर इनके भेदनि के प्रमाण का, वर्णन है। बहुरि जघन्य देशावधि का विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का वर्णन करि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव अपेक्षा द्वितीयादि उत्कृष्ट पर्यंत क्रम तैं भेद होने का विधान, अर तहां द्रव्यादिक के प्रमाण का अर सर्व भेदनि के प्रमाण का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ ध्रुवहार, वर्ग, वर्गणा, गुणकार इत्यादिक का अनेक वर्णन है। अर तहां ही क्षेत्र-काल अपेक्षा तिस देशावधि के उगणीस कांडकनि का वर्णन है।

बहुरि परमावधि के विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव अपेक्षा जघन्य तैं उत्कृष्ट पर्यन्त क्रम तैं भेद होने का विधान, वा तहां द्रव्यादिक का प्रमाण वा सर्व भेदनि के प्रमाण का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ संकलित धन ल्यावने का अर **"इच्छिदरासिच्छेदं"** इत्यादि दोय करणसूत्रनि का आदि अनेक वर्णन है।

बहुरि सर्वावधि अभेद है। ताकै विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का वर्णन है। बहुरि जघन्य देशावधि तैं सर्वावधि पर्यंत द्रव्य अर भाव अपेक्षा भेदनि की समानता का वर्णन है। बहुरि नरक विषैं अवधि का वा ताके विषयभूत क्षेत्र का, अर मनुष्य, तिर्यंच विषैं जघन्य-उत्कृष्ट अवधि होने का, अर देव विषैं भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषीनि के अवधिगोचर क्षेत्रकाल का, सौधर्मादि द्विकनि विषैं क्षेत्रादिक का, वा द्रव्य का भी वर्णन है।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मनःपर्ययज्ञान का वर्णन विषैं ताके स्वरूप का, अर दोय भेदनि का अर तहां ऋजुमति तीन प्रकार, विपुलमति छह प्रकार ताका, अर मनःपर्यय जहातैं उपजै है अर जिनकैं हो है ताका, अर दोय भेदनि विषैं विशेष है ताका, अर जीव करि चिंतया हुवा द्रव्यादिक कौं जानै ताका, अर ऋजुमति का विषयभूत द्रव्य का अर मनःपर्यय संबंधी ध्रुवहार का, अर विपुलमति के जघन्य तैं उत्कृष्ट पर्यन्त द्रव्य अपेक्षा भेद होने का विधान, वा भेदनि का प्रमाण, वा द्रव्य का प्रमाण कहि, जघन्य उत्कृष्ट क्षेत्र, काल, भाव का वर्णन है ।

बहुरि केवलज्ञान सर्वज्ञ है, ताका वर्णन है । बहुरि इहां जीवनि की संख्या का वर्णन विषैं मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय, केवलज्ञानी का अर च्यारों गति संबंधी विभंगज्ञानीनि का, अर कुमति-कुश्रुत-ज्ञानीनि का प्रमाण वर्णन है ।

बहुरि तेरहवां संयममार्गणा अधिकार विषैं – ताके स्वरूप का, अर संयम के भेद के निमित्त का वर्णन है । बहुरि संयम के भेदनि का स्वरूप वर्णन है । तहां परिहारविशुद्धि का विशेष, अर ग्यारह प्रतिमा, अट्ठाईस विषय इत्यादिक का वर्णन है । बहुरि इहां जीवनि की संख्या का वर्णन विषैं सामायिक, छेदोपस्थापन, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्मसांपराय, यथाख्यात संयमधारी, अर संयतासंयत, अर असंयत जीवनि का प्रमाण वर्णन है ।

बहुरि चौदहवां दर्शनमार्गणा अधिकार विषैं – ताके स्वरूप का, अर दर्शन भेदनि के स्वरूप का वर्णन है । बहुरि इहां जीवनि की संख्या का वर्णन विषैं शक्ति चक्षुर्दर्शनी, व्यक्त चक्षुर्दर्शनीनि का अर अवधि, केवल, अचक्षुर्दर्शनीनि का प्रमाण वर्णन है ।

बहुरि पंद्रहवां लेश्यामार्गणा अधिकार विषैं – द्रव्य, भाव करि दोय प्रकार लेश्या कहि, भावलेश्या का निरुक्ति लिए लक्षण अर ताकरि बंध होने का वर्णन है । बहुरि सोलह अधिकारनि के नाम है । बहुरि निर्देशाधिकार विषैं छह लेश्यानि के नाम है । अर वर्णाधिकार विषैं द्रव्य लेश्यानि के कारण का, अर लक्षण का, अर छहों द्रव्य लेश्यानि के वर्ण का दृष्टांत का, अर जिनकैं जो-जो द्रव्य लेश्या पाइए, ताका व्याख्यान है । बहुरि प्रमाणाधिकार विषैं कषायनि के उदयस्थाननि विषैं संक्लेशविशुद्धि स्थाननि के प्रमाण का, अर तिनविषैं भी कृष्णादि लेश्यानि के स्थाननि के प्रमाण का, अर संक्लेशविशुद्धि की हानि, वृद्धि तैं अशुभ, शुभलेश्या होने के

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अनुक्रम का वर्णन है। बहुरि संक्रमणाधिकार विषैं स्वस्थान-परस्थान संक्रमण कहि संक्लेशविशुद्धि का वृद्धि-हानि तैं जैसैं संक्रमण हो है ताका, अर संक्लेशविशुद्धि विषैं जैसैं लेश्या के स्थान होइ, अर तहां जैसैं षट्स्थानपतित वृद्धि-हानि संभवै, ताका वर्णन है। बहुरि कर्माधिकार विषैं छहों लेश्यावाले कार्य विषैं जैसैं प्रवर्तैं, ताके उदाहरण का वर्णन है। बहुरि लक्षणाधिकार विषैं छहो लेश्यावालेनि का लक्षण वर्णन है।

बहुरि गति अधिकार विषैं लेश्यानि के छब्बीस अंश, तिनविषैं आठ मध्यम अंश आयुबंध कौं कारण, ते आठ अपकर्षकालनि विषैं हौइ, तिन अपकर्षनि का उदाहरणपूर्वक स्वरूप का अर तिनविषैं आयु न बंधै तौ जहां बंधै ताका, अर सोपक्रमायुष्क, निरुपक्रमायुष्क, जीवनि कै अपकर्षणरूप काल का, वा तहां आयु बंधने का विधान वा गति आदि विशेष का, अर अपकर्षनि विषैं आयु बंधनेवाले जीवनि के प्रमाण का वर्णन करि पीछै लेश्यानि के अठारह अंशनि विषैं जिस-जिस अंश विषैं मरण भए, जिस-जिस स्थान विषैं उपजै ताका वर्णन है।

बहुरि स्वामी अधिकार विषैं भाव लेश्या की अपेक्षा सात नरकनि के नारकीनि विषैं, अर मनुष्य-तिर्यंच विषैं, तहां भी एकेंद्रिय-विकलत्रय विषैं, असैनी पचेंद्रिय विषैं लब्धि अपर्याप्तक तिर्यंच-मनुष्य विषैं, अपर्याप्तक तिर्यंच-मनुष्य-भवनत्रिकदेव सासादन वालों विषैं, पर्याप्त-अपर्याप्त भोगभूमियां विषैं, मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थाननि विषैं, पर्याप्त भवनत्रिक-सौधर्मादिक आदि देवनि विषैं जो-जो लेश्या पाइए ताका वर्णन है। तहां असैनी के लेश्यानिमित्त तैं गति विषैं उपजने का आदि विशेष कथन है।

बहुरि साधन अधिकार विषैं द्रव्य लेश्या अर भाव लेश्यानि के कारण का वर्णन है।

बहुरि संख्याधिकार विषैं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, मान करि कृष्णादि लेश्यावाले जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि क्षेत्राधिकार विषैं सामान्यपनैं स्वस्थान, समुद्घात, उपपाद अपेक्षा, विशेषपनैं दोय प्रकार स्वस्थान, सात प्रकार समुद्घात, एक उपपाद इन दश स्थाननि विषैं संभवतै स्थाननि की अपेक्षा कृष्णादि लेश्यानि का (स्थान वर्णन कहिए) क्षेत्र वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ विवक्षित लेश्या विषैं संभवतै स्थान, तिन विषैं जीवनि के प्रमाण का, तिन स्थाननि विषैं क्षेत्र के प्रमाण का, समुद्घातादिक के विधान का, क्षेत्रफलादिक का, मरने वाले आदि देवनि के प्रमाण का, केवल समुद्घात विषैं दंड-कपाटादिक का, तहां लोक के क्षेत्रफल का इत्यादिक का वर्णन है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि स्पर्शाधिकार विषैं पूर्वोक्त सामान्य-विशेषपनैं करि लेश्यानि का तीन काल संबंधी क्षेत्र का वर्णन है । तहाँ प्रसंग पाइ मेरु तैं सहस्रार पर्यंत सर्वत्र पवन के सद्भाव का, अर जंबूद्वीप समान लवणसमुद्र के खंड, लवणसमुद्र के समान अन्य समुद्र के खंड करने के विधान का, अर जलचर रहित समुद्रनि का मिलाया हुआ क्षेत्रफल के प्रमाण का, अर देवादिक के उपजने, गमन करने का इत्यादि वर्णन है ।

बहुरि काल अधिकार विषैं कृष्णादि लेश्या जितने काल रहै ताका वर्णन है ।

बहुरि अंतराधिकार विषैं कृष्णादि लेश्या का जघन्य, उत्कृष्ट जितने काल-अभाव रहै, ताका वर्णन है । तहां प्रसंग पाइ एकेंद्री, विकलेंद्री विषैं उत्कृष्ट रहने के काल का वर्णन है ।

बहुरि भावाधिकार विषैं छहौं लेश्यानि विषैं औदयिक भाव के सद्भाव का वर्णन है ।

बहुरि अल्पबहुत्व अधिकार विषैं संख्या के अनुसारि लेश्यानि विषैं परस्पर अल्प-बहुत्व का व्याख्यान है, ऐसैं सोलह अधिकार कहि लेश्या रहित जीवनि का व्याख्यान है ।

बहुरि सोलहवां भव्यमार्गणा अधिकार विषैं – दोय प्रकार भव्य अर अभव्य अर भव्य-अभव्यपना करि रहित जीवनि का स्वरूप वर्णन है । बहुरि इहां संख्या का कथन विषैं भव्य-अभव्य जीवनि का प्रमाण वर्णन है । बहुरि इहां प्रसंग पाइ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भावरूप पंचपरिवर्तननि के स्वरूप का, वा जैसे क्रम तैं परिवर्तन हो है ताका, अर परिवर्तननि के काल का, अनादि तैं जेते परिवर्तन भए, तिनके प्रमाण का वर्णन है । तहां गृहीतादि पुद्गलनि के स्वरूप संदृष्टि का, वा योग स्थान आदिकनि का वर्णन पाइए है ।

बहुरि सतरहवां सम्यक्त्वमार्गणा अधिकार विषैं – सम्यक्त्व के स्वरूप का, अर सराग-वीतराग के भेदनि का अर षट् द्रव्य, नव पदार्थनि के श्रद्धानरूप लक्षण का वर्णन है । बहुरि षट् द्रव्य का वर्णन विषैं सात अधिकारनि का कथन है ।

तहां नाम अधिकार विषैं द्रव्य के एक वा दोय भेद का, अर जीव-अजीव के दोय-दोय भेदनि का, अर तहां पुद्गल का निरुक्ति लिए लक्षण का, पुद्गल परमाणु के आकार का वर्णनपूर्वक रूपी-अरूपी अजीव द्रव्य का कथन है ।

बहुरि उपलक्षणानुवादाधिकार विषैं छहों द्रव्यनि के लक्षणनि का वर्णन है । तहां गति आदि क्रिया जीव-पुद्गल कै है, ताका कारण धर्मादिक है, ताका दृष्टांत-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पूर्वक वर्णन है। अर वर्तनाहेतुत्व काल कें लक्षण का दृष्टांतपूर्वक वर्णन है । अर मुख्य काल के निश्चय होने का, काल कें धर्मादिक कौं कारणपने का, समय, आवली आदि व्यवहारकाल के भेदनि का, तहां प्रसंग पाइ प्रदेश के प्रमाण का, वा अंतर्मुहूर्त के भेदनि का, वा व्यवहारकाल जानने कौं निमित्त का, व्यवहारकाल के अतीत, अनागत, वर्तमान भेदनि के प्रमाण का, वा व्यवहार निश्चय काल के स्वरूप का वर्णन है ।

बहुरि स्थिति अधिकार विषैं सर्व अपने पर्यायनि का समुदायरूप अवस्थान का वर्णन है ।

बहुरि क्षेत्राधिकार विषैं जीवादिक जितना क्षेत्र रोकैं, ताका वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ तीन प्रकार आधार वा जीव के समुद्घातादि क्षेत्र का वा संकोच विस्तार शक्ति का वा पुद्गलादिकनि की अवगाहन शक्ति का वा लोकालोक के स्वरूप का वर्णन है ।

बहुरि संख्याधिकार विषैं जीव द्रव्यादिक का वा तिनके प्रदेशनि का, वा व्यवहार काल के प्रमाण का, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव मान करि वर्णन है ।

बहुरि स्थान स्वरूपाधिकार विषैं (द्रव्यनि का वा) द्रव्य के प्रदेशनि का चल, अचलपने का वर्णन है । बहुरि अणुवर्गणा आदि तेईस पुद्गल वर्गणानि का वर्णन है । तहां तिन वर्गणानि विषैं जेती-जेती परमाणू पाइए, ताका आहारादिक वर्गणा तें जो-जो कार्य निपजै है ताका जघन्य, उत्कृष्ट, प्रत्येकादि वर्गणा जहां पाईए ताका, महास्कंध वर्गणा के स्वरूप का, अणुवर्गणा आदि का वर्गणा लोक विषैं जितनी जितनी पाइए ताका इत्यादि का वर्णन है । बहुरि पुद्गल के स्थूल-स्थूल आदि छह भेदनि का, वा स्कंध, प्रदेश, देश इन तीन भेदनि का वर्णन है ।

बहुरि फल अधिकार विषैं धर्मादिक का गति आदि साधनरूप उपकार, जीवनि के परस्पर उपकार, पुद्गलनि का कर्मादिक वा सुखादिक उपकार, तिनका प्रश्नोत्तरादिक लिए वर्णन है । तहां प्रसंग पाइ कर्मादिक पुद्गल ही हैं ताका, अर कर्मादिक जिस-जिस पुद्गल वर्गणा तें निपजैं हैं ताका, अर स्निग्ध-रूक्ष के गुणनि के अंशनि करि जैसै पुद्गल का संबंध हो है, ताका वर्णन है । असैं षट् द्रव्य का वर्णन करि तहां काल विना पंचास्तिकाय हैं, ताका वर्णन है । बहुरि नव पदार्थनि का वर्णन विषैं जीव-अजीव का तौ षट् द्रव्यनि विषैं वर्णन भया । बहुरि पाप जीव पुण्य जीवनि का वर्णन है । तहां प्रसंग पाइ चौदह गुण-स्थाननि विषैं जीवनि का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रमाण वर्णन है। तहां उपशम, क्षपक श्रेणीवाले निरंतर अष्ट समयनि विषैं जेते जेते हौंइ ताका, वा युगपत् बोधितबुद्धि आदि जीव जेते-जेते होंइ ताका, अर सकल संयमीनि के प्रमाण का वर्णन है। बहुरि सात नरक के नारकी, भवनत्रिक, सौधर्मद्विकादिक देव, तिर्यंच, मनुष्य ए जेते-जेते मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थाननि विषैं पाइए, तिनका वर्णन है। बहुरि गुणस्थाननि विषैं पुण्य जीव, पाप जीवनि का भेद वर्णन है। बहुरि पुद्गलीक द्रव्य पुण्य-पाप का वर्णन है। बहुरि आस्रव, बंध, संवर निर्जरा, मोक्षरूप पुद्गलनि का प्रमाण वर्णन है। ऐसें षट् द्रव्यादिक का स्वरूप कहि, तिनके श्रद्धानरूप सम्यक्त्व के भेदनि का वर्णन है।

तहां क्षायिक सम्यक्त्व के भेदनि का वर्णन है।[1] तहां क्षायिक सम्यक्त्व होने के कारण का, ताके स्वरूप का, ताकौं पाऐं जेते भवनि विषैं मुक्ति होइ ताका, तिसकी महिमा का, अर तिसका प्रारंभ, निष्ठापन जहां होइ, ताका वर्णन है।

बहुरि वेदकसम्यक्त्व के कारण का वा स्वरूप का वर्णन है। बहुरि उपशम सम्यक्त्व के स्वरूप का, कारण का, पंचलब्धि आदि सामग्री का, वा जाके उपशम सम्यक्त्व होइ ताका वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ आयुबंध भए पीछैं सम्यक्त्व, व्रत होने न होने का वर्णन है। बहुरि सासादन, मिश्र, मिथ्यारुचि का वर्णन है। बहुरि इहां जीवनि की संख्या का वर्णन विषैं क्षायिक, उपशम, वेदक सम्यग्दृष्टिनि का अर मिथ्यादृष्टि, सासादन, मिश्र जीवनि का प्रमाण वर्णन है। बहुरि नव पदार्थनि का प्रमाण वर्णन है। तहां जीव अर अजीव विषैं पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल अर पुण्य-पाप रूप जीव, अर पुण्य-पाप रूप अजीव अर आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष इनके प्रमाण का निरूपण है।

बहुरि अठारहवां संज्ञी मार्गणा अधिकार विषैं – संज्ञी के स्वरूप का, संज्ञी असंज्ञी जीवनि के लक्षण का वर्णन है। अर इहां संख्या का वर्णन विषैं संज्ञी-असंज्ञी जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि उगणीसवां आहारमार्गणा अधिकार विषैं – आहारक के स्वरूप वा निरुक्ति का अर अनाहारक जिनकै हो है ताका, तहां प्रसंग पाइ सात समुद्घातनि के नाम वा समुद्घात के स्वरूप का, अर आहारक अनाहारक के काल का वर्णन है। बहुरि तहां आहारक-अनाहारक जीवनि का प्रमाण वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ **प्रक्षेपयोगोद्धृतिमिश्रपिंड** इत्यादि सूत्र करि मिश्र के व्यवहार का कथन है।

१. यह वाक्य छपी प्रति में मिलता है, किन्तु इसका अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि बीसवां उपयोग अधिकार विषैं – उपयोग के लक्षण का, साकार-अनाकार भेदनि का, उपयोग है सो व्याप्ति, अव्याप्ति, असंभवी दोष रहित जीव का लक्षण है ताका, अर केवलज्ञान-केवलदर्शन बिना साकार-अनाकार उपयोगनि का काल अंतर्मूहुर्त मात्र है, ताका वर्णन है । बहुरि इहां जीवनि की संख्या साकारोपयोग विषैं ज्ञानमार्गणावत् अर अनाकारोपयोग विषैं दर्शनमार्गणावत् है ताका वर्णन है ।

बहुरि इक्कीसवां ओघादेशयो प्ररूपणा प्ररूपण अधिकार विषैं – गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषैं यथासंभव गुणस्थान अर जीवसमासनि का वर्णन है । तहां द्वितीयोपशम सम्यक्त्व विषैं पर्याप्त-अपर्याप्त अपेक्षा गुणस्थाननि का विशेष कह्या है । बहुरि गुणस्थाननि विषैं संभवते जे जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौदह मार्गणानि के भेद, उपयोग, तिनका वर्णन है । तहां मार्गणा वा उपयोग के स्वरूप का भी किछू वर्णन है । तहां योग भव्यमार्गणानि के भेदनि का, वा सम्यक्त्वमार्गणा विषैं प्रथम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का इत्यादि विशेष-सा वर्णन है । अर गति आदि केई मार्गणानि विषैं पर्याप्त, अपर्याप्त अपेक्षा कथन है ।

बहुरि बावीसवां आलाप अधिकार विषैं – मंगलाचरण करि सामान्य, पर्याप्त, अपर्याप्त करि तीन आलाप, अर अनिवृत्तिकरण विषैं पंच भागनि की अपेक्षा पंच आलाप, तिनका गुणस्थाननि विषैं वा गुणस्थान अपेक्षा चौदह मार्गणा के भेदनि विषैं यथासंभव कथन है । तहां गतिमार्गणा विषैं किछू विशेष-सा कथन है । बहुरि गुणस्थान मार्गणास्थाननि विषैं गुणस्थानादि बीस प्ररूपणा यथासंभव आलापनि की अपेक्षा निरूपण करनी । तहां पर्याप्त, अपर्याप्त एकेंद्रियादि जीवनी कैं संभवते पर्याप्ति, प्राण, जीवसमासादिक का किछू वर्णन करि यथायोग्य सर्व प्ररूपणा जानने का उपदेश है । बहुरि तिनके जानने कौं यंत्रनि करि कथन है । तहां पहिलै यंत्रनि विषैं जैसैं अनुक्रम है, वा समस्या है, वा विशेष है सो कथन है । पीछैं एक-एक रचना विषैं वीस-वीस प्ररूपणा का कथन स्वरूप छह सौ चौदह यंत्रनि की रचना है । तहां केई रचना समान जानि बहुत रचनानि की एक रचना है । बहुरि मनः-पर्यय ज्ञानादिक विषैं एक होतैं अन्य न होय ताका, उपशम श्रेणी तैं उतरि मरण भए उपजने का, सिद्धनि विषैं संभवती प्ररूपणानि का निक्षेपादिक करि प्ररूपणा जानने के उपदेश का वर्णन है । बहुरि आशीर्वाद है । बहुरि टीकाकार के वचन हैं ।

ऐसैं जीवकाण्ड नामा महा अधिकार के बावीस अधिकारनि विषैं क्रम तैं व्याख्यान की सूचनिका जाननी ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

गोम्मटसार कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रकरण

ॐ नमः। अथ कर्म (अजीवकांड) नामा महाअधिकार के नव अधिकार हैं। तिनके व्याख्यान की सूचना मात्र क्रम तैं कहिए है –

तहां पहिला **प्रकृतिसमुत्कीर्तन-अधिकार** विषैं मंगलाचरणपूर्वक प्रतिज्ञा करि प्रतिज्ञा के स्वरूप का, जीव-कर्म के संबंध का, तिनके अस्तित्व का, दृष्टांतपूर्वक कर्म-परमाणूनि के ग्रहण का, बंध, उदय, सत्त्वरूप कर्मपरमाणूनि के प्रमाण का वर्णन है। बहुरि ज्ञानावरणादिक आठ मूल प्रकृतिनि के नाम का, इन विषैं घाती-अघाती भेद का, इनकरि कार्य हो है ताका, इनके क्रम संभवने का, दृष्टांत निरुक्ति लिए इनके स्वरूप का वर्णन है। बहुरि इनकी उत्तर प्रकृतिनि का कथन है। तहां पंच निद्रा का, तीन दर्शनमोह होने के विधान का, पंच शरीरनि के पंद्रह भंगनि का, विवक्षित संहननवाले देव-नरक गतिविषैं जहां उपजैं ताका, कर्मभूमि की स्त्रीनि के तीन संहनन हैं ताका, आताप प्रकृति के स्वरूप वा स्वामित्व का विशेष-व्याख्यान सा है।

बहुरि मतिज्ञानावरणादि उत्तर प्रकृतिनि के निरुक्ति लिए स्वरूप का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ अभव्य के केवलज्ञान के सद्भाव विषैं प्रश्नोत्तर का, सात धातु, सात उपधातु का इत्यादि वर्णन है। बहुरि अभेद विवक्षाकरि जे प्रकृति गर्भित हो हैं, तिनका वर्णनकरि बंध-उदय-सत्तारूप जेती-जेती प्रकृति हैं, तिनका वर्णन है। बहुरि घातियानि विषैं सर्वघाती-देशघाती प्रकृतिनि का, अर सर्व प्रकृतिनि विषैं प्रशस्त-अप्रशस्त प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि अनंतानुबंधी आदि कषायनि का कार्य वा वासनाकाल का वर्णन है। बहुरि कर्म-प्रकृतिनि विषैं पुद्गलविपाकी, भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी, जीवविपाकी प्रकृतिनि का वर्णन है।

बहुरि प्रसंग पाइ संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय का वर्णनपूर्वक तीन प्रकार श्रोतानि का वर्णनकरि प्रकृतिनि के चार निक्षेपनि का वर्णन है। तहां नामादि निक्षेपनि का स्वरूप कहि नाम निक्षेप का अर तदाकार-अतदाकाररूप दोय प्रकार स्थापना निक्षेप का अर आगम-नोआगम रूप दोय प्रकार द्रव्य निक्षेप का; तहां नो-आगम के ज्ञायक, भावी, तद्व्यतिरिक्तरूप तीन प्रकार का, तहां भी भूत, भावी, वर्तमानरूप ज्ञायकशरीर के तीन भेदनि का, तहां भी च्युत, च्यावित, त्यक्तरूप भूत शरीर के तीन भेदनि का, तहां भी त्यक्त के भक्त, प्रतिज्ञा, इंगिनी, प्रायोपगमनरूप भेदनि का, तहां भी भक्त प्रतिज्ञा के उत्कृष्ट, मध्य, जघन्यरूप तीन प्रकारनि का अर तद्व्यतिरिक्त नो-आगम द्रव्य के कर्म-नोकर्म भेदनि का, बहुरि भावनिक्षेप के आगम,

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नोआगम भेदनि का वर्णन है। तहां मूल प्रकृतिनि विषैं इनकौं कहि उत्तर प्रकृतिनि विषैं वर्णनहै। तहां औरनि का सामान्यपनैं संभवपना कहि, नोकर्मरूप तद्वयतिरिक्त-नो-आगम-द्रव्य का जुदी-जुदी प्रकृतिनि विषैं वर्णन है। अर नोआगमभाव का समुच्चयरूप वर्णन है।

बहुरि दूसरा **बंध-उदय-सत्त्वयुक्तस्तवनामा** अधिकार है। तहां नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञाकरि स्तवनादिक का लक्षण वर्णन है। बहुरि बंध-व्याख्यान विषैं बंध के प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशरूप भेदनि का, अर तिनविषैं उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्यपने का; अर इनविषैं भी सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव संभवने का वर्णन है।

बहुरि प्रकृतिबंध का कथन विषैं गुणस्थाननि विषैं प्रकृतिबंध के नियम का; तहां भी तीर्थंकरप्रकृति बंधने के विशेष का, अर गुणस्थाननि विषैं व्युच्छित्ति, बंध, अबंध प्रकृतिनि का, तहां भी व्युच्छित्ति के स्वरूप दिखावने कौं द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा का, अर गति आदि मार्गणा के भेदनि विषैं सामान्यपनैं वा संभवते गुणस्थान अपेक्षा व्युच्छित्ति-बंध-अबंध प्रकृतिनि के विशेष का, अर मूल-उत्तर प्रकृतिनि विषैं संभवते सादिनैं आदि देकर बंध का, तहां अध्रुव-प्रकृतिनि विषैं सप्रतिपक्ष-निःप्रतिपक्ष प्रकृतिनि का, अर निरंतर बंध होने के काल का वर्णन है।

बहुरि स्थितिबंध का वर्णन विषैं मूल-उत्तर प्रकृतिनि के उत्कृष्ट स्थितिबंध का, अर उत्कृष्ट स्थितिबंध संज्ञी पंचेंद्रिय ही के होय ताका, अर जिस परिणाम तैं वा जिस जीव कैं जिस प्रकृति का उत्कृष्ट स्थितिबंध होय ताका, तहां प्रसंग पाय उत्कृष्ट ईषत् मध्यम संक्लेश परिणामनि के स्वरूप दिखावने कौं अनुकृष्टि आदि विधान का, अर मूल-उत्तर प्रकृतिनि के जघन्य स्थितिबंध के प्रमाण का, अर जघन्य-स्थितिबंध जाकैं होय ताका वर्णन है। अर एकेंद्री, बेइंद्री, तेइंद्री, चौइंद्री, असंज्ञी, संज्ञी पंचेंद्री जीवनि कैं मोहादिक की उत्कृष्ट-जघन्यस्थिति के प्रमाण का, तहां प्रसंग पाइ तिनके आबाधा के कालभेदकाण्डकनि के प्रमाण कौं कहि भेद प्रमाण करि गुणितकांडक प्रमाण कौं उत्कृष्टस्थिति विषैं घटाएं जघन्यस्थिति का प्रमाण होने का वर्णन है।

बहुरि एकेंद्रियादि जीवनि के स्थितिभेदनि कौं स्थापनकरि तहां चौदह जीवसमासनि विषैं जघन्य-उत्कृष्ट-स्थितिबंध अर अबाधा अर भेदनि के प्रमाण अर तिनके जानने का विधान वर्णन है। तहां प्रकृतिनि का जघन्य स्थितिबंध जिनकैं होइ

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताका, अर जघन्य आदि स्थितिबंध विषैं सादि नैं आदि देकर संभवपने का, अर विशुद्ध-संक्लेशपरिणामनि तैं जैसें जघन्य-उत्कृष्ट स्थितिबंध होय ताका, अर आबाधा के लक्षण का, मोहादिक की आबाधा के काल का, आयु की आबाधा के विशेष का, तहां प्रसंग पाइ देव, नारकी, भोगभूमियां, कर्मभूमियांनि के आयुबंध होने के समय का, उदीर्णा अपेक्षा आबाधाकाल के प्रमाण का, प्रसंग पाइ अचलावली, उदयावली, उपरितन स्थिति विषैं कर्मपरमाणु खिरने का, उदीर्णा के स्वरूप का, आयु वा अन्य कर्मनि के निषेकनि के स्वरूप का, अंकसंदृष्टिपूर्वक निषेकनि विषैं द्रव्यप्रमाण का, तहां गुणहानि आदि का वर्णन है ।

बहुरि अनुभागबंध का व्याख्यान विषैं प्रकृतिनि का अनुभाग जैसें संक्लेश-विशुद्धिपरिणामनिकरि बंधै है ताका, अर जिस प्रकृति का जाकैं तीव्र वा जघन्य अनुभाग बंधै है ताका, तहां प्रसंग पाइ अपरिवर्तमान, परिवर्तमान मध्यम परिणामनि के स्वरूपादिक का अर उत्कृष्टादि अनुभागबंध विषैं सादि नैं आदि देकरि भेदनि के संभवपने का वर्णन है । बहुरि घातियानि विषैं लता, दारु, अस्थि शैलभागरूप अनुभाग का, तहां देशघातिया स्पर्द्धकनि का मिथ्यात्व विषैं विशेष है ताका, अर जिन प्रकृतिनि विषैं जेते प्रकार अनुभाग प्रवर्त्तै ताका, अर अघातियानि विषैं प्रशस्त प्रकृतिनि का गुड़, खांड, शर्करा, अमृतरूप; अप्रशस्त प्रकृतिनि का निंब, कांजीर, विष, हलाहलरूप अनुभाग का, अर इन प्रकृतिनि कैं तीन-तीन प्रकार अनुभाग प्रवर्त्तैं, ताका वर्णन है ।

बहुरि प्रदेशबंध का कथन विषैं एकक्षेत्र, अनेकक्षेत्रसंबंधी वा तहां कर्मरूप होनै कौं योग्य-अयोग्यरूप; तिनविषैं भी जीव का ग्रहण की अपेक्षा सादि-अनादिरूप पुद्गलनि का प्रमाणादिक कहि, तहां जिन पुद्गलनि कौं समयप्रबद्ध विषैं ग्रहै है ताका, अर ग्रहे जे परमाणु तिनके प्रमाण कौं कहि तिनका आठ वा सात मूल प्रकृतिनि विषैं जैसें विभाग हो है ताका, तहां हीनाधिक विभाग होने के कारण का वर्णन है । अर उत्तर प्रकृतिनि विषैं विभाग के अनुक्रम का अर ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय विषैं सर्वघाती-देशघाती द्रव्य के विभाग का, तहां प्रसंग पाइ मतिज्ञानावरणादि प्रकृतिनि विषैं सर्वघाती-देशघाती स्पर्द्धकनि का, तहां अनुभागसंबंधी नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त-द्रव्य-स्थिति-गुणहानि का प्रमाण कहि, तहां वर्गणानि का प्रमाण ल्याइ तिनविषैं जहां सर्वघाती-देशघातीपना पाइए ताका वर्णनकरि च्यारि घातिया कर्मनि की उत्तर प्रकृतिनि विषैं कर्मपरमाणुनि के विभाग का वर्णन है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तहां संज्वलन अर नोकषाय विषैं विशेष है ताका, अर नोकषायनि विषैं जिनका युगपत् बंध होइ तिनका, अर तिनके निरंतर बंधने के काल का, अर अंतराय की प्रकृतिनि विषैं सर्वघातीपना नाहीं ताका वर्णन है। बहुरि युगपत् नामकर्म की तेईस आदि प्रकृति बंधैं तिनविषैं विभाग का, अर वेदनीयादिक की एक-एक ही प्रकृति बंधै; तातैं तहां विभाग न करने का वर्णन है।

बहुरि मूल-उत्तर प्रकृतिनि का उत्कृष्टादि प्रदेशबंध विषैं सादि इत्यादि भेद संभवने का, अर जिस प्रकृति का उत्कृष्ट-जघन्य प्रदेशबंध जाकैं होय ताका, अर तहां प्रसंग पाइ स्तोकसा एक जीव के युगपत् जेते-जेते प्रकृति बंधें, ताका वर्णन है। बहुरि इहां प्रसंग पाइ योगनि का कथन है। तहां उपपाद, एकांतवृद्धि, परिणामरूप योगनि के स्वरूपादिक का वर्णन है। अर योगनि के अविभागप्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धक, गुणहानि, नानागुणहानि स्थाननि के स्वरूप, प्रमाण, विधान का योगशक्ति या प्रदेश अपेक्षा विशेष वर्णन है। अर योगनि का जघन्य स्थान तैं लगाय स्थाननि विषैं वृद्धि के अनुक्रम कौं आदि देकरि वर्णन है। अर सूक्ष्मनिगोदिया लब्धि-अपर्याप्तक का जघन्य उपपादयोगस्थान कौं आदि देकरि चौरासी स्थाननि का, अर बीचि-बीचि जिनका स्वामी न पाइए तिनका, अर तिनविषैं गुणकार के अनुक्रम का, अर जघन्य स्थान तैं उत्कृष्ट स्थान के गुणकार का वर्णन है। अर तीन प्रकार योग निरंतर जेते काल प्रवर्त्तैं ताका, अर पर्याप्त त्रस संबंधी परिणामयोगस्थाननि विषैं जे-जे जेते-जेते योगस्थान दोय आदि आठ समयपर्यंत निरंतर प्रवर्त्तैं तिनके प्रमाण ल्यावने कौं कालयवमध्य रचना का, अर पर्याप्त त्रससंबंधी परिणामयोगस्थाननि विषैं जेते-जेते जीव पाइए तिनके प्रमाण जानने कौं गुणहानि आदि विशेष लीए जीवयवमध्य रचना का अर योगस्थाननि तैं जेता-जेता प्रदेशबंध होय ताका, अर जघन्य तैं उत्कृष्ट स्थान पर्यंत बंधने के क्रम का बीचि-बीचि जेते अविभागप्रतिच्छेद होइ तिनका वर्णन है।

बहुरि च्यारि प्रकार बंध के कारणनि का वर्णन है। बहुरि योगस्थानादिक के अल्पबहुत्व का वर्णन है। तहां योगस्थान श्रेणी के असंख्यातवां भागमात्र तिनका वर्णनकरि तिनतैं असंख्यात लोकगुणे कर्मप्रकृतिनि के भेदनि का वर्णन विषैं मतिज्ञानादिकनि के भेदनि का, अर क्षेत्र अपेक्षा आनुपूर्वी के भेदनि का कथन है। बहुरि तिनतैं असंख्यातगुणे कर्मस्थिति के भेदनि का वर्णन विषैं तिन एक-एक प्रकृति

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

की जघन्यादि उत्कृष्ट पर्यंत स्थिति भेदनि का कथन है। बहुरि तिनतैं असंख्यातगुणे स्थितिबंधाध्यवसायनि का वर्णन विषैं द्रव्यस्थिति, गुणहानि, निषेक, चयादिककरि स्थितिबंध कौं कारण परिणामनि का स्तोकसा कथन है। बहुरि तिनतैं असंख्यात लोकगुणे अनुभागबंधाध्यवसायस्थाननि का वर्णन विषैं द्रव्यस्थिति-गुणहान्यादिककरि अनुभाग कौं कारण परिणामनि का स्तोकसा कथन है। बहुरि तिनतैं अनंतगुणे कर्मप्रदेशनि का वर्णन विषैं द्रव्यस्थिति, गुणहानि, नानागुणहानि, चय, निषेकनि का अंकसंदृष्टि वा अर्थकरि कथन है। तहां एक समय विषैं समय-प्रबद्धमात्र पुद्गल बंधै, एक-एक निषेक मिलि समयप्रबद्धमात्र ही निर्जरैं, असैं होतैं द्वयर्द्धगुणहानिगुणित समयप्रबद्धमात्र सत्त्व रहै, ताका विधान जानने कै अर्थि त्रिकोणयंत्र की रचना करी है।

बहुरि असैं बंध वर्णनकरि उदय का वर्णन विषैं उदय-प्रकृतिनि का नियम कहि गुणस्थाननि विषैं व्युच्छित्ति, उदय, अनुदय प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि इहां ही उदीर्णा विषैं विशेष कहि गुणस्थाननि विषैं व्युच्छित्ति, उदीर्णा, अनुदीर्णारूप प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि मार्गणा विषैं उदय प्रकृतिनि का नियम कहि गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषैं संभवते गुणस्थाननि की अपेक्षा लीए व्युच्छित्ति, उदय, अनुदय प्रकृतिनि का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ अनेक कथन है।

बहुरि सत्त्व का कथन विषैं तीर्थंकर, आहारक की सत्ता का, मिथ्यादृष्टयादि विषैं विशेष अर आयुबंध भए पीछैं सम्यक्त्व-व्रत होने का विशेष, क्षायिक-सम्यक्त्व होने का विशेष कहि मिथ्यादृष्टि आदि सात गुणस्थाननि विषैं सत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन करि, ऊपरि क्षपकश्रेणी अपेक्षा व्युच्छित्ति, सत्त्व, असत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थाननि विषैं सत्त्व, असत्त्व प्रकृतिनि का वर्णनकरि उपशम-श्रेणी विषैं इकईस मोहप्रकृति उपशमावने का क्रम का, अर तहां सत्त्व-प्रकृतिनि का कथन है। बहुरि मार्गणानि विषैं सत्ता-असत्ता प्रकृतिनि का नियम कहि गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषैं संभवते गुणस्थाननि की अपेक्षा लीए व्युच्छित्ति, सत्त्व, असत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ इन्द्रिय-काय मार्गणा विषैं प्रकृतिनि की उद्वेलना का इत्यादि अनेक वर्णन है।

बहुरि **विवेष सत्तारूप तीसरा सत्त्वस्थान-अधिकार** विषैं एक जीव कैं एकै कालि प्रकृति पाइए तिनके प्रमाण की अपेक्षा स्थान, अर स्थान विषैं प्रकृति बदलने की अपेक्षा भंग, तिनका वर्णन है। तहां नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञाकरि स्थानभंगनि का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्वरूप कहि गुणस्थाननि विषैं सामान्य सत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन करि विशेष वर्णन विषैं मिथ्यादृष्टचादि गुणस्थाननि विषैं जेते स्थान वा भंग पाइए तिनकौं कहि जुदा-जुदा कथन विषैं तिनका विधान वा प्रकृति घटने, बधने, बदलने के विशेष का बद्धायु-अबद्धायु अपेक्षा वर्णन है । तहां प्रसंग पाइ मिथ्यादृष्टि विषैं तीर्थंकर सत्तावाले कैं नरकायु ही का सत्त्व होइ ताका, वा एकेंद्रियादिक कैं उद्वेलना का अर सासादन विषैं आहार सत्ता के विशेष का, मिश्र विषैं अनंतानुबंधीरहित सत्त्वस्थान जैसें संभवै ताका, असंयत विषैं मनुष्यायु-तीर्थंकर सहित एक सौ अडतीस प्रकृति की सत्तावाले कैं दोय वा तीन ही कल्याणक होइ ताका, अपूर्वकरणादि विषैं उपशमक-क्षपक श्रेणी अपेक्षा का इत्यादि अनेक वर्णन है । बहुरि आचार्यनि के मतकरि जो विशेष है ताकौं कहि तिस अपेक्षा कथन है ।

बहुरि चौथा त्रिचूलिका नामा अधिकार है । तहां प्रथम नव प्रश्नकरि चूलिका का व्याख्यान है । तिसविषैं पहिलैं तीन प्रश्नकरि तिनका उत्तर विषैं जिन प्रकृतिनि की उदयव्युच्छित्ति तैं पहिले बंधव्युच्छित्ति भई तिनका, अर जिनकी उदयव्युच्छित्ति तैं पीछैं बंधव्युच्छित्ति भई तिनका, अर जिनकी उदयव्युच्छित्ति-बंधव्युच्छित्ति युगपत् भई तिनका वर्णन है । बहुरि दूसरा – तीन प्रश्नकरि तिनका उत्तर विषैं जिनका अपना उदय होतैं ही बंध होइ तिनका, अर जिनका अन्य प्रकृतिनि का उदय होतैं ही बंध होइ तिनका, अर जिनका अपना वा अन्य प्रकृतिनि का उदय होतैं बंध होय तिन प्रकृतिनि का वर्णन है । बहुरि तीसरा – तीन प्रश्नकरि तिनका उत्तर विषैं जिनका निरन्तर बंध होइ तिनका, अर जिनका सांतर बंध होइ तिनका, अर जिनका सांतर वा निरंतर बंध होइ तिनका कथन है । इहां तीर्थंकरादि प्रकृति निरंतर बंधी जैसें है ताका, अर सप्रतिपक्ष-निःप्रतिपक्ष अवस्था विषैं सांतर-निरंतर बंध जैसें संभवै है ताका वर्णन है ।

बहुरि दूसरी पंचभागहारचूलिका का व्याख्यान विषैं मंगलाचरणकरि उद्वेलन, विध्यात, अधःप्रवृत्त, गुणसंक्रम, सर्वसंक्रम – इन पंच भागहारनि के नाम का, अर स्वरूप का, अर ते भागहार जिनि-जिनि प्रकृतिनि विषैं वा गुणस्थाननि विषैं संभवैं ताका वर्णन है । अर सर्वसंक्रमभागहार, गुणसंक्रमभागहार, उत्कर्षण वा अपकर्षणभागहार, अधःप्रवृत्तभागहार, योगनि विषैं गुणकार, स्थिति विषैं नानागुणहानि, पल्य के अर्धच्छेद, पल्य का वर्गमूल, स्थिति विषैं गुणहानि-आयाम, स्थिति विषैं अन्योन्याभ्यस्त राशि, पल्य, कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, विध्यातसंक्रमभागहार, उद्वेलनभागहार,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अनुभाग विषैं नानागुणहानि, गुणहानि, द्वयर्द्धगुणहानि, दो गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त इनका प्रमाणपूर्वक अल्पबहुत्व का कथन है ।

बहुरि तीसरी दशकरणचूलिका का व्याख्यान विषैं बंध, उत्कर्षण, संक्रम, अपकर्षण, उदीर्णा, सत्त्व, उदय, उपशम, निधत्ति, निःकांचना – इन दशकरणनि के नाम का, स्वरूप का, जिनि-जिनि प्रकृतिनि विषैं वा गुणस्थाननि विषैं जैसें संभवैं तिनका वर्णन है ।

बहुरि पांचवां बंध-उदय-सत्त्वसहित स्थानसमुत्कीर्तन नामा अधिकार विषैं मंगलाचरण करि एक जीव कैं युगपत् संभवतां बंधादिक प्रकृतिनि का प्रमाणरूप स्थान वा तहां प्रकृति बदलने करि भये भंगनि का वर्णन है । तहां मूल प्रकृतिनि के बंधस्थाननि का, अर तहां संभवते भुजाकारादि बंध विशेष का, अर भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित, अवक्तव्यरूप बंध विशेषनि के स्वरूप का, अर मूल प्रकृतिनि कैं उदयस्थान, उदीरणास्थान, सत्त्वस्थाननि का वर्णन है । बहुरि उत्तर प्रकृतिनि का कथन विषैं दर्शनावरण, मोहनीय, नाम की प्रकृतिनि विषैं विशेष है ।

तहां दर्शनावरण के बंधस्थाननि का, अर तहां गुणस्थान अपेक्षा भुजाकारादि विशेष संभवने का, अर दर्शनावरण के गुणस्थाननि विषैं संभवते बंधस्थान, उदयस्थान, सत्त्वस्थाननि का वर्णन है ।

बहुरि मोहनीय के बंधस्थाननि का, अर ते गुणस्थाननि विषैं जैसें संभवै ताका, अर तहां प्रकृतिनि के नाम जानने कौं ध्रुवबंधी प्रकृति, वा कूटरचना आदिक का, अर तहां प्रकृति बदलने तैं भए भंगनि का, अर तिन बंधस्थाननि विषैं संभवते भुजाकारादि विशेषनि का, वा भुजाकारादिक के लक्षण का, वा सामान्य-अवक्तव्य भंगनि की संख्या का, अर भुजाकारादि संभवने के विधान का, अर इहां प्रसंग पाइ गुणस्थाननि विषैं चढना, उतरना इत्यादि विशेषनि का वर्णन है । बहुरि मोह के उदयस्थाननि का, अर गुणस्थाननि विषैं संभवता दर्शनमोह का उदय कहि तहां संभवते मोह के उदयस्थाननि का, अर तहां प्रकृत्यादि के जानने कूं कूटरचना आदि का, अर तहां प्रकृति बदलने तैं भए भंगनि का, अर अनिवृत्तिकरण विषैं वेदादिक के उदयकालादिक का, अर सर्वमोह के उदयस्थान, अर तिनकी प्रकृतिनि का विधान, वा संख्या वा मिलाई हुई संख्या का, अर गुणस्थाननि विषैं संभवते उपयोग, योग, संयम, लेश्या, सम्यक्त्व तिनकी अपेक्षा मोह के उदयस्थाननि का, वा तिनकी प्रकृतिनि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का विधान, संख्या आदिक का, तहां अनंतानुबंधी रहित उदयस्थान मिथ्यादृष्टि की अपर्याप्त-अवस्था में न पाइए इत्यादि विशेष का वर्णन है ।

बहुरि मोह के सत्त्वस्थाननि का वा तहां प्रकृति घटने का, अर ते स्थान गुणस्थाननि विषें जैसें संभवै ताका, अर अनिवृत्तिकरण विषें विशेष है ताका वर्णन है ।

बहुरि नामकर्म का कथन विषें आधारभूत इकतालीस जीवपद, चौंतीस कर्मपदनि का व्याख्यान करि नाम के बंधस्थाननि का अर ते गुणस्थाननि विषें जैसें संभवै ताका, अर ते जिस-जिस कर्मपदसहित बंधै हैं ताका, अर तिनविषें क्रम तें नवध्रुवबंधी आदि प्रकृतिनि के नाम का, अर तेइस के नै आदि दै करि नाम के बंधस्थाननि विषैं जे-जे प्रकृति जैसें पाइए ताका, अर तहां प्रकृति बदलने तें भए भंगनि का वर्णन है। अर इहां प्रसंग पाइ जीव मरि जहां उपजै ताका वर्णन विषैं प्रथमादि पृथ्वी नारकी मरि जहां उपजै वा न उपजै ताका, तहां प्रसंग पाइ स्वयंभू-रमण-समुद्रपरैं कूणानि विषैं कर्मभूमियां तिर्यंच हैं इत्यादि विशेष का, अर बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त अग्निकायिक आदि जीव जहां उपजैं ताका, तहां सूक्ष्मनिगोद तें आए मनुष्य सकल संयम न ग्रहै इत्यादि विशेष का, अर अपर्याप्त मनुष्य जहां उपजैं ताका, अर भोगभूमि-कुभोगभूमि के तिर्यंच-मनुष्य, अर कर्मभूमि के मनुष्य जहां उपजैं ताका, अर सर्वार्थसिद्धि तें लगाय भवनत्रिक पर्यंत देव जहां उपजैं ताका वर्णन है। बहुरि जैसें च्यवन-उत्पाद कहि चौदह मार्गणानि विषैं गुणस्थाननि की अपेक्षा लीएं जैसें जे-जे नामकर्म के बंधस्थान संभवैं तिनका वर्णन है ।

तहां गति, इंद्रिय, काय, योग, वेद मार्गणानि विषैं तो लेश्या अपेक्षा बंधस्थाननि का कथन है । कषाय मार्गणा विषैं अनंतानुबंधी आदि जैसें उदय हो है ताका, वा इनके देशघाती-सर्वघाती स्पर्द्धकनि का, वा सम्यक्त्व-संयम घातने का, वा लेश्या अपेक्षा बंधस्थाननि का कथन है । अर ज्ञान मार्गणा विषैं गति आदिक की अपेक्षा करि बंधस्थाननि का कथन है । अर संयम मार्गणा विषैं सामायिकादिक के स्वरूप का, अर संयतासंयत विषैं दोय गति अपेक्षा, अर असंयम विषैं च्यारि गति अपेक्षा बंधस्थाननि का कथन है । तहां निर्वृत्यपर्याप्त देव कैं बंधस्थान कहने कौं देवगति विषैं जे-जे जीव जहां पर्यंत उपजैं ताका, अर सासादन विषैं बंधस्थान कहने कौं जे-जे जीव जैसें उपशम-सम्यक्त्व कौं छोडि सासादन होइ ताका इत्यादि कथन है । अर दर्शन मार्गणा विषैं गति अपेक्षा बंधस्थाननि का कथन है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अर लेश्या मार्गणा विषैं प्रथमादि नरक पृथ्वीनि विषैं लेश्या संभवने का, जिस-जिस संहनन के धारी जे-जे जीव जहां-जहां पर्यंत नरकविषैं उपजैं ताका, नरकनिविषैं पर्याप्त-निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था अपेक्षा बंधस्थाननि अर का, तिर्यंच विषैं एकेंद्रियादिक कैं वा भोगभूमियां तिर्यंच कैं जो-जो लेश्या पाइए ताका, अर जे-जे जीव जिस-जिस लेश्याकरि तिर्यंच विषैं उपजैं ताका, अर तिनकैं निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था विषैं बंधस्थाननि का, अर जहां तैं आए सासादन वा असंयत होइ अर तिनके जे बंधस्थान होइ ताका, अर शुभाशुभलेश्यानि विषैं परिणामनि का, तहां प्रसंग पाइ कषायनि के स्थान वा तहां संक्लेश-विशुद्धस्थान वा कषायनि के च्यारि शक्तिस्थान, चौदह लेश्या स्थान, बीस आयु बन्धाबन्धस्थान तिनका, अर लेश्यानि के छब्बीस अंश, तहां आठ मध्यम अंश आयुबन्ध कौं कारण, ते आठ अपकर्षकालनि विषैं होइ, अन्य अठारह अंश च्यारि गतिनि विषैं गमन कौं कारण तिनके विशेष का, अर लेश्यानि के पलटने के क्रम का वर्णन करि, तिर्यंच कैं मिथ्यादृष्टि आदि विषैं जैसैं मिथ्यात्व-कषायनि का उदय पाइए है ताकौं कहि, तहां जे बंधस्थान पाइए ताका, अर भोगभूमियां तिर्यंच कैं वा प्रसंग पाई औरनि कैं जैसैं निर्वृत्यपर्याप्त वा पर्याप्त मिथ्यादृष्टि आदि विषैं जैसैं लेश्याकरि बंधस्थान पाइए, वा भोगभूमि विषैं जैसैं उपजना होइ ताका वर्णन है ।

बहुरि मनुष्यगति विषैं लब्धिअपर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त, पर्याप्त दशा विषैं जो-जो लेश्या पाइए वा तहां संभवते गुणस्थाननि विषैं बंधस्थान पाइए ताका वर्णन है ।

बहुरि देवगति विषैं भवनत्रिकादिक कैं निर्वृत्यपर्याप्त वा पर्याप्त दशा विषैं जो-जो लेश्या पाइए, वा देवनि के जहां जन्मस्थान हैं वा जे जीव जिस-जिस लेश्याकरि जहां-जहां देवगति विषैं उपजैं, वा निर्वृत्यपर्याप्त वा पर्याप्त-दशा विषैं मिथ्यादृष्टि आदि जीवनी कैं जे-जे बंधस्थान पाइए तिनका, अर तहां प्रासंगिक गाथानिकरि जे-जे जीव जहां-जहां पर्यंत देवगति विषैं उपजैं, वा अनुदिशादिक विमाननि तैं चयकरि जे पद न पावैं, वा जे जीव देवगति तैं चयकरि मनुष्य होइ निर्वाण ही जाय, वा जहां के आये तिरेसठि शलाका पुरुष न होइ, वा देवपर्याय पाइ जैसैं जिनपूजादिक कार्य करैं तिनका वर्णन है ।

बहुरि भव्यमार्गणा विषैं बंधस्थाननि का वर्णन है ।

बहुरि सम्यक्त्व मार्गणा विषैं सम्यक्त्व के लक्षण का, भेदनि का, जहां मरण न होय ताका, अर प्रथमोपशम सम्यक्त्व जाकैं होइ ताका, वा वाकैं जिन प्रकृतिनि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का उपशम होइ ताका, तहां लब्धि आदि होने का, अर प्रथमोपशम सम्यक्त्व भए मिथ्यात्व के तीन खंड हो हैं ताका, तहां नारकादिक कैं जे बंधस्थान पाइए तिनका, तहां नरक विषैं तीर्थंकर के बंध होने के विधान का, वा साकार-उपयोग होने का, वा निसर्गज-अधिगमज के स्वरूप का अर द्वितीयोपशम सम्यक्त्व जाकैं होइ ताका, तहां अपूर्वकरणादि विषैं जो-जो क्रिया करता चढै वा उतरै ताका, तहां जे बंधस्थान संभवैं ताका, वा तहां मरि देव होय ताकैं बंधस्थान संभवै ताका वर्णन है। बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व का प्रारंभ-निष्ठापन जाकैं होइ ताका, वा तहां तीन करण हो हैं तिनका, तहां गुणश्रेणी आदि होने का अर अनंतानुबंधी का विसंयोजनकरि पीछैं केई क्रिया करि करणादि विधान तैं दर्शनमोह क्षपावने का, अर तहां प्रारंभ-निष्ठापन के काल का, वा तिनके स्वामीनि का, वा तहां तीर्थंकर सत्तावाले कैं तद्भव-अन्यभव विषैं मुक्ति होने का वर्णनकरि क्षायिक सम्यक्त्व विषैं संभवते बंधस्थाननि का वर्णन है। बहुरि वेदक-सम्यक्त्व जिनकैं होइ अर प्रथमोपशम, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व तैं वा मिथ्यात्व तैं जैसैं वेदक सम्यक्त्व होइ, अर तिनकैं जे बंधस्थान पाइए तिनका वर्णन है।

बहुरि सासादन, मिश्र, मिथ्यात्व जहां-जहां जिस-जिस दशा विषैं संभवै अर तहां जे बंधस्थान पाइए तिनका वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ विवक्षित गुणस्थान तैं जिस-जिस गुणस्थान कों प्राप्त होइ ताका वर्णन है।

बहुरि संज्ञी अर आहार मार्गणा विषैं बंधस्थाननि का वर्णन है। बहुरि नाम के बंधस्थाननि विषैं भुजाकारादि कहने कौं पुनरुक्त, अपुनरुक्त भंगनि का, अर स्वस्थानादि तीन भेदनि का, प्रसंग पाइ गुणस्थाननि तैं चढने-उतरने का, जहां मरण न होइ ताका, कृतकृत्य-वेदक सम्यग्दृष्टि मरि जहां उपजै ताका, भुजाकारादिक के लक्षण का, अर इकतालीस जीव पदनि विषैं भंगसहित बंधस्थाननि का वर्णन करि मिथ्यादृष्ट्यादि गुणस्थाननि विषैं संभवते भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित, अवक्तव्य भंगनि का वर्णन है।

बहुरि नाम के उदयस्थाननि का वर्णन विषैं कार्माण[१], मिश्रशरीर, शरीरपर्याप्ति, उच्छ्वासपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति इन पंचकालनि का स्वरूप प्रमाणादिक कहि, वा केवली के समुद्घात अपेक्षा इनका संभवपना कहि, नाम के उदयस्थान हानि

१. 'होने का' ऐसा ख पुस्तक में पाठ है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का विधान विषैं ध्रुवोदयी आदि प्रकृतिनि का वर्णन करि, तिन पंचकालनि की अपेक्षा लीए जिस-जिस प्रकार वीस प्रकृति रूप स्थान तैं लगाय संभवते नाम के उदयस्थाननि का, अर तहां प्रकृति बदलने करि संभवते भंगनि का वर्णन है। बहुरि नाम के सत्त्वस्थाननि का वर्णन विषैं तिराणवे प्रकृतिरूप स्थान आदि जैसें जै सत्त्वस्थान हैं तिनका, अर तहां जिन प्रकृतिनि की उद्वेलना हो है तिनके स्वामी वा क्रम वा कालादिक विशेष का, अर सम्यक्त्व, देशसंयम, अनंतानुबंधी का विसंयोजन, उपशमश्रेणी चढना, सकलसंयम धरना, ए उत्कृष्टपनै केती वार होइ तिनका, अर च्यारि गति की अपेक्षा लीए गुणस्थाननि विषैं जे सत्त्वस्थान संभवैं तिनका, अर इकतालीस जीवपदनि विषैं सत्त्वस्थान संभवैं तिनका वर्णन है।

बहुरि त्रिसंयोग विषैं स्थान वा भंगनि का वर्णन है। तहां मूल प्रकृतिनि विषैं जिस-जिस बंधस्थान होतैं जो-जो उदय वा सत्त्वस्थान होइ ताका, अर ते गुणस्थाननि विषैं जैसें संभवैं ताका वर्णन है। बहुरि उत्तर प्रकृतिनि विषैं ज्ञानावरण, अंतराय का तौ पांच-पांच ही का बंध, उदय, सत्त्व होइ; तातैं तहां विशेष वर्णन नाहीं। अर दर्शनावरण विषैं जिस-जिस बंधस्थान होतैं जो-जो उदय वा सत्त्वस्थान गुणस्थान अपेक्षा संभवै ताका वर्णन है, अर वेदनीय विषैं एक-एक प्रकृति का उदय-बंध होतैं भी प्रकृति बदलने की अपेक्षा, वा सत्त्व दोय का वा एक का भी हो है, ताकी अपेक्षा गुणस्थान विषैं संभवते भंगनि का वर्णन है। बहुरि गोत्र विषैं नीच-उच्च गोत्र के बंध, उदय, सत्त्व के बदलने की अपेक्षा गुणस्थाननि विषैं संभवते भंगनि का वर्णन है। बहुरि आयु विषैं भोगभूमियां आदि जिस काल विषैं आयुबंध करैं ताका, एकेंद्रियादि जिस आयु कौं बांधै ताका, नारकादिकनि कैं आयु का उदय, सत्त्व संभवै ताका, अर आठ अपकर्ष विषैं बंधै ताका, तहां दूसरी, तीसरी बार आयुबंध होने विषैं घटने-बधने का, अर बध्यमान-भुज्यमान आयु के घटनेरूप अपवर्तनघात, कदलीघात का वर्णन करि बंध, अबंध, उपरितबंध की अपेक्षा गुणस्थाननि विषैं संभवते भंगनि का वर्णन है। बहुरि वेदनीय, गोत्र, आयु इनके भंग मिथ्यादृष्टयादि विषैं जेते-जेते संभवैं, वा सर्व भंग जेते-जेते हैं तिनका वर्णन है।

बहुरि मोह के स्थाननि की अपेक्षा भंग कहि गुणस्थाननि विषैं बंध, उदय, सत्त्वस्थान जैसें पाइए ताका वर्णन करि मोह के त्रिसंयोग विषैं एक आधार, दोय आधेय, तीन प्रकार, तहां जिस-जिस बंधस्थान विषैं जो-जो उदयस्थान, वा

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सत्त्वस्थान संभवै, अर जिस-जिस उदयस्थान विषैं जो-जो बंधस्थान वा सत्त्वस्थान संभवै, अर जिस-जिस सत्त्वस्थान विषैं जो-जो बंधस्थान वा उदयस्थान संभवै तिनका वर्णन है। बहुरि मोह के बंध, उदय, सत्त्वनि विषैं दोय आधार, एक आधेय तीन प्रकार, तहां जिस-जिस बंधस्थानसहित उदयस्थान विषैं जो-जो सत्त्वस्थान जिसप्रकार संभवै, अर जिस-जिस बंधस्थानसहित सत्त्वस्थान विषैं जो-जो उदयस्थान संभवै अर जिस-जिस उदयस्थान सहित सत्त्वस्थान विषैं जो-जो बंधस्थान पाइए ताका वर्णन है। बहुरि नामकर्म के स्थानोक्त भंग कहि गुणस्थाननि विषैं, अर चौदह जीवसमासनि विषैं अर गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषैं संभवते बंध, उदय, सत्त्वस्थाननि का वर्णनकरि एक आधार, दोय आधेय का वर्णन विषैं जिस-जिस बंधस्थाननि विषैं जो-जो उदयस्थान वा सत्त्वस्थान जिसप्रकार संभवैं, अर जिस-जिस उदयस्थान विषैं जो-जो बंधस्थान वा सत्त्वस्थान जिसप्रकार संभवै, अर जिस-जिस सत्त्वस्थान विषैं जो-जो बंधस्थान वा उदयस्थान जिस-जिसप्रकार संभवै तिनका वर्णन है। बहुरि दोय आधार, एक आधेय विषैं जिस-जिस बंधस्थानसहित उदय स्थान विषैं जो-जो सत्त्वस्थान संभवै, अर जिस-जिस बंधस्थानसहित सत्त्वस्थान विषैं जो-जो उदयस्थान संभवैं अर जिस-जिस उदयस्थानसहित सत्त्वस्थान विषैं जो-जो बंधस्थान पाइए तिनका वर्णन है।

बहुरि छठा प्रत्यय अधिकार है, तहां नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञा करि च्यारि मूल आस्रव अर सत्तावन उत्तरआस्रवनि का, अर ते जेसैं गुणस्थाननि विषैं संभवै ताका, तहां व्युच्छित्ति वा आस्रवनि के प्रमाण, नामादिक का वर्णन करि, तहां विशेष जानने कौं पंच प्रकारनि का वर्णन है। तहां प्रथम प्रकार विषैं एक जीव कैं एकै काल संभवैं ऐसे जघन्य, मध्यम, उत्कृष्टरूप आस्रवस्थान जेते-जेते गुणस्थाननि विषैं पाइए तिनका वर्णन है।

बहुरि दूसरा प्रकार विषैं एक-एक स्थान विषैं आस्रवभेद बदलने तैं जेते-जेते प्रकार होइ तिनका वर्णन है।

बहुरि तीसरा प्रकार विषैं तिन स्थाननि के प्रकारनि विषैं संभवते आस्रवनि की अपेक्षा कूटरचना के विधान का वर्णन है।

बहुरि चौथा प्रकार विषैं तिनहूं कूटनि के अनुसारि अक्षसंचारि विधान तैं जैसें आस्रवस्थाननि कौं कहने का विधानरूप कूटोच्चारण विधान का वर्णन है। तहां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अविरत विषैं युगपत् संभवतै हिंसा के प्रत्येक द्विसंयोगी आदि भेदनि का, अर ते भेद जेते होइ ताका वर्णन है ।

बहुरि पांचवां प्रकार विषैं तिन स्थाननि विषैं भंग ल्यावने के विधान का वा गुणस्थाननि विषैं संभवते भंगनि का, तहाँ अविरत विषैं हिंसा के प्रत्येक द्विसंयोगी आदि भंग ल्यावने कौं गणितशास्त्र के अनुसार प्रत्येक द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी आदि भंगनि के ल्यावने के विधान का वर्णन है । बहुरि आस्रवनि के विशेषभूत जिनि-जिनि भाव तैं स्थिति-अनुभाग की विशेषता लीयें ज्ञानावरणादि जुदि-जुदि प्रकृति का बंध होइ तिनका क्रम तैं वर्णन है ।

बहुरि सातवां भावचूलिका नामा अधिकार है। तहां नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञा करि भावनि तैं गुणस्थानसंज्ञा हो है ऐसैं कहि पंच मूल भावनि का, अर इनके स्वरूप का, [१] अर तिरेपन उत्तर भावनि का, अर मूल-उत्तर भावनि विषैं अक्षसंचार विधान तैं प्रत्येक परसंयोगी, स्वसंयोगी, द्विसंयोगी आदि भंग जैसे होइ ताका, अर नाना जीव, नाना काल अपेक्षा गुणस्थान विषैं संभवते भावनि का वर्णन है ।

बहुरि एक जीव कैं युगपत् संभवते भावनि का वर्णन है । तहां गुणस्थाननि विषैं मूल भावनि के प्रत्येक, परसंयोगी, द्विसंयोगी आदि संभवते भंगनि का वर्णन है । तहां प्रसंग पाइ प्रत्येक, द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी आदि भंग ल्यावने कैं गणितशास्त्र अनुसार विधान वर्णन है । बहुरि गुणस्थाननि विषैं मूल भावनि की वा तिनके भंगनि की संख्या का वर्णन है ।

बहुरि उत्तर भावनि के भंग स्थानगत, पदगत भेद तैं दोय प्रकार कहे हैं । तहां एक जीव कैं एक काल संभवते भावनि का समूह सो स्थान । तिस अपेक्षा जे स्थानगत भंग, तिन विषैं स्वसंयोगी भंग के अभाव का अर गुणस्थाननि विषैं संभवते औपशमिकादिक भावनि का अर औदयिक के स्थाननि के भंगनि का वर्णन करि तहां संभवते स्थाननि के परस्पर संयोग की अपेक्षा गुण्य, गुणकार, क्षेपादि विधान तैं जैसैं जेतै प्रत्येक भंग अर परसंयोगी विषैं द्विसंयोगी आदि भंग होइ तिनका, अर तहां गुण्य, गुणकार, क्षेप का प्रमाण कहि सर्वभंगनि के प्रमाण का वर्णन है ।

बहुरि जातिपद, सर्वपद भेदकरि पदगत भंग दोय प्रकार, तिनका स्वरूप कहि गुणस्थाननि विषैं जेते-जेते जातिपद संभवैं तिनका, अर तिनकौं परस्पर

१. ख पुस्तक में यह पाठ नहीं है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लगावने की अपेक्षा गुण्य, गुणकार, क्षेप आदि विधान तैं जेते-जेते प्रत्येक स्वसंयोगी परसंयोगी, द्विसंयोगी आदि भंग संभवैं तिनका, अर तहां गुण्य, गुणकार, क्षेप का प्रमाण कहि सर्व भंगनि के प्रमाण का वर्णन है ।

बहुरि पिंडपद, प्रत्येकपद भेदकरि सर्वपद भंग दोय प्रकार है । तिनके स्वरूप का, अर गुणस्थान विषैं ए जेतै जैसैं संभवैं ताका, अर तहां परस्पर लगावने तैं प्रत्येक द्विसंयोगी आदि भंग कीए जे भंग होहि तिनका, तहां मिथ्यादृष्टि का पन्द्रहवां प्रत्येक पद विषै भंग ल्यावने का, प्रसंग पाइ गणितशास्त्र के अनुसार एकवार, दोयवार आदि संकलन धन के विधान का, अर गुणस्थाननि विषैं प्रत्येकपद, पिंडपदनि की रचना के विधान का, अर प्रत्येकपदनि के प्रमाण का, अर तहां जेते सर्वपद भंग भए तिनका वर्णन है। बहुरि यहां तीनसै तिरेसठि कुवाद के भेदनि का अर तिन विषैं जैसै प्ररूपण है ताका, अर एकान्तरूप मिथ्यावचन, स्याद्वादरूप सम्यग्वचन का वर्णन है ।

बहुरि आठवां त्रिकरण चूलिका नामा अधिकार है । तहां मंगलाचरण करि करणनि का प्रयोजन कहि अधःकरण का वर्णन विषैं ताके काल का अर तहां संभवते सर्व परिणाम, प्रथम समय संबंधी परिणाम, अर समय-समय प्रति वृद्धिरूप परिणाम, वा द्वितीयादि समय संबन्धी परिणाम, वा समय-समय सम्बन्धी परिणामनि विषैं खंड रचनाकरि अनुकृष्टि विधान, तहां खंडनि विषैं प्रथम खंड विषैं वा खंड-खंड प्रति वृद्धिरूप वा द्वितीयादि खंडनि विषैं परिणाम तिनका अंकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है । तहां श्रेणीव्यवहार नामा गणित के सूत्रनि के अनुसार ऊर्ध्वरूप गच्छ, चय, उत्तर धन, आदि धन, सर्व धनादिक का, अर अनुकृष्टि विषैं तिर्यग्रूप गच्छादिक के प्रमाण ल्यावने का विधान वर्णन है । अर तिन खंडनि विषैं विशुद्धता का अल्प-बहुत्व का वर्णन है । बहुरि अपूर्वकरण का वर्णन विषैं अनुकृष्टि विधान नाहीं, ऊर्ध्वरूप गच्छादिक का प्रमाण ल्यावने का विधान पूर्वक ताके काल का वा सर्व परिणाम, प्रथम समयसंबन्धी परिणाम, समय-समय प्रति वृद्धिरूप परिणाम, द्वितीयादि समय संबन्धी परिणाम, तिनका अंकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है । बहुरि अनिवृत्ति करण विषैं भेद नाहीं, तातैं तहां कालादिक का वर्णन है ।

बहुरि नवमा कर्मस्थिति अधिकार है । तहां नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञाकरि आबाधा के लक्षण का वा स्थिति अनुसार ताके काल का, वा उदीर्णा अपेक्षा

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आबाधाकाल का वर्णन है। बहुरि कर्मस्थिति विषैं निषेकनि का वर्णन है। बहुरि प्रथमादि गुणहानिनि के प्रथमादि निषेकनि का वर्णन है। बहुरि स्थितिरचना विषैं द्रव्य, स्थिति, गुणहानि, नानागुणहानि, दोगुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त इनके स्वरूप, का, अर अंकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा तिनके प्रमाण का वर्णन है। तहां नानागुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशि सर्व कर्मनि का समान नाहीं, तातैं इनका विशेष वर्णन है। तहां मिथ्यात्वकर्म की नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त जानने का विधान वर्णन है। इहां प्रसंग पाइ **'अंतधणं गुणगुणियं'** इत्यादि करणसूत्रकरि गुणकाररूप पंक्ति के जोडने का विधान आदि वर्णन है। बहुरि गुणहानि, दो गुणहानि के प्रमाण का वर्णन है। तहां ही विशेष जो चय ताका प्रमाण वर्णन है। ऐसे प्रमाण कहि प्रथमादि गुणहानिनि का वा तिनविषैं प्रथमादि निषेकनि का द्रव्य जानने का विधान वा ताका प्रमाण अंकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है। बहुरि मिथ्यात्ववत् अन्यकर्मनि की रचना है। तहां गुणहानि, दो गुणहानि तो समान हैं, अर नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त राशि समान नाहीं। तिनके जानने कौं सात पंक्ति करि विधान कहि तिनके प्रमाण का, अर जिस-जिसका जेता-जेता नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त का प्रमाण आया, ताका वर्णन है। बहुरि ऐसे कहि अंकसंदृष्टि अपेक्षा त्रिकोणयंत्र, अर त्रिकोणयंत्र का प्रयोजन, अर तहां एक-एक निषेक मिलि एक समयप्रबद्ध का उदय त्रिकोणयंत्र हो है। अर सर्व त्रिकोणयंत्र के निषेक जोड़ैं किंचिदून द्व्यर्द्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण सत्त्व हो है तिनका वर्णन है। बहुरि निरंतर-सांतररूप स्थिति के भेद, स्वरूप स्वामीनि का वर्णन है। बहुरि स्थितिबंध कौं कारण जे स्थितिबंधाध्यवसायस्थान तिनका वर्णन विषैं आयु आदि कर्म के स्थितिबंधाध्यवसायस्थाननि के प्रमाण का अर स्थितिबंधाध्यवसाय के स्वरूप जानने कौं सिद्धांत वचनिका वर्णनकरि स्थिति के भेदनि कौं कहि तिन विषैं जेते-जेते स्थितिबंधाध्यवसायस्थान संभवैं तिनके जानने कौं द्रव्य, स्थिति, गुणहानि, नानागुणहानि, दो-गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त का वा चय का, वा प्रथमादि गुणहानिनि का, वा तिनके निषेकनि का, वा आदि धनादिक का द्रव्यप्रमाण अर ताके जानने का विधान, ताका वर्णन है। बहुरि इहां एक-एक स्थितिभेद संबंधी स्थितिबन्धाध्यवसायस्थननि विषैं नानाजीव अपेक्षा खंड हो है। तहां ऊपरली-नीचली स्थिति संबंधी खंड समान भी हो हैं; तातैं तहां अनुकृष्टि-रचना का वर्णन है। तहां आयुकर्म का जुदा ही विधान है, तातैं पहिले आयु की कहि, पीछे मोहादिक की अनुकृष्टि-रचना का अंकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है। तहां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

खंडनि की समानता-असमानता इत्यादि अनेक कथन है । बहुरि अनुभागबंध को कारण जे अनुभागाध्यवसायस्थान तिनका वर्णन विषैं तिन सर्वनि का प्रमाण कहि, तहां एक-एक स्थितिभेद संबंधी स्थितिबंधाध्यवसायस्थाननि विषैं द्रव्य, स्थिति, गुणहानि आदि का प्रमाणादिक कहि एक-एक स्थितिबंधाध्यवसायस्थानरूप जे निषेक तिनविषैं जेते-जेते अनुभागाध्यवसायस्थान पाइए तिनका वर्णन है । बहुरि मूलग्रंथकर्त्ताकरि कीया हुवा ग्रंथ की संपूर्णता होने विषैं ग्रंथ के हेतु का, चामुंडराय राजा को आशीर्वाद का, ताकरि बनाया चैत्यालय वा जिनबिंब का, वीरमार्तंड राजा कौं आशीर्वाद का वर्णन है । बहुरि संस्कृत टीकाकार अपने गुरुनि का वा ग्रंथ होने के समाचार कहे हैं तिनका वर्णन है ।

ऐसैं श्रीमद् गोम्मटसार द्वितीय नाम पंचसंग्रह मूलशास्त्र, ताकी जीवतत्त्व-प्रदीपिका नामा संस्कृतटीका के अनुसार इस भाषाटीका विषैं अर्थ का वर्णन होसी ताकौं सूचनिका कही ।

अर्थसंदृष्टि सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि तहां जे संदृष्टि हैं, तिनका अर्थ, वा कहे अर्थ तिनकी संदृष्टि जानने कौं इस भाषाटीका विषैं जुदा ही संदृष्टि अधिकार विषैं वर्णन होसी ।

इहां कोऊ कहै – अर्थ का स्वरूप जान्या चाहिए, संदृष्टिनि के जानैं कहा सिद्धि हो है ?

ताका समाधान – संदृष्टि जानैं पूर्वाचार्यनि की परंपरा तैं चल्या आया जो संकेतरूप अभिप्राय, ताकौं जानिए है । अर थोरे में बहुत अर्थ कौं नीकै पहिचानिए है । अर मूलशास्त्र वा संस्कृतटीका विषैं, वा अन्य ग्रंथनि विषैं, जहां संदृष्टिरूप व्याख्यान है, तहां प्रवेश पाइये है । अर अलौकिक गणित के लिखने का विधान आदि चमत्कार भासै है । अर संदृष्टिनि कौं देखते ही ग्रंथ की गंभीरता प्रगट हो है – इत्यादि प्रयोजन जानि संदृष्टि अधिकार करने का विचार कीया है ।

तहां केई संदृष्टि आकाररूप है, केई अंकरूप है, केई अक्षररूप है, केई लिखने ही का विशेषरूप है, सो तिस अधिकार विषैं पहिले तौ सामान्यपनैं संदृष्टिनि का वर्णन है, तहां पदार्थनि के नाम तैं, संख्या तैं अर अक्षरनि तैं अंकनि की अर प्रभृति आदि की संदृष्टिनि का वर्णन है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि सामान्य संख्यात, असंख्यात,अनंत की, अर इनके इकईस भेदनि की, अर पल्य आदि आठ उपमा प्रमाण की, अर इनके अर्धच्छेद वा वर्गशलाकानि की संदृष्टिनि का वर्णन है। बहुरि परिकर्माष्टक विषैं संकलनादि होतैं जैसैं सहनानि हो है अर बहुत प्रकार संकलनादि होतैं वा संकलनादि आठ विषैं एकत्र दोय, तीन आदि होतैं जो सहनानी हो है, वा संकलनादि विषैं अनेक सहनानी का एक अर्थ हो है इत्यादिकिनि का वर्णन है। अर स्थिति-अनुभागादिक विषैं आकाररूप सहनानी है, वा केई इच्छित सहनानी है, इत्यादिकनि का वर्णन है । असैं सामान्य वर्णन करि पीछैं श्रीमद् गोम्मटसार नामा मूलशास्त्र वा ताकी जीवतत्त्वप्रदीपिका नामा टीका, ताविषैं जिस-जिस अधिकार विषैं कथन का अनुक्रम लीए संख्यादिक अर्थ की जैसैं-जैसैं संदृष्टि है, तिनका अनुक्रम तैं वर्णन है। तहां केई करण वा त्रिकोणयंत्र का जोड़ इत्यादिकनि का संदृष्टिनि का संस्कृत टीका विषैं वर्णन था अर भाषा करतैं अर्थ न लिख्या था, तिनका इस संदृष्टि अधिकार विषैं अर्थ लिखिएगा। अर मूलशास्त्र के यंत्ररचना विषैं वा संस्कृत टीका विषैं केई संदृष्टिरूप रचना ही लिखी थी। तिनकौं अर्थपूर्वक इस संदृष्टि अधिकार विषैं लिखिएगा, सो इहां तिनकी सूचनिका लिखैं विस्तार होई, तातैं तहां ही वर्णन होगा सो जानना।

इहां कोऊ कहै – मूलशास्त्र वा टीका विषैं जहां संदृष्टि वा अर्थ लिख्या था, तहां ही तुम भी तिनके अर्थनि का निरूपण करि क्यों न लिखान किया ? तहां छोडि तिनकौं एकत्र करि संदृष्टि अधिकार विषैं कथन किया सो कौंन कारण ?

तहां समाधान – जो यहु टीका मंदबुद्धीनि कैं ज्ञान होने के अर्थि करिए है, सो या विषैं बीचि-बीचि संदृष्टि लिखने तैं कठिनता तिनकौं भासै, तब अभ्यास तैं विमुख होइ, तातैं जिनकौं अर्थमात्र ही प्रयोजन होहि, सो अर्थ ही का अभ्यास करौ अर जिनकौं संदृष्टि कौं भी जाननी होइ, ते संदृष्टि अधिकार विषैं तिनका भी अभ्यास करौ।

बहुरि इहां कोई कहै – तुम असा विचार कीया, परंतु कोई इस टीका का अवलंबन तैं संस्कृत टीका का अभ्यास कीया चाहै, तो कैसैं अभ्यास करै ?

ताकौं कहिए है – अर्थ का तौ अनुक्रम जैसैं संस्कृत टीका विषैं है, तैसैं या विषैं है ही। अर जहां जो संदृष्टि आदि का कथन बीचि मैं आवै, ताकौं संदृष्टि अधिकार विषैं तिस स्थल विषैं बाकी कथन है; ताकौं जानि तहां अभ्यास करौ। ऐसैं विचारि संदृष्टि अधिकार करने का विचार कीया है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लब्धिसार-क्षपणासार सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि ऐसा विचार भया जो लब्धिसार अर क्षपणासार नामा शास्त्र है, तिन विषैं सम्यक्त्व का अर चारित्र का विशेषता लीए बहुत नीकै वर्णन है। अर तिस वर्णन कौं जानै मिथ्यादृष्टयादि गुणस्थाननि का भी स्वरूप नीकैं जानिए है, सो इनका जानना बहुत कार्यकारी जानि, तिन ग्रंथनि के अनुसारि किछू कथन करना। तातैं लब्धिसार शास्त्र के गाथा सूत्रनि की भाषा करि इस ही टीका विषैं मिलाइएगा। तिस ही के क्षपक श्रेणी का कथन रूप गाथा सूत्रनि का अर्थ विषैं क्षपणासार का अर्थ गर्भित होयगा ऐसा जानना।

इहां कोऊ कहै – तिन ग्रंथनि की जुदी ही टीका क्यों न करिए ? याही विषैं कथन करने का कहा प्रयोजन ?

ताका समाधान – गोम्मटसार विषैं कह्या हुवा केतेइक अर्थनि कौं जानैं बिना तिन ग्रंथनि विषैं कह्या हुवा केतेइक अर्थनि का ज्ञान न होय, वा तिन ग्रंथनि विषैं कह्या हुवा अर्थ कौं जानैं इस शास्त्र विषैं कहे हुए गुणस्थानादिक केतेइक अर्थनि का स्पष्ट ज्ञान होइ, सो ऐसा संबंध जान्या अर तिन ग्रंथनि विषैं कहे अर्थ कठिन हैं, सो जुदा रहे प्रवृत्ति विशेष न होइ तातैं इस ही विषैं तिन ग्रंथनि का अर्थ लिखने का[१] विचार कीया है। सो तिस विषैं प्रथमोपशम सम्यक्त्वादि होने का विधान धाराप्रवाह रूप वर्णन है। तातैं ताकी सूचनिका लिखैं विस्तार होइ, कथन आगैं होयहीगा। तातैं इहां अधिकार मात्र ताकी सूचनिका लिखिए है।

प्रथम मंगलाचरण करि प्रकार कारण का वा प्रकृतिबंधापसरण, स्थितिबंधापसरण, स्थितिकांडक, अनुभागकांडक, गुणश्रेणी फालि इत्यादि, केतीइक संज्ञानि का स्वरूप वर्णन करि प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने का विधान वर्णन है।

तहां प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने योग्य जीव का, अर पंचलब्धिनि के नामादिक कहि, तिनके स्वरूप का वर्णन है। तहां प्रायोग्यता लब्धि का कथन विषैं जैसैं स्थिति घटै है अर तहां च्यारि गति अपेक्षा प्रकृतिबन्धापसरण हो है ताका, अर स्थिति, अनुभाग, प्रदेशबंध का वर्णन है। बहुरि च्यारि गति अपेक्षा एक जीव कैं युगपत् संभवता भंगसहित प्रकृतिनि के उदय का, अर स्थिति, अनुभाग, प्रदेश के

१. घ प्रति में 'अर्थ लिखने का' स्थान पर 'अनुसारि किछु कथन' ऐसा पाठ मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उदय का वर्णन है। बहुरि एक जीव कैं युगपत् संभवती प्रकृतिनि के सत्त्व का अग्र स्थिति, अनुभाग, प्रदेश के सत्त्व का वर्णन है। बहुरि करणलब्धि का कथन विषैं तीन करणनि का नाम-कालादिक कहि तिनके स्वरूपादिक का वर्णन है।

तहां अधःकरण विषैं स्थितिबंधापसरणादिक आवश्यक हो हैं, तिनका वर्णन है।

अर अपूर्वकरण विषैं च्यारि आवश्यक, तिनविषैं गुणश्रेणी निर्जरा का कथन है। तहां अपकर्षण किया हुआ द्रव्य कौं जैसैं उपरितन स्थिति गुणश्रेणी आयाम उदयावली विषैं दीजिए है, सो वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ उत्कर्षण वा अपकर्षण किया हुआ द्रव्य का निक्षेप अर अतिस्थापन का विशेष वर्णन है। बहुरि गुणसंक्रमण इहां न संभवै है, सो जहां संभवै है ताका वर्णन है। बहुरि स्थितिकांडक, अनुभाग-कांडक के स्वरूप, प्रमाणादिक का अर स्थिति, अनुभागकांडकोत्करण काल का वर्णनपूर्वक स्थिति, अनुभाग, सत्त्व घटावने का वर्णन है।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषैं स्थितिकांडकादि विधान कहि ताके काल का संख्यातवां भाग रहें अंतरकरण हो है, ताके स्वरूप का, अर आयाम प्रमाण का, अर ताके निषेकनि का अभाव करि जहां निक्षेपण कीजिए है ताका इत्यादि वर्णन है। बहुरि अंतरकरण करने का अर प्रथम स्थिति का, अर अंतरायाम का काल वर्णन है। बहुरि अंतरकरण का काल पूर्ण भए पीछैं प्रथम स्थिति का काल विषैं दर्शनमोह के उपशमावने का विधान, काल, अनुक्रमादिक का, तहां आगाल, प्रत्यागाल जहां पाइए है वा न पाइए है ताका, दर्शनमोह की गुणश्रेणी जहां न होइ है, ताका इत्यादि अनेक वर्णन है।

बहुरि पीछैं अंतरायाम का काल प्राप्त भए उपशम सम्यक्त्व होने का, तहां एक मिथ्यात्व प्रकृति कौं तीन रूप परिणमावने के विधान का वर्णन है। बहुरि उपशम सम्यक्त्व का विधान विषैं जैसैं काल का अल्पबहुत्व पाइए है, तैसैं वर्णन है।

बहुरि प्रथमोपशम सम्यक्त्व विषैं मरण के अभाव का, अर तहां तैं सासादन होने के कारण का, अर उपशम सम्यक्त्व का प्रारंभ वा निष्ठापन विषैं जो-जो उपयोग, योग, लेश्या पाइए ताका, अर उपशम सम्यक्त्व के काल, स्वरूपादिक का, अर तिस काल कौं पूर्ण भए पीछैं एक कोई दर्शनमोह की प्रकृति उदय आवने का, तहां जैसैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्रव्य कौं अपकर्षण करि अंतरायामादि विषैं दीजिए है ताका, अर दर्शनमोह का उदय भए वेदक सम्यक्त्व वा मिश्र गुणस्थान वा मिथ्यादृष्टि गुणस्थान हो है, तिनके स्वरूप का वर्णन है ।

बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व का विधान वर्णन है । तहां क्षायिक सम्यक्त्व का प्रारंभ जहां होइ ताका, अर प्रारंभ-निष्ठापन अवस्था का वर्णन है । बहुरि अनंतानुबंधी के विसंयोजन का वर्णन है । तहां तीन करणनि का अर अनिवृत्तिकरण विषैं स्थिति घटने का अर अन्य कषायरूप परिणमने के विधान प्रमाणादिक का कथन है। बहुरि विश्राम लेइ दर्शनमोह की क्षपणा हो है, ताका विधान वर्णन है । तहां संभवता स्थितिकांडादिक का वर्णन है । अर मिथ्यात्व, मिश्रमोहनी, सम्यक्त्वमोहनी विषैं स्थिति घटावने का, वा संक्रमण होने का विधान वर्णन करि सम्यक्त्वमोहनी की आठ वर्ष प्रमाण स्थिति रहे अनेक क्रिया विशेष हो हैं, वा तहां गुणश्रेणी, स्थितिकांडकादिक विषैं विशेष हो है, तिनका वर्णन है । बहुरि कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि होने का वा तहां मरण होतैं लेश्या वा उपजने का, वा कृतकृत्य वेदक भए पीछै जे क्रिया विशेष हो हैं अर तहां अंतकांडक वा अंतफालि विषैं विशेष हो है, तिनका वर्णन है । बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व होने का वर्णन है । बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व के विधान विषैं संभवते काल का तेतीस जायगां अल्पबहुत्व वर्णन है । बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व के स्वरूप का वा मुक्त होने का इत्यादि वर्णन है ।

बहुरि चारित्र दोय प्रकार – देशचारित्र, सकलचारित्र । सो ए जाकैं होइ वा सन्मुख होतैं जो क्रिया होइ सो कहि देशचारित्र का वर्णन है । तहां वेदक सम्यक्त्व सहित देशचारित्र जो ग्रहै, ताके दोइ ही कारण होइ, गुणश्रेणी न होइ, देशसंयत कों प्राप्त भए गुणश्रेणी होइ इत्यादि वर्णन है । बहुरि एकांतवृद्धि देशसंयत के स्वरूपादिक का वर्णन है । बहुरि अधःप्रवृत्त देशसंयत का वर्णन है । तहां ताके स्वरूप-कालादिक का, अर तहां स्थिति-अनुभागखंडन न होइ, अर तहां देशसंयत तैं भ्रष्ट होइ देशसंयत कौं प्राप्त होइ ताकैं करण होने न होने का, अर देशसंयत विषैं संभवते गुणश्रेण्यादि विशेष का वर्णन है । बहुरि देशसंयम के विधान विषैं संभवते काल का अल्पबहुत्वता का वर्णन है । बहुरि जघन्य, उत्कृष्ट देशसंयम जाकैं होइ ताका, अर देशसंयम विषैं स्पर्द्धक का अविभागप्रतिच्छेद पाइए ताका वर्णन है । बहुरि देशसंयम के स्थाननि का, अर तिनके प्रतिपात, प्रतिपद्यमान, अनुभयरूप तीन प्रकारनि का, अर ते क्रम

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तैं जैसें जिनकैं जेते पाइए, अर बीचि में स्वामीरहित स्थान पाइए तिनका, अर तहां विशुद्धता का वर्णन है ।

बहुरि सकलचारित्र तीन प्रकार – क्षायोपशमिक, औपशमिक, क्षायिक; तहां क्षायोपशमिक चारित्र का वर्णन है । तिसविषैं यहु जाकैं होइ ताका, वा सन्मुख होतैं जो क्रिया होइ, ताका वर्णन करि वेदक सम्यक्त्व सहित चारित्र ग्रहण करनेवाले कैं दोय ही करण होइ इत्यादि अल्पबहुत्व पर्यंत सर्व कथन देशसंयतवत् है, ताका वर्णन है । बहुरि सकलसंयम स्पर्द्धक वा अविभागप्रतिच्छेदनि का कथन करि प्रतिपात, प्रतिपद्यमान, अनुभयरूप स्थान कहि ते जैसें जेते जिस जीव के पाइए, तिनका क्रम तैं वर्णन है । तहां विशुद्धता का वा म्लेच्छ के सकलसंयम संभवने का वा सामयिकादि संबंधी स्थाननि का इत्यादि विशेष वर्णन है । बहुरि औपशमिक चारित्र का वर्णन है । तहां वेदक सम्यक्त्वी जिस-जिस विधानपूर्वक क्षायिक सम्यक्त्वी वा द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी होइ उपशम श्रेणी चढै है, ताका वर्णन है । तहां द्वितीयोपशम सम्यक्त्व होने का विधान विषैं तीन करण, गुणश्रेणी, स्थितिकांडकादिक वा अंतरकरणादिक का विशेष वर्णन है ।

बहुरि उपशम श्रेणी विषैं आठ अधिकार हैं, तिनका वर्णन है । तहां प्रथम अधःकरण का वर्णन है । बहुरि दूसरा अपूर्वकरण का वर्णन है । इहां संभवते आवश्यकनि का वर्णन है। इहांतैं लगाय उपशम श्रेणी का चढ़ना वा उतरणा विषैं स्थितिबंधापसरण अर स्थितिकांडक वा अनुभागकांडक के आयामादिक के प्रमाण का, अर इनकौं होतैं जैसा-जैसा स्थितिबंध अर स्थितिसत्त्व वा अनुभागसत्त्व अवशेष रहै, ताका यथा ठिकाणैं बीचि-बीचि वर्णन है, सो कथन आगें होइगा तहां जानना । बहुरि अपूर्वकरण का वर्णन विषैं प्रसंग पाइ, अनुभाग के स्वरूप का वा वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धक, गुणहानि, नानागुणहानि का वर्णन है । अर इहां गुणश्रेणी, गुणसंक्रम हो है, अर प्रकृतिबंध का व्युच्छेद हो है, ताका वर्णन है । बहुरि अनिवृत्तिकरण का कथन विषैं दश करणनि विषैं तीन करणनि का अभाव हो है । ताका अनुक्रम लीएं कर्मनि का स्थितिबंध करनेरूप क्रमकरण हो है ताका, तहां असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणादिक का, अर कर्मप्रकृतिनि के स्पर्द्धक देशघाती करनेरूप देशघातीकरण का, अर कर्मप्रकृतिनि कैं केतेइक निषेकनि का अभाव करि अन्य निषेकनि विषैं निपेक्षण करनेरूप अंतरकरण का, अर अंतरकरण की समाप्तता भए युगपत् सात करननि का प्रारंभ हो है ताका, तहां ही आनुपूर्वी संक्रमण का – इत्यादि वर्णन करि नपुंसकवेद

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अर स्त्रीवेद अर छह हास्यादिक, पुरुषवेद, तीन क्रोध अर तीन माया अर दोय लोभ; इनके उपशमावने के विधान का अनुक्रम तैं वर्णन है। तहां गुणश्रेणी का वा स्थिति-अनुभागकांडकघात होने न होने का अर नपुंसकवेदादिक विषैं नवकबंध के स्वरूप-परिणमनादि विशेष का, वा प्रथम स्थिति के स्वरूप का आदि विशेष का, वा तहां आगाल, प्रत्यागाल गुणश्रेणी न हो है इत्यादि विशेषनि का, अर संक्रमणादि विशेष पाइए हैं, तिनका इत्यादि अनेक वर्णन पाइए है। बहुरि संज्वलन लोभ का उपशम विधान विषैं लोभ-वेदककाल के तीन भागनि का, अर तहां प्रथम स्थिति आदिक का वर्णन करि सूक्ष्मकृष्टि करने का विधान वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धकनि का कथन करि अर कृष्टि करने का वर्णन है। इहां बादरकृष्टि तो है ही नाहीं, सूक्ष्मकृष्टि है, तिनविषैं जैसें कर्मपरमाणु परिणमैं हैं वा तहां ही जैसें अनुभागादिक पाइए है, वा तहां अनुसमयापवर्त्तनरूप अनुभाग का घात हो है इत्यादिकनि का, अर उपशमावने आदि क्रियानि का वर्णन है। बहुरि सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान कौं प्राप्त होइ सूक्ष्मकृष्टि कौं प्राप्त जो लोभ, ताके उदय कौं भोगवने का, तहां संभवती गुणश्रेणी, प्रथम स्थिति आदि का इहां उदय-अनुदयरूप जैसें कृष्टि पाइए तिनका, वा संक्रमण-उपशमनादि क्रियानि का वर्णन है। बहुरि सर्व कषाय उपशमाय उपशांत कषाय हो है ताका, अर तहां संभवती गुणश्रेणी आदि क्रियानि का, अर इहां जे प्रकृति उदय हैं, तिनविषैं परिणामप्रत्यय अर भवप्रत्ययरूप विशेष का वर्णन है। ऐसैं संभवती इकईस चारित्रमोह की प्रकृति उपशमावने का विधान कहि उपशांत कषाय तैं पड़नेरूप दोय प्रकार प्रतिपात का, तहां भवक्षय निमित्त प्रतिपात तैं देव संबन्धी असंयत गुणस्थान कौं प्राप्त हौ है। तहां गुणश्रेणी वा अनुपशमन वा अंतर का पूरण करना इत्यादि जे क्रिया हो है, तिनका वर्णन है। अर अद्धाक्षय निमित्त तैं क्रम तैं पडि स्वस्थान अप्रमत्त पर्यंत आवै तहां गुणश्रेणी आदिक का, वा चढ़तें जे क्रिया भई थी, तिनका अनुक्रम तैं नष्ट होने का वर्णन है। बहुरि अप्रमत्त तैं पड़ने का तहां संभवति क्रियानि का अर अप्रमत्त तैं चढै तौ बहुरि श्रेणी मांडै ताका वर्णन है। ऐसैं पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध का उदय सहित जो श्रेणी मांडै, ताकी अपेक्षा वर्णन है। बहुरि पुरुषवेद, संज्वलन मान सहित आदि ग्यारह प्रकार उपशम श्रेणी चढनेवालों कैं जो-जो विशेष पाइए है, तिनका वर्णन है। बहुरि इस उपशम चारित्र विधान विषैं संभवते काल का अल्पबहुत्व वर्णन है।

बहुरि क्षपणासार के अनुसारि लीएं क्षायिकचारित्र के विधान का वर्णन है। तहां अधःकरणादि सोलह अधिकारनि का अर क्षपक श्रेणी कौं सन्मुख जीव का वर्णन है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अधःकरण का वर्णन है। तहां विशुद्धता की वृद्धि आदि च्यारि आवश्यकनि का, अर तहां संभवते परिणाम, योग, कषाय, उपयोग, लेश्या, वेद; अर प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशरूप कर्मनि का सत्त्व, बंध उदय, तिनका वर्णन है।

बहुरि अपूर्वकरण का वर्णन है। तहां संभवते स्थितिकांडकघात, अनुभाग-कांडकघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम इनका विशेष वर्णन है। अर इहां प्रकृतिबंध की व्युच्छित्ति हो है, तिनका वर्णन है। इहांतैं लगाय क्षपक श्रेणी विषैं जहां-जहां जैसा-जैसा स्थितिबंधापसरण, अर स्थितिकांडकघात, अनुभागकांडकघात पाइए अर इनकौं होतैं जैसा-जैसा स्थितिबंध, अर स्थितिसत्त्व अर अनुभागसत्त्व रहै, तिनका बीच-बीच वर्णन है, सो कथन होगा तहां जानना।

बहुरि अनिवृत्तिकरण का कथन है। तहां स्वरूप, गुणश्रेणी, स्थितिकांडकादि का वर्णन करि कर्मनि का क्रम लीएं स्थितिबंध, स्थितिसत्त्व करने रूप क्रमकरण का वर्णन है। बहुरि गुणश्रेणी विषैं असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा होने लगी, ताका वर्णन है।

बहुरि प्रत्याख्यान-अप्रत्याख्यानरूप आठ कषायनि के खिपावने का विधान वर्णन है। बहुरि निद्रा-निद्रा आदि सोलह प्रकृति खिपावने का विधान वर्णन है। बहुरि प्रकृतिनि की देशघाती स्पर्द्धकनि का बंध करनेरूप देशघातीकरण का वर्णन है। बहुरि च्यारि संज्वलन, नव नोकषायनि के केतेइक निषेकनि का अभाव करि अन्यत्र निक्षेपण करनेरूप अंतरकरण का वर्णन है। बहुरि नपुंसकवेद खिपावने का विधान वर्णन है। तहां संक्रम का वा युगपत् सात क्रियानि का प्रारंभ हो है, तिनका इत्यादि वर्णन है। बहुरि स्त्रीवेद क्षपणा का वर्णन है। बहुरि छह नोकषाय अर पुरुषवेद इनकी क्षपणा का विधान वर्णन है। बहुरि अश्वकर्णकरणसहित अपूर्वस्पर्द्धक करने का वर्णन है। तहां पूर्वस्पर्द्धक जानने कौं वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धकनि का अर तिन-विषैं देशघाती, सर्वघातिनि के विभाग का, वा वर्गणा की समानता, असमानता आदिक का कथन करि अश्वकरण के स्वरूप, विधान क्रोधादिकनि के अनुभाग का प्रमाणादिक का अर अपूर्वस्पर्द्धकनि के स्वरूप प्रमाण का तिनविषैं द्रव्य-अनुभागा-दिक का, तहां समय-समय संबंधी क्रिया का वा उदयादिक का बहुत वर्णन है।

बहुरि कृष्टिकरण का वर्णन है। तहां क्रोधवेदककाल के विभाग का, अर बादर-कृष्टि के विधान विषैं कृष्टिनि के स्वरूप का, तहां बारह संग्रहकृष्टि, एक-एक संग्रहकृष्टि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विषैं अनंती अंतरकृष्टि तिनका, अर तिनविषैं प्रदेश अनुभागादिक के प्रमाण का, तहां समय-समय संबंधी क्रियानि का वा उदयादिक का अनेक वर्णन है। बहुरि कृष्टि वेदना का विधान वर्णन है। तहां कृष्टिनि के उदयादिक का, वा संक्रम का, वा घात करने का, वा समय-समय संबंधीं क्रिया का विशेष वर्णन करि क्रम तैं दश संग्रहकृष्टिनि के भोगवने का विधान-प्रमाणादिक का बहुत कथन करि तिनकी क्षपणा का विधान वर्णन है। बहुरि अन्य प्रकृति संक्रमण करि इनरूप परिणामी, तिनके द्रव्यसहित लोभ की द्वितीय, तृतीय संग्रहकृष्टि के द्रव्य कौं सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणमावै है, ताके विधान-स्वरूप-प्रमाणादिक का वर्णन है। अैसैं अनिवृत्तिकरण का बहुत वर्णन है। याविषैं गुणश्रेणी-अनुभागघात के विशेष आदि बीचि-बीचि अनेक कथन पाइए है, सो आगै कथन होइगा तहां जानना।

बहुरि सूक्ष्मसांपराय का वर्णन है। तहां स्थिति, अनुभाग का घात वा गुण-श्रेणी आदि का कथन करि बादरकृष्टि संबंधी अर्थ का निरूपण पूर्वक सूक्ष्मसांपराय संबंधी कृष्टिनि के अर्थ का निरूपण, अर तहां सूक्ष्मकृष्टिनि का उदय, अनुदय, प्रमाण अर संक्रमण, क्षयादिक का विधान इत्यादि अनेक वर्णन है। बहुरि यहु तौ पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध का उदय सहित श्रेणी चढ्या, ताकी अपेक्षा कथन है। बहुरि पुरुषवेद, संज्वलन मान आदि का उदय सहित ग्यारह प्रकार श्रेणी चढने वालों कैं जो-जो विशेष पाइए, ताका वर्णन है। अैसैं कृष्टिवेदना पूर्ण भएं।

बहुरि क्षीणकषाय का वर्णन। तहां ईर्यापथबंध का, अर स्थिति-अनुभागघात वा गुणश्रेणी आदि का, वा तहां संभवते ध्यानादिक का अर ज्ञानावरणादिक के क्षय होने के विधान का, अर इहाँ शरीर सम्बन्धी निगोद जीवनि के अभाव होने के क्रम का इत्यादि वर्णन है।

बहुरि सयोगकेवली का वर्णन है। तहां ताके महिमा का अर गुणश्रेणी का अर विहार-आहारादिक होने न होने का वर्णन करि अंतर्मुहूर्त्त मात्र आयु रहै आवर्जितकरण हो है ताका, तहां गुणश्रेणी आदि का, अर केवलसमुद्घात का, तहां दंड-कपाटादिक के विधान वा क्षेत्रप्रमाणादिक का, वा तहां संभवती स्थिति-अनुभाग घटने आदि क्रियानि का वा योगनि का इत्यादि वर्णन है। बहुरि बादर मन-वचन काय योग कौं निरोधि सूक्ष्म करने का, तहां जैसें योग हो है, ताका अर सूक्ष्म मनोयोग, वचनयोग, उच्छ्वास-निश्वास, काययोग के निरोध करने का, तहां काययोग के

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पूर्वस्पर्द्धकनि के अपूर्वस्पर्द्धक अर तिनकी सूक्ष्मकृष्टि करिए है, तिनका स्वरूप, विधान, प्रमाण, समय-समय सम्बन्धी क्रियाविशेष इत्यादिक का अर करी सूक्ष्मकृष्टि, ताकौं भोगवता सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती ध्यान युक्त हो है, ताका वा तहां संभवते स्थिति-अनुभागघात वा गुणश्रेणी आदि विशेष का वर्णन है ।

बहुरि अयोगकेवली का वर्णन है । तहां ताकी स्थिति का, शैलेश्यपना का, ध्यान का, तहां अवशेष सर्व प्रकृति खिपवाने का वर्णन है ।

बहुरि सिद्ध भगवान का वर्णन है । तहां सुखादिक का, महिमा का, स्थान का, अन्य मतोक्त स्वरूप के निराकरण का इत्यादि वर्णन है । अैसें लब्धिसार क्षपणासार कथन की सूचनिका जाननी ।

बहुरि अन्त विषैं अपने किछू समाचार प्रगट करि इस सम्यग्ज्ञानचंद्रिका की समाप्तता होतें कृतकृत्य होइ आनंद दशा कौं प्राप्त होना होइगा । अैसें सूचनिका करि ग्रंथसमुद्र के अर्थ संक्षेपपनैं प्रकट किए हैं ।

इति सूचनिका ।

—०—

परिकर्माष्टक सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि इस करणानुयोगरूप शास्त्र के अभ्यास करने के अर्थि गणित का ज्ञान अवश्य चाहिये, जातैं अलंकारादिक जानैं प्रथमानुयोग का, गणितादिक जानैं करणानुयोग का, सुभाषितादिक जानैं चरणानुयोग का, न्यायादि जानैं द्रव्यानुयोग का विशिष्ट ज्ञान हो है, तातैं गणित ग्रंथनि का अभ्यास करना । अर न बनैं तौ परिकर्माष्टक तौ अवश्य जान्या चाहिये । जातैं याकौं जाणें अन्य गणित कर्मनि का भी विधान जानि तिनकौं जानैं अर इस शास्त्र विषैं प्रवेश पावै । तातैं इस शास्त्र का अभ्यास करने को प्रयोजनमात्र परिकर्माष्टक का वर्णन इहां करिए है–

तहां परिकर्माष्टक विषैं संकलन, व्यवकलन, गुणकार, भागहार, वर्ग, घन, वर्गमूल, घनमूल ए आठ नाम जानने । ए लौकिक गणित विषैं भी संभवै हैं, अर अलौकिक गणित विषैं भी संभवै हैं । सो लौकिक गणित तौ प्रवृत्ति विषैं प्रसिद्ध ही है । अर अलौकिक गणित जघन्य संख्यातादिक वा पल्यादिक का व्याख्यान आगैं जीवसमासाधिकार पूर्ण भए पीछैं होइगा, तहां जानना । अब संकलनादिक का स्वरूप

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कहिए है। किसी प्रमाण कौं किसी प्रमाण विषैं जोडिये तहां संकलन कहिए। जैसें सात विषैं पांच जोडें बारह होइ, वा पुद्गलराशि विषैं जीवादिक का प्रमाण जोडें सर्व द्रव्यनि का प्रमाण होइ है।

बहुरि किसी प्रमाण विषैं किसी प्रमाण कौं घटाइए, तहां व्यवकलन कहिए। जैसें बारह विषैं पांच घटाऐं सात होय, वा संसारी राशि विषैं त्रसराशि घटाऐं स्थावरनि का प्रमाण होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौं किसी प्रमाण करि गुणिए, तहां गुणकार कहिए। जैसें पांच कौं च्यारि करि गुणिए वीस होइ, वा जीवराशि कौं अनन्त करि गुणैं पुद्गलराशि होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौं किसी प्रमाण का जहां भाग दीजिए, तहां भागहार कहिए। जैसें वीस कौं च्यारि करि भाग दीऐ पांच होइ, वा जगत् श्रेणी कौं सात का भाग दीए राजू होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौं दोय जायगां मांडि परस्पर गुणिए, तहां तिस प्रमाण का वर्ग कहिए। जैसें पांच कौं दोय जायगां मांडि परस्पर गुणें पाँच का वर्ग पचीस होइ, वा सूच्यंगुल कौं दोय जायगां मांडि, परस्पर गुणैं, सूच्यंगुल का वर्ग प्रतरांगुल होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौं तीन जायगां मांडि, परस्पर गुणैं, तिस प्रमाण को घन कहिए। जैसें पांच कों तीन जायगां मांडि, परस्पर गुणैं, पांच का घन एक सौ पचीस होइ। वा जगत् श्रेणी कौं तीन जायगां मांडि परस्पर गुणें लोक होइ।

बहुरि जो प्रमाण जाका वर्ग कीये होइ, तिस प्रमाण का सो वर्गमूल कहिए। जैसें पचीस पांच का वर्ग कीए होइ तातैं पचीस का वर्गमूल पांच है। वा प्रतरांगुल है सो सूच्यंगुल का वर्ग कीए हो है, तातैं प्रतरांगुल का वर्गमूल सूच्यंगुल है।

बहुरि जो प्रमाण जाका घन कीए होइ, तिस प्रमाण का सो घनमूल कहिए। जैसें एक सौ पचीस पांच का घन कीए होइ, तातैं एक सौ पचीस का घनमूल पांच है। वा लोक है सो जगत्श्रेणी का घन कीए हो है, तातैं लोक का घनमूल जगत्श्रेणी है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अब इहां केतेइक संज्ञाविशेष कहिए है। संकलन विषैं जोडने योग्य राशि का नाम धन है। मूलराशि कौं तिस धन करि अधिक कहिए। जैसैं पांच अधिक कोटि वा जीवराश्यादिक करि अधिक पुद्‌गल इत्यादिक जानने।

बहुरि व्यवकलन विषैं घटावने योग्य राशि का नाम ऋण है। मूलराशि कौं तिस ऋण करि हीन वा न्यून वा शोधित वा स्फोटित इत्यादि कहिए। जैसैं पांच करि हीन कोटि वा त्रसराशि हीन संसारी इत्यादि जानने। कहीं मूलराशि का नाम धन भी कहिए है।

बहुरि गुणकार विषैं जाकौं गुणिए, ताका नाम गुण्य कहिए।

जाकरि गुणिए, ताका नाम गुणकार वा गुणक कहिए।

गुण्यराशि कौं गुणकार करि गुणित वा हत वा अभ्यस्त वा घ्नत इत्यादि कहिए। जैसैं पंचगुणित लक्ष वा असंख्यात करि गुणित लोक कहिए। कहीं गुणकार प्रमाण गुण्य कहिए। जैसैं पांच गुणां वीस कौं पांच वीसी कहिए वा असंख्यातगुणां लोक कूं असंख्यातलोक कहिए इत्यादिक जानने। गुनने का नाम गुणन वा हनन वा घात इत्यादि कहिए है।

बहुरि भागहार विषैं जाकौं भाग दीजिए ताका नाम भाज्य वा हार्य इत्यादि है। अर जाका भाग दीजिए ताका नाम भागहार वा हार वा भाजक इत्यादि है। भाज्य राशि कूं भागहार करि भाजित भक्त वा हत वा खंडित इत्यादि कहिए। जैसैं पांच करि भाजित कोटि वा असंख्यात करि भाजित पल्य इत्यादिक जानने। भागहार का भाग देइ एक भाग ग्रहण करना होइ, तहां तेथवां भाग वा एक भाग कहिये। जैसैं वीस का चौथा भाग, वा पल्य का असंख्यातवां भाग वा असंख्यातैक भाग इत्यादि जानना।

बहुरि एक भाग विना अवशेष भाग ग्रहण करने होई तहां बहुभाग कहिए। जैसैं वीस के च्यारि बहुभाग वा पल्य का असंख्यात बहुभाग इत्यादि जानने।

बहुरि वर्ग का नाम कृति भी है। बहुरि वर्गमूल का नाम कृतिमूल वा मूल वा पद वा प्रथम मूल भी है। बहुरि प्रथम मूल के मूल कौं द्वितीय मूल कहिए। द्वितीय मूल के मूल कौं तृतीय मूल कहिए। अैसैं चतुर्थादि मूल जानने। जैसैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पैंसठ हजार पांच सौ छत्तीस का प्रथम मूल दोय सै छप्पन, द्वितीय मूल सोलह, तृतीय मूल च्यारि, चतुर्थ मूल दोय होइ। ऐसैं ही पल्य वा केवलज्ञानादि के प्रथमादि मूल जानने। ऐसैं अन्य भी अनेक संज्ञाविशेष यथासंभव जानने।

अब इहां विधान कहिए है। सो प्रथम लौकिक गणित अपेक्षा कहिए है। तहां ऐसा जानना **'अंकानां वामतो गतिः'** अंकनि का अनुक्रम बाई तरफ सेती है। जैसें दोय सै छप्पन (२५६) के तीन अंकनि विषैं छक्का आदि अंक, पांचा दूसरा अंक, दूवा अंत अंक कहिये। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि अंकनि कौं क्रम तैं एक स्थानीय, दश स्थानीय, शत स्थानीय, सहस्र स्थानीय आदि कहिए। प्रवृत्ति विषैं इनही कौं इकवाई, दहाई, सैंकडा, हजार आदि कहिए है।

बहुरि संकलनादि होतैं प्रमाण ल्यावने कौं गणित कर्म कौं कारण जे करण-सूत्र, तिनकरि गणित शास्त्रनि विषैं अनेक प्रकार विधान कह्या है, सो तहातैं जानना वा त्रिलोकसार की भाषा टीका बनी है, तहां लौकिक गणित का प्रयोजन जानि पीठबंध विषैं किछु वर्णन किया है, सो तहांतैं जानना।

इस शास्त्र विषैं गणित का कथन की मुख्यता नाहीं वा लौकिक गणित का बहुत विशेष प्रयोजन नाहीं तातैं इहां बहुत वर्णन न करिए है। विधान का स्वरूप मात्र दिखावने कौं एक प्रकार करि किंचित् वर्णन करिए है।

तहां संकलन विषैं जिनका संकलन करना होइ, तिनके एक स्थानीय आदि अंकनि कौं क्रम तैं यथास्थान जोडैं जो-जो अंक आवै, सो-सो अंक जोड विषैं क्रम तैं यथास्थान लिखना। सो प्रवृत्ति विषैं जैसैं जोड देने का विधान है, तैसैं ही यहु जानना। बहुरि जो एक स्थानीय आदि अंक जोडैं दोय, तीन आदि अंक आवैं तौ प्रथम अंक कौं जोड विषैं पहिले लिखिए। द्वितीय आदि अंकनि कौं दश स्थानीय आदि अंकनि विषैं जोडिए। याकौं प्रवृत्ति विषैं हाथिलागा कहिए है। ऐसैं करतैं जो अंक होइ, सो जोड्या हुवा प्रमाण जानना।

इहां उदाहरण – जैसैं दोय सै छप्पन अर चौरासी (२५६+८४) जोडिए, तहां एक स्थानीय छह अर च्यारि जोडैं दश भए। तहां जोड विषैं एक स्थानीय बिंदी लिखी, अर रह्या एक, ताकौं अर दश स्थानीय पांचा, आठा इन कौं जोडैं,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चौदह भए । तहां जोड विषैं दश स्थानीय चौका लिख्या अर रह्या एका, ताकौं अर शत स्थानीय दूवा कौं जोडैं, तीन भया, सो जोड विषैं शत स्थानीय लिख्या । अैसैं जोडैं तीन सै चालीस भये । अैसैं ही अन्यत्र जानना ।

बहुरि व्यवकलन विषैं मूलराशि के एक स्थानीय आदि अंकनि विषैं ऋण राशि के एक स्थानीय आदि अंकनि कौं यथाक्रम घटाइए । जो मूलराशि के एक स्थानीय आदि अंक तैं ऋणराशि के एक स्थानीय आदि अंक अधिक प्रमाण लीए होइ तौ धनराशि के दश स्थानीय आदि अंक विषैं एक घटाइ धनराशि के एक स्थानीय आदि अंक विषैं दश जोडि, तामैं ऋणराशि का अंक घटावना । सो प्रवृत्ति विषैं जैसैं बाकी काढने का विधान है, तैसैं ही यहु जानना । अैसैं करतैं जो होइ, सो अवशेष प्रमाण जानना ।

इहां उदाहरण – जैसैं छह सै पिचहत्तरि मूलराशि विषैं बाणवै (६७५–९२) ऋण घटावना होइ, तहां एक स्थानीय पांच में दूवा घटाए तीन रहे अर दश स्थानीय सात विषैं नव घटै नाहीं तातैं शतस्थानीय छक्का मैं एक घटाइ ताके दश सात विषैं जोडैं सतरह भए, तामैं नौ घटाइ आठ रहे शत स्थानीय छक्का में एक घटायें पांच रहे, तामैं ऋण का अंक कोऊ घटावने कौं है नाहीं तातैं, पांच ही रहे । अैसैं अवशेष पांच सै तियासी प्रमाण आया । अैसैं ही अन्यत्र जानना ।

बहुरि गुणाकार विषैं गुण्य के अंत अंक तैं लगाय आदि अंक पर्यंत एक-एक अंक कौं क्रम तैं गुणकार के अंकनि करि गुणि यथास्थान लिखिए वा जोडिए, तब गुणित राशि का प्रमाण आवै ।

इहां उदाहरण – जैसैं गुण्य दोय सै छप्पन अर गुणकार सोलह (२५६×१६) । तहां गुण्य का अंत अंक दूवा कौं सोलह करि गुणना । तहां छक्का तौ दूवा ऊपरि अर एका ताके पीछै $\overset{१६}{२५६}$ अैसैं स्थापन करि एक करि दूवा कौ गुणैं, दोय पाये, सो तो एक के नीचै लिखना । अर छह करि दूवा कौ गुणै बारह पाए, तिसविषैं दूवा तौ गुण्य की जायगां लिखना एका पहिलैं दोय लिख्या था तामैं जोडना तब अैसा भया [३२ ५६] । बहुरि अैसैं ही गुण्य का उपांत अंक पांचा, ताकौ सोलह करि गुणना तहां अैसैं $\overset{१६}{३२,५६}$ स्थापना करि एका करि पांचा कौं गुणैं, पांच भये, सो तौ एका के नीचै दूवा, तामैं जोडिए अर छक्का करि पांचा कौ गुणै तीस भए, तहां बिंदी पांचा की जायगां मांडि तीन पीछले अंकनि विषैं जोडिए अैसैं कीए

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ऐसा ४००६ भया। बहुरि गुण्य का आदि अंक छक्का कौं सोलह करि गुणना तहां ऐसें $\begin{matrix}१६\\४००६\end{matrix}$ स्थापि एक करि छह कों गुणें छह भये सो तौ एका के नीचै बिंदी तामैं जोडिए अर छ कों छ करि गुणै छत्तीस भया, तहां छक्का तौ गुण्य का छक्का की जायगां स्थापना, तीया पीछला अंक छक्का तामैं जोडना, ऐंसैं कीए ऐसा ४०९६ भया। या प्रकार गुणित राशि च्यारि हजार छिनवै आया। ऐंसैं ही अन्यत्र विधान जानना।

बहुरि भागहार विषैं भाज्य के जेते अंकनि विषैं भागहार का भाग देना संभवै, तितने अंकनि कौं ताका भाग देइ पाया अंक कौं जुदा लिखि तिस पाया अंक करि भागहार कौं गुणैं जो प्रमाण होइ, तितना जाका भाग दीया था, तामैं घटाय अवशेष तहां लिखना। बहुरि तैसैं ही भाग दीए जो अंक पावै, ताकौं पूर्वे लिख्या था अंक, ताके आगै लिखि ताकरि भागहार कौं गुणि तैसैं ही घटावना। ऐसैं यावत् भाज्यराशि निःशेष होइ तावत् कीए जुदे लिखे अंक प्रमाण एक भाग आवैं है।

इहां उदाहरण-जैसैं भाज्य च्यारि हजार छिनवै, भागहार सोलह। तहां भाज्य का अन्त अंक च्यारि कौं तौ सोलह का भाग संभवै नाहीं तातैं दोय अंके चालीस तिनकौं भाग देना, तहां ऐसैं $\begin{matrix}४०९६\\१६\end{matrix}$ लिखि। इहां तीन आदि अंकनि करि सोलह कौं गुणै, तौ चालीस तैं अधिक होइ जाय तातैं दोइ पाये सो दूवा जुदा लिखि, ताकरि सोलह कौं गुणि चालीस मैं घटाए ऐसा ८९६ भया।

बहुरि इहां निवासी कौं सोलह का भाग दीए $\begin{matrix}८९६\\१६\end{matrix}$ पांच पाए, सो दूवा के आगैं लिखि, ताकरि सोलह कौं गुनि निवासी में घटाए ऐसा ९६ रह्या। याकौं सोलह का भाग दीएं छह पाय, सो पांचा के आगैं लिखि, ताकरि सोलह कौं गुणि छिनवै भए, सो घटाए भाज्यराशि निःशेष भया। ऐसैं जुदे लिखे अंक तिनकरि एक भाग का प्रमाण दोय सै छप्पन आवै है। बहुरि '**भागो नास्ति लब्धं शून्यं**' इस वचन तैं जहां भाग टूटि जाय तहां बिंदी पावै। जैसैं भाज्य तीन हजार छत्तीस (३०३६) भागहार छह (६) तहां तीस कौं छह का भाग दीए, पांच पाए, तिनकरि छह कौं गुणि, घटाए तीस निःशेष होय गया, सो इहां भाग टूट्या, तातैं पांच के आगैं बिंदी लिखिए। बहुरि अवशेष छत्तीस कौं छह का भाग दीए छह पाए, सो बिंदी के आगैं लिखि, ताकरि छह कौं गुणि घटाएं सर्व भाज्य निःशेष भया। ऐसैं लब्ध प्रमाण पांच सै छै पाया। ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि वर्ग विषैं गुणकारवत् विधान जानना। जातैं दोय जायगां समान राशि लिखि एक कौं गुण्य, एक कौं गुणकार स्थापि परस्पर गुणें वर्ग हो है। जैसें सोलह कौं सोलह करि गुणैं, सोलह का वर्ग दोय सै छप्पन हो है।

बहुरि घन विषैं भी गुणकारवत् ही विधान है। जातैं तीन जायगां समान राशि मांडि परस्पर गुणन करना। तहां पहिला राशिरूप गुण्य कौं दूसरा राशिरूप गुणकार करि गुणें जो (प्रमाण) होइ ताकौं गुण्य स्थापि, ताकौं तीसरा राशिरूप गुणकार करि गुणें जो प्रमाण आवै, सोइ तिस राशि का घन जानना।

जैसें सोलह कौं सोलह करि गुणैं, दोय सै छप्पन, बहुरि ताकों सोलह करि गुणैं च्यार हजार छिनवे होइ, सोई सोलह का घन है। ऐसें ही अन्यत्र जानना।

बहुरि वर्गमूल विषैं वर्गरूप राशि के प्रथम अंक उपरि विषम की दूसरे अंक उपरि सम की तीसरे (अंक) उपरि विषम की चौथे (अंक) उपरि सम की ऐसैं क्रम तैं अन्त अंक पर्यंत उभी आडी लीक करि सहनानी करनी। जो अन्त का अंक सम होय तो तहां उपांत का अर अन्त का दोऊ अंकनि कौं विषम संज्ञा जाननी। तहां अन्त का एक वा दोय जो विषम अंक, ताका प्रमाण विषैं जिस अंक का वर्ग संभवै, ताका वर्ग करि अन्त का विषम प्रमाण में घटावना। अवशेष रहै सो तहां लिखना। बहुरि जाका वर्ग कीया था, तिस मूल अंक कौं जुदा लिखना। बहुरि अवशेष रहे अंकनि करि सहित जो तिस विषम के आगैं सम अंक, ताके प्रमाण कौं जुदा स्थाप्या जो अंक, तातैं दूणा प्रमाण रूप भागहार का भाग दीए जो अंक पावैं, ताकौं तिस जुदा स्थाप्या, अंक के आगैं लिखना। अर तिस अंक करि गुण्या हुवा भागहार का प्रमाण को तिस भाज्य में घटाइ अवशेष तहां लिखि देना। बहुरि इस अवशेष सहित जो तिस सम के आगैं विषम अंक, तामैं जो अंक पाया था, ताका वर्ग कीए जो प्रमाण होइ, सो घटावना अवशेष तहां लिखना। बहुरि इस अवशेष सहित जो तिस विषम के आगैं सम अंक, ताकौं तिन जुदे लिखे हुए सर्व अंकरूप प्रमाण तैं दूणा प्रमाण रूप भागहारा का भाग देइ पाया अंक कौं तिन जुदे लिखे हुए अंकनि के आगैं लिखना। अर इस पाया अंक करि भागहार कौं गुणि भाज्य में घटाइ, अवशेष तहां लिखना। बहुरि इस अवशेष सहित जो सम अंक के आगैं विषम अंक ताविषैं पाया अंक का वर्ग घटावना। ऐसैं ही क्रमतैं यावत् वर्गित राशि निःशेष होय, तावत् कीए वर्गमूल का प्रमाण आवै है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां उदाहरण – जैसें वर्गित राशि पैंसठ हजार पांच सौ छत्तीस (६५५३६) इहां विषम-सम की सहनानी ऐसी $\overset{|-|-|}{६५५३६}$ करि अन्त का विषम छक्का तामैं तीन का वर्ग तौ बहुत होइ जाइ, तातैं संभवता दोय का वर्ग च्यारि घटाइ अवशेष दोइ तहां लिखना। अर मूल अंक दूवा जुदा पंक्ति विषैं लिखना। बहुरि तिस अवशेष सहित आगिला सब अंक ऐसा २५। ताकौं जुदा लिख्या जो दूवा तातैं दूणा च्यारि का भाग दीए, छह पावैं; परंतु आगैं वर्ग घटावने का निर्वाह नाहीं; तातैं पांच पाया, सो जुदा लिख्या हुआ दूवा के आगैं लिखना। अर पाया अंक पांच करि भागहार च्यारि कौं गुणि, भाज्य मैं घटाएं, पचीस की जायगां पांच रह्या, तिस सहित आगिला विषम ऐसा (५५) तामैं पाया अंक पांच का वर्ग पचीस घटाए, अवशेष ऐसा ३०, तिस सहित आगिला सम ऐसा ३०३, ताकौं जुदे लिखे अंकनि तैं दूणा प्रमाण पचास का भाग दीए छह पाया, सो जुदे लिखे अंकनि के आगैं लिखना। अर छह करि भागहार पचास कौं गुणि, भाज्य मैं घटाए अवशेष ऐसा ३ रह्या, तिस सहित आगिला विषम ऐसा ३६, यामैं पाया अंक छह का वर्ग घटाए राशि निःशेष भया। ऐसैं जुदे लिखे हूवे अंकनि करि पैंसठ हजार पांच सै छत्तीस का वर्गमूल दोए सै छप्पन आया। ऐसैं ही अन्यत्र विधान जानना।

बहुरि घनमूल विषैं घन रूप राशि के अंकनि उपरि पहिला घन, दूजा-तीजा अघन चौथा घन, पाचवाँ-छठा अघन ऐसैं क्रमतैं ऊभी आडी लीक रूप सहनानी करनी। जो अंत का घन अंक न होइ तो अन्त उपांत दोय अंकनि की घन संज्ञा जाननी। अर ते दोऊ घन न होइ तौ अन्त तैं तीन अंकनि की घन संज्ञा जाननी। तहां एक वा दोय वा तीन अंक रूप जो अन्त का घन, तामैं जाका घन संभवै ताका घन करि ताकौं अंत का घन अंकरूप प्रमाण मैं घटाइ अवशेष तहां लिखना। अर जाका घन कीया था, तिस मूल अंक कौ जुदा पंक्ति विषैं स्थापना। बहुरि तिस अवशेष सहित आगिला अंक कौं तिस मूल अंक के वर्ग तैं तिगुणा भागहार का भाग देना जो अंक पावैं, ताकौं जुदा लिख्या हुवा अंक के आगै लिखना। अर पाया अंक करि भागहार कौं गुणी, भाज्य में घटाइ अवशेष तहां लिखि देना। बहुरि इस अवशेष सहित आगिला अंक, ताविषैं पाया अंक के वर्ग कौं पूर्वं पंक्ति विषैं तिष्ठते अंकनि करि गुणैं, जो प्रमाण होइ, ताकौ तिगुणा करि घटाइ देना। अवशेष तहां लिखना। बहुरि इस अवशेष सहित आगिला अंक विषैं तिस ही पाया अंक का घन घटावना। बहुरि अवशेष सहित आगिला अंक कौं जुदा लिखि अंकनि के प्रमाण

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का वर्ग कौं तिगुणा करि निर्वाह होइ, तैसैं भाग देना । पाया अंक पंक्ति विषैं आगैं लिखना । ऐसैं ही अनुक्रम तैं यावत् घनराशि निःशेष होइ तावत् कीए घनमूल का प्रमाण आवै है ।

इहां उदाहरण – जैसैं घनराशि पंद्रह हजार छह सै पच्चीस (१५६२५) इहां घनअघन की सहनानी कीए ऐसा (१५६२५) इहां अन्त अंक घन नाहीं तातैं दोय अंक रूप अन्तघन १५ । इहां तीन का घन कीए बहुत होइ जाइ, तातैं दोय का घन आठ घटाइ, तहां अवशेष सात लिखना । अर घनमूल दूवा जुदी पंक्ति विषैं लिखना बहुरि तिस अवशेष सहित आगिला अंक ऐसा (७६) ताकौं मूल अंक का वर्ग च्यारि, ताका तिगुणा बारह, ताका भाग दिए छह पावैं, परंतु आगै निर्वाह नाहीं तातैं पांच पाया सो दूवा के आगैं पंक्ति विषैं लिखना अर इस पांच करि भागहार बारह कौं गुणि, भाज्य में घटाए, अवशेष सोलह (१६) तिस सहित आगिला अंक ऐसा (१६२) तामैं पाया अंक पांच, ताका वर्ग पचीस, ताकौं पूर्वे पंक्ति विषैं तिष्ठै था दूवा, ताकरी गुणे पचास, तिनके तिगुणे ड्योढ सैं घटाएं अवशेष बारह, तिस सहित आगिला अंक ऐसा (१२५), यामैं पांच का घन घटाएं राशि निःशेष भया ऐसैं पंद्रह हजार छःसै पच्चीस का घनमूल पच्चीस प्रमाण आया । ऐसैं ही अन्यत्र जानना ।

ऐसैं वर्णन करि अब भिन्न परिकर्माष्टक कहिए है । तहां हार अर अंशनि का संकलनादिक जानना । हार अर अंश कहा कहिए । जैसैं जहां छह पंचास कहे, तहां एक के पंचास अंश कीए तिह समान छह अंश जानने । वा छह का पांचवां भाग जानना । तहां छह कौं तो हार वा हर वा छेद कहिए । अर पांच कौं अंश वा लव इत्यादिक कहिए । तहां हार कौं ऊपरि लिखिए, अंश कौं नीचै लिखिए । जैसैं छह पंचास कौं ऐसा ६/५० लिखिए । ऐसैं ही अन्यत्र जानना । तहाँ भिन्न संकलन-व्यवकलन के अर्थि भागजाति, प्रभागजाति, भागानुबंध, भागापवाह ए च्यारि जाति हैं । तिन-विषैं इहां विशेष प्रयोजनभूत समच्छेद विधान लीए भागजाति कहिए है । जुदे-जुदे हार अर तिनके अंश लिखि एक-एक हार कौं अन्य हारनि के अंशनि करि गुणिए अर सर्व अंशनि कौं परस्पर गुणिए । ऐसैं करि जो संकलन करना होइ तौ परस्पर हारनि कौं जोड दीजिए अर व्यवकलन करना होइ तो मूलराशि के हारनि विषैं ऋणराशि के हार घटाइ दीजिए । अर अंश सबनि के समान भए । तातैं अंश परस्पर गुणे जेते भए तेते ही राखिए । ऐसैं समान अंश होने तैं याका नाम समच्छेद विधान है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां उदाहरण – तहां संकलन विषैं पांच छट्ठा अंश दोय तिहाइ तीन पाव (चौथाई) इनकौं जोडना होइ तहां |५/६|२/३|३/४| ऐसा लिखि तहां पांच हार कौं अन्य के तीन च्यारि-अंशनि करि अर दोय हार कौं अन्य के छह-च्यारि अंशनि करि अर तीन हार कौं अन्य के छह-तीन अंशनि करि गुणे साठि अडतालीस चौवन हार भए। अर अंशनि कौं परस्पर गुणे सर्वत्र बहत्तर अंश |६०/७२|४८/७२|५४/७२| ऐसैं भए। इहां हारनि कौं जोडे एक सो बासठ हार अर बहत्तर अंश भए तहां हार कौं अंश का भाग दीए दोय पाये अर अवशेष अठारह का बहत्तरिवां भाग रह्या। ताका अठारह करि अपवर्त्तन कीए एक का चौथा भाग भया। ऐसैं तिनका जोड सवा दोय आया। कोई संभवता प्रमाण का भाग देइ भाज्य वा भाजक राशि का महत् प्रमाण कौं थोरा कीजिए (वा निःशेष कीजिए) तहां अपवर्त्तन संज्ञा जाननी सो इहां अठारह का भाग दीए भाज्य अठारह था, तहां एक भया अर भागहार बहत्तर था, तहां च्यारि भया, तातैं अठारह करि अपवर्त्तन भया कह्या। ऐसैं ही अन्यत्र अपवर्त्तन का स्वरूप जानना।

बहुरि व्यवकलन विषैं जैसैं तीन विषैं पांच चौथा अंश घटावना। तहां **'कल्प्यो हरो रूपमहारराशेः'** इस वचन तैं जाकैं अंश न होइ, तहां एक अंश कल्पना, सो इहां तीनका अंश नाहीं, तातैं एक अंश कल्पि |३/१|५/४| ऐसैं लिखना इहां तीन हारनि कौं अन्य के च्यारि अंश करि, अर पांच हारनि कौं अन्य के एक अंश करि गुणे अर अंशनि कौं परस्पर गुणे |१२/४|५/४| ऐसा भया। इहां बारह हारनि विषैं पांच घटाएं सात हार भए। अर अंश च्यारि भए। तहां हार कौं अंश का भाग दीए एक अर तीन का चौथा भाग पौण इतना फल आया।

बहुरी भिन्न गुणकार विषैं गुण्य अर गुणकार के हार कौं हार करि अंश कौं अंश करि गुणन करना। जैसैं दश की चोथाइ कौ च्यारि की तिहाइ करि गुणना होइ, तहां ऐसा |१०/४|४/३| लिखि गुण्य-गुणकार के हार अर अंशनि कौं गुणें चालीस हार अर बारह अंश |४०/१२| भए तहां हार कौं अंश का भाग दीए तीन पाया। अब शेष च्यारि का बारहवां भाग ताकौं च्यारि करि अपवर्त्तन कीए एक का तीसरा भाग भया। ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि भिन्न भागहार विषैं भाजक के हारनि कौं अंश कीजिए अर अंशनि कौं हार कीजिए । असैं पलटि भाज्य-भाजक का गुण्य-गुणकारवत् विधान करना । जैसैं सैंतीस के आधा कौं तेरह की चौथाई का भाग देना होइ तहां असैं $\left|\frac{३७}{२}\right|\frac{१३}{४}\right|$ लिखिए बहुरि भाजक के हार अर अंश पलटैं असैं $\left|\frac{३७}{२}\right|\frac{४}{१३}\right|$ लिखिना । बहुरि गुणनविधि कीए एक सौ अडतालीस हार अर छव्वीस अंश $\frac{१४८}{२६}$ भए । तहां अंश का हार कौं भाग दीए पांच पाए । अर अवशेष अठारह छव्वीसवां भाग, ताका दोय करि अपवर्त्तन कीए नव तेरहवां भागमात्र भया । असैं ही अन्यत्र जानना ।

बहुरि भिन्न वर्ग अर घन का विधान गुणकारवत् ही जानना । जातैं समान राशि दोय कौं परस्पर गुणें वर्ग हो है । तीन कौं परस्पर गुणें घन हो है । जैसैं तेरह का चौथा भाग कौं दोय जायगा मांडि $\left|\frac{१३}{४}\right|\frac{१३}{४}\right|$ परस्पर गुणें ताका वर्ग एक सौ गुणहत्तर का सोलहवां भागमात्र $\frac{१६९}{१६}$ हो है । अर तीन जायगा मांडि $\left|\frac{१३}{४}\right|\frac{१३}{४}\right|\frac{१३}{४}\right|$ परस्पर गुणें इकईस सै सत्याणवै का चौसठवां भाग मात्र $\frac{२१९७}{६४}$ घन हो है । बहुरि भिन्न वर्गमूल, घनमूल विषैं हारनि का अर अंशनि का पूर्वोक्त विधान करि जुदा-जुदा मूल ग्रहण करिए । जैसैं वर्गित राशि एक सौ गुणहत्तरि का सोलहवां भाग $\frac{१६९}{१६}$ । तहां पूर्वोक्त विधान तैं एक सौ गुणहत्तरि का वर्गमूल तेरह, अर सोलह का च्यारि असैं तेरह का चौथा भागमात्र $\frac{१३}{४}$ वर्गमूल आया । बहुरि घनराशि इकईस सै सत्याणवै का चौसठवां भाग $\frac{२१९७}{६४}$ । तहां पूर्वोक्त विधान करि इकईस सै सत्याणवे का घनमूल तेरह, चौसठि का च्यारि ऐसैं तेरह का चौथा भागमात्र $\frac{१३}{४}$ घनमूल आया । असैं ही अन्यत्र जानना ।

बहुरि अब शून्यपरिकर्माष्ट लिखिए है । शून्य नाम बिंदी का है, ताके संकलनादिक कहिए है । तहां बिंदी विषैं अंक जोडैं अंक ही होय । जैसैं पचास विषैं पांच जोडिए । तहां एकस्थानीय बिंदी विषैं पांच जौडैं पांच भए । दशस्थानीय पांच है ही, असैं पचावन भए । बहुरि अंक विषै बिंदी घटाए अंक ही रहै । जैसैं पचावन में दश

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घटाए एक स्थानीय पांच में बिंदी घटाए पांच ही रहे, दशस्थानीय पांच में एक घटाए च्यारि रहे अैसैं पैंतालीस भए। बहुरि गुणकार विषै अंक को बिंदीकरि गुणें बिंदी होय। जैसैं वीस कौं पांच करि गुणिए, तहां गुण्य के दूवा कौ पांच करि गुणे दश भए। बहुरि बिंदी कौं पांच करि गुणे, बिंदी ही भई अैसैं सौ भए।

बहुरि अंक कौ बिंदी का भाग दीए खहर कहिए। जातैं जैसैं-जैसैं भागहार घटता होइ, तैसैं-तैसैं लब्धराशि बधती होइ। जैसैं दश कौं एक का छठा भाग का भाग दिए साठि होइ, एक का वीसवां भाग का भाग दीए दोय सै होय, सो बिंदी शून्यरूप, ताका भाग दीए फल का प्रमाण अवक्तव्य है। याका हार बिंदी है, इतना ही कह्या जाए। बहुरी बिंदी का वर्गघन, वर्गमूल, घनमूल विषैं गुणकारादिवत् बिंदी ही हो है। अैसैं लौकिक गणित अपेक्षा परिकर्माष्टक का विधान कह्या।

बहुरि अलौकिक गणित अपेक्षा विधान है, सो सातिशय ज्ञानगम्य है। जातैं तहां अंकादिक का अनुक्रम व्यक्तरूप [१] नाहीं है। तहां कहीं तौ संकलनादि होतैं जो प्रमाण भया ताका नाम कहिए है। जैसैं उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात विषैं एक जोडैं जघन्य परीतानंत होइ, (जघन्य परीतानंत में एक घटाएं उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात होइ) [२] अर जघन्य परीतासंख्यात विषैं एक घटाएं उत्कृष्ट संख्यात होइ। पल्य कौं दशकोडाकोडि करि गुणें सागर होइ जगत् श्रेणी कूं सात का भाग दीए राजू होइ। जघन्य युक्तासंख्यात का वर्ग कीए जघन्य असंख्यातासंख्यात होइ। सूच्यंगुल का घन कीये घनांगुल होइ। प्रतरांगुल का वर्गमूल ग्रहे सूच्यंगुल होइ। लोक का घनमूल ग्रहे जगत् श्रेणी होइ, इत्यादि जानना।

बहुरि कहीं संकलनादि होतैं जो प्रमाण भया, ताका नाम न कहिए है, संकलनादिरूप ही कथन कहिए है। जातैं सर्व संख्यात, असंख्यात, अनंतनि के भेदनि का नाम वक्तव्यरूप नाहीं है। जैसैं जीवराशि करि अधिक पुद्गलराशि कहिए वा सिद्ध राशि करि हीन जीवराशि कहिए, वा असंख्यात गुणा लोक कहिए वा संख्यात प्रतरांगुल करि भाजित जगत्प्रतर कहिए, वा पल्य का वर्ग कहिए, वा पल्य का घन कहिए, वा केवलज्ञान का वर्गमूल कहिए, वा आकाश प्रदेशराशि का घनमूल कहिए, इत्यादि

---

१. घ प्रति 'वक्तव्यरूप' ऐसा पाठ है।
२. यह वाक्य सिर्फ छपी प्रति में है, हस्तलिखित छह प्रतियों में नहीं है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

जानना। बहुरि अलौकिक मान की सहनानी स्थापि, तिनके लिखने का वा तहां संकलनादि होतैं लिखने का जो विधान है, सो आगै संदृष्टि अधिकार विषैं वर्णन करेंगे, तहां तैं जानना। बहुरि तहां ही लौकिक मान का भी लिखने का वा तहां संकलनादि होतैं लिखने का जो विधान है, सो वर्णन करेंगे। इहां लिखैं ग्रन्थ विषैं प्रवेश करते ही शिष्यनि कौं कठिनता भासती, तहां अरुचि होती, तातैं इहां न लिखिए है। उदाहरण मात्र इतना ही इहां भी जानना, जो संकलन विषैं तौ अधिक राशि कौं ऊपरि लिखना जैसैं पंच अधिक सहस्र "५ / १०००" अैसैं लिखने। व्यवकलन विषै हीन राशि कौं ऊपरि लिखि तहां पूंछडीकासा आकार करि बिंदी दीजिए जैसैं पंच हीन सहस्र ५~ / १००० अैसैं लिखिए। गुणकार विषैं गुण्य के आगै गुणक कौं लिखिए। जैसैं पंचगुणा सहस्र १०००×५ अैसैं लिखिए। भागहार विषै भाज्य के नीचै भाजक कौं लिखिए। जैसैं पांच करि भाजित सहस्र १००० / ५ अैसैं लिखिए। वर्ग विषै राशि कौं दोय बार बराबर मांडिए। जैसैं पांच का वर्ग कौं ५×५ अैसैं लिखिए। घन विषै राशि कौं तीन बार बराबरि मांडिए। जैसैं पांच का घन कौं ५×५×५ अैसैं लिखिए। वर्गमूल-घनमूल विषैं वर्गरूप-घनरूप राशि के आगै मूल की सहनानी करनी। जैसैं पचीस का वर्गमूल कौं "२५ व० मू०" अैसैं लिखिए। एक सौ पचीस का घनमूल कौ "१२५ घ० मू०" अैसैं लिखिए। अैसैं अनेक प्रकार लिखने का विधान है। अैसैं परिकर्माष्टक का व्याख्यान कीया सो जानना।

बहुरि त्रैराशिक का जहां-तहां प्रयोजन जानि स्वरूप मात्र कहिए है। तहां तीन राशि हो हैं – प्रमाण फल, इच्छा। तहां जिस विवक्षित प्रमाण करि जो फल प्राप्त होइ, सो प्रमाणराशि अर फलराशि जाननी। बहुरि अपना इच्छित प्रमाण होइ, सो इच्छा राशि जाननी। तहां फल कौं इच्छा करि गुणि, प्रमाण का भाग दीए अपना इच्छित प्रमाण करि प्राप्त जो फल, ताका प्रमाण आवै है, इसका नाम लब्ध है। इहां प्रमाण अर इच्छा[१] की एकजाति जाननी। बहुरि फल अर लब्ध की एक जाति जाननी। इहां उदाहरण जैसैं पांच रुपैया का सात मण अन्न आवै तौ सात रुपैया का केता अन्न आवै अैसैं त्रैराशिक कीया। इहां प्रमाण राशि पांच, फल राशि सात, इच्छा राशि सात, तहां फलकरि इच्छा कौं गुणि प्रमाण का भाग दीए गुणचास

---

१ छपी प्रति 'इच्छा' शब्द और अन्य हस्तलिखित प्रतियों में 'फल' शब्द है।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का पांचवां भाग मात्र लब्ध प्रमाण आया। ताका नव मण अर च्यारि मण का पांचवां भाग मात्र लब्धराशि भया।

अैसैं ही छह सै आठ (६०८) सिद्ध छह महीना आठ समय विषैं होइ, तौ सर्व सिद्ध केते काल में होइ, अैसैं त्रैराशिक करिए, तहां प्रमाण राशि छह सै आठ, अर फलराशि छह मास आठ समयनि की संख्यात आवली, इच्छा राशि सिद्धराशि। तहां फल करि इच्छा कौं गुणि, प्रमाण का भाग दीए लब्धराशि संख्यात आवली करि गुणित सिद्ध राशि मात्र अतीत काल का प्रमाण आवै है। अैसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि केतेइक गणितनि का कथन आगैं इस शास्त्र विषैं जहां प्रयोजन आवैगा तहां कहिएगा। जैसैं श्रेणी व्यवहार का कथन गुणस्थानाधिकार विषैं करणनि का कथन करते कहिएगा। बहुरि एक बार, दोय बार आदि संकलन का कथन ज्ञानाधिकार विषैं पर्यायसमासज्ञान का कथन करते कहिएगा। बहुरि गोल आदि क्षेत्र व्यवहार का कथन जीवसमासादिक अधिकारनि विषैं कहिएगा। अैसैं ही और भी गणितनि का जहां प्रयोजन होइगा तहां ही कथन करिएगा सो जानना। बहुरि अज्ञात राशि ल्यावने का विधान वा सुवर्णगणित आदि गणितनि का इहां प्रयोजन नाहीं, तातैं तिनका इहां कथन न करिए है। अैसैं गणित का कथन किया। ताकौं यादि राखि जहां प्रयोजन होइ, तहां यथार्थरूप जानना। बहुरि अैसैं ही इस शास्त्र विषैं करणसूत्रनि का, वा केई संज्ञानि का वा केई अर्थनि का स्वरूप एक बार जहां कह्या होइ, तहांतैं यादि राखि, तिनका जहां प्रयोजन आवै, तहां तैसा ही स्वरूप जानना।

या प्रकार श्रीगोम्मटसार शास्त्र की सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका नामा भाषाटीका विषैं पीठिका समाप्त भई।

—❀—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आचार्यप्रवर श्रीमन्नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ति विरचित

लब्धिसार

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका
भाषाटीका सहित

।। मंगलाचरण ।।

सम्यग्दर्शनचरनगुन पाय कुकर्म खिपाय ।
केवलज्ञान उपाय प्रभु भए भजौं शिवराय ।।१।।

जिनवानी के ज्ञान तैं होत तत्व श्रद्धान ।
चरण धारि केवल लहै पावै पद निरवान ।।२।।

नेमिचन्द आल्हादंकर माधवचन्द प्रधान ।
नमौं जास उज्जास तैं जाने निजगुण थान ।।३।।

लब्धिसार कौं पाय कैं करि कैं क्षपणासार ।
हो है प्रवचनसार सों समयसार अविकार ।।४।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लब्धिसार भूमिका

ऐसें मंगलाचरण करि लब्धिसार के सूत्रनि का भाषा रूप व्याख्यान करिए है; ताका प्रयोजन कहा ? सो कहिए है —

श्रीमद् गोम्मटसार शास्त्र विषैं जीवकांड कर्मकांड अधिकारनि करि जीव अर कर्म का स्वरूप प्रगट कीया, ताकौं यथार्थ जानि मोक्षमार्ग विषैं प्रवर्तना। जातैं आत्महित मोक्ष है, तिसही के अर्थि विवेकी जीवनि का उपाय है। सो मोक्षमार्ग सम्यग्दर्शन, सम्यक्चारित्र है; सम्यग्ज्ञान भी मोक्षमार्ग है, सो सम्यग्दर्शन का सहकारी ही जानना। तहां सम्यग्दर्शन तीन प्रकार है औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक। बहुरि सम्यक्चारित्र दोय प्रकार - देश चारित्र, सकलचारित्र। तहां देश चारित्र तौ क्षायोपशमिक ही है। अर सकलचारित्र तीन प्रकार है क्षायोपशमिक, औपशमिक, क्षायिक।

सो ऐसें सम्यग्दर्शन सम्यक्चारित्र की लब्धि भए केवलज्ञान कौं पाइ तहां सयोगी अयोगी जिन होइ, सिद्ध पद कौं प्राप्त हो है।

सो इनि सबनि का स्वरूप नीकै जान्या चाहिए, जातैं एई आतमा के प्रयोजन भूत कार्य हैं, तातैं इनिकौं होतैं पूर्वैं भए कर्मनि के बंध, उदय, सत्त्व की कैसी-कैसी अवस्था हो है अर जीव का परिणमन कैसें-कैसें हो है ? इत्यादि विशेष जानना युक्त है। बहुरि याकौं जानै चौदह गुणस्थाननि का भी स्वरूप विशेषपने नीके जानिए है। अर जीव कर्मादि की सर्व चर्चानि विषैं गुणस्थाननि की चर्चा प्रधान है, तातैं 'इहां तिन औपशमिक सम्यक्त्व आदि का वर्णन अवश्य करना' ऐसा प्रयोजन विचारि उद्यम कीया। तब हम यंत्रादि रचना सहित लब्धिसार नाम शास्त्र का मूल गाथानि का एक पुस्तक देख्या; तहां तिन औपशमिक सम्यक्त्वादिकनि का विशेष वर्णन जानि, तिनि गाथानि का भाषारूप व्याख्यान करने का विचार भया। बहुरि लब्धिसार की टीका के पुस्तक देखे, तहां औपशमिक चारित्र का वर्णन पर्यंत गाथानि ही की संस्कृत टीका करि समाप्त करी। अवशेष क्षायिक चारित्रादिक का वर्णन रूप गाथानि की संस्कृत टीका नाहीं। बहुरि एक क्षपणासार नामा जुदा ग्रंथ, शास्त्र ताके पुस्तक देखे, तहां गाथा तौ नाहीं अर संस्कृत धारा रूप ही क्षायिक चारित्रादिक का वर्णन है, सो याके अर्थ का अर तिन अवशेष लब्धिसार की गाथानि के अर्थ का प्रयोजन समानसा देख्या, सो ऐसैं अवलोकि यह विचार कीया, जो औपशमिक चारित्र पर्यंत गाथानि का व्याख्यान तौ

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संस्कृत टीका के अनुसारि करना । अर अवशेष गाथानि का व्याख्यान क्षपणासार के अनुसारि करना, सो अैसैं अनुसार लीए लब्धिसार की गाथानि का संक्षेप अर्थ इहां लिखिए है । विस्तार होने के भए तैं विशेष नाहीं लिखिए है । वा कोई कठिन अर्थ मेरी समझि मैं नीके न आवने तैं इहां न लिखिए है; सो संस्कृत टीका वा क्षपणासार तैं जानियो ।

बहुरि अैसैं व्याख्यान करतैं कहीं चूक होइ, बुद्धि की मंदता तैं अन्यथा लिखों, तहां विशेषज्ञानी संवारि शुद्ध करियो; जातैं अर्थ तौ गंभीर है अर बुद्धि मेरी तुच्छ है; तातैं कहीं चूक भी परै । अैसें विचारि करि इस भाषा करने का प्रारंभ कीजिए है । तहां प्रथम केते इक अर्थ वा संज्ञा विशेष दिखाइए है । जिनिकौं जानैं आगैं तिनिका वर्णन जहां आवै तहां इनिकौं यादि करि नीके अर्थज्ञानी होइ । तहां इस शास्त्र विषैं दश करणनि का विशेष प्रयोजन है; तातैं प्रथम इनिका स्वरूप कहिए है —

कर्मनि की दश अवस्था हैं–१बंध, २ सत्त्व, ३ उदय, ४ उदीरणा, ५ उत्कर्षण, ६अपकर्षण, ७ संक्रमण, ८ उपशम, ९ निधत्ति, १० निकाचना ए दश करण हैं । सो इनिका स्वरूप गोम्मटसार का कर्मकांड विषैं दश करण चूलिका नामा अधिकार है, तहां कह्या है, सो जानना । इहां भी प्रयोजन जानि किछू लिखिए है—

तहां नवीन पुद्गलनि का कर्मरूप आत्मा कैं सम्बन्ध होना ताका नाम बन्ध है । सो च्यारि प्रकार है, १ प्रकृति बंध, २ प्रदेश बंध, ३ स्थिति बंध, ४ अनुभाग बंध ।

तहां कर्मरूप होने योग्य जे कार्माण वर्गणारुप पुद्गल, तिनिका ज्ञानावरणादि मूलप्रकृति वा तिनकी उत्तरप्रकृतिरुप परिणमना, सो प्रकृतिबंध है । तहां जेती प्रकृतिनि का जहां बंध संभवै तहां तितना प्रकृतिबंध जानना ।

बहुरि तिनि प्रकृतिरूप जितनी पुद्गल परमाणू परिणामीं तिनिका प्रमाणरूप प्रदेश बंध है; जातैं इहां प्रदेश नाम पुद्गल परमाणू का है, सो अभव्य राशि तैं अनन्त गुणा अैसा जो सिद्धराशि के अनन्तवां भागमात्र प्रमाण तिस प्रमाण मात्र परमाणू मिलि एक कार्माण वर्गणा हो है । अर तितनी ही वर्गणा मिलि एक समयप्रबद्ध हो है । इतनी परमाणू समय समय विषैं कर्मरूप होइ एक जीव कैं बंधैं, तातैं याका नाम समयप्रबद्ध है । सो यहु सामान्य प्रमाण है । विशेष योगनि की अधिक हीनता के अनुसारि समयप्रबद्ध विषैं परमाणूनिकी अधिक हीनता जाननी । बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक समय विषैं ग्रह्या हूवा जो समयप्रबद्ध सो यथासम्भव मूल प्रकृति वा उत्तर प्रकृतिरूप परिणमै तहां तिन प्रकृतिनि के परमाणूनि के विभाग का विधान गोम्मटसार का बंध, सत्त्व, उदय अधिकार विषैं प्रदेश बंध का व्याख्यान करते कह्या है सो जानना। सो जिस प्रकृति कैं जितनी परमाणू बट में आवैं तिस प्रकृति का तितने परमाणूनि का समूह मात्र समयप्रबद्ध जानना।

बहुरि जे परमाणू प्रकृतिरूप बंधीं ते परमाणू तिस रूप इतना काल रहसी असा बंध होतैं स्थिति का प्रमाण होना, सो स्थिति बंध है।

तहां एक समय विषैं जो स्थितिबंध भया, ता विषैं बंध समय तैं लगाय आबाधाकाल पर्यंत तौ तहां बंधी हुई परमाणूनि के उदय आवने योग्यपने का अभाव है; तातैं तहां निषेक रचना है नाहीं। ताके पीछै प्रथम समय तैं लगाइ बंधी हुई स्थिति का अन्त समय पर्यंत एक एक समय विषैं एक एक निषेक उदय आवने योग्य हो है। तातैं प्रथम निषेक की स्थिति एक समय अधिक आबाधाकाल मात्र है। द्वितीय निषेक की स्थिति दोय समय अधिक आबाधाकाल मात्र है। असैं क्रम तैं द्विचरम निषेक की स्थिति एक समय घाटि स्थितिबंध प्रमाण है। अन्त निषेक की स्थिति सम्पूर्ण स्थितिबंध प्रमाण है।

जैसैं मोह की सत्तर कोडाकोडी सागर की स्थिति बंधी; तहां सात हजार वर्ष का आबाधाकाल है अर प्रथम निषेक की स्थिति एक समय अधिक सात हजार वर्ष है। द्वितीयादि निषेकनि की क्रम तैं एक एक समय अधिक होइ; अन्त निषेक की सत्तर कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति जाननी असैं ही आयु बिना सात कर्मनि का विधान है। बहुरि आयु का स्थिति बंध विषैं आबाधाकाल नाहीं गिनिए है, जातैं ताका आबाधाकाल पूर्व पर्याय विषैं ही व्यतीत हो है। तहां तिस आयु के उदय होने योग्यपना का अभाव है; तातैं आयु का प्रथम निषेक की स्थिति एक समय, द्वितीय निषेक की दोय समय असैं क्रम तैं अन्त निषेक की सम्पूर्ण स्थितिबंध मात्र स्थिति जाननी। असैं एक समय विषैं बंधी जो स्थिति तिहि विषैं विशेष जानना। बहुरि सामान्यपनैं जो अंत निषेक की स्थिति तिस प्रमाण है तहां स्थितिबंध कहिए है; जातैं सामान्य कथन विषैं उत्कृष्ट का ग्रहण कीजिए है

बहुरि एक समय विषैं बंध्या जो प्रकृति का समयप्रबद्ध, ताके परिमाणूनि विषैं प्रथमादि निषेकनि का कैसैं विभाग हो है ?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताके जानने कौं गोम्मटसार विषैं कर्मकांड का कर्मस्थिति रचना सद्भाव नामा अंत का जो अधिकार, तहां द्रव्यस्थिति, गुणहानि, नाना गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त राशि, दो गुणहानि का प्रमाण कहि तहां विधान कह्या है, सो जानना। इहां भी आगैं संक्षेपसा विधान कहिएगा। बहुरि इनि प्रथमादि निषेकनि की रचना उपरि उपरि लिखिए है जे तातैं प्रथमादि पहले, निषेकनि कौं नीचें के निषेक कहिए है अर पिछले निषेकनि कौं उपरिके निषेक कहिए है अैसा जानना।

बहुरि जैसैं भाजनादि निमित्त तैं पुष्पादिक हैं, ते मदिरा रूप परिणमैं, तिनमैं अैसी शक्ति हो है जो भक्षणकाल विषैं हीनाधिक विशेष लीएं पुरुष कौं उन्मत्तता करै तैसैं रागादि निमित्त तैं पुद्गल हैं, ते कर्मरूप परिणमैं, तिनमैं अैसी शक्ति हो है जे उदयकाल विषैं हीनाधिक विशेष लीएं जीव कैं ज्ञान आच्छादनादि करैं। अैसैं बंध होतैं शक्ति का होना, ताका नाम अनुभाग बंध है। तहां एक प्रकृति के एक समय विषैं बंधे जे परमाणू, तिन विषैं नाना प्रकार शक्ति हो है सो कहिए है —

शक्ति का अविभाग अंश, ताका नाम अविभाग प्रतिच्छेद है। बहुरि तिनके समूह करि युक्त जो एक परमाणू, ताका नाम वर्ग है। बहुरि समान अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग, तिनके समूह का नाम वर्गणा है। तहां स्तोक अनुभाग युक्त परमाणू का नाम जघन्य वर्ग है। तिनके समूह का नाम जघन्य वर्गणा है। बहुरि जघन्य वर्ग तैं एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग, तिनके समूह का नाम द्वितीय वर्गणा है। अैसैं क्रम तैं एक-एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक वर्गनि का समूह रूप वर्गणा यावत् होइ तावत् तिन वर्गणानि के समूह का नाम जघन्य स्पर्धक है। बहुरि जघन्य वर्ग तैं दूणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा हो है। बहुरि ताके उपरि एक-एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक क्रम लीएं जे वर्ग, तिनिका समूहरूप वर्गणा यावत् होइ तावत् तिनि वर्गणानि का समूहरूप द्वितीय स्पर्धक हो है। अैसैं ही तृतीय चतुर्थादि स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के वर्ग विषैं तौ जघन्य स्पर्धक तैं तिगुणे, चौगुणे आदि अविभाग प्रतिच्छेद जानने। बहुरि इहां सर्व परमाणूनि का प्रमाण उपरि पूर्वोक्त एक-एक अधिक का क्रम जानना। सो अैसा विधान यावत् सर्व परमाणू संपूर्ण होंइ तावत् जानना। बहुरि इहां सर्व परमाणूनि का प्रमाण मात्र तौ द्रव्य है अर वर्गणानि का प्रमाण मात्र अनंत प्रमाण लीए स्थिति है अर अनुभाग संबंधी यथासंभव अनंत प्रमाण लीएं गुणहानि अर नाना गुणहानि अर अन्योन्याभ्यस्त राशि अर दो गुणहानि है। सो इनिकौं स्थापि, तहां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

'दिवड्ढगुणहाणि भाजिदे पढमा' इत्यादि आगे कहिए है सो विधान, तातैं प्रथमादि गुणहानिनि की प्रथमादि वर्गणानि विषैं वर्गनि का प्रमाण ल्यावना। ऐसी वर्गणा एक स्पर्धक विषैं जितनी पाइए, ताका नाम एक स्पर्धक वर्गणा शलाका है। बहुरि एक गुणहानि विषैं जेता स्पर्धक पाइए, ताका नाम एक गुणहानि स्पर्धक शलाका है। असैं अविभाग प्रतिच्छेदनि का समूह वर्ग है। वर्गनि का समूह वर्गणा है। वर्गणानि का समूह स्पर्धक है। स्पर्धकनि का समूह गुणहानि है। गुणहानि का प्रमाण सोई नाना गुणहानि है, ऐसा जानना। सो यहु कथन गोम्मटसार विषैं भी है तथा इहां भी आगैं नीके कहिएगा।

बहुरि इन प्रथमादि स्पर्धकनि की रचना उपरि उपरि करिए है तातैं प्रथमादि पहिले स्पर्धकनि कौं नीचले स्पर्धक कहिए। अर पिछले स्पर्धकनि कौं ऊपरले स्पर्धक कहिए। बहुरि पूर्वोक्त विधान तैं प्रथमादि स्पर्धकनि विषैं क्रम तैं परमाणुनि का प्रमाण तौ घटता घटता है अर अनुभाग बधता-बधता है। तहां प्रथमादि सर्व स्पर्धकनि का च्यारि विभाग करिए है, ते घातियानि का तौ लता, दारु, अस्थि, शैल समान अर अप्रशस्त अघातियानि का निंब, कांजीर, विष, हलाहल समान अर प्रशस्त अघातियानि का गुड, खंड, शर्करा, अमृत समान च्यारि भाग जानने।

बहुरि घातियानि विषैं लता भाग के अर केताइक दारु भाग के स्पर्धक देशघाती हैं। अवशेष सर्वघाती हैं। सो विशेष आगैं आवेगा असैं अनुभाग विषैं विशेष है। सो स्थिति संबंधी एक एक निषेक के परमाणूनि विषैं असा अनुभाग का विशेष पाइए है। जैसें स्थिति के पहिले निषेक पहलैं उदय आवैं, पिछलैं पीछें उदय आवैं तैसें अनुभाग के पहिले स्पर्धक पहिले उदय आवने का पिछले स्पर्धक पीछे उदय आवने का नियम नाहीं है। बहुरि सामान्यपनैं जहां जो उत्कृष्ट अनुभाग पाइए सोई तहां अनुभाग बंध का प्रमाण कहिए है। असैं बंध का स्वरूप कह्या।

बहुरि अनेक समयनि विषैं बंधे हुए कर्मनि का विवक्षित कालादिक विषैं जीव कैं अस्तित्व ताका नाम सत्त्व है, सो च्यारि प्रकार प्रकृति सत्त्व, प्रदेश सत्त्व, स्थिति सत्त्व, अनुभाग सत्त्व।

तहां अनेक समयनि विषैं बंधो जो ज्ञानावरणादिक मूल प्रकृति वा तिनकी उत्तर प्रकृति, तिनिका जो अस्तित्व, सो प्रकृति सत्व है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तिनि प्रकृतिरूप परिणमीं अैसें जे अनेक समयनि विषैं ग्रही हुई पुद्गल परमाणू, तिनिका अस्तित्व, सो प्रदेशसत्व है; सो समय-समय विषैं एक एक समय-प्रबद्ध ग्रहे तिनके पूर्वोक्त प्रकार एक एक निषेक क्रम तैं निर्जरैं, तहां जिनि समय प्रबद्धनि के सर्व निषेक गले, तिनिका तौ अस्तित्व रह्या ही नाहीं। बहुरि कोई समयप्रबद्ध का अन्य निषेक गलि एक निषेक अवशेष रह्या, कोई के अन्य निषेक गलि दोय निषेक अवशेष रहे, अैसें क्रम तैं जाका एक निषेक गल्या ताके तिस बिना सर्व निषेक अवशेष रहै हैं। जाका कोई निषेक न गल्या, ताके सर्व ही निषेक अवशेष रहें, अैसें अवशेष रहे समस्त निषेक, तिनके परमाणूनि का मिल्या हुवा प्रमाण किंचित् ऊन ड्योढ गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है; सो याका विधान गोम्मटसार का कर्मस्थिति रचना सद्भाव अधिकार विषैं त्रिकोण रचना करि दिखाया है, सो जानना। अैसें इनि परमाणूनि का अस्तित्व, सो प्रदेशसत्व जानना।

इहां जो एक प्रकृति की विवक्षा होइ तौ एक प्रकृति संबंधी समयप्रबद्ध ग्रहण करना। जो सर्व प्रकृति की विवक्षा होइ तौ सर्व प्रकृति संबंधी समयप्रबद्ध जानना।

बहुरि तिनि अनेक समयनि विषैं बंधी प्रकृतिनि की स्थिति, ताका नाम स्थितिसत्व है। तहां तिनि प्रकृतिनि का जिस समयप्रबद्ध का एक निषेक अवशेष रह्या, ताकी एक समय की स्थिति है, जाका दोय निषेक अवशेष रहे ताके प्रथम निषेक की एक समय अर द्वितीय निषेक की दोय समय स्थिति है। अैसें क्रमतैं जाका एक हू निषेक न गल्या ताकी प्रथमादि निषेकनि की एक, दोय आदि समयनि करि अधिक आबाधाकाल मात्र स्थिति का क्रम करि तहां अंत निषेक की संपूर्ण स्थिति बंधमात्र स्थिति है। इहां सत्व विषैं अनेक समयप्रबद्धनि के एक समय विषैं उदय आवने योग्य अनेक निषेक मिलैं जो होइ, सो एक निषेक जानना। सो इनि विषैं परमाणूनि का प्रमाण आगैं कहेंगे। बहुरि सामान्यपनै जो एक प्रकृति की विवक्षा होइ तौ ताके पहिले बंध्या वा पीछे बंध्या समयप्रबद्धनि विषैं जाके बहुत निषेक सत्ता विषैं पाइए, तिस समयप्रबद्ध के अंत का निषेक की जेती स्थिति तिस प्रमाण स्थितिसत्व कहना। अर सर्व प्रकृति की विवक्षा होइ तौ जिस प्रकृति का समयप्रबद्ध के अंत निषेक की बहुत स्थिति होइ, ताका अंत निषेक की स्थिति प्रमाण स्थिति सत्व कहना।

बहुरि तिन अनेक समयनि विषैं बंधी जे प्रकृति, तिनिका जो अनुभाग सत्ता रूप है, ताका नाम अनुभाग सत्व है। तहां एक समय विषैं उदय आवने योग्य अनेक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

समयप्रबद्धनि के निषेक मिलि भया सत्ता संबंधी एक निषेक, ताके परमाणूनि विषैं अथवा अनेक समयनि विषैं बंधे समयप्रबद्धनि के गले पीछे अवशेष निषेक रहे, तिन सबनि के परमाणूनि विषैं पूर्वोक्त प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्धकरूप अनुभाग का विशेष जानना। तहां परमाणूनि का प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार ल्यावना। बहुरि सामान्यपनैं तहां पूर्वोक्त च्यारि प्रकार अनुभाग का ग्रहण जानना। ऐसैं सत्त्वनि का निरूपण कीया।

बहुरि कर्मनि का अपने काल आएं फल देनेरूप होइ खिरने कौं सन्मुख होना सो उदय है; सो च्यारि प्रकार प्रकृति उदय, प्रदेश उदय, स्थिति उदय, अनुभाग-उदय।

तहां यथासंभव मूल प्रकृति वा उत्तर प्रकृति का फल देनेरूप उदय आवना, सो प्रकृति उदय है।

बहुरि तिस उदयरूप प्रकृति के जे परमाणू खिरने कौं सन्मुख होइ उदय आवैं, सो प्रदेश उदय है।

तहां अनेक समयनि विषैं बंधे समयप्रबद्धनि का तिस विवक्षित एक समय विषैं उदय आवने योग्य जे निषेक, तिन सब निषेकनि के परमाणू, तिस विवक्षित एक समय विषैं उदय हो हैं, सो कहिए है।

जिस समयप्रबद्ध का एकहू निषेक न गल्या, ताका प्रथम निषेक उदय हो है। जाका प्रथम निषेक पूर्वैं गल्या, ताका द्वितीय निषेक तहां उदय हो है। ऐसैं क्रम तैं जाके दोय निषेक अवशेष रहे ताका तहां उपांत निषेक उदय हो है। जाका एक निषेक ही अवशेष रह्या, ताका सोई अंत निषेक तहां उदय हो है। ऐसैं सर्व निषेक मिलि एक समयप्रबद्ध मात्र परमाणूनि का उदय हो है। बहुरि तहां उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण आदि का वश तैं विशेष है सो कहिए है।

जो उपरले-नीचले अन्य समयनि विषैं उदय आवने योग्य निषेकनि के परमाणू, तिस विवक्षित समय विषैं उदय आवने योग्य निषेकनि विषैं मिलाया होइ तौ ते परमाणु भी तिन ही की साथि तिसही समय विषैं उदय हो हैं।

जैसैं अंक संदृष्टि करि तरेसठि सै परमाणू तौ तिस विवक्षित समय उदय आवने योग्य निषेकनि के थे अर हजार परमाणू अन्य निषेकनि के तहां मिलाए तौ

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तहां तिहत्तरि सै परमाणूनि का उदय हो है। अैसें ही तिस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेक, तिनिके परमाणू अन्य निषेकनि विषैं मिलाए होंइ तौ तहां तिनिके अवशेष परमाणूं उदय हो हैं। जैसैं तिरेसठि सै परमाणू तिस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेकनि के थे, तिनमैं हजार परमाणू अन्य निषेकनि विषैं मिलाए तौ तहां तरेपन सैं परमाणूनि ही का उदय हो है। बहुरि तिस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेकनि का केते इक परमाणूं अन्य निषेकनि विषैं अन्य निषेकनि का परमाणू तिन विषैं मिलाए होंइ तौं तहां जेते परमाणूं हीन अधिक भए तिनि ही का उदय हो है। जैसैं तिरेसठि सै परमाणू तिस समय उदय आवने योग्य निषेक के थे तिनमैं सात सै परमाणू तौ अन्य निषेकनि के मिले अर हजार परमाणू अन्य निषेकनि विषैं दीए तौं तिस समय विषैं छह हजार परमाणूं ही का उदय हो है। अैसें उदीरणादिक की अपेक्षा विशेष जानना। तहां विशेष इतना है – जो उदयावली के निषेकनि का उत्कर्षण नाहीं हो है। बहुरि विवक्षित एक समय विषैं जे तिस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेक, तिनिका ही उदय होइ। ताका उदय होतैं सत्तारूप स्थिति विषैं एक समय घटै है। तातैं तहां एक समय मात्र स्थिति उदय जानना। बहुरि कांडक विधान तैं अनेक समयमात्र स्थिति घटाइए है, सो विधान आगैं लिखेंगे।

बहुरि तिस एक समय विषैं अनुभाग का उदय होना, सो अनुभाग उदय है। तहां तिस समय विषैं उदय आवने योग्य परमाणूनि विषैं पूर्वोक्त प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्धक आदि विशेष जानना। बहुरि जो उत्कर्षण, अपकर्षण कांडकादि विधान तैं अनुभाग का घटना-बधना भया होइ, तौ तहां जैसा अनुभाग संभवै तितना ही का उदय जानना।

इहां प्रश्न – जो तिस समय विषैं उदय आवने योग्य परमाणूनि विषैं कोई परमाणू विषैं स्तोक अनुभाग है, कोइ विषैं बहुत है, तिनि सबनि का एक समय विषैं कैसैं उदय हो है ?

ताका समाधान – जैसैं कोई वस्तु स्तोक शीतलता करने कौं कारण है, कोई बहुत शीतलता करने कौं कारण है, तिनि सबनि की गोली एक भई, ताका एक काल भक्षण कीया, तहां सबनिकी शीतलता मिलैं, जैसी शीतलता होनी संभवै, तैसी भक्षण करने वाले कैं शीतलता हो है।

तैसैं कोई परमाणूनि विषैं स्तोक अनुभाग है, कोई विषैं बहुत अनुभाग है, तिनि सबनि का एक निषेक भया, ताका एक काल विषैं उदय आया, तहां सबनि का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अनुभाग मिलैं, जैसा अनुभाग होना संभवै तैसा उदय वाले कैं अनुभाग उदय हो है। सामान्यपनै च्यारि प्रकार अनुभाग यथासंभव तहां जानना। अैसैं उदय का स्वरूप कह्या।

बहुरि अपक्वपाचन कहिए जो पच्या नाहीं, उदय काल कौं प्राप्त न भया जो कर्म, ताका पाचन कहिए पचावना, उदय काल विषैं प्राप्त करना अैसा है लक्षण जाका, सो उदीरणा कहिए है।

तहां वर्तमान समय तैं लगाए आवली मात्र काल विषैं उदय आवने योग्य जे निषेक, तिनिका नाम उदयावली है। ताके उपरिवर्त्ती निषेकनि कौं उदयावली बाह्य कहिए है।

तहां उदयावली बाह्य तिष्ठते जे निषेक तिनके परमाणूनि कौं उदयावली के निषेकनि विषैं मिलावना। अैसैं बहुत काल विषैं उदय आवते जे अपक्व कहिए तिनिकौं उदयावली के निषेकनि का साथी उदय होने योग्य करना, सो पाचन कहिए अैसा कार्य जिस समय विषैं होइ, तिस समय विषैं उदीरणा नाम पावै है। तिस समय विषैं पीछे सोई द्रव्य सत्ता रूप वा उदयरूप कहिए है। अैसैं उदीरणा का स्वरूप कह्या।

बहुरि स्थिति-अनुभाग का बधना, ताका नाम उत्कर्षण है।

तहां स्तोक काल में उदय आवने योग्य जे नीचे के निषेक तिनिके परमाणू, ते बहुत काल में उदय आवने योग्य जे उपरि के निषेक, तिनि विषैं मिलैं अैसैं बहुत स्थिति का बहुत स्थिति होने का नाम स्थिति उत्कर्षण है।

बहुरि स्तोक अनुभाग युक्त जे नीचे के स्पर्धक, तिनिके परमाणू, ते बहुत अनुभाग युक्त जे ऊपरि के स्पर्धक, तिनि विषैं मिलैं अैसैं स्तोक अनुभाग का बहुत अनुभाग होने का नाम अनुभाग उत्कर्षण है।

बहुरि अैसैं ही स्थिति अनुभाग के घटने का नाम अपकर्षण जानना। तहां बहुत काल में उदय आवने योग्य जे उपरि के निषेक तिनके जे परमाणू ते स्तोक काल में उदय आवने योग्य जे नीचे के निषेक तिनि विषैं मिलैं अैसैं बहुत स्थिति का स्तोक स्थिति होने का नाम स्थिति अपकर्षण है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि बहुत अनुभाग युक्त जे ऊपरि के स्पर्धक, तिनिके जे परमाणू, ते स्तोक अनुभाग युक्त जे नीचे के स्पर्धक तिनि विषैं मिलैं अैसैं बहुत अनुभाग का स्तोक अनुभाग होने का नाम अनुभाग अपकर्षण है ।

बहुरि तहां विवक्षित सर्व परमाणूनि के समूह कौं उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार का भाग दीएं जो एक भागमात्र परमाणू, तिनिकौं ग्रहि यथायोग्य नीचें वा उपरि मिलाइए तहां उत्कर्षण वा अपकर्षण का होना संभवै है, सो उत्कर्षण का वा अपकर्षण भागहार का प्रमाण आगे कहिए है जो गुण संक्रमण भागहार तातैं तौ असंख्यात गुणा अर अधःप्रवृत्त संक्रमण भागहार के असंख्यातवें भाग अैसा पल्य के अर्धच्छेदनि के असंख्यातवां भाग मात्र जानना । अैसैं उत्कर्षण अर अपकर्षण का स्वरुप कह्या ।

बहुरि अन्य प्रकृति का परमाणू अन्य प्रकृतिरुप जो होइ, ताका नाम संक्रमण है । जैसैं संक्लेशपने तैं पूर्वैं असाता वेदनीय बांधी थी, पीछे विशुद्धता के बलतैं ताके परमाणू साता वेदनीय रूप होंइ परिणमैं अैसैं ही यथायोग्य अन्य अन्य प्रकृति का भी संक्रम जानना ।

तहां संक्रमण होने विषैं पांच प्रकार भागहार संभवै है १. उद्वेलन, २. विध्यात, ३. अधःप्रवृत्त, ४. गुणसंक्रम, ५. सर्वसंक्रम, ६. सो इनका कथन गोम्मटसार का कर्मकांड विषै पंच भागहार चूलिका अधिकार है, तहां जानना वा इहां यथावसर कहेंगे । किछू स्वरूप अब भी कहिए है ।

उद्वेलन प्रकृति के जे परमाणू, तिनकौं उद्वेलन भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र परमाणू जहां अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं तहां उद्वेलन संक्रमण कहिए ।

बहुरि जहां मंद विशुद्धता युक्त जीव कैं जाका बंध न पाइए अैसी जो विवक्षित प्रकृति होई ताके परमाणूनि कौं विध्यात-भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं, तहां विध्यात संक्रमण कहिए ।

बहुरि जहां जाका बंध संभवै अैसी जो विवक्षित प्रकृति, ताके परमाणूनि कौं अधःप्रवृत्त भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं, तहां अधः प्रवृत्त संक्रमण कहिए ।

बहुरि जहां विवक्षित अशुभ प्रकृति के परमाणूनि कौं गुण संक्रमण भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं । बहुरि प्रथम

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

समय जेते परमाणू परिणमैं, तातैं दूसरे समय असंख्यात गुणे परिणमैं, तातैं तीसरे समय असंख्यात गुणे परिणमैं असैं समय समय गुणकार संभवैं, तहां गुण संक्रमण भागहार कहिए।

बहुरि जहां विवक्षित प्रकृति के परमाणू अन्य प्रकृतिरूप समय समय परिणमता संता अन्त समय विषैं अन्त फालिरूप ही अवशेष परमाणू ते सर्व ही अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं, तहां सर्व संक्रमण कहिए। अब इनि भागहारनि का प्रमाण कहिए है।

सर्व संक्रमण भागहारनि का तौ प्रमाण एक है; जातैं अवशेष रही परमाणूनि कौं एक का भाग दीएं सर्व परमाणू मात्र प्रमाण आवै है; तातैं असंख्यात गुणा असा पल्य का अर्धच्छेद प्रमाण के असंख्यातवें भाग मात्र गुण संक्रमण भागहार का प्रमाण है। बहुरि तातैं असंख्यात गुणा जो उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार, तिस तैं भी असंख्यात गुणा असा पल्य के अर्धच्छेदनि के असंख्यातवें भागमात्र अधःप्रवृत्त संक्रमण भागहार का प्रमाण है। बहुरि तातैं असंख्यात गुणी जो संख्यात पल्य मात्र कर्म की स्थिति, तातैं भी असंख्यात गुणा असा सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग मात्र विध्यात संक्रमण भागहार का प्रमाण है। बहुरि तातैं असंख्यात गुणा असा सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग मात्र उद्वेलन संक्रमण भागहार का प्रमाण है। असैं संक्रमण का स्वरूप कह्या।

बहुरि विवक्षित प्रकृति के जे उदयावली तैं बाह्य निषेक, तिनिके परमाणू जे उदयावली विषैं प्राप्त करने योग्य न होंइ, सो उपशांत द्रव्य कहिए। इहां उपशम विधान तैं मोह का उपशम करिए है, ताका ग्रहण न करना; जातैं उपशमभाव मोह ही का है अर उपशांत करण सर्व प्रकृतिनि कैं पाइए हैं। अर उपशांत आदि तीन करण अष्टम गुणस्थान पर्यंत ही कह्या। अर उपशमभाव ग्यारह्वां गुणस्थान पर्यंत ही पाइए है।

बहुरि जे विवक्षित प्रकृति के परमाणू संक्रमण होने कौं वा उदयावली विषैं प्राप्त होने कौं योग्य न होंइ सो निधत्तिकरण द्रव्य है।

बहुरि जो विवक्षित प्रकृति के परमाणू संक्रमण करने कौं वा उदयावली विषैं प्राप्त करने कौं वा उत्कर्षण अपकर्षण करने को योग्य न होइ सो निःकाचना द्रव्य है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ग्रैसैं इन तीन करणनि का स्वरूप कह्या । इहां ग्रैसा नियम जानना जो उपशांतादिरूप द्रव्य है, सो उपशांतादिरूप ही रहै है । पूर्वैं उपशांतादिरूप था । पीछैं उदीरणा आदि रूप होइ तौ पीछैं किछू दोष नाहीं है । या प्रकार दश करणनि का स्वरुप पहिचानना ।

अब इहां दर्शनचारित्र लब्धि करि मोक्ष का साधन करिए है ।

सो मोक्ष की प्राप्ति संवर-निर्जरा तैं होइ । संवर-निर्जरा हैं, ते बंध-सत्व की हानि भएं होंइ, सो दर्शन-चारित्र लब्धि विषैं बंध-सत्व की हानि कैसैं होइ, सामान्य स्वरुप इहां कहिए है । विशेष आगै कहिएगा ।

तहां च्यारि प्रकार बंध मिटने का क्रम कहिए है—

दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तैं पहिलैं मिथ्यात्व, नारक गति आदि अति अप्रशस्त प्रकृतिनि का, पीछैं ज्ञानावरणादि अप्रशस्त प्रकृतिनि का वा प्रशस्त प्रकृतिनि का बंध अभाव हो है । तहां प्रकृति बंध का क्रम तैं घटना, ताका नाम प्रकृति बंधापसरण कहिए है, जातैं अपसरण नाम घटने का है ।

बहुरि प्रदेश बंध योगनि के अनुसारि है; तातैं योगनि की चंचलता हीन भए प्रदेश बंध हीन हो है । सर्वथा योग नाश भएं प्रदेश बंध का सर्वथा अभाव हो है ।

बहुरि स्थिति बंध कषायनि के अनुसारि है, सो मिथ्यात्व कषायादिक कौं हीन होतैं स्थितिबंध घटै है । तहां बहुरि स्थितिबंध का क्रम तैं घटना, सो स्थितिबंधापसरण है, सो पूर्वैं जेता स्थिति बंध होता था, तातैं विवक्षित काल विषैं जेता स्थिति बंध घट्या तिस प्रमाण लिएं तहां स्थितिबंधापसरण जानना । बहुरि घटे पीछैं अवशेष जेता रह्या तितना तहां स्थिति बंध जानना । बहुरि स्थितिबंधापसरण भएं जेता काल विषैं समान स्थिति बंध सम्भवै, सो स्थितिबंधापसरण का काल जानना ।

इहां दृष्टान्त जैसै पूर्वैं लक्ष वर्ष मात्र स्थितिबंध संभवै था, तातैं एक हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबंधापसरण भया तब अवशेष निन्याणवै हजार वर्ष मात्र स्थिति बंध रह्या, सो स्थितिबंधापसरण के काल का पहिला समय विषैं इतना स्थिति बंध होइ, बहुरि इतना ही दूसरे समय होइ, ग्रैसैं स्थिति बंधापसरण के काल का अंत समय पर्यंत समान स्थिति बंध हूवा करै, पीछै आठ सै वर्षमात्र अन्य स्थितिबंधापसरण भया, तब अठ्याणवै हजार दोय सै वर्षमात्र अवशेष स्थिति बंध रह्या, सो तिस स्थिति

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बंधापसरण काल के प्रथमादि समयनि विषैं तितना समान स्थिति बंध हूवा करै अैसें ही यथासम्भव प्रमाण जानि स्वरूप जानना । अैसें स्थिति बंध घटतें अपना व्युच्छित्ति होने का समय विषैं जघन्य स्थिति बंध हो है पीछै स्थिति बंध का नाश है, सो आयु बिना सर्व प्रकृतिनि का अैसें क्रम जानना । आयु का स्थितिबंधापसरण न संभवै है; जातें नरक बिना तीन आयु का स्थिति बंध विशुद्धता तें अधिक हो है । बहुरि अन्य सर्व शुभाशुभ प्रकृतिनि का स्थिति बंध संक्लेशता तें तौ बहुत हो है अर विशुद्धता तें स्तोक हो है ।

बहुरि अनुभाग बंध है सो पाप प्रकृतिनि का तौ संक्लेशता तें बहुत हो है अर विशुद्धता तें स्तोक हो है । बहुरि पुण्य प्रकृतिनि का संक्लेशता तें स्तोक हो है अर विशुद्धता तें बहुत हो है । सो अनंतगुणा वा यथासम्भव घटता वा बधता अप्रशस्त वा प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग बंध अधिक हीन क्रम तें जैसें जहां संभवै तैसें तहां जानना । बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग बंध अधिक होने तें किछू आत्मा का बुरा होता नाहीं; जातें संसार विषैं रहना तौ स्थिति बंध के अनुसारि है अर घातियानि तें आत्मा का बुरा होइ, सो घातिया अप्रशस्त ही है; तातें दर्शन–चारित्र की लब्धि तें प्रशस्त प्रकृतिनि के अनुभाग की अधिकता अप्रशस्त प्रकृतिनि के अनुभाग की हीनता हो है । तहां कषायनि का अभाव भएं सर्वथा अनुभाग बंध का अभाव हो है । अैसें बंध के अभाव तें संवर होने का विधान जानना ।

अब सत्व नाश का क्रम कहिए है । दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तें पहलें मिथ्यात्वादि अति अप्रशस्त प्रकृतिनि का, पीछें ज्ञानावरणादि अप्रशस्त प्रकृतिनि का वा प्रशस्त प्रकृतिनि का सत्त्व नाश हो है, सो सत्त्वनाश स्वमुख उदय करि अर परमुख उदय करि दोय प्रकार हो है ।

तहां जो प्रकृति अपने ही रूप रहि, अपनी स्थिति सत्त्व का अंत निषेक का उदय भएं अभाव कौं प्राप्त होइ, ताका स्वमुख उदय करि सत्त्वनाश कहिए । जैसें संज्वलन लोभ है, सो क्षपक सूक्ष्म सांपराय का अंत विषैं अपने ही रूप उदय होइ नाश कौं प्राप्त हो है ।

बहुरि जो प्रकृति संक्रमण के वश तें अन्य प्रकृति रूप परिणमि करि अपना अभाव कौं प्राप्त होइ, ताका परमुख उदय करि सत्त्वनाश कहिए । जैसें अनंतानुबंधी का विसंयोजन होतें अनंतानुबंधी कषाय है सो अन्य कषायरूप परिणमि नाश कौं प्राप्त हो है । अैसें ही यथासंभव अन्यत्र जानना ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि एक एक सत्ता के निषेक के परमाणू एक एक समय विषैं उदय रूप होइ निर्जरैं। बहुरि दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तैं उपरि के निषेकनि के परमाणू नीचले निषेक रूप होइ परिणमै हैं। तहां एक एक समय विषैं साधिक समयप्रबद्ध की वा अनेक समयप्रबद्धनि की निर्जरा होइ अर बंध समय समय प्रति एक एक समयप्रबद्ध का ही होइ। तातैं तहां निर्जरा बहुत हो है अर बंध स्तोक हो है। अथवा किसी काल विषैं कोइ प्रकृतिका बंध नाहीं हो है, केवल निर्जरा ही हो है। असैं सर्व कर्म परमाणूनि का नाश भएं सर्वथा प्रदेश सत्त्व का नाश हो है।

बहुरि स्थिति सत्त्व जो पाइए है, तातैं एक एक समय व्यतीत होतैं तौ एक एक घटै ही है। बहुरि दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तैं स्थिति कांडक विधान तैं वा अपकृष्टि विधान तैं स्थिति सत्त्व का घटना हो है। तहां प्रथम कांडक विधान कहिए है–

बहुरि प्रमाण लीए स्थिति सत्त्व था, ताके समय समय विषैं उदय आवने योग्य बहुत ही निषेक थे, तिन विषैं केते इक उपरि के निषेकनि का नाश करि स्थिति सत्त्व घटावना। तहां तिनि नाश करने योग्य निषेकनि के जे सर्व परमाणू, तिनिकौं नाश कीए पीछैं जो अवशेष स्थिति रहैगी, ताके आवली मात्र उपरि के निषेक छोडि सर्व निषेकनि विषैं मिलाइए है। तहां तिनि सर्व परमाणूनि विषैं केते इक परमाणू पहिले समय मिलाइए हैं, केते इक दूसरे समय मिलाइए हैं, असैं यथासंभव अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत परमाणूनि कौं नीचले निषेकनि विषैं प्राप्त करिए तहां अंत समय विषैं अवशेष रहे सर्व परमाणूनि कौं नीचले निषेकनि विषैं प्राप्त होते संतैं तिनि नाश करने योग्य निषेकनि का नाश भया तब जितने निषेकनि का नाश भया, तितना समय प्रमाण स्थिति सत्त्व तहां घटता भया।

इहां दृष्टांत – जैसैं स्थिति सत्त्व अठतालीस समय मात्र था, ताके अठतालीस ही निषेक अर तिनि सर्व निषेकनि की पचीस हजार परमाणू थीं, तिनि विषैं आठ निषेकनि का नाश करना तहां तिनि निषेकनि एक हजार परमाणू, तिनिके अवशेष रहेंगे जे चालीस निषेक, तिनि विषैं उपरि के दोय निषेक छोडि, नीचे के अठतीस निषेकनि विषैं मिलाइए है, तहां तिन एक हजार परमाणूनि विषैं केते इक परमाणू तौ पहिले समय मिलाइये, केते इक दूसरे समय मिलाइए असैं च्यारि समय पर्यंत मिलाइए हैं। तहां चौथे समय अवशेष सर्व परमाणूनि कौं तिनि अठतीस निषेकनि विषैं मिलाएं तिनि आठ निषेकनि का अभाव हो है। तिनिके अभाव होतैं अठतालीस समय का स्थिति सत्त्व था, सो चालीस समय ही का रहै है। असैं ही यथा संभव प्रमाण जानि दार्ष्टान्त विषैं विधान जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अब इहां संज्ञा कहिए है। ऐसैं उपरिके निषेकनि कौं क्रम तैं नीचले निषेक रूप परिणमाइ स्थिति का घटावना ताका नाम स्थितिकांडक है, वा स्थितिखंड है। बहुरि इस एक कांडक विषैं निषेकनि का नाश करि जेती स्थिति घटाई, ताके प्रमाण का नाम स्थितिकांडक आयाम है। जैसें दृष्टांत विषैं आठ समय। बहुरि तिनिका नाश करने योग्य निषेकनि का जो सर्व द्रव्य, ताका नाम कांडकद्रव्य है। जैसें दृष्टांत विषैं एक हजार। बहुरि इस द्रव्य कौं अवशेष स्थिति के निषेकनि विषैं मिलावना तहां आवलीमात्र निषेकनि विषैं न मिलाया, ताका नाम **अतिस्थापनावली** है। जैसें दृष्टांत विषैं दोय निषेक। बहुरि या बिना अन्य अवशेष स्थिति के निषेकनि विषैं तिस कांडक द्रव्य कौं मिलावना, ताका नाम **कांडकोत्करण** है वा **कांडघात** है। बहुरि एक कांडक का उत्कर्षण अंतर्मुहूर्त काल करि पूर्ण होइ, ताका नाम **कांडकोत्करण काल** है। जैसें दृष्टांत विषैं च्यारि समय। बहुरि इस काल के प्रथम समय विषैं तिस कांडक द्रव्य कौं ग्रहि जेते परमाणू अवशेष निषेकनि विषैं मिलाए ताका नाम **प्रथम फालि है।** द्वितीय समय विषैं मिलाए ताका नाम **द्वितीय फालि** है। ऐसैं ही क्रम तैं अंत समय विषैं मिलाए, ताका नाम **चरम फालि** है। अंत समय तैं पहिले समय विषैं मिलाए, ताका नाम **द्विचरम फालि** है। ऐसैं एक कांडक समाप्त भएं द्वितीय कांडक प्रारंभ हो है। ऐसैं ही अनेक कांडक भएं स्तोक स्थितिसत्त्व अवशेष रहि जाइ तब कांडक क्रिया न हो है। एक एक समय व्यतीत होतैं एक एक समय क्रम तैं घाटि, तिस अवशेष स्थिति का नाश हो है। ऐसैं कांडक विधान कह्या।

अब अपकृष्टि विधान कहिए है–

विवक्षित कर्म प्रकृति के सर्व निषेक संबंधी सर्व परमाणू, तिनकौं **अपकर्षण** भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र परमाणू ग्रहे, ताका नाम **अपकृष्ट द्रव्य** है। तिस अपकृष्ट द्रव्य विषैं केते इक परमाणू तौ उदयावली विषैं मिलाए केते इक परमाणू गुणश्रेणी आयाम विषैं मिलाए, अवशेष परमाणू उपरितन स्थिति विषैं मिलाए, तहां वर्तमान समय तैं लगाय आवलीमात्र समय संबंधी जे निषेक, तिनका नाम **उदयावली** है। तिन विषैं उदयावली विषैं देने योग्य जो द्रव्य ताकौं निषेक निषेक प्रति एक एक चय घटता क्रम करि मिलाइए। बहुरि तिनि आवलीमात्र निषेकनि के उपरिवर्ती यथासंभव अंतर्मुहूर्त के समय संबंधी जे निषेक तिनिका नाम **गुणश्रेणी आयाम** है। तिनि विषैं गुणश्रेणी आयाम विषैं देने योग्य जो द्रव्य, ताकौं निषेक निषेक प्रति असंख्यातगुणा क्रम लीएं मिलाइए है। बहुरि तिनके उपरिवर्ती अवशेष सर्व स्थिति

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संबंधी निषेक, तिनका नाम **उपरितन स्थिति** है। तिन विषैं अंत के आवली मात्र निषेकनि विषैं तौ द्रव्य न मिलाइए है, ताका नाम तौ **अतिस्थापनावली** है। अर तिस बिना अन्य निषेकनि विषैं उपरितन स्थिति विषैं देने योग्य जो द्रव्य, ताकौं नाना गुण हानि रचना करि निषेक निषेक प्रति चय घटता क्रम लीएं मिलाइए है।

इहां दृष्टांत – जैसैं विवक्षित कर्म प्रकृति की स्थिति अठतालीस समय, ताके निषेक अठतालीस, तिनके सर्व परमाणू पचीस हजार, तिनिकौं अपकर्षण भागहार का प्रमाण पांच ताका भाग दीए, पांच हजार पाए, सो सर्व परमाणूनि मैं स्यों इतनी परमाणू ग्रहि करि तिनि विषैं दोय सै पचास परमाणू तौ उदयावली विषैं देई सो अठतालीस निषेकनि विषैं प्रथमादि च्यारि निषेक उदयावली के हैं, तिन विषैं चय घटता क्रम करि मिलाइए। बहुरि एक हजार परमाणू गुणश्रेणी आयाम विषैं देई सो पांचवां आदि बारह्वां पर्यंत आठ निषेक गुणश्रेणी आयाम के हैं, तिन विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं मिलाइए। बहुरि तीन हजार सात सै पचास परमाणू उपरितन स्थिति विषैं देई, सो छत्तीस निषेक अवशेष रहे, तिनि विषैं अंत के च्यारि निषेक अतिस्थापना रूप छोडि, अवशेष तेरह्वां आदि चवालीसवां पर्यंत बत्तीस निषेकनि विषैं नाना गुणहानि की रचना लीएं चय घटता क्रम करि मिलाइए। अैसैं ही दार्ष्टांत विषैं यथासंभव प्रमाण जानि स्वरूप जानना।

चय घटता क्रम करि वा असंख्यात गुणा क्रम करि मिलावने का विधान आगे कहेंगे। इहां यहु उदयावली तैं बाह्य गुणश्रेणी आयाम का स्वरूप दिखाया। बहुरि कहीं उदयादिक गुणश्रेणी आयाम हो है। तहां अपकृष्ट द्रव्य विषैं केता इक द्रव्य कौं तौ गुणश्रेणी आयाम प्रमाण जे वर्तमान समय संबंधी निषेक तैं लगाय निषेक तिनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम करि मिलावै। अवशेष कौं उपरितन स्थिति विषैं मिलावैं, सो इहां गुणश्रेणी आयाम विषैं उदयावली गर्भित भई; तातैं उदयादि गुणश्रेणी आयाम कहिए।

बहुरि गुणश्रेणी के निषेकनि का प्रमाण मात्र जो यह गुणश्रेणी आयाम कह्या, सो कहीं गलितावशेष हो है, कहीं अवस्थित हो है। तहां गलितावशेष गुणश्रेणी का प्रारंभ करने कौं प्रथम समय विषैं जो गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण था, तातैं एक-एक समय व्यतीत होतैं ताके द्वितीयादि समयनि विषैं गुणश्रेणी आयाम क्रम तैं एक-एक निषेक घटता होइ अवशेष रहै ताका नाम **गलितावशेष** है। बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अवस्थित गुणश्रेणी आयाम के प्रारंभ करने का प्रथम द्वितीयादि समयनि विषैं गुण श्रेणी आयाम जेताका तेता ही रहै। ज्यूं-ज्यूं एक-एक समय व्यतीत होइ, त्यूं-त्यूं गुणश्रेणी आयाम के अनंतरिवर्ती अैसा उपरितन स्थिति का एक-एक निषेक गुण-श्रेणी आयाम विषैं मिलता जाइ, तहां **अवस्थित गुणश्रेणी आयाम** कहिए है। बहुरि इस गुणश्रेणी आयाम के अन्त के बहुत निषेकनि का नाम कहीं गुणश्रेणी शीर्ष कह्या है। कहीं अंत के एक निषेक का ही नाम **गुणश्रेणी शीर्ष** है। जातैं शीर्ष नाम उपरिवर्ती अंग का है। अैसैं विवक्षित स्थान विषैं यथासंभव प्रमाण जानि गुण-श्रेणी निर्जरा का विधान जानना।

बहुरि इहां उदयावली विषैं दीया द्रव्य, ताका नाम उदीरणा जानना। बहुरि जहां स्तोक स्थिति सत्त्व अवशेष रहै है, तहां गुणश्रेणी का भी अभाव हो है। अप-कृष्ट द्रव्य विषैं केता इक द्रव्य कौं उदयावली विषैं देइ, अवशेष कौं उपरितन स्थिति विषैं दे है। बहुरि एक समय अधिक आवली मात्र अवशेष स्थिति रहे आवली के उप-रिवर्ती जो एक निषेक ताका द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली के निषेकनि विषैं एक समय घाटि आवली का दोय त्रिभाग मात्र निषेकनि कौं अतिस्थापना रूप छोडि समय अधिक आवली कौं त्रिभाग मात्र निषेकनि विषैं मिलावै है। तहां जघन्य उदीरणा नाम पावे है। अैसैं अपकृष्टि विधान है।

इहां अैसा जानना—

कांडकविधान तैं तौ स्थिति, सत्त्व का घटना मूल तैं हो है, जातैं तहां उपरि के केते इक निषेकनि का नाश करि स्थिति घटाइए है। बहुरि अपकृष्टि विधान विषैं उपरि की निषेकनि की केती इक परमाणूनि ही की स्थिति घटाइए है। मूल तैं निषेक नाश नाहीं होइ, तातैं मूल तैं स्थिति सत्त्व घटना न हो है। बहुरि स्थिति सत्त्व विषैं आवली मात्र अवशेष रहै, ताका नाम **उच्छिष्टावली** है। तहां उदीरणा आदि कार्य न हो है। पूर्वैं कार्य भए थे, तिनि करि एक-एक समय विषैं उदय आवने योग्य अैसे अनेक समयप्रबद्ध मात्र परमाणू के समूहरूप निषेक भए तिनकौं क्रम तैं एक समय विषैं गलै हैं निर्जरै है याका नाम **अधोगलन** है। अैसैं उच्छिष्टावली व्यतीत भएं सर्वथा स्थिति, सत्त्व का नाश हो है। अैसैं मुख्यपनैं संक्षेप स्वरूप दिखाया है। विशेष आगे कहेंगे ही। बहुरि सत्तारूप विवक्षित कर्म प्रकृति के जे परमाणू तिन विषैं अनुभाग की अधिकता हीनता करि स्पर्धक रचना है, सो पूर्वैं विधान कह्या है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तहां नीचे के स्पर्धक स्तोक अनुभाग युक्त हैं। उपरि के स्पर्धक बहुत अनुभाग युक्त हैं। तहां जो निषेक उदय आवै हैं, ताके अनुभाग का भी उदय पूर्वोक्त प्रकार हो है। बहुरि दर्शन चारित्र लब्धि तैं अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग का घटावना हो है। तहां जैसैं स्थिति घटावने विषैं कांडक विधान कह्या, तैसैं इहां भी विधान जानना। सो कहिये है–

बहुत अनुभाग युक्त उपरि के बहुत स्पर्धकनि का अभाव करि तिनके परमाणूनि कौं स्तोक अनुभाग युक्त नीचे के स्पर्धकनि विषै क्रम तैं मिलाइ अनुभाग का घटावना ताका नाम **अनुभाग कांडक** वा **अनुभाग खंडन** है। ताकौं लांछित करना कहिए खंडन करना सो **अनुभाग कांडकोत्करण** वा **अनुभाग कांडक घात** है। बहुरि एक अनुभाग कांडक का घात अंतर्मुहूर्त काल करि संपूर्ण होइ, तिस काल का नाम **अनुभाग कांडकोत्करण काल** है। तिस काल विषैं नाश करने योग्य स्पर्धकनि के परमाणूनि कौं ग्रहि नाश कीएं पीछे जे अवशेष स्पर्धक रहे तिनिविषैं केते इक उपरि के स्पर्धक अतिस्थापनारूप छोडि अन्य सर्व स्पर्धकनि विषैं मिलावैं है।

इहां दृष्टांत–जैसैं विवक्षित प्रकृति के पांच सै स्पर्धक थे, तिनिका अनंत का प्रमाण पांच, ताका भाग दीएं तहां बहुभाग प्रमाण च्यारि सै स्पर्धकनि का नाश करना। तहां तिनिके परमाणूनि कौं अवशेष सो स्पर्धक रहैंगे, तिनि विषैं दश स्पर्धक अतिस्थापना रूप छोडि निव्वै स्पर्धकनि विषैं मिलावै हैं। अैसैं ही यथासंभव प्रमाण जानि दृष्टांत विषैं स्वरूप जानना। बहुरि इहां एक अनुभाग कांडक करि जेता अनुभाग घटाया, ताका नाम **अनुभाग कांडक आयाम** है। बहुरि नाश करने योग्य स्पर्धकनि के सर्व परमाणूनि तैं ग्रहि करि अनुभाग कांडक का प्रथम समय विषैं जेते परमाणु अवशेष स्पर्धकनि विषैं मिलाये, ताका नाम **प्रथम फालि** है। द्वितीय समय विषैं मिलाये ताका नाम **द्वितीय फालि** है। अैसैं ही क्रम जानना।

या प्रकार एक कांडक कौं समाप्त भएं अन्य कांडक का प्रारंभ हो है, सो अैसैं अनेक अनुभाग कांडकनि करि अनुभाग घटाइए है। बहुरि जहां विशुद्धता बहुत हो है तहां अंतर्मुहूर्त करि होता था जो कांडकघात ताका अभाव हो है। अर अनुसमयापवर्तन हो है। तहां समय समय प्रति अनंत गुणा क्रम करि अनुभाग घटाइए है। पूर्व समय विषैं जो अनुभाग था, ताकौं अनंत का भाग दीएं बहुभाग का नाश करि एक भाग मात्र अनुभाग अवशेष राखै है। अैसैं समय समय प्रति अनुभाग का घटावना भया; तातैं याका नाम **अनुसमयापवर्तन** है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि संज्वलन कषाय विषैं अनुभाग घटने का क्रम करि अपूर्व स्पर्धक रचना अर बादर कृष्टि रचना हो है। संज्वलन लोभ विषैं सूक्ष्म कृष्टि रचना हो है सो इनिका विशेष व्याख्यान आगैं होगा। बहुरि सर्वत्र स्तोक अनुभाग युक्त की तौ नीचैं रचना अर बधती अनुभाग युक्त की उपरि रचना जानना। ताकी अपेक्षा स्पर्धकनि कौं कृष्टिनि कौं नीचैं उपरि कहिए है। ऐसैं क्रम तैं अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग सत्त्व का नाश हो है। प्रकृतिसत्त्व नाश भएं सर्वथा तिनिका अनुभाग सत्त्व नाश हो है। बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनि का कांडकादि विधान तैं अनुभाग सत्त्व का नाश करिए है। प्रकृति सत्त्व का नाश के साथि तिनिका अनुभाग सत्त्व का नाश जानना। या प्रकार सत्त्वनाश का क्रम करि निर्जरा होने का विधान जानना। बहुरि संवर निर्जरा के हेतु तैं सर्व कर्म का सर्वथा नाश भएं शुद्धात्म की व्यक्त अवस्थारूप मोक्ष हो है, सो यहु दर्शन चारित्र लब्धि का फल है। इहां कोई क्रियानि का किंचित् स्वरूप दिखाया है। इनिका भी वा अन्य क्रिया अनेक हो हैं। तिनिका विशेष व्याख्यान आगैं ग्रंथ विषैं होइगा ही।

अब इहां केती एक संज्ञा कही वा आगैं संज्ञा कहैंगे, तिनका स्वरूप दिखाइए है।

कर्म प्रकृतिनि का कथन विषैं तिनिकी परमाणूनि का नाम **द्रव्य** है। जैसैं बंधरूप परमाणूनि का नाम **बंध द्रव्य** है। सत्त्व रूप परमाणूनि का नाम **सत्त्व द्रव्य** है। स्थिति कांडक के निषेकनि की परमाणूनि का नाम **कांडक द्रव्य** है। तहां प्रथमादि फालिनि के परमाणूनि का नाम **प्रथमादि फालनि का द्रव्य** है। उपरि के वा नीचैं के निषेक छोडि बीचि के केते इक निषेकनि का अभाव करनेरूप अंतरकरण हो है। तहां अभाव करनेरूप निषेकनि के परमाणूनि का नाम **अंतरकरण द्रव्य** है। उदय आवने कौं अयोग्य कीए परमाणूनि का नाम **उपशम द्रव्य** है। विवक्षित सत्तारूप निषेक था तिस विषैं नवीन परमाणू मिलाये तिनका नाम **दीयमान द्रव्य** है। आगैं सत्तारूप थी अर ए नवीन मिली इनि सब परमाणूनि के समूह का नाम **दृश्यमान द्रव्य** है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि कांडक नाम **पर्व** का है। अर जैसैं सांठा विषैं पैंली हो है; तैसैं मर्यादारूप स्थान का नाम **पर्व** है। जैसैं स्थितिविषैं घटने करि मर्यादारूप स्थान भया, ताका नाम **स्थिति कांडक** है। अनुभाग विषैं घटने करि मर्यादारूप स्थान भया,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

ताका नाम **अनुभाग कांडक** है। बहुरि अनंतानुबंधी की स्थिति विषैं च्यारि स्थान कहे तहां च्यारि पर्व कहे। बहुरि अपकृष्ट द्रव्य के मिलावने के जहां तीन स्थान हैं तहां तीन पर्व कहे; असैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि आयाम नाम लंबाई का है सो काल के समय भी युगपत् न हो हैं; तातैं काल का प्रमाण विषैं आयाम संज्ञा कहिए है वा कहीं उपरि उपरि रचना होइ तहां तिनिका प्रमाण विषैं भी आयाम संज्ञा कहिए है। जैसें स्थिति के प्रमाण का नाम **स्थिति आयाम** है। स्थिति कांडक के निषेकनि के प्रमाण का नाम **स्थिति कांडक आयाम** है। अंतरकरण विषैं जितने निषेकनि का अभाव कीया है ताका नाम **अंतरायाम** है। गुणश्रेणी के निषेकनि के प्रमाण का नाम **गुणश्रेणी आयाम** है। असैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि गुण नाम गुणकार का है। तहां गुणकार की पंक्ति लीएं जहां निषेकनि विषैं द्रव्य दीजिए, ताका नाम **गुणश्रेणी** है। समय समय गुणकार लीएं विवक्षित प्रकृति के परमाणू अन्य प्रकृतिरूप संक्रमण करै, ताका नाम **गुणसंक्रमण** है। गुणकार लीएं हानि कहिये हीनता, घटवारी जहां होइ, ताका नाम **गुणहानि** है। असैं ही अन्यत्र जानना।

बहुरि कर्मस्थिति विषैं निषेकनि का प्रमाणरूप स्थिति कहिए है।

जैसें विवक्षित निषेकनि के उपरिवर्ती निषेकनि का नाम **उपरितन स्थिति** है। गुणश्रेणी का कथन विषैं तौ गुणश्रेणी आयाम तैं उपरिवर्ती निषेकनि का नाम **उपरितन स्थिति** है। केवल उदीरणा का कथन विषैं उदयावली तैं उपरिवर्ती निषेकनि का नाम **उपरितन स्थिति** है। इत्यादि जानना।

बहुरि विवक्षित प्रमाण लीएं नीचले निषेकनि का नाम **प्रथम स्थिति** है। बहुरि उपरिवर्ती सर्व स्थिति के निषेकनि का नाम **द्वितीय स्थिति** है। जैसें अंतरायाम तैं नीचले निषेकनि का नाम **प्रथम स्थिति** उपरले निषेकनि का नाम **द्वितीय स्थिति** है। अथवा संज्वलन क्रोध की जेता प्रमाण लीएं प्रथम स्थिति स्थापी, ताके निषेकनि का नाम **प्रथम स्थिति** है। अवशेष सर्व स्थिति के निषेकनि का नाम द्वितीय स्थिति है। इत्यादि जानना।

बहुरि समुदायरूप एक क्रिया विषैं जुदा जुदा खंड करि विशेष करना ताका नाम **फालि** है। जैसें कांडक द्रव्य का कांडकोत्करण काल विषैं अन्यत्र प्राप्त करना

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तहां प्रथम समय प्राप्त कीया सो कांडक की **प्रथम फालि**, द्वितीय समय विषैं प्राप्त कीया सो **द्वितीय फालि** इत्यादि। बहुरि अैसें ही उपशमन काल विषैं पहले समय जेता द्रव्य उपशमाया सो **उपशम की प्रथम फालि**, द्वितीय समय उपशमाया सो ताकी **द्वितीय फालि** इत्यादि अैसें ही अन्यत्र जानना।

बहुरि अन्य निषेक के परमाणू अन्य निषेक विषैं मिलाइए तहां मिलावना वा देना वा **निक्षेपण करना** कहिए। जिनि निषेकनि विषैं दीए ते निषेक, **निक्षेपणरूप** जानने। अर जिनि निषेकनि विषैं न मिलाइए ते निषेक **अतिस्थापनारूप** जानने। बहुरि द्वितीय स्थिति के निषेकनि का द्रव्य कौं अपकर्षण करि प्रथम स्थिति के निषेकनि विषैं मिलाइए तहां **आगाल** संज्ञा कहिए है। अर प्रथम स्थिति के निषेकनि का द्रव्य कौं उत्कर्षण करि द्वितीय स्थिति के निषेकनि विषैं मिलाइए तहां **प्रत्यागाल** संज्ञा कहिए।

बहुरि विवक्षित के काल का जो प्रमाण सोई ताका काल है। जैसैं एक कांडक का घात करने का जो काल ताका नाम **कांडकोत्करण काल** है। तहां प्रथम समय विषैं प्रथम फालि का पतन जो नीचले निषेकनि विषैं प्राप्त होना सो हो है। तातैं तिस प्रथम समय कौं प्रथम फालिका पतन काल कहिए। द्वितीय समय कौं द्वितीय फालि का पतन काल कहिए। अैसें ही अन्त समय कौं चरम फालि का पतन काल कहिए। ताके पूर्व समय कौं द्विचरम फालि का पतन काल कहिए। बहुरि जिस काल विषैं अंतरकरण करिए ताका नाम अंतरकरण काल है। बहुरि जिस काल विषैं क्रोध कौं वेदै ताके उदय कौं भोगवैं; ताका नाम क्रोध वेदक काल है अैसें ही अन्यत्र जानना।

बहुरि आवली मात्र काल का वा तितने ही काल संबंधी निषेकनि का नाम आवली है। तहां वर्तमान समय तैं लगाय आवली मात्र काल कौं आवली कहिए वा तिनिके निषेकनि कौं भी **आवली** कहिए वा **उदयावली** कहिए। अर ताके उपरिवर्ती जो आवली ताकौं **द्वितीयावली** कहिए वा **प्रत्यावली** कहिए। बहुरि बंध समय तैं लगाय आवली पर्यंत उदीरणादि क्रिया न होइ सकै ताका नाम **बंधावली** है वा **अचलावली** है वा **आबाधावली** है। बहुरि द्रव्य निक्षेपण करतैं जिनि आवलीमात्र निषेकनि विषैं नाहीं निक्षेपण करिए ताका नाम **अतिस्थापनावली** है। बहुरि स्थिति सत्त्व घटतैं जो आवलीमात्र स्थिति अवशेष रहि जाय ताका नाम **उच्छिष्टावली** है। बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जिस आवली विषैं संक्रमण पाइए सो **संक्रमणावली** अर उपशमन करना पाइए सो **उपशमावली** । इत्यादि अैसें ही अन्यत्र जानना ।

बहुरि अन्त नाम माही (अन्दर) का है, सो उक्त प्रमाण तैं किछू घाटि होइ तहां **अन्त** संज्ञा हो है । तहां कोडाकोडी के नीचैं कोडी के उपरि ताकौं **अन्तः कोडाकोडी** कहिए । मुहूर्त तैं घाटि आवली तैं अधिक ताकौं **अन्तर्मुहूर्त** कहिए । दिवस तैं किछू घाटि ताकौं **अन्तर्दिवस** कहिए इत्यादि । बहुरि तीन के उपरि नव के नीचैं ताका नाम **पृथक्त्व** है । वा कहीं बहुत हजारों का भी नाम पृथक्त्व है । सो यथा-संभव जानना । बहुरि कहीं दृष्टांत अपेक्षा संज्ञा हो है । जैसें कोऊ गाय का पूंछ क्रम तैं घटता हो है तैसें इहां एक-एक चय घटता क्रम करि निषेक पाइए तहां **गोपुच्छ** संज्ञा कहिए । बहुरि द्रव्य देने विषैं जहां ऊंट की पीठिवत् हीन अधिकपना होइ तहां **उष्ट्रकूट** संज्ञा कहिए । बहुरि जहां समान पाटीका आकारवत् सर्वस्थाननि विषैं समान रचना होइ तहां **समपट्टिका** कहिए इत्यादि जानना । या प्रकार जैसें व्याकरण विषैं केती इक संज्ञा तौ संज्ञासंधि विषैं कही केती इक संज्ञा जहां प्रयोजन भया तहां कहीं तैसें इस ग्रन्थ विषैं केती इक संज्ञा तौ इहां पीठ बंध विषैं कहीं है । केती इक संज्ञा आगै शास्त्र विषैं जहां प्रयोजन होगा तहां कहिएगी ।

अब इहां द्रव्य का विभाग करने का विधान कौं कारण करणसूत्र कहिए है। तहां नाना गुणहानि विषैं चय घटता क्रमरूप द्रव्य के विभाग का विधान कहिए है–

पहिलैं १ द्रव्य, २ स्थिति, ३ गुणहानि, ४ नाना गुणहानि, ५ दो गुणहानि, ६ अन्योन्याभ्यस्त राशि इनिका स्वरूप वा प्रमाण जानना । तहां प्रथम सम्बन्ध विषैं स्थिति रचना की अपेक्षा कहिए है ।

विवक्षित समय विषैं ग्रहण कीए जे समयप्रबद्ध परिमाण परमाणू सो **द्रव्य** है । ताकी आबाधा रहित स्थिति बंध के समयनि का जो प्रमाण सो **स्थिति** है । तहां एक गुणहानि विषैं निषेकनि का प्रमाण सो **गुणहानि आयाम** है । स्थिति विषैं गुणहानि का जो प्रमाण सो **नाना गुणहानि** है । गुणहानि आयाम तैं दूणा प्रमाण सो **दो गुणहानि** है । नाना गुणहानि मात्र दूवा मांडि परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ सो **अन्योन्याभ्यस्त** राशि है ।

जैसें मिथ्यात्व का द्रव्य तौ अपने समयप्रबद्ध मात्र है । स्थिति सत्तर कोडाकोडी सागर है । स्थिति कौं नाना गुणहानि का भाग दीएं जो प्रमाण होइ तितना

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणहानि आयाम है। पल्य के अर्धच्छेदनि विषैं पल्य की वर्गशलाका के **अर्धच्छेद** घटाएं जो होइ तितना नाना गुणहानि है। गुणहानि आयाम तैं दूणा दो गुणहानि है। पल्य कौं पल्य की वर्गशलाका का भाग दीजिए इतना अन्योन्याभ्यस्त राशि है। अैसैं ही अन्य प्रकृतिनि विषैं यथासंभव प्रमाण जानना।

अब अनुभाग रचना की अपेक्षा कहिए है। विवक्षित कर्मप्रकृति के परमाणूनि का प्रमाण सो तो **द्रव्य** है। तहां सर्व वर्गणानि का जो प्रमाण सो **स्थिति** है। एक गुणहानि विषैं वर्गणानि का प्रमाण सो **गुणहानि आयाम** है। स्थिति विषैं गुणहानि का प्रमाण सो **नाना गुणहानि** है। दूणा गुणहानि मात्र दो गुणहानि है। नाना गुणहानि मात्र दूवानि कौं परस्पर गुणैं जो होइ सो अन्योन्याभ्यस्त राशि है। सो सर्व प्रकृतिनि की अनुभाग रचना विषैं इन छहौंनि का प्रमाण यथासम्भव हीनाधिकपना कौं लीएं अनंत प्रमाण जानना।

बहुरि जहां कांडकादि द्रव्य ग्रहि करि यथायोग्य निषेकनि विषैं निक्षेपण करना होइ, तहां कहिए है—जेता द्रव्य ग्रह्या होइ सो तींहि प्रमाण तो द्रव्य है। जितने निषेकनि विषैं देना होइ, तिनिका प्रमाण मात्र स्थिति है। गुणहानि का प्रमाण बंध की स्थिति रचना विषैं कह्या तितना है। याका भाग इहां सम्भवती स्थिति कौं दीएं नाना गुणहानि का प्रमाण आवैं दूणा गुणहानि मात्र दो गुणहानि है। नाना गुणहानि मात्र दूवानि कौं परस्पर गुणैं अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण हो है। सो इहां इन छहौं का प्रमाण विवक्षित स्थान विषैं जैसा संभवै तैसा जानना।

अब इहां स्थिति रचना अपेक्षा निषेकनि विषैं द्रव्य का प्रमाण ल्यावने कौं विधान कहिए है—प्रथम दृष्टांत—जैसै द्रव्य तरेसठि सै (६३००), स्थिति अठतालीस (४८), गुणहानि आठ (८), नाना गुणहानि छह (६), दो गुणहानि सोलह (१६), अन्योन्याभ्यस्त राशि चौसठि (६४) स्थापि विधान कहिए है—"**दिवड्ढगुणहाणिभजिदे पढमा**" सर्व द्रव्य कौं साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं प्रथम निषेक होइ। जैसैं तरेसठि सै कौ साधिक बारह का भाग दीएं पांच सै बारा होइ। बहुरि "**तं दो गुणहाणिणा भजिदे पचयं**" तिस प्रथम निषेक कौं दो गुणहानि का भाग दीएं चय का प्रमाण आवै है। जैसैं पांच सै बारा कौं सोलह का भाग दीएं बत्तीस होंइ, सो द्वितीयादि निषेकनि विषैं एक एक चय प्रमाण द्रव्य घटता जानना। जैसैं द्वितीय निषेकनि विषैं च्यारि सै असी, तृतीय विषैं च्यारि सै अठतालोस इत्यादि जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अैसैं क्रम तै जिस निषेक विषैं प्रथम निषेक तैं आधा प्रमाण होइ, तहां तैं लगाय दूसरी गुणहानि जाननी । जैसैं दूसरी गुणहानि का प्रथम निषेक दोय सै छप्पन बहुरि तहां चय का प्रमाण प्रथम गुणहानि तैं आधा है । जैसैं सोलह, सो इहां भी द्वितीयादि निषेकनि विषैं एक एक चय घटता क्रम जानना । अैसै प्रथम गुणहानि तैं द्वितीय गुणहानि विषैं द्रव्य चय निषेकनि का प्रमाण आधा भया । याही प्रकार तृतीयादि गुणहानिनि विषैं पूर्व पूर्व गुणहानि तैं द्रव्य, चय, निषेकनि का प्रमाण क्रम तैं आधा आधा जानना । सो जितनी नाना गुणहानि का प्रमाण होइ तितनी गुणहानिनि विषैं अैसैं रचना करनी । जैसैं दृष्टांत विषैं रचना अैसी–

२२८	१४४	७२	३६	१८	९
३२०	१६०	८०	४०	२०	१०
३५२	१७६	८८	४४	२२	११
३८४	१९२	९६	४८	२४	१२
४१६	२०८	१०४	५२	२६	१३
४४८	२२४	११२	५६	२८	१४
४८०	२४०	१२०	६०	३०	१५
५१२	२५६	१२८	६४	३२	१६

बहुरि अन्य प्रकार विधान कहिए है–

सर्व द्रव्य कौं एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त राशि का भाग दीएं अन्त गुणहानि के द्रव्य का प्रमाण आवै है । जैसैं तरेसठि सै कौं तरेसठि का भाग दीएं सौ होइ । बहुरि द्विचरम गुणहानि आदि विषैं दूणा-दूणा होइ, आधा अन्योन्याभ्यस्त राशि करि अन्त गुणहानि के द्रव्य कौं गुणैं प्रथम गुणहानि का द्रव्य हो है । जैसैं सौ कौं बत्तीस करि गुणै बत्तीस सै होइ अैसैं गुणहानि के द्रव्य का प्रमाण ल्याइ । अब गुणहानिनि विषैं निषेकनि के द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है । तहां प्रथम गुणहानि का सर्व द्रव्य वा निषेकनि का प्रमाण जानना ।

जैसैं द्रव्य बत्तीस सै (३२००), निषेक आठ, तहां **"अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे मज्झिम धणमागच्छदि'** अध्वान जो निषेकनि का प्रमाण मात्र गच्छ, ताकरि सर्वधन जो सर्वद्रव्य, सो भाजित कीएं बीचि के निषेक का प्रमाण मात्र मध्यम धन आवै है । जैसैं बत्तीस कौं आठ का भाग दीएं च्यारि सै होइ । बहुरि **'तं रूऊणद्धाणूणेणणिसेयभागहारेण हदे पचयं'** तिस मध्यम धन कौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो निषेक भागहार दो गुणहानि ताका भाग दीएं चय का प्रमाण

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आवै हैं। जैसें सात का आधा साढा तीन ताकरि हीन सोलह कौं कीएं साढा बारह, ताका भाग च्यारि सै कौं दीए बत्तीस पाये सो चय का प्रमाण है। बहुरि '**तं दो गुणहाणिगुणा गुणिदे आदिणिसेयं**' तिस चय कौं दो गुणहानि करि गुणैं प्रथम निषेक का प्रमाण आवै है। जैसें बत्तीस कौं सोलह करि गुणैं पांच सै बारा होइ। बहुरि '**तत्तो विशेषहीणकमं**' तहां पीछे द्वितीयादि निषेकनि विषैं विशेष कहिए चय का प्रमाण, ताकरि हीनक्रम जानना। एक-एक चय मात्र घटता क्रम तैं जानना। तहां एक-एक अधिक गुणहानि करि चय कौं गुणै अन्त निषेक का प्रमाण हो है। जैसें नव करि बत्तीस कौं गुणैं दोय सै अठयासी होइ। बहुरि अैसें ही द्वितीयादि गुणहानि का द्रव्य स्थापि, तहां निषेकनि के द्रव्य का प्रमाण ल्यावना। द्वितीयादि गुणहानिनि विषैं पूर्व गुणहानि तैं द्रव्य का वा चय का वा निषेक का प्रमाण क्रम तैं आधा आधा जानना अैसें विधान कह्या।

बहुरि अनुभाग रचना विषैं भी अैसें ही विधान जानना। विशेष इतना-इहां द्रव्यादिक का प्रमाण जैसा संभवै तैसा जानना। बहुरि तहां जैसें निषेकनि विषैं परमाणूनि का प्रमाण ल्याया तैसें इहां वर्गणानि विषैं परमाणूनि का प्रमाण ल्यावना। बहुरि अैसें ही देने योग्य द्रव्य विषैं भी विधान जानना। विशेष इतना – इहां द्रव्यादिक का प्रमाण जैसा संभवै तैसा जानना। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार तहां निषेकनि का प्रमाण ल्याइ प्रथमादि निषेकनि का जो प्रमाण आवै तितना द्रव्य पूर्वैं जिनि विषैं द्रव्य देना तिनि सत्ता के प्रथमादि निषेकनि विषैं याकौं मिलाय देना।

बहुरि जहां द्रव्य कौं स्तोक निषेकनि ही विषैं देना होइ तहां गुणहानि रचना तौ संभवै नाहीं। तहां द्रव्य कैसें देना ? सो कहिए है–जैसें एक गुणहानि के निषेकनि विषैं द्रव्य के प्रमाण ल्यावने का विधान कह्या है, तैसें ही "**अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे मज्झिमधणमागच्छदि**" इत्यादि विधान तैं तहां प्रथमादि निषेकनि का प्रमाण ल्यावना। विशेष इतना–इहां जितने निषेकनि विषैं द्रव्य देना होइ तींहि प्रमाण गच्छ स्थापना। अर जेता द्रव्य तहां देने योग्य होइ तींहि प्रमाण द्रव्य स्थापना। अैसें कीएं जो प्रथमादि निषेकनि का प्रमाण आवै तितने द्रव्य कौं विवक्षित के पूर्वैं सत्ता रूपी जे प्रथमादि निषेक पाइए हैं, तिन विषैं मिलाय देना। उदयावली विषैं द्रव्य देना होइ तहां वा स्तोक स्थिति रहि गएं उपरितन स्थिति विषैं द्रव्य देना होइ, तहां वा अन्यत्र अैसा विधान जानना। बहुरि गुणश्रेणी आयाम आदि विषैं द्रव्य देना होइ तहां विधान कहिए है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

'प्रक्षेपयोगोद्धतमिश्रपिंडप्रक्षेपकाणां गुणको भवेदिति' इस करणसूत्र अनुसारि विधान जानना। सो कहिए है–जैसें सीर के द्रव्य का नाम तौ मिश्रपिंड है। अर सीरीनि के विसवानि का नाम प्रक्षेप है। सो प्रक्षेप का जोड़ देइ, ताका भाग मिश्रपिंड कौं दीएं जो एक भाग का प्रमाण आवै सो प्रक्षेपक, जे अपने अपने विसवे तिनिका गुणकार हो है। सो इनकौं परस्पर गुणैं जो जो प्रमाण आवै सो सो अपने अपने विसवानि के स्वामी जे सीरी, तिनिका द्रव्य जानना। इहां सीर का द्रव्य मिश्रपिंड सो सतरह सै (१७००) बहुरि सीरीनि के विसवे एक का एक, दूसरे के च्यारि, तीसरे के सोलह, चौथे के चौसठि (१।४।१६।६४) ए प्रक्षेप। बहुरि इनिका जोड़ पिच्यासी, ताका भाग मिश्रपिंड कौं दीएं बीस पाएं, ताकरि अपने अपने प्रक्षेप जे विसवे, तिनकौं गुणैं पहिले का बीस, दूसरे का असी, तीसरा का तीन सै बीस, चौथा का बारह सै असी द्रव्य आवै है। ऐसें ही गुणश्रेणी का आयाम विषैं जेता द्रव्य देना, सो तौ मिश्रपिंड जानना। बहुरि गुणश्रेणी आयाम के प्रथम समय की एक शलाका, द्वितीय समय की तातैं असंख्यात गुणी शलाका, तृतीय समय की तातैं असंख्यात गुणी शलाका इस ही प्रकार असंख्यात गुणा क्रम लीएं ताका अंत समय पर्यन्त की शलाका जाननी। इनका नाम प्रक्षेपक है। इनिकौं जोडैं जो प्रमाण आवैं, ताका भाग तिस सर्व द्रव्य कौं दीएं जो प्रमाण होइ तिस करि अपनी शलाकानि का प्रमाण कौं गुणैं गुणश्रेणी आयाम के प्रथमादि समय संबंधी निषेकनि विषैं द्रव्य देने का प्रमाण आवै है। इतना-इतना द्रव्य गुणश्रेणी आयाम के प्रथमादि निषेकनि विषैं मिलाइए है। बहुरि ऐसें ही गुण संक्रमण विषैं विधान जानना। इहां जो गुण संक्रमण करि अन्य प्रकृतिरूप परिणमावने योग्य सर्व द्रव्य, सो मिश्रपिंड अर गुण संक्रमण काल के प्रथमादि समय संबंधी एक आदि क्रम तैं असंख्यात गुणी शलाका सो प्रक्षेपक है। इनिके जोड़ का भाग मिश्रपिंड कौं देइ लब्ध करि अपनी अपनी शलाका कौं गुणैं गुण संक्रमण काल का प्रथमादि समयनि विषैं अन्य प्रकृतिरूप परिणमावने योग्य द्रव्य का प्रमाण आवै है। याही प्रकार अन्यत्र भी यथासंभव मिश्रपिंड वा प्रक्षेपकनि का प्रमाण जानि जैसा जहां संभवै तैसा तहां जानना। या प्रकार द्रव्य देना आदि विषैं विधान कह्या।

अब सत्ता विषैं जे निषेक पाइए हैं तिनके द्रव्य जानने का विधान कहिए है–विवक्षित कोई एक समय विषैं जो सत्तारूप कर्म परमाणूनि का द्रव्य है, तहां स्थिति सत्त्व का प्रथम समय वर्तमान है। तोहि विषैं उदय आवने योग्य जो द्रव्य सो

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथम निषेक का द्रव्य है। ताका प्रमाण तौ संपूर्ण समयप्रबद्ध मात्र है। काहे तैं ? सो कहिए है– पूर्वैं जे समय समय प्रति समयप्रबद्ध बांधे, तिनि विषैं जिस समयप्रबद्ध का एक हू निषेक पूर्वैं गल्या नाहीं, ताका तौ प्रथम निषेक इस समय विषैं उदय होने योग्य है। जाका एक निषेक पूर्वैं गल्या, ताका द्वितीय निषेक इस समय विषैं उदय होने योग्य है। इस ही क्रम तैं जाका एक निषेक बिना अवशेष सर्व निषेक पूर्वैं गले, ताका अंत निषेक इस समय विषैं उदय होने योग्य है। असे एक-एक समयप्रबद्ध का एक-एक निषेक मिली इस विवक्षित समय विषैं उदय आवने योग्य संपूर्ण समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य भया, सो सत्ता का प्रथम निषेक है। जैसैं एक समयप्रबद्ध का पांच सै बारह, दूसरे का च्यारि सै असी इत्यादि निषेकनि का द्रव्य मिलि तिरेसठि सै होइ।

बहुरि स्थिति सत्त्व का दूसरे समय विषैं उदय आवनें योग्य द्रव्य प्रथम निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र है। कैसैं ? सो कहिए है — प्रथम समय विषैं जिस समय-प्रबद्ध का प्रथम निषेक गलै, ताका तो दूसरा निषेक अर जाका दूसरा निषेक गलै, ताका तीसरा निषेक इत्यादि क्रम तैं दूसरे समय उदय आवनें योग्य निषेक हैं सो सर्व मिलि प्रथम निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र हो है। सो यह सत्ता का द्वितीय निषेक है। इहां प्रथम निषेक मात्र चय घटता भया जैसैं एक समयप्रबद्ध का च्यारि सै असी, दूसरे का च्यारि सै अठतालीस इत्यादि निषेकनि का द्रव्य मिलि सत्तावन सै अठचासी होइ। इहां प्रथम समय विषैं जाका अन्त निषेक गल्या, ताका तौ कोई निषेक रह्या नाहीं। अर प्रथम निषेक जाका इस दूसरे समय विषैं उदय होयगा असा समयप्रबद्ध बधैगा तब वाका सत्त्व होइगा नवीन इस समय विषैं है नाहीं तातैं सत्ता के द्वितीय निषेक का प्रमाण पूर्वोक्त जानना।

बहुरि स्थिति सत्त्व का तृतीय समय विषैं उदय आवने योग्य प्रथम द्वितीय निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य है। कैसैं ? सो कहिए है – दूसरे समय जाका द्वितीय निषेक गल्या, ताका तीसरा निषेक, जाका तीसरा निषेक गल्या, ताका चौथा निषेक इत्यादि क्रम तैं तीसरे समय विषैं उदय आवने योग्य है। सो सर्व मिलि प्रथम, द्वितीय निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य है। सो सत्ता का तृतीय निषेक है। इहां द्वितीय निषेक मात्र चय घटता भया।

जैसैं एक समयप्रबद्ध का च्यारि सै अठतालीस, दूसरे का च्यारि सै सोला इत्यादि मिलि तरेपन सै आठ होइ। इहां भी पूर्ववत् कारण जानना। असैं ही क्रम

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तैं स्थिति सत्त्व का अन्त समय विषैं उदय आवने योग्य समयप्रबद्ध को अंत निषेक मात्र द्रव्य है । काहे तैं ? सो कहिए है – इस वर्तमान समय विषैं जो सत्त्व द्रव्य है, तिस विषैं स्थिति सत्त्व का अंत समय विषैं एक समयप्रबद्ध कौं एक अंत निषेक अवशेष रहेगा । अवशेष सर्व समयनि विषैं गलैंगे । बहुरि जिनिका आगामी काल विषैं बंध होइगा तिन समयप्रबद्धनि का तिस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेक होंगे, तिनिका अबार अस्तित्व नाहीं । तातैं समयप्रबद्ध का एक अंत निषेक मात्र ही सत्ता का अन्त निषेक जानना । जैसैं अंत निषेक के परमाणू नव । या प्रकार इन सर्व सत्ता के निषेकनि का जोड़ दीएं किंचिदून द्वयर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र प्रमाण हो है; सोई सत्त्व द्रव्य जानना । जैसैं तरेसठि सै अर सत्तावन सै अठ्यासी इत्यादि एक - एक निषेक घाटि क्रम लीएं सत्ता के निषेक लिखि, तिनिका जोड़ दीएं गुणहानि आयाम आठ, ताका ड्योढ बारह, तामैं किछू घटाइ, ताकरि समयप्रबद्ध का प्रमाण तरेसठि सै, ताकौं गुणैं इकहत्तरि हजार तीन सै च्यारि हो है । सो कहु कथन त्रिकोण यंत्र की रचना करि गोम्मटसार विषैं दिखाया है सो जानना । या प्रकार स्थिति सत्त्व के के निषेकनि का द्रव्य स्वयंसिद्ध तौ असा क्रम लीएं जानना ।

बहुरि जो उत्कर्षण, अपकर्षण, गुणश्रेणी, संक्रमण आदि के वश तैं अन्य निषेकनि का द्रव्य अन्य निषेकनि विषैं प्राप्त भया होइ वा अन्य प्रकृति का द्रव्य अन्य प्रकृति विषैं प्राप्त भया होइ तौ तहां यथासम्भव आय द्रव्य की अधिकता कीएं व्यय द्रव्य की हीनता कीएं जिस प्रमाण लीएं संभवै तिस प्रमाण लीएं सत्ता के निषेकनि की रचना जाननी । इहां जैसैं लोक विषैं जमा खरच कहिए तैसैं विवक्षित विषैं और परमाणू आनि मिलैं, ताका नाम आय द्रव्य है । विवक्षित मैं स्यों परमाणू निकसि अन्यत्र प्राप्त भए, ताका नाम व्यय द्रव्य जानना ।

विशेष इतना–जहां निषेकनि का द्रव्य चय घटता क्रम लीएं निकसै । जैसैं निषेकनि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग ग्रहण कीया, तहां पूर्वैं निषेकनि का सत्त्व जैसैं चय घटता क्रम लीएं था, तैसैं ही चय घटता क्रम लीएं द्रव्य का ग्रहण भया । बहुरि जहां निषेकनि विषैं चय घटता क्रम लीएं द्रव्य मिलाया, जैसैं उदयावली आदि के निषेक पूर्वैं चय घटता क्रम लीएं थे, तिन विषैं चय घटता क्रम लीएं ही द्रव्य दीया । तहां तौ आय व्यय होत संतैं भी यथासम्भव चय घटता अनुक्रम रहै है । बहुरि जहां निषेकनि का द्रव्य हीनाधिक क्रम लीएं ग्रहण करिए वा केई निषेकनि का द्रव्य ग्रहण करिए, केई निषेकनि का नाहीं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ग्रहण करिए। बहुरि जहां हीनाधिक क्रम करि वा गुणकार क्रम करि द्रव्य दीया होइ, तहां जो निकस्या वा मिलाया द्रव्य स्तोक होइ अर सत्त्व द्रव्य बहुत होइ तौ यथासम्भव चय घटता क्रम रहै अर निकस्या वा मिलाया द्रव्य बहुत होइ अर सत्त्व द्रव्य स्तोक होइ तौ तहां चय घटता क्रम नाहीं रहै है। अैसें स्थिति सत्त्व विषैं निषेकनि का प्रमाण आवै है।

बहुरि अनुभाग सत्त्व विषैं वर्गणानि का प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार ल्यावना वा वर्गणानि विषैं यथासम्भव द्रव्य निकासैं वा मिलाएं पूर्वोक्त प्रकार चय घटता क्रम का रहना वा न रहना जानना।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषैं अपूर्व स्पर्धक वा कृष्टिनि का नवीन सत्त्व हो है। ताका विधान तहां अवसर आएं लिखेंगे, सो जानना।

अैसैं सत्त्व द्रव्य विषैं क्रम जानना।

या प्रकार इहां द्रव्य देना आदि विषैं विधान कह्या है, सो अैसैं इहां जो यहु कथन कीया है, ताकौं नीकैं यादि करि लेना। जो इस कथन का स्मरण होइगा तौ आगैं ग्रंथ विषैं नीकैं प्रवेश होगा अर अर्थ कौं नीकैं पहिचानौगे। इस ही वास्तैं पहिलैं यहु केताइक कथन कीया है। जाका इहां व्याख्यान कीया, ताका प्रयोजन ग्रन्थ विषैं जहां आवैं तहां कथन कीया, ताके अनुसारि स्वरूप जानना। बहुरि व्याख्यान तौ सर्व आगे ग्रंथ विषैं होइगा ही। अैसैं पीठ बंध कीया।

अब कर्तव्य का प्रारंभ करिए है। आगैं चामुंडराय नामा राजा के प्रश्न के वश तैं कषाय प्राभृत अर ताही का द्वितीय नाम जयधवल ताके पंद्रह अधिकार तिनि विषैं पश्चिम स्कंध नामा पंद्रहवां अधिकार ताका अर्थ कौं ग्रहण करि श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती लब्धिसार नामा ग्रन्थ कीया ताके सूत्रनि का संक्षेप मात्र अर्थ लिखिए है। तहां प्रथम लब्धिसार टीका के अनुसारि केते इक सूत्रनि का अर्थ लिखिए टीका विषैं विस्तार तैं व्याख्यान है। इहां ग्रन्थ बधने के भय तैं संकोचरूप व्याख्यान करिए है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

पहला अधिकार : प्रथमोपशमसम्यक्त्व प्ररूपण

तहां प्रथम ही मंगल करिए है–

चौपाई– श्री अरहंत सिद्धवर सूरि । उपाध्याय धारै गुणभूरि ।।
साधु परम मंगल जग जेष्ठ । जय शरणागत कौं परमेष्ठ ।।

अथ मूल सूत्र–

सिद्धे जिणिंदचंदे आयरिय उवज्झाय साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ।।१।।

सिद्धान् जिनेंद्रचंद्रान् आचार्योपाध्यायसाधुगणान् ।
वंदित्वा सम्यग्दर्शनचारित्र लब्धि प्ररूपयामः ।।१।।

टीका – जिनेंद्र जे अरहंत तेई भए सकल लोक के प्रकाशन तैं वा आल्हाद करने तैं चंद्रमा तिनिकौं अर कृतकृत्य भए सिद्ध भगवान तिनिकौं अर पंचाचार के प्रवर्तक आचार्य तिनिकौं अर अध्ययन करना करवाना विषैं अधिकारी उपाध्याय, तिनकौं अर मोक्षमार्ग के साधक साधु समूह, तिनिकौं में बंदि करि सम्यग्दर्शन सम्यक् चारित्र की लब्धि कहिए प्राप्ति, सो जिस विषैं प्रतिपादन करिए अैसा लब्धिसार नामा शास्त्र ताकौ हम प्ररूपै हैं । अैसी आचार्य प्रतिज्ञा करी ।

तहां प्रथम ही प्रथमोपशम सम्यक्त्व विधान कहिए है –

चदुगदिमिच्छो सण्णी, पुण्णो गब्भज विसुद्ध सागारो ।
पढमुवसमं स गिण्हदि, पंचमवरलद्धिचरिमम्हि[१] ।।२।।

चतुर्गतिमिथ्यः संज्ञी, पूर्णः गर्भजो विशुद्धः साकारः ।
प्रथमोपशमं स गृह्णाति पंचमवरलब्धिचरमे ।।२।।

टीका – च्यारचों गतिवाला अनादि वा सादि मिथ्यादृष्टी संज्ञी पर्याप्त गर्भज मंद कषायरूप जो विशुद्धता ताका धारक, गुण दोष विचार रूप जो साकार ज्ञानोपयोग, ताकरि संयुक्त जो जीव सोई पांचवीं करण लब्धि विषैं उत्कृष्ट जो अनिवृत्तिकरण, ताका अंत समय विषैं प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं ग्रहण करै है ।

---

१ षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०७ ।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां ऐसा जानना—

जो मिथ्यादृष्टो गुणस्थान तैं छूटि उपशम सम्यक्त्व होइ, ताका नाम प्रथमोपशम सम्यक्त्व है। बहुरि उपशम श्रेणी चढता क्षयोपशम सम्यक्त्व तैं जो उपशम सम्यक्त्व हो है, ताका नाम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व है, तातैं मिथ्यादृष्टी का ग्रहण कीया है।

बहुरि सो प्रथमोपशम सम्यक्त्व तिर्यंच गति विषैं असंज्ञी जीव हैं तिनकैं न हो है। अर मनुष्य तिर्यंच गति विषैं लब्धि अपर्याप्तक अर सन्मूर्छन हैं, तिनकैं न हो है। बहुरि च्यारचों गति विषैं संक्लेशता करि युक्त जीव कैं न हो है। बहुरि अनाकार दर्शनोपयोग का धारी कैं न हो है। जातैं तहां तत्त्वविचार न संभवै है। बहुरि तीन निद्रा के उदय का अभाव कहैंगे तातैं सूता जीव कैं न हो है। अर भव्य ही के सम्यक्त्व हो है, तातैं अभव्य कैं न हो है। ए भी विशेषण इहां संभवै हैं।

आगैं प्रथमोपशम सम्यक्त्व होनें तैं पहलैं मिथ्यादृष्टी गुणस्थान विषैं पंच लब्धि हो हैं, तिनिका व्याख्यान कहिए है–

खयउवसमियविसोही, देसणपाउग्गकरणलद्धी य।
चत्तारि वि सामण्णा, करणं सम्मत्तचारित्ते[1] ॥३॥

क्षयोपशमविशुद्धी, देशनाप्रायोग्यकरणलब्धयश्च।
चतस्रोपि सामान्यात्, करणं सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥

टीका – क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना, प्रायोग्यता, करण ए पांच लब्धि हैं। तहां आदि की च्यारि तौ साधारण हैं। भव्य कैं वा अभव्य कैं भी हो हैं। बहुरि करणलब्धि भव्य ही कैं सम्यक्त्व वा चारित्र कौं साध्यभूत होत संतैं ही हो है।

कम्ममलपडसत्ती, पडिसमयमणंतगुणविहीणकमा।
होदूणुदीरदि जदा, तदा खओवसमलद्धी दु ॥४॥

कर्ममलपटलशक्तिः प्रतिसमयमनंतगुणविहीनक्रमा।
भूत्वा उदीर्यते यदा, तदा क्षयोपशमलब्धिस्तु ॥४॥

---

१ षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०५।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – कर्मनि विषैं मलरूप जे अप्रशस्त ज्ञानावरणादिक तिनिका पटल जो समूह ताकी शक्ति जो अनुभाग, सो जिस काल विषैं समय समय प्रति अनंत गुणा घटता अनुक्रमरूप होइ उदय होइ तिस काल विषैं क्षयोपशम लब्धि हो है। जातैं उत्कृष्ट अनुभाग का अनंतवां भागमात्र जे देशघाती स्पर्धक तिनिके उदय होतैं भी उत्कृष्ट अनुभाग का अनंत बहुभाग मात्र जे सर्वघाती स्पर्धक, तिनिके उदय का अभाव, सो तौ क्षय अर तेई सर्वघाती स्पर्धक जे उदय अवस्था कौं न प्राप्त भए, तिनकी सत्ता अवस्था, सो उपशम, तिनकी प्राप्ति सो क्षयोपशम लब्धि जाननी।

आदिमलद्धिभवो जो, भावो जीवस्स सादपहुदीणं।
सत्थाणं पयडीणं, बंधणजोगो विसुद्धलद्धी सो[1] ॥५॥

आदिमलब्धिभवो यः, भावो जीवस्य सातप्रभृतीनाम्।
शस्तानां प्रकृतीनां, बंधनयोग्यो विशुद्धिलब्धिः सः ॥५॥

टीका – पहली जो क्षयोपशम लब्धि तातैं उपज्या जो जीव कैं साता आदि प्रशस्त प्रकृति बंध करने कौं कारण धर्मानुरागरूप शुभ परिणाम होइ, ताकी जो प्राप्ति, सो विशुद्धि लब्धि है। सो अशुभ कर्म का अनुभाग घटैं संक्लेशता की हानि अर ताकी प्रतिपक्षी विशुद्धता की वृद्धि होनी युक्त ही है।

आगैं देशना लब्धि का स्वरूप कहै हैं–

छद्दव्व-णवपयत्थोपदेसयरसूरिपहुदिलाहो जो।
देसिदपदत्थधारणलाहो वा तदियलद्धी दु[2] ॥६॥

षड्द्रव्यनवपदार्थोपदेशकरसूरिप्रभृतिलाभो यः।
देशितपदार्थधारणलाभो वा तृतीयलब्धिस्तु ॥६॥

टीका – छह द्रव्य, नव पदार्थ का उपदेश करनेवाले आचार्यादिक का लाभ, तिनके उपदेश की प्राप्ति अथवा उपदेशित पदार्थ के धारने की प्राप्ति, सो तीसरी देशना लब्धि है। तु शब्द करि नारकादि विषैं जहां उपदेश देने वाला नाहीं तहां पूर्वभव विषैं धरचा हूवा तत्त्वार्थ के संस्कार बल तैं सम्यग्दर्शन की प्राप्ति जाननी।

---

१. षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ २०४।
२. षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ २०४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंतोकोडाकोडी, बिट्ठाणे ठिदिरसाण जं करणं ।
पाउग्गलद्धिणामा भव्वाभव्वेसु सामण्णा[१] ॥७॥

अन्तःकोटाकोटि द्विस्थाने स्थितिरसयोः यत्करणम् ।
प्रायोग्यलब्धिर्नाम, भव्याभव्येषु सामान्यात् ॥७॥

टीका – पूर्वोक्त तीन लब्धि संयुक्त जीव समय समय विशुद्धता करि वर्धमान होता संता आयु बिना सात कर्मनि की अन्तः कोडाकोडी मात्र स्थिति अवशेष राखै । तिस काल विषैं जो पूर्वैं स्थिति थी, ताकौं एक कांडकघात करि छेदि तिस कांडक के द्रव्य कौं अवशेष रही स्थिति विषैं निक्षेपण करै है । बहुरि घातियानि का लता दारुरूप, अघातियानि का निंब कांजीरूप द्वि स्थानगत अनुभाग इहां अवशेष रहै है । पूर्वैं अनुभाग था, तामैं अनन्त का भाग दीएं बहुभाग मात्र अनुभाग कौं छेदि अवशेष रह्या अनुभाग विषैं प्राप्त करै है । तिस कार्य करने की योग्यता की प्राप्ति, सो प्रायोग्यता लब्धि है । सो भव्य कैं वा अभव्य कैं भी समान हो है ।

जेट्ठवरट्ठिदिबंधे, जेट्ठवरट्ठिदितियाण सत्ते य ।
ण य पडिवज्जदि पढमुवसमसम्मं मिच्छजीवो हु[२] ॥८॥

ज्येष्ठावरस्थितिबंधे ज्येष्ठावरस्थितित्रिकाणां सत्त्वे च ।
न च प्रतिपद्यते प्रथमोपशमसम्यक्त्वं मिथ्यजीवो हि ॥८॥

टीका - संक्लेशी संज्ञी पंचेंद्री पर्याप्त के संभवता ऐसा उत्कृष्ट स्थिति बंध अर उत्कृष्ट स्थिति अनुभाग प्रदेश का सत्त्व, बहुरि विशुद्ध क्षपक श्रेणीवाला कैं संभवता ऐसा जघन्य स्थिति बंध अर जघन्य स्थिति अनुभाग प्रदेश का सत्त्व, इनि कौं होतैं जीव प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं न ग्रहै है ।

सम्मत्तहिमुहमिच्छो, विसोहिवड्ढीहि वड्ढमाणो हु ।
अंतोकोडाकोडिं, सत्तण्हं बंधणं कुणई[३] ॥९॥

सम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यः विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धमानः खलु ।
अंतः कोटाकोटिं, सप्तानां बंधनं करोति ॥९॥

---

१ षट्खण्डागमः धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ २०४ ।
२ षट्खण्डागमः धवला, पुस्तक ६, पृष्ठ २०३ ।
३ जीवस्थान चूलिका–८, सूत्र ३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं सन्मुख भया मिथ्यादृष्टी जीव, सो विशुद्धता की वृद्धि करि वर्धमान होत संता प्रायोग्य लब्धि का प्रथम समय तैं लगाय पूर्व स्थितिबंध के संख्यातवें भाग मात्र अन्तः कोडा-कोडी सागर प्रमाण आयु बिना सात कर्मनि का स्थितिबंध करै है ।

तत्तो उदय सदस्स य, पुधत्तमेत्तं पुणो पुणोदरिय ।
बंधम्मि पयडि बंधुच्छेदपदा होंति चोत्तीसा[1] ॥१०॥

ततः उदये शतस्य च, पृथक्त्वमात्रं पुनः पुनरुदीर्य ।
बंधे प्रकृतिबंधोच्छेदपदानि भवंति चतुश्चत्वारिंशत् ॥१०॥

टीका – तिस अंतः कोडाकोडी सागर स्थितिबंध तैं पल्य का संख्यातवां भाग मात्र घटता स्थितिबंध अन्तर्मुहूर्त पर्यंत समानता लीएं करै । बहुरि तातैं पल्य का संख्यातवां भाग मात्र घटता स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त पर्यंत करै । अैसैं क्रम तैं संख्यात स्थिति बंधापसरणनि करि पृथक्त्व सौ सागर घटैं, पहला प्रकृति बंधापसरण स्थान होइ । बहुरि तिस ही क्रमतैं तिसतैं भी पृथक्त्व सौ सागर घटैं दूसरा प्रकृति बंधा-पसरण स्थान होइ । अैसैं इस ही क्रमतैं इतना-इतना स्थिति बंध घटैं एक-एक स्थान होइ । अैसैं प्रकृति बंधापसरण के चौंतीस स्थान हो हैं । इहां पृथक्त्व नाम सात वा आठ का है, तातैं इहां पृथक्त्व सौ सागर कहने तैं सात सै वा आठ सै सागर जानने ।

अब चौंतीस स्थाननि विषैं क्रम तैं कैसी प्रकृति का व्युच्छेद हो है, सो कहिए है–

आऊ पडि णिरयदुगे, सुहुमतिये सुहुमदोण्णि पत्तेयं ।
बारदजुत दोण्णि पदे, अपुण्णजुद बितिचसण्णिसण्णीसु[2] ॥११॥

आयुः प्रति निरयाद्विकं, सूक्ष्मत्रयं सूक्ष्मद्वयं प्रत्येकं ।
बादरयुतं द्वे पदे, अपूर्णयुतं द्वित्रिचतुरसंज्ञिसंज्ञिषु ॥११॥

टीका – पहला नरकायु का व्युच्छित्ति स्थान है । इहा तैं लगाय उपशम सम्यक्त्व पर्यंत नरकायु का बंध न होइ अैसैं ही आगैं जानना । दूसरा तिर्यञ्चायु का

---

१. षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ १३५, जयधवला भाग १२, पृष्ठ २२१ ।
२. षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ १३५ से १३६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है । तीसरा मनुष्यायु का है । चौथा देवायु का है । इहां प्रथमोपशम सम्यक्त्व विषैं आयुबंध का अभाव है । तातैं सर्व आयुबंध की व्युच्छित्ति कही है । बहुरि पांचवां नरक गति, नरकानुपूर्वी का है । छठा संयोगरूप सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणनि का है ।

इहां संयोगरूप कहने करि तीनों का मिलाप लीएं तौ इहां ही पर्यंत बंध होइ । अर इन तीनों विषैं कोई प्रकृति बदलें, यथासम्भव इनि प्रकृतिनि विषैं कोई प्रकृति का बंध आगैं भी होइ अैसा संयोगरूप कहने का अभिप्राय जानना । आगैं भी संयोगरूप कहने का अैसैं ही अर्थ समझना ।

बहुरि सातवां संयोगरूप सूक्ष्म, अपर्याप्त, प्रत्येक का है । आठवां संयोगरूप बादर, अपर्याप्त, साधारणनि का है । नवमां संयोगरूप बादर, अपर्याप्त, प्रत्येक का है । दशवां संयोग रूप बेंद्री जाति, अपर्याप्त का है । ग्यारहवां संयोगरूप तेंद्री, अपर्याप्त का है । बारहवां संयोगरूप चौंद्री, अपर्याप्त का है । तेरहवां संयोगरूप असंज्ञी पंचेंद्रिय, अपर्याप्त का है । चौदहवां संयोगरूप संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्त का है ।

अट्ठ अपुण्णपदेसु वि, पुण्णेण जुदेसु तेसु तुरियपदे ।
एइंदिय आदावं, थावरणामं च मिलिदव्वं ।।१२।।

अष्टौ अपूर्णपदेष्वपि, पूर्णेन युतेषु तेषु तुर्यपदे ।
एकेंद्रियमातपः, स्थावरनाम च मेलयितव्यम् ।।१२।।

टीका – पंद्रहवां संयोगरूप सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारणनि का है । सोलहवां संयोगरूप सूक्ष्म, पर्याप्त, प्रत्येकनि का है । सतरहवां संयोगरूप बादर, पर्याप्त, साधारणनि का है । अठारहवां संयोगरूप बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, एकेंद्री, आतप, स्थावरनि का है । उगणीसवां संयोगरूप बेंद्री, पर्याप्त का है । बीसवां संयोगरूप तेंद्री, पर्याप्त का है । इकवीसवां चौंद्री, पर्याप्त का है । बावीसवां असंज्ञी पंचेंद्री, पर्याप्त का है ।

तिरिगदुगुज्जोवो विय, णीचे अपसत्थगमण दुभगतिए ।
हुंडासंपत्ते वि य, णओसए वामखीलीए ।।१३।।

तिर्यग्द्विकोद्योतोऽपि च नीचैः, अप्रशस्तगमनं दुर्भगत्रिकं ।
हुंडासंप्राप्तेऽपि च, नपुंसकं वामनकीलिते ।।१३।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तेईसवां संयोगरूप तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, उद्योत का है। चौईसवां नीच गोत्र का है। पचीसवां संयोगरूप अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेयनि का है। छबीसवां हुंडसंस्थान, सृपाटिका संहनन का है। सत्ताईसवां नपुंसक वेद का है। अठाईसवां वामन संस्थान, कीलित संहनन का है।

खुज्जद्धं णाराए, इत्थीवेदे य सादिणाराए।
णग्गोधवज्जणाराए, मणुओरालदुगवज्जे ॥१४॥

कुब्जार्धनाराचं, स्त्रीवेदं च स्वातिनाराचे।
न्यग्रोधवज्रनाराचे, मनुष्यौदारिकद्विकवज्रे ॥१४॥

टीका – गुणतीसवां कुब्ज संस्थान, अर्धनाराच संहनन का है। तीसवां स्त्री वेद का है। इकतीसवां स्वाति संस्थान, नाराच संहनन का है। बत्तीसवां न्यग्रोध संस्थान, वज्रनाराच संहनन का है। तेतीसवां संयोगरूप मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी, औदारिक-औदारिक अंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन का है।

अथिरसुभगजस अरदी, सोयअसादे य होंति चोतीसा।
बंधोसरणट्ठाणा, भव्वाभव्वेसु सामण्णा[1] ॥१५॥

अस्थिरसुभगयशः अरतिः, शोकासाते च भवंति चतुश्चत्वारिंशत्।
बंधापसरणस्थानानि, भव्याभव्येषु सामान्यानि ॥१५॥

टीका – चौंतीसवां संयोगरूप अस्थिर, अशुभ, अयश, अरति, शोक, असातानिका बंध व्युच्छित्ति स्थान है। असैं ए कहे चौंतीस स्थान ते भव्य वा अभव्य के समान हो हैं।

णरतिरियाणं ओघो, भवणतिसोहम्मजुगलए बिदियं।
तिदियं अट्ठारसमं, तेवीसदिमादि दसपदं चरिमं ॥१६॥

नरतिरश्चामोघः, भवनत्रिसौधर्मयुगलके द्वितीयं।
तृतीयं अष्टादशमं, त्रयोविंशत्यादिदशपदं चरमम् ॥१६॥

---

१. षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ १३९।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – मनुष्य तिर्यंचनि कैं तौ समान्योक्त चौंतीसौ स्थान पाइए हैं। तिनके बंध योग्य एक सौ सतरह प्रकृतिनि विषैं चौंतीस स्थाननि करि छियालीस प्रकृति की व्युच्छित्ति हो है। तहां आदि के छह स्थाननि विषैं नव अर अठारहवां स्थाननि विषैं एकेंद्रियादिक तीन अर उगणीसवां आदि बीचि के स्थाननि विषैं बेंद्री, तेंद्रि चौंद्री ए तीन अर तेईसवां आदि बारह स्थाननि विषैं इकतीस ऐसैं छियालीस की व्युच्छित्ति हो है। अवशेष इकहत्तरि बांधिए है।

बहुरि भवनत्रिक सौधर्म युगल विषैं दूसरा, तीसरा, अठारहवां अर तेईसवां आदि दश अर अंत का चौंतीसवां ए चौदह स्थान ही संभवै हैं। तहां इकतीस प्रकृति की व्युच्छित्ति हो है। बंध योग्य एक सौ तीन विषैं बहत्तरि प्रकृतिनि का बंध अवशेष रहै है।

ते चेव चोदसपदा, अट्ठारसमेण हीणया होंति।
रयणादिपुढविछक्के, सणक्कुमारादिदसकप्पे ॥१७॥

तानि चैव चतुर्दश पदानि, अष्टादशेन हीनानि भवंति।
रत्नादिपृथ्वीषट्के, सनत्कुमारादिदशकल्पे ॥१७॥

टीका – रत्नप्रभा आदि छह नरक पृथ्वीनि विषैं अर सनत्कुमारादि दश स्वर्गनि विषैं पूर्वोक्त चौदह स्थान अठारहवां बिना पाइए है। तिन तेरह स्थाननि करि अठाईस प्रकृति व्युच्छित्ति हो हैं। तहां बंध योग्य सौ प्रकृतिनि विषैं बहत्तरि का बंध अवशेष रहे है।

ते तेरस बिदिएण य, तेवीसदिमेण चावि परिहीणा।
आणदकप्पादुवरिमगेवेज्जंतो त्ति ओसरणा ॥१८॥

तानि त्रयोदश द्वितीयेन च, त्रयोविंशतिकेन चापि परिहीनानि।
आनतकल्पाद्युपरिमग्रैवेयकांतमित्यपसरणाः ॥१८॥

टीका – आनत स्वर्गादि उपरिम ग्रैवेयक पर्यंत विषैं तेरह स्थान दूसरा तेईसवां बिना पाइए। तहां तिनि ग्यारह स्थाननि करि चौबीस घटाइ बंध योग्य छिनवै प्रकृतिनि विषैं बहत्तरि बांधिए है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ते चेवेक्कारपदा, तदिऊणा बिदियठाणसंजुत्ता ।
चउवीसदिमेणूणा, सत्तमिपुढविम्हि ओसरणा ॥१९॥

तानि चैवैकादश पदानि, तृतीयोनानि द्वितीय स्थान संयुक्तानि ।
चतुर्विंशतिकेनोनानि, सप्तमीपृथिव्यामपसरणानि ॥१९॥

टीका – सातवीं नरक पृथ्वी विषैं जे ग्यारह स्थान, तीसरा करि हीन अर दूसरा करि सहित चौईसवां करि हीन पाइए तहां तिनि दश स्थाननि करि तेईसवां उद्योत सहित चौबीस घटाइ, बंध योग्य छिनवै प्रकृतिनि विषैं तेहत्तरि वा बहत्तरि बांधिए हैं, जातैं उद्योत कौं बंध वा अबंध दोनों संभवै हैं ।

घादिति सादं मिच्छं, कसायपुंहस्सरदि भयस्स दुगं ।
अपमत्तडवीसुच्चं बंधंति विसुद्धणरतिरिया[1] ॥२०॥

घातित्रयं सातं मिथ्यं कषायपुंहास्यरतयः भयस्य द्विकम् ।
अप्रमत्ताष्टविंशोच्चं बध्नन्ति विशुद्धनरतिर्यंचः ॥२०॥

टीका – अैसें व्युच्छित्ति भएं प्रथम सम्यक्त्व कौं सन्मुख मिथ्यादृष्टी मनुष्य वा तिर्यंच हैं, ते ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय की उगणीस (१९), सातावेदनीय, मिथ्यात्व, कषाय सोलह, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, अप्रमत्त की अठाईस, अरु उच्च गोत्र अैसैं इकहत्तरि प्रकृति बांधै हैं ।

देवतसवण्णअगरुचउक्कं समचउरतेजकम्मइयं ।
सग्गमणं पंचिंदी थिरादिछण्णिमिणमडवीसं ॥२१॥

देवत्रसवर्णागुरुचतुष्कं समचतुरस्रतेजः कार्मणकम् ।
सद्गमनं पंचेंद्रियस्थिरादिषण्णिर्माणमष्टाविंशम् ॥२१॥

टीका – देव चतुष्क (४), त्रस चतुष्क (४), वर्ण चतुष्क (४), अगुरुलघु चतुष्क (४), समचतुरस्र, कार्माण, तैजस, शुभविहायोगति, पंचेंद्री, स्थिर आदि छह, निर्माण ए अठाईस प्रकृति अप्रमत्त संबंधी जाननी ।

---

१. जीवस्थान चूलिका–३, सूत्र २ । जयधवला भाग–१२, पृष्ठ संख्या २११ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तं सुरचउक्कहीणं, णरचउवज्जजुदं पयडिपरिमाणं ।
सुरछप्पुडवीमिच्छा, सिद्धोसरणा हु बंधंति[१] ॥२२॥

तत् सुरचतुष्कहीनं, नरचतुर्वज्रयुतं प्रकृतिपरिमाणं ।
सुरषट्पृथिवीमिथ्याः, सिद्धापसरणा हि बध्नंति ॥२२॥

टीका – तिन इकहत्तरि विषैं देव चतुष्क घटाइ मनुष्य चतुष्क, वज्रवृषभनाराच मिलाएं बहत्तरि प्रकृतिनि कौं सिद्ध भए हैं बंधापसरण जिनके अैसे मिथ्यादृष्टी देव छह पृथ्वीनि के नारकी बांधै हैं । इहां देव चतुष्क विषैं देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक, वैक्रियिक अंगोपांग जानना । अर मनुष्य चतुष्क विषैं मनुष्य गति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, औदारिक, औदारिक अंगोपांग जानने ।

तं णरदुगुच्चहीणं, तिरियदु णीचजुदं पयडिपरिमाणं ।
उज्जोवेण जुदं वा सत्तमखिदिगा हु बंधंति[२] ॥२३॥

तत् नरद्विकोच्चहीनं, तिर्यग्द्विकं नीचयुतं प्रकृतिपरिमाणं ।
उद्योतेन युतं वा, सप्तमक्षितिगा हि बध्नंति ॥२३॥

टीका – तिनि बहत्तरनि विषैं मनुष्य द्विक उच्च गोत्र बिना अर तिर्यंच द्विक, नीच गोत्र सहित बहत्तरि अथवा उद्योत सहित तेहत्तरिं प्रकृतिनि कौं सातवीं नरक पृथ्वीवाले बांधैं हैं ।

अैसें प्रकृति बंध–अबंध का विभाग कह्या ।

अंतोकोडाकोडीठिदं, असत्थाण सत्थगाणं च ।
बिचउट्ठाणरसं च य, बंधाणं बंधणं कुणइ[३] ॥२४॥

अन्तःकोटाकोटिस्थितिं, अशस्तानां शस्तकानां च ।
द्विचतुःस्थानरसं च च, बंधानां बंधनं करोति ॥२४॥

टीका – प्रथम सम्यक्त्व कौं सन्मुख च्यारयों गतिवाला मिथ्यादृष्टी जीव बध्यमान प्रकृतिनि की चौंतीस बंधापसरण स्थाननि विषैं एक एक स्थान प्रति पृथ-

---

१ जीवस्थान चूलिका–४ सूत्र २ । जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २११ ।
२ जीवस्थान चूलिका–५ सूत्र २ । जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २१२ ।
३ षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०६ । जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २१३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

क्त्व सौ सागर घटता क्रम लीएं अन्त:कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति बांधैं है। अर अनुभाग अप्रशस्त प्रकृतिनि का तौ दोय स्थान कौं प्राप्त समय समय अनंत गुणा घटता बांधै है। प्रशस्त प्रकृतिनि का च्यारि स्थान कौं प्राप्त समय-समय अनंत गुणा बधता बांधै है।

मिच्छणथीणति सुरचउ, समवज्जपसत्थगमणसुभगतियं।
णीचुक्कस्सपदेसमणुक्कस्सं वा पबंधदि हु[1] ॥२५॥

मिथ्यानस्त्यानत्रिकं सुरचतु:समवज्रप्रशस्तगमनसुभगत्रिकं।
नीचोत्कृष्ट प्रदेशमनुत्कृष्टं वा प्रबध्नाति हि ॥२५॥

टीका – यहु जीव मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी चतुष्क(४), स्त्यानगृद्धि त्रिक(३), देव चतुष्क (४), समचतुरस्र, वज्रवृषभनाराच, प्रशस्तविहायोगति, सुभगादि तीन (३), नीच गोत्र इन उगणीस प्रकृतिनि का उत्कृष्ट वा अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध करै है।

एदेहिं विहीणाणं, तिण्णि महादंडएसु उत्ताणं।
एकट्ठिपमाणाणमणुक्कस्सपदेसबंधणं कुणइ[2] ॥२६॥

एतैर्विहीनानां, त्रिषुमहादंडकेषूक्तानाम्।
एकषष्टिप्रमाणानामनुत्कृष्टप्रदेशबंधनं करोति ॥२६॥

टीका – इन करि जे हीन जे महादण्डकनि विषैं कहीं अैसी प्रकृतिनि विषैं इकसठि प्रकृतिनि का अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध करै है।

पढमे सव्वे बिदिये, पण तिदिये चउ कमा अपुणरुत्ता।
इदि पयडीणमसीदी, तिदण्डएसु वि अपुणरुत्ता ॥२७॥

प्रथमे सर्वे द्वितीये, पंच तृतीये चतु: क्रमादपुनरुक्ता:।
इति प्रकृतीनामशीति:, त्रिदंडकेष्वपि अपुनरुक्ता: ॥२७॥

टीका – मनुष्य तिर्यंच कैं बंध योग्य जो पहला दंडक, तींहि विषैं सर्व इकहत्तर ही अपुनरुक्त हैं। बहुरि भवनत्रिकादिक कैं योग्य जो दूसरा दंडक तींहि विषैं

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २१३। धवला पुस्तक–६ पृष्ठ सं. २१०।
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २१३। धवला पुस्तक–६ पृष्ठ सं. २१०।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मनुष्य चतुष्क, वज्रवृषभनाराच ए पांच अपुनरुक्त हैं। अन्य प्रकृति पहला दंडक विषैं कही ही थीं। अर सातवीं पृथ्वीवालों कैं योग्य तीसरा दंडक विषैं तिर्यंच द्विक, नीच गोत्र, उद्योत ए च्यारि अपुनरुक्त हैं। अन्य प्रकृति पहिला, दूसरा दंडक विषैं कही ही थीं। अैसैं तीनों दंडकनि विषैं अपुनरुक्त असी (८०) प्रकृति जाननी। अैसैं बंध कहि।

अब तिस ही जीव कैं उदय कहै हैं-

उदये चउदसघादी, णिद्दापयलाणमेक्कदरगं तु।
मोहे दस सिय णामे, वचिठाणं सेसगे सजोगेक्कं[1] ॥२८॥

उदये चतुर्दश घातिनः, निद्राप्रचलानामेकतरकं तु।
मोहे दश स्यात् नामनि, वचःस्थानं शेषकं सयोग्येकम् ॥२८॥

टीका – प्रथम सम्यक्त्व सन्मुख जीव कैं नरकगति विषैं ज्ञानावरण की पांच (५), दर्शनावरण की निद्रादि पांच बिना च्यारि (४), अन्तराय की पांच (५), मोहनीय की दश (१०) वा नव वा आठ, आयु की एक नरकायु, नाम की भाषापर्याप्ति काल विषैं उदय आवने योग्य गुणतीस, तिनिके नाम - गति, जाति, शरीर ३, अंगोपांग, निर्माण, संस्थान, वर्ण चतुष्क (४), अगुरुलघु, स्थिर युगल (२), शुभ युगल (२), त्रस, बादर, पर्याप्त, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति, प्रत्येक, उपघात, परघात, उश्वास, अशुभविहायोगति, दुःस्वर ए जाननी। बहुरि वेदनीय की एक कोई, गोत्र की एक नीच गोत्र अैसैं इनि प्रकृतिनि का उदय है। इहां मोहनीय की वा नाम की उदय प्रकृतिनि का अर प्रकृति बदलने तैं भंग हो है; तिनिका गोम्मटसार विषैं कर्मकांड का जो स्थान समुत्कीर्तन अधिकार, तींहि विषैं विशेष वर्णन है; तहां तैं जानना। अैसैं मोहनीय की मिथ्यात्व अर अनंतानुबंधी आदि च्यारि प्रकार क्रोधादि विषैं कोई एक अर नपुंसक वेद अर हास्य शोक युगल विषैं एक, रति अरति युगल विषैं एक अैसै आठ प्रकृति सहित कोई जीव कैं चौवन प्रकृति का उदय हो है। तहां मोहनीय के च्यारि कषाय अर दोय युगल के बदलने तैं अर आठ भंग अर दोय वेदनीय के भंगनि तैं गुणैं सोलह भंग हो हैं। नाम की अप्रशस्त ही नि का इहां उदय है; तातैं नामकर्म की अपेक्षा भंग नाहीं हैं। बहुरि भय वा जुगुप्सा विषैं कोई एक मिलाएं मोह की नव सहित पचावन का उदय होइ। तहां पूर्वोक्त सोलह भंगनि कौं भय जुगु-

1 षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ सं. २१०।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ा करि गुणैं बत्तीस भंग हो हैं। बहुरि भय जुगुप्सा दोऊनि करि युक्त मोह की दश हित छप्पन प्रकृति का उदय होइ तहां सोलह ही भंग जानने। जातैं इहां दोऊनि ा उदय युगपत् है। इहां क्रोध सहित अन्य अन्य प्रकृति लगाएं प्रथम भंग क्रोध की ायगा मान कहैं दूसरा भंग। असैं ही प्रकृति बदलने तैं भंगनि का होना जानना। हुरि तिर्यंच गति विषैं पूर्वोक्त प्रकृतिनि विषैं एक संहनन मिलाएं पचावन, छप्पन, त्तावन का उदय जानना।

तहां पचावन का उदय विषैं इहां तीनों वेद पाइए तातैं तिनके बदलने तैं मोह के भंग चौईस हो हैं। अर वेदनीय के दोय हैं ही। अर नाम के **'संठाणे संहडणे'** इत्यादि सूत्र करि छह संस्थान, छह संहनन, विहायोगति युगल, सुभगयुगल, स्वर-युगल, आदेय युगल, यशस्कीर्ति युगल इनिके बदलने तैं ग्यारह सैं बावन भंग हो हैं। जातैं इहां इन सबनि का उदय संभव है। असैं ए भंग कहे। इनिकौं परस्पर गुणैं पचावन हजार दोय सैं छिनवै भंग भए।

बहुरि छप्पन का उदय विषैं भय जुगुप्सा तैं गुणैं तिन तैं दूणे ११०५९२ भंग भए।

बहुरि सत्तावन का उदय विषैं पचावनके वत् ही ५५२९६ भंग ही जानने। बहुरि तिन विषैं उद्योत प्रकृति मिलाएं तहां छप्पन, सत्तावन, अट्ठावन का उदय हो है। तहां भंग तीनों जायगा पूर्वोक्त प्रकार ही जानने।

बहुरि मनुष्य गति विषैं तिर्यंचवत् उदय जानना। विशेष इतना–तहां उद्योत सहित उदय नाहीं है। बहुरि तहां दोऊ गोत्रनि का उदय संभवै है तातैं तिर्यञ्च गति विषैं कहे भंगनि तैं तीनों जायगा गोत्र के बदलने तैं दूणे भंग जानने।

बहुरि देवगति विषैं नरकवत् उदय जानना। विशेष इतना–इहां नाम की प्रशस्त प्रकृतिनि ही का अर उच्च गोत्र का अर मोह विषैं नपुंसक वेद बिना स्त्री पुरुष विषैं कोई एक वेद का उदय पाइए है। तहां दोय वेद के बदलने तैं नरक गति विषैं कहे भंगनि तैं तीनों जायगा दूणे भंग जानने। असैं ए भंग निद्रा का उदय रहित जीवनि की अपेक्षा कहे। बहुरि इन च्यारचों गति विषैं जे उदय कहे तिन विषैं जे उदय निद्रा प्रचला विषैं कोई एक प्रकृति मिलाएं एक-एक प्रकृतिनि करि अधिक उदय हो है। तहां इन दोऊ प्रकृतिनि के बदलने तैं सर्वत्र पूर्वोक्त भंगनि तैं दूणे भंग जानने।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उदइल्लाणं उदये, पत्तेक्कठिदिस्स वेदगो होदि ।
विचउट्ठाणमसत्थे, सत्थे उदयल्लरसभुत्ती [1] ॥२९॥

उदयवतामुदये, प्राप्ते एकस्थितिकस्य वेदको भवति ।
द्विचतुः स्थानमशस्ते, शस्ते उदीयमानरसभुक्तिः ॥२९॥

टीका – उदयवान प्रकृतिनि का उदय अपेक्षा एक स्थिति जो उदय कौं प्राप्त भया एक निषेक ताही का भोक्ता सो जीव हो है । बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनि का द्विस्थान रूप अर प्रशस्त प्रकृतिनि का चतुःस्थान रूप अनुभाग का भोगवना ताकौं हो है ।

अजहण्णमणुक्कस्सप्पदेसमणुभवदि सोदयाणं तु ।
उदयिल्लाणं पयडिचउक्कण्णमुदीरगो होदि [2] ॥३०॥

अजघन्यमनुत्कृष्ट प्रदेशमनुभवति सोदयानां तु ।
उदयवतां प्रकृतिचतुष्काणामुदीरको भवति ॥३०॥

टीका – उदय प्रकृतिनि का अजघन्य वा अनुत्कृष्ट प्रदेश कौं भोगवै है । जघन्य वा उत्कृष्ट परमाणूनि का इहां उदय नाहीं । बहुरि प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग जे उदय रूप कहे तिनही का यहु उदीरणा करने वाला हो है । जातैं जाकैं जिनिका उदय ताकौं तिनही की उदीरणा भी संभवै है । ऐसैं उदय उदीरणा कहि ।

अब सत्त्व कहै हैं –

दुति आउ तित्थहारचउक्कणा सम्मगेण हीणा वा ।
मिस्सेणूणा वा वि य, सव्वे पयडी हवे सत्तं [3] ॥३१॥

द्वित्रिआयुः तीर्थाहारचतुष्काणां सम्यक्त्वेन हीना वा ।
मिश्रेणोना वापि च, सर्वेषां प्रकृतीनां भवेत् सत्त्वम् ॥३१॥

टीका – सम्यक्त्व सन्मुख अनादि मिथ्यादृष्टी कैं अबद्धायु कैं तौ भुज्यमान बिना तीन आयु, तीर्थंकर, आहारक चतुष्क (४), सम्यग्मोहनी, मिश्र मोहनी इनि

१. षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१३, जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २२० ।
२. गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा २७८ ।
१. षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०९ । जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २०७ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दश बिना एक सौ अठतीस का सत्त्व है। बहुरि तिस ही बद्धायु कैं एक बध्यमान आयु सहित एक सौ गुणतालीस का सत्त्व हो है। बहुरि सम्यक्त्व सन्मुख सादि मिथ्यादृष्टी कैं अबद्धायु कैं तौ भुज्यमान बिना तीन आयु, तीर्थंकर, आहारक चतुष्क (४) इनि आठ बिना एक सौ चालीस का सत्त्व है। सम्यक्त्व मोहनी की उद्वेलना भएं एक सौ गुणतालीस का सत्त्व हो है। मिश्र मोहनी की उद्वेलना भए एक सौ अठतीस का सत्त्व हो है। बहुरि तिस ही बद्धायु कैं बध्यमान आयु सहित एक सौ इकतालीस, एक सौ चालीस, एक सौ गुणतालीस का सत्त्व हो है। जातैं आहारक चतुष्टय की उद्वेलना भएं बिना तीर्थंकर सत्तावाला जीव प्रथमोपशम सम्यक्त्व के सन्मुख न हो है।

अजहण्णमणुक्कस्सं, ठिदीतियं होदि सत्तपयडीणं।
एवं पयडिचउक्कं, बंधादिसु होदि पत्तेयं[1] ॥३२॥

अजघन्यमनुत्कृष्टं, स्थितित्रिकं भवति सत्त्वप्रकृतीनाम्।
एवं प्रकृतिचतुष्कं, बंधादिषु भवति प्रत्येकम् ॥३२॥

टीका – तिन सत्तारूप प्रकृतिनि का स्थिति, अनुभाग, प्रदेश हैं, ते अजघन्य अनुत्कृष्ट हैं। जघन्य वा उत्कृष्ट स्थिति अनुभाग प्रदेश का सत्त्व इहां न संभवै है। असैं प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशरूप चतुष्क है, सो बंध, उदय, उदीरणा, सत्त्व विषैं प्रत्येक कह्या। सो प्रायोग्यता लब्धि का अंत पर्यंत जानना।

तत्तो अभव्वजोग्गं, परिणामं बोलिऊण भव्वो हु।
करणं करेदि कमसो, अधापवत्तं अपुव्वमणियट्टिं[2] ॥३३॥

ततः अभव्ययोग्यं, परिणामं मुक्त्वा भव्यो हि।
करणं करोति क्रमशः, अधः प्रवृत्तमपूर्वमनिवृत्तिम् ॥३३॥

टीका – तहां पीछे अभव्य कैं भी योग्य असा च्यारि लब्धिरूप परिणाम कौं समाप्त करि भव्य है, सोई अध:प्रवृत्त अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण कौं करै है। सो इन तीनों करणनि का व्याख्यान गोम्मटसार विषैं जीवकांड का गुणस्थाना-

---

१. षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०८–२०९। जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २०७।
२. षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१७, जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २३३।
धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

धिकार विषैं व कर्मकांड का त्रिकोण चूलिका अधिकार विषैं विशेष व्याख्यान है, तहां तैं जानना। इहां भी सामान्यसा गाथानि का अर्थ कहिए है।

अंतोमुहुत्तकाला, तिण्णि वि करणा हवंति पत्तेयं।
उवरीदो गुणियकमा, कमेण संखेज्जरूवेण ॥३४॥

अंतर्मुहूर्तकालानि, त्रीण्यपि करणानि भवंति प्रत्येकम्।
उपरितः गुणितक्रमाणि, क्रमेण संख्यातरूपेण ॥३४॥

टीका – तीनों ही करण प्रत्येक अंतर्मुहूर्त कालमात्र स्थिति युक्त हैं। तथापि उपर तैं संख्यात गुणा क्रम लीएं हैं। अनिवृत्तिकरण का काल स्तोक है। तातैं अपूर्वकरण का संख्यात गुणा है। तातैं अध:प्रवृत्तकरण का संख्यात गुणा है।

जम्हा हेट्ठिमभावा, उवरिमभावेहिं सरिसगा होंति।
तम्हा पढमं करणं, अधापवत्तो त्ति णिद्दिट्ठं[१] ॥३५॥

यस्मादधस्तनभावा, उपरितनभावैः सदृशा भवंति।
तस्मात् प्रथमं करणं, अधःप्रवृत्तमिति निर्दिष्टम् ॥३५॥

टीका – जातैं इहां नीचले समयवर्ती कोई जीव के परिणाम उपरले समयवर्ती कोई जीव के परिणामनि के सदृश हो हैं, तातैं याका नाम अध:प्रवृत्त करण है।

भावार्थ – करणनि का नाम नाना जीव अपेक्षा है, सो अध:करण मांडै कोई जीव कौं स्तोक काल भया कोई जीव कौं बहुत काल भया तिनके परिणाम इस करण विषैं संख्या वा विशुद्धताकर समान भी हो हैं अैसा जानना।

समए समए भिण्णा, भावा तम्हा अपुव्वकरणो हु।
अणियट्ठी वि तहं वि य, पडिसमयं एक्कपरिणामो[२] ॥३६॥

समये समये भिन्ना, भावा तस्मादपूर्वकरणो हि।
अनिवृत्तिरपि तथैव च, प्रतिसमयमेकपरिणामः ॥३६॥

---

१. षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१७। जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २३३। गोम्मटसार जीवकांड गाथा–४८।

२. जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २५४। षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २२०, गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा–५१, ५६, ५७। धवला पुस्तक ६, पृष्ठ सं० २२१।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – समय समय विषैं जीवनि के भाव भिन्न ही होंइ, सो अपूर्वकरण है।

भावार्थ – कोई जीव कौं अपूर्वकरण मांडे स्तोक काल भया, कोई कौं बहुत काल भया; तहां तिनके परिणाम सर्वथा सदृश न होंइ। नीचले समयवालों के परिणाम तैं उपरले समयवालों का परिमाण अधिक संख्या वा विशुद्धता युक्त होइ अर इहां जिनकौं करण मांडैं समान काल भया तिनके परिणाम परस्पर सदृश भी होंइ अथवा असदृश भी होंइ अैसा जानना।

बहुरि जहां समय समय एक ही परिणाम होइ सो अनिवृत्तिकरण है।

भावार्थ – जिनिकौं अनिवृत्तिकरण मांडैं समान काल भया; तिनिके परिणाम समान ही होंइ। बहुरि नीचले समयवर्तीनि तैं उपरि समयवर्तीनि के अधिक होंइ अैसा जानना।

गुणसेढी गुणसंकम, ठिदिरसखंडं च णत्थि पढमम्हि।
पडिसमयमणंतगुणं, विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु[1] ॥३७॥

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं, स्थितिरसखंडं च नास्ति प्रथमे।
प्रतिसमयमनंतगुणं, विशुद्धिवृद्धिभिर्वर्धंते हि ॥३७॥

टीका – पहिला अधःकरण विषैं गुणश्रेणी, गुणसंक्रमण, स्थितिकांडकघात, अनुभागकांडकघात न होइ। बहुरि इहां समय समय प्रति अनंतगुणी विशुद्धता बधै है।

सत्थाणमसत्थाणं, चउविट्ठाणं रसं च बंधदि हु।
पडिसमयमणंतेण य, गुणभजियकमं तु रसबंधे ॥३८॥

शस्तानामशस्तानां चतुर्द्विस्थानं रसं च बध्नाति हि।
प्रतिसमयमनंतेन च, गुणभजितक्रमं तु रसबंधे ॥३८॥

टीका – अर सातादि प्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय प्रति अनंत गुणा चतुःस्थान रूप अनुभाग बांधै है। अर असातादि अप्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय प्रति अनंतवें भाग मात्र अनुभाग बांधै है।

---

१ षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६ पृष्ठ सं. २२२।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पल्लस्स संखभागं, मुहुत्तअंतेण ओसरदि बंधे ।
संखेज्जसहस्साणि य, अधापवत्तम्मि ओसरणा ॥३९॥

पल्यस्य संख्यभागं, मुहूर्तांतरेण अपसरति बंधे ।
संख्येयसहस्राणि च, अधःप्रवृत्ते अपसरणानि ॥३९॥

टीका – अधःप्रवृत्त का प्रथम समय तैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत पूर्व स्थिति बंधतैं पल्य का संख्यातवां भाग मात्र घटता स्थितिबंध हो है । बहुरि तहां पीछैं अंतर्मुहूर्त पर्यंत तातैं भी पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र घटता स्थितिबंध है । अैसैं एक अंतर्मुहूर्त करि पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र घटता स्थितिबंधापसरण होइ । अैसैं अपसरण अधःप्रवृत्त विषैं संख्यात हजार हो हैं ।

आदिमकरणद्धाए, पढमट्ठिदिबंधदो दु चरिमम्हि ।
संखेज्जगुणविहीणो, ठिदिबंधो होइ णियमेण ॥४०॥

आदिमकरणाद्धायां, प्रथमास्थितिबंधतस्तु चरमे ।
संख्यातगुणविहीनः, स्थितिबंधो भवति नियमेन ॥४०॥

टीका – अैसैं होतैं प्रथम करण के काल विषैं प्रथम समय संबंधी अन्तःकोडा कोडी सागर प्रमाण स्थितिबंध तैं ताके अन्त समय विषैं संख्यात गुणा घाटि हो है ।

तच्चरिमे ठिदिबंधो, आदिमसम्मेण देससयलजमं ।
पडिवज्जमाणगस्स वि, संखेज्जगुणेण हीणकमो[1] ॥४१॥

तच्चरमे स्थितिबंध, आदिमसम्येन देशसकलयमम् ।
प्रतिपद्यमानस्यापि, संख्येयगुणेन हीनक्रमः ॥४१॥

टीका – तींहि अन्त समय विषैं जो स्थितिबंध कह्या, तातैं देशसंयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं प्राप्त होने वाले जीव कैं संख्यात गुणा घाटि स्थिति बंध हो है । तातैं सकल संयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं प्राप्त होनेवाले कैं संख्यात गुणा घाटि हो है ।

आदिमकरणद्धाए, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो[2] ॥४२॥

---

१ षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक ६, पृष्ठ संख्या २२३ ।
२ धवला पुस्तक–६ पृष्ठ सं. २१४ । जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २३५ । गोम्मटसार जीवकांड गाथा ४६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आदिमकरणाद्धायां, प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः ।
अधिकक्रमा हि विशेषे, मुहूर्तांतर्हि प्रतिभागः ।।४२।।

टीका – पहिला करण विषैं त्रिकालवर्ती जीवनि के जे कषायनि के विशुद्ध स्थान कहे हैं, तिनि विषैं अधःप्रवृत्तकरण विषैं संभवते असंख्यात लोक मात्र हैं। तिन विषैं समय समय प्रति संभवते असंख्यात लोक मात्र परिणाम हैं । ते प्रथम समय तैं द्वितीयादि समयनि विषैं क्रम तैं समान प्रमाण रूप एक एक विशेष जो चय ता करि बधते जानने । तहां आदि धन जो प्रथम समय सम्बन्धी परिणाम ताकौं अंतर्मुहूर्त मात्र भागहार का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवै है । **'पदकदिसंखेणे भाजिदे पचयं'** इस सूत्र करि गच्छ का वर्ग संख्यात गुणा, ताका भाग सर्व धन कौ दीएं जो चय का प्रमाण आवै है, सो प्रथम समय संबंधी परिणामनि कौं किंचिदून संख्यात गुणा अधःप्रवृत्तकरण काल मात्र जो अंतर्मुहूर्त, ताका भाग दीएं भी इतना ही प्रमाण आवै है ।

ताए अधापवत्तद्धाए, संखेज्जभागमेत्तं तु ।
अणुकट्ठीए अद्धा, णिव्वग्गणकंडयं तं तु[1] ।।४३।।

तस्या अधःप्रवृत्ताद्धायाः, संख्येयभागमात्रं तु ।
अनुकृष्टया अद्धा, निर्वर्गणकांडकं तत्तु ।।४३।।

टीका – तीहिं अधःप्रवृत्त काल प्रमाण जो ऊर्ध्वगच्छ ताके संख्यातवें भागमात्र अनुकृष्टि का गच्छ हो है । एक एक समय संबंधी परिणामनि विषैं एते एते हो हैं, ते वर्गणा कांडक समान जानने । वर्गणा जो समयनि की समानता ताकरि रहित उपरि समयवर्ती परिणाम खंड तिनिका कांडक जो पर्व, ताका नाम निर्वर्गण कांडक है । ते अधःकरण के काल विषैं संख्यात हजार हो हैं ।

पडिसमयगपरिणामा, णिव्वग्गणसमयमेत्तखंडकमा ।
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो[2] ।।४४।।

प्रतिसमयगपरिणामा, निर्वर्गणसमयमात्रखंडक्रमाः ।
अधिकक्रमा हि विशेषे मुहूर्तांतर्हि प्रतिभागः ।।४४।।

---

१ षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ सं. २१५ । जयधवला भाग १२ पृष्ठ सं. २३६ ।
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २३६ । धवला पुस्तक ६ पृष्ठ सं. २१५

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – समय समय संबंधी परिणामनि निर्वर्गण कांडक समान खंड कीजिए ते भी प्रथम खण्ड तें द्वितीयादि खंड क्रम तें विशेष जो समान प्रमाण लीएं चय, ताकरि बधता है । तहां प्रथम खंड कौं अंतर्मुहूर्त का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवै है ।

पडिखंडगपरिणामा, पत्तेयमसंखलोगमेत्ता हु ।
लोयाणमसंखेज्जा, छट्ठाणाणी विसेसे वि[1] ॥४५॥

प्रतिखंडगपरिणामाः, प्रत्येकमसंख्यलोकमात्रा हि ।
लोकानामसंख्येयाः, षट्स्थानानि विशेषेऽपि ॥४५॥

टीका – तहां एक एक खंड विषैं जघन्य, मध्यम, उत्कृष्टता लीएं विशुद्ध परिणामनि के भेद असंख्यात लोक मात्र हैं । तहां जैसें गोम्मटसार का ज्ञानाधिकार विषैं पर्याय समास विषैं षट् स्थान पतित वृद्धि का अनुक्रम कह्या है तैसें इहां एक एक खंड विषैं वा एक एक अनुकृष्टि विशेष विषैं भी असंख्यात लोक मात्र बारह षट् स्थान पतित वृद्धि संभवै है ।

पढमे चरिमे समये, पढमं चरिमं च खंडमसरित्थं ।
सेसा सरिसा सव्वे, अट्ठुव्वंकादिअंतगया[2] ॥४६॥

प्रथमे चरमे समये, प्रथमं चरमं च खंडमसदृशम् ।
शेषाः सदृशाः सर्वे, अष्टोर्वंकाद्यंतगताः ॥४६॥

टीका – प्रथम समय का प्रथम खंड अंत समय का अंत खंड ए तौ कोऊ खंडनि के समान नाहीं, अवशेष सर्व खंड अन्य खंडनि करि यथायोग्य समानता धरैं हैं । तहां खंडनि विषैं जो परिणाम पुंज कह्या, तींहि विषैं पहला परिणाम तौ अष्टांक कहिए पूर्ण परिणाम तें अनंत गुणा वृद्धिरूप है । अर अंत का परिणाम ऊर्वंक कहिए पूर्व परिणाम तें अनंत भाग वृद्धि रूप है । जातैं षट् स्थाननि की आदि तौ अष्टांक अर अंत ऊर्वंक कह्या है ।

चरिमे सव्वे खंडा, दुचरिमसमओ त्ति अवरखंडाए ।
असरिसखंडाणोली, अधापवत्तम्हि करणम्हि ॥४७॥

---

१. जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २३४ । षटखण्डागम धवला पुस्तक–६ पृष्ठ सं. २१४ ।
२. षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ सं. २१६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चरमे सर्वे खंडा, द्विचरमसमय इति अपरखंडैः ।
असदृशखंडानामावलिरधःप्रवृत्ते करणे ।।४७।।

टीका – अधःप्रवृत्तकरण काल विषैं अंत समय संबंधी तौ सर्व खंड अर दूसरा समय तें लगाय द्विचरम समय पर्यंत का प्रथम प्रथम खंड हैं, ते तिनिके उपरि के समय संबंधी जे सर्व खंड तिनि तें समान नाहीं तातें असदृश हैं ।

पढमे करणे अवरा, णिव्वग्गणसमयमेत्तगा तत्तो ।
अहिगदिणा वरमवरं, तो वरपंती अणंतगुणियकमा[1] ।।४८।।

प्रथमे करणे अवरा, निर्वर्गणसमयमात्रकाः ततः ।
अहिगतिना वरमवमतो वरपंक्तिरनंतगुणितक्रमा ।।४८।।

टीका – प्रथम करण विषैं विशुद्धता के अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा समय समय संबंधी प्रथम खंड, तिनके जघन्य परिणाम हैं; ते उपरि उपरि अनंत गुणे हैं । बहुरि तहां पीछैं निर्वर्गण कांडक का अंत समय संबंधी प्रथम खंड का जघन्य परिणाम तैं पहिले समय के अंत खण्ड का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणा है । तातैं द्वितीय कांडक के प्रथम समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम अनंत गुणा है । तातैं प्रथम कांडक का द्वितीय समय के अंत खंड का परिणाम अनंत गुणा है । तातैं द्वितीय कांडक के द्वितीय समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम अनंत गुणा है । अैसें जैसें सर्प इधर तें उधर, उधर तें इधर गमन करै है; तैसें जघन्य उत्कृष्ट का उत्कृष्ट तें जघन्य का अनंत गुणा क्रम है । यावत् अंत कांडक का अंत समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम होइ बहुरि तातैं अंत कांडक का प्रथम समय के अंत खंड का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणा है । तातैं समय समय प्रति अंत खंड के उत्कृष्ट परिणामनि की पंक्ति अनंत गुणा क्रम लीएं है यावत् अंत कांडक का अंत समय के अंत खण्ड का उत्कृष्ट परिणाम होइ ।

इहां इतना जानना – जघन्य तें उत्कृष्ट है सो तौ असंख्यात लोक मात्र वार अनंत गुणा है । अर उत्कृष्ट तें जघन्य है सो एक वार अनंत गुणा है । बहुरि सर्व तें जघन्य विशुद्धता के भी अविभाग प्रतिच्छेद जीव राशि तें अनंत गुणे हैं तातैं इहां षट् स्थान संभवै हैं ।

---

१. जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २४५ से २५० । षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ सं. २१८ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पढमे करणे पढमा, उड्ढगसेढीय चरिमसमयस्स ।
तिरियगखंडाणोली, असरित्थाणंतगुणियकमा ।।४९।।

प्रथमे करणे प्रथमा, ऊर्ध्वगश्रेण्याः चरमसमयस्य ।
तिर्यग्गतखंडानामावलिरसदृशी अनंतगुणितक्रमा ।।४९।।

टीका – प्रथम करण विषैं समय समय के परिणामनि की उपरि उपरि पंक्ति कीएं अर अंत समय के परिणामनि की बरोबरि तिर्यक् रूप पंक्ति कीएं अंकुशाकार रचना हो है । सो इनके उपरि के परिणामनि तैं समानता नाहीं; तातैं असदृश हैं । बहुरि ए परिणाम अनंत गुणा क्रम लीएं विशुद्धता रूप जानने । अैसैं अधःकरण का स्वरूप कह्या ।

पढमं व बिदियकरणं, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
अहियकमा हु विसेसे, मुहूत्तअंतो हु पडिभागो[1] ।।५०।।

प्रथमं व द्वितीयकरणं, प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः ।
अधिकक्रमा हि विशेषे, मुहूर्तांतर्हि प्रतिभागः ।।५०।।

टीका – प्रथम अधःकरणवत् दूसरा अपूर्वकरण है । तहां विशेष – जो असंख्यात लोक मात्र अधःकरण के परिणामनि तैं अपूर्वकरण के परिणाम असंख्यात लोक गुणे हैं । ते समय समय प्रति विशेष जो समान प्रमाणरूप चय, ताकरि अधिक हैं । सो प्रथम समय संबंधी परिणाम कौं अंतर्मुहूर्त का भाग दीएं चय का प्रमाण आवै है ।

जम्हा उवरिमभावा, हेट्ठिमभावेहिं णत्थि सरिसत्तं ।
तम्हा बिदियं करणं, अपुव्वकरणे त्ति णिद्दिट्ठं[2] ।।५१।।

यस्मादुपरिभावानामधस्तनभावैः नास्ति सदृशत्वम् ।
तस्मात् द्वितीयं करणमपूर्वकरणमिति निर्दिष्टम् ।।५१।।

टीका – जातैं उपरि समय सम्बन्धी परिणाम हैं ते नीचले समय संबन्धी परिणामनि के समान इहा न होंइ । प्रथम समय की उत्कृष्ट विशुद्धता तैं भी द्वितीय समय

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २५३,
२. जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २५३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संबंधी जघन्य विशुद्धता भी अनंत गुणी है। असैं परिणामनि का अपूर्वपना है। तातैं दूसरा करण अपूर्वकरण कह्या है।

बिदियकरणादिसमयादंतिमसमओ त्ति अवरवरसुद्धी।
अहिगदिणा खलु सव्वे, होंति-अणंतेण गुणियकमा[1] ॥५२॥

द्वितीयकरणादिसमयादंतिमसमय इति अवरवरशुद्धी।
अहिगतिना खलु सर्वे, भवंत्यनंतेन गुणितक्रमाः ॥५२॥

टीका – दूसरे करण का प्रथम समय तैं लगाय अंत समय पर्यंत अपने जघन्य तैं अपना उत्कृष्ट अर पूर्व समय के उत्कृष्ट तैं उत्तर समय का जघन्य परिणाम क्रम तैं अनंत गुणी विशुद्धता लीए सर्प की चालवत् जानने। इहां अनुकृष्टि नाहीं है।

गुणसेढीगुणसंकमठिदिरसखंडा अपुव्वकरणादो।
गुणसंकमेण सम्मा, मिस्साणं पूरणो त्ति हवे[2] ॥५३॥

गुणश्रेणीगुणसंक्रमस्थितिरसखंडा अपूर्वकरणात्।
गुणसंक्रमेण समा मिश्राणां पूरण इति भवेत् ॥५३॥

टीका – अपूर्वकरण के प्रथम समय तैं लगाय यावत् सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय का पूरणकाल जो जिस काल विषैं गुण संक्रमण करि मिथ्यात्व कौं सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्रमोहनी रूप परिणमावै है, तिस काल का अंत समय पर्यंत गुणश्रेणी, गुण संक्रमण, स्थिति खंडन, अनुभाग खंडन ए च्यारि आवश्यक हो हैं।

ठिदिबंधोसरणं पुण, अधापवत्तादुपूरणो त्ति हवे।
ठिदिबंधट्ठिदिखंडुक्कीरणकाला समा होंति[3] ॥५४॥

स्थितिबंधापसरणं पुनः अधःप्रवर्त्तादापूरण इति भवेत्।
स्थितिबंधस्थितिखंडकोत्कीरणकालाः समा भवंति ॥५४॥

टीका – बहुरि स्थितिबंधापसरण है सो अधःप्रवृत्तकरण का प्रथम समय तैं लगाय तिस गुण संक्रमण पूरण होने का काल पर्यंत हो है। यद्यपि प्रायोग्य लब्धि

---

१. जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २५२।
२. जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २६० आदि।
३. जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २६६।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तैं ही स्थितिबंधापसरण हो है। तथापि प्रायोग्य लब्धि कैं सम्यक्त्व होने का अनवस्थितपना है। नियम नाहीं तातैं ग्रहण न कीया। बहुरि स्थितिबंधापसरण काल अर स्थितिकांडकोत्करण काल ए दोऊ समान अंतर्मुहूर्त मात्र हैं।

गुणसेढीदीहत्तमपुव्वदुगादो दु साहियं होदि।
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेवो[1] ॥५५॥

गुणश्रेणिदीर्घत्वमपूर्वद्विकात् तु साधिकं भवति।
गलितावशेषे उदयावलिबाह्यतस्तु निक्षेपः ॥५५॥

टीका – गुणश्रेणी का दीर्घत्व कहिए निषेक निषेकनि का प्रमाण मात्र आयाम, सो अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण के काल तैं साधिक है। सो अधिक का प्रमाण अनिवृत्तिकरण काल के संख्यातवें भाग मात्र जानना। सो यहु गुणश्रेणी आयाम गलितावशेष है। समय व्यतीत होतैं यहु गुणश्रेणी आयाम भी घटता होता जाय है। बहुरि उदयावली तैं बाह्य है; जातैं उदयावली तैं उपरि गुणश्रेणी आयाम के निषेक हैं। तिस गुणश्रेणी आयाम विषैं गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य का निक्षेपण करिए है।

अब इहां प्रसंग पाइ निक्षेपण के अतिस्थापना का स्वरूपादिक कहिए है।

तहां अपकर्षण कीया हुवा वा उत्कर्षण कीया हुवा द्रव्य कौं जिनि निषेकनि विषै मिलाइए ते निषेक निक्षेपण रूप जानने। जिनि निषेकनि विषैं न मिलाइए, ते अतिस्थापन रूप जानने।

सो स्थिति घटाइ उपरि के निषेकनि का द्रव्य नीचले निषेकनि विषैं जहां दीजिए तहां अपकर्षण कहिए।

बहुरि स्थिति बधाय नीचले निषेकनि का द्रव्य कौं उपरि के निषेकनि विषैं जहां दीजिए तहां उत्कर्षण कहिए। सो इनकी अपेक्षा निक्षेपण अतिस्थापन निषेकनि का प्रमाण कहिए है।

णिक्खेवमदित्थावणमवरं, समऊणआवलितिभागं।
तेणूणावलिमेत्तं, बिदियावलियादिमणिसेगे[2] ॥५६॥

---

१. जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २६४, २६५।
२. जयधवला भाग–८, पृष्ठ सं. २४४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

निक्षेपमतिस्थापनमवरं समयोनमावलित्रिभागम् ।
तेन न्यूनावलिमात्रं द्वितीयावलिकादिमनिषेके ॥५६॥

टीका – जहां स्थिति कांडक घात न पाइए, सो अव्याघात कहिए । तिस विषैं प्रथम वर्णन करिए है–द्वितीय आवली का प्रथम निषेक का अपकर्षण करि नीचै निक्षेपण करिए । तहां प्रथम आवली के निषेकनि विषैं समय घाटि आवली का त्रिभाग एक समय अधिक प्रमाण निषेक तौ निक्षेपरूप हैं । इनि विषै सो द्रव्य दीजिए है । बहुरि अवशेष निषेक अतिस्थापनरूप हैं । तिनि विषैं सो द्रव्य न दीजिए है । असैं यहु जघन्य निक्षेप जघन्य अतिस्थापन जानना ।

अंक संदृष्टि करि–जैसैं प्रथमादि सोलह निषेक तौ प्रथमावली के अर ताके उपरि सोलह निषेक द्वितीयावली के हैं । तहां सतरह्वां निषेक का द्रव्य अपकर्षण करि नीचैं दीया । तहां सोलह में एक घटाएं पंद्रह, ताका त्रिभाग पांच, तामैं एक मिलाएं छह, सो प्रथमादि छह निषेकनि विषैं द्रव्य दीया, सो यहु जघन्य निक्षेप है । बहुरि ताके ऊपरि दश निषेकनि विषैं द्रव्य नाहीं मिलाया, सो यहु जघन्य अति-स्थापन है ।

एतो सऊमणावलितिभागमेत्तो तु तं खु णिक्खेवो ।
उवरिं आवलिवज्जिय, सगट्ठिदी होदि णिक्खेवो[1] ॥५७॥

अतः समयोनावलित्रिभागमात्रस्तु तत्खलु निक्षेपः ।
उपरि आवलिर्वाजता स्वकस्थितिर्भवति निक्षेपः ॥५७॥

टीका – यातैं उपरि द्वितीयावली के द्वितीय निषेक का अपकर्षण कीया, तहां एक समय अधिक आवली मात्र याके निषेक हैं । तिनिविषैं निक्षेप तौ निषेक घाटि आवली का त्रिभाग एक समय अधिक ही है । अतिस्थापन पूर्व तैं एक समय अधिक है, असैं क्रमतैं द्वितीयावली के तृतीयादि निषेकनि का अपकर्षण होतें निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण ही अर अतिस्थापन एक-एक समय अधिक क्रमतै जानना । तहां समय घाटि आवली का त्रिभाग एक समय अधिक प्रमाण जे द्वितीय आवली के निषेक, तिनिके उपरिवर्ती जे निषेक, ताका अपकर्षण कीएं तहां निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण अर अतिस्थापन आवली मात्र हो है; सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है ।

---

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २४४ आदि ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंक संदृष्टि करि – जैसें अठारहवां, उगणीसवां, बीसवां आदि निषेकनि का द्रव्य अपकर्षण करि प्रथमादि छह निषेकनि विषैं ही दीजिए है अर ग्यारह, बारह, तेरह आदि निषेकनि विषैं न दीजिए है। तहां तेईसवां निषेक का द्रव्य अपकर्षण कीएं आदि के छह निषेक तौ निक्षेप रूप हैं। अर सोलह निषेक अतिस्थापन भए सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है।

बहुरि इहांतैं ऊपरि के निषेकनि का द्रव्य अपकर्षण कीएं सर्वत्र अतिस्थापन तौ आवलीमात्र ही जानना। अर निक्षेप एक-एक समय क्रम तैं बधता जानना। तहां स्थिति के अंत निषेक का अपकर्षण होतैं ताके नीचे के आवलीमात्र निषेक तौ अतिस्थापन रूप जानने। तिस बिना अवशेष सर्व निषेक निक्षेप रूप जानने।

अंक संदृष्टि करि जैसें–चौईसवां पचीसवां आदि निषेकानि का अपकर्षण होतैं प्रथमादि छह, सात आदि एक-एक बधता निषेक तौ निक्षेप रूप हो है। अर अतिस्थापन रूप सर्वत्र सोलह ही निषेक हैं। सो यहु क्रम अंत निषेक का अपकर्षण पर्यंत जानना।

उक्कस्सट्ठिदिबंधो, समयजुदावलिदुगेण परिहीणो।
उक्कट्ठिदिम्मि चरिमे, ठिदिम्मि उक्कस्सणिक्खेवो[1] ॥५८॥

उत्कृष्टस्थितिबंधः, समययुतावलिद्विकेन परिहीनः।
उत्कृष्टस्थितौ चरमे, स्थितौ उत्कृष्टनिक्षेपः ॥५८॥

टीका – स्थिति का अन्त निषेक का द्रव्य कौं अपकर्षण करि नीचले निषेकनि विषैं निक्षेपण करतैं तिस अन्त के निषेक के नीचैं आवली मात्र निषेक तौ अतिस्थापन रूप हैं, अर समय अधिक दोय आवली करि हीन उत्कृष्ट स्थितिमात्र निक्षेप हो हैं, सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप जानना। इहां बंध भएं पीछैं आवली काल पर्यंत तो उदीरणा होइ नाहीं, तातैं एक आवली तौ आबाधा विषैं गई अर एक आवली अतिस्थापन रूप रही अर अंत निषेक का द्रव्य ग्रह्या ही हैं तातैं उत्कृष्ट स्थिति विषैं दोय आवली एक समय घटाया है।

अंक संदृष्टि करि – जैसें उत्कृष्ट स्थिति हजार समय, तहां सोलह समय तौ आबाधा विषैं गये अर नव सै चौरासी निषेक हैं। तहां अंत के निषेक का द्रव्य अपकर्षण

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २५२।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि प्रथमादि नव सैं सतसठि निषेकनि विषैं दीया, सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप है । अर ताके उपरि सोलह निषेकनि विषैं न दिया, सो यहु अतिस्थापनावली है ।

उक्कस्सट्ठिदि बंधिय, मुहुत्तअंतेरण सुज्झमाणेरण ।
इगिकंडएरण घादे, तम्हि य चरिमस्स फालिस्स ॥५६॥

चरिमरिणसेउक्कट्ठे, जेट्ठमदित्थावणं इदं होदि ।
समयजुदंतोकोडाकोडि विणुक्कस्सकम्मठिदी[1] ॥६०॥

उत्कृष्टस्थितिं बंधयित्वा, मुहूर्तान्तः शुद्धयता ।
एककांडकेन घाते, तस्मिन् च चरमस्य फालेः ॥५९॥

चरमनिषेकोत्कर्षे, ज्येष्ठमतिस्थापनमिदं भवति ।
समययुतान्तः कोटिकोटिं विना उत्कृष्टकर्मस्थितिः ॥६०॥

टीका – अब जहां स्थितिकांडक घात होइ सो व्याघात कहिए । तहां कहिए है – कोई जीव उत्कृष्ट स्थिति बांधि, पीछे क्षयोपशम लब्धि करि विशुद्ध भया तब बंधी थी जो स्थिति, तींहि विषैं आबाधारूप बंधावली कौं व्यतीत भएं पीछैं एक अंतर्मुहूर्त काल करि स्थितिकांडक का घात कीया । तहां जो उत्कृष्ट स्थिति बांधी थी, तिस विषैं अन्तः कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति अवशेष राखि अन्य सर्व स्थिति का घात तिस कांडक करि हो है । तहां कांडक विषैं जेती स्थिति घटाई, ताके सर्व निषेकनि का परमाणूनि कौं समय-समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं अवशेष राखी स्थिति विषैं अंतर्मुहूर्त पर्यंत निक्षेपण करिए है । सो समय-समय विषैं जो द्रव्य निक्षेपण कीया, सोई फालि है । तहां अंत की फालि विषैं स्थिति के अन्त निषेक का जो द्रव्य, ताकौं ग्रहि, अवशेष राखी स्थिति विषैं दीया, तहां एक समय अधिक अंतः कोडाकोडी सागर करि हीन उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है, जातैं इस विषैं सो द्रव्य न दीया । इहां उत्कृष्ट स्थिति विषैं अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण मात्र स्थिति अवशेष रही, तिस विषैं द्रव्य दीया, सो यहु निक्षेपरूप भया तातैं यहु घटाया । अर एक अन्त निषेक का द्रव्य ग्रह्या ही है, तातैं एक समय घटाया है । अंक संदृष्टि करि जैसैं - हजार समय की स्थिति विषैं कांडक घात करि

---

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २४८, २४६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सौ समय की स्थिति राखी, तहां हजारवां समय सम्बन्धी निषेक का द्रव्य कौं आदि के सौ समय सम्बन्धी निषेकनि विषैं दीया, तहां आठ सै निन्याणवै समय मात्र उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है ।

सत्तग्गट्ठिदिबंधो, आदिठिदुक्कट्टणे जहण्णेण ।
आवलिअसंखभागं, तेत्तियमेत्तेव णिक्खिवदि[1] ॥६१॥

सत्ताग्रस्थितिबन्ध आदिस्थित्युत्कर्षणे जघन्येन ।
आवल्यसंख्यभागं तावन्मात्रमेव निक्षिपति ॥६१॥

टीका – अव्याघात विषैं वा व्याघात विषैं कर्म स्थिति का उत्कर्षण होतैं विधान कहिए है – पूर्वैं जे सत्तारूप निषेक थे, तिनि विषैं जों अंत का निषेक था, ताका द्रव्य कौं उत्कर्षण करने का समय विषैं बंध्या जो समयप्रबद्ध, तींहिं विषैं जो पूर्व सत्ता का अंत निषेक जिस समय उदय आवने योग्य है, तिस समय विषैं उदय आवने योग्य जो बंध्या समयप्रबद्ध का निषेक तिस निषेक के उपरिवर्ती आवली का असंख्यातवां भाग मात्र निषेकनि कौं अतिस्थापन रूप राखि तिनके उपरिवर्ती जे तितने ही आवली के असंख्यातवां भाग मात्र निषेक तिनि विषैं तिस सत्ता का अंत निषेक का द्रव्य कौं निक्षेपण करिए है । यहु उत्कर्षण विषैं जघन्य अतिस्थापन अर जघन्य निक्षेप जानना ।

अंकसंदृष्टि करि जैसैं – पूर्व सत्ता का अंत निषेक जिस समय उदय होइगा, तिस समय विषैं अब बंध्या समयप्रबद्ध का पचासवां निषेक उदय होगा । बहुरि तिस सत्ता का अंत निषेक का द्रव्य कौं ग्रहि आवली का प्रमाण सोलह ताका असंख्यातवां भाग च्यारि सो पचासवां निषेक के उपरि इक्यावनवां आदि च्यारि निषेकनि कौं अतिस्थापनरूप राखि, पचावनवां आदि च्यारि निषेकनि विषैं निक्षेपण करिए है ।

तत्तोदित्थावणगं, वड्ढदि जावावली तदुक्कस्सं ।
उवरीदो णिक्खेओ, वरं तु बंधिय ठिदि जेट्ठं ॥६२॥

बोलिय बंधावलियं, उक्कट्ठिय उदयदो दु णिक्खिविय ।
उवरिमसमये विदियावलिपढमुक्कट्टणे जादे[2] ॥६३॥

---

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २५७ से २५९ ।
२. जयधवला भाग ८, पृष्ठ २५९ से २६१ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तक्कालवज्जमाणे, वारट्ठिदीए अदित्थियाबाहं ।
समयजुदावलियाबाहूणो उक्कस्सठिदिबंधो[1] ॥६४॥

ततोतिस्थापनकं, वर्धते यावादावलिस्तदुत्कृष्टम् ।
उपरितो निक्षेपो, वरं तु बंधयित्वा स्थितिर्ज्येष्ठम् ॥६२॥

अपलाप्य बंधावलिकामुत्कर्ष्य उदयतस्तु निक्षिप्य ।
उपरितनसमये द्वितीयावलिप्रथमोत्कर्षणे जाते ॥६३॥

तत्कालवर्ज्यमाने, वरस्थित्या अतिस्थिताबाधां ।
समययुतावलिकाबाधोनः उत्कृष्टस्थितिबन्धः ॥६४॥

टीका – तिस पूर्व सत्त्व के अंत निषेक तैं लगाय तै नीचे के निषेक, तिनिका उत्कर्षण होतैं निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण ही रहै अर अतिस्थापन क्रम तैं एक एक समय बधता होइ, सो यावत् आवली मात्र उत्कृष्ट अतिस्थापन होइ तावत् यहु क्रम जानना । अंक संदृष्टि करि सत्ता का अंत निषेक के नीचला उपांत निषेक जिस समय विषैं उदय होगा तिस समय हाल बंध्या समयप्रबद्ध का गुणचासवां निषेक उदय होगा, सो तिस उपांत निषेक का द्रव्य उत्कर्षण करि ताकौं पचासवां आदि पांच निषेकनि कौं अतिस्थापन रूप राखि तिनके उपरि पचावनवां आदि च्यारि निषेकनि विषैं निक्षेपण करिए है । बहुरि ऐसैं ही उपशांत निषेक तैं नीचले निषेकनि का द्रव्य उत्कर्षण करि बंध्या समयप्रबद्ध का क्रम तैं गुणचासवां अडतालीसवां आदि तैं लगाय छह सात आदि एक एक बधते निषेक अस्थिापन रूप राखि पचावनवां आदि च्यारि निषेकनि विषैं निक्षेपण करिए है । तहां हाल बंध्या समयप्रबद्ध का अड-तीसवां निषेक जिस समय विषैं उदय होगा, तिस समय विषैं उदय आवने योग्य जो पूर्व सत्ता का निषेक ताका द्रव्य कौं उत्कर्षण कर तैं हाल बंध्या समयप्रबद्ध का गुण-तालीसवां आदि सोलह निषेकनि कौं अतिस्थापन रूप राखै है सो यहु उत्कृष्ट अति-स्थापन है । इहां पर्यंत पचावनवां आदि च्यारि निषेकनि विषैं निक्षेप जानना । बहुरि आवली मात्र अतिस्थापन भए पीछैं ताके नीचे नीचे के निषेकनि का उत्कर्षण करतैं अतिस्थापन तौ आवली मात्र ही रहै है अर निक्षेप क्रम तैं एक एक निषेक करि बधता हो है ।

---

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २५९ से २६१ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंक संदृष्टि करि जैसें - हाल बंध्या समयप्रबद्ध का सैंतीसवां निषेक जिस समय विषैं उदय होगा तिस समय विषैं उदय आवने योग्य सत्ता के निषेक कौं उत्कर्षण होतैं अडतीसवां आदि सोलह निषेक अतिस्थापन रूप हो हैं। चौवनवां आदि पांच निषेक निक्षेपरूप हो है। बहुरि ताके नीचे के निषेक का उत्कर्षण होतैं सैंतीसवां आदि सोलह निषेक अतिस्थापनरूप हो हैं। तरेपनवां आदि छह निषेक निक्षेप रूप हो हैं। ऐसें अतिस्थापन तितना ही अर निक्षेप क्रम तैं बधता जानना।

अर उत्कृष्ट निक्षेप कहां होइ सो कहिए है—कोई जीव पहिलैं उत्कृष्ट स्थिति बांधि पीछैं ताकी आबाधा विषैं एक आवली गमाइ, ताके अनंतरि तिस समयप्रबद्ध का जो अन्त का निषेक था ताका अपकर्षण कीया तहां ताके द्रव्य कौं अंत के एक समय अधिक आवली मात्र निषेकनि विषैं तौ न दीया अवशेष वर्तमान समय विषैं उदय योग्य निषेक तैं लगाय सर्व निषेकनि विषैं दीया। ऐसें पहले अपकर्षण क्रिया करी। बहुरि ताके उपरिवर्ती अनंतर समय विषैं पूर्वे अपकर्षण क्रिया करकैं जो द्रव्य उदयावली का प्रथम निषेक विषैं दीया था, ताका उत्कर्षण कीया तब ताके द्रव्य कौं तिस उत्कर्षण करने का समय विषैं बंध्या जो उत्कृष्ट स्थिति लीएं समयप्रबद्ध ताके आबाधा कौं उल्लंघि पाइए है जे प्रथमादि निषेक तिनि विषैं अंत के समयप्रबद्ध ताके समय अधिक आवली मात्र निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषैं निक्षेपण करिए है। इहां एक समय अधिक आवली करि हीन जो आबाधा काल, तीहिं प्रमाण तौ अतिस्थापन जानना। काहे तैं सो कहिए है—

जिस द्वितीयावली का प्रथम निषेक का उत्कर्षण कीया, सो तौ वर्तमान समय तैं लगाय एक समय अधिक आवली काल भएं उदय आवने योग्य है। अर जिनि निषेकनि विषैं निक्षेपण कीया ते वर्तमान समय तैं लगाय बंधी स्थिति का आबाधा काल भए उदय आवने योग्य है सो इनि दोऊनि के बीचि एक समय अधिक आवली करि हीन आबाधा काल मात्र अंतराल भया। द्वितीयावली के प्रथम निषेक का द्रव्य कौं बीचि मैं इतनेक उल्लंघि उपरि के निषेकनि विषैं दीया सोई इहां अतिस्थापन का प्रमाण जानना। बहुरि इहां एक समय आवली करि युक्त जो आबाधा काल तीहिं करि हीन जो उत्कृष्ट कर्मस्थिति तीहिं प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप जानना। काहे तैं सो कहिए है—

एक समय अधिक आवली मात्र तौ अंत के निषेकनि विषैं न दीया अर आबाधा काल विषैं निषेक रचना है ही नाहीं; तातैं उत्कृष्ट स्थिति विषैं इतना

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घटाया । यहां इतना जानना – अपकर्षण द्रव्य का नीचले निषेकनि विषैं निक्षेपण कीया ताका जो उत्कर्षण होइ तौ जेती बाकी शक्ति-स्थिति होइ तहां पर्यंत ही उत्कर्षण होइ उपरि न होइ ।

शक्ति स्थिति कहा ? सो कहिए है – विवक्षित समयप्रबद्ध का जो अंत का निषेक, ताकैं तौ सर्व ही स्थिति व्यक्ति स्थिति है । बहुरि ताकैं नीचे नीचे के निषेकनि के क्रम तैं एक समय घाटि, दोय समय घाटि आदि स्थिति व्यक्ति स्थिति है । बहुरि प्रथमादि निषेकनि कैं सर्व ही स्थिति शक्ति स्थिति है । सो उत्कर्षण कीया द्रव्य कौं जेती शक्ति स्थिति होइ तहां पर्यंत ही दीजिए है ।

बहुरि पूर्वै निक्षेप अतिस्थापन कह्या ताका अंक संदृष्टि करि स्वरूप दिखाइए है – जैसें पूर्वै समयप्रबद्ध हजार समय की स्थिति लीएं बंध्या तामै सोलह समय व्यतीत भएं अंत निषेक का द्रव्य कौं अपकर्षण करि आबाधा के उपरि तिस स्थिति के जे निषेक थे, तिन विषैं सतरह निषेक अन्त के छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषैं द्रव्य दीया । बहुरि ताके अनंतर समय विषैं जो तिस अंत निषेक का द्रव्य जो उत्कर्षण करने का समय तैं लगाय सतरहवां समय विषैं उदय आवने योग्य असा द्वितीयावली का प्रथम निषेक, तिस विषैं दीया था, ताका उत्कर्षण कीया, तब तीहिं समय विषैं हजार समयप्रबद्ध प्रमाण स्थितिबंध भया, ताकी पचास समय प्रमाण तौ आबाधा है अर नव सै पचास निषेक हैं, तिनि निषेकनि विषैं अंत के सतरह निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषैं तिस उत्कर्षण कीया द्रव्य कौं निक्षेपण करिए है । असैं इहां वर्तमान समय तैं लगाय जाका उत्कर्षण कीया, सो तौ सतरहवां समय विषैं उदय आवने योग्य था अर जिस बन्ध्या समयप्रबद्ध का प्रथम निषेक विषैं दीया, सो इकावनवां समय विषैं उदय आवने योग्य भया, सो इनिके बीचि अन्तराल तेतीस समय भया, सोई अतिस्थापन जानना । बहुरि हजार समय की स्थिति विषै पचास समय आबाधा के सतरह निषेक अंत के घटाए अवशेष नव सै तेतीस निषेकनि विषै द्रव्य दीया, सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप जानना ।

अहवावलिगदवरठिदिपढमणिसेगे वरस्स बंधस्स ।
बिदियणिसेगप्पहुदिसु, णिक्खित्ते जेट्ठणिक्खेओ[1] ॥६५॥

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ संख्या २५६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अथवावलिगतवरस्थितिप्रथमनिषेके वरस्य बंधस्य ।
द्वितीयनिषेकप्रभृतिषु, निक्षिप्ते ज्येष्ठनिक्षेपः ।।६५।।

टीका – अथवा केई आचार्यनि के मत करि निक्षेपण विषैं ऐसैं निरूपण है । उत्कृष्ट स्थिति बंध बांध्या था, ताकी बंधावली कौं गमाइ पीछें ताका प्रथम निषेक का उत्कर्षण करि ताके द्रव्य कौं तिस उत्कर्षण करने के समय विषैं बंध्या जो उत्कृष्ट स्थिति लीएं समयप्रबद्ध, ताका द्वितीय निषेक का आदि दै करि अंत विषैं अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि सर्व निषेकनि विषैं निक्षेपण कीया । तहां एक समय अर एक आवली अर बन्धी स्थिति का आबाधा काल इन करि हीन उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप हो है । इहां बंधी जो उत्कृष्ट स्थिति, ता विषैं आबाधा काल विषैं तौ निषेक रचना नाहीं अर प्रथम निषेक विषैं द्रव्य दीया नाहीं अर अंत विषैं अतिस्थापनावली विषैं द्रव्य न दीया तातैं पूर्वोक्त प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप जानना ।

इहां पूर्वोक्त प्रकार अंक संदृष्टि करि कथन जानना ।

उक्कस्सट्ठिदिबंधे, आबाहागा ससमयमावलियं ।
उदरियणणिसेगेसुक्कट्ठे सु अवरमावलियं[1] ।।६६।।

उत्कृष्टस्थितिबंधे, आबाधाग्रा ससमयामावलिकाम् ।
उदीर्यमाणनिषेकेषुत्कर्षेषु अवरमावलिकम् ।।६६।।

टीका – उत्कृष्ट स्थिति लीएं जो उत्कर्षण करने के समय विषैं बंध्या समय प्रबद्ध, ताकी आबाधा काल का जो अग्र कहिए अंत समय, तींहि सेती लगाय एक समय अधिक आवली मात्र समय पहलैं उदय आवने योग्य ऐसा जो पूर्व सत्ता का निषेक, ताका उत्कर्षण करतें आवली मात्र जघन्य अतिस्थापन हो है; जातैं तिस द्रव्य कौं आबाधा विषैं जो एक आवली मात्र काल रह्या, ताकौं अतिक्रम्य कहिए उल्लंघि करि तिस बंध्या समयप्रबद्ध कैं प्रथमादि निषेकनि विषैं अंत विषैं अतिस्थापनावली छोडि निक्षेपण करिए है ।

अंक संदृष्टि करि जैसैं हजार समय की स्थिति लीएं समयप्रबद्ध बंध्या, ताका पचास समय आबाधा काल, ताके अंत समय तैं लगाय सतरह समय पहलैं उदय आवने

१. जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २५३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

योग्य अैसा वर्तमान समय तैं चौंतीसवां समय विषैं उदय आवने योग्य पूर्व सत्ता का निषेक, ताका उत्कर्षण करि तत्काल बंध्या समयप्रबद्ध का आबाधा काल व्यतीत भएं पीछैं प्रथमादि समय विषैं उदय आवने योग्य नव सै पचास निषेक, तिनि विषैं अन्त के सतरह निषेक छोडि प्रथमादि नव सै तेतीस निषेकनि विषैं निक्षेपण करिए है। इहां उत्कर्षण कीया निषेकनि के अर दीया प्रथम निषेकनि के बीचि अंतराल सोलह समय का भया सोई जघन्य अतिस्थापना जानना।

ओदरिय तदो बिदीयावलिपढमुक्कट्टणे वरं हेट्ठा।
अइत्थावणमाबाहा, समयजुदावलियपरिहीणा[1] ॥६७॥

उदीर्य ततो द्वितीयावलिप्रथमोत्कर्षणे वरमधस्तना।
अतिस्थापना आबाधा, समययुतावलिकपरिहीना ॥६७॥

टीका – तहां तैं उतरि तिस तैं पहलैं उदय आवने योग्य अैसा अन्य कोई सत्तारूप समयप्रबद्ध सम्बन्धी द्वितीयावली का प्रथम निषेक, जो वर्तमान समय तैं आवली काल भएं पीछैं उदय आवने योग्य है; ताका उत्कर्षण होतैं नीचैं एक समय अधिक आवली करि हीन आबाधाकाल प्रमाण उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है। समय अधिक आवली करि हीन जो आबाधा, ताकौं उल्लंघि उपरि के जे निषेक तिनि विषैं अंति के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि अन्य निषेकनि विषैं तिस द्रव्य कौं दीजिए है।

इहां पूर्वोक्त प्रकार अंक संदृष्टि आदि करि कथन जानि लेना।

अैसैं प्रसंग पाइ इहां उत्कर्षण अपेक्षा निक्षेप अतिस्थापन का विधान कह्या सो जहां उत्कर्षण करि वा अपकर्षण करि उपरि के वा नीचे के निषेकनि विषैं द्रव्य देना होइ तहां इस कथन के अनुसारि विधान जानना। जिस निषेक का द्रव्य ग्रह्या होइ तिस निषेक के द्रव्य कौं इहां निक्षेपरूप निषेक कहे, तिनि विषैं तौ दीजिए है अर अतिस्थापन रूप निषेक कहे, तिनि विषैं न दीजिए है। बहुरि बहुत निषेकनि का द्रव्य एकै काल ग्रहण करिए तो तहां भी जुदे जुदे निषेकनि के द्रव्य देने का वा न देने का विधान इहां कह्या कथन के अनुसारि जानना।

---

१. जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २५६।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां जो व्याख्यान कीया, तिस विषैं मंद बुद्धिनि के समझावने के अर्थि अंक संदृष्टि आदि कथन कीया है अर लब्धिसार की संस्कृत टीका विषैं न था तिस विषैं कहीं चूक होइ सो ज्ञानी जन संवारि शुद्ध करियो । या प्रकार प्रसंग पाइ कथन करि ।

अब गुणश्रेणी का विधान कहिए है–

उदयाणमावलिम्हि य, उभयाणं बाहरम्मि खिवणट्ठं ।
लोयाणमसंखेज्जो, कमसो उक्कट्ठणो हारो[1] ॥६८॥

उदीयमानानामावलौ, चोभयानां बाह्ये क्षेपणार्थम् ।
लोकानामसंख्येयः, क्रमश उत्कर्षणो हारः ॥६८॥

टीका – जिनि प्रकृतिनि का उदय पाइए है, तिन ही के द्रव्य का उदयावली विषैं निक्षेपण हो है । ताके अर्थि असंख्यात लोक का भागहार जानना । बहुरि जिनि प्रकृतिनि का उदय पाइए वा जिनि का उदय न पाइए तिनि दोऊनि के द्रव्य का उदयावली तैं बाह्य गुणश्रेणी विषैं वा उपरितन स्थिति विषैं निक्षेपण हो है । ताके अर्थि अपकर्षण भागहार जानना । क्रमशः इस वचन करि पल्य का असंख्यातवां भाग का भी भाग प्रकट कीजिए है । सो इस कथन कौं आगैं व्यक्त करि कहै हैं ।

ओक्कड्डिदइगिभागे, पल्लासंखेण भाजिदे तत्थ ।
बहुभागमिदं दव्वं, उव्वरिल्लठिदीसु णिक्खिवदि ॥६९॥

उत्कर्षितेकभागे, पल्यासंख्येन भाजिते तत्र ।
बहुभागमिदं द्रव्यमुपरितनस्थितिषु निक्षिपति ॥६९॥

टीका – अपकर्षण भागहार का भाग दीएं तहां एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं निक्षेपण करैं हैं; इहां ऐसा जानना । कर्म के सत्तारूप स्थिति के निषेक, तिनि विषैं वर्तमान समय तैं लगाइ आवली काल विषै उदय आवने योग्य निषेक, तिनि विषैं जो द्रव्य दीया, ताकौं उदयावली विषैं दीया कहिए । बहुरि ताके उपरि गुणश्रेणी आयाम प्रमाण जे निषेक, तिनि विषैं जो द्रव्य मिलाया, सो गुणश्रेणी विषैं दीया कहिए । बहुरि ताके

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २६५ । षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २२४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उपरि अंत के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि सर्व निषेकनि विषैं जो द्रव्य दीया, सो उपरितन स्थिति विषैं दीया द्रव्य कहिए ।

अब इहां मिथ्यात्व के उदाहरण करि विधान कहिए है – सर्व कर्म का सत्त्व रूप द्रव्य है, सो किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रमाण है, तामें आयु का द्रव्य घटावने कौं किंचित ऊन करि अवशेष कौं सात मूल प्रकृतिनि का विभाग के अर्थि सात का भाग दीएं मोहनीय का द्रव्य होइ । बहुरि ताकौं देशघाती सर्वघाती का भाग के अर्थि अनंत का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र सर्वघातिनि का द्रव्य हो है । बहुरि ताके सोलह कषाय एक मिथ्यात्व के विभाग करने कौं सतरह का भाग दीएं मिथ्यात्व का द्रव्य हो है; सो याकौं पूर्वं पीठबंध विषैं उक्त प्रमाण लीएं जो अपकर्षण नामा भागहार ताका भाग दीएं तहां एक भाग बिना अवशेष बहुभाग थे, ते तौ पूर्वं सत्ता विषैं जैसैं अपने निषेक रचनारूप तिष्ठे थे तैसैं ही रहे । बहुरि जो एक भाग रह्या, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं निक्षेपण करैं हैं ।

सेसगभागे भजिदे, असंखलोगेण तत्थ बहुभागं ।
गुणसेढीए सिंचदि, सेसेगं च उदयम्हि ॥७०॥

शेषकभागे भजितेऽसंख्यलोकेन तत्र बहुभागम् ।
गुणश्रेण्यां सिंचति, शेषैकं च उदये ॥७०॥

टीका – अवशेष एक भाग रह्या, ताकौं असंख्यात लोक का भाग देइ, तहां बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं देना । अर अवशेष एक भाग उदयावली विषैं देना ।

उदयावलिस्स दव्वं, आवलिभजिदे दु होदि मज्झधणं ।
रूऊणद्धाणद्धेणूणेण[1] णिसेयहारेण ॥७१॥

मज्झिमधणमवहरिदे, पचयं पचयं णिसेयहारेण ।
गुणिदे आदिणिसेयं, विसेसहीणं कमं तत्तो[2] ॥७२॥

---

१ घ प्रति में 'भाग' शब्द मिलता है ।
२ षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ सं. २२४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उदयावलेर्द्रव्यमावलिभजिते तु भवति मध्यधनम् ।
रूपोनाद्धवानार्धेनोनेन निषेकहारेण ।।७१।।

मध्यमधनमवहरिते, प्रचयं प्रचयं निषेकहारेण ।
गुणिते आदिनिषेकं, विशेषहीनं क्रमं ततः ।।७२।।

टीका – तहां उदयावली विषैं दीया जो द्रव्य, ताकौं आवली के समय प्रमाण का भाग दीएं मध्य धन आवै । बहुरि तिस मध्य धन कौं एक घाटि जो आवली प्रमाण गच्छ, ताका आधा कौं निषेकहार जो दो गुणहानि, तामैं घटाइ अवशेष का भाग दीएं चय का प्रमाण आवै है । बहुरि तिस चय कौं दो गुणहानि करि गुणैं आवली के प्रथम निषेक विषैं दीया द्रव्य का प्रमाण हो है; तातैं द्वितीयादि निषेकनि विषैं दीया द्रव्य क्रम तैं एक एक चय करि घटता प्रमाण लीएं जानना । तहां एक घाटि आवली मात्र चय घटैं अंत निषेकनि विषैं दीया द्रव्य का प्रमाण हो है । ऐसैं उदयावली के निषेकनि विषैं दीया द्रव्य का विभाग है ।

उक्कट्ठिदम्हि देदि हु, असंखसमयप्पबद्धमादिम्हि ।
संखातीतगुणक्कममसंखहीणं विसेसहीणकमं ।।७३।।

अपकर्षिते ददाति हि, असंख्यसमयप्रबद्धमादौ ।
संख्यातीतगुणक्रममसंख्यहीनं विशेषहीनक्रमम् ।।७३।।

टीका – गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य, ताकौं प्रथम समय की एक शलाका, यातैं दूसरे की असंख्यात गुणी, यातैं तीसरे की असंख्यात गुणी ऐसैं अंत समय पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं जे शलाका, तिनिका जोड देइ, ताकौं भाग दीएं जो प्रमाण आवै, ताकौं अपनी अपनी शलाका करि गुणैं गुणश्रेणी आयाम का प्रथम निषेक विषैं दीया द्रव्य असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है । जातैं इहां भाग हार पल्य के असंख्यातवां भाग ही का है । बहुरि तातैं द्वितीयादि निषेकनि विषैं द्रव्य क्रम तैं असंख्यात गुणा अन्त समय पर्यंत (क्रमतैं)[1] जानना । ऐसैं गुणश्रेणी आयाम के निषेकनि विषै दीया द्रव्य का विभाग है । बहुरि उपरितन स्थिति विषै दीया द्रव्य कौं **'दिवड्ढगुणहाणि भाजिदे पढमा'** इस सूत्र करि साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग

---

१ क्रम तैं शब्द छपी प्रति में मिलता है, हस्तलिखित प्रतिओं में नहीं मिलता ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दीएं, ताका प्रथम निषेक विषैं[1] दीया द्रव्य का प्रमाण हो है। सो गुणश्रेणी का अंत निषेक विषैं दीया द्रव्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण है। तातैं प्रथम गुणहानि का द्वितीयादि निषेकनि विषैं दीया द्रव्य चय घटता क्रम लीए है। उपरि गुणहानि गुणहानि प्रति निषेकनि का आधा आधा द्रव्य जानना। ऐसैं गुणश्रेणी करने का प्रथम समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य कौं तीन जायगा दीया, ताकी संदृष्टि आगें लिखेंगे तहां देखनी।

पडिसमयं उक्कट्टदि, असंखगुणियक्कमेण सिंचदि य।
इदि गुणसेढीकरणं, आउगवज्जाण कम्माणं[2] ॥७४॥

प्रतिसमयपकर्षति, असंख्यगुणितक्रमेण सिंचति च।
इति गुणश्रेणीकरणमायुष्कवर्ज्यानां कर्मणाम् ॥७४॥

टीका – गुणश्रेणी करने कौं द्वितीयादिक अंत पर्यंत समयनि विषैं समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य कौं अपकर्षण करै है। बहुरि **सिंचति** कहिए पूर्वोक्त प्रकार उदयावली आदि विषैं ताका निक्षेपण करै है। ऐसैं मिथ्यात्ववत् आयु बिना सात कर्मनि का गुणश्रेणी विधान समय समय प्रति हो है; सो जानना।

आगै गुण संक्रमण का स्वरूप कहिए है—

पडिसमयमसंखगुणं, दव्वं संकमदि अप्पसत्थाणं।
बंधुज्झियपयडीणं, बंधंतसजादिपयडीसु ॥७५॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणं, द्रव्यं संक्रामति अप्रशस्तानां।
बन्धोज्झितप्रकृतीनां, बध्यमानसजातिप्रकृतिषु ॥७५॥

टीका – गुण संक्रमण है सो अपूर्वकरण के पहले समय विषैं न हो है। अपने योग्य काल विषैं हो है। तथापि याका स्वरूप इहां कहिए है—

जिनका बंध न पाइए ऐसी जे अप्रशस्त प्रकृति, तिनिका द्रव्य है, सो समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीए जिनका बंध न पाइए ऐसी जे स्वजाति प्रकृति तिनि विषैं संक्रमण करै है। अपने स्वरूप कौं छोडि तद्रूप परिणमै है।

---

१ घ प्रति में 'द्वितीयादि निषेकनि' इतना अधिक है।
२ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २६४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एवंविह संकमणं, पढमकसायाण मिच्छमिस्साणं ।
संजोजणखवणाए, इदरेसिं उभयसेढिम्मि ॥७६॥

एवंविधं संक्रमणं प्रथमकषायाणां मिथ्यमिश्रयोः ।
संयोजनक्षपणयोरितरेषामुभयश्रेणौ ॥७६॥

टीका – असा असंख्यात गुणा क्रम लीएं जो संक्रमण, ताकौं गुण संक्रमण कहिए, सो अनंतानुबंधी कषायनि का तौ गुण संक्रमण ताका विसंयोजन विषैं हो है । अर मिथ्यात्व, मिश्र मोहनी का गुण संक्रमण, तिनका क्षपणा विषैं हो है । अर अन्य प्रकृति का गुण संक्रमण उपशमक वा क्षपक श्रेणीनि विषैं पाइए है । जैसें श्रेणी विषैं बंध रहित जो असाता, ताका द्रव्य है, सो बध्यमान जो स्वजातीय साता, तीहिं विषैं संक्रमण करै है, सो कहिए है ।

साता निरंतर बंधने का काल अंतर्मुहूर्त अर असाता का तीहिस्यों संख्यात गुणा, सो दोऊनि कौं मिलाय ताका भाग वेदनीय कर्म के द्रव्य कौं देइ अपने अपने काल करि गुणे सातावेदनीय का द्रव्य वेदनीय का द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र आवै है अर असाता का तातैं संख्यात गुणा आवै है, सो श्रेणी विषैं असें असाता का द्रव्य समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीएं साता रूप होइ परिणमै है । तहां गुण संक्रमण जानना । असें ही अन्य का यथासंभव जानना ।

आगैं स्थितिकांडक घात का स्वरूप कहैं है–

पढमं अवरवरट्ठिदिखंडं पल्लस्स संखभागं तु ।
सायरपुधत्तमेत्तं, इदि संखसहस्सखंडाणि[१] ॥७७॥

प्रथममवरवरस्थितिखंडं, पल्यस्य संख्येयभागं तु ।
सागरपृथक्त्वमात्रमिति संख्यसहस्रखंडानि ॥७७॥

टीका – अपूर्वकरण का पहिला समय विषैं कीया असा स्थिति खंड कहिए स्थितिकांडकायाम, सो जघन्य तौ पल्य का संख्यातवां भाग मात्र अर उत्कृष्ट पृथक्त्व सागर प्रमाण है । पृथक्त्व नाम सात वा आठ का जानना । एक कांडक करि एती

---

१ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २६० । षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ सं. २२४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थिति घटावै है। यद्यपि तहां सत्त्व स्थिति सामान्य तैं अंत कोडाकोडी है तथापि कोइ कैं तौ अंतःकोडाकोडी पल्य मात्र जघन्य स्थिति सत्त्व है कोई कैं अंतःकोडाकोडी सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति सत्व है, तातैं स्थिति के अनुसारि कांडक भी जघन्य उत्कृष्ट है, मध्य विषैं कांडक के भेद असंख्याते हैं। तिनि मैं संख्यात गुणे स्थिति के भेद हैं। तातैं संख्यात स्थिति भेदनि विषैं एक कांडक भेद पाइए है। अंक संदृष्टि करि कांडक भेद पांच, स्थिति भेद पंद्रह तहां त्रैराशिक कीएं एक कांडक भेद विषैं तीन स्थिति भेद पावै। असैं एक एक स्थिति कांडक का घात अंतर्मुहूर्त काल करि होइ सो असैं स्थिति खंड अपूर्वकरण के काल विषैं संख्यात हजार हो हैं जातैं अपूर्वकरण के काल के संख्यातवें भाग मात्र स्थिति कांडक का काल है।

आउगवज्जाणं ठिदिघादो पढमादु चरिमठिदिसत्तो।
ठिदिबंधो य अपुव्वो, होदि हु संखेज्जगुणहीणो[1] ॥७८॥

आयुष्कवर्ज्यानां, स्थितिघातः प्रथमाच्चरमस्थितिसत्त्वं।
स्थितिबंधश्चापूर्वो, भवति हि संख्येयगुणहीनः ॥७८॥

टीका – अपूर्वकरण के पहले समय जे स्थिति खंड अर स्थिति सत्व अर स्थिति बंध पाइए हैं तिनतैं ताके अंत समय विषैं ते संख्यात गुणे घाटि हैं। इहां संख्यात हजार स्थिति कांडक घाति करि स्थिति सत्व का अर स्थिति के अनुसारि अर स्थिति कांडक है तातैं स्थिति कांडक का असंख्यात हजार स्थिति बंधापसरण करि स्थिति का अनुसार स्थिति बंध का संख्यात गुणा घाटि होना जानना।

आगैं अनुभाग कांडक घात कौं कहिए है–

एक्केक्कट्ठिदिखंडयणिवडणठिदिबंधओसरणकाले।
संखेज्जसहस्साणि य, णिवडंतिरसस्स खंडाणि[2] ॥७९॥

एकैकस्थितिकांडकनिपतनस्थितिबन्धापसरणकाले।
संख्येयसहस्राणि च, निपतन्ति रसस्य खंडानि ॥७९॥

---

१ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २६१, २६८, २६६। षट्खण्डागम धवला पुस्तक पृष्ठ सं २२८, २२६।
२ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं. २६६, २६७। षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६, पृष्ठ सं. २२८।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – जाकरि एक बार स्थिति सत्व घटाइए ऐसा स्थितिकांडकोत्करण काल अर जाकरि एक बार स्थिति बंध घटाइये सो स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ समान अंतर्मुहूर्त मात्र हैं। बहुरि तिस एक विषैं जाकरि अनुभाग सत्व घटाइए ऐसा अनुभाग खंडोत्करण काल संख्यात हजार हो है, जातैं तिस काल तैं अनुभाग खंडोत्करण यहु काल संख्यातवें भाग मात्र है।

असुहाणं पयडीणं, अणंतभागा रसस्स खंडाणि।
सुहपयडीणं णियमा, णत्थि त्ति रसस्स खंडाणि[1] ॥८०॥

अशुभानां प्रकृतीनामनन्तभागा रसस्य खण्डानि।
शुभप्रतीनां नियमान्नास्तीति रसस्य खण्डानि ॥८०॥

टीका – अप्रशस्त जे असातादि प्रकृति, तिनका अनुभाग कांडकायाम अनंत बहुभाग मात्र है। अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जो पाइए अनुभाग सत्व, ताकौं अनंत का भाग दीएं तहां एक कांडक करि बहुभाग घटावै, एक भाग अवशेष राखै है। यहु प्रथम खंड भया याकौं अनंत का भाग दीएं दूसरे कांडक करि बहुभाग घटाइ एक भाग अवशेष राखै है। ऐसैं एक एक अंतर्मुहूर्त करि एक एक अनुभाग कांडक घात हो है, तहां एक अनुभाग कांडकोत्करण काल विषैं समय समय प्रति एक एक फालि का घटावना हो है। बहुरि साता वेदनीय आदि प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग कांडक घात नियम तैं नाहीं है।

रसगदपदेसगुणहाणिट्ठाणगफड्ढयाणि थोवाणि।
अइत्थावणणिक्खेवे, रसखंडेणंतगुणियकमा[2] ॥८१॥

रसगतप्रदेशगुणहानिस्थानकस्पर्धकानि स्तोकानि।
अतिस्थापननिक्षेपे, रसखण्डेऽनन्तगुणितक्रमाणि ॥८१॥

टीका – अनुभाग कौं प्राप्त ऐसे कर्म परमाणु संबंधी एक गुणहानि विषैं स्पर्धकनि का प्रमाण सो स्तोक है। तातैं अनंत गुणे अतिस्थापना रूप स्पर्धक हैं। तातैं अनंत गुणे निक्षेप स्पर्धक हैं। तातैं अनंत गुणे अनुभाग कांडकायाम हैं। इहां ऐसा जानना –

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २६६, २६७, षट्खंडागम : पुस्तक ६, पृष्ठ २२८।
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सं. २६१।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कर्मनि के अनुभाग विषैं स्पर्धक रचना है, तहां प्रथमादि स्पर्धक स्तोक अनुभाग युक्त हैं। उपरि के स्पर्धक बहुत अनुभाग युक्त हैं। तहां तिनि सर्व स्पर्धकनि कौं अनंत का भाग दीएं बहुभाग मात्र जे उपरि के स्पर्धक तिनके परमाणूनि कौं एक भाग मात्र जे नीचले स्पर्धक, तिनि विषैं केते इक उपरि के छोडि अवशेष नीचले स्पर्धकनिरूप परणमावैं हैं। तहां केते इक परमाणु पहले समय परिणमावैं है, केते एक दूसरे समय परिणमावैं है, असैं अंतर्मुहूर्त काल करि सर्व परमाणू परिणमाइ, तिनि ऊपरि के स्पर्धकनिका अभाव करै है। इहां समय समय प्रति जो द्रव्य ग्रह्या, ताका तौ नाम फालि है असैं अंतर्मुहूर्त करि जो कार्य कीया, ताका नाम कांडक है। तिस कांडक करि जिनि स्पर्धकनि का अभाव कीया सो कांडकायाम है। बहुरि तिनिका द्रव्य कौं जे कांडकघात कीएं पीछैं अवशेष स्पर्धक रहैं, तिनि विषैं तिन प्रथमादि स्पर्धकनि विषैं मिलाया ते तौ निक्षेप रूप हैं अर जिनि उपरि के स्पर्धकनि विषैं न मिलाया ते अतिस्थापन रूप हैं।

पढमापुव्वरसादो, चरिमे समये पसत्थइदराणं।
रससत्तमणंतगुणं, अणंतगुणहीणयं होदि ॥८२॥

प्रथमापूर्वरसात्, चरमे समये प्रशस्तेतरेषाम्।
रससत्वमनन्तगुणमनन्तगुणहीनकं भवति ॥ ८२ ॥

टीका – अपूर्वकरण के प्रथम समय सम्बन्धी प्रशस्त-अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग सत्व जो है, तातैं ताके अंत समय विषैं प्रशस्तनि का अनंत गुणा बधता अर अप्रशस्तनि का अनंत गुणा घटता अनुक्रम तैं अनुभाग सत्त्व हो है। इहां समय-समय प्रति अनंत गुणी विशुद्धता होने तैं प्रशस्त प्रकृतिनि का अनंत गुणा अर अनुभाग कांडक घात का महात्म्य करि अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनंतवें भाग अनुभाग अंत समय विषैं संभवै है।

आगैं अनिवृत्तिकरण के कार्य कहै हैं –

बिदियं व तदियकरणं, पडिसमयं एक्क एक्क परिणामो।
अण्णं ठिदिरसखंडे, अण्णं ठिदिबंधमाणुवई [1] ॥८३॥

---

१ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २७१। षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २२९।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्वितीयमिव तृतीयकरणं, प्रतिसमयमेक एकः परिणामः ।
अन्ये स्थितिरसखंडे, अन्यत् स्थितिबंधमाप्नोति ।। ८३ ।।

टीका – दूसरा अपूर्वकरण विषैं कहे स्थिति खंडादि कार्य विशेष, ते तिस अनिवृत्तिकरण विषैं भी जानने । विशेष इतना – इहां समान समयवर्ती नाना जीव के एकसा परिणाम है तातैं नाहीं है निवृत्ति कहिए परस्पर परिणामनि विषैं भेद जिनकैं, ते अनिवृत्तिकरण हैं, तातैं समय-समय प्रति एक-एक परिणाम ही है । बहुरि इहां और ही प्रमाण लीएं स्थिति खंड, अनुभाग खंड स्थितिबंध का प्रारम्भ हो है, जातैं अपूर्वकरण सम्बन्धी जे स्थिति खंडादिक तिनका ताके अन्त समय विषैं ही समाप्तपना भया ।

संखेज्जदिमे सेसे, दंसणमोहस्स अंतरं कुणई ।
अण्णं ठिदिरसखंडं, अण्णं ठिदिबंधणं तत्थ[1] ।।८४।।

संख्येये शेषे दर्शनमोहस्यांतरं करोति ।
अन्यत् स्थितिरसखंडमन्यत् स्थितिबंधनं तत्र ।।८४ ।।

टीका – ऐसैं स्थिति खंडादि करि अनिवृत्तिकरण काल का संख्यात भागनि विषैं बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं दर्शन मोह का अन्तर करै है । विवक्षित केई निषेकनि का सर्व द्रव्य कौं अन्य निषेकनि विषैं निक्षेपण करि तिनि निषेकनि का जो अभाव करना, सो अन्तरकरण कहिए । तहां ताके काल का प्रथम समय विषैं और ही स्थिति खंड, अनुभाग बंध, स्थिति बंध का प्रारम्भ हो है ।

एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरस्स णिप्पत्ती ।
अंतोमुहुत्तमेत्तो, अंतरकरणस्स अद्धाणं[2] ।।८५।।

एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतरस्य निष्पत्तिः ।
अंतर्मुहूर्तमात्रमंतरकरणस्याध्वा ।। ८५ ।।

टीका – एक स्थिति खंडोत्करण काल विषैं अन्तर की निष्पत्ति हो है । एक स्थिति कांडकोत्करण का जितना काल, तितने काल करि अन्तर करिए है याकौं अंतरकरण काल कहिए है, सो यहु अंतर्मुहूर्त मात्र है ।

---

१ जयधवला भाग—१२, पृष्ठ २७२ । षट्खण्डागम : धवला पुस्तक—६, पृष्ठ २६० ।
२ जयधवला भाग—१२, पृष्ठ २७३ । षट्खण्डागम : धवला पुस्तक—६, पृष्ठ २३२ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणसेढीए सीसं, तत्तो संखगुणं उवरिमठिदिं च ।
हेट्ठुवरिम्हि य आबाहुज्झिय बंधम्हि संथुहदि [१] ॥ ८६ ॥

गुणश्रेण्याः शीर्षं, ततः संख्यगुणं उपरितनस्थितिं च ।
अधस्तनोपरि चाबाधोज्झित्वा बंधे संपातयति ॥ ८६ ॥

टीका – गुणश्रेणी आयाम विषैं अपूर्व, अनिवृत्ति करण तैं जो अधिक प्रमाण अनिवृत्ति करण का संख्यातवां भाग मात्र कह्या था, ताका नाम इहां गुणश्रेणी शीर्ष है । सो गुणश्रेणी शीर्ष के सर्व निषेक अर यातैं संख्यात गुणा गुणश्रेणी शीर्ष के उपरिवर्ती असे उपरितन स्थिति के सर्व निषेक इनि दोऊनि कौं मिलाएं अंतरायाम हो है । एते निषेकनि का अभाव करिए है सो भी अंतर्मुहूर्त मात्र है । इहां शीर्ष के नीचैं अनिवृत्तिकरण का अवशेष काल मात्र गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम अनिवृत्ति करण काल के संख्यातवें भाग प्रमाण है सो भी शीर्ष तैं संख्यात गुणा जानना । तहां अंतरायाम विषैं तिष्ठते जे निषेक, तिनिके द्रव्य के समय-समय अनंत गुणा क्रम लीएं जे फालि, तिनिकौं ग्रहण करि तिस समय बंधता जो मिथ्यात्व कर्म, ताकी स्थिति का आबाधा काल छोडि अंतरायाम समान निषेकनि के नीचै वा ऊपरि जे निषेक तिनि विषैं निक्षेपण करै है । अंतरायाम समान काल संबन्धी जे निषेक, तिन विषैं नाहीं निक्षेपण करै है । तहां **अनादि मिथ्यादृष्टि जीव तौ मिथ्यात्व ही का अर सादि मिथ्यादृष्टी तीनों दर्शन मोह का अन्तर करै है ।** बहुरि अंतरकरण करने के काल का प्रथम समय तैं लगाय जो अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवां भाग मात्र काल अवशेष रह्या ताकौं संख्यात का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र तौ अंतरकरण काल है अर ताके उपरि अवशेष बहुभाग मात्र प्रथम स्थिति का काल है । बहुरि ताके उपरि जिनि निषेकनि का अभाव कीया सो अंतर्मुहूर्त मात्र अंतरायाम है ।

अंतरकदपढमादो, पडिसमयमसंखगुणिदमुवसमदि ।
गुणसंकमेण दंसणमोहणियं जाव पढमठिदी [२] ॥ ८७ ॥

अन्तरकृतप्रथमतः, प्रतिसमयमसंख्यगुणितमुपशाम्यति ।
गुणसंक्रमेण दर्शनमोहनीयं यावत् प्रथमस्थितिः ॥ ८७ ॥

---

१ षट्खण्डागमः धवला पुस्तक–६, पृ. २३२, जयधवला भाग–१२ पृ. २७४ ।
२ जयधवला भाग–१२, पृ. २७६, षट्खण्डागमः धवला पुस्तक–६ पृ. २३२, २३३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – ऐसें एक स्थिति कांडकोत्करण काल समान काल करि कीया है अंतर जातैं ऐसा अन्तर कृत भया तिस काल के अनंतरवर्ती जो समय सो प्रथम स्थिति का प्रथम समय है, तातैं लगाय ताही का अंत समय पर्यन्त समय-समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं जे अंतरायाम के उपरिवर्ती निषेक, तिनरूप जो द्वितीय स्थिति तींहि विषैं तिष्ठता जो दर्शन मोह, ताके द्रव्य कौं पीठ विषैं उक्त प्रमाण लिए जो गुण संक्रमण भागहार, ताका भाग दीएं जो प्रमाण आया, तितने द्रव्य का समूह रूप जे फालि, तिनकौं उपशमावै है । उदय आदि होने कौं अयोग्य करना, सो उपशम करना जानना । यद्यपि अध:करण ही तैं यहु जीव दर्शन मोह का उपशमक ही है तथापि तिस दर्शन मोह के प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशनि का निरवशेषपनैं इहां उपशमक कहिए है ।

पढमट्ठिदियावलिपडिआवलिसेसेसुण त्थि आगाला ।
पडिआगाला मिच्छत्तस्य य, गुणसेढिकरणं पि ।। ८८ ।।

प्रथमस्थितावावलिप्रत्यावलिशेषेषु नास्ति आगालाः ।
प्रत्यागाला मिथ्यात्वस्य च, गुणश्रेणिकरणमपि ।।८८।।

टीका – प्रथम स्थिति विषैं आवली, प्रत्यावली कहिए उदयावली अर द्वितीयावली एक समय अधिक अवशेष रहै, तहां आगाल, प्रत्यागाल अर मिथ्यात्व की गुणश्रेणी न हो है । दर्शन मोह बिना और कर्मनि की गुणश्रेणी होय ही है ।

तहां मिथ्यात्व की उदयावली विषैं निक्षेपण करने रूप केवल उदीरणा ही पाइए है, सो कहिए है ।

समय अधिक द्वितीयावली के निषेकनि के द्रव्य कौं असंख्यात लोक का भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितने द्रव्य कौं उदयावली के निषेकनि विषैं अंत के समय घाटि आवली के दोय तीसरा भाग मात्र निषेक अतिस्थापन करि नीचे के एक समय अधिक आवली के त्रिभाग मात्र निषेकनि विषैं निक्षेपण करै है । ऐसैं समय समय प्रति उदीरणा पाइए है ।

द्वितीय स्थिति के निषेकनि के द्रव्य कौं अपकर्षण करि प्रथम स्थिति के निषेकनि विषैं प्राप्त करना ताका नाम आगाल है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अर प्रथम स्थिति के निषेकनि के द्रव्य कौं उत्कर्षण करि द्वितीय स्थिति के निषेकनि विषैं प्राप्त करना ताका नाम प्रत्यागाल है ।

बहुरि तिस प्रथम स्थिति विषैं एक प्रत्यावली ही अवशेष रहैं उदीरणा भी न हो है । तिस प्रत्यावली के निषेकनि का समय समय प्रति अधोगलन ही है । एक एक समय व्यतीत होतैं एक एक समय निर्जरै है । बहुरि उपशम विधान प्रथम स्थिति का अंत पर्यंत है । तहां दर्शन मोह के द्रव्य कौं गुणसंक्रमण भागहार का भाग दीएं प्रथम स्थिति का प्रथम समय विषैं उपशम करने योग्य जो प्रथम फालि, ताका द्रव्य हो है; तातैं असंख्यात गुणा द्वितीय समय सम्बन्धी द्वितीय फालि का द्रव्य हो है । ऐसैं क्रम तैं एक घाटि प्रथम स्थिति का समय प्रमाण बार असंख्यात का गुणकार भए अंत फालि का द्रव्य हो है ।

अंतरपढमं पत्ते, उपसमणामो हु तत्थ मिच्छत्तं ।
ठिदिरसखंडेण विणा, उवइट्ठादूण कुणदि तिधा[1] ॥८९॥

अंतरप्रथमं प्राप्ते, उपशमनाम हि तत्र मिथ्यात्वम् ।
स्थितिरसखंडेन विना, उपस्थापयित्वा करोति त्रिधा ॥८९॥

टीका – ऐसैं अनिवृत्तिकरण काल समाप्त भएं, ताके अनंतरि अंतरायाम का प्रथम समय कौं प्राप्त होतैं दर्शन मोह अर अनंतानुबन्धी चतुष्क, इनिके प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभागनि का समस्तपनैं उदय होने अयोग्य रूप उपशम होने तैं औपशमिक तत्त्वार्थ श्रद्धानरूप सम्यग्दर्शन कौं पाइ जीव औपशमिक सम्यग्दृष्टी हो है । तहां प्रथम समय विषैं द्वितीय स्थिति विषैं तिष्ठता मिथ्यात्व रूप द्रव्य कौं स्थिति कांडक अनुभाग कांडक का घात बिना गुण संक्रमण का भाग देइ तीन प्रकार परिणमावै है ।

मिच्छत्तमिस्ससम्मसरूवेणय तत्तिधा य दव्वादो ।
सत्तीदो य असंखाणंतेण य होंति भजियकमा[2] ॥९०॥

मिथ्यात्वमिश्रसम्यस्वरूपेण च तत्त्रिधा च द्रव्यतः ।
शक्तितश्च असंख्यानंतेन च भवंति भजितक्रमाः ॥९०॥

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८०, २८१, षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २३४.
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८२, षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २३५.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – मिथ्यात्व, मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी रूप करि तीन प्रकार हो है, सो क्रम तैं द्रव्य अपेक्षा असंख्यातवां भाग मात्र अनुभाग अपेक्षा अनंतवां भाग मात्र जानने। सोई कहिए है – मिथ्यात्व का परमाणु रूप जो द्रव्य, ताकौं गुण संक्रमण भागहार का भाग देइ एक अधिक असंख्यात करि गुणिए। इतना द्रव्य बिना समस्त द्रव्य मिथ्यात्वरूप ही रह्या। अर गुणसंक्रम भागहार करि भाजित मिथ्यात्व द्रव्य कौं असंख्यात करि गुणिए इतना द्रव्य मिश्रमोह रूप परिणम्या। अर गुण संक्रम भागहार करि भाजित मिथ्यात्व द्रव्य कौं एक करि गुणिए इतना द्रव्य सम्यक्त्व मोह रूप परिणम्या; तातैं द्रव्य अपेक्षा असंख्यातवां भाग का क्रम आया। बहुरि अनुभाग अपेक्षा संख्यात अनुभाग कांडकनि के घात करि जो मिथ्यात्व का अनुभाग पूर्व अनुभाग के अनंतवां भाग मात्र अवशेष रह्या, ताके अनंतवें भाग मिश्रमोह का अनुभाग है। बहुरि याके अनंतवें भाग सम्यक्त्व मोह का अनुभाग है ऐसैं अनुभाग अपेक्षा अनंतवां भाग का क्रम आया।

पढमादो गुणसंकमचरिमो त्ति य सम्ममिस्ससम्मिस्से।
अहिगदिणाऽसंखगुणो, विज्झादो संकमो तत्तो[1] ॥६१॥

प्रथमात् गुणसंक्रमचरम, इति च सम्यग्मिश्रसंमिश्रे।
अहिगतिनासंख्यगुणो, विध्यातः संक्रमः ततः ॥६१॥

टीका – अनिवृत्तिकरण के अनंतरि गुणसंक्रमण काल का प्रथम समय तैं लगाय अंत समय पर्यंत समय समय सर्प की चालवत् असंख्यात गुण संक्रमण लीएं मिथ्यात्व का द्रव्य है, सो सम्यक्त्व मिश्र प्रकृति रूप परिणमै है सोई कहिए है–

पहिले समय सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य स्तोक है। तातैं असंख्यात गुणा मिश्र प्रकृति का द्रव्य है। तातैं असंख्यात गुणा दूसरे समय सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य है। तातैं असंख्यात गुणा मिश्र का द्रव्य है। तातैं असंख्यात गुणा तीसरे समय सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य है। तातैं असंख्यात गुणा मिश्र का द्रव्य है। ऐसैं सर्प की चालवत् सम्यक्त्व मोहनी तैं मिश्र मोहनी रूप, मिश्रमोहनी तैं सम्यक्त्व मोहनीरूप परिणया द्रव्य असंख्यात गुणा क्रम तैं अन्त समय पर्यंत जानना। तहां अन्त समय विषैं गुण संक्रम काल संख्यात आवली मात्र है। तातैं दोय घटाइ ताकौं दूणा करि तामैं दोय मिला-

1 जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८४। षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २३६.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इए इतनी बार सम्यक्त्व मोहनी कैं असंख्यात का गुणकार हो है। संख्यात आवली मैं एक घटाइ ताकौं दूणा करि तामें एक मिलाइए इतनी बार मिश्रमोहनी कैं असंख्यात का गुणकार हो है। बहुरि गुणसंक्रम काल का अन्त समय पर्यंत मिथ्यात्व बिना अन्य कर्मनि की गुणश्रेणी, स्थिति कांडक घात, अनुभाग कांडक घात पाइए है। ताके अनंतरि तिस गुण संक्रम भए पीछैं अवशेष रह्या मिथ्यात्व द्रव्य, ताकौं विध्यात संक्रम नामा भागहार का भाग दीएं जो प्रमाण आवैं, तितने द्रव्य कौं सम्यक्त्व मोहनी, मिश्रमोहनीरूप परिणमावै है। विध्यात शब्द का अर्थ मंद है सो इहां विशुद्धता मन्द भई है; तातैं सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग प्रमाण जो विध्यात संक्रम, ताका भाग दीएं स्तोक द्रव्य आया, तिस ही कौं तिनि रूप परिणमावै है।

बिदियकरणादिमादो, गुणसंकमपूरणस्सकालो त्ति।
वोच्छं रसखंडुक्कीरणकालादीणमप्प बहु[1] ॥६२॥

द्वितीयकरणादिमात्, गुणसंक्रमपूरणस्य काल इति।
वक्ष्ये रसखंडोत्करणकालदीनामल्पं बहु ॥६२॥

टीका – अपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय गुण संक्रमण काल का पूर्णपना पर्यंत संभवते अनुभाग कांडकोत्करण कालादिक, तिनिका अल्प बहुत्व कहस्यों।

अंतिमरसखंडुक्कीरणकालादो दु पढमओ अहिओ।
तत्तो संखेज्जगुणो, चरिमट्ठिदिखंडहदिकालो[2] ॥६३॥

अंतिमरसखंडोत्करणकालतस्तु प्रथमो अधिकः।
ततः संख्यातगुणः, चरमस्थितिखंडहतिकालः ॥६३॥

टीका – दर्शन मोह का तौ प्रथम स्थिति का अंत विषैं संभवता अन्य कर्मनि का गुणसंक्रम काल का अन्त समय विषै संभवता ऐसा जो अनुभाग कांडक, ताके घात करने का जो अंतर्मुहूर्त मात्र काल, सो अन्त का अनुभाग खंडोत्करण काल है सो आगै जे कहिए है तिनि तैं स्तोक है। यातैं याही का संख्यातवां भाग मात्र विशेष

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८५, २८६; षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २३६.
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८६, २८७।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि अधिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जाका आरंभ भया असा अनुभाग कांडकोत्करण का काल है। यातैं संख्यात गुणा अन्त का स्थितिकांडकोत्करण काल अर स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान हैं।

तत्तो पढमो अहिओ, पूरणगुणसेढिसीसपढमठिदी।
संखेण य गुणियकमा, उवसमगद्धा विसेसहिया[1] ॥६४॥

ततः प्रथमः अधिकः, पूरणगुणश्रेणीशीर्षप्रथमस्थितिः।
संख्येन च गुणितक्रमा, उपशमकाद्धा विशेषाधिकाः ॥६४॥

टीका – तातैं ताही का संख्यातवां भाग मात्र विशेष करि अधिक अन्तर करण काल अर तहां अन्तर करण करतैं ही संभवता स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान हैं। तातैं ताही का संख्यातवां भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण के पहिले समय जिनिका प्रारंभ भया असे स्थिति कांडकोत्करण काल अर स्थिति बंधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान हैं। तातैं संख्यात गुणा गुण संक्रम पूरण करने का काल है। तातैं संख्यात गुणा गुणश्रेणी शीर्ष है। तातैं संख्यात गुणा प्रथम स्थिति का आयाम है। तातैं समय घाटि दोय आवली मात्र विशेष करि अधिक दर्शन मोह के उपशमावने का काल है।

अणियट्टीसंखगुणो, णियट्टिगुणसेढियायदं सिद्धं।
उवसंतद्धा अंतर, अवरवरावाह संखगुणियकमा[2] ॥६५॥

अनिवृत्तिसंख्यगुणं, निवृत्तिगुणश्रेण्यायतं सिद्धम्।
उपशांताद्धा अंतरमवरवराबाधा संख्यगुणितक्रमा ॥६५॥

टीका – तातैं संख्यात गुणा अनिवृत्ति करण का काल है। तातैं संख्यात गुणा अपूर्व करण का काल है। तातैं अनिवृत्ति करण का काल अर याका संख्यातवां भाग मात्र विशेष करि अधिक गुणश्रेणी आयाम है। तातैं संख्यात गुणा औपशमिक सम्यक्त्व का काल है। तातैं संख्यात गुणा अंतरायाम है। तातैं संख्यात गुणा जघन्य आबाधा है, सो मिथ्यात्व की तौ (पृथक्त्व का

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८७–२६०.
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २६० से २६३.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

काल है सो)[१] प्रथम स्थिति का अंत समय विषैं अर अन्य कर्मनि की गुण संक्रमण काल का अंत समय विषैं जो स्थिति बंधै ताको आबाधा जाननी। तातैं संख्यात-गुणी उत्कृष्ट आबाधा है, सो अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता जो स्थिति-बंध, ताकी आबाधा ग्रहण करनी।

पढमापुव्वजहण्णट्ठिदिखंडमसंखसंगुणं तस्स।
अवरवरट्ठिदिबंधा, तट्ठिदिसत्ता य संखगुणियकमा[२] ॥९६॥

प्रथमापूर्वजघन्यस्थितिखंडमसंख्यसंगुणं तस्य।
अवरवरस्थितिबंधस्तत्स्थितिसत्वं च संख्यगुणितक्रमं ॥९६॥

टीका – तातैं असंख्यात गुणा[३] जघन्य स्थिति कांडकायाम है, सो प्रथम स्थिति विषैं एक स्थिति कांडकोत्करण काल अवशेष रहैं जो अंत का स्थिति खंड पल्य का असंख्यातवां भाग प्रमाण प्रारंभ कीया सो ग्रहणा। तातैं संख्यात गुणा अपूर्व करण का प्रथम समय विषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति कांडकायाम पृथक्त्व सागर प्रमाण है। तातैं संख्यात गुणा (अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं)[४] प्रथम स्थिति का अंत समय विषैं संभवता मिथ्यात्व का जघन्य स्थिति बंध है। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति बंध है। तातैं संख्यात गुणा प्रथम स्थिति का अंत समय विषैं संभवता मिथ्यात्व का जघन्य स्थिति सत्त्व है। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है। इहां जघन्य स्थिति बंधादि च्यारि पदनि का प्रमाण सामान्य पनैं अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण है। ऐसैं पचीस जायगा अल्प बहुत्व कह्या।

अंतो कोडाकोडी, जाहे संखेज्जसायरसहस्से।
णूणा कम्माण ठिदी, ताहे उवशमगुणं गहइ ॥९७॥

अंतः कोटीकोटिर्यदा संख्येयसागरसहस्रेण।
न्यूना कर्मणां स्थितिः तदा उपशमगुणं गृह्णाति ॥९७॥

---

१ (पृथक्त्व का काल है सो) यह अंश सिर्फ प्राप्त छपी प्रति में मिलता है।
२ "वरमवरट्ठिदिसत्ता एदे य संखगुणियकमा।" ऐसा पाठभेद मिलता है।
 जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २९३ से २९६
३ अ, ख, च, घ–हस्तलिखित प्रतियों में 'संख्यात गुणा' मिलता है।
४ इतना अंश प्राप्त छपी प्रति में मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – जिस अन्तरायाम का प्रथम समय विषैं संख्यात हजार सागर करि हीन अंतः कोडाकोडी मात्र स्थिति सत्त्व होइ तिस समय विषैं उपशम सम्यक्त्व गुण कौं ग्रहण करै है ।

तट्ठाणे ठिदिसत्तो, आदिमसम्मेण देससयलजमं ।
पडिवज्जमाणगस्स वि, संखेज्जगुणेण हीणकमो[1] ॥६८॥

तत्स्थाने स्थितिसत्त्वं, आदिमसम्येन देशसकलयमं ।
प्रतिपद्यमानस्याऽपि, संख्येयगुणेन हीनक्रमं ॥६८॥

टीका – तिस ही अन्तरायाम का प्रथम समय रूप स्थान विषैं जो देशसंयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं ग्रहै तौ ताकैं स्थिति सत्त्व पूर्वोक्त तैं संख्यात गुणा घाटि हो है अर जो सकल संयम सहित प्रथम सम्यक्त्व कौं ग्रहै प्राप्त होइ ताकैं स्थिति सत्त्व तिसतैं भी संख्यात गुणा घाटि हो है । जातैं अनंत गुणी विशुद्धता के विशेषतैं स्थितिखंडायाम संख्यात गुणा हो है । तिनि करि घटाई हुई अवशेष स्थिति संख्यातवें भाग संभवै है ।

उवसामगो य सव्वो, णिव्वाघादो तहा णिरासाणो ।
उवसंते भजियव्वो, णिरासणो चेव खीणम्हि[2] ॥६६॥

उपशामकश्च सर्वः, निर्व्याघातस्तथा निरासानः ।
उपशांते भजितव्यो निरासनश्चैव क्षीणे ॥ ६६ ॥

टीका – सर्व ही दर्शनमोह का उपशम करनेवाला जीव निर्व्याघात कहिए विच्छेद वा मरण करि रहित है अर निरासादक कहिए सासादन कौं प्राप्त न हो है । बहुरि उपशम भए पीछें उपशम सम्यक्त्वी होइ तब भजनीय है – कोई जीव सासादन कौं प्राप्त न हो है; कोई जीव सासादन हो है । बहुरि क्षीण कहिए उपशम सम्यक्त्व का काल समाप्त भएं पीछैं सासादन न होइ । तहां नियम तैं दर्शनमोह की तीनि प्रकृतिनि विषैं एक का उदय होय ।

उवसमसम्मत्तद्धा, छावलिमेत्ता दु समयमेत्तो त्ति ।
अवसिद्धे आसाणो, अणअण्णदरुदयदो होदि[3] ॥१०० ॥

---

१ षट्खंडागम धवला पुस्तक–६. पृष्ठ २६८.

२ कसाय पहुड गाथा १०० । जयधवला भाग–१२ पृष्ठ ३०६

३ जयधवला भाग–१२, पृ. ३०३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उपशमसम्यक्त्वाद्धा, षडावलिमात्रस्तु समयमात्र इति ।
अवसिद्धे आसादनः, अनान्यतमोदयतो भवति ।।१००।।

टीका – उपशम सम्यक्त्व का काल विषैं उत्कृष्ट छह आवली, जघन्य एक समय अवशेष रहैं, अनंतानुबंधी क्रोधादि विषैं एक कोई उदय होने तैं सम्यक्त्व कौं विराधि मिथ्यात्व कौं प्राप्त न होइ बीचि में सासादन हो है ।

सायारे वट्ठवगो, णिट्ठवगो मज्झिमो य भजणिज्जो ।
जोगे अण्णदरम्हि दु, जहण्णए तेउलेस्साए[1] ।। १०१ ।।

साकारे प्रस्थापको, निष्ठापकः मध्यमश्च भजनीयः ।
योगे अन्यतरस्मिन् तु, जघन्यके तेजोलेश्यायाः ।।१०१।।

टीका – साकार जो ज्ञानोपयोग, ताकौं होतैं ही जीव कैं प्रथमोपशम सम्यक्त्व का प्रारम्भ हो है । अर ताका निष्ठापक कहिए सम्पूरण करने वाला अर मध्य अवस्थावर्ती जीव भजनीय है । साकार अथवा अनाकार उपयोग युक्त होइ ।

भावार्थ यहु – दर्शनोपयोगी होइ कै ज्ञानोपयोगी होइ, बहुरि तीन योगनि विषैं कोई एक योग विषैं वर्तमान प्रथम सम्यक्त्व का प्रारंभक हो है । बहुरि तिर्यंच मनुष्य है, सो मंद विशुद्धता युक्त है । तौ भी तेजो लेश्या का जघन्य अंश ही विषैं वर्तमान जीव प्रथम सम्यक्त्व का प्रारम्भक हो है । अशुभ लेश्या विषैं न हो है । बहुरि यद्यपि नरक विषैं नियम तैं अशुभ लेश्या है, तथापि तहां जो लेश्या पाइए है, तिस लेश्या का मंद उदय होतैं प्रथम सम्यक्त्व का प्रारंभक हो है । बहुरि देव कैं नियम तैं शुभ लेश्या है, तहां वर्तमान जीव, ताका प्रारंभक हो है ।

अंतोमुहुत्तमद्धं, सव्वोवसमेण होदि उवसंतो ।
तेण परं उदओ खलु, तिण्णेकदरस्स कम्मस्स[2] ।। १०२।।

अंतर्मुहूर्तमद्धा, सर्वोपशमेन भवति उपशांतः ।
तेन परं उदयः, खलु त्रिष्वेकतरस्य कर्मणः ।।१०२।।

टीका – अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत सर्व दर्शनमोह का उपशम करि उपशम सम्यग्दृष्टी हो है । तातैं पीछैं तीन दर्शनमोह की प्रकृतिनि विषैं एक कोई का उदय नियम तैं होइ (उपशम सम्यक्त्व के उपरि ताका उदय है[3]) ।

---

१ जयधवला भाग–१२ पृ. ३०६; कषाय पाहुड ८९.
२ जयधवला भाग–१२, पृ. ३१४; कषाय पाहुड गाथा–१०३.
३ इतना अंश छपी प्रति में ही मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उवसमसम्मत्तुवरिं, दंसणमोहं तुरंत पूरेदि ।
उदयिल्लस्सुदयादो, सेसाणं उदयबाहिरदो ॥१०३॥

उपशमसम्यक्त्वोपरि, दर्शनमोहं त्वरितं पूरयति ।
उदीयमानस्योदयतः, शेषाणामुदयबाह्यतः ॥१०३॥

टीका – उपशम सम्यक्त्व के उपरि, ताका अन्त समय के अनंतरि दर्शनमोह की अन्तरायाम के ऊपरिवर्ती जो द्वितीय स्थिति ताके निषेकनि का द्रव्य कौं अपकर्षण करि अन्तर कौं पूरै है ।

भावार्थ – उपशम सम्यक्त्व का काल तैं संख्यात गुणा जो (अन्तरायाम के ऊपरिवर्ती जो द्वितीय)[१] अन्तरायाम तीहिं विषैं उपशम सम्यक्त्व का काल प्रमाण निषेक रूप तौ अभाव रूप रहे, ते उपशम सम्यक्त्व काल विषैं व्यतीत भए । बहुरि अवशेष अन्तरायाम के निषेक रहे, ते अभावरूप थे, तिनि विषैं द्वितीय स्थिति का द्रव्य निक्षेपण करि बहुरि तिनिका सद्भाव करै हैं । तहां जिस प्रकृति का उदयावली के प्रथम निषेक तैं लगाय अर उदय हीन प्रकृतिनि का उदयावली तैं बाह्य निषेक तैं लगाय तिस अपकर्षण कीया द्रव्य कौं अन्तरायाम विषैं वा द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै है ।

उक्कट्ठिदइगिभागं, समपट्टीए विसेसहीणकमं ।
सेसासंखाभागे, विसेसहीणेण खिवदि सव्वत्थ ॥१०४॥

अपकर्षितैकभागं, समपट्टया विशेषहीनक्रमम् ।
शेषासंख्यभागे, विशेषहीनेन क्षिपति सर्वत्र ॥१०४॥

टीका – तहां उदयवान् सम्यक्त्व मोहनी होइ तौ ताका द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां बहुभाग तौ जैसैं थे, तैसैं रहे । बहुरि एक भाग कौं असंख्यात लोक का भाग देइ तहां एक भाग तौ उदयावली विषैं देना सो **'उदयावलिस्स दव्वं'** इत्यादि सूत्र करि जैसैं पूर्वैं विधान कह्या है, तैसैं उदयावली के निषेकनि विषैं चय घटता क्रम करि निक्षेपण करना । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं अवशेष बहुभाग मात्र रह्या, ताका नाम अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य है । सो तिस विषैं अन्तरायाम

१ इतना अंश छपी प्रति में मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कें निषेकनि का अभाव था, तिनिका सद्भाव करने कौं कितना इक द्रव्य तौ तहां देना। सो कितना देना ताकौं जानने कौं विधान कहिए है।

नाना गुणहानि विषैं तिष्ठता असा जो सम्यक्त्व मोहनी की द्वितीय स्थिति का द्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग जुदा कीएं अवशेष बहुभाग मात्र जो द्रव्य रह्या, ताकौं **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इस सूत्र करि साधिक ड्योढ गुणहानि प्रमाण का भाग दीएं, तिस द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक होइ, सो याके समान अन्तरायाम के सर्व निषेक चय रहित स्थापि, जोडैं आदि धन होइ सो **'पदहतमुखमादिधनं'** इस सूत्र करि अन्तरायाम प्रमाण गच्छ करि तिस प्रथम निषेक कौं गुणें अन्तरायाम के निषेकनि का आदि धन भया। बहुरि द्वितीय स्थिति के नीचें अन्तरायाम के निषेक हैं, तातैं द्वितीय स्थिति का आदि निषेक तें चय बधता क्रम रूप अन्तरायाम कौं निषेक (कहिए) चाहिए; सो चय का प्रमाण ल्याइए है—

द्वितीय स्थिति की प्रथम गुणहानि, ताका प्रथम निषेक ताके नीचैवर्ती जो अन्तरायाम सम्बन्धी गुणहानि, ताका प्रथम निषेक दूणा प्रमाण लीएं चय चाहिए (कहिए)। याकौं दो गुणहानि का भाग दीएं अन्तरायाम विषैं चय का प्रमाण आवै है। सो **'सैकपदाहतपददलचयहतमुत्तरधनं'** इस सूत्रकरि इहां गच्छ अन्तरायाम मात्र, सो एक अधिक गच्छ करि आदि गच्छ का आधा कौं गुणि, बहुरि चय करि गुणें उत्तर धन हो है। सो असें आदि धन उत्तर धन कौं मिलाएं जो प्रमाण भया, तितना द्रव्य तिस अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य तैं ग्रहि करि अन्तरायाम विषैं देना। तहां द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक तैं गच्छ मात्र चयनि करि अधिक द्रव्य तौ अन्तरायाम का प्रथम निषेक विषैं देना। इहां गच्छ का प्रमाण अन्तरायाम अर चय का प्रमाण पूर्वोक्त जानना। बहुरि द्वितीयादि निषेकनि विषैं एक-एक चय घटता क्रम लीएं देना। अन्त निषेकनि विषैं एक चय अधिक देना। असें दीएं जैसें क्रम लिएं चाहिए तैसें अन्तरायाम के निषेकनि का अभाव भया था, तिनिका सद्भाव भया। अब अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य विषैं इतना द्रव्य दीएं किंचित् ऊन भया, तिस अवशेष द्रव्य कौं अंतरायाम वा द्वितीय स्थिति विषैं देना। तहां अन्तरायाम विषैं तौ पूर्वैं जैसें आदि धन उत्तर धन मिलाइ द्रव्य प्रमाण ल्यावने का विधान कह्या था, तैसें प्रमाण ल्याइ, तितने द्रव्य कौं अन्तरायाम के निषेकनि विषैं देना। याकौं दीए पीछैं जो अवशेष रह्या, ताकौं **'दिवड्ढ गुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान करि द्वितीय स्थिति के नाना गुणहानि सम्बन्धी जे

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

निषेक, तिन विषैं अन्त के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि सर्वत्र देना। अैसैं तौ उदय योग्य सम्यक्त्व मोहनी का विधान कह्या।

बहुरि उदय कौं अयोग्य जे मिश्र मिथ्यात्व प्रकृतिनि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग उदयावली तैं बाह्य जो अन्तरायाम, तीहिं विषैं अर द्वितीय स्थिति विषैं पूर्ववत् निक्षेपण करना। उदयावली विषैं निक्षेपण न करना। अैसैं ही जो मिश्र मोहनी अथवा मिथ्यात्व मोहनी उदय योग्य होइ अवशेष दोय उदय योग्य न होंइ तौ तहां यथासम्भव विधान जानना। सर्वत्र जैसैं गाय का पूंछ क्रम तैं मोटाई करि हीन हो है; तैसैं चय घटता क्रम पाइए है, तहां एक गोपुच्छाकार कहिए।

सम्मुदये चलमलिणमगाढं सद्दहदि तच्चयं अत्थं।
सद्दहदि असब्भावं, अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥ १०५ ॥

सुत्तादो तं सम्मं, दरसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि।
सो चेव हवदि मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी[1] ॥१०६॥

सम्यक्त्वोदये चलमलिनमगाढं श्रद्दधाति तत्त्वमर्थम्।
श्रद्धाति असद्भावमजानन् गुरुनियोगात् ॥१०५॥

सूत्रतस्तं सम्यक्, दर्शयंतं यदा न श्रद्दधाति।
स चैव भवति मिथ्यादृष्टिर्जीवः ततः प्रभृति ॥१०६॥

टीका – उपशम सम्यक्त्व का काल पूर्ण भएं पीछैं नियम तैं तीनों विषैं एक दर्शन मोह की प्रकृति का उदय होइ, तहां सम्यक्त्व मोहनी का उदय होतैं जीव वेदक सम्यग्दृष्टी हो है। सो चल, मलिन, अगाढरूप तत्त्वार्थ कौं श्रद्धै है। सम्यक्त्व मोहनी के उदय तैं श्रद्धान विषैं चलपनौं हो है वा मल लागै है वा शिथिल भाव हो है। बहुरि सो जीव आप विशेष न जानता अज्ञात गुरु के निमित्त तैं असत् श्रद्धान भी करै है। परन्तु यहु सर्वज्ञ आज्ञा अैसैं ही है अैसैं जानि श्रद्धान करै है,; तातैं सम्यग्दृष्टी है। अर जो कदाचित् कोई ज्ञात गुरु सूत्र तैं सम्यक् स्वरूप दिखावैं अर हठादिक तैं श्रद्धान न करै तो तिस काल तैं लगाय सो मिथ्यादृष्टी हो है।

---

१ कषाय पाहुड गाथा १०७, १०८/जयधवला भाग–१२, पृ. ३२१, ३२२।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिस्सुदये सम्मिस्सं, दहिगुडमिस्सं व तच्चमियरेण ।
सद्दहदि एक्कसमये, मरणे मिच्छो व अयदो वा ॥१०७॥

मिश्रोदये संमिश्रं, दधिगुडमिश्रं वा तत्त्वमितरेण ।
श्रद्दधात्येकसमये, मरणे मिथ्यो वा असंयतो वा ॥१०७॥

टीका – मिश्र जो सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति, ताका उदय होतैं जीव मिश्र गुणस्थानवर्ती होइ सो एक समय विषैं तत्त्व अर इतर अतत्त्व, इनिकौं मिश्ररूप श्रद्धै है। जैसैं दही गुड मिल्या हूवा और ही रसांतर कौं प्राप्त हो है तैसैं इहां सत्य, असत्य श्रद्धान मिल्या हूवा जानना। इहां मरण होने तैं अंतर्मुहूर्त पहिलैं ही नियम तैं मिथ्यादृष्टी वा असंयत हो है। मिश्र विषैं मरण नाहीं है।

मिच्छत्तं वेदंतो, जीवो विवरीयदंसणं होदि ।
ण य धम्मं रोचेदि हु, महुरं खु रसं जहा जुरिदो ॥१०८॥

मिथ्यात्वं वेदयन्, जीवो विपरीतदर्शनो भवति ।
न च धर्मं रोचते हि, मधुरं खलु रसं यथा ज्वरितः ॥१०८॥

टीका – मिथ्यात्व प्रकृति के उदय कौं जीव अनुभवता मिथ्यादृष्टी होइ, सो विपरीत श्रद्धानी होइ। जैसैं ज्वर वाले कौं मीठा न रुचै, तैसैं ताकौं धर्म जो अनेकांत वस्तु का स्वभाव या रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग, सो रुचै नाहीं; असैं जानना।

मिच्छाइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं, उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ॥१०९॥

मिथ्यादृष्टिर्जीवः, उपदिष्टं प्रवचनं न श्रद्दधाति ।
श्रद्दधात्यसद्भावमुपदिष्टं वा अनुपदिष्टम् ॥१०९॥

टीका – मिथ्यादृष्टी जीव जिनेश्वर करि उपदेश्या वचन कौं नाहीं श्रद्धान करैं है। बहुरि अन्य करि उपदेश्या वा न उपदेश्या असद्भाव जो अतत्त्व, ताकौं श्रद्धान करै है।

इति प्रथमोपशमसम्यक्त्वप्ररूपणा समाप्त भया ॥१॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

दूसरा अधिकार : क्षायिकसम्यक्त्व प्ररूपण

जयंत्यर्हद्विधूतांगसूर्युपाध्यायसाधवः ।
लोकेऽस्मिन् भव्यलोकानां शरणोत्तममंगलम् ।।१।।

अथ क्षायिक सम्यक्त्व प्ररूपण लिखिए है—

दंसणमोहक्खवणापट्ठवगो कम्मभूमिजो मणुसो ।
तित्थयरपायमूले, केवलिसुदकेवलीमूले ।।११०।।

दर्शनमोहक्षपणाप्रस्थापकः कर्मभूमिजो मनुष्यः ।
तीर्थंकरपादमूले, केवलिश्रुतिकेवलिमूले ।।११०।।

टीका – जो मनुष्य कर्मभूमि विषैं उपज्या तीर्थंकर वा अन्य केवली वा श्रुतकेवली के पादमूल विषैं तिष्ठता होइ, सोई दर्शनमोह की क्षपणा का प्रस्थापक कहिए प्रारंभक हो है, जातैं अन्यत्र अैसा विशुद्ध ज्ञान न हो है । अधःकरण का प्रथम समय स्यों लगाय, यावत् मिथ्यात्व मिश्रमोहनी का द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति रूप होइ संक्रमण करै तावत् अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत दर्शनमोह की क्षपणा का प्रारंभक कहिए ।

णिट्ठवगो तट्ठाणे, विमाणभोगावणीसु धम्मे य ।
किदकरणिज्जो चदुसुवि, गदीसु उप्पज्जदे जम्हा ।।१११।।

निष्ठापकः तत्स्थाने, विमानभोगावनिषु धर्मे च ।
कृतकृत्यः चतुर्ष्वपि, गतिषु उत्पद्यते यस्मात् ।।१११।।

टीका – तिस प्रारंभक काल के अनंतर समयवर्ती समय तैं लगाय क्षायिक सम्यक्त्व ग्रहण समय तैं पहिले निष्ठापक हो है । सो जहां प्रारंभक कीया था, तहां ही वा सौधर्मादिक कल्प वा कल्पातीत विषैं वा भोगभूमिया मनुष्य तिर्यंच विषैं वा धर्मा नाम नरक पृथ्वी विषैं भी निष्ठापक हो है, जातैं बद्धायु कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी मरि च्यारयों गति विषैं उपजै है, तहां निष्ठापन करैं, सो कथन आगैं होयगा ।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पुव्वं तियरणविहिणा, अणं खु अणियट्टिकरणचरिमम्हि ।
उदयावलिबाहिरगं, ठिदिं विसंजोजदे णियमा ।।११२।।

पूर्वं त्रिकरणविधिना, अनंतं खलु अनिवृत्तिकरणचरमे ।
उदयावलिबाह्यं स्थितिं विसंयोजयति नियमात् ।।११२।।

टीका – दर्शनमोह क्षपणा के पहिलें तीन करण विधान करि अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभनि के उदयावली तैं बाह्य जे सर्व निषेक, तिनकौं विसंयोजन करता अनिवृतिकरण का अंत समय विषैं नियम तैं विसंयोजन करैं है, बारह कषाय, नव नोकषाय रूप परिणमावै है । सोई कहिए है–

असंयत वा देशसंयत वा प्रमत्त वा अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती वेदक सम्यग्दृष्टी जीव, सो पहलैं अधःकरण करै, ताका विधान प्रथमोपशम सम्यक्त्व ग्रहण विषैं कह्या, तैसैं जानना । तहां समय-समय अनंत गुणी विशुद्धता करि बधता, ताकौं समाप्त करि अपूर्वकरण कौं प्राप्त होइ; तहां गुणश्रेणी, गुणसंक्रमण, स्थिति कांड-कघात, अनुभाग कांडकघात ए च्यारि कार्य होइ, तहां प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति संबंधी गुणश्रेणी का द्रव्य तैं देशसंयत का अर तातैं सकल संयत का अर तातैं इस अनंतानुबंधी विसंयोजन का गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य क्रम तैं असंख्यात गुणा है, अर तिनके गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण क्रम तैं संख्यात गुणा घाटि है । सो अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण के काल तैं साधिक गलितावशेष रूप जानना । बहुरि इहां अनुभाग कांडक आयाम पूर्व तैं अनंत गुणा है । बहुरि स्थिति कांडक आयाम पूर्व तैं संख्यात गुणा है । बहुरि गुण संक्रमण द्रव्य है, सो पूर्व तैं असंख्यात गुणा है । इहां गुण संक्रमण अनंतानुबंधीनि का ही है औरनि का नाहीं है, ऐसा जानना । ऐसैं संख्यात हजार स्थिति खंड वा स्थितिबंध वा अनुभाग खंडनि करि अपूर्वकरण कौं समाप्त करि अनिवृतिकरण कौं प्राप्त हो है ।

अणियट्टीअद्धाए, अणस्स चत्तारि होंति पव्वाणि ।
सायरलक्खपुधत्तं, पल्लं दूरावकिट्ठिउच्छिट्ठं[१] ।।११३।।

अनिवृत्त्यद्धायां, अनंतस्य चत्वारि भवंति पर्वाणि ।
सागरलक्षपृथक्त्वं,पल्यं दूरापकृष्टिरुच्छिष्टम् ।।११३।।

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०० । षट्खंडागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २५१ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अनिवृत्तिकरण का काल विषैं अनंतानुबंधी का जो स्थितिसत्त्व, ताके च्यारि पर्व हो हैं। स्थिति घटने की मर्यादा करि च्यारि विभाग हो हैं। तहां पहले समय पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण स्थिति सत्त्व हो है, जातैं अंतः कोडा-कोडी स्थिति सत्त्व था सो अपूर्वकरण विषैं स्थिति खंडनि करि घटाएं इतना अवशेष रहे है। अनंतानुबंधी बिना अन्य कर्मनि का स्थिति सत्त्व इहां अंतः कोडाकोडी सागर ही जानना। यहु प्रथम पर्व भया।

बहुरि पीछैं संख्यात हजार स्थिति खंड भए क्रम तैं असंज्ञी पंचेंद्री, चौंद्री, तेंद्री, बेंद्री, एकेंद्री बंध समान हजार सागर अर सौ सागर अर पचास सागर अर पचीस सागर अर एक सागर स्थिति सत्त्व हो है। बहुरि संख्यात हजार स्थिति खंड भएं पल्य मात्र स्थिति सत्व हो है। इहां इन स्थिति खंडनि का आयाम जो एक-एक स्थिति खंड विषैं स्थिति सत्त्व घटने का प्रमाण, सो पल्य का संख्यातवां भाग मात्र जानना। यहु दूसरा पर्व भया।

बहुरि पल्य कौं संख्यात का भाग दीजिए, तहां एक भाग बिना बहुभाग मात्र आयाम करि युक्त असा हजारौं स्थिति खंड भएं दूरापकृष्टि है नाम जाका असा पल्य का (अ) संख्यातवां भाग मात्र स्थिति सत्त्व हो है। यहु तीसरा पर्व भया।

बहुरि पल्य कौं असंख्यात का भाग दीएं, तहां एक भाग बिना बहुभाग मात्र आयाम धरैं असैं हजारौं स्थिति खंड भएं उच्छिष्टावली है नाम जाका असा आवली मात्र स्थिति सत्व अवशेष रहै है। यहु चौथा पर्व भया। असैं ए च्यारि पर्व जानने।

पल्लस्स संखभागो, संखा भागा असंखगा भागा।
ठिदिखंडा होंति कमे, अणस्स पव्वादु पव्वोत्ति[1] ॥११४॥

पल्यस्य संख्यभागः, संख्या भागा असंख्यका भागाः।
स्थितिखंडा भवंति, क्रमेण अनंतस्य पर्वात् पर्वान्तं ॥११४॥

टीका – अनंतानुबंधी का स्थिति सत्त्व के पहले पर्व तैं दूसरे पर्व पर्यंत अर दूसरे तैं तीसरे पर्यंत अर तीसरे तैं चौथे पर्यंत जे स्थिति कांडक हो हैं, तिनिका आयाम क्रम लैं पल्य का संख्यातवां भाग अर पल्य का संख्यात बहुभाग अर पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र है, सो कथन कीया ही है।

१. षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २५१-२५२, जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०० ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अणियट्टीसंखेज्जाभागेसु गदेसु अणगठिदिसत्तो ।
उदधिसहस्सं तत्तो, वियले य समं तु पल्लादी ॥११५॥

अनिवृत्तिसंख्यातभागेषु गतेषु अनंतगस्थितिसत्वं ।
उदधिसहस्रं ततो, विकले च समं तु पल्यादि ॥११६॥

टीका – अनिवृत्तिकरण के काल कौं संख्यात का भाग दीजिए, तहां बहु-भाग द्रव्य व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं अनंतानुबंधी का स्थितिसत्त्व कहीं हजार सागर मात्र, पीछैं विकलेंद्री का बंध समान, पीछैं पल्य अर आदि शब्द तैं दूरापकृष्टि अर आवली मात्र हो है ।

उवहिसहस्सं तु सयं, पण्णं पणवीसमेक्कयं चेव ।
वियलचउक्के एगे, मिच्छुक्कस्सट्ठिदी होदि ॥११६॥

उदधिसहस्रं तु शतं, पंचाशत् पंचविंशतिरेकं चैव ।
विकलचतुष्के एकस्मिन्, मिथ्योत्कृष्टस्थितिर्भवति ॥११६॥

टीका – विकल चतुष्क कहिए असंज्ञी पंचेंद्री, चौंद्री, तेंद्री अर एकेंद्री इनि कैं मिथ्यात्व का उत्कृष्ट स्थितिबंध क्रम तैं हजार अर सौ अर पचास अर पचीस अर एक सागर प्रमाण हो है । इन समान स्थिति सत्त्व अनंतानुबंधी का ही हो है । सो कथन कीया ही है ।

बहुरि अनंतानुबंधी का द्रव्य, ताकौं गुणश्रेणी करि जो नीचले निषेकनि विषैं प्राप्त किया अर स्थिति कांडक करि घटाई हुई स्थिति के निषेक अवशेष स्थिति के निषेकनि विषैं प्राप्त कीए बहुरि गुण संक्रम करि तिस द्रव्य कौं गुण संक्रमण भाग-हार का भाग दीएं जो प्रमाण, तिस प्रमाण मात्र द्रव्य का समूह रूप प्रथम फालि है अर तातैं समय-समय प्रति असंख्यात गुणा द्रव्य रूप द्वितीयादि फालि है, तिनकौं विसंयोजन करै असैं अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं उच्छिष्टावली मात्र निषेक रहित अंत कांडक का अंत फालि का द्रव्य कौं विसंयोजन करै है । बहुरि उच्छिष्टा-वली मात्र निषेकनि का द्रव्य कौं एक-एक समय विषैं एक-एक निषेकनि कौं विसंयो-जन करै है । इनिके परमाणूनि कौं बारह कषाय, नव नोकषाय रूप परिणमाय अभाव करने का नाम विसंयोजन है । असैं अनंतानुबंधी के विसंयोजन का विधान कह्या ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंतोमुहुत्तकालं, विस्समिय पुणोवि तिकरणं किरिय ।
अणियट्टीए मिच्छं, मिस्सं सम्मं कमेण णासेइ ।।११७।।

अंतर्मुहूर्तकालं, विश्राम्य पुनरपि त्रिकरणं कृत्वा ।
अनिवृत्तौ मिथ्यं, मिश्रं सम्यक्त्वं क्रमेण नाशयति ।।११७।।

टीका – अनंतानुबंधी का विसंयोजन कीएं पीछैं अंतर्मुहूर्त काल विश्राम करि अन्य क्रिया न करि, तहां पीछैं बहुरि तीन करणनि करि अनिवृत्तिकरण का काल विषैं मिथ्यात्व, मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी कौं क्रम तैं नष्ट करै है । सोई कहिए है –

दर्शनमोह की क्षपणा के सन्मुख होत संता जीव समय-समय अनंत गुणी विशुद्धता युक्त होइ । दर्शनमोह का उपशमन विषैं जैसें विधान कह्या तैसें अधःप्रवृत्तकरण करि पीछैं अपूर्वकरण कौं प्राप्त भया । तहां प्रथम समय ही गुणश्रेणी का प्रारंभ भया । याके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य है, सो अनंतानुबंधी विसंयोजन वाले का गुणश्रेणी द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है अर गुणश्रेणी आयाम इहां ताके गुणश्रेणी आयाम तैं संख्यात गुणा घाटि (है) अपूर्व, अनिवृत्ति करण काल तैं साधिक जानना । जातैं सम्यक्त्वोत्पत्ति विषैं जे तीन करण हो हैं, तिनतैं उत्तरोत्तर तीन करणनि का काल संख्यात गुणा घाटि है । तहां पर्व स्थिति खंडादिक तैं घटता अन्य ही स्थिति खंड वा अनुभाग खंड का प्रारंभ हो है अर अन्य ही स्थितिबंध पल्य का संख्यातवां भाग घटता प्रारंभ हो है । बहुरि मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनी के द्रव्य का गुण संक्रमण करै है । सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमावै है । बहुरि अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं पूर्व तैं संख्यात गुणा घाटि अैसा अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण जघन्य स्थिति सत्त्व है । यातैं उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व संख्यात गुणा है । जातैं कोई जीव उपशम श्रेणी चढि तहां बहुत स्थिति खंडन करि तहांतैं उपरि पीछैं शीघ्र ही दर्शनमोह की क्षपणा का प्रारंभ करै है ताकैं जघन्य स्थिति सत्त्व हो है । अन्य कोई जीव श्रेणी न चढ्या होइ, ताकैं उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है । तहां जघन्य स्थिति सत्व का स्थिति कांडकायाम पल्य के संख्यातवें भाग मात्र है । उत्कृष्ट स्थिति सत्व का पृथक्त्व सागर प्रमाण है । जातैं स्थिति के अनुसारि स्थितिकांडक हो है । अैसैं संख्यात हजार स्थिति कांडक घातनि करि अर तातैं संख्यात गुणे अनुभाग कांडक घातनि करि अर समय-समय असंख्यात गुणा द्रव्य की गुणश्रेणी निर्जरा करि अर गुण संक्रम विधान करि अपूर्वकरण के अंत समय कौं प्राप्त भया, तहां कर्मनि का स्थिति अनुभाग सत्त्व प्रथम समय के तिस

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थिति सत्त्व तैं (अ) संख्यात गुणा घाटि हो है। और भी दर्शन मोह का उपशम विधान विषैं जो प्ररूपण कीया है, सो इहां भी यथासंभव जानना।

अणियट्टिकरणपढमे, दंसणमोहस्स सेसगाण ठिदी।
सायरलक्खपुधत्तं, कोडीलक्खगपुधत्तं च[1] ॥११८॥

अनिवृत्तिकरणप्रथमे, दर्शनमोहस्य शेषकानां स्थितिः।
सागरलक्षपृथक्त्वं, कोटिलक्षकपृथक्त्वं च ॥११८॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं दर्शनमोह का तौ स्थिति सत्त्व पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण है। इहां पृथक्त्व नाम बहुत का है, सो कोटि के नीचैं असा अंत:कोडि प्रमाण जानना। बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थिति सत्त्व पृथक्त्व लक्ष कोटि सागर प्रमाण है, सो कोडाकोडी के नीचैं असा अंत:कोडाकोडी जानना। अपूर्व-करण विषैं संख्यात हजार स्थिति कांडक घात कीएं पीछैं इतना अवशेष स्थिति सत्त्व रहै है। इहां सर्व जीवनि के परिणाम समान हैं, तातैं स्थिति सत्त्व विषैं जघन्य उत्कृष्ट भेद नाहीं है। बहुरि यातैं परैं दर्शन मोह की स्थिति पल्य प्रमाण रहै तहां पर्यंत स्थिति कांडकायाम का प्रमाण पल्य के संख्यातवें भाग मात्र जानना।

अमणंठिदिसत्तादो, पुधत्तमेत्ते पुधत्तमेत्ते य।
ठिदिखंडेय हवंति हु, चउ ति वि एयक्ख पल्लठिदी ॥११९॥[2]

अमनःस्थितिसत्त्वतः, पृथक्त्वमात्रं पृथक्त्वमात्रं च।
स्थितिकांडके भवंति हि, चतुस्त्रि द्वि एकाक्षे पल्यस्थितिः ॥११९॥

टीका – दर्शन मोह की पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण स्थिति, प्रथम समय विषैं संभवै है। तातैं संख्यात हजार कांडक भएं असंज्ञी का बंध समान हजार सागर स्थिति सत्त्व रहै है। ताके पीछैं बहुत-बहुत स्थिति कांडक भएं क्रम तैं चौंद्री, तेंद्री, बेंद्री, एकेंद्री का स्थिति बंध के समान सौ सागर, पचास सागर, पचीस सागर, एक सागर स्थिति सत्त्व हो है। पीछैं बहुत स्थिति खंड भएं पल्य प्रमाण स्थिति सत्त्व हो है। असे यहु दूसरा पर्व भया।

---

१ – जयधवला भाग १३ पृष्ठ ४१ / षट्खंडागम : धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २५४.
२ – जयधवला भाग १३ पृष्ठ ४१–४३.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पल्लट्ठिदिदो उवरिं, संखेज्जसहस्समेत्तठिदिखंडे ।
दूरावकिट्ठिसण्णिद, ठिदिसत्तं होदि णियमेण[1] ॥१२०॥

पल्यस्थितित उपरि, संख्येयसहस्रमात्रस्थितिखंडे ।
दूरापकृष्टिसंज्ञितं, स्थितिसत्त्वं भवति नियमेन ॥१२०॥

टीका – तातैं ऊपरि पल्य कौं संख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र आयाम धरैं असैं संख्यात हजार स्थिति खंड भएं[2] दूरापकृष्टि नामा स्थिति सत्व नियम करि हो है । पल्य कौं उत्कृष्ट संख्यात का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, तातैं एक घटता क्रम करि पल्य कौं जघन्य परीतासंख्यात का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, तहां पर्यन्त दूरापकृष्टि के सर्व भेद जानने । तिनि विषैं इहां कोई संभवता भेद जानना । यहु तीसरा पर्व भया ।

पल्लस्स संखभागं, तस्स पमाणं तदो असंखेज्जं ।
भागपमाणे खंडे, संखेज्जसहस्सगेसु तीदेसु ॥१२१॥

सम्मस्स असंखाणं, समयपबद्धाणुदीरणा होदि ।
तत्तो उवरिं तु पुणो, बहुखंडे मिच्छउच्छिट्ठं[3] ॥१२२॥

पल्यस्य संख्यभागं, तस्य प्रमाणं ततः असंख्येयं ।
भागप्रमाणे खंडे, संख्येयसहस्रकेषु अतीतेषु ॥१२१॥

सम्यक्त्वस्यासंख्यानां, समयप्रबद्धानामुदीरणा भवति ।
तत उपरि तु पुनः, बहुखंडे मिथ्योच्छिष्टम् ॥१२२॥

टीका – तिस दूरापकृष्टि नामा स्थिति सत्व का प्रमाण पल्य के संख्यातवें भाग मात्र जानना । तातैं परैं पल्य कौं असंख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र आयाम धरैं असैं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौं अपकर्षण कीया, तिस विषैं असंख्यात समयप्रबद्ध मात्र उदीरणा द्रव्य कौं उदयावली विषैं दीजिए है । सोई कहिए है—

१ – जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ४३, ४४, ४५.
२ – हस्तलिखित अ, ख, घ प्रतिओं में 'भए' के जगह 'गए' शब्द मिलता है ।
३ – जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ४८ / षट्खंडागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २५६.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां बहुभाग तो जैसैं थे तैसैं ही रहैं; अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं देना। अवशेष एक भाग कौं बहुरि पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं देना अर एक भाग उदयावली विषैं देना। सो इहां उदयावली विषैं दीया द्रव्य कौं उदीरणा द्रव्य जानना; सो पूर्वैं तौ उदयावली विषैं द्रव्य देने के अर्थि असंख्यात लोक का भाग देने तैं द्रव्य का प्रमाण स्तोक आवै था, इहांतैं लगाय परैं सर्वत्र पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देना सो भागहार घटता होने तैं द्रव्य का प्रमाण एक भाग विषैं भी असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है असा जानना। बहुरि तातैं मिथ्यात्व प्रकृति के पल्य कौं असंख्यात का भाग दीएं, तहां बहुभाग मात्र आयाम धरैं असे बहुत स्थिति खंड भएं इस मिथ्यात्व प्रकृति के अन्त कांडक की अन्त फालि पतन का समय विषैं मिथ्यात्व के उच्छिष्टावली मात्र निषेक अवशेष रहैं हैं। अन्य सर्व मिथ्यात्व प्रकृति का द्रव्य है, सो मिश्रमोहनी वा सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमै है। जे आवली मात्र निषेक रहैं हैं, ते समय समय प्रति एक एक निषेक रूप होइ यावत् दो समय अवशेष रहैं, तावत् क्रम तैं निर्जरैं हैं।

जत्थ असंखेज्जाणं, समयप्रबद्धाणुदीरणा तत्तो।
पल्लासंखेज्जदिमो, हारो णासंखलोगमिदो[1] ॥१२३॥

यत्रासंख्येयानां, समयप्रबद्धानामुदीरणा ततः।
पल्यासंख्येयः हारो, नासंख्यलोकमितः ॥१२३॥

टीका – जिस अवसर विषैं असंख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा होइ उपरि के निषेकनि का द्रव्य उदयावली विषैं प्राप्त होइ, तिस समय तैं लगाय उत्तर काल विषैं उदयावली विषैं द्रव्य देने के अर्थि भागहार पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र ही जानना। पूर्ववत् असंख्यात लोक मात्र न जानना।

मिच्छुच्छिट्ठादुवरिं, पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे।
संखेज्जे समतीदे, मिस्सुच्छिट्ठं हवे णियमा[2] ॥१२४॥

---

१ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ४६।

२ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५३ / षट्खण्डागम : धवला पुस्तक, पृष्ठ २५८।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिथ्योच्छिष्टादुपरि, पल्यासंख्येय भागगे खंडे ।
संख्येये समतीते मिश्रोच्छिष्टं भवेत् नियमात् ।।१२४।।

टीका – मिथ्यात्व की उच्छिष्टावली मात्र स्थिति अवशेष रहने के समय तैं लगाय मिश्रमोहनी की स्थिति विषैं पल्य कौं असंख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र आयाम धरैं असैं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं तहां अंत कांडक की अंत-फालि का पतन विषैं मिश्र मोहनी के निषेक उच्छिष्टावली मात्र अवशेष रहे हैं।

मिस्सुच्छिट्ठे समये, पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे ।
चरिमे पडिदे चेट्ठदि, सम्मस्सडवस्सठिदिसत्तो[1] ।।१२५।।

मिश्रोच्छिष्टे समये, पल्यासंख्येयभागगे खंडे ।
चरमे पतिते चेष्टते, सम्यक्त्वस्याष्टवर्षस्थितिसत्त्वम् ।।१२५।।

टीका – जिस समय मिश्रमोहनी की उच्छिष्टावली मात्र स्थिति रहै है, तिस ही समय विषैं सम्यक्त्व मोहनी की स्थिति विषैं पल्य कौं असंख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र आयाम धरैं असैं संख्यात हजार स्थिति खंड व्यतीत होने तैं इहां तिस सम्यक्त्व मोहनी का अष्ट वर्ष प्रमाण स्थिति सत्त्व अवशेष रहै है।

भावार्थ यहु–मिश्रमोहनी की उच्छिष्टावली मात्र स्थिति रहने का अर सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष मात्र स्थिति रहने का एक ही काल है।

मिच्छस्स चरमफालिं, मिस्से मिस्सस्स चरिमफालिं तु ।
संछुहदि हु सम्मत्ते, ताहे तेसिं च वरदव्वं[2] ।।१२६।।

मिथ्यस्य चरमफालिं, मिश्रे मिश्रस्य चरमफालिं तु ।
संक्रामति हि सम्यक्त्वे, तस्मिन् तेषां च वरद्रव्यं ।।१२६।।

टीका – मिथ्यात्व प्रकृति का अंत कांडक की अन्त फालि है, सो जिस समय विषैं मिश्रमोहनी विषैं संक्रमण होइ तिस समय विषैं मिश्रमोहनी का द्रव्य उत्कृष्ट हो है। अर मिश्रमोहनी अंत कांडक की अंत फालि का द्रव्य जिस समय सम्यक्त्व मोहनी विषैं संक्रमण होइ, तिस समय विषैं सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य उत्कृष्ट हो है।

---

१ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५४।
२ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५१ व ५५।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जादि होदि गुणिदकम्मो, दव्वमणुक्कस्समण्णहा तेसिं ।
अवरठिदी मिच्छदुगे, उच्छिट्ठे समयदुगसेसे ॥१२७॥[1]

यदि भवति गुणितकर्मा, द्रव्यमनुत्कृष्टमन्यथा तेषाम् ।
अवरस्थितिर्मिथ्यद्विके, उच्छिष्टसमयद्विकशेषे ॥१२७॥

टीका – यहु दर्शनमोह का क्षय करनेवाला जीव, जो गुणितकर्मांश कहिए उत्कृष्ट कर्मसंचय युक्त होई तौ ताके तिनि दोऊ प्रकृतिनि का द्रव्य तिस समय विषैं उत्कृष्ट हो है अर जो वह जीव उत्कृष्ट कर्म का संचय युक्त न होइ तौ ताकैं तिनिका द्रव्य तहां अनुत्कृष्ट हो है । बहुरि मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनी की स्थिति उच्छिष्टावली मात्र रही सो क्रम तैं एक एक समय विषैं एक एक निषेक गलि तहां दोय समय अवशेष रहैं जघन्य स्थिति हो है ।

भावार्थ यहु–तहां उदयावली का अंत निषेक मात्र स्थिति सत्त्व हो है ।

मिस्सदुगचरिमफाली, किंचूणदिवड्ढसमयपबद्धपमा ।
गुणसेढिं करिय तदो, असंखभागेण पुव्वं व[2] **॥१२८॥**

मिश्रद्विकचरमफालिः, किंचिदूनद्व्यर्धसमयप्रबद्धप्रमा ।
गुणश्रेणिं कृत्वा ततः, असंख्यभागेन पूर्वं वा ॥१२८॥

टीका – मिश्र मोहनी अर सम्यक्त्व मोहनी की जे अन्त की दोय फालि तिनिका द्रव्य किंचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है, सोई कहिए है –

मिश्र मोहनी का जो द्रव्य, ताविषैं उच्छिष्टावली बिना अन्य सर्व मिथ्यात्व प्रकृति के द्रव्य कौं संख्यात हजार स्थिति कांडक अर गुण संक्रम विधान करि निक्षेपण कीया तहां जो मिश्रमोहनी का द्रव्य भया, तहां भी संख्यात हजार स्थिति कांडक अर गुण सक्रंमण विधान करि जो अन्त कांडक की जो अन्त फालि का द्रव्य भया, सो तौ जुदा राख्या अर इसके अन्य कांडकनि द्रव्य सर्व द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र हैं, ताका सम्यक्त्व मोहनी विषैं निक्षेपण कीया अर सम्यक्त्व मोहनी का आठ वर्ष की

१ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५१ व ५५ ।
२ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ६४ / षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २५६.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थिति के उपरिवर्ती जो अन्त कांडक की अन्त फालि का द्रव्य ताकौं छोडि और सर्व कांडकनि का द्रव्य कौं भी संक्रमण काल का द्विचरम समय पर्यन्त तहां अष्ट वर्ष मात्र अवशेष स्थिति विषैं निक्षेपण करि तिस संक्रमण काल का अन्त समय विषैं मिश्र मोहनी की अर सम्यक्त्व मोहनी की अन्त की जे दोय फालि, तिनिका द्रव्य मिलाएं किंचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्य हो है ।

भावार्थ यहु – मिश्रमोहनी का गुण संक्रम करि यावत् सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमै तावत् गुण संक्रम काल कहिए, ताका अन्त समय विषैं मिश्रमोहनी का उच्छिष्टावली मात्र सम्यक्त्व मोहनी का अष्ट वर्ष मात्र निषेक बिना अन्य सर्व द्रव्य, तिनि की अन्त दोय फालिनि का जानना, सो किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है । अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष करण के समय विषैं इनि दोय फालिनि के पतन करने के अर्थि तिनि के द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां एक भाग कौं उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम विषैं देना सो उदयावली का प्रथम समय तैं लगाय पूर्वैं जो गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम का प्रारम्भ कीया था, तामैं व्यतीत भएं पीछैं जो अवशेष गुणश्रेणी आयाम रह्या, ताका अन्त पर्यंत अर एक समय उपरितन स्थिति का तिनि विषैं देना ।

भावार्थ – इहांतैं पहिलैं तौ उदयावली तैं बाह्य गुणश्रेणी आयाम था, अब इहांतैं लगाय उदय रूप वर्तमान समय तैं लगाय ही गुणश्रेण्यायाम भया, तातैं याकौं उदयादि कहिए है । अर पूर्वैं तौ समय व्यतीत होतैं गुणश्रेणी आयाम घटता होता जाता था अब एक समय व्यतीत होतैं उपरितन स्थिति का एक समय मिलाय गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण समय व्यतीत होतैं भी जेताका तेता रहै । तातैं अवस्थित कहिए, तातैं याका नाम उदयादि अवस्थिति गुणश्रेण्यायाम है, ताके निषेकनि विषैं सो द्रव्य असंख्यात गुणा क्रम लीएं दीजिए है; असैं तिन दोऊ फालिनि के द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ एक भाग तौ गुणश्रेणी विषैं दीया ।

सेसं विसेसहीणं, अडवस्सुवरिमठिदीए संखुद्धे
चरमाउलिं व सरिसी, रयणा संजायदे एत्तो ।।१२६।।

शेषं विशेषहीनमष्टवर्षस्योपरिस्थित्यां संक्षुब्धे ।
चरमावलिरिव सदृशी, रचना संजायतेऽतः ।। १२६ ।।

---

१ जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ६५.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अवशेष बहुभागनि के द्रव्य कौं गुणश्रेणी आयाम मात्र अन्तर्मुहूर्त घाटि अष्ट वर्ष प्रमाण जो उपरितन स्थिति, ताके निषेकनि विषैं '**अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे**' इत्यादि विधान करि प्रथम निषेकनि विषैं द्रव्य निक्षेपण करै अर तातैं द्विती-यादि निषेकनि विषैं समान प्रमाण रूप चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है असैं ही दीएं गुणश्रेणी के अन्त निषेक का द्रव्य तैं उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक का द्रव्य असंख्यात गुणा हो है। जातैं इहां बहुभाग का निक्षेपण है अर स्थिति का प्रमाण स्तोक है।

अडवस्सादो उवरिं, उदयादिअवट्ठिदं च गुणसेढी ।
अंतोमुहुत्तियं ठिदिखंडं च य होदि सम्मस्स[1] ॥१३०॥

अष्टवर्षादुपरि, उदयाद्यवस्थितं च गुणश्रेणी ।
अंतर्मुहूर्तिकं स्थितिखंडं च च भवति सम्यस्य ॥ १३० ॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तैं लगाय उपरि सर्व समयनि विषैं उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है। बहुरि सम्यक्त्व मोहनी की स्थिति विषैं स्थिति खंड अन्तर्मुहूर्त मात्र आयाम धरै है। इहां तैं अब एक एक स्थिति कांडक करि अन्तर्मुहूर्त स्थिति घटाइए है।

बिदियावलिस्स पढमे, पढमस्संते च आदिमणिसेये ।
तिट्ठाणेणंतगुणेणूणकमोवट्टणं चरमे[2] ॥१३१॥

द्वितीयावलेः प्रथमे, प्रथमस्यांते चादिमनिषेके ।
त्रिस्थानेऽनंतगुणेनोनक्रमापवर्तनं चरमे ॥ १३१ ॥

टीका – जिस समय विषैं सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष राखी अर मिश्रमोहनी, सम्यक्त्व मोहनी का अन्त कांडक की दोय फालि का पतन भया तिस ही समय विषैं सम्यक्त्व मोहनी का अनुभाग पूर्व समय के अनुभाग तैं अनंत गुणा घटता अनुभाग अवशेष रहै है। सोई कहिए है –

सम्यक्त्व मोहनी का अन्त कांडक की द्विचरम फालि पतन समय (मात्र सम्यक्त्व मोहनी का अष्ट वर्ष मात्र निषेक बिना अन्य सर्व द्रव्य तिनिका अन्त दोय फालिनि

१ जयधवला भाग—१३, पृ. ५६,६४।
२. जयधवला भाग—१३, पृ. ६३।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का जानना सो किंचित् ऊन द्वयर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है।)[१] जो अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय तैं पूर्व समय तहां पर्यंत तौ लता दारु रूप द्विस्थानगत अनुभाग है, सो अनुभाग कांडकघात तैं अनंत गुणा घटता भया। बहुरि यहु चरम फालि पतन समय जो अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय तिस विषैं अनंत गुणा घटता होई लता समान एक स्थान कौं प्राप्त अनुभाग भया। इहांतैं लगाय जो पूर्वं अन्तर्मुहूर्त काल करि अनुभाग कांडक का घात होता था, ताका अभाव भया अर समय समय प्रति अनंत गुणा घटता क्रम लीएं अनुभाग का अपवर्तन होने लगा तहां अनंतरवर्ती अष्ट वर्ष करने के समय तैं जो पूर्व समय तीहिविषैं निषेकनि का जो अनुभाग सत्त्व था, तातैं अनंत गुणा घटता अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय विषैं उदयावली के उपरिवर्ती जो उपरितनावली, ताके प्रथम निषेक का अनुभाग सत्त्व अवशेष रहै है। अवशेष अनंत बहुभाग रूप अनुभाग का विशुद्धता विशेष तैं अपवर्तन भया, नाश भया। बहुरि तिस ही समय विषैं उदयावली के अन्त निषेक का अनुभाग सत्त्व तिस अपने उपरिवर्ती उपरितनावली का प्रथम निषेक का अनुभाग सत्त्व तैं अनंत गुणा घटता रहै है। अवशेष का नाश हो है। बहुरि तातैं अनंत गुणा घटता उदयावली के प्रथम निषेक का अनुभाग सत्व रहै है। अवशेष का नाश हो है। बहुरि तातैं अनंत गुणा घटता अष्ट वर्ष करने के समय तैं लगाय तै अनंतरवर्ती आगामी समय विषैं अनंत गुणा घटता अनुभाग सत्त्व हो है; ऐसैं समय-समय प्रति अनंत गुणा घटता अनुक्रम करि उच्छिष्टावली का अन्त समय पर्यंत अनुभाग का अपवर्तन जानना।

अडवस्से उवरिम्मि वि, दुचरिमखंडस्स चरिमफालित्ति।
संखातीदगुणक्कमं, विसेसहीणक्कमं देदि[२] ॥१३२॥

अष्टवर्षात् उपरि अपि, द्विचरमखंडस्य चरमफालीति।
संख्यातीतगुणक्रमं, विशेषहीनक्रमं ददाति ॥ १३२ ॥

टीका – जैसैं अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय विषैं मिश्र मोहनी, सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालिनि के द्रव्य कौं उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम विषैं अर तातैं उपरिवर्ती उपरितन स्थिति विषैं देने का विधान पूर्वं कह्या, तैसैं ही तिस अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तैं ऊपर भी जे समय तिनिविषैं अन्तर्मुहूर्त

१ हस्तलिखित घ प्रति में यह वाक्य मिलता है।
२ जयधवला भाग—१३, पृ. ६४ तथा ७०।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आयाम धरैं कांडक प्रारम्भ भएं तिनिविषैं प्रथम कांडक की प्रथम फालिका पतन रूप जो प्रथम समय तातैं लगाय द्विचरम कांडक की अन्त फालि का पतन समय पर्यंत गुणश्रेणी आदि के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य, ताका अर स्थिति घटावने का अर्थि ग्रह्या स्थिति कांडक की फालि का द्रव्य, ताकी उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं अर अन्तर्मुहूर्त घाटि अष्ट वर्ष प्रमाण उपरितन स्थिति विषैं चय घटता क्रम लीएं निक्षेपण हो है ।

अब इहां स्पष्ट अर्थ जानने के अर्थि अष्ट वर्ष करने का समय तैं पहले समय विषैं वा अष्ट वर्ष करने के समय विषैं वा आगामी समयनि विषैं संभवता विधान कहिए है –

अडवस्से संपहियं, पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं ।
उवरिं पुण संपहियं, असंखसंखं च भागं तु ।। १३३ ।।

अष्टवर्षे संप्रहितं, पूर्वस्मात् असंख्यसंगुणितम् ।
उपरि पुनः संप्रहितं, असंख्यसंख्यं च भागं तु ।।१३३।।

टीका – अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तैं (पहिले समय विषैं)[१] अनंतरवर्ती पूर्व समय विषैं मिश्रमोहनी अर सम्यक्त्व मोहनी की द्विचरम फालि का पतन हो है । तिस समय विषैं गुण संक्रम काल का प्रथम समय तैं लगाय असंख्यात गुणा क्रम लीएं गुण संक्रमण द्रव्य होतैं जो सम्यक्त्व मोहनी का सत्त्व द्रव्य पाइये है, सो **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान करि तहां स्थिति विषैं संभवती जो नाना गुणहानि, तिनके निषेकनि विषैं पाइए है । तिस समय विषैं जो तिस द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य अपकर्षण कीया, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ बहुभाग तौ उपरितन स्थिति विषैं निक्षेपण करिए है, तहां जिसका द्रव्य अपकर्षण कीया तिस निषेक का द्रव्य कौं तिस निषेक के नीचैं अतिस्थापनावली छोडि **'दिवड्ढ गुणहाणि भाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान करि देना । बहुरि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं देना अर एक भाग उदयावली विषैं देना । इहां अपकर्षणादि

---

१ 'पहिले समय विषैं'–इतना अंश छपी प्रति में ही मिलता है । हस्तलिखित प्रतिओं में नहीं मिलता ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भए पीछैं, जो विवक्षित विषैं सत्ता रूप पूर्वैं द्रव्य पाइए, सो सत्त्व-द्रव्य कहिए। अर अपकर्षणादि कीया हुआ जो नवीन द्रव्य, तहां मिलाया सो दीयमान-द्रव्य कहिए। इन दोऊनि कौं मिलैं जो देखने मैं आया द्रव्य का प्रमाण सो दृश्यमान-द्रव्य कहिए। सो इहां उदयावली विषैं तौ दीयमान द्रव्य पूर्व सत्त्व द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है, ताकरि साधिक सत्त्व द्रव्य मात्र दृश्यमान द्रव्य, तहां जानना अर गुणश्रेण्यायाम विषैं दीयमान द्रव्य पूर्व सत्त्व द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। यद्यपि इहां गुणश्रेणी विषैं दीया द्रव्य सर्व सत्त्व द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है तथापि निषेक इहां थोरे हैं, तातैं असंख्यात गुणा पाइए है, तिस विषैं पूर्व सत्त्व द्रव्य साधिक कीएं तहां दृश्यमान द्रव्य होइ अर उपरितन स्थिति विषैं दीयमान द्रव्य पूर्व सत्त्व द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है। ताकरि अधिक सत्त्व द्रव्य कीएं तहां दृश्यमान द्रव्य हो है। तहां उपरितन स्थिति के जे प्रथमादि निषेक, तिनिविषैं अपकर्षण करि जेता द्रव्य घटाया, सो तौ ऋण जानना। बहुरि जो इहां निक्षेपण कीया द्रव्य, सो धन जानना। सो धन विषैं ऋण घटाइ अवशेष कौं पूर्व सत्त्व विषैं मिलाएं द्वितीयादि निषेक हैं, ते प्रथमादि निषेकनि तैं एक-एक चय करि घटता क्रम तैं होंइ असैं करतैं मिश्र सम्यक्त्व मोहनी की द्विचरम फालि का जाविषैं पतन होइ तिस गुण संक्रम काल का अन्त समय विषैं सम्यक्त्व मोहनी के दृश्य द्रव्य का प्रमाण आवै है। बहुरि ताके अनंतरवर्ती अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय, तिस विषैं मिश्रमोहनी सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालि का द्रव्य सो अष्ट वर्ष के जेते समय तितने सम्यक्त्व मोहनी के निषेकनि का द्रव्य प्रमाण करि हीन असे किंचिदून द्वयर्ध गुणहानि मात्र हैं, ताकौं **'मिस्स दुगे'** इत्यादि गाथा व्याख्यान विषैं जैसैं पूर्वैं वर्णन कीया है तैसैं उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम विषैं वा उपरितन स्थिति विषैं द्रव्य देने का विधान जानना। बहुरि ताके अनंतरवर्ती जो अष्ट वर्ष स्थिति करने का द्वितीय समय, तिस विषैं सर्व सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग ग्रहि, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग तौ उदय रूप प्रथम समय तैं लगाय अष्ट वर्ष करने के समय जो गुणश्रेणी आयाम था, ताका शीर्ष पर्यंत अर एक समय व्यतीत भया सो एक समय उपरितन स्थिति का मिलाएं जो उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम, ताके निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम करि निक्षेपण करना। अर अवशेष बहुभागनि का द्रव्य कौं ताके उपरिवर्ती अवशेष रही जो उपरितन स्थिति, ताके निषेकनि विषैं **'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे'** इत्यादि विधान तैं चय घटता क्रम करि निक्षेपण करना। बहुरि इस ही समय विषैं अन्तर्मुहूर्त मात्र जो

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थिति कांडकायाम, ताके निषेकनि का जो द्रव्य, ताकौं पीठबंध विषैं उक्त प्रमाण लीएं जो अधःप्रवृत्त भागहार, ताका भाग देइ एक भाग का प्रमाण मात्र जो फालि का द्रव्य, सो अपकृष्ट का द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है, ताकौं अपकृष्ट द्रव्य विषैं अधिक जानना। पूर्वं अपकृष्ट द्रव्य दीया, ताकी साथि फालि द्रव्य भी दीया सो सर्व द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार दीएं प्रमाण आया था, ताका नाम अपकृष्ट द्रव्य जानना। अर स्थिति कांडकायाम मात्र निषेकनि का जो द्रव्य ताकौं कांडक द्रव्य कहिए, ताकौं इहां अधःप्रवृत्त का भाग दीएं जो प्रमाण आया, ताका नाम फालि द्रव्य है। बहुरि असैं ही सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति करने का तीसरा समय तैं लगाय प्रथम कांडक की द्विचरम फालि का पतन समय पर्यंत समय-समय असंख्यात गुणा क्रम लीएं जो अपकृष्ट द्रव्य वा फालि द्रव्य, ताकौं एक समय व्यतीत भएं एक-एक समय उपरितन स्थिति का मिलाएं भया जो उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम, ता विषैं असंख्यात गुणा क्रम करि अर तातैं उपरितन स्थिति विषैं चय घटता क्रम करि देना। बहुरि कांडक काल का अन्त समय विषैं अन्त फालि का पतन हो है। ताके द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है – जो अन्तर्मुहूर्त आयाम लीएं एक कांडक होइ तो अष्ट वर्ष स्थिति विषैं केते कांडक होंइ ? असैं त्रैराशिक कीएं कांडकनि का प्रमाण संख्यात आया, बहुरि जो इन सर्व कांडकनि करि सम्यक्त्व मोहनी का सर्व द्रव्य निक्षेपण करिए तौ एक कांडक विषैं केता करिए ? असैं त्रैराशिक करि कांडक द्रव्य का प्रमाण सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य के संख्यातवें भाग मात्र आवै है। बहुरि याकौं अधःप्रवृत्त भागहार का भाग दीएं प्रथम फालि का द्रव्य होइ, तातैं असंख्यात भाग गुणा क्रम लीएं द्विचरम फालि पर्यंत फालिनि का द्रव्य होइ। सो इन सर्व फालिनि का द्रव्य कांडक द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र भया। ताकौं तिस कांडक द्रव्य विषैं घटाएं अवशेष अन्त फालि का द्रव्य जानना। असैं सर्व कांडकनि विषैं अन्त फालि के द्रव्य का प्रमाण ल्यावने का विधान जानना। सो याका उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम विषैं असंख्यात गुणा क्रम करि अर उपरितन स्थिति विषैं चय घटता क्रम करि निक्षेपण करना-असैं विधान जानि इस गाथा का अर्थ असैं जानना। जो **'अडवस्से संपहियं'** कहिए अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष करने का समय विषैं जो मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालिनि का द्रव्य है, सो **'पुव्विल्लादो असंख संगुणियं'** कहिए यातैं पूर्व समय सम्बन्धी द्विचरम फालि का अन्त पर्यंत जो गुण संक्रमण द्रव्य सहित जो सम्यक्त्व मोहनी का सत्त्व द्रव्य, तातैं असंख्यात गुणा है। जातैं तहां यथायोग्य गुण संक्रमण का भागहार संभवै है। इहां अन्त दोय फालिनि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का द्रव्य विषैं सो नाहीं है; तातैं असंख्यात गुणापना जानना। बहुरि **'उवरिं पुण संपहियं'** कहिए उपरि अष्ट वर्ष करने का द्वितीय समय तैं लगाय अष्ट वर्ष करने का प्रथम समय सम्बन्धी जो दोय फालिनि का द्रव्य तातैं **'असंख संखं च भागं तु'** कहिए प्रथम कांडक की द्विचरम फालि पर्यंत तौ असंख्यातवैं भाग मात्र ही दीयमान द्रव्य है। तातैं तहां अपकर्षण भागहार सर्व द्रव्य कौं दीएं अपकृष्ट द्रव्य हो है। अर अन्त फालि का द्रव्य संख्यातवैं भाग मात्र है। जातैं सर्व द्रव्य कौं कांडक प्रमाण मात्र संख्यात का भाग देइ किंचिदून कीएं अन्त फालि का द्रव्य हो है।

ठिदिखंडाणुक्कीरणं, दुचरिमसमओ त्ति चरिमसमये च।
उक्कट्ठिदफालीगददव्वाणि णिसिंचदे जम्हा ॥१३४॥

स्थितिखंडानुत्करणं, द्विचरमसमय इति चरमसमये च।
अपकर्षितफालिगतद्रव्याणि निषिंचति यस्मात् ॥ १३४ ॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष प्रमाण स्थिति के अन्तर्मुहूर्त मात्र आयाम लीएं स्थिति कांडक का अष्ट वर्ष करने के दूसरे समय विषैं प्रारम्भ कीए, तिनिका स्थितिकांडकोत्करण काल यथासम्भव अन्तर्मुहूर्त मात्र है। तिस काल के प्रथम समय तैं लगाय द्विचरम समय पर्यंत जे फालि द्रव्य सहित अपकृष्ट द्रव्य निक्षेपण करिए है, सो सम्यक्त्वमोहनी के सत्त्व द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता है, जातैं तहां अपकर्षण भागहार संभवै है। बहुरि ताका अन्त समय विषैं जो अन्त फालि का द्रव्य दीजिए है, सो सर्व द्रव्य के संख्यातवें भाग मात्र है। यातैं पूर्व कह्या **'उवरिं पुण संपहियं असंखसंखं च भागं तु'** ताका अर्थ सिद्ध भया।

अडवस्से संपहियं, गुणसेढीसीसयं असंखगुणं।
पुव्विल्लादो णियमा, उवरि विसेसाहियं दिस्सं ॥१३५॥

अष्टवर्षे संप्रहितं, गुणश्रेणीशीर्षकं असंख्यगुणम्।
पूर्वस्मात् नियमात्, उपरि विशेषाधिकं दृश्यम् ॥१३५॥

टीका – गुणश्रेणी आयाम का अन्त का निषेक, ताकौं इहां गुणश्रेणी शीर्ष कहिए, जातैं गुण जो असंख्यात का गुणकार, ताकी श्रेणी कहिए पंक्ति, ताका शीर्ष कहिए अग्रभाग, सो गुणश्रेणी शीर्ष कहिए। तहां अष्ट वर्ष करने के समय विषैं गुणश्रेणी का शीर्ष जो अवस्थित गुणश्रेण्यायाम विषैं उपरितन स्थिति का एक निषेक

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिलाया था, सो जानना । ताके पूर्वे सत्त्व द्रव्य कौं अर निक्षेपण कीया द्रव्य कौं मिलाएं दृश्यमान द्रव्य का जो प्रमाण है, सो याके अनंतर पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का जो दृश्यमान द्रव्य, तातैं असंख्यात गुणा है । बहुरि अष्ट वर्ष करने का समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का दृश्यमान द्रव्य तौ उपरि अष्ट वर्ष करने का द्वितीयादि समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य क्रम तैं पूर्व-पूर्व गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य तैं विशेष करि अधिक है, असंख्यात गुणा नाहीं है । ताका स्वरूप संदृष्टचादि करि संस्कृत टीका तैं वा संदृष्टि वर्णन विषैं जानना ।

अडवस्से य ठिदीदो, चरिमेदरफालिपडिददव्वं खु ।
संखासंखगुणूणं, तेणुवरिमदिस्समाणमहियं सीसे ॥१३६॥

अष्टवर्षे च स्थितितः चरमेतरफालिपतितद्रव्यं खलु ।
संख्यासंख्यगुणोनं, तेनोपरिमदृश्यमानमधिकं शीर्षे ॥ १३६ ॥

टीका – अष्ट वर्ष करने का प्रथम समय विषैं मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालिनि का द्रव्य दीया संता उदयरूप प्रथम समय तैं लगाय स्थिति का अन्त समय पर्यंत संबंधी निषेक जे सत्तारूप पाइए हैं, तिनि विषैं प्रथम कांडक की अन्त फालि का द्रव्य कौं कांडक काल का अन्त समय विषैं जो निक्षेपण कीया, तिसका प्रमाण एक-एक निषेक विषैं पूर्व सत्तारूप द्रव्य का प्रमाण तैं संख्यात गुणा घटता जानना । अर अष्ट वर्ष स्थिति करने का द्वितीय समय तैं लगाय प्रथम कांडक की द्विचरम फालि का पतन समय पर्यन्त समयनि विषैं जो अपकर्षण कीया द्रव्य कौं तिनि निषेकनि विषैं निक्षेपण कीया तिसका प्रमाण एक-एक निषेकनि विषैं पूर्व सत्तारूप द्रव्य का प्रमाण तैं असंख्यात गुणा घटता जानना । तातैं विवक्षित समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य जो गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया सो ताके नीचे के निषेक विषैं दीया अपकृष्ट द्रव्य तैं असंख्यात गुणा धन आवै है । बहुरि सर्व सत्तारूप द्रव्य अर निक्षेपण कीया द्रव्य कौं मिलाएं जो दृश्यमान द्रव्य भया, सो पूर्व-पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य तैं उत्तर-उत्तर समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य किछू विशेष करि ही अधिक है, गुणकाररूप नाहीं है ।

जदि गोउच्छविसेसं, रिणं हवे तोवि धणपमाणादो ।
जस्सि असंखगुणूणं, ण गणिज्जदि तं तदो एत्थ ॥१३७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

यदि गोपुच्छविशेषं, ऋणं भवेत् तथापि धनप्रमाणात् ।
यस्मात् असंख्यगुणोनं, न गण्यते तत्तोत्र ।। १३७ ।।

टीका – जैसें गौ का पूंछ क्रम तैं घटता हो है, तैसें चय घटता क्रम जहां होइ, तहां गोपुच्छ कहिए । अर यावत् समान चय होइ तावत् गोपुच्छ विशेष कहिए । सो नीचले गुणश्रेणी निषेक का सत्व द्रव्य तैं उपरि के गुणश्रेणी शीर्ष का सत्व द्रव्य विषैं गोपुच्छ विशेष मात्र यद्यपि ऋण है ।

भावार्थ – यहु निषेकनि विषैं चय घटता क्रम है, तातैं पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का सत्व द्रव्य तैं उत्तर समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का सत्व द्रव्य विषैं चय प्रमाण द्रव्य घटता चाहिए ताकौं न घटाया अर विशेष अधिक कह्या, सो कारण कहा ?

अैसें प्रश्न कीएं, उत्तर कहै हैं – जु यद्यपि अैसें है तथापि यहु मिलाया हूवा जो अपकृष्ट द्रव्य तातैं यहु चय प्रमाण घटता द्रव्य है, सो असंख्यात गुणा घटता है । सो इहां घटावने योग्य ऋण कौं मिलावने योग्य धन तैं असंख्यातवें भागि जानि स्तोकपने तैं गिण्या नाहीं । पूर्व गुणश्रेणी शीर्ष का दृश्य द्रव्य तैं उत्तर गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य विशेष अधिक ही कह्या ।

तत्तक्काले दिस्सं, वज्जिय गुणसेढिसीसयं एक्कं ।
उवरिमठिदीसु वट्टदि, विसेसहीणक्कमेणेव ।।१३८।।

तत्तत्काले दृश्यं, वर्जयित्वा गुणश्रेणिशीर्षकमेकम् ।
उपरिमस्थितिषु वर्तते, विशेषहीनक्रमेणैव ।।१३८।।

टीका – अैसें कहे विधान तैं जिस-जिस विवक्षित समय विषैं सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयादि स्थिति का अंत पर्यंत निषेकनि विषैं निक्षेपण करै है, तिस-तिस समय विषैं गुणश्रेणी शीर्षरूप भया जो एक-एक निषेक ताकौं छोडि ताके उपरिवर्ती जे उपरितन स्थिति के सर्व निषेक तिनि विषैं तत्काल संभवता जो दृश्यमान द्रव्य, सो विशेष घटता अनुक्रम लीएं ही जानना । जातैं तहां दीया द्रव्य वा पूर्व द्रव्य चय घटता क्रम लीएं हो है । या प्रकार अष्ट वर्ष मात्र सम्यक्त्व मोहनी की स्थिति विषैं जैसें प्रथम कांडक का विधान कह्या, तैसें ही द्वितीय कांडकादि द्विचरम कांडक की अंत फालि पर्यंत अपकृष्टि द्रव्य अर फालि द्रव्य, तिनके निक्षेप

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करने का अनुक्रम अर भया जो दृश्यमान द्रव्य, ताका अनुक्रम जानना। असैं अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष करने का समय तैं लगाय सम्यक्त्व मोहनी का अंत कांडक तैं पहिला जो द्विचरम कांडक,ताकी अंत फालिका पतन समय पर्यंत क्षपणाविधान कहि।

अब अंत कांडक का विधान कहिए है–

गुणसेढिसंखभागा, तत्तो संखगुणं उवरिमठिदीओ।
सम्मत्तचरिमखंडो, दुरचरिमखंडादु संखगुणो ॥१३९॥

गुणश्रेणिसंख्यभागाः, ततः संख्यगुणं उपरितनस्थितयः।
सम्यक्त्वचरमखंडो, द्विचरमखंडात् संख्यगुणः ॥१३९॥

टीका – अष्ट वर्ष स्थिति करनें का प्रथम समय तैं लगाय इहां द्विचरम कांडक का अंत पर्यंत जो अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है, ताकौं संख्यात का भाग दीएं, तहां बहुभागनि का जो प्रमाण अर अपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय आठ वर्ष स्थिति करने का समय तैं पूर्व समय पर्यंत जो गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम था, ताविषैं जो अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवां भाग मात्र जो गुणश्रेणी शीर्ष कह्या, ताकौं संख्यात का भाग दीएं एक भाग का जो प्रमाण अर अवस्थिति गुण-श्रेणी का अंत निषेकरूप जो शीर्ष ताके उपरिवर्ती निषेक रूप जो उपरितन स्थिति तीहिं विषैं द्विचरम कांडक विषैं जिनि निषेकनि का अभाव कीया तिनिके नीचैं जे निषेक अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम का बहुभाग तैं संख्यात गुणे अवशेष रहे। असे अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम का संख्यातवां बहुभाग अर गलितावशेष गुणश्रेणी का संख्यातवां भाग अर उपरितन स्थिति के अवशेष निषेक इन तीनौं कौं जोड़ें जो प्रमाण होइ, सोई अंत कांडकायाम का प्रमाण है।

भावार्थ यहु – गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम का संख्यातवां भाग तैं लगाय उपरितन स्थिति के निषेक अवशेष रहे, तिनिका अंत पर्यंत कांडकायाम का प्रमाण है। सो यहु द्विचरम कांडकायाम प्रमाण तो संख्यात गुणा है तौ भी यथायोग्य अंत-र्मुहूर्त मात्र ही है। बहुरि तिस अंत कांडक करि घात कीएं पीछैं जो नीचैं अवशेष स्थिति रहै, ताका प्रमाण अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम के संख्यातवें भाग मात्र है, सो पूर्वैं जो गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषैं अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवें भाग मात्र जो गुणश्रेणी शीर्ष कह्या था, ताकौं संख्यात का भाग दीएं, बहुभाग मात्र

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तौ कृतकृत्यवेदक काल अर व्यतीत भएं पीछैं अवशेष रह्या जो अनिवृत्तिकरण का काल, तीहिं प्रमाण अंत कांडकोत्करण काल इनि दोऊनि कौं मिलाएं तिस अवशेष स्थिति का प्रमाण हो है ।

सम्मत्तचरिमखंडे, दुचरिमफालि त्ति तिण्णि पव्वाओ ।
संपहियपुव्वगुणसेढीसीसे सीसे य चरिमम्हि ।।१४०।।

सम्यक्त्वचरमखंडे, द्विचरमफालीति त्रीणि पर्वाणि ।
संप्राप्तपूर्वगुणश्रेणीशीर्षे शीर्षे च चरमे ।।१४०।।

टीका – सम्यक्त्व मोहनी का अंत कांडक, ताकी प्रथम फालि का पतन समय तैं लगाय द्विचरमफालि का पतन समय पर्यंत द्रव्य निक्षेपण करने विषै तीन पर्व जानने । **पर्व नाम विभाग का है ।** सो विभाग करि तीन जायगा द्रव्य देना । तहां अंतकोत्करण काल का प्रथम समय विषैं जाका आरंभ भया असा जो उदयरूप प्रथम समय तैं लगाय अवशेष स्थिति का अंत निषेक पर्यंत इहां जाका प्रारंभ भया असा जो गुणश्रेणी आयाम, ताका शीर्ष पर्यंत तौ एक पर्व जानना । बहुरि तातैं ऊपरि पूर्वैं जो अवस्थित गुणश्रेणी अयाम था ताका शीर्ष पर्यंत दूसरा पर्व जानना । बहुरि तातैं उपरिवर्ती जो उपरितन स्थिति, ताका प्रथम समय तैं लगाय अंत समय पर्यन्त तीसरा पर्व जानना । तहां कांडक द्रव्य विषैं ग्रहण कीया जो फालि द्रव्य, ताका निक्षेपण तौ पहले ही पर्व विषै हो है । अर सर्व द्रव्य विषैं अपकर्षण कीया जो अप-कृष्ट द्रव्य, ताका निक्षेपण तीनों पर्व विषैं हो है, असा जानना ।

तत्थ असंखेज्जगुणं, असंखगुणहीणयं विसेसूणं ।
संखातीदगुणूणं, विसेसहीणं च दत्तिकमो ।।१४१।।

उक्कट्टिदबहुभागे, पढमे सेसेक्कभागबहुभागे ।
बिदिए पव्वेवि सेसिगभागं तदिये जहा देदि ।।१४२।।

तत्रासंख्येयगुणं, असंख्यगुणहीनकं विशेषोनम् ।
संख्यातीतगुणोनं, विशेषहीनं च दत्तिक्रमः ।।१४१।।

अपकर्षितबहुभागे, प्रथमे शेषैकभागबहुभागे ।
द्वितीये पर्वेऽपि शेषैकभागं तृतीये यथा ददाति ।।१४२।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तहां प्रथम पर्व विषैं द्रव्य असंख्यात गुणा दीजिए है; सो कहिए है – सम्यक्त्व मोहनी का सर्व द्रव्य विषैं पूर्व निषेकनि करि सर्व द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र द्रव्य घटाएं अवशेष किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र अंत कांडक का द्रव्य है। ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग ग्रहि, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग तौ प्रथम पर्व विषैं **'प्रक्षेपयोगोद्धत'** इत्यादि विधान तैं असंख्यात गुणा क्रमकरि देना। बहुरि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग देइ तहां बहुभाग दूसरा पर्व विषैं **'अद्धाणेण सव्वधणे'** इत्यादि विधान तैं चय घटता क्रम करि देना। प्रथम पर्व तैं दूसरा पर्व का आयाम संख्यात गुणा जानना। बहुरि अवशेष एक भाग तीसरा पर्व विषैं **'अद्धाणेण सव्वधणे'** इत्यादि विधान तैं चय घटता क्रम करि अपकर्षण कीया निषेक नीचैं अति-स्थापनावली छोडि नीचै निक्षेपण करना। द्वितीय पर्व तैं संख्यात गुणा द्विचरम कांडक का आयाम है, तातैं भी तीसरे पर्व का आयाम संख्यात गुणा है। निषेकनि के प्रमाण का नाम इहां आयाम जानना। इहां अब जाका प्रारंभ भया असा जो गुणश्रेणी का आयाम रूप प्रथम पर्व, ताका शीर्ष जो अंत निषेक, ताविषैं जो द्रव्य निक्षेपण कीया तातैं कांडक का प्रथम निषेक जो दूसरे पर्व का प्रथम निषेक, तीहिं विषैं निक्षेप कीया द्रव्य असंख्यात गुणा घाटि है। बहुरि द्वितीय पर्व का अंत निषेक विषैं जो द्रव्य निक्षे-पण कीया, तातैं तृतीय पर्व का प्रथम निषेक विषैं निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा घाटि है। जातैं पूर्व कथन के अनुसारि असैं ही संभवै है। असैं ही अंत कांडक की प्रथम फालि का पतनरूप जो अन्त कांडकोत्करण काल का प्रथम समय तैं लगाय द्विचरम फालि का पतन रूप जो अन्त कांडकोत्करण काल का उपांत समय तहां पर्यंत द्रव्य निक्षेपण करने का विधान जानना।

उदयादिगलिदसेसा, चरिमे खंडे हवेज्ज गुणसेढी।
फाडेदि चरिमफालिं, अणियट्टीकरणचरिमम्हि ॥१४३॥

उदयादिगलितशेषा चरमे खंडे भवेत् गुणश्रेणी।
पातयति चरमफालिमनिवृत्तिकरणचरमे ॥१४३॥

टीका – सम्यक्त्वमोहनी का अंत कांडक की प्रथम फालि का पतन समय तैं लगाय द्विचरम फालि का पतन समय पर्यंत उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम जानना। उदयरूप वर्तमान समय तैं लगाय इहां गुणश्रेणी आयाम पाइए

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है, तातैं उदयादि कहिए अर एक-एक समय व्यतीत होतैं एक-एक समय गुणश्रेणी आयाम विषैं घटता जाय है, तातैं गलितावशेष कह्या है । ऐसैं उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम जानना । बहुरि पूर्वोक्त विधान करि अंत कांडक की द्विचरम फालि का पतन होतैं कांडकोत्करण काल का अनिवृत्तिकरण काल विषैं एक समय अवशेष रहै । बहुरि अवशेष रह्या अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं अंत कांडक की अंतिम फालि का पतन हो है ।

चरिमं फालिं देदि दु, पढमे पव्वे असंखगुणियकमा ।
अंतिमसमयम्हि पुणो, पल्लासंखेज्जमूलाणि[1] ॥१४४॥

चरमं फालिं ददाति तु, प्रथमे पर्वे असंख्यगुणितक्रमाणि ।
अंतिमसमये पुनः, पल्यासंख्येयमूलानि ॥१४४॥

टीका – इहां अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं व्यतीत भए पीछैं अवशेष रह्या ऐसा गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम, सो कृतकृत्य वेदक काल का प्रमाण है । ताका द्विचरम समय पर्यंत तौ प्रथम पर्व अर ताका अंत समय सो दूसरा पर्व जानना । तहां सम्यक्त्व मोहनी का सर्व द्रव्य विषैं व्यतीत भए निषेक अर अवशेष रहे कृतकृत्य काल मात्र निषेक तिनिका द्रव्य घटाएं अवशेष किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण अंत कांडक का अंत फालि का द्रव्य है । ताकौं असंख्यात गुणा जो पल्य का प्रथम वर्गमूल, ताका भाग देइ तहां एक भाग तौ प्रथम पर्व विषैं **'प्रक्षेपयोगोद्धृत'** इत्यादि विधान तैं असंख्यात गुणा क्रम करि देना ।

इतना विशेष – जो इहां असंख्यात का गुणकार समान रूप नाहीं । प्रथम निषेक तैं जिस असंख्यात करि गुणैं दूसरा निषेक पर्यंत (क्रम तैं गुणकार)[2] होइ तिसतैं असंख्यात गुणा असंख्यात करि दूसरा निषेक कौं गुणैं तीसरा निषेक होइ ऐसैं द्विचरम निषेक पर्यंत क्रम तैं गुणकार असंख्यात गुणा जानना । बहुरि एक भाग ऐसैं दीएं अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य गुणश्रेणी का अंत निषेकनि विषैं निक्षेपण करै है ।

चरिमे फालिं दिण्णे, कदकरणिज्जे त्ति वेदगो होदि ।
सो वा मरणं पावइ, चउगइगमणं च तट्ठाणे ॥१४५॥

---

१. जय धवला भाग–१३, पृष्ठ ७६ ।
२. इतना छपी प्रति में ही मिलता है; हस्तलिखित प्रतियों में नहीं ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

देवेसु देवमणुए, सुरणरतिरिए चउग्गईसुं पि ।
कदकरणिज्जोपत्ती, कमेण अंतोमुहुत्तेण[1] ।।१४६।।

चरमे फालिं दत्ते,कृतकरणीयेति वेदको भवति ।
स वा मरणं प्राप्नोति, चतुर्गतिगमनं च तत्स्थाने ।।१४५।।

देवेषु देवमनुष्ये, सुरनरतिरश्चि चतुर्गतिष्वपि ।
कृतकरणीयोत्पत्तिः, क्रमेण अन्तर्मुहूर्तेन ।।१४६।।

टीका – असैं अनिवृतिकरण के अंत समय विषैं सम्यक्त्व मोहनी का अंत कांडक की अंत फालि का द्रव्य कौं नीचले निषेकनि विषैं निक्षेपण कीए पीछैं अनंतर समय तैं लगाय अनिवृतिकरण काल का संख्यातवां भाग मात्र (अंतर्मुहूर्त्त काल पर्यन्त)२ जो पुरातन गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम का शीर्ष, ताकौं संख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी हो है, जातैं दर्शन मोह की क्षपणा योग्य स्थिति कांडकादि कार्य सो अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषै ही समाप्त भया, तातैं कीया है करने योग्य कार्य जाने असा कृतकृत्य नाम पावै है, सो जीव भुज्यमान आयु के नाश तैं मरण पावै तौ सम्यक्त्व ग्रहण तैं पहलैं जो बांध्या था आयु, ताके वश तैं चार्यों गतिनि विषैं उपजै है । तहां कृतकृत्य वेदक के काल का च्यारि भाग एक-एक अंतर्मुहूर्त मात्र करिए ।

तहां प्रथम भाग विषैं मूवा तो देव ही विषैं, दूसरा भाग विषैं मूवा देव वा मनुष्य विषैं, तीसरा भाग विषैं मूवा देव, मनुष्य, तिर्यंच विषैं, चौथा भाग विषैं मुवा च्यारचों गति विषैं उपजै है । जातैं तहां तिनही विषैं उपजने योग्य परिणाम हो है असैं क्रम करि कृतकृत्य वेदक की उत्पत्ति जाननी ।

करणपढमादु जावय, किदुकिच्चुवरिं मुहूत्तअंतो त्ति ।
ण सुहाण परवत्ती, सा धि कओदावरं तु वरिं[3] ।।१४७।।

करणप्रथमात् यावत्, कृतकृत्योपरि मुहूर्तांत इति ।
न शुभानां परावृत्तिः, सा हि कपोतावरं तु उपरि ।। १४७ ।।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ८६, ८७ ।
२. इतना भाग मात्र छपी प्रति में ही मिलता है ।
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ८१,८२ तथा ८८ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अधः करण का प्रथम समय विषैं दर्शनमोहक्षपणा का प्रारंभक जीव कैं पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या जो होइ सो समय समय अनंत गुणी विशुद्धता का क्रम करि अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं तिस लेश्या का उत्कृष्ट अंश संपूर्ण होइ ।

बहुरि ताके अनंतरि कृतकृत्य वेदक काल विषैं प्रथम भाग विषैं मरै तौ लेश्या पलटै ही नाहीं, जातैं इहां मरि देव ही विषैं उपजना है ।

बहुरि जो दूसरा, तीसरा, चौथा भाग विषैं मरै तौ शुभ लेश्या की क्रम तैं हानि होइ करि मरण समय कपोत लेश्या का जघन्य अंश होइ । जातैं द्वितीय भाग विषैं मरि भोगभूमिया मनुष्य भी हो है ।

तीसरा भाग विषैं मरि भोगभूमिया मनुष्य वा तिर्यंच भी हो है ।

चौथा भाग विषैं मरि जाकैं नरकायु बंध्या सो जीव प्रथम नारक पृथ्वि विषैं भी उपजै है । बहुरि जो देव गति विषैं ही उपजना होइ तौ जाकैं च्यारचों ही भागनि विषैं लेश्या की पलटनि न हो है । असैं वेदक काल विषैं मरण होइ तीहिं अपेक्षा कथन कीया । बहुरि जो तहां मरण न होइ अर पूर्वैं च्यारचों गति विषैं कोई गति सम्बन्धी आयु बांध्या है, ताकैं क्षायिक सम्यक्त्व भए पीछैं मरण समय गति के अनुसारि लेश्यानि की पलटन जाननी ।

अणुसमओ वट्टणयं, कदकिज्जंतो त्ति पुव्वकिरियादो ।
वट्टदि उदीरणं वा, असंखसमयप्पबद्धाणं[1] ॥१४८॥

अनुसमयोपवर्तनं, कृतकरणीय इति पूर्वक्रियातः ।
वर्तते उदीरणा वा, असंख्यसमयप्रबद्धानाम् ॥ १४८॥

टीका – अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवां भाग अवशेष रहैं, जैसैं दर्शन मोह के अनुभाग का कांडक घात कौं मेटि समय समय अनंत गुणा घटता क्रम लीएं अनुभाग का अपवर्तन कह्या था, सो ही इस कृतकृत्य वेदक काल का अंत समय पर्यंत पाइए है, जातैं करण परिणामनि की विशुद्धता का संस्कार का अवशेष इहां संभवैं है । बहुरि तिस कृतकृत्य वेदक का काल विषैं यावत् एक समय अधिक उच्छिष्टावली अवशेष रहै तावत् समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीएं असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा पाइए है । ताका विधान कहै हैं —

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ८६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उदयबहिं उक्कट्टिय, असयगुणमुदयआवलिम्हि खिवे ।
उवरिं विसेसहीणं, कदकिज्जो जाव अइत्थवणं ॥१४९॥

जदि संकिलेसजुत्तो, विसुद्धिसहिदो वतोपि पडिसमयं ।
दव्वमसंखेज्जगुणं, उक्कट्टदि णत्थि गुणसेढी ॥१५०॥

जदि वि असंखेज्जाणं, समयपबद्धाणुदीरणा तो वि ।
उदयगुणसेढिठिदिए, असंखभागो हु पडिसमयं ॥१५१॥

उदयबहिरपकर्षितं, असंख्यगुणं उदयावलौ क्षिपेत् ।
उपरि विशेषहीनं, कृतकृत्यो यावदतिस्थापनम् ॥१४९॥

यदि संक्लेशयुक्तो, विशुद्धिसहितो अतोऽपि प्रतिसमयम् ।
द्रव्यमसंख्येयगुणमपकर्षति नास्ति गुणश्रेणी ॥ १५० ॥

यद्यपि असंख्येयानां, समयप्रबद्धानामुदीरणा तथापि ।
उदयगुणश्रेणिस्थितेरसंख्यभागो हि प्रतिसमयम् ॥१५१॥

टीका – कृतकृत्य वेदक काल मात्र सम्यक्त्व मोहनी के निषेक रहैं, तिनिका द्रव्य किंचिदून द्वयर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग प्रमाण द्रव्य कौं जे उदयावली तैं बाह्य उपरिवर्ती निषेक हैं, तिनतैं ग्रहि करि ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग तौ उदयावली विषैं **'प्रक्षेपयोगोद्धत'** इत्यादि विधान करि प्रथम समय तैं लगाय अंत निषेक पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं दीजिए है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य तिस उदयावली तैं उपरिवर्ती जो अवशेष अंतर्मुहूर्त मात्र उपरितन स्थिति, तहां अंत विषैं समय अधिक अतिस्थापनावली छोडि सर्व निषेकनि विषैं **'अद्धाणेण सव्वधणे'** इत्यादि विधान करि विशेष हीन क्रम लीएं निक्षेपण करै । असैं उपरितन स्थिति का द्रव्य जो उदयावली विषैं दीजिए ताका नाम उदीरणा है ।१४९।

यद्यपि कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी लेश्या की पलटनि तैं संक्लेश संयुक्त होइ वा विशुद्धता सहित होइ तथापि पूर्व भए थे करण रूप परिणाम, तीनि की विशुद्धता का जो संस्कार, ताके वश तैं समय समय प्रति असंख्यात गुणा द्रव्य को अपक-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

र्षण करि उदीरणा करै है। गुणश्रेणी आयाम बिना किंचित् द्रव्य कौं उदयावली विषैं देइ अवशेष कौं उपरितन स्थिति विषैं दीया, तातैं इहां गुणश्रेणी नाहीं है।१५०।

यद्यपि असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा पूर्व पूर्व समय सम्बन्धी उदीरणा द्रव्य तैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं है, तथापि अंत कांडक की अंत फालि का द्रव्य कौं (गुणें)[१] गुणश्रेणी आयाम विषैं दीया था, तिस गुण श्रेणीरूप जो उदय आया निषेक ताका द्रव्य तैं यहु उदीरणा द्रव्य असंख्यातवां भाग मात्र ही है। जातैं यहु उदीरणा द्रव्य तौ सर्व द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र है अर जो तिस गुणश्रेणी का निषेक उदयरूप है, ताका द्रव्य सर्व द्रव्य कौं असंख्यात गुणा पल्य वर्गमूल का भाग दीएं एक भाग मात्र है, तातैं कृतकृत्य वेदक का प्रथमादि समय सम्बन्धी निषेकनि विषैं इहां उदयावली विषैं दीया द्रव्य, उदीरणा द्रव्य सो पूर्वैं पाइए है जो सत्तारूप द्रव्य, तातैं असंख्यात गुणा घाटि है। बहुरि कृतकृत्य वेदक काल विषैं एक समय अधिक आवली अवशेष रहें पूर्वैं अपकर्षण कीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा द्रव्य कौं स्थिति का अंत निषेक जो उदयावली तैं उपरिवर्ती एक निषेक तातैं अपकर्षण करि ताके नीचैं एक समय घाटि आवली का दोय तीसरा भाग प्रमाण निषेकनि कौं अतिस्थापनरूप राखी, ताके नीचैं एक समय अधिक आवली का त्रिभाग मात्र निषेकनि विषैं द्रव्य दीजिए है। तहां तिस अपकर्षण कीया हूआ द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौं उदय तैं लगाय यथायोग्य असंख्यात समय सम्बन्धी निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम करि दीजिए है। तहां तिस अपकर्षण कीया हुआ द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य तो उदय समय तैं लगाय यथायोग्य असंख्यात समय सम्बन्धी निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम करि दीजिए है अर अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं अतिस्थापना ताका जो नीचे का समय ताकौं छोडि ताके नीचें अवशेष आवली का त्रिभाग मात्र निषेकनि विषैं विशेष घटता क्रम करि निक्षेपण करिए है। यहु ही उत्कृष्ट उदीरणा है। यातैं अधिक उदीरणा का द्रव्य नाहीं। ऐसैं अनुभाग का तौ अनुसमय अपवर्तन करि अर कर्म परमाणूनि की उदीरणा करि यहु कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि, रही थी जो सम्यक्त्व मोहनी की अंत-र्मुहूर्त स्थिति तामैं उच्छिष्टावली बिना सर्व स्थिति है; सो प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशनि का सर्वथा नाश लीएं जो एक एक निषेक का एक एक समय विषैं उदय रूप होइ

१. (गुणे) यह शब्द मात्र छपी हुई प्रति में ही मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

निर्जरना ताकरि नष्ट हो है, बहुरि ताका अनंतर समय विषैं उच्छिष्टावली मात्र स्थिति अवशेष रहैं उदीरणा का भी अभाव भया, केवल अनुभाग का उपवर्तन है सो पूर्व अनुभाग अपवर्तन कह्या था, तातैं याका अन्य लक्षण है, उदयरूप प्रथम समय तैं लगाय समय समय अनंत गुणा क्रम करि वर्तै है, ताकरि प्रकृति, स्थिति, अनुभाग प्रदेशनि का सर्वथा नाश पूर्वक समय समय प्रति उच्छिष्टावली के एक एक निषेक कौं गालि निर्जरा रूप करि, ताका अनंतर समय विषैं जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो है।

बिदियकरणादिमादो, कदकरणिज्जस्स पढमसमओ त्ति ।
वोच्छं रसखंडुक्कीरणकालादीणमप्पबहु[1] ॥१५२॥

द्वितीयकरणादिमात्, कृतकृत्यस्य प्रथमसमय इति ।
वक्ष्ये रसखंडोत्करणकालादीनामल्पबहुत्वम् ॥१५२॥

टीका – दूसरा जो अपूर्वकरण, ताका प्रथम समय तैं लगाय कृतकृत्य वेदक का प्रथम समय पर्यंत अनुभाग कांडकोत्करण कालादिक, तिनिका अल्प बहुत्व के तेतीस स्थान कहौंगा।

रसठिदिखंडुक्कीरणअद्धा अवरं वरं च अवरवरं ।
सव्वत्थोवं अहियं, संखेज्जगुणं विसेसहियं[2] ॥१५३॥

कदकरणसम्मखवणाणियट्टिअपुव्वद्ध संखगुणिदकमं ।
तत्तो गुणसेढिस्स य, णिक्खेओ साहियो होदि[3] ॥१५४॥

सम्मदुचरिमे चरिमे, अडवस्सस्सादिमे च ठिदिखंडा ।
अवरवराहावि य, अडवस्सं संखगुणियकमा[4] ॥१५५॥

सम्मे असंखवस्सिय, चरिमट्ठिदिखंडओ असंखगुणो ।
मिस्से चरिमे खंडियमहियं अडवस्समेत्तेण[5] ॥१५६॥

---

१ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ९० ।
२ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ९१, ९२ ।
३ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ९२, ९३ ।
४ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ९४, ९५ ।
५ जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ९५ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मिच्छे खवदे सम्मदुगाणं ताणं च मिच्छसंतं हि ।
पढमंतिमठिदिखंडा, असंखगुणिदा हु दुट्ठाणे[1] ॥१५७॥

मिच्छंतिमठिदिखंडो, पल्लासंखेज्जभागमेत्तेण ।
हेट्ठिमठिदिप्पमाणेणब्भिहियो होदि णियमेण[2] ॥१५८॥

दूरावक्किट्ठिपढमं, ठिदिखंडं संखसंगुणं तिण्णं ।
दूरावकिट्ठिहेदूठिदिखंडं संखसंगुणियं[3] ॥१५९॥

पलिदोवमसंतादो, बिदियो पल्लस्स हेदुगो जो दु ।
अवरो अपुव्वपढमे, ठिदिखंडो संखगुणिदकमा[4] ॥१६०॥

पलिदोवमसंतादो, पढमो ठिदिखंडओ दु संखगुणो ।
पलिदोवमठिदिसंतं, होदि विसेसाहियं तत्तो[5] ॥१६१॥

बिदियकरणस्स पढमे, ठिदिखंडविसेसयं तु तदियस्स ।
करणस्स पढमसमये, दंसणमोहस्स ठिदिसंतं[6] ॥१६२॥

दंसणमोहूणाणं, बंधो संतो य अवर वरगो य ।
संखेये गुणियकमा, तेत्तीसा एत्थ पदसंखा[7] ॥१६३॥

रसस्थितिखंडोत्करणाद्धा अवरं वरं अवरवरं ।
सर्वस्तोकं अधिकं, संख्येयगुणं विशेषाधिकम् ॥१५३॥

कृतकरणसम्यग्क्षपणानिवृत्यपूर्वाद्धा संख्यगुणितक्रमं ।
ततो गुणश्रेण्याश्च, निक्षेपः साधिको भवति ॥१५४॥

---

१ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९५ ९६ ।
२ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९६ ।
३ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९७ ।
४ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९८, ९९ ।
५ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९८, ९९ ।
६ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९९ ।
७ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९९, १०० ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सम्यग्द्विचरमे चरमे, अष्टवर्षस्यादिमे च स्थितिखंडानि ।
अवरवराबाधापि च, अष्टवर्षं संख्यातगुणितक्रमाणि ॥१५५॥

सम्येऽसंख्यवर्षे, चरमस्थितिखंडकोऽसंख्यगुणः ।
मिश्रे चरमे खंडितमधिकमष्टवर्षमात्रेण ॥१५६ ॥

मिथ्ये क्षपिते सम्यग्द्विकानां तेषां च मिथ्यसत्त्वं हि ।
प्रथमांतिमस्थितिखंडान्यसंख्यगुणितानि हि द्विस्थाने ॥१५७॥

मिथ्यांतिमस्थितिखंडं, पल्यासंख्येयभागमात्रेण ।
अधस्तनस्थितिप्रमाणेनाभ्यधिकं भवति नियमेन ॥१५८॥

दूरापकृष्टिप्रथमं, स्थितिखंडं संखसंगुणं त्रयं ।
दूरापकृष्टिहेतुः, स्थितिखंडः संख्यसंगुणितः ॥१५९॥

पलितोपमसत्त्वतो, द्वितीयं पल्यस्य हेतुकं यत्तु ।
अवरमपूर्वप्रथमे, स्थितखंडं संख्यगुणितक्रमम् ॥१६०॥

पल्योपमसत्त्वतः, प्रथमं स्थितिखंडकं तु संख्यगुणं ।
पल्योपमस्थितिसत्त्वं, भवति विशेषाधिकं ततः ॥१६१॥

द्वितीयकरणस्य प्रथमे, स्थितिखण्डविशेषकं तु तृतीयस्य ।
करणस्य प्रथमसमये, दर्शनमोहस्य स्थितिसत्त्वम् ॥१६२॥

दर्शनमोहोनानां, बंधः सत्त्वं च अवरं वरकं च ।
संख्येयगुणितक्रम, त्रायस्त्रिंशदत्र पदसंख्या ॥१६३॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी का तौ अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तैं पहले समयनि विषैं संभवता अर आयु बिना अन्य कर्मनि का अनिवृत्तिकरण काल का अंत भाग विषैं संभवता अैसा जो जघन्य अनुभाग खण्डोत्करण काल सो संख्यात आवली मात्र है तौ भी वक्ष्यमाण सर्व स्थाननि तैं स्तोक है ।१। तातैं याका संख्यातवां भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जाका प्रारंभ भया अैसा उत्कृष्ट अनुभाग खंडोत्करण का काल है ।२। तातैं संख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का अंत भाग विषैं संभवता अैसा जघन्य स्थिति कांडकोत्करण काल है ।३। तातैं याका संख्यातवां भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण की आदि विषैं संभवता अैसा उत्कृष्ट स्थिति कांडकोत्करण का काल है ।१५३।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तातैं संख्यात गुणा कृतकृत्य वेदक का काल है ।५। तातैं संख्यातगुणा अष्ट वर्ष करने का समय तें लगाय कृतकृत्य वेदक का अंत समय पर्यंत सम्यक्त्व मोहनी का क्षपणा का काल है ।६। तातैं संख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का काल है ।७। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का काल है ।८। तातैं अनिवृत्तिकरण काल अर याका संख्यातवां भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जाका प्रारंभ भया असा गुणश्रेणी आयाम है ।१५४।

टीका – तातैं संख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनी का द्विचरम स्थिति कांडक का आयाम है ।१०। तातैं संख्यातगुणा सम्यक्त्व मोहनी को अंत स्थितिकांडक का आयाम है ।११। तातैं संख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति का प्रथम कांडक आयाम है ।१२। तातैं संख्यातगुणा कृतकृत्यवेदक का प्रथम समय विषैं संभवता जो ज्ञानावरणादिक कर्मनि का स्थितिबंध, ताका जघन्य आबाधा है ।१३। तातैं संख्यात-गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता स्थितिबंध का उत्कृष्ट आबाधा काल है ।१४। इहां पर्यंत ए सर्व काल प्रत्येक यथासंभव अंतर्मुहूर्त मात्र ही जानने । तातैं संख्यातगुणी सम्यक्त्व मोहनी की अवशेष अष्ट वर्ष प्रमाण स्थिति है ।१५५।

टीका – तातैं असंख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष मात्र स्थिति करने के अर्थि पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र अंत का स्थिति कांडक आयाम है ।१६। तातैं उच्छिष्टावली घाटि अष्ट वर्ष मात्र विशेष करि अधिक मिश्रमोहनी का अंत का स्थिति कांडक आयाम है ।१७। तातैं असंख्यात गुणा अंत स्थिति कांडक की अंत फालि का द्रव्य कौं मिश्र मोहनी विषैं संक्रमण करि मिथ्यात्व का क्षय करने का समय तैं अनंतरवर्ती समय विषैं संभवता मिश्रमोहनी व सम्यक्त्व मोहनी का प्रथम स्थिति कांडक आयाम है ।१८। तातैं असंख्यात गुणा मिथ्यात्व का सत्व द्रव्य अंत कांडक प्रमाण अवशेष जहां रहैं, तिस काल विषैं संभवता मिश्रमोहनी वा सम्यक्त्व मोहनी का अंत कांडक का आयाम है ।१५६।

टीका – तातैं मिथ्यात्व का सत्त्व जिस काल विषैं पाइए, तिस विषैं मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी का अंत कांडक का घात भए पीछें अवशेष रही जो तिन दोउनि की नीचे की स्थिति पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र, ताकरि अधिक मिथ्यात्व का अंत कांडक का आयाम है ।१५७।

टीका – तातैं असंख्यात गुणा दर्शन मोहत्रिक की दूरापकृष्टि नामा स्थिति विषैं प्राप्त भया असा पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र स्थिति कांडक आयाम है ।२१।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तातैं संख्यात गुणा दूरापकृष्टि स्थिति कौं कारण ऐसा पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र स्थिति कांडक आयाम संख्यात गुणा है ।२२।१५६।

टीका –तातैं संख्यात गुणा पल्य मात्र अवशेष स्थिति होतैं पाइए ऐसा द्वितीय स्थिति कांडक का आयाम है ।२३। तातैं संख्यात गुणा पल्य मात्र स्थिति कौं कारण-भूत ऐसा पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थिति कांडक आयाम है ।२४। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जाका प्रारंभ भया जो जघन्य स्थिति कांडक ताका आयाम है ।२५।१६०।

टीका – तातैं संख्यात गुणा पल्य मात्र अवशेष स्थिति विषैं प्राप्त ऐसा पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र प्रथम कांडक का आयाम है ।२६। तातैं पल्य का संख्यातवां भाग मात्र विशेष करि अधिक पल्य मात्र स्थिति सत्त्व है ।२७।१६१।

टीका – तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जघन्य अर उत्कृष्ट कांडकनि विषैं बीचि के विशेष का प्रमाण पल्य का संख्यातवां भाग करि हीन पृथक्त्व सागर प्रमाण है ।२८। तातैं संख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं संभवता दर्शन मोह का स्थितिसत्व है ।२६। तातैं संख्यात गुणा कृतकृत्य वेदक का प्रथम समय विषैं संभवता दर्शन मोह बिना अन्य कर्मनि का जघन्य स्थितिबंध है ।३०। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता तिनही कर्मनि का उत्कृष्ट स्थिति बंध है ।३१। तातैं संख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का अंत भाग विषैं संभवता तिन ही कर्मनि का जघन्य स्थिति सत्त्व है ।३२। तातैं संख्यात गुणा अपूर्व-करण का प्रथम समय विषैं संभवता तिनही कर्मनि का उत्कृष्ट स्थिति सत्व है ।३३। ऐसैं दर्शन मोह की क्षपणा का अवसर विषैं संभवते अल्प बहुत्व के तेतीस स्थान हैं ।१६२–१६३।

सत्तण्हं पयडीणं, खयादु खइयं तु होदि सम्मत्तं ।
मेरु व णिप्पकंपं, सुणिम्मलं अक्खयमणंतं ॥१६४॥

दंसणमोहे खविदे, सिज्झदि तत्थेव तदियतुरियभवे ।
णादिक्कदि तुरियभवे, ण विणस्सति सेससम्मं व ॥१६५॥

सत्तण्हं पयडीणं, खयादु अवरं तु खइयलद्धी दु ।
उक्कस्सखइयलद्धी, घाइचउक्कखएण हवे ॥१६६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उवणेउमंगलं वो, भवियजणा जिणवरस्स कमकमलजुयं ।
जसकुलिसकलससत्थियससंकसंखंकुसादिलक्खणभरियं ॥१६७॥

सप्तानां प्रकृतीनां, क्षयात् क्षायिकं तु भवति सम्यक्त्वम् ।
मेरुरिव निष्प्रकंपं, सुनिर्मलमक्षयमनंतम् ॥१६४॥

दर्शनमोहे क्षपिते, सिद्धयति तत्रैव तृतीयतुर्यभवे ।
नातिक्रामति तुर्यभवं, न विनश्यति शेषसम्यगिव ॥१६५॥

सप्तानां प्रकृतीनां, क्षयादवरा तु क्षायिकलब्धिस्तु ।
उत्कृष्टक्षायिकलब्धिर्घातिचतुष्कक्षयेण भवेत् ॥१६६॥

उपनयतु मंगलं वो, भविकजनान् जिनवरस्य क्रमकमलयुगं ।
झषकुलिशकलशशस्थिकशशांकशंखांकुशादिलक्षणभरितम् ॥१६७॥

टीका – अनंतानुबंधी चतुष्क, दर्शन मोहत्रिक इन सात प्रकृतिनि का क्षय तैं क्षायिक सम्यक्त्व हो है; सो निष्कंप कहिए निश्चल है । सुनिर्मल कहिए शंकादि मल करि रहित है । अक्षय कहिए शिथिलता के अभाव तैं गाढा है । अनंत कहिए अंत रहित है ।१६४।

दर्शन मोह का क्षय होतें तिस ही भव विषैं वा तीसरा भव विषैं वा मनुष्य तिर्यंच का पूर्वें आयु बांध्या होइ तौ भोगभूमि अपेक्षा चौथा भव विषैं सिद्ध पद पावै । चौथा भव कौं उलंघै नाहीं । बहुरि औपशमिक क्षायोपशमिक सम्यक्त्ववत् यहु नाश कौं प्राप्त न हो है ।१६५।

सात प्रकृतिनि के क्षय तैं असंयत सम्यग्दृष्टी कैं क्षायिक सम्यक्त्वरूप जघन्य क्षायिक लब्धि हो है । बहुरि च्यारि घातिया कर्मनि के क्षय तैं परमात्मा कैं केवल ज्ञानादि रूप उत्कृष्ट क्षायिक लब्धि हो है ।१६६।

विशेष–१६७ नम्बर की गाथा भाषा टीका में नहीं है । उसका अर्थ यह है कि–मत्स्य, वज्र, कलश, शंख आदि नाना शुभ लक्षणों से सुशोभित जिनेंद्र भगवान् के चरण कमल भव्य लोगों को मंगल प्रदान करें ।

॥ इति क्षायिकसम्यक्त्वप्ररूपणं समाप्तम् ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

तीसरा अधिकार : चारित्रलब्धि

दुविहा चरित्तलद्धी, देसे सयले य देसचारित्तं ।
मिच्छो अयदो सयलं, तेवि व देसो य लब्भेई[1] ॥१६८॥

द्विधा चारित्रलब्धिः, देशे सकले च देशचारित्रम् ।
मिथ्योऽयतः सकलं, तावपि च देशश्च लभते ॥१६८॥

टीका – चारित्र की लब्धि कहिए प्राप्ति, सो चारित्रलब्धि देश, सकल भेद तैं दोय प्रकार है । तहां देश चारित्र कौं मिथ्यादृष्टी वा असंयत सम्यग्दृष्टी प्राप्त हो है । अर सकल चारित्र कौं ते देऊ अर देशसंयत प्राप्त हो है ।

अंतोमुहुत्तकाले, देसवदी होहिदि त्ति मिच्छो हु ।
सोसरणो सुज्झंतो, करणं पि करेदि सगजोग्गं[2] ॥१६९॥

अंतर्मुहूर्तकाले, देशव्रती भविष्यतीति मिथ्यो हि ।
सापसरणः शुध्यन् करणान्यपि करोति स्वकयोग्यम् ॥१६९॥

टीका – अंतर्मुहूर्त काल पीछैं जो देशव्रती होसी, सो मिथ्यादृष्टी जीव समय समय अनंत गुणी विशुद्धता करि वर्धमान हो तौ आयु बिना सात कर्मनि का बंध वा सत्त्व अंतःकोडाकोडी मात्र अवशेष करने करि तौ स्थिति बंधापसरण कौं करता अर अशुभ कर्मनि का अनुभाग अनंतवां भाग मात्र करने करि अनुभागबंधापसरण कौं करता अपने करण योग्य परिणाम कौं करै है ।

मिच्छो देसचरित्तं, उवसमसम्मेण गिण्हमाणो हु ।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा, तिकरणचरिमम्हि गेण्हदि हु[3] ॥१७०॥

मिथ्यो देशचारित्रं, उपशमसम्येन गृह्णन् हि ।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव, त्रिकरणचरमे गृह्णाति हि ॥१७०॥

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १०७ ।
२ जलधवला भाग–१३, पृष्ठ १२४ ।
३ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ११३ ।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अनादि वा सादि मिथ्यादृष्टी जीव उपशम सम्यक्त्व सहित देश चारित्र कौं ग्रहै है सो दर्शन मोह का उपशम विधान जैसैं पूर्वैं वर्णन कीया है, तैसैं ही विधान करि तीन करणनि का अंत समय विषैं देश चारित्र कौं ग्रहै है । प्रकृति-बंधापसरण स्थितिबंधापसरण आदि जे कार्य विशेष तहां कहे हैं ते सर्व हो हैं, विशेष किछू नाहीं ।

मिच्छो देसचरित्तं, वेदगसम्मेण गेण्हमाणो हु ।
दुकरणचरिमे गेण्हदि, गुणसेढी णत्थि तक्करणे[1] ॥१७१॥

सम्मत्तुप्पत्तिं वा, थोवबहुत्तं च होदि करणाणं ।
ठिदिखंडसहस्सगदे, अपुव्वकरणं समप्पदि हु[2] ॥१७२॥

मिथ्यो देशचारित्रं, वेदकसम्येन गृह्णन् हि ।
द्विकरणचरमे गृह्णाति, गुणश्रेणी नास्ति तत्करणे ॥१७१॥

सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव, स्तोकबहुत्वं च भवति करणानाम् ।
स्थितिखंडसहस्रगतं, अपूर्वकरणं समाप्यते हि ॥१७२॥

टीका – सादि मिथ्यादृष्टी जीव वेदक सम्यक्त्व सहित देश चारित्र कौं ग्रहण करै, ताकैं अधःकरण, अपूर्वकरण ए दोय ही करण होंइ; तिन विषैं गुणश्रेणी निर्जरा न हो है, अन्य स्थिति खंडादिक सर्व कार्य हो हैं, सो अपूर्वकरण का अंत समय विषैं युगपत् वेदक सम्यक्त्व अर देशचारित्र कौं ग्रहै है । जातैं अनिवृत्तिकरण बिना ही इन की प्राप्ति संभवै है । तहां प्रथमोपशम सम्यक्त्व का उत्पत्तिवत् करणनि का अल्प बहुत्व है; तातैं इहां अधःकरण काल तैं अपूर्वकरण का काल संख्यातवें भाग प्रमाण है । बहुरि अपूर्वकरण का काल विषैं संख्यात हजार स्थिति खंड भएं अपूर्वकरण का काल समाप्त हो है ।

अैसैं ही असंयत वेदक सम्यग्दृष्टी भी दोय करण का अंत समय विषैं देश चारित्र कौं प्राप्त हो है । मिथ्यादृष्टी ही का व्याख्यान तैं सिद्धांत के अनुसारि असंयत का भी ग्रहण करना । इहां उपशम सम्यक्त्व का तौ अभाव, तातैं तिस संबंधी गुणश्रेणी नाहीं अर देश संयत का अब ताईं ग्रहण भया नाहीं तातैं तिस सम्बन्धी

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १२१
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १२२

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणश्रेणी नाहीं अर वेदक सम्यक्त्व गुणश्रेणी का कारण है नाहीं, तातैं इहां अपूर्व करण विषैं गुणश्रेणी का अभाव कह्या है ।

बहुरि कर्मनि का उपशम वा क्षय विधान ही विषैं अनिवृत्तिकरण हो है । क्षयोपशम विषैं होता नाहीं, तातैं अनिवृत्तिकरण न कह्या असा जानना ।

से काले देसवदी, असंखसमयप्पबद्धमाहरियं ।
उदयावलिस्स बाहिं, गुणसेढीमवट्ठिदं कुणदि[1] ॥१७३॥

तस्मिन् काले देशव्रती, असंख्यसमयप्रबद्धमाहृत्य ।
उदयावलेर्बाह्यं, गुणश्रेणीमवस्थितां करोति ॥१७३॥

टीका – अपूर्वकरण का अंत समय के अनंतरवर्ती समय विषैं जीव देशव्रती होइ करि अपने देशव्रत का काल विषैं आयु बिना अन्य कर्मनि का सर्व सत्त्व द्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार मात्र असंख्यात का भाग देइ एक भाग विषैं असंख्यात समय प्रबद्ध प्रमाण द्रव्य कौं ग्रहि करि ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ बहु-भाग उपरितन स्थिति विषैं देना, अवशेष एक भाग कौं असंख्यात लोक का भाग देइ एक भाग उदयावली विषैं देना अरु बहुभाग असंख्यात समयप्रबद्ध मात्र है, सो गुण-श्रेणी आयाम विषैं देना सो यहु गुणश्रेणी आयाम अवस्थित है, गलितावशेष नाहीं है अर प्रथमोपशम सम्यक्त्व संबंधी गुणश्रेणी आयाम तैं संख्यात गुणा घटता है । असैं देशव्रती होइ उदयावली तैं बाह्य अवस्थिति गुणश्रेणी करै है ।

दव्वं असंखगुणियक्कमेण एयंतबड्ढिकालो त्ति ।
बहुठिदिखंडे तीदे, अधापवत्तो हवे देसो[2] ॥१७४॥

द्रव्यमसंख्यगुणितक्रमेण एकांतवृद्धिकाल इति ।
बहुस्थितिखंडेऽतीते, अधाप्रवृत्तो भवेद्देशः ॥१७४॥

टीका – देशसंयत का प्रथम समय तैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत समय-समय अनंत गुणा विशुद्धता करि बधै है, सो याकौं एकांत वृद्धि कहिए, सो याका काल विषै समय-समय असंख्यात गुणा क्रम करि द्रव्य कौं अपकर्षण करि अवस्थिति गुणश्रेणी

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२४, १२५

२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२४

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आयाम विषैं निक्षेपण करै है। तहां एकांत वृद्धि का काल विषैं स्थिति कांडकादि कार्य हो है। बहुरि बहुत स्थिति खंड भएं एकांत वृद्धि का काल समाप्त होने के अनंतरि विशुद्धता की वृद्धि रहित होइ, स्वस्थान देशसंयत होइ याकौं अधाप्रवृत्त देश संयत भी कहिए ; ताका काल जघन्य अंतर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट देशोन कोडि पूर्ववर्ष प्रमाण है।

ठिदिरसघादो णत्थि हु, अधापवत्ताभिधाणदेसस्स।
पडिउट्ठदेमुहुत्तं, संतेण हि तस्स करणदुगा[1] ॥१७५॥

स्थितिरसघातो नास्ति हि, अधाप्रवृत्ताभिधानदेशस्य।
प्रतिपतिते मुहूर्तं, संयतेन हि तस्य करणद्विकम् ॥१७५॥

टीका – अधाप्रवृत्त देशसंयत का काल विषैं स्थिति खंडन वा अनुभाग खंडन न हो है। जो एकांत वृद्धि देशसंयत का अंत समय विषैं घात कीए पीछैं अवशेष स्थिति अनुभाग रह्या सोई तहां रहै है। बहुरि जो जीव तीव्र संक्लेश का कारण बाह्य निमित्त बिना केवल अंतरंग कर्म का उदय करि निपज्या संक्लेश करि देशसंयत तैं भ्रष्ट होइ करि असंयत सम्यग्दृष्टी होइ तहां स्तोक अंतर्मुहूर्त काल मात्र रहि शीघ्र ही देश संयम कौं ग्रहै ताकैं भी स्थिति अनुभाग कांडक का घात न हो है, जातैं दोय करण कीएं बिना ही यहु देशसंयम कौं ग्रहै है। बहुरि जो जीव बाह्य कारण तैं सम्यक्त्व वा देशसंयम तैं भ्रष्ट होइ करि मिथ्यादृष्टी होइ तहां बडा अंतर्मुहूर्त वा संख्यात असंख्यात वर्ष पर्यंत रहि बहुरि वेदक सम्यक्त्व सहित देशसंयम कौं ग्रहै, ताकैं अधः-प्रवृत्त, अपूर्वकरण हो है। तातैं स्थिति अनुभाग कांडक घात भी हो है।

देसो समये समये, सुज्झंतो संकिलिस्समाणो य।
चउवड्ढिहाणिदव्वादवट्ठिदं कुणदि गुणसेढिं[2] ॥१७६॥

देशः समये समये, शुध्यन् संक्लिश्यन् च।
चतुर्वृद्धिहानिद्रव्यादवस्थितां करोति गुणश्रेणीम् ॥१७६॥

टीका – अधाप्रवृत्त देशसंयत जीव, सो कदाचित् विशुद्ध होइ कदाचित् संक्लेशी होइ तहां विवक्षित कर्म का पूर्व समय विषैं जो द्रव्य अपकर्षण कीया तातैं अनं-

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२७
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२६, १३०

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तर समय विषैं विशुद्धता की वृद्धि के अनुसारि कदाचित् असंख्यातवें भाग बधता कदाचित् संख्यातवां भाग बधता, कदाचित् संख्यात गुणा, कदाचित् असंख्यात गुणा द्रव्य कौं अपकर्षण करि गुणश्रेणी विषैं निक्षेपण करै है। बहुरि विशुद्धता की हानि के अनुसारि कदाचित् असंख्यातवें भाग घटता, कदाचित् संख्यातवें भाग घटता, कदाचित् संख्यात गुणा घटता, कदाचित् असंख्यात गुणा घटता द्रव्य कौं अपकर्षण करि गुणश्रेणी विषैं निक्षेपण करै है। असैं अधाप्रवृत्त देश संयत का सर्व काल विषैं समय समय यथासंभव चतुःस्थान पतित वृद्धि हानि लीएं गुणश्रेणी विधान पाइए है।

बिदियकरणादु जावय, देसस्सेयंतवड्ढिचरिमे त्ति।
अप्पाबहुगं वोच्छं, रसखंडद्धाण पहुदीणं[1] ॥१७७॥

द्वितीयकरणात् यावत्, देशस्यैकांतवृद्धिचरमे इति।
अल्पबहुत्वं वक्ष्ये, रसखण्डाद्धानां प्रभृतीनाम् ॥१७७॥

टीका – अपूर्वकरण तैं लगाय एकांत वृद्धि देशसंयत का अंत पर्यंत सम्भवते जे जघन्य अनुभागखंडोत्करण कालादिकरूप अठारह स्थान, तिनि का अल्पबहुत्व कहौंगा।

अंतिमरसखंडुक्कीरणकालादो दु पढमओ अहिओ।
चरिमट्ठिदिखंडुक्कीरणकालो संखगुणिदो हु[2] ॥१७८॥

पढमट्ठिदिखंडुक्कीरणकालो साहियो हवे तत्तो।
एयंतवड्ढिकालो, अपुव्वकालो य संखगुणियकमा[3] ॥१७९॥

अवरा मिच्छतियद्धा, अविरद तह देससंजमद्धा य।
छप्पि समा संखगुणा, तत्तो देसस्स गुणसेढी[4] ॥१८०॥

चरिमाबाहा तत्तो, पढमाबाहा य संखगुणियकमा।
तत्तो असंखगुणियो, चरिमट्ठिदिखंडओ णियमा[5] ॥१८१॥

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३२
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३३
३. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३३, १३४
४. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३४
५. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३५

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पल्लस्स संखभागं, चरिमट्ठिदिखंडयं हवे जम्हा ।
तम्हा असंखगुणियं, चरिमट्ठिदिखंडयं होई ॥१८२॥

पढमे अवरो पल्लो, पढमुक्कस्सं च चरिमठिदिबंधो ।
पढमो चरिमं पढमट्ठिदिसंतं संखगुणियकमा[1] ॥१८३॥

अंतिमरसखंडोत्करणकालतस्तु प्रथमोऽधिकः ।
चरमस्थितिखंडोत्करणकालः संख्यगुणितो हि ॥१७८॥

प्रथमस्थितिखंडोत्करणकालः साधिको भवेत् ततः ।
एकांतवृद्धिकालेः, अपूर्वकालश्च संख्यगुणितक्रमः ॥१७९॥

अवरा मिथ्यत्रिकाद्धा, अविरता तथा देशसंयमाद्धा च ।
षडपि समाः संख्यगुणा, ततो देशस्य गुणश्रेणी ॥१८०॥

चरमाबाधा ततः, प्रथमाबाधा च संख्यगुणितक्रमा ।
ततः असंख्यगुणितः, चरमस्थितिखंडको नियमात् ॥१८१॥

पल्यस्य संख्यभागं, चरमस्थितिखंडकं भवेत् यस्मात् ।
तस्मादसंख्यगुणितं, चरमं स्थितिखंडकं भवति ॥१८२॥

प्रथमे अवरः पल्यः, प्रथमोत्कृष्टं च चरमस्थितिबंधः ।
प्रथमः चरमं प्रथमस्थितिसत्त्वं संख्यगुणितक्रमाणि ॥१८३॥

टीका – सर्व तैं स्तोक तौ देशसंयत का एकांतवृद्धि काल का अंत विषैं संभवता जघन्य अनुभाग खंडोत्करण काल है ।१। तातैं किछू विशेष करि अधिक अपूर्व करण का प्रथम समय विषैं सम्भवता उत्कृष्ट अनुभाग खंडोत्करण काल है ।२। तातैं संख्यात गुणा देशसंयत का एकांत वृद्धि काल का अंत समय विषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडकोत्करण काल है ।३।१७८।

तातैं किछु विशेष करि अधिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता उत्कृष्ट स्थिति खंडोत्करण काल है ।४। तातैं संख्यात गुणा एकांत वृद्धि का काल है ।५। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का काल है ।६।१७९।

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३५, १३७

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तातैं संख्यात गुणा मिथ्यात्व अर सम्यग्मिथ्यात्व अर सम्यक्त्व मोहनी, इन तीनों का उदय काल अर असंयम अर देशसंयम अर सकल संयम इन छहौं का जघन्य काल परस्पर समान है ।७। तातैं संख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जाका आरंभ भया असा देशसंयम सम्बन्धी गुणश्रेणी आयाम है ।८।१८०।

तातैं संख्यात गुणा एकांतवृद्धि का अंत समय विषैं सम्भवते स्थिति बंध का जघन्य आबाधा काल है ।९। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवते स्थितिबंध का उत्कृष्ट आबाधा काल है ।१०। इहां पर्यंत ए कहे सर्व काल, ते प्रत्येक अंतर्मुहूर्त मात्र ही जानने । तातैं असंख्यात गुणा एकांतवृद्धिका अंत समय विषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडक आयाम है ।११।१८१।

यहु कह्या अंत विषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडकायाम सो पल्य का संख्यातवां भाग मात्र है । तातैं पूर्वोक्त अंतर्मुहूर्त काल तैं यहु अन्त खण्ड असंख्यात गुणा कह्या है ।१८२।

तातैं संख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता जघन्य स्थिति कांडक आयाम है ।१२। तातैं संख्यात गुणा पल्य है ।१३। तातैं संख्यात गुणा अपूर्व करण का प्रथम विषैं संभवता पृथक्त्व सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति कांडकायाम है ।१४। तातैं संख्यात गुणा एकांतवृद्धि का अंत समय विषैं संभवता असा जघन्य स्थितिबंध है ।१५। तातैं संख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता असा उत्कृष्ट स्थितिबंध है ।१६। तातैं संख्यात गुणा एकांतवृद्धि का अंत समय विषै संभवता असा जघन्य स्थिति सत्त्व है ।१७। तातैं संख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता असा उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है ।१८।१८३। असैं काल का अल्प बहुत्व के स्थान कहि ।

देश संयम विषैं परिणामनि की विशुद्धतारूप लब्धि, ताका अल्प बहुत्व कहिए है—

अवरवरदेसलद्धी, से काले मिच्छसंजमुववण्णे ।
अवरादु अणंतगुणा, उक्कस्सा देसलद्धी दु[1] ।।१८४।।

अवरवरदेशलब्धिः, स्वकाले मिथ्यसंयममुपपन्ने ।
अवरादनंतगुणा, उत्कृष्टा देशलब्धिस्तु ।।१८४।।

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ सं० १३९–१४१ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – जो जीव देशसंयम का घाती जो कर्म, ताके उदय के वश तैं देश-संयम तैं पडतो जो मिथ्यात्व के सन्मुख भया मनुष्य, ताके तिस देशसंयम का अंत समय विषैं जघन्य देशसंयम लब्धि है। बहुरि अनंत गुणी विशुद्धता करि देशसंयम के उत्कृष्टपना कौं पाइ अनंतर समय विषैं सकल संयम कौं प्राप्त होसी असा मनुष्य कैं उत्कृष्ट देशसंयम लब्धि हो है। बहुरि जघन्य देशसंयम के अविभाग प्रतिच्छेदनि तैं अनंतानंत गुणा जीवराशि प्रमाण मात्र गुणकार करि गुणित उत्कृष्ट देशसंयम के अविभाग प्रतिच्छेद हैं।

अवरे देसट्ठाणे, होंति अणंताणि फड्ढयाणि तदो।
छट्ठाणगदा सव्वे, लोयाणमसंखछट्ठाणा[1] ॥१८५॥

अवरे देशस्थाने, भवंत्यनन्तानि स्पर्धकानि ततः।
षट्स्थानगतानि सर्वाणि लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ॥१८५॥

टीका – सर्व तैं जघन्य पूर्वोक्त देशसंयम का स्थान, ता विषैं स्पर्धक कहिए अविभाग प्रतिच्छेद अनंतानंत पाइए हैं। ते उत्कृष्ट देश संयम के अविभाग प्रति-च्छेदनि तैं अनंतानंत गुणे घाटि हैं तौ भी सर्व जीवराशि तैं अनंत गुणे हैं। बहुरि इस जघन्य स्थान तैं लगाय असंख्यात लोक मात्र देशसंयम लब्धि के स्थान हैं। एक जीव कैं एक काल विषैं जो संभवै ताकां नाम स्थान जानना। ते षट्स्थानपतित वृद्धि लीएं हैं, सो इनिका अनुक्रम गोम्मट्टसार का ज्ञान मार्गणा अधिकार विषैं पर्याय समास श्रुतज्ञान का स्थान वर्णन विषैं जैसैं कीया है तैसैं जानना, सो एक अधिक सूच्यंगुल कौं पांच बार मोडि परस्पर गुणैं, जो प्रमाण होइ, तितने स्थाननि विषैं जो एक बार षट्स्थानपतित वृद्धि पूर्ण होइ तौं देशसंयत के असंख्यात लोक प्रमाण सर्व स्थाननि केती बार होइ असैं त्रैराशिक कीएं देशसंयत के स्थाननि विषैं प्रतिपादित पूर्व कहे, तिनि विषैं वा मिलि करि स्थाननि विषैं असंख्यात लोक मात्र बार षट्स्थानपतित वृद्धि संभवै है।

तत्थय पडिवायगया, पडिवज्जगया त्ति अणुभयगया त्ति।
उवरुवरिलद्धिठाणा, लोयाणमसंखछट्ठाणा[2] ॥१८६॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १४३–१४६।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १४६, १४७, १४६।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तत्र च प्रतिपातगता, प्रतिपद्यगता इति अनुभयगता इति ।
उपर्युपरि लब्धिस्थानानि, लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ।।१८६।।

टीका – तहां देशसंयम के स्थान तीन प्रकार हैं – १ प्रतिपातगत, २ प्रतिपद्यमानगत, ३ अनुभयगत । तहां देशसंयम तैं भ्रष्ट होतैं अंत समय विषैं संभवते जे स्थान, ते **प्रतिपातगत** हैं । बहुरि देशसंयम के प्राप्त होतैं प्रथम समय विषैं संभवते जे स्थान ते **प्रतिपद्यमानगत** हैं । इन बिना अन्य समयनि विषैं संभवते जे स्थान ते **अनुभयगत** हैं । ते उपरि उपरि हैं । सोई कहिए है–

देशसंयम का जो जघन्य स्थान सब तैं संभवते थोरी विशुद्धता युक्त सो तौ नीचैं ही नीचै लिख्या । ताके ऊपरि तातैं अनंतवां भाग मात्र अधिक विशुद्धता युक्त द्वितीय स्थान लिख्या । ग्रैसैं क्रम तैं उपरि-उपरि उत्कृष्ट स्थान पर्यंत रचना भई । तहां जघन्य स्थान आदि केतेइक नीचे के स्थान, ते तौ प्रतिपात रूप जानने । बहुरि तिनके ऊपरि जिनका कोई स्वामी नाहीं, ग्रैसे असंख्यात लोक मात्र स्थान षट्स्थान पतित वृद्धि लीएं अंतराल विषैं होंइ तब तिनके ऊपरि प्रतिपद्यमान स्थान पाइए हैं । बहुरि तिनके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान षट्स्थान पतित वृद्धि लीएं अंतराल विषैं होंइ तब तिनके ऊपरि अनुभयगत स्थान पाइए हैं । तहां प्रतिपातस्थान थोरे हैं; तेऊ असंख्यात लोक मात्र हैं अर तिनतैं असंख्यात लोक गुणे प्रतिपद्यमान स्थान हैं । अर तिनतैं असंख्यात लोक गुणे अनुभय स्थान हैं ।

णरतिरिये तिरियणरे, अवरं अवरं वरं वरं तिसु वि ।
लोयाणमसंखेज्जा, छट्ठाणा होंति तम्मज्झे ।।१८७।।

नरतिरश्चि तिर्यग्नरे, अवरं अवरं वरं वरं त्रिष्वपि ।
लोकानामसंख्येयानि, षट्स्थानानि भवंति तन्मध्ये ।।१८७।।

टीका – देशसंयम का सर्व तैं जघन्य प्रतिपात स्थान मनुष्य कैं हो हैं । तातैं ऊपरि षट्स्थान पतित वृद्धि लीएं असंख्यात लोक मात्र प्रतिपात स्थान ग्रैसे हैं, जे मनुष्य ही कैं होंइ तातैं परैं तिर्यंच कैं संभवता जघन्य प्रतिपात स्थान होइ । तातैं उपरि मनुष्य वा तिर्यंच दोऊनि कैं संभवै ग्रैसे तो असंख्यात लोक प्रमाण स्थान होइ उपरि तिर्यंच का उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान हैं । तातैं परैं मनुष्य ही कैं संभवै ग्रैसे असंख्यात लोक मात्र स्थान होंइ, उपरितन मनुष्य का उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान है । ताके

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान ऐसे हैं जिनका कोऊ स्वामी नाहीं, ते किसी जीव कैं न होंइ तिनका अंतराल करि तातैं परैं मनुष्य का जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान है, तातैं परैं मनुष्य कैं होइ ऐसे असंख्यात लोक मात्र स्थान होइ परैं तिर्यंच का जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान है। तातैं परैं मनुष्य वा तिर्यंच कैं संभवते ऐसे असंख्यात लोक मात्र स्थान होंइ उपरि तिर्यंच का उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान हो है। तातैं उपरि मनुष्य ही कैं संभवते असंख्यात लोक मात्र स्थान होइ। उपरि मनुष्य का उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान है। तातैं परैं असंख्यात लोक मात्र स्थान ऐसे हैं जिनका कोऊ स्वामी नाहीं; तिनि का अंतराल करि परै मनुष्य का जघन्य अनुभय स्थान हो है। तातैं परैं मनुष्य ही कैं संभवते असंख्यात लोक मात्र स्थान होंइ। उपरि तिर्यंच का जघन्य अनुभय स्थान है। तातैं परैं मनुष्य वा तिर्यंच कैं संभवते असंख्यात लोक मात्र स्थान होंइ। उपरि तिर्यंच का उत्कृष्ट अनुभय स्थान है। तातैं परैं मनुष्य ही कैं संभवते असंख्यात लोक मात्र स्थान होंइ। उपरि मनुष्य का उत्कृष्ट अनुभय स्थान हो है। ऐसैं क्रम तैं मनुष्य तिर्यंच का जघन्य अर जघन्य, उत्कृष्ट अर उत्कृष्ट प्रत्येक प्रतिपात, प्रतिपद्यमान, अनुभय स्थान विषैं संभवै हैं, ते जानने। अर बीचि में अंतराल स्थान जानने, ते स्थान असंख्यात लोक मात्र षट्स्थानपतित वृद्धि युक्त हैं। ऐसैं गाथा का अर्थ समझना।

पडिवाददुगवरवरं, मिच्छे अयदे अणुभयगजहण्णं।
मिच्छवरबिदियसमये, तत्तिरियवरं तु सट्ठाणे[1] ॥१८८॥

प्रतिपातद्विकावरवरं, मिथ्ये अयते अनुभयगजघन्यं।
मिथ्यावरद्वितीयसमये, तत्तिर्यग्वरं तु स्वस्थाने ॥१८८॥

टीका – प्रतिपात नाम संयम तैं भ्रष्ट होने का है, सो संक्लेश परिणामनि तैं संयम तैं भ्रष्ट होतैं देशसंयत का अंत समय विषैं प्रतिपात स्थान हो है। अर प्राप्त भया का नाम प्रतिपद्यमान स्थान है। सो देश संयत का प्रथम समय विषैं प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर दोऊ रहित का नाम अनुभय है। सो देश संयत के इनि बिना अन्य समयनि विषैं अनुभय स्थान हो है। तहां मिथ्यात्व कौं सन्मुख मनुष्य कैं जघन्य प्रतिपात स्थान हो है अर मिथ्यात्व कौं सन्मुख तिर्यंच कैं जघन्य प्रतिपात स्थान हो है। अर असंयत कौं सन्मुख तिर्यंच कैं उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान हो है। अर

१. जयधवला भाग–१३, पृ०१४९ से १५३।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

असंयत कौं सन्मुख मनुष्य कैं उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान हो है। अर मिथ्यात्व तैं चढ्या मनुष्य कैं जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर मिथ्यात्व तैं चढचा तिर्यंच कैं जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर असंयत तैं चढचा तिर्यंच कैं उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर असंयत तैं चढचा मनुष्य के उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर मिथ्यादृष्टी तैं भया देशसंयत का दूसरा समय विषैं मनुष्य कैं जघन्य अनुभय स्थान हो है। अर मिथ्यादृष्टी तैं भया देशसंयत का दूसरा समय विषैं तिर्यंच कैं जघन्य अनुभय स्थान हो है। अर असंयत तैं भया देशसंयत कैं एकांत वृद्धि का अन्त समय विषैं तिर्यंच कैं उत्कृष्ट अनुभय स्थान हो है। अर असंयत तैं भया देशसंयत कैं एकांत वृद्धि का अन्त समय विषैं सकल संयम कौं सन्मुख मनुष्य कैं उत्कृष्ट स्थान हो है।

ए बारह स्थानक कहे, तिन विषैं पूर्व-पूर्व स्थान की विशुद्धता तैं उत्तर उत्तर स्थान विषैं असंख्यात लोक बार भई जो षट्स्थान पतित वृद्धि, ताकरि वर्धमान असी अनंत गुणी विशुद्धता क्रम तैं जाननी। बहुरि इतना विशेष जानना–

प्रतिपात स्थाननि विषैं मनुष्य का जघन्य तैं लगाय तिर्यंच का अनुत्कृष्ट स्थान पर्यंत जे स्थान हैं, ते तौ मिथ्यात्व कौं संमुख जीव ही कैं होंइ। अर तिर्यंच का उत्कृष्ट तैं लगाय मनुष्य का उत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं ते असंयत का सन्मुख जीव कैं ही हो हैं। बहुरि प्रतिपद्यमान स्थाननि विषैं मनुष्य का जघन्य तैं लगाय तिर्यंच का अनुत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं, ते तौ मिथ्यादृष्टी तैं देशसंयत भया, ताही कैं होंइ अर तिर्यंच का उत्कृष्ट तैं लगाय मनुष्य का उत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं, ते असंयत भया ताकैं होंइ। बहुरि अनुभय स्थाननि विषैं मनुष्य का जघन्य तैं लगाय तिर्यंच का अनुत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं, ते तौ मिथ्यादृष्टी तैं भया देशसंयत ही कैं होंइ। अर तिर्यंच का उत्कृष्ट तैं लगाय मनुष्य का उत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान हैं, ते असंयत तैं भया देश संयत ही कैं होंइ।

॥ इति देशचारित्राभिधानप्ररूपणं समाप्तम् ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अथ सकल चारित्र कौं प्ररूपै हैं—

सयलचरित्तं तिविहं, खयउवसमि उवसमं च खइयं च ।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा, उवसमसम्मेण गिण्हदो पढमं[1] ॥१८९॥

सकलचारित्रं त्रिविधं, क्षायोपशमिकं औपशमिकं च क्षायिकं च ।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव, उपशमसम्येन गृह्णन् प्रथमम् ॥१८९॥

टीका – सकल चारित्र तीन प्रकार हैं - क्षायोपशमिक, औपशमिक, क्षायिक। तहां पहला क्षायोपशमिक चारित्र सातवें वा छठे गुणस्थान विषैं पाइए है, ताकौं जो जीव **उपशम सम्यक्त्व सहित ग्रहण करै है, सो मिथ्यात्व तैं ग्रहण करै है, ताका तौ सर्व विधान प्रथमोपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति विषैं कह्या है, सो जानना ।** क्षायोपशम चारित्र कौं ग्रहता जीव पहलैं अप्रमत्त गुणस्थान कौं प्राप्त हो है ।

वेदगजोगो मिच्छो, अविरददेसो य दोण्णिकरणेण ।
देसवदं वा गिण्हदि, गुणसेढी णत्थि तक्करणे ॥१९०॥

वेदकयोगो मिथ्यो, अविरतदेशश्च द्विकरणेन ।
देशव्रतमिव गृह्णाति, गुणश्रेणी नास्ति तत्करणे ॥१९०॥

टीका – वेदक सम्यक्त्व सहित क्षायोपशम चारित्र कौं मिथ्यादृष्टी वा अविरत वा देश संयत जीव है, सो देशव्रत ग्रहणवत् अधःप्रवृत्त वा अपूर्वकरण इन दोय ही करण करि ग्रहै है । तहां करण विषैं गुणश्रेणी नाहीं है । सकल संयम का ग्रहण समय तैं लगाय गुणश्रेणी हो है ।

एत्तो उवरिं विरदे, देसो वा होदि अप्पबहुगो त्ति ।
देसो त्ति य तट्ठाणे, विरदो त्ति य होदि वत्तव्वं ॥१९१॥

अत उपरि विरते, देश इव भवति अल्पबहुकत्वमिति ।
देश इति तत्स्थाने, विरत इति च भवति वक्तव्यम् ॥१९१॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १०७

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – इहां तैं ऊपरि अल्प बहुत्व पर्यंत जैसें पूर्वें देश विरत विषैं व्याख्यान किया है तैसें सर्व व्याख्यान इहां जानि ।

विशेष इतना – वहां जहां देश विरत कह्या है, इहां तहां सकल विरत कहना सो कहिए है । अध:प्रवृत्त करणादिक के काल का अल्पबहुत्व अर प्रथमोपशम सम्यक्त्ववत् जो हजारौं स्थितिखण्ड भए अपूर्वकरण कौं समाप्त करि अनंतर समय विषैं सकल संयम कौं ग्रहै तहां प्रथम समय तैं लगाय एकांत वृद्धि का अंत समय पर्यंत समय-समय असंख्यातगुणा अैसा असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्य कौं ग्रहि अवस्थिति गुणश्रेणी करै है । तहां बहुत स्थितिकांडक भए एकांत वृद्धि का अंत समय पीछैं अनंतर समय तैं लगाय स्वस्थान सकलसंयमी हो है । तहां स्थिति अनुभाग कांडक का घात नाहीं है; गुणश्रेणी है ही । जो जीव सकल संयम तैं भ्रष्ट होइ असंयत होइ शीघ्र ही सकल संयम कौं प्राप्त होइ ताकैं करण वा स्थिति कांडकादि न हो है अर जो सकल संयम तैं भ्रष्ट होइ मिथ्यात्व कौं प्राप्त होइ तहां बडा अंतर्मुहूर्त वा बहुत काल रहि स्थिति, अनुभाग बंधाय बहुरि वेदक सम्यक्त्व सहित सकल संयम कौं ग्रहै है ताकैं दोय करण वा स्थितिकांडक घातादि हो हैं । बहुरि स्वस्थान सकल संयमी विशुद्धता की वृद्धि हानि तैं चतु:स्थान पतित वृद्धि हानि लीए द्रव्य कौं अपकर्षण करि समय समय गुणश्रेणी करै है । बहुरि जघन्य अनुभाग खंडोत्करण कालादिक अठारह स्थाननि विषैं पूर्वोक्तवत् तहां अल्प बहुत्व जानना ।

अवरे विरदट्ठाणे, होंति अणंताणि फड्ढयाणि तदो ।
छट्ठाणगया सव्वे, लोयाणमसंख छट्ठाणा ॥१९२॥

अवरे विरतस्थाने, भवंत्यनंतानि स्पर्धकानि ततः ।
षट्स्थानगतानि सर्वाणि, लोकानामसंख्यं षट्स्थानानि ॥१९२॥

टीका – सकल संयम का जघन्य स्थान विषैं अनंतानंत स्पर्धक कहिए अविभाग प्रतिच्छेद हैं, ते जीवराशि तैं अनंत गुणे जानने । तातैं गोम्मटसार का ज्ञानाधिकार विषैं पर्यायसमास के स्थाननि का अनुक्रम जैसें कह्या है तैसें षट्स्थान पतित वृद्धि लीए असंख्यात लोकमात्र स्थान हैं, तिनविषैं असंख्यात लोक मात्र बार षट्स्थान पतित वृद्धि संभवै है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तत्थ य पडिवादगया, पडिवज्जगया त्ति अणुभयगया त्ति ।
उवरुवरि लद्धिठाणा, लोयाणमसंखछट्ठाणा[1] ॥१९३॥

तत्र च प्रतिपातगता, प्रतिपद्यगता इति अनुभयगता इति ।
उपर्युपरि लब्धिस्थानानि, लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ॥१९३॥

टीका – तहां प्रतिपातगत, प्रतिपद्यमानगत और अनुभयगत ऐसें उपरि-उपरि तीन प्रकार स्थान हैं ।

भावार्थ यहु – नीचें ही नीचें तौ जघन्य स्थान लिख्या, ताके ऊपरि अनंत-भाग वृद्धि रूप द्वितीय स्थान लिख्या, ताके ऊपरि अनंत भाग वृद्धिरूप तृतीय स्थान लिख्या । ऐसें पर्याय समास श्रुतज्ञान के स्थानवत् स्थाननि की अनुक्रम तें ऊपरि-ऊपरि रचना करनी । इहां अनंत भागादिक वृद्धि विशुद्धता की अपेक्षा जाननी । तहां नीचे के स्थान प्रतिपातगत हैं । प्रतिपद्यमान तिनके ऊपरि हैं । अनुभयगत तिनके भी ऊपरिवर्ती हैं । ते प्रत्येक असंख्यात लोक मात्र हैं । तहां असंख्यात लोक मात्र बार षट्स्थान वृद्धि संभवै है ।

पडिवादगया मिच्छं, अयदे देसे य होंति उवरुवरिं ।
पत्तेयमसंखमिदा, लोयाणमसंखछट्ठाणा[2] ॥१९४॥

प्रतिपातगतानि मिथ्ये, अयते देशे च भवंति उपर्युपरि ।
प्रत्येकमसंख्यमितानि, लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ॥१९४॥

टीका – तहां प्रतिपातगत स्थान सकल संयम तें भ्रष्ट होतें ताका अंत समय विषैं पाइए है । तहां जघन्य तें लगाय असंख्यात लोक मात्र स्थान तौ मिथ्यात्व कौं जो सन्मुख होइ तिनकैं होइ । तिनके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान, जे जीव असंयत कौं सन्मुख होंइ तिनकैं हो हैं । तिनके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान, जे जीव देशसंयत कौं सन्मुख होंइ तिनके हो हैं । ऐसें प्रतिपात स्थान तीन प्रकार हैं । तहां तीनों जायगा जघन्य स्थान तौ यथायोग्य तीव्र संक्लेशवाला कैं अर उत्कृष्ट स्थान मंद संक्लेशवाला कैं हो हैं । बहुरि एक विषैं असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान संभवै हैं ।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १७५ से १७९
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १८२, १८३

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तत्तो पडिवज्जगया, अज्जमिलेच्छे मिलेच्छअज्जे य ।
कमसो अवरं अवरं, वरं वरं होदि संखं वा[1] ॥१९५॥

ततः प्रतिपद्यगता, आर्यम्लेच्छे म्लेच्छार्ये च ।
क्रमशोऽवरमवरं, वरं वरं भवति संख्यं वा ॥१९५॥

टीका – प्रतिपात स्थाननि के ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान **असे हैं** जिनका कोऊ स्वामी नाहीं, तिनिका अंतराल करि प्रतिपद्यमान स्थान हो हैं । सो सकल संयम की प्राप्ति का समय विषैं जे संभवै ते प्रतिपद्यमान स्थान जानना । तहां प्रथम आर्य खंड का मनुष्य मिथ्यादृष्टी तैं सकल संयमी भया, ताकैं जघन्य स्थान हो है । बहुरि ताके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाय **म्लेच्छ खंड का मनुष्य मिथ्यादृष्टी तैं सकल संयमी भया, ताका जघन्य स्थान हो है** । ताके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ **म्लेच्छ खंड का मनुष्य देशसंयत तैं सकल संयमी भया, ताका उत्कृष्ट स्थान हो है** । बहुरि तातैं असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ आर्य खंड का मनुष्य देश संयत तैं सकल संयमी भया, ताका उत्कृष्ट स्थान हो है । इहां असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ कह्या तहां असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान पतित वृद्धि जाननी । बहुरि इहां आर्य म्लेच्छ के जघन्य अर मध्य के बीचि के जे स्थान हैं, ते मिथ्यादृष्टी तैं वा असंयत तैं वा देशसंयत तैं सकल संयमी भए तिनके यथासंभव जानने । जातैं किछू नियम कह्या नाहीं ।

बहुरि इहां कोऊ कहै कि म्लेच्छ खंड का उपज्या मनुष्य कैं सकल संयम इहां कह्या, सो कैसै संभवै ?

ताका समाधान–जो म्लेच्छ मनुष्य चक्रवर्ती का साथि आर्यखंड विषैं आवै अर तिनसेती चक्रवर्ती आदिक कैं विवाहादि संबंध पाइए है, तिनकैं दीक्षा का ग्रहण संभवै है । अथवा म्लेच्छ की कन्या जे चक्रवर्ती आदि परणें, तिनके जे पुत्र होंइ, तिनकौं माता पक्ष करि म्लेच्छ कहिए, तिनकै दीक्षा ग्रहण संभवै है ।

तत्तोणुभयट्ठाणे, सामइयछेदजुगलपरिहारे ।
पडिबद्धा परिणामा असंखलोगप्पमा होंति[2] ॥१९६॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १८३ से १८५
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १८५, १८६

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ततोऽनुभयस्थाने, सामायिकछेदयुगलपरिहारे ।
प्रतिबद्धाः परिणामा, असंख्यलोकप्रमा भवंति ॥१९६॥

टीका – तिस उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान के ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान अैसें हैं, जिनिका कोऊ स्वामी नाहीं, तिनका अंतराल करि उपरि अनुभय स्थान है सो पूर्वोक्त दोऊ बिना अन्य समयनि विषैं जे संभवें ते अनुभय स्थान हैं ।

तहां प्रथम मिथ्यादृष्टि तैं सकल संयमी भया, ताकैं दूसरा समय विषैं सामायिक छेदोपस्थापन संबंधी जघन्य स्थान हो है । ताके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ परिहारविशुद्धि का जघन्य स्थान हो है सो यहु स्थान तिस परिहार विशुद्धि संयम तैं छूटि सामायिक छेदोपस्थापन कौं सन्मुख होतैं ताका अंत समय विषैं हो है । इहां इस संयम तैं छूटि सकल संयमी ही रह्या, तातैं याकौं सकल संयम की अपेक्षा अनुभय स्थान कह्या, प्रतिपात स्थान न कह्या । बहुरि ताके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ परिहारविशुद्धि का उत्त्कृष्ट स्थान हो है। बहुरि ताके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ सामायिक छेदोपस्थापन का उत्कृष्ट स्थान हो है । सो यहु क्षपक अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं संभवै है, अैसा जानना । अैसें जघन्य तैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत कहे जे अनुभय स्थान ते सर्व सामायिक छेदोस्थापन संबंधी संभवै हैं । परिहारविशुद्धि संबंधी स्थान कहे ते सामायिक छेदोपस्थापन विषैं भी अर तहां भी संभवै हैं; अैसा जानना ।

बहुरि अैसे ए स्थान कहे, तिनिविषैं प्रतिपात स्थान थोरे हैं, तेऊ असंख्यात लोक मात्र हैं । तिनितैं असंख्यात लोक गुणे प्रतिपद्यमान स्थान हैं । तिनतैं असंख्यात लोक गुणें अनुभय स्थान हैं । इनि सबनि कौं मिलाएं भी असंख्यात लोक प्रमाण ही सकल संयम के स्थान हो हैं, जातैं असंख्यात के भेद बहुत हैं ।

तत्तो य सुहुमसंजम, पडिवज्जय संखसमयमेत्ता हु ।
तत्तो दु जहाखादं, एयविहं संजमे होदि[1] ॥१९७॥

ततश्च सूक्ष्मसंयमं, प्रतिवर्ज्य संख्यसमयमात्रा हि ।
ततस्तु यथाख्यातमेकविधं संयमे भवति ॥१९७॥

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १ ॱ.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तिस सामायिक छेदोपस्थापन का उत्कृष्ट स्थान तैं उपरि असंख्यात लोक मात्र स्थाननि का अंतराल करि उपशम श्रेणि तैं उतरतैं अनिवृत्तिकरण के सन्मुख जीव कै अपना अंत समय विषैं संभवता ऐसा सूक्ष्म सांपराय का जघन्य स्थान हो है । ताके ऊपरि असंख्यात समय मात्र स्थान जाइ क्षपक सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषै संभवता ऐसा सूक्ष्मसांपराय का उत्कृष्ट स्थान हो है । तातैं ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थाननि का अंतराल करि यथाख्यात चारित्र का एक स्थान हो है । सो यहु सबनि तैं अनंतगुणी विशुद्धता लीएं उपशांतकषाय, क्षीणकषाय, सयोगी, अयोगी कै हो है । यामैं सर्व कषायनि का सर्वथा उपशम वा क्षय है, तातैं जघन्य, मध्य, उत्कृष्ट भेद ही नाहीं ।

पडचरिमे गहणादीससये पडिवाददुगमणुभयं तु ।
तम्मज्झे उवरिमगुणगहणाहिमुहे य देसं वा ।।१९८।।

पडिवादादीतिदयं, उवरुवरिमसंखलोगगुणिदकमा ।
अंतरछक्कपमाणं, असंखलोगा हु देसं वा ।।१९९।।

मिच्छयददेसभिण्णे, पडिवादट्ठाणगे वरं अवरं ।।
तप्पाउग्गकिलिट्ठे, तिव्वकिलिट्ठे कमे चरिमे ।।२००।।

पडिवज्जजहण्णदुगं, मिच्छे उक्कस्सजुगलमविदेसे ।
उवरिं सामइयदुगं, तम्मज्झे होंति परिहारा ।।२०१।।

परिहारस्स जहण्णं, सामयियदुगे पडंत चरिमम्हि ।
तज्जेट्ठं सट्ठाणे, सव्वविसुद्धस्स तस्सेव ।।२०२।।

सामयियदुगजहण्णं, ओघं अणियट्टिखवगचरिमम्हि ।
चरिमणियट्टिस्सुवरिं, पडंत सुहुमस्स सुहुमवरं ।।२०३।।

खवगसुहुमस्स चरिमे, वरं जहाखादमोघ जेट्ठं तं ।
पडिवाददुगा सव्वे, सामाइयछेदपडिबद्धा ।।२०४।।

पतनचरमे ग्रहणादिसमये प्रतिपाताद्विकमनुभयं तु ।
तन्मध्ये उपरिगुणग्रहणाभिमुखे च देशमिव ।।१९८।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रतिपातादित्रितयं, उपर्युपरितनमसंख्यलोकगुणितक्रमं ।
अंतरषट्कप्रमाणमसंख्यलोका हि देशमिव ॥१९९॥

मिथ्यायतदेशभिन्ने, प्रतिपातस्थानके वरमवरम् ।
तत्प्रायोग्यक्लिष्टे, तीव्रक्लिष्टे क्रमेण चरमे ॥२००॥

प्रतिपद्यजघन्यद्विकं, मिथ्ये उत्कृष्टयुगलमपि देशे ।
उपरि सामायिकद्विकं, तन्मध्ये भवंति परिहाराणि ॥२०१॥

परिहारस्य जघन्यं, सामायिकद्विके पततः चरमे ।
तज्ज्येष्ठं स्वस्थाने, सर्वविशुद्धस्य तस्येव ॥२०२॥

सामायिकद्विकजघन्यमोघं अनिवृत्तिक्षपकचरमे ।
चरमानिवृत्तेरुपरि, पततः सूक्ष्मस्य सूक्ष्मवरम् ॥२०३॥

क्षपकसूक्ष्मस्य चरमे, वरं यथाख्यातमोघज्येष्ठं तत् ।
प्रतिपातद्विकं सर्वाणि, सामायिकच्छेदप्रतिबद्धानि ॥२०४॥

टीका – संयम तैं पडतैं अंत समय विषैं अर, संयम कौं ग्रहतैं प्रथम समय विषैं क्रमतैं प्रतिपात अर प्रतिपद्यमान ए दोय स्थान हैं। बहुरि इनके बीचि वा ऊपरि के गुणस्थान कौं सन्मुख होते अनुभय स्थान हो है, सो देश संयतवत् इहां भी जानना ॥१९८॥

प्रतिपात आदि तीन प्रकार स्थान अपने अपने जघन्यतैं उत्कृष्ट पर्यंत उपरि उपरि असंख्यात लोक गुणा क्रम लीएं हैं। तिन छहौं विषैं प्रत्येक असंख्यात लोक मात्र बार षट्स्थानवृद्धि देशसंयतवत् जाननी ॥१९९॥

तहां प्रतिपातस्थान मिथ्यात्व, असंयत, देशसंयत कौं सन्मुख होने की अपेक्षा तीन भेद लीए हैं। तहां जघन्य स्थान तौ तीव्र संक्लेशवाला कैं संयम का अंत समय विषैं हो है अर उत्कृष्ट स्थान यथायोग्य मंद संक्लेशवाला कैं हो है ॥२००॥

प्रतिपद्यमान स्थान आर्य म्लेच्छ की अपेक्षा दोय प्रकार, सो तिनका जघन्य तौ मिथ्यादृष्टि तैं संयमी भया ताकैं हो है। उत्कृष्ट देशसंयत तै संयमी भया

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताकैं हो है। तिनके ऊपरि अनुभय स्थान हैं, ते सामायिक छेदोपस्थापना संबंधी हैं। तिनका जघन्य उत्कृष्ट के बीचि परिहारविशुद्धि के स्थान हैं ।।२०१।।

परिहारविशुद्धि का जघन्य स्थान तौं सामायिक छेदोपस्थापना विषैं पडता जीव कैं ताका अंत समय विषैं हो है। अर ताका उत्कृष्ट स्थान सर्व तें विशुद्ध अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती तिस ही जीव कैं एकांत वृद्धि का अंत समय विषैं हो है ।।२०२।।

सामायिक छेदोपस्थापना का जघन्य स्थान मिथ्यात्व कौं सन्मुख जीव कैं समय का अंत समय विषैं जो जघन्य संयम का स्थान सो ही है। ताका उत्कृष्ट स्थान अनिवृत्तिकरण क्षपक श्रेणिवाला, ताका अंत समय विषैं हो है। बहुरि उपशम श्रेणी विषैं पडतें सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषैं अनिवृत्तिकरण कौं सन्मुख होतें सूक्ष्मसांपराय का जघन्य स्थान हो है ।।२०३।।

क्षपक सूक्ष्मसांपराय का क्षीणकषाय के सन्मुख भया ताका अंत समय विषैं सूक्ष्मसांपराय का उत्कृष्ट स्थान हो है। बहुरि यथाख्यात चारित्र सर्व सामान्य चारित्र का उत्कृष्ट स्थान अभेद रूप है। बहुरि प्रतिपात प्रतिपद्यमान के जे स्थान कहे, ते सर्व ही सामायिक, छेदोपस्थापना संबंधी ही जानने। जातैं सकल संयम तैं भ्रष्ट होतैं अंत समय विषैं अर सकल संयम कौं ग्रहतैं प्रथम समय विषै सामायिक छेदोपस्थापना संयम ही हो है। अन्य परिहार विशुद्धि आदि न हो है।

इहां कोऊ कहै – उपशमश्रेणी विषै मरण की अपेक्षा सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात तें पडि, देव पर्याय संबंधी असंयत विषैं पडना हो है, तहां प्रतिपात का अभाव कैसें कहिए ?

ताका समाधान – इहां संयम का घातक कषायनि के उदय तैं वा गुण-स्थान के काल का क्षय होने तें जो पडना होइ ताहीकी विवक्षा है। पर्याय नाश तैं पडना होई, ताकी विवक्षा नाहीं। जो यहु विवक्षा होइ तौ ताका प्रतिपात विषैं देव संबंधी असंयत ही के सन्मुखपना संभवै है, जातैं सकल संयम ही विषैं जो मूवा, ताकैं अन्य गति वा मिथ्यात्व देशसंयतपना संभवै नाहीं है। ऐसैं प्रसंग पाइ सामायिक आदि पंच प्रकार सकलचारित्र के स्थान कहे। मुख्यपने प्रमत्त गुणस्थान विषै संभवता जो क्षायोपशमिक सकल चारित्र, ताका प्ररूपण कीया।

।। इति क्षायोपशमिकसकलचारित्रप्ररूपणं समाप्तम् ।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चारित्रोपशमना अधिकार

अथ उपशांत कीएं हैं सकल दोष जिनि, असे उपशांत कषाय वीतराग, तिनहि प्रणाम करि उपशम चारित्र का विधान कहिए हैं–

उवसमचरियाहिमुहो, वेदगसम्मो अणं विजोयित्ता ।
अंतोमुहुत्तकालं, अधापवत्तोऽपमत्तो य ॥२०५॥

उपशमचरित्रामुखो, वेदकसम्यक् अनं वियोज्यम् ।
अंतर्मुहूर्तकालं, अधाप्रवृत्तोऽप्रमत्तश्च ॥२०५॥

टीका – उपशम चारित्र के सन्मुख भया ऐसा वेदक सम्यग्दृष्टि जीव, सो पहिलें पूर्वोक्त विधान तें अनंतानुबंधी का विसंयोजन करि अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत अधः-प्रवृत्त अप्रमत्त कहिए स्वस्थान अप्रमत्त हो है । तहां प्रमत्त-अप्रमत्त विषै हजारों बार गमनागमन करि पीछैं अप्रमत्त विषै विश्राम करै है । तहां पीछै कोई जीव तीन दर्शन मोह कौं खिपाइ क्षायिक सम्यग्दृष्टी होइ चारित्र मोह के उपशमन का प्रारंभ करै, ताकैं तौ क्षायिक सम्यक्त्व होने का विधान पूर्वै कह्या है सो जानना । बहुरि कोई जीव द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सहित उपशम श्रेणी चढै, ताकैं दर्शन मोह के उप-शमन का विधान कहिए है ।

तत्तो तियरणविहिणा, दंसणमोहं समं खु उवसमदि ।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा, अण्णं च गुणसेढिकरण विही ॥२०६॥

ततः त्रिकरणविधिना दर्शनमोहं समं खलु उपशमयति ।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव अन्यं च गुणश्रेणिकरणं विधिः ॥२०६॥

टीका – स्वस्थान अप्रमत्त विषै अंतर्मुहूर्त विश्राम करि तहां पीछैं तीन करण विधि करि युगपत् दर्शन मोह कौं उपशमावैं है । तहां अपूर्वकरण का प्रथम समय तें लगाय प्रथमोपशम सम्यक्त्ववत् गुण संक्रमण बिना अन्य स्थिति अनुभाग कांडक का घात वा गुणश्रेणि निर्जरा आदि सर्व विधान जानना । अर अनंतानुबंधी का विसंयोजन याकैं हो है, ताविषैं भी सर्व स्थिति खंडनादि पूर्वोक्तवत् जानना ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दंसणमोहुवसमणं, तक्खवणं वा हु होदि णवरिं तु ।
गुणसंकमो ण विज्जदि, विज्झद वाधापवत्तं च[1] ॥२०७॥

दर्शनमोहोपशमनं, तत्क्षपणं वा हि भवति नवरि तु ।
गुणसंक्रमो न विद्यते, विध्यातं वा अधःप्रवृत्तं च ॥२०७॥

टीका – चारित्र मोह के उपशमावने कौं सन्मुख भया जीव कैं दर्शन मोह का उपशम होइ वा ताकी क्षपणा होइ । तहां उपशम विधान विषैं केवल गुण संक्रमण नाहीं है । विध्यात संक्रमण है अथवा अधःप्रवृत्त संक्रम है, सो विशेष आगें कहेंगे ।

ठिदिसत्तमपुव्वदुगे, संखगुणूणं तु पढमदो चरिमं ।
उवसामण अणियट्टीसंखाभागासु तीदासु[2] ॥२०८॥

स्थितिसत्त्वमपूर्वद्विके, संख्यगुणोनं तु प्रथमतः चरमम् ।
उपशामनमनिवृत्तिसंख्यभागेष्वतीतेषु ॥२०८॥

टीका – अपूर्वकरण वा अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय सम्बन्धी स्थिति सत्वतैं अंत समय विषैं स्थिति सत्व है, सो कांडक घात करने तैं संख्यात गुणा घाटि हो है ।

बहुरि अनिवृत्तिकरण काल कौं संख्यात का भाग दीजिए । तहां बहुभाग व्यतीत भएं अवशेष एक भाग रहै है सो कहैं है––

सम्मस्स असंखेज्जा, समयपबद्धाणुदीरणा होदि ।
तत्तो मुहुत्तअंते, दंसणमोहंतरं कुणई[3] ॥२०९॥

सम्यस्य असंख्येयानां समयप्रबद्धानामुदीरणा भवति ।
ततो मुहूर्तांतः दर्शनमोहांतरं करोति ॥२०९॥

टीका – अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जो साधिक अपूर्व अनिवृत्ति का काल मात्र आयाम धरें गलितावशेष गुणश्रेणी का आरंभ कीया था, सो अनिवृत्तिकरण का बहुभाग पर्यंत प्रवर्तें है । तहां अपकर्षण कीया द्रव्य कौं पल्य का असंख्या-

---

१. षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २८९

२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०४ । षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६ पृष्ठ, २८९

३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०५

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तवां भाग का भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं दीजिए है । अवशेष एक भाग कौं असंख्यात लोक का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं एक भाग उदयावली विषैं दीजिए है । सो इहां उदयावली विषैं दीया द्रव्य, समयप्रबद्ध के असंख्यातवें भाग मात्र आवै है । बहुरि अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवां भाग अवशेष रहैं सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौं अपकर्षण करि याकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं देना । अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं दीजिए है । एक भाग उदयावली विषैं दीजिए है । सो इहां उदयावली विषैं दीया जो उदीरणा द्रव्य, सो असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है, जातैं असा कह्या है – जहां असंख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा होइ तहां भागहार पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है । असंख्यात लोक प्रमाण नाहीं है । बहुरि यातैं परैं अंतर्मुहूर्त काल व्यतीत भएं दर्शन मोह का अंतर करै है ।

अंतोमुहुत्तमेत्तं, आवलिमेत्तं च सम्मतियठाणं ।
मोत्तूण य पढमट्ठिदि, दंसणमोहंतरं कुणइ[1] ॥२१०॥

अंतर्मुहूर्तमात्रं आवलिमात्रं च सम्यक्त्वत्रयस्थानम् ।
मुक्त्वा च प्रथमस्थितिं दर्शनमोहांतरं करोति ॥२१०॥

टीका – नीचे के वा ऊपरि के निषेक छोडि बीचि के केतेइक निषेकनि का द्रव्य कौं अन्य निषेकनि विषैं निक्षेपण करि तिनि निषेकनि का अभाव करना, सो अंतर करन कहिए है; सो जाका उदय पाइए असी जो सम्यक्त्व मोहनी ताकी तौ अंतर्मुहूर्त मात्र अर उदय रहित मिश्र वा मिथ्यात्व तिनिकी आवली मात्र जो प्रथम स्थिति तीहि प्रमाण नीचैं निषेकनि कौं छोडि ताके ऊपरि अंतर्मुहूर्त काल प्रमाण निषेक, तिनिका अंतर कहिए अभाव करैं है । तहां सम्यक्त्व मोहनी का अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवां भाग मात्र है । गुणश्रेणी शीर्ष अर तातैं संख्यात गुणे, तातैं उपरिवर्ती उपरितन स्थिति के निषेक, तिनिका अंतर करै है । अर मिथ्यात्व, मिश्रमोहनी का गले पीछे अवशेष रह्या जो सर्व गुणश्रेणी आयाम अर तातैं संख्यात गुणे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनका अंतर करै है । सो जितने निषेकनि का अंतर

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०५ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कीया ताके प्रमाण का नाम अंतरायाम है। तिस अंतरायाम के नीचैं जे निषेक छोडे, तिस प्रमाण प्रथम स्थिति है अर अंतरायाम के उपरिवर्ती जे निषेक तिसका नाम द्वितीय स्थिति है। तहां द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक तौ तीनों ही प्रकृतिनि के समान हैं, जातैं सो प्रथम निषेक अंतरायाम के अंतरि पाइए। अर प्रथम स्थिति का अंत निषेक समान नाहीं है, जातैं प्रथम स्थिति का प्रमाण हीनाधिक है।

सम्मत्तसयडिपढमट्ठिदिम्मि संछुहदि दंसणतियाणं।
उक्कीरयं तु दव्वं, बंधाभावादु मिच्छस्स[1] ॥२११॥

सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ संपातयति दर्शनत्रयाणाम्।
उत्कीर्णं तु द्रव्यं, बंधाभावात् मिथ्यस्य ॥२११॥

टीका – तहां जिनि निषेकनि का अभाव कीजिए है तिन तीनों दर्शन मोह की प्रकृति के निषेकनि के द्रव्य कौं उदयरूप जो सम्यक्त्व मोहनी, ताकी प्रथम ही स्थिति विषैं निक्षेपण करै है। जातैं जहां नवीन बंध हो है, तहां उत्कर्षण करि द्वितीय स्थिति विषैं भी निक्षेपण हो है। सो इहां सातवें गुणस्थान विषैं दर्शन मोह का बंध है नाहीं, तातैं द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण नाहीं करै है।

बिदियट्ठिदिस्स दव्वं, उक्कट्टिय देदि सम्मपढमम्मि।
बिदियट्ठिदिम्हि तस्स, अणुक्कीरिज्जंतमाणम्हि[2] ॥२१२॥

द्वितीयस्थितेर्द्रव्यमपकर्ष्य ददाति सम्यक्त्वप्रथमे।
द्वितीयस्थितौ तस्यानुत्कीर्यमाणे ॥२१२॥

टीका – इहां अंतरकरण काल का प्रथमादि समयनि विषैं गुणश्रेणी निर्जरा के अर्थि उदयावली तैं बाह्य निषेकनि का अपकर्षण कीया जो द्रव्य, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, बहुभाग तौ अंतरायाम कौं छांडि ताके उपरिवर्ती जो उपरितन द्वितीय स्थिति ताविषैं निक्षेपण करि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ बहुभाग कौं सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति रूप इहां गुणश्रेणी आयाम, ता विषैं निक्षेपण करै है। अवशेष एक भाग उदयावली विषैं निक्षेपण करै है। असैं अंतर करने का काल का प्रथम समय विषैं फालिद्रव्य का अर

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०५
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०६

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपकृष्ट द्रव्य का निक्षेपण करिए है । तहां जिन निषेकनि का अंतर कीजिए है, तिनका द्रव्य अन्य निषेकनि विषैं अंतर करने का काल अंतर्मुहूर्त है । ताकरि निक्षेपण करिए है । तहां तिनिका द्रव्य तिस काल के प्रथम समय विषैं जेता निक्षेपण कीजिए, सो प्रथम फालि का द्रव्य दूसरे समय जेता निक्षेपण करिए सो दूसरी फालि का, द्रव्य अैसें क्रम तैं अंत समय विषैं अवशेष रह्या तिनका द्रव्य कौं निक्षेपण करिए है, सो अंत फालि का द्रव्य जानना । बहुरि जो गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य, सो अपकृष्ट द्रव्य कहिए है । सो प्रथम समय सम्बन्धी फालिद्रव्य वा अपकृष्ट द्रव्य तैं द्वितीयादि समय सम्बन्धी फालि द्रव्य का वा अपकृष्ट द्रव्य का प्रमाण समय समय प्रति असंख्यात गुणा है । ताके निक्षेपण करने का विधान जैसें प्रथम समय विषैं कह्या तैसें ही जानना ।

सम्मत्तपयडिपढमट्ठिदीसु सरिसाण मिच्छमिस्साणं ।
ठिदिदव्वं सम्मस्स य, सरिसणिसेयम्हि संकमदि[1] ॥२१३॥

सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितिषु सदृशानां मिथ्यमिश्राणाम् ।
स्थितिद्रव्यं सम्यस्य च, सदृशनिषेके संक्रामति ॥२१३॥

टीका – मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनी की प्रथम स्थिति के ऊपरि जो अंतरायाम के निषेक सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति के समानवर्ती पर्यंत पाइए हैं, तिनिका द्रव्य कौं अपने अपने समानवर्ती जे सम्यक्त्व मोहनी के निषेक, तिन विषैं ही निक्षेपण करैं है । तहां द्रव्य देने का विधान नाहीं है ।

भावार्थ अैसा – जो मिथ्यात्व मिश्रमोहनी की प्रथम स्थिति तौ आवली मात्र है । अर सम्यक्त्व मोहनी की अंतर्मुहूर्त मात्र है । ताकौं छोडि ऊपरि के निषेकनि का अंतर करिए है । तहां मिथ्यात्व मिश्रमोहनी की प्रथम स्थिति के ऊपरि जो अंतरायाम का पहिला निषेक था, ताका द्रव्य कौं सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषैं जो आवली तैं ऊपरि पहिला निषेक है, तीहिं विषैं निक्षेपण कीया । अैसें ही ताके अंतरायाम के दूसरा निषेक का द्रव्य कौं सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषैं आवली तैं ऊपरि दूसरा निषेक है तीहिं विषै निक्षेपण कीया अैसें सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति का अंत निषेक के समान जो मिथ्यात्व, मिश्र के अंतरायाम

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का निषेक, तींहिं पर्यंत जे निषेक, तिनिका निक्षेपण अपने सम्यक्त्वमोहनी की प्रथम स्थिति के निषेकनि विषैं जानना, तहां द्रव्य विभाग नाहीं है। बहुरि तिसके ऊपरि तीनों ही दर्शनमोह के अंतरायाम के निषेकनि का द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार फालिरूप करि सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषैं गुणश्रेणी विषैं उदयावली विषैं विभाग करि निक्षेपण करिए है।

जावंतरस्स दुचरिमफालिं पावे इमो कमो ताव।
चरिमतिदंसणदव्वं, छुहेदि सम्मस्स पढमम्हि[1] ॥२१४॥

यावदंतरस्य द्विचरमफालिं प्राप्ते अयं क्रमस्तावत्।
चरमत्रिदर्शनद्रव्यं, क्षेपयति सम्यस्य प्रथमे ॥२१४॥

टीका – यावत् अंतरकरण काल का द्विचरम समयवर्ती जो अंत की द्विचरम फालि सो प्राप्त होइ तहां पर्यंत फालि द्रव्य अर अपकृष्ट द्रव्य, ताके निक्षेपण करने का यहु ही पूर्वोक्त अनुक्रम जानना। बहुरि अंतरकरण काल का अंत समय संबंधी जो दर्शनमोहत्रिक की अंत फालि का द्रव्य है, सो अर तहां अपकृष्ट द्रव्य है सो भी सर्व सम्यक्त्वमोहनी की प्रथम स्थिति ही विषैं निक्षेपण करिए है।

भावार्थ यहु – पूर्वैं जैसैं अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं देने कहे थे, तैसैं इहां अपकर्षण कीया द्रव्य का बहुभाग द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करना।

बिदियट्ठिदिस्स दव्वं, पढमट्ठिदिमेदि जाव आवलिया।
पडिआवलिया चिट्ठदि, सम्मत्तादिमठिदी ताव[2] ॥२१५॥

द्वितीयस्थितेर्द्रव्यं, प्रथमस्थितिमेति यावदावलिका।
प्रत्यावलिका तिष्ठति, सम्यक्त्वादिमस्थितिः तावत् ॥२१५॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषैं उदय आवली अर प्रत्यावली ए दोय आवली अवशेष रहैं, तहां पर्यंत द्वितीय स्थिति का द्रव्य कौं अपकर्षण का वश तैं प्रथम स्थिति विषैं निक्षेपण करिए है। तहां ही पर्यंत दर्शन मोह की गुण-

---

१. जयधवला भाग—१३, पृष्ठ २०६
२. जयधवला भाग १३, पृष्ठ सं. २०६

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

श्रेणी प्रवर्तै है। सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषैं दोय आवली अवशेष रहैं दर्शन मोह की गुणश्रेणी नाहीं हो है। अन्य कर्मनि की सकल चारित्र संबंधी गुणश्रेणी तहां भी प्रवर्तै है। बहुरि सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषैं एक समय अधिक आवली अवशेष रहैं, तहां पर्यंत सम्यक्त्व मोहनी की उदीरणा प्रवर्तै है। ऊपरि के निषेकनि का द्रव्य कौं उदयावली विषैं दीजिए है। बहुरि तिस प्रथम स्थिति का अंत समय विषैं अनिवृत्तिकरण काल समाप्त हो है।

सम्मादिठिदिज्झीणे, मिच्छद्दव्वादु सम्मसंमिस्से।
गुणसंकमो ण णियमा, विज्झादो संकमो होदि[1] ॥२१६॥

सम्यगादिस्थितिक्षीणे, मिथ्यद्रव्यात् सम्यसंमिश्रे।
गुणसंक्रमो न नियमात्, विध्यासः संक्रमो भवति ॥२१६॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति का क्षय होतैं ताके अनंतरि अंतरायाम का प्रथम समय प्राप्त होइ तीहिं विषैं द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी हो है। तहां गुणसंक्रमण तौ नियम तैं इहां है नाहीं, तातैं मिथ्यात्व के द्रव्य कौं सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग मात्र जो विध्यात संक्रमण भागहार, ताका भाग देइ तहां एक भाग मात्र मिथ्यात्व के द्रव्य कौं मिश्र - सम्यक्त्व मोहनी विषैं निक्षेपण करैं है। बहुरि तातैं द्वितीयादि समयनि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं निक्षेपण करै है।

सम्मत्तुप्पत्तीए, गुणसंकमपूरणस्स कालादो।
संखेज्जगुणं कालं, विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु[2] ॥२१७॥

सम्यक्त्वोत्पत्तौ, गुणसंक्रमपूरणस्य कालात्।
संख्येयगुणं कालं, विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धते हि ॥२१७॥

टीका – प्रथमोपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति विषैं पूर्वैं गुणसंक्रम पूरण काल अंतर्मुहूर्त मात्र कह्या था, तातैं संख्यातगुणा काल पर्यंत यहु द्वितीयोपशम सम्यदृष्टी प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति अनंतगुणी विशुद्धता करि बधै है। असैं इहां एकांत विशुद्धता की वृद्धि का काल अंतर्मुहूर्त मात्र जानना।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०७
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०७

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेण परं हायदि वा, वड्ढदि तव्वड्ढिदो विसुद्धीहिं ।
उवसंतदंसणतियो, होदि पमत्तापमत्तेसु[1] ॥२१८॥

तेन परं हीयते वा, वर्धते तद्वृद्धितो विशुद्धिभिः ।
उपशांतदर्शनत्रिकः भवति प्रमत्ताप्रमत्तयोः ॥२१८॥

टीका – तिस एकांत वृद्धि काल तैं पीछैं विशुद्धता करि घटै वा बधै वा हानि वृद्धि बिना जैसा का तैसा रहै किछू नियम नाहीं । असैं उपशमाए हैं तीन दर्शन मोह जानैं, असा जीव बहुत बार प्रमत्त अप्रमत्तनि विषैं उलटनि करि प्राप्त हो है ।

एवं पमत्तमियर, परावत्तिसहस्सयं तु कादूण ।
इगवीसमोहणीयं, उवसमदि ण अण्णपयडीसु[2] ॥२१९॥

एवं प्रमत्तमितरं, परावृत्तिसहस्रकं तु कृत्वा ।
एकविंशमोहनीयं, उपशमयति न अन्यप्रकृतिषु ॥२१९॥

टीका – असैं अप्रमत्त तैं प्रमत विषैं, प्रमत्त तैं अप्रमत्त विषैं हजारों बार उलटनि करि अनंतानुबंधी चतुष्क बिना अवशेष इकईस चारित्र मोह की प्रकृति के उपशमावने का उद्यम करै है । अन्य प्रकृतिनि का उपशम होता नाहीं, जातैं तिनकैं उपशमकरण नाहीं है ।

तिकरणबंधोसरणं, कमकरणं देसघादिकरणं च ।
अंतरकरणं उवसमकरणं उवसामणे होंति ॥२२०॥

त्रिकरणं बंधापसरणं, क्रमकरणं देशघातिकरणं च ।
अंतरकरणमुपशमकरणं उपशामने भवंति ॥२२०॥

टीका – १ अधः करण, २ अपूर्वकरण, ३ अनिवृत्तिकरण ए तीन करण अर ४ स्थितिबंधापसरण, ५ क्रमकरण, ६ देशघातिकरण, ७ अंतरकरण, ८ उपशम करण असैं आठ अधिकार चारित्रमोह के उपशम विधान विषैं पाइए हैं । तहां अधः

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ सं. २०८ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २१० ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करण कौं सातिशय अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती मुनि करै है। ताका लक्षण वा ता करि-कीया कार्य जैसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं सन्मुख होतैं कहे हैं, तैसें इहां भी जानना।

विशेष इतना – इहां संयमी कैं संभवैं अैसी प्रकृतिनि का बंध उदय कहना। अर अनंतानुबंधी चतुष्क, नरक-तिर्यंच आयु बिना अन्य प्रकृतिनि का सत्त्व कहना।

बिदियकरणादिसमये, उवसंततिदंसणे जहण्णेण।
पल्लस्स संखभागं, उक्कस्स सायरपुधत्तं[1] ॥२२१॥

द्वितीयकरणादिसमये, उपशांतत्रिदर्शने जघन्येन।
पल्यस्य संख्यभागं, उत्कृष्टं सागरपृथक्त्वम् ॥२२१॥

टीका – दूसरा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी कैं जघन्य स्थिति कांडक आयाम पल्य का संख्यातवां भाग मात्र है। उत्कृष्ट पृथक्त्व सागर प्रमाण है।

ठिदिखंडयं तु खइये, वरावरं पल्लसंखभागो दु।
ठिदिबंधोसरणं पुण, वरावरं तत्तियं होदि[2] ॥२२२॥

स्थितिखंडकं तु क्षायिके, वरावरं पल्यसंख्यभागस्तु।
स्थितिबंधापसरणं पुनः, वरावरं तावत्कं भवति ॥२२२॥

टीका – तहां ही अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं क्षायिक सम्यग्दृष्टि कैं जघन्य वा उत्कृष्ट स्थिति कांडक आयाम पल्य के संख्यातवें भाग मात्र है। जातैं दर्शन मोह की क्षपणा का काल विषैं बहुत स्थिति घटाई है। अर स्थिति के अनु-सारि कांडक हो है, तथापि जघन्य तैं उत्कृष्ट संख्यात गुणा है। बहुरि उपशम वा क्षायिक सम्यग्दृष्टि कैं स्थितिबंधापसरण पल्य का संख्यातवां भाग मात्र है, तथापि जघन्य तैं उत्कृष्ट संख्यात गुणा है।

असुहाणं रसखंडमणंतभागाण खंडमियराणं।
अन्तोकोडाकोडी, सत्तं बंधं च तट्ठाणे[3] ॥२२३॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२३।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२२।
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अशुभानां रसखंडमनंतभागानां खंडमितरेषाम् ।
अन्तः कोटीकोटिः, सत्त्वं बन्धश्च तत्स्थाने ।।२२३।।

टीका – अशुभ प्रकृतिनि का जो पूर्वं अनुभाग था, ताकौं अनंत का भाग दीएं तहां एक अनुभाग कांडक विषै बहुभाग मात्र अनुभाग का खंडन हो है, एकभाग मात्र अवशेष रहै है। विशुद्धता करि शुभ प्रकृतिनि का अनुभाग खंडन न हो है असा जानना। इहां प्रथमादि निषेकनि का अनुभाग दिखाइए है–

तहां द्रव्य, स्थिति, गुणहानि, नाना गुणहानि, दो गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण पहले जानना। सो इनिका कर्मनि की स्थिति अपेक्षा तौ गोम्मटसार का योग मार्गणा अधिकार विषैं वा कर्म स्थिति रचना अधिकार विषैं वर्णन किया है, सो जानना। अर अनुभाग अपेक्षा तिन सब द्रव्यादिकनि का प्रत्येक प्रमाण यथा-योग्य अनंत है। सो आयु बिना सात कर्मनि विषैं विवक्षित कर्म के परमाणू का प्रमाण रूप जो द्रव्य ताकौं स्थिति संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं प्रथम गुणहानि का प्रथम निषेक का प्रमाण आवै है। याकों अनुभाग संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं प्रथम निषेकनि विषैं प्रथम गुणहानि का जो प्रथम स्पर्धक, ताकी प्रथम वर्गणा के परमाणूनि का प्रमाण आवै है। सब तैं थोरे जिस पर-माणू विषैं अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद पाइए, ताका नाम जघन्य वर्ग है, सो असे जेते परमाणू होंइ, तिनके समूह का नाम प्रथम वर्गणा है। बहुरि यातैं द्वितीयादि वर्गणानि विषैं एक एक चय घटता क्रम करि परमाणूनि का प्रमाण है। बहुरि द्विती-यादि गुणहानिनि विषैं पूर्व गुणहानि संबंधी वर्गणा तैं आधा आधा क्रम लीएं वर्गणा द्रव्य का प्रमाण है। असैं प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा द्रव्य कौं अनुभाग संबंधी अन्योन्याभ्यस्त राशि तैं आधा प्रमाण का भाग दीएं अंत गुणहानि की प्रथम वर्गणा का द्रव्य हो है। यामैं क्रम तैं एक एक चय घटने तैं एक घाटि गुणहानि मात्र चय घटैं अंत गुणहानि की अंत वर्गणा का द्रव्य हो है। इहां असा जानना –

प्रथम गुणहानि को प्रथम वर्गणा तैं लगाय यावत् वर्गनि विषैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधने का क्रम होइ, तहां पर्यंत तिनि वर्गणानि के समूह का नाम प्रथम स्पर्धक है, तातैं ऊपरि प्रथम स्पर्धक की वर्गणा के वर्गनि तैं द्वितीय तृतीय चतु-र्थादिक स्पर्धक की प्रथम वर्गणानि का वर्गनि विषैं क्रम तैं दूणे, तिगुणे, चौगुणे अवि-भाग प्रतिच्छेद होंइ। उपरि द्वितीयादि वर्गणानि का वर्ग एक एक अविभाग प्रतिच्छेद

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बधता क्रम लीएं जानने। असा अनुक्रम अंत गुणहानि का अंत[१] स्पर्धक की अंत वर्गणा पर्यंत जानना। असैं प्रथम निषेक विषैं विभाग दीया। बहुरि स्थिति के द्वितीयादि निषेक क्रम तैं चय घटता क्रम लीएं हैं। गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम लीएं हैं, तिन सबनि विषैं असा ही अनुभाग अपेक्षा क्रम जानना। इहां स्थिति की अंत गुणहानि का अंत निषेक विषैं जो द्रव्य का प्रमाण तहां भी पूर्वोक्त प्रकार प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा के द्रव्य का प्रमाण ल्यावना। बहुरि क्रम तैं पूर्वोक्त प्रकार अंत गुणहानि की अंत वर्गणा का द्रव्य ल्यावना असैं जो अनुभाग पाइए है, ताकौं अनंत का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र अनुभाग कांडक है। अवशेष जो एक भाग मात्र रह्या,ताकौं अनंत का भाग देइ तहां एक भाग कौं अतिस्थापनरूप राखि, अवशेष बहुभाग रूप जिनि परमाणूनि का अनुभाग खंडन किया था, तिन परमाणूनि कौं परिणमावै है। इहां असा जानना –

अनुभाग के स्पर्धक कहे थे, तिनकौं अनंत का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र स्पर्धकनि के परमाणू हैं, तिनकौं अवशेष रहैं एक भाग मात्र स्पर्धक, तिनिका अनंतवां भाग मात्र स्पर्धक ऊपरिके छोडि नीचे के जे बहुभाग मात्र स्पर्धक, तिनि विषैं निक्षेपण करैं है, असी क्रिया एक अनुभाग कांडक का काल विषैं हो है। बहुरि तिस ही अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं स्थितिबंध अर स्थिति सत्व अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण है। तहां विशेष इतना स्थितिबंध तैं स्थिति सत्व संख्यात गुणा है।

उदयावलिस्स बाहिं गलिदवसेसा अपुव्वअणियट्टी।
सुहुमद्धादो अहिया, गुणसेढी होंति तट्ठाणे[२] ॥२२४॥

उदयावलेर्बाह्यं, गलितावशेषा अपूर्वानिवृत्तेः।
सूक्ष्माद्धातो अधिका, गुणश्रेणी भवंति तत्स्थाने ॥२२४॥

टीका – तिस अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं उदयावली तैं बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणी का आरंभ भया। तिस गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय इनके मिलाये काल तैं उपशांत कषाय के काल का संख्यातवां भाग मात्र अधिक जानना। तहां आयु बिना सात कर्मनि के उदयावली तैं बाह्य निषेकनि का द्रव्य कौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार उदयावली विषैं अर तातैं

१. 'अंत' शब्द के स्थान पर ख, घ हस्तलिखित प्रतियों में 'अनंत' शब्द मिलता है।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२४

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ऊपरि गुणश्रेणी आयाम विषैं अर तातैं उपरितन स्थिति विषैं दीजिए है। बहुरि नपुंसक वेदादिक का गुण संक्रम लीएं भी इहां ही प्रारम्भ भया। जिनिका बंध पाइए है, तिनिका गुण संक्रम है नाहीं। बहुरि असैं ही अपूर्वकरण के द्वितीयादि समयनि विषैं भी स्थिति कांडकादि विधान जानना।

पढमे छट्ठे चरिमे, बंधे दुग तीस चदुर वोच्छिण्णा।
छण्णोकसायउदयो, अपुव्वचरिमम्हि वोच्छिण्णा[१] ॥२२५॥

प्रथमे षट्के चरमे, बंधे द्विकं त्रिशत् चतस्रो व्युच्छिन्नाः।
षण्णोकषायोदया, अपूर्वचरमे व्युच्छिन्नाः ॥२२५॥

टीका – अपूर्वकरण के काल का सात भाग, तहां प्रथम भाग विषैं निद्रा प्रचला दोय अर छठा भाग विषैं तीर्थंकर आदि तीस अर सातवां भाग विषैं हास्यादि च्यारि असैं छत्तीस प्रकृति बंध तैं व्युच्छित्ति भई। बहुरि अपूर्वकरण का अंत समय विषैं छह हास्यादि नोकषाय उदय तैं व्युच्छित्ति भई।

अणियट्टिस्स य पढमे, अण्णट्ठिदिखंडपहुदिमारवई।
उवसामणा णिधत्ती, णिकाचणा तत्थ वोच्छिण्णा[२] ॥२२६॥

अनिवृत्तेः च प्रथमे, अन्यस्थितिखंडप्रभृतिमारभते।
उपशमनं निधत्तिः, निकाचना तत्र व्युच्छिन्ना ॥२२६॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं अपूर्वकरण का अंत समय संबंधी तैं और ही प्रमाण धरैं स्थितिखंड, स्थितिबंधापसरण, अनुभाग खंड प्रारंभिए है। बहुरि तहां ही सर्व कर्मनि का उपशम, निधत्ति, निकाचन इनि तीनि करणनि की व्युच्छित्ति भई। उदय विषैं प्राप्त करने कौं अयोग्य सो उपशम कहिए। अर संक्रमण विषैं प्राप्त करने कौं अयोग्य सो निधत्ति कहिए। उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण, उदय विषैं प्राप्त करने कौं अयोग्य सो निकाचना कहिए, सो इहां सर्व कर्मनि कौं उदयादि विषैं निक्षेपण करने कौं समर्थपना पाइए है, असा जानना।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२५ से २२८।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२६ से २३१।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अन्तोकोडाकोडी, अन्तोकोडी य सत्त बंधं च ।
सत्तण्हं पयडीणं, अणियट्टीकरणपढमम्हि[1] ।।२२७।।

अंतः कोटीकोटिः, अंतः कोटिश्च सत्त्वं बंधश्च ।
सप्तानां प्रकृतीनां, अनिवृत्तिकरणप्रथमे ।।२२७।।

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं आयु बिना सात प्रकृतिनि का स्थिति सत्त्व यथायोग्य अंतः कोडाकोडी सागर मात्र है । अर स्थितिबंध अंतः कोडी सागर मात्र है । अपूर्वकरण विषै घटाएं तैं इतना अवशेष रहै है ।

ठिदिबंधसहस्सगदे, संखेज्जा बादर गदा भागा ।
तत्थ असण्णिस्स ठिदिसरिस ठिदीबंधणं होदि[2] ।।२२८।।

स्थितिबंधसहस्रगते, संख्येया बादरे गता भागाः ।
तत्र असंज्ञिनः स्थितिसदृश, स्थितिबंधनं भवति ।।२२८।।

टीका –अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय तैं लगाय एक एक अंतर्मुहूर्त विषैं पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध घटै असैं स्थितिबंधापसरण का क्रम करि हजारों स्थिति बंध भएं अनिवृत्तिकरण काल का संख्यात भागनि विषैं बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहै असंज्ञी का स्थितिबंध समान स्थितिबंध हो है । सो असंज्ञी कैं सत्तर कोडाकोडी सागर उत्कृष्ट स्थिति का धारक दर्शन मोह का हजार सागर स्थितिबंध है, तिस का प्रतिभाग करि हजार सागर कौं सात का भाग देइ तहां एक भाग तैं दूणा बीसियनि का, तिगुणा तीसियनि का, चौगुणा चारित्र मोह का स्थिति-बंध हो है । जिनकी बीस कोडाकोडी की उत्कृष्ट स्थिति असे नाम गोत्र तिनकौं बीसिय कहिए। जिनकी तीस कोडाकोडी की उत्कृष्ट स्थिति असे ज्ञानावरण, दर्शना-वरण, अंतराय, वेदनीय तिनकौं तीसीय कहिए । जाकी चालीस कोडाकोडी सागर की उत्कृष्ट स्थिति असा चारित्र मोह, ताकौं चालीसिय कहिए । असी संज्ञा आगें भी जानि लेनी ।

ठिदिबंधपुधत्तगदे, पत्तेयं चदुर तिय वि एएदि ।
ठिदिबंधसमं होदि हु, ठिदिबंधमणुक्कमेणेव[3] ।।२२९।।

---

१. जयधवला भाग– १३, पृष्ठ २३१, २३२ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २३२ ।
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २३३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थितिबन्धपृथक्त्वगते, प्रत्येकं चतुस्त्रिद्विएकेति ।
स्थितिबंधसमो भवति हि, स्थितिबंधोऽनुक्रमेणैव ॥२२९॥

टीका – तातैं परैं पृथक्त्व कहिए संख्यात हजार स्थितिबंध भएं सौ सागर कौं सात का भाग देइ तहां एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का असा चौंद्री समान स्थितिबंध हो है । बहुरि तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं पचास सागर कौं सात का भाग देइ तहां एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का, असा तेंद्री समान स्थितिबंध हो है । बहुरि तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं पचीस सागर कौं सात का भाग देइ तहां एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का असा बेंद्री समान स्थितिबंध हो है । तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं एक सागर कौं सात का भाग देइ तहां एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का असा एकेंद्री समान स्थितिबंध हो है ।

एइंदियट्ठिदीदो, संखसहस्से गदे दु ठिदिबंधो ।
पल्लेक्कदिवड्ढदुगे, ठिदिबंधो बीसियतियाणं[1] ॥२३०॥

एकेंद्रियस्थितितः, संख्यसहस्रे गते तु स्थितिबन्धः ।
पल्यैकद्व्यर्धद्विके, स्थितिबंधो विंशतित्रिकरणम् ॥२३०॥

टीका – तिस एकेंद्री समान स्थिति बंध तैं परैं संख्यात हजार स्थिति बंध भएं बीसिय का एक पल्य, तीसिय का ड्योढ पल्य, चालीसिय का दोय पल्य प्रमाण स्थितिबंध हो है । इहां असंज्ञी कैं सत्तर कोडाकोडी सागर स्थिति का धारक दर्शन मोह का हजार सागर बंध होइ तौ बीस कोडाकोडी स्थिति धारक नाम गोत्रनि का केता होइ ? असैं त्रैराशिक कीएं हजार सागर को दोय सातवां भाग आवै तैं असैं औरनि विषैं भी त्रैराशिक विधान जानना ।

पल्लस्स संखभागं, संखगुणूणं असंखगुणहीणं ।
बंधोसरणं पल्लं, पल्लासंखंति संखवस्सं त्ति ॥२३१॥

पल्यस्य संख्यभागं, संख्यगुणोनमसंख्यगुणहीनम् ।
बंधापसरणं पल्यं, पल्यासंख्यमिति संख्यवर्षमिति ॥२३१॥

---

१. जयधवला भाग-१३ पृष्ठ २३४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अंतः कोडाकोडी स्थिति बंध तैं लगाय यावत् पल्यमात्र स्थिति बंध भया तावत् स्थिति बंधापसरण का प्रमाण पल्य के संख्यातवें भाग मात्र है। बहुरि पल्य मात्र स्थिति बंध तैं लगाय दूरापकृष्टि स्थिति होइ, तहां पल्य कौं संख्यात का भाग देइ बहुभाग मात्र स्थिति बंधापसरण हो है। पल्यस्थिति के अनंतरि दूरापकृष्टि स्थिति पर्यंत क्रम तैं संख्यात गुणा घाटि अैसा पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थिति बंध हो है। अैसा जानना। बहुरि दूरापकृष्टि स्थिति तै लगाय यावत् संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति बंध होइ तहां पल्य कौं असंख्यात का भाग दीजिए बहुभाग मात्र स्थिति बंधापसरण है। दूरापकृष्टि तैं लगाय संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति पर्यंत क्रम तैं असंख्यात गुणी घाटि अैसे पल्य के असंख्यातवै भाग मात्र स्थिति बंध हो है, अैसा जानना। एक स्थिति बंधापसरण काल विषैं जितना स्थिति बंध घट्या सो तौ स्थिति बंधापसरण जानना अर ताकौं घट तैं जितना स्थितिबंध होइ, सो तहां स्थितिबंध जानना।

एवं पल्ला जादा, बीसीया तीसिया य मोहो य।
पल्लासंखं च कमे, बन्धेण य बीसियतियाओ[1] ॥२३२॥

एवं पल्ये जाते, वीसिया तीसिया च मोहश्च।
पल्यासंख्यं च क्रमे, बंधेन च बीसियत्रिकाः ॥२३२॥

टीका – तिस पल्य स्थिति तैं परैं बीसिय, तीसिय मोहनीय का स्थिति बंध है, सो क्रमकरणकाल का अंत विषैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है। सोई कहिए है–

बीसियादिकनि का पल्य, ड्योढ पल्य, दोय पल्य स्थितिबंध कैं परैं बीसियनि का तौ पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र अर तीसिय मोह का पल्य का संख्यातवां भाग मात्र आयाम धरैं अैसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं वीसियनि का पल्य के संख्यातवें भाग मात्र, तीसीयनि का पल्य मात्र, मोह का त्रिभाग अधिक पल्य मात्र स्थितिबंध एक काल विषैं हो है। बहुरि तातैं परैं बीसीय, तीसीयनि का पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र मोह का पल्य का संख्यातवां भाग मात्र आयाम धरैं अैसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं बीसिय, तीसियनि का पल्य के संख्यातवें भाग मात्र, मोह का पल्य मात्र स्थिति बंध हो है।

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४०।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां विशेष इतना-बीसियकैं तैं तीसिय का स्थितिबंध संख्यात गुणा हो है। बहुरि तातैं परैं तीनों ही कैं पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरैं असे संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण गएं नाम गोत्र का दूरापकृष्टि है नाम जाका असा पल्य का संख्यातवां भागमात्र अर तीसिय मोह का यथायोग्य पल्य का संख्यातवां भागमात्र स्थितिबंध भया।

इहां विशेष इतना--तीसीय के तैं मोह का स्थितिबंध संख्यात गुणा है। बहुरि तातैं परैं बीसीय का पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र अर तीसीय मोह का पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र प्रमाण धरैं असे संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण गएं बीसियनि का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र तीसियनि का दूरापकृष्टि है नाम जाका असा पल्य का संख्यातवां भाग मात्र अर मोह का यथायोग्य पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध युगपत् हो है। इहां तीसीयके तैं चालीसिय का स्थितिबंध संख्यात गुणा जानना। बहुरि तातैं परैं बीसीय, तीसीयनि का पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र मोह का पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र प्रमाण धरैं असे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं बीसीय तीसीयनि का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र मोह का दूरापकृष्टि है नाम जाका असा अंत का पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है। इहां बीसीयके तैं तीसीय का स्थितिबंध असंख्यात गुणा जानना। बहुरि तातैं परैं तीन्यों ही का पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र प्रमाण लीएं असे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं तीनों ही का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबंध हो है। इहां बीसीय के तैं तीसीय का, तीसीय के तैं मोह का स्थितिबंध असंख्यात गुणा जानना। इहां पर्यंत तौं असैं अनुक्रम तैं बंध हो है।

आगें अन्य अनुक्रम हो है, सो दिखाइए है।

मोहगपल्लासंखट्ठिदिबन्धसहस्सगेसु तीदेसु।
मोहो तीसिय हेट्ठा, असंखगुणहीणयं होदि[1] ॥२३३॥

मोहगपल्यासंख्यस्थितिबंधसहस्रेकष्वतीतेषु।
मोहः तीसियं अधस्तना, असंख्यगुणहीनकं भवति ॥२३३॥

टीका – तिस पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबंध तैं परैं पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरैं असे संख्यात हजार स्थितिबंध गएं पूर्व स्थिति

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बंध तें असंख्यात गुणा घटता असा पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध तीनों का हो है। तहां स्तोक तौ बीसीयनि का, तातैं असंख्यात गुणा मोह का, तातैं असंख्यात गुणा तीसीयनि का स्थितिबंध जानना। इहां विशुद्धता विशेष तें तीसीयनि तें मोह का घटता स्थितिबंधरूप क्रम भया।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे बीसियाण हेट्ठावि।
एक्कसराहो मोहो, असंखगुणहीणयं होदि[1] ॥२३४॥

तावन्मात्रे बंधे, समतीते बीसियानां अधस्तनापि।
एकसदृशः मोहोऽसंख्यगुणहीनको भवति ॥२३४॥

टीका – तातैं परैं पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरैं असे संख्यात हजार स्थितिबंध गएं तीनों का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है। तहां स्तोक मोह का, तातैं असंख्यात गुणा बीसियनि का, तातैं असंख्यात गुणा तीसियनि का स्थितिबंध जानना। इहां विशुद्धता विशेष तें बीसियनि का तें भी मोह का घटता स्थितिबंधरूप क्रम भया।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे वेयणीयहेट्ठादु।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति[2] ॥२३५॥

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वेदनीयाधस्तनात्।
तीसियघातित्रिका, असंख्यगुणहीनका भवंति ॥२३५॥

टीका – तातैं परैं पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरैं असे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं तीनों का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है। तहां स्तोक मोह का, तातैं असंख्यात गुणा बीसीयनि का, तातैं असंख्यात गुणा तीसीयनि विषैं तीन घातियनि का, तातैं असंख्यात गुणा वेदनीय का स्थितिबंध हो है। इहां विशुद्धता विशेष तैं साता वेदनीय तें तीन घातिया कर्मनि का स्थितिबंध घटता भया।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे बीसियाण हेट्ठादु।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति[3] ॥२३६॥

---

१. जयधवला भाग–१३; पृष्ठ २४४।
२. जयधवला भाग–१३; पृष्ठ २४५।
३. जयधवला भाग–१३; पृष्ठ २४६।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तावन्मात्रे बंधे, समतीते बीसियानामधस्तनात् ।
तीसियघातित्रिका, असंख्यगुणहीनका भवंति ॥२३६॥

टीका – तातैं परैं पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं मोहादिक का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है। तहां स्तोक मोह का, तातै असंख्यात गुणा तीसियनि का, तातैं असंख्यात गुणा बीसीयनि का, तातैं ड्योढा वेदनीय का स्थितिबंध जानना, इहां विशुद्धता विशेष तैं ऐसा क्रम भया ।

तक्काले वेयणियं, णामागोदादु साहियं होदि ।
इदि मोहतीसवीसियवेयणियाणं कमो जादो[1] ॥२३७॥

तत्तकाले वेदनीयं नामगोत्रतः साधिकं भवति ।
इति मोहतीसवीसियवेदनीयानां क्रमो जातः ॥२३७॥

टीका – तीहिं क्रमकरण काल विषैं नाम गोत्रके तैं वेदनीय का साधिक बंध भया, सो इस ही अनुक्रम लीएं अंतर्मुहूर्त पर्यंत पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरै संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण भएं क्रमकरण काल का अंत समय विषैं अपने अपने योग्य पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र बंध हो है। संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबंध इहां न हो है। अंतरकरण तैं परैं होगा। बहुरि सर्व कर्मनि का स्थितिसत्त्व इहां संख्यात हजार स्थिति कांडक घात होतैं भी अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण ही रहै है, जातैं उपशम श्रेणी विषैं स्थितिकांडक आयाम दीर्घ नाहीं है। स्तोक प्रमाण लीएं है ।

तीदे बंधसहस्से, पल्लासंखेज्जयं तु ठिदिबंधो ।
तत्थ असंखेज्जाणं, उदीरणा समयपबद्धाणं[2] ॥२३८॥

अतीते बंधसहस्रे, पल्यासंख्येयं तु स्थितिबंधः ।
तत्र असंख्येयानां, उदीरणा समयप्रबद्धानाम् ॥२३८॥

टीका – क्रमकरण प्रारंभ का समय तैं लगाय संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं जहां क्रमकरण का अंत विषैं मोहादिकनि का पल्य का असंख्यातवां

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४७ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४८–२४९ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भाग मात्र स्थितिबंध भया, तहां असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा हो है। इहां तैं पहिले गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं निक्षेपण करि अवशेष एक भाग कौं असंख्यात लोक का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं एक भाग उदयावली विषैं निक्षेपण होतैं तहां उदयावली विषैं दिया ऐसा जो उदीरणा द्रव्य, सो समयप्रबद्ध के असंख्यातवें भाग मात्र आवैं है। बहुरि इहां तैं लगाय अपकर्षण कीया द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं निक्षेपण करि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यतवां भाग का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं एक भाग उदयावली विषैं दीजिए है। सो इहां उदयावली विषैं दीया ऐसा जो उदीरणा द्रव्य, सो असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवैं है।

ठिदिबंधसहस्सगदे, मणदाणा तत्तिये वि ओहिदुगं।
लाभं व पुणो वि सुदं, अचक्खु भोगं पुणोचक्खु[1] ॥२३६॥

पुणरवि मदिपरिभोगं, पुणरवि विरयं कमेण अणुभागो।
बंधेण देसघादी, पल्लासंखं तु ठिदिबंधे ॥२४०॥

स्थितिबंधसहस्रगते, मनोदाने तावन्मात्रेऽपि अवधिद्विकं।
लाभो वा पुनरपि श्रुतं,अचक्षुर्भोगं पुनश्चक्षुः ॥२३९॥

पुनरपि मतिपरिभागं, पुनरपि वीर्यं क्रमेण अनुभोगः।
बंधेन देशघातिः, पल्यासंख्यं तु स्थितिबंधे ॥२४०॥

टीका – क्रमकरण कहिए अब देशघाती करण कहैं हैं, सो पूर्वैं प्रकृतिनि का सर्वघाती स्पर्धकरूप अनुभाग बांध्या था, अब देशघाती करण तैं लगाय दारु-लता समान द्विस्थानगत देशघाती स्पर्धकरूप ही अनुभाग कौं बांधै है। तहां असंख्यात समयप्रबद्ध उदीरणा का प्रारंभ तैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं मनः पर्यय ज्ञानावरण, दानांतराय का देशघाती बंध हो है। तातैं परैं तितने तितने ही स्थितिबंधापसरण गएं क्रम तैं अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण, लाभांतरायनि का अर श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण, भोगांतराय का, चक्षुदर्शनावरण का अर

---

१. जयधवला भाग–१३; पृष्ठ २४६ से २५१।
२. जयधवला भाग–१३; पृष्ठ २५१।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मतिज्ञानावरण, उपभोगांतराय का अर वीर्यांतराय का देशघाती बंध हो है। इहां **प्रश्न**–जो संज्वलन चतुष्क पुरुषवेदनि का देशघाति करण इहा क्यों न कह्या ?

ताका समाधान – जो तिनिका अनुभाग बंध संयमासंयम का ग्रहण समय तैं लगाय समय समय अनंत गुणा घटता क्रम लीएं द्विस्थान गत हो है, तातैं इहां न कह्या। बहुरि तिनि का सत्तारूप अनुभाग सर्वघाती वर्तै ही है। बहुरि देशघाती-करण का अंत विषैं भी मोहादिकनि का स्थितिबंध अपने योग्य पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र ही है।

तो देसघातिकरणादुर्वारिं तु गदेसु तत्तियपदेसु ।
इगिवीसमोहणीयाणंतरकरणं करेदीदि[1] ॥२४१॥

अतो देशघातिकरणादुपरि तु गतेषु तावत्कपदेषु ।
एकविंशमोहनीयानामंतरकरणं करोतीति ॥२४१॥

टीका – तिस देशघाति करण तैं उपरि संख्यात हजार स्थितिबंध गएं इक-ईस मोहनीय की प्रकृतिनि का अंतरकरण करैं है। ऊपरि के वा नीचे के निषेक छोडि बीचि के विवक्षित केते इक निषेकनि का अभाव करना, सो अंतर करण जानना।

संजलणाणं एक्कं, वेदाणेक्कं उदेदि तं दोण्हं ।
सेसाणं पढमट्ठिदिं, ठवेदि अंतोमुहुत्त आवलियं[2] ॥२४२॥

संज्वलनानमेकं, वेदनामेकं उदेति तत् द्वयोः ।
शेषाणां प्रथमस्थितिं, स्थापयति अंतर्मुहूर्तमावलिकां ॥२४२॥

टीका – संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ विषैं कोई एक का अर स्त्री, पुरुष, नपुंसक वेदनि विषैं कोई एक का उदय सहित श्रेणी चढै तिन उदय रूप दोय प्रकृतिनि की तौ प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त स्थापै है। अर अवशेष उगणीस प्रकृतिनि की प्रथम स्थिति आवली मात्र स्थापै है। इस प्रथम स्थिति प्रमाण निषेकनि कौं नीचैं छोडि ऊपरि के निषेकनि का अंतर करैं है; ऐसा अर्थ जानना।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५२, २५३।

२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५३, २५४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उवरि समं उक्कीरइ, हेट्ठा वि समं तु मज्झिमपमाणं ।
तदुपरि पढमठिदीदो, संखेज्जगुणं हवे णियमा[1] ॥२४३॥

उपरि समं उत्कीर्यंते, अधस्तनापि समं तु मध्यमप्रमाणं ।
तदुपरि प्रथमस्थितितः, संख्येयगुणं भवेत् नियमात् ॥२४३॥

टीका – अन्तरायाम का अंत निषेक तैं उपरिवर्ती के निषेक, ते उदय रूप वा अनुदय रूप सर्व प्रकृतिनि का समान है, तातैं अंतरायाम के उपरि द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक सब प्रकृतिनि का तहां एक कालवर्ती होने तैं समान है । बहुरि अंतरायाम का प्रथम निषेक के नीचैं जो निषेक सो उदय प्रकृतिनि का परस्पर समान है वा अनुदय प्रकृतिनि का परस्पर समान है अर उदय-अनुदय प्रकृतिनि का समान नाहीं । जातैं इनके प्रथम स्थिति विषैं समानता नाहीं । जो प्रथम स्थिति का अंत का निषेक सोई अंतरायाम का नीचे का निषेक है । बहुरि अंतर्मुहूर्त वा आवली मात्र जो उदय-अनुदय प्रकृतिनि का प्रथम स्थिति, तातैं संख्यात गुणा असा अंतर्मुहूर्त मात्र अंतरायाम है । इतने निषेकनि का अभाव करिए है तहां उदयमान प्रकृतिनि कैं तौ गुणश्रेणी शीर्ष के निषेक अर तिन तैं संख्यात गुणे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनकौं ग्रहि अंतर करै है । अर अनुदय प्रकृतिनि का अवशेष इहां पाइए जो गुणश्रेणी आयाम अर तिन तैं संख्यात गुणे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनकौं ग्रह करि अंतर करै है ।

अंतरपढमे अण्णो, ठिदिबंधो ठिदिरसाण खंडो य ।
एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरसमत्ती[2] ॥२४४॥

अंतरप्रथमे अन्यः, स्थितिबंधः स्थितिरसयोः खंडश्च ।
एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतरसमाप्तिः ॥२४४॥

टीका – अंतर करण का प्रथम समय विषैं पूर्व स्थिति बंध तैं असंख्यात गुणा घटता असा और ही स्थितिबंध अर पूर्व स्थिति कांडक तैं किछू घटता असा और ही स्थिति कांडक अर पूर्व अनुभाग कांडक तैं अनंत गुणा घटता असा और ही अनुभाग कांडक का प्रारंभ हो है । तहां एक स्थिति कांडकोत्करण का जेता काल तितने काल

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५४

२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५५, २५६

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि अंतर करण करिए है । ताकी समाप्ति होतें एक स्थिति कांडक घात भया । तीहिं विषैं संख्यात हजार अनुभाग कांडकनि का घात भया; असा अर्थ जानना ।

अंतरहेदुक्कीरिददव्वं तं अंतरम्हि ण य देदि ।
बंधं ताणंतरजं, बंधाणं बिदियगे देदि[1] ॥२४५॥

अंतरहेतूत्कीरितद्रव्यं तदंतरे न च ददाति ।
बन्धं तेषामंतरजं, बन्धानां द्वितीयके ददाति ॥२४५॥

टीका – अंतर के निमित्त उत्कीर्ण कीया द्रव्य कौं अंतरायाम विषैं न दे है ।

भावार्थ– अंतरायाम के निषेकनि का द्रव्य कौं तहां अभाव करि कोई अंतरायामरूप निषेकनि विषैं ही न मिलाइए है; तौ कहां मिलाइए है, सो कहै हैं–

जिनका उदय न पाइए केवल बंध ही पाइए असी जे स्त्री वा नपुंसक वेद अर एक कोई कषाय सहित श्रेणी चढ़नेवाले कैं पुरुषवेद अर तीन संज्वलन कषाय ए च्यारि प्रकृति तिन का द्रव्य कौं उत्कर्षण करि तौ तत्काल जो अपना तिस ही प्रकृति का जो बंध भया, ताकी आबाधा कौं छोडि, ताही का द्वितीय स्थिति कौं प्रथम निषेक तैं लगाय यथायोग्य अंत पर्यंत निक्षेपण करै है अर अपकर्षण करि उदय रूप जो अन्य कषाय, ताकी प्रथम स्थिति विषैं निक्षेपण करै है ।

उदयिल्लाणंतरजं,सगपढमे देदि बंधबिदिये च ।
उभयाणंतरदव्वं, पढमे बिदिये च संछुहदि[2] ॥२४६॥

औदयिकानामंतरजं, स्वकप्रथमे ददाति बंधद्वितीये च ।
उभयानामंतरद्रव्यं, प्रथमे द्वितीये च संक्षिपति ॥२४६॥

टीका – जिनका बंध न पाइए केवल उदय ही पाइए असा स्त्रीवेद वा नपुंसकवेद, तिनका अंतर संबंधी द्रव्य कौं अपकर्षण करि अपनी प्रथम स्थिति विषैं निक्षेपण करै है अर उत्कर्षण करि तहां बंधै हैं जे अन्य कषाय, तिनकी द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै है । बहुरि अपकर्षण करि उदयरूप अन्य क्रोधादि कषाय

1. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६० ।
2. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४८, २५६, २६० ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

की प्रथम स्थिति विषैं संक्रमण रूप हो है। तिस उदय प्रकृतिरूप परिणमैं है इतना भी सिद्धांतोक्त विशेष जानना।

बहुरि जिनिका बंध भी अर उदय भी पाइए ऐसा पुरुषवेद वा कोई एक कषाय, तिनके अन्तर संबंधी द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयरूप प्रकृतिनि की प्रथम स्थिति विषैं निक्षेपण करै है। अर उत्कर्षण करि तहां बंधै हैं जे प्रकृति, तिनकी द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेंपण करै हैं। इहां भी अन्य प्रकृति की प्रथम-द्वितीय स्थिति विषैं उत्कर्षण अपकर्षण का वश करि अन्य प्रकृति परिणमनेंरूप संक्रमण हो है ऐसा विशेष जानना।

अणुभयगाणंतरजं, बंधं ताणं च बिदियगे देदि।
एवं अंतरकरणं, सिज्झदि अन्तोमुहुत्तेण[1] ॥२४७॥

अनुभयकानामंतरजं, बंधं तेषां च द्वितीयके ददाति।
एवंमंतरकरणं, सिद्धयति अंतर्मुहूर्तेन ॥२४७॥

टीका – बंध उदय रहित जे अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान कषाय अर हास्यादि छह नोकषाय, तिनका अन्तर संबंधी द्रव्य का अपकर्षण करि तिस काल विषैं उदयरूप जे अन्य प्रकृति, तिनकी प्रथम स्थिति विषैं संक्रमण हो है; तद्रूप परिणमैं हैं। अर उत्कर्षण करि तिस काल विषैं बधै हैं जे अन्य प्रकृति, तिनकी द्वितीय स्थिति विषैं संक्रमण हो है; तद्रूप परिणमैं है; ऐसें प्रकृतिनि का जिन निषेकनि का अभाव करि अन्तर कीया, तिनके द्रव्य कौं निक्षेपण करै हैं।

इहां इतना जानना– बंध रहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौं तौ अपनी द्वितीय स्थिति विषैं अर उदय रहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौं अपनी प्रथम स्थिति विषैं नाहीं निक्षेपण करै है। बहुरि प्रथम स्थिति तौ अन्तरायाम के नीचै है, तातैं तहां देने विषैं स्थिति घटैं है। तातैं तहां अपकर्षण कह्या। अर द्वितीय स्थिति अंतरायाम के उपरिवर्ती है, तातै तहां द्रव्य दीएं स्थिति बधै है तहां उत्कर्षण कह्या। ऐसें अंतर्मुहूर्त काल करि अन्तर करने की समाप्तता हो है। इहां अन्तर करण का प्रथम समय तैं लगाय प्रथम स्थिति अर अन्तरायाम का प्रमाण जेता का तेता रहै है। जब उदयावली का एक समय व्यतीत होई तब गुणश्रेणी का एक समय उदयावली विषैं मिलै। अर तब

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५६।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ही गुणश्रेणी विषैं अन्तरायाम का एक समय मिलै अर तब ही अन्तरायाम विषैं द्वितीय स्थिति का एक निषेक मिलै ऐसे द्वितीय स्थिति ही घटै है । प्रथम स्थिति अर अन्तरायाम जेताका तेता रहै है अैसा जानना ।

सत्तकरणाणि यंतरकदपढमे होंति मोहणीयस्स ।
इगिठाणिय बंधुदओ, ठिदिबंधे संखवस्सं च ॥२४८॥

अणुपुव्वीसंकमणं, लोहस्स असंकमं च संढस्स ।
पढमोवसामकरणं, छावलितीदेसुदीरणदा[1] ॥२४९॥

सप्तकरणानि अंतरकृतप्रथमे भवंति मोहनीयस्य ।
एकस्थानको बंधोदयः, स्थितिबंधः संख्यवर्षं च ॥२४८॥

आनुपूर्वी संक्रमणं, लोभस्यासंक्रमं च षंढस्य ।
प्रथमोपशमकरणं, षडावल्यतीतेषूदीरणता ॥२४९॥

टीका – अन्तर कीए पीछै ताके अनन्तरि प्रथम समय विषैं सात करणनि का युगपत् प्रारंभ हो है । तहां पूर्वैं अन्तर करने की समाप्ति पर्यंत मोह का दारु लता समान द्विस्थानगत बंध अर उदय था अर अब लता समान एक स्थानगत बंध उदय होने लगे; सो दोय करण तौ ए भए । बहुरि पूर्वैं मोह का स्थिति बंध असंख्यात वर्ष का होता था, अब संख्यात वर्ष मात्र होने लगा, सो एक करण यहु भया ।

बहुरि पूर्वैं चारित्र मोह का परस्पर प्रकृतिनि का जहां तहां संक्रमण होता था अब आनुपूर्वी संक्रमण होने लगा सो इस विषैं अैसा नियम भया– जो स्त्री नपुंसक वेद का तौ पुरुष वेद ही विषैं अर पुरुषवेद छह हास्यादिक, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान क्रोध का संज्वलन क्रोध ही विषैं अर संज्वलन क्रोध, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यन मान का संज्वलन मान ही विषैं अर संज्वलन मान, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान माया का संज्वलन माया ही विषैं अर संज्वलन माया, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान लोभ का संज्वलन लोभ ही विषैं संक्रमण हो है अन्यथा न होइ सो एक करण यहु भया । बहुरि पूर्वैं संज्वलन लोभ का संज्वलन क्रोधादि विषैं वा पुरुषवेद विषैं संक्रमण होता था । अब याका संक्रमण कहीं न होइ सो एक कारण यहु भया ।

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २३३ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि अब नपुंसक वेद की उपशम क्रिया का प्रारंभ भया, सो एक करण यहु भया ।

बहुरि पूर्वं बन्ध भएं पीछें एक आवली काल व्यतीत भएं ही उदीरणा करने की समर्थता थी अब तो बंध हो है, ताकी बंध समय तैं छह आवली व्यतीत भएं ही उदीरणा करने की समर्थता हो है, सो एक करण यहु भया ।

अंतरपढ़मादु कमे, एक्केक्के सत्त चदुसु तिय पयडिं ।
सममुच सामदि णवकं,समऊणावलिदुगं वज्जं ।।२५०।।

अंतरप्रथमात् क्रमेण, एकैकं सप्त चतुर्षु त्रयीं प्रकृतिं ।
समुच्य शमयति नवकं, समयोनावलिद्विकं वर्ज्यम् ।।२५०।।

टीका – अन्तर कीएं पीछैं प्रथम समय तैं लगाय क्रम तैं एक एक अंतर्मुहूर्त काल करि तौ एक एक सात प्रकृतिनि कौं अर च्यारी अन्तर्मुहूर्त विषैं क्रम तैं तीन प्रकृतिनि कौं उपशमावै है । तहां समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध कौं नाहीं उपशमावै है, सो याका स्वरूप आगै कहेंगे, सो जानना ।

एय णउंसयवेदं, इत्थीवेदं तहेव एयं च ।
सत्तेव णोकसाया, कोहादितियं तु पयडीओ[1] ।।२५१।।

एको नपुंसकवेदः, स्त्रीवेदः तथैव एकः च ।
सप्तैव नोकषाया,, क्रोधादित्रयं तु प्रकृतयः ।।२५१।।

टीका – एक नपुंसक वेद, एक स्त्रीवेद तैसैं ही सात नोकषाय अर तीन क्रोध, तीन मान, तीन माया, तीन लोभ असैं क्रम तैं उपशम होनेरूप इकईस प्रकृति हैं ।

अन्तरकदपढमादो, पडिसमयमसंखगुणविहाणकमे– ।
णुवसामेदि हु संडं, उवसंतं जाण ण च अण्णं[2] ।।२५२।।

अंतरकृतप्रथमतः, प्रतिसमयमसंख्यगुणविधानक्रमे– ।
णोपशाम्यति हि षंढं, उपशांतं जानीहि न चान्यम् ।।२५२।।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७२ से ३१८ ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७२ से २७७ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अन्तर करने के अनन्तरि प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति नपुंसक वेद का उपशम हो है। तहां नपुंसक वेद के द्रव्य कौं गुणसंक्रम भागहार का असंख्यातवां भाग का भागहार का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौं प्रथम समय विषैं उपशमावै है। तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य कौं द्वितीय समय विषैं उपशमावैं है। असैं नपुंसक वेद का उपशम काल की समाप्ति पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लिएं द्रव्य उपशमावै है। सो समय समय प्रति जो द्रव्य उपशमाया ताही का नाम उपशमन फालि का द्रव्य जानना।

संढादिमउवसमगे, इट्ठस्स उदीरणा य उदओ य।
संढादो संकमिदं, उवसमियमसंखगुणियकमा[1] ॥२५३॥

षंढादिमोपशामके, इष्टस्योदीरणा व उदयश्च।
षंढात् संक्रमितमुपशमितमसंख्यगुणितक्रमः ॥२५३॥

टीका – नपुंसक वेद के उपशम का प्रथम समय विषैं विवक्षित उदय कौं प्राप्त भया जो पुरुषवेद, ताका सर्व द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थिति विषैं दिया। अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी विषैं एक भाग कौं उदयावली विषै दीया सो उदयावली विषैं जो दीया सो यहु उदीरणा द्रव्य जेता है तातैं तिस ही पुरुषवेद का उदय द्रव्य असंख्यात गुणा है। जातैं पूर्वै गुणश्रेणी का द्रव्य इस निषेकनि विषैं दीया था, सो पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं बहुभाग मात्र है। बहुरि तिसतैं नपुंसक वेद का द्रव्य संक्रमण करि पुरुष वेदरूप भया सो असंख्यात गुणा है; जातैं तिस भागहार तैं गुण संक्रमण भागहार का प्रमाण असंख्यात गुणा घटता है। बहुरि तातैं नपुंसक वेद की उपशम फालि का द्रव्य असंख्यात गुणा है, जातैं तहां भागहार तिस भागहार के असंख्यातवें भाग मात्र है। असैं ही द्वितीयादि समयनि विषैं भी अल्पबहुत्व जानना।

अन्तरकरणादुवरिं. ठिदिरसखंडाण मोहणीयस्य।
ठिदिबंधोसरणं पुण। संखेज्जगुणेण हीणकमं[2] ॥२५४॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७२ से २७४।

२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७५।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

**अन्तरकरणादुपरि, स्थितिरसखंडानां मोहनीयस्य ।
स्थितिबंधापसरणं पुनः, संख्यगुणेन हीनक्रमम् ।।२५४।।**

टीका – अन्तरकरण तैं उपरि नपुंसक वेद उपशमावने का प्रथम समय तैं लगाय मोहनीय स्थिति कांडकघात अर अनुभाग कांडकघात नाहीं है; जातैं उपशमाव रूप होती जो कर्म की स्थिति ताकैं कांडकघात न हो है ।

इहां कोऊ कहैगा कि – उपशम रूप न होती नपुंसक वेद बिना अन्य प्रकृतिनि का तौ कांडक घात होता होयगा

सो न हो है जातैं इहां सर्व मोह प्रकृतिनि की स्थिति समान है अर स्थिति अनुसारी अनुभाग का भी कांडक घात बिना अवस्थितपना ही है । बहुरि मोहनीय का स्थितिबंधापसरण का आयाम असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं वर्तै है ।

**जत्तोपाये होदि हु, ठिदिबंधो संखवस्समेत्तं तु ।
तत्तो संखगुणूणं, बंधोसरणं तु पयडीणं ।।२५५।।**

**यत उपायेन भवति हि, स्थितिबंधः संख्यवर्षमात्रः तु ।
ततः संख्यगुणोनं, बंधापसरणं तु प्रकृतीनाम् ।।२५५।।**

टीका – जातैं इहां मोह का स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष मात्र हो है, तातैं पूर्व स्थिति बंधापसरण तैं इहां स्थिति बंधापसरण संख्यात गुणा घटता संभवै है । बहुरि ज्ञानावरणादिकनि का स्थितिबंध अन्तर करने का अंत समय संबंधी स्थितिबंध तैं असंख्यात गुणा घटता है; जातैं इनके स्थितिबंधापसरण का प्रमाण पल्य कौं असंख्यात का भाग दीएं बहुभाग मात्र है । तहां तीसीयनि का स्थितिबंध पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है । औरनि तैं स्तोक है । तातैं असंख्यात गुणा बीसीयनि का है । तातैं ड्योढा वेदनीय का है ।

**वस्साणं वत्तीसादुवरिं अन्तोमुहुत्तपरिमाणं ।
ठिदिबंधाणोसरणं, अवरट्ठिबंदिधणं जाव[१] ।।२५६।।**

**वर्षाणां द्वात्रिंशदुपरि अंतर्मुहूर्तपरिमाणम् ।
स्थितिबंधानामपसरणमवरस्थितिबन्धनं यावत् ।।२५६।।**

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८९ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – बत्तीस वर्ष का स्थितिबंध जहां होइ तहां तैं लगाय जहां जघन्य स्थितिबंध होइ तहां पर्यंत तिस बंधापसरण का प्रमाण अंतर्मुहूर्त मात्र जानना ।

ठिदिबंधाणोसरणं, एयं समयप्पबद्धमहिकिच्चा ।
उत्तं णाणादो पुण, ण च उत्तं अणुववत्तीदो[1] ॥२५७॥

स्थितिबन्धानामपसरणमेकं समयप्रबद्धमधिकृत्य ।
उक्तं नानातः पुनः, न च उक्तमनुपपत्तितः ॥२५७॥

टीका – स्थितिबंधापसरण है सो विवक्षित स्थितिबंध का प्रथम समय विषैं संभवता जो एक समय प्रबद्ध, ताकौ अधिकार करि कह्या है । बहुरि नाना समय प्रबद्धनि की अपेक्षा न कह्या है, जातैं पूर्वस्थिति बंध तैं एक बार स्थितिबंधापसरण भये प्रथम समय विषैं जेता स्थितिबंध का प्रमाण हो है तितना ही अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत बंधते समयप्रबद्धनि के स्थितिबंध का प्रमाण हो है । समय समय प्रति नाना समयप्रबद्धनि के स्थितिबंधापसरण होने करि समय समय स्थितिबंध घटने की अनुपपत्ति कहिए अप्राप्ति है ।

एवं संखेज्जेसु, ट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु ।
संढुवसमदेतत्तो, इत्थिं च तहेव उवसमदि ॥२५८॥

एवं संख्येयेषु, स्थितिबन्धसहस्रकेषु अतीतेषु ।
सढोपशांते ततः, स्त्रीं च तथैव उपशमयति ॥२५८॥

टीका – असैं संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं अंतर्मुहूर्त काल करि नपुंसक वेद कौं उपशम हो है । तहां पीछैं तैसैं ही नपुंसक वेद उपशमवत् अंतर्मुहूर्त काल करि स्त्री वेद कौं उपशमावै है । इहां स्त्रीवेद का द्रव्य कौं स्थिापि संक्रमण फालि द्रव्यादिक का वा अल्प बहुत्व का वा समय समय असंख्यात गुणा क्रम का वर्णन पूर्वोक्तवत् जानना । बहुरि इहां इतना जानना ज्ञानावरणादिकनि का स्थिति अनुभाग कांडक घात अर आयु बिना सात कर्मनि का स्थिति बंध पूर्व प्रमाण तैं अन्य प्रमाण धरै हो है ।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

थीयद्धा संखेज्जदिभागेपगदे तिघादिठिदिबंधो ।
संखतुवं रसबंधो, केवलणाणेगठाणं तु[१] ।।२५९।।

स्त्री अद्धा संख्येयभागेपगते त्रिघातिस्थितिबन्धः ।
संख्यातं रसबन्धः, केवलज्ञानैकस्थानं तु ।।२५९।।

टीका – स्त्रीवेद उपशमावने के काल का संख्यातवां भाग गएं मोह का स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष मात्र औरनि तैं स्तोक हो है तातैं संख्यात गुणा संख्यात हजार वर्ष मात्र तीन घातियानि का, तातैं असंख्यात गुणा पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र नाम-गोत्र का, तातैं किछू अधिक साता वेदनीय का स्थितिबंध हो है । बहुरि इस ही काल विषैं केवल ज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण बिना तीन घातियनि का लता समान एक स्थानगत ही अनुभाग बंध हो है ।

थीउवसमिदाणंतरसमयादो सत्त णोकसायाणं ।
उवसमगो तस्सद्धा, संखज्जदिमे गदे तत्तो[२] ।।२६०।।

स्त्रीउपशमितानंतरसमयात् सप्तनोकषायाणम् ।
उपशामकः तस्याद्धा, संख्याते गते ततः ।।२६०।।

टीका – ऐसैं स्त्रीवेद उपशमावने के अनंतर समय तैं लगाय पुरुषवेद, छह हास्यादिक इन सात प्रकृतिनि कौं उपशमाव है । तिनके उपशमावने का काल अंतर्मुहूर्त मात्र है । ताका संख्यातवां भाग गएं कहा? सो कहैं हैं—

णामदुग वेयणियट्ठिदिबंधो संखवस्सयं होदि ।
एवं सत्तकसाया, उवसंता सेसभागंते[३] ।।२६१।।

नामद्विके वेदनीयस्थितिबन्धः संख्यवर्षको भवति ।
एवं सप्तकषाया, उपशांताः शेषभागांते ।।२६१।।

---

१. जयधवलाग–१३, पृष्ठ २८० ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८२ व
३ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सर्व ही कर्मनि का स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष प्रमाण हो है । तहां स्तोक मोह का, तातैं संख्यात गुणा तीन घातियानि का, तातैं संख्यात गुणा नामगोत्र का, तातैं किछू अधिक वेदनीय का जानना । असैं नपुंसक वेद का उपशमवत् सात नोकसाय हैं, ते उपशमन का अवशेष बहुभाग रहै थे, तिनिका अंत समय विषैं उपशमाना है ।

णवरि य पुंवेदस्स य, णवकं समऊणदोण्णिआवलियं ।
मुच्चा सेसं सव्वं, उवसंतं होदि तच्चरिमे[1] ॥२६२॥

नवरि च पुंवेदस्य च, नवकं समयोनद्व्यावलिकाम् ।
मुक्त्वा शेषं सर्वमुपशांतं भवति तच्चरमे ॥२६२॥

टीका – इतना विशेष है जो तिस अंत समय विषैं पुरुष वेद का एक समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धनि कौं छोडि अवशेष सर्व उपशमावै है । नवीन जे समयप्रबद्ध बंधै, ते नवक समय प्रबद्ध कहिए, सो बंध समय तैं लगाय आवलीकाल कौं बंधावली कहिए, तिस बंधावली विषै सो बंध्या द्रव्य उपशम होने योग्य नाहीं । अर एक समयप्रबद्ध के उपशमाने की समय समय संबंधी आवली मात्र फालि इहां हो है, तातैं समय घाटि दोय आवली मात्र समयप्रबद्ध उपशमै नाहीं । कैसें ? सो कहिए है –

उपशमकाल का अंत विषैं दोय आवली, तिनका नाम इहां द्विचरमावली अर चरमावली है । सो द्विचरमावली का प्रथम समय विषैं जो समयप्रबद्ध बंध्या था, सो बंधावली व्यतीत भएं चरमावली का प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति एक एक फालि का उपशमन करि चरमावली का अंत समय विषैं सर्व उपशम्या; बहुरि द्विचरमावली का द्वितीय समय विषैं जो समयप्रबद्ध बंध्या था, सो बंधावली व्यतीत भएं चरमावली का द्वितीय समय तैं लगाय चरम आवली का अंत समय पर्यंत अन्य फालि तौ उपशमै अर एक अन्त फालि नाहीं उपशमी । बहुरि असैं ही द्विचरमावली का तृतीयादि समयनि विषैं बंधे समयप्रबद्ध ते बंधावली व्यतीत भएं चरमावली का तृतीयादि समय तैं लगाय अंत समय पर्यंत समयनि विषैं अन्य फालि तौ उपशमै अर क्रम तैं दोय, तीन च्यारि आदि फालि उपशमी नाहीं । तहां असैं क्रम तैं द्विचरमा-

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वली का अंत समय विषैं बंध्या समयप्रबद्ध की चरमावली का अंत समय विषैं एक फालि उपशमी, अवशेष उपशमी नाहीं। असैं तौ द्विचरमावली विषैं बंधे समयप्रबद्धनि की फालि न उपशमी। बहुरि चरमावली के प्रथमादि सर्व समयनि विषैं बंधे समय प्रबद्धनि के किछू भी द्रव्य का उपशम भया नाहीं। जातैं तिनकी बंधावली व्यतीत नाहीं भई। बहुरि तातैं उपरिवर्ती उच्छिष्टावली विषैं पुरुषवेद का बंध भी अर उदय भी है नाहीं असैं पुरुषवेद कौं उपशम काल का अंत समय विषैं द्विचरमावली के तौ एक समय घाटि आवली मात्र अर चरमावली के संपूर्ण आवली मात्र मिलि एक समय घाटि दोय आवली मात्र समय प्रबद्ध उपशमै नाहीं। इहां अंश कौं अंशीवत् कहिए इस न्याय करि उपशमी नाहीं जे समयप्रबद्ध की फालि, तिनका भी नाम समयप्रबद्ध ही कह्या है असा जानना।

तच्चरिमे पुंबंधो, सोलसवस्साणि संजलणगाणं।
तद्दुगाणं सेसाणं, संखेज्जसहस्सवस्साणि[1] ॥२६३॥

तच्चरमे पुंबंधः, षोडशवर्षाणि संज्वलनकानाम्।
तद्द्विकानां शेषाणां, संख्यसहस्रवर्षाणि ॥२६३॥

टीका – तिस पुरुषवेद का उपशमन काल पर्यंत सवेद अनिवृत्तिकरण है, ताका अंत समय विषैं पुरुषवेद का सोलह वर्ष मात्र, संज्वलन चतुष्क का बत्तीस वर्ष मात्र, औरनि का संख्यात हजार वर्ष मात्र, तहां स्तोक तीन घातियानि का, तातैं संख्यात गुणा नाम-गोत्र का, तातैं साधिक वेदनीय का स्थितिबंध हो है।

पुरिसस्स य पढमठिदि, आवलिदोसुवरिदासु आगाला।
पडिआगाला छिण्णा, पडियावलियादुदीरणदा[2] ॥२६४॥

पुरुषस्य च प्रथमस्थितिः, आवलिद्वयोरुपरतयोरागालाः।
प्रत्यागालाः छिन्नाः, प्रत्यावलिकात उदीरणता ॥२६४॥

टीका – पुरुषवेद की अंतरायाम के नीचैं कही थी जो प्रथम स्थिति, तीहिं विषै दोय आवली अवशेष रहैं आगाल प्रत्यागाल का व्युच्छेद भया। बहुरि दोय

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८५।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८५।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आवली अवशेष रहैं, तहां प्रथम समय तैं लगाय पुरुषवेद की गुणश्रेणी निर्जरा का व्युच्छेद भया। तहां उदयावली तैं बाह्य ऊपरि निषैकनि विषैं तिष्ठता द्रव्य कौं उदयावली विषैं दीजिए है। असी उदीरणा ही पाइए है। इनिका लक्षण पूर्वोक्त जाननें।

अन्तरकदादु छण्णोकसायदव्वं ण पुरिसगे देदि।
एदि हु संजलणस्स य, कोधे अणुपुव्विसंकमदो[१] ॥२६५॥

अंतरकृतात् षण्णोकषायद्रव्यं न पुरुषके ददाति।
एति हि संज्वलनस्य च, क्रोधे आनुपूर्विसंक्रमतः ॥२६५॥

टीका – अंतर करनें तैं पीछैं हास्यादि छह नोकषायनि का द्रव्य है, सो पुरुषवेद विषैं सक्रमण नाहीं करै है, संज्वलन क्रोध विषैं ही संक्रमण करै है, जातैं इहां आनुपूर्वी संक्रमण पाइए है।

पुरिसस्स उत्तणवकं, असंखगुणियक्कमेण उवसमदि।
संकमदि हु हीणकमेणधापवत्तेण हारेण[२] ॥२६६॥

पुरुषस्य उक्तनवकं, असंख्यगुणितक्रमेण उपशमयति।
संक्रमति हि हीनक्रमेणाधः प्रवृत्तेन हारेण ॥२६६॥

टीका – पुरुषवेद के पूर्वोक्त समयप्रबद्ध जे नाहीं उपशमाए थे, ते वेद रहित जो अपगत वेद अनिवृत्तिकरण, ताके प्रथमादि समयनि विषै असैं उपशमाइए है। जो पुरुषवेद का उपशम काल की द्विचरमावली का द्वितीय समय विषैं बंध्या समयप्रबद्ध की एक फालि अवशेष रही थी, ताका अपगत वेद का प्रथम समय विषैं उपशम हो है। ताकौं होतैं सो समयप्रबद्ध सर्व उपशम्या अवशेष दोय समय घाटि दोय आवली मात्र समयप्रबद्ध रहैं, तहां जाकी बंधावली व्यतीत भई असा जो समयप्रबद्ध, ताका द्रव्य अपगत वेद का प्रथम समय विषैं जितना उपशमाया तातैं द्वितीयादि समयनि विषैं अंत फालि पर्यंत क्रम तैं असंख्यात गुणा द्रव्य उपशमाइए है ऐसे अन्य समयप्रबद्धनि का द्रव्य विषैं भी बंधावली व्यतीत होतैं समय समय असंख्यात

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६७।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८७ से २८९।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणा क्रम लिएं उपशम फालिनि का द्रव्य जानना । एक नवक समयप्रबद्ध एक आवली काल विषैं उपशमै तातैं तहां एक समयप्रबद्ध की आवली प्रमाण फाली जाननी । ऐसै अपगत वेद का प्रथम समय तें लगाय समय घाटि दोय आवली मात्र काल विषैं पुरुषवेद सर्व नवक समयप्रबद्ध उपशमाइए है । ऐसैं तौ उपशम विधान जानना ।

बहुरि पुरुषवेद का कोइ एक नवक समयप्रबद्ध कौं अधः प्रवृत्त नामा भागहार का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य है, सो अपगत वेद का प्रथम समय विषैं संज्वलन का क्रोध रूप होइ संक्रमण करै है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं अधः प्रवृत्त भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग द्वितीय समय विषैं संक्रमण करै है । बहुरि अवशेष बहुभाग कौं तैसैं ही भाग दीएं एक भाग तृतीय समय विषैं संक्रमण करै । ऐसैं समय घाटि दोय आवली का अंत पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं संक्रमण करै है । बहुरि अन्य कोइ नवक बंध का समय प्रबद्ध समय समय प्रति असंख्यात भाग घटता क्रम करि, कोई संख्यात भाग का घटता क्रम करि, कोई संख्यात गुणा घटता क्रम, करि कोई असंख्यात गुणा घटता क्रम करि, कोई संख्यात भागवृद्धि क्रम करि, कोई असंख्यात भागवृद्धि क्रम करि, कोई संख्यात गुणा वृद्धि क्रम करि, कोई असंख्यात गुणा वृद्धि क्रम करि संज्वलन क्रोध विषैं संक्रमण करै है । जातैं चतुः स्थान पतित हानिवृद्धि रूप योगनि करि बंधे समय प्रबद्धनि का द्रव्य हीनाधिक संभवै है । तातैं संक्रमण द्रव्य कैं भी चतुः स्थान पतित हानिवृद्धि का अनुक्रम संभवै है ।

पढमावेडे संजलणाणं, अन्तोमुहुत्तपरिहीणं ।
बस्साणं बत्तीसं, संखसहस्सियरगाणठिदिबंधो[1] ॥२६७॥

प्रथमावेदे संज्वलनानां, अन्तर्मुहूर्तपरिहीनम् ।
वर्षाणां द्वात्रिंशत्, संख्यसहस्रमितरेषां स्थितिबंधः ॥२६७॥

टीका – अपगत वेद का प्रथम समय विषैं संज्वलन चतुष्क का तो अंतर्मुहूर्त घाटि बत्तीस वर्ष मात्र स्थितिबंध है, जातैं बत्तीस वर्ष स्थिति थी, तामैं एक बार स्थितिबंधापसरण करि अंतर्मुहूर्त घटया । बहुरि अन्य कर्मनि का पूर्व स्थिति बंध तैं

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संख्यात गुणा घटता पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिक क्रम लीएं संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति बंध हो है ।

पढमावेदो तिविहं, कोहं उवसमदि पुव्वपढमठिदी ।
समयाहियग्रावलियं, जाव य तक्कालठिदिबंधो[1] ।।२६८।।

प्रथमावेदस्त्रिविधं, क्रोधं उपशमयति पूर्वप्रथमस्थितिः ।
समयाधिकावलिकां, यावच्च तत्कालस्थितिबंधः ।।२६८।।

टीका – प्रथम समयवर्ती ग्रपगतवेदी संयमी सो ग्रपगत वेद का प्रथम समय तैं लगाय पुरुषवेद का नवक समयप्रबद्ध सहित ग्रप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन इनि तीनों क्रोधनि उपशमावै है । तहां उदय रूप जो संज्वलन क्रोध, ताकी प्रथम स्थिति पूर्वै जो ग्रंतर करण का प्रारंभ विषैं अंतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति स्थापी थी । ताका प्रमाण पुरुषवेदकी प्रथम स्थिति तैं साधिक था, तिस विषैं व्यतीत भएं पीछैं जो ग्रवशेष रह्या तामैं एक समय ग्रधिक ग्रावली मात्र ग्रवशेष रहैं तहांतै पहिलैं इहां संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति जाननी । जातैं उच्छिष्टावली ग्रवशेष रहैं प्रथम स्थिति नाम न पावै है । बहुरि जैसैं ग्रागैं मानादिक की नवीन प्रथम स्थिति का स्थापन करैंगे तैसैं क्रोध की प्रथम स्थिति नवीन न हो है; जातैं संज्वलन क्रोध का ही उदय चल्या ग्रावै है; तातैं ग्रंतर करण विषैं स्थापी जो प्रथम स्थिति, ताका ही इहां ग्रहण किया, सो इस प्रथम स्थिति विषैं ग्रावली, प्रत्यावली ए दोय ग्रवशेष रहैं; ग्रागाल प्रत्यागाल का ग्रर संज्वलन क्रोध की गुणश्रेणी निर्जरा का व्युच्छेद हो है । द्वितीयावली का द्रव्य कौं उदयावली विषैं देनेरूप केवल उदीरणा ही पाइए है ।

संजलणचउक्काणं, मासचउक्कं तु सेसपयडीणं ।
बस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण[2] ।।२६९।।

संज्वलनचतुष्काणां, मासचतुष्कं तु शेषप्रकृतीनाम् ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ।।२६९।।

टीका – ग्रपगत वेद का प्रथम समय तैं लगाय ग्रन्तर्मुहूर्त मात्र ग्रायाम धरैं ग्रैसे संख्यात हजार स्थितिबंध भएं क्रोधत्रिक का उपशम काल का ग्रंत समय विषैं

---

१. जयधवला भाग– १३, पृष्ठ २६१,२६० ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६२ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संज्वलन चतुष्क का स्थितिबंध च्यारि मास मात्र हो है। बहुरि तिस ही अंत समय विषैं और कर्मनि का पूर्वस्थितिबंध तैं संख्यात गुणा घटता असा संख्यात हजार वर्ष मात्र पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिकपना लीएं स्थितिबंध हो है।

कोहदुगं संजलणगकोहे संछुहदि जाव पढमठिदी।
आवलितियं तु उवरिं, संछुहदि हु माणसंजलणे[1] ॥२७०॥

क्रोधद्विकं संज्वलनक्रोधे संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः।
आवलित्रिकं तु उपरि, संक्रामति हि मानसंज्वलने ॥२७०॥

टीका – अपगत वेद का प्रथम समय तैं लगाय संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषैं तीन आवली अवशेष रहैं तावत् अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान क्रोधादिक का द्रव्य कौं गुणसंक्रमण भागहार करि ग्रहि संज्वलन क्रोध विषैं संक्रम कराइए है। बहुरि संक्रमावली, उपशमावली, उच्छिष्टावली, ए तीन आवलि रहीं, तीन विषैं संक्रमावली का अंत समय पर्यंत तिन दोऊनि का द्रव्य संज्वलन मान विषैं संक्रमण हो है।

कोहस्स पढमठिदी, आवलिसेसे तिकोहमुवसंतं।
ण य णवकं तत्थंतिमबंधुदया होंति कोहस्स[2] ॥२७१॥

क्रोधस्य प्रथमस्थितिः, आवलिशेषं त्रिक्रोधमुपशांतम्।
न च नवकं तत्रांतिमबन्धोदया भवंति क्रोधस्य ॥२७१॥

टीका – संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषैं उच्छिष्टावली अवशेष रहैं उपशमावनाली का अंत समय विषैं समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध बिना पूर्वोक्त प्रकार चरम फालिरूप करि समस्त संज्वलन क्रोध का द्रव्य अपने रूप ही रहता उपशम भया। तहां ही संज्वलन क्रोध का बंध वा उदय का व्युच्छेद भया। तिस ही समय विषैं उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक है सो संज्वलन मान विषैं वक्ष्यमाण लक्षणरूप जो थिउक्क संक्रमण, ताकरि संक्रमण रूप होइ उदय कौं प्राप्त होसी। यातैं संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषैं समय घाटि उच्छिष्टावली अवशेष रही कहिए है। असैं क्रोधत्रिक का उपशम भया।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६३,२६४।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६३।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

से काले माणस्स य, पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
पढमट्ठिदिम्मि दव्वं, असंखगुणियक्कमे देदि[1] ॥२७२॥

तस्मिन् काले मानस्य च, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
प्रथमस्थितौ द्रव्यं, असंख्यगुणितक्रमेण ददाति ॥२७२॥

टीका – तीनों क्रोध का उपशम होनें की अनंतरि समय विषैं यहु संयमी, संज्वलन मान की अंतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति का कारक कहिए कर्ता अर वेदक कहिए उदय का भोक्ता हो है । सो कहिए है—

संज्वलन मान की प्रथम स्थिति के ऊपरिवर्ती जो द्वितीय स्थिति का द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग कौं ग्रहि, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, एक भाग कौं उदयावली का प्रथम समय तैं लगाय इहां करी जो प्रथम स्थिति, ताका अंत समय पर्यंत संबंधी जो निषेक, तिन विषैं **'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंड'** इत्यादि विधान तैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करि है । अवशेष बहुभाग कौं द्वितीय स्थिति विषैं अंत के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषैं **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तैं विशेष घटता क्रम लीएं निक्षेपण करिए है । बहुरि द्वितीयादि समयनि विषैं प्रथम समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य कौं ग्रहि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है । बहुरि समय समय उदय आया प्रथम स्थिति का एक एक निषेक कौं भोगवै है ।

पढमट्ठिदिसीसादो, बिदियादिम्हि य असंखगुणहीणं ।
तत्तो विसेसहीणं, जाव अइच्छावणमपत्तं[2] ॥२७३॥

प्रथमस्थितिशीर्षतः, द्वितीयादौ च असंख्यगुणहीनम् ।
ततो विशेषहीनं, यावत् अतिस्थापनमप्राप्तम् ॥२७३॥

टीका – प्रथम स्थिति का शीर्ष जो अंत समय, तीहिं विषैं निक्षेपण कीया जो द्रव्य, तातैं द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषैं निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २९५,२९६ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २९६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणा घटता है। तातैं प्रथम स्थिति का शीर्ष विषैं तौ भागहार का पल्य ताका भागहार असंख्यात है। तातैं असंख्यात समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य निक्षेपण हो है। अर द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषैं भागहार द्व्यर्ध गुणहानि है। तातैं समय प्रबद्ध का असंख्यातवां भाग मात्र निक्षेपण हो है। बहुरि द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक तैं उपरि निषेकनि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं यावत् अतिस्थापनावली प्राप्त न होइ तावत् द्रव्य का निक्षेपण हो है। बहुरि संज्वलन मान की प्रथम स्थिति का प्रथम समय तैं लगाय तीन मान का द्वितीय स्थिति विषैं तिष्ठता द्रव्य कौं समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीएं उपशमावै है। तहां ही संज्वलन क्रोध के समय घाटि उच्छिष्टावली मात्र निषेक, ते अपनी समान स्थिति लीएं जे संज्वलन मान की उदयावली के निषेक, तिनविषैं समय समय एक एक निषेक का अनुक्रम करि संक्रमण रूप होइ ताके अनंतरवर्ती समय विषैं उदय हो है। इसप्रकार संक्रम होइ ताही का नाम थिउक्क संक्रम कहिए है।

माणस्स य पढलठिदी, सेसे समयाहिया तु आवलियं।
तियसंजलणगबंधो, दुमास सेसाण कोह आलावो[1] ॥२७४॥

मानस्य च प्रथमस्थितिः, शेषे समयाधिकां तु आवलिकाम्।
त्रिकसंज्वलनकबन्धो, द्विमासं शेषाणां क्रोध आलापः ॥२७४॥

टीका – संज्वलन मान की प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहैं संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण होने तैं मान के उपशम काल का अंत समय विषैं संज्वलन मान, माया, लोभ का स्थिति बंध दोय मास हो है। अर और कर्मनि का पूर्व स्थिति बंध तैं संख्यात गुणा घटता है तथापि पूर्वोक्तवत् अल्प बहुत्व लिये संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति बंध हो है।

माणदुगं संजलणगमाणे संछुहदि जाव पढमठिदी।
आवलितियं तु उवरिं, मायासंजलणगे य संछुहदि[2] ॥२७५॥

मानद्विकं संज्वलनकमाने संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः।
आवलित्रयं तु उपरि, मायासंज्वलनके च संक्रामति ॥२७५॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २९८।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २९८।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – संज्वलन मान की प्रथम स्थिति विषैं तीन आवली अवशेष रहैं तहां तैं पहलैं अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान मानद्विक है, सो संज्वलन मान ही विषैं पूर्वोक्त विधान करि संक्रमण करै है। तातैं परै संक्रमणावलि के अंत समय पर्यंत तिन मानद्विक का द्रव्य संज्वलन माया विषैं संक्रमण करै है। बहुरि संज्वलन मान का द्रव्य है सो पहलैं वा इहां नियम करि संज्वलन माया ही विषैं संक्रमण करै है।

माणस्य य पढमठिदी, आवलिसेसे तिमाणमुवसंतं।
ण य णवकं तत्थंतिमबंधुदया होंति माणस्स[1] ॥२७६॥

मानस्य च प्रथमस्थितौ, आवलिशेषे त्रिमानमुपशांतं।
न च नवकं तत्रांतिम बन्धोदयौ भवतः मानस्य ॥२७६॥

टीका – संज्वलन मान की प्रथम स्थिति विषैं आवली अवशेष रहै उपशमनावली का अंत समय विषैं समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध बिना अन्य समस्त तीन मान का द्रव्य उपशम्या तब ही उपशमावली का अंत समय विषैं संज्वलन मान का बंध वा उदय की व्युच्छित्ति भई। पूर्ववत् मानत्रिक का उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक माया विषैं थिउक्क संक्रमण करि संक्रमण रुप होइ उदय होसी।

से काले मायाए, पढट्ठिदिकारवेदगो होदि।
माणस्स य आलावो, दव्वस्स विभंजणं तत्थ[2] ॥२७७॥

तस्मिन् काले मायायाः, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति।
मानस्य च आलापो, द्रव्यस्य विभंजनं तत्र ॥२७७॥

टीका – तीन मान का अनंतरि संज्वलन माया की प्रथम स्थिति का कारक अर वेदक हो है तहां संज्वलन माया द्रव्य का अपकर्षण निक्षेपण का विभाग मान द्रव्यवत् कहना। तब ही संज्वलन मान की उच्छिष्टावली के निषेक थिउक्क संक्रमण करि संज्वलन माया की उदयावली के अपने समान स्थिति रूप निषेकनि विषैं संक्रम करि उदय होसी। बहुरि संज्वलन मान के समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समय प्रबद्ध, ते तब ही समय घाटि दोय आवली मात्र काल करि उपशमै हैं।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६६,२६०,२६६।
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३००।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मायाए पढमठिदी, सेसे समयाहियं तु आवलियं ।
मायालोहगबंधो, मासं सेसाण कोह आलाओ[1] ॥२७८॥

मायायाः प्रथमस्थितौ, शेषे समयाधिकां तु आवलिकां ।
मायालोभगबन्धः, मासं शेषाणां क्रोधे आलापः ॥२७८॥

टीका – माया की प्रथम स्थिति विषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं संज्वलन माया अर लोभ का तौ मास मात्र स्थितिबंध हो है अर कर्मनि का क्रोधवत् आलाप करना । पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिकपना लीएं संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबंध है ।

मायदुगं संजलणगमायाए छुहदि जाव पढमठिदी ।
आवलितियं तु उवरिं, संछुहदि हु लोहसंजलणे ॥२७९॥[2]

मायाद्विकं संज्वलनगमायायां संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः ।
आवलित्रिकं तु उपरि, संक्रामति हि लोभसंज्वलनम् ॥२७९॥

टीका – संज्वलन माया का प्रथम स्थिति विषैं यावत् तीन आवली अवशेष रहैं तावत् अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान मायाद्विक का द्रव्य का संज्वलन माया विषैं ही सक्रमण करै है । तातैं परैं संक्रमणावली विषैं तिनिका द्रव्य संज्वलन लोभ विषैं संक्रमण करै है ।

मायाए पढमठिदी, आवलिसेसे त्ति मायमुवसंतं ।
ण य णवकं तत्थंतिम, बंधुदया होंति मायाए ॥२८०॥[3]

मायायाः प्रथमस्थितौ, आवलिशेषे इति मायामुपशांतं ।
न च नवकं तत्रांतिमे, बन्धोदयौ भवतः मायायाः ॥२८०॥

टीका – माया की प्रथम स्थिति विषैं आयली अवशेष रहैं उपशमानवली का अंत समय विषैं समय घाटि का दोय आवली मात्र नवक समय प्रबद्ध बिना अन्य

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३०३ ।
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ०३ ।
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सर्व माया का द्रव्य उपशम्या । ताही समय विषैं उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक है, सो संज्वलन लोभ का उदयावली का प्रथम निषेक विषैं थिउक्क संक्रमण करि संक्रमै है । तिस ही समय विषैं संज्वलन माया का बंध वा उदय की व्युच्छित्ति भई ।

से काले लोहस्स य, पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
ते पुण बादरलोहो, माणं वा होदि णिक्खेओ[1] ॥२८१॥

स्वे काले लोभस्य च, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
तत् पुनः बादरलोभः मानो वा भवति निक्षेपः ॥२८१॥

टीका – माया का उपशमने के अनंतरि संज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का कारक और वेदक हो है । सो अनिवृत्तिकरण जीव है, सो बादर कहिए स्थूल जो लोभ, ताकौं अनुभवता बादर सांपराय कहिए है । इहां संज्वलन लोभ का द्रव्य का अपकर्षण करि प्रथम स्थिति विषैं निक्षेपण कीजिए है । ताका विधान मान की प्रथम स्थिति विषैं जैसैं निक्षेपण कीया था तैसै जानना । तिस ही समय संज्वलन माया के समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धनि कौं पूर्वोक्त प्रकार करि उपशमावै है । अर समय घाटि उच्छिष्टावली मात्र माया के निषेकनि का संज्वलन लोभ विषैं थिउक्क संक्रमण हो है ।

पढमट्ठिदिअद्धंते, लोहस्स य होदि दिणपुधत्तं तु ।
वस्ससहस्सपुधत्तं, सेसाणं होदि ठिदिबंधो[2] ॥२८२॥

प्रथमस्थित्यर्धांते, लोभस्य च भवति दिनपृथक्त्वं तु ।
वर्षसहस्रपृथक्त्वं, शेषाणां भवति स्थितिबंधः ॥२८२॥

टीका – माया उपशमन का अनंतर समय तैं लगाय अनिवृत्तिकरण का अंत समय पर्यंत बादर लोभ का वेदक काल है । तातैं परैं सूक्ष्मसांपराय का अंत समय पर्यंत सूक्ष्म लोभ का वेदक काल है । दोऊ मिलाएं लोभ का वेदक काल हो है, सो लोभ वेदक काल अंतर्मुहूर्त मात्र है । ताकौं संख्यात का भाग देइ, तहां एक भाग बिना बहुभाग कौं तीन का भाग देइ एक एक समान भाग तीन स्थाननि विषैं स्थापना। बहुरि

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०४ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०६ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अवशेष एक भाग कौं संख्यात का भाग देइ तहां बहुभाग कौं प्रथम समान भाग विषैं मिलाएं बादर लोभ वेदक काल का प्रथम अर्ध हो है बहुरि अवशेष एक भाग कौं संख्यात का भाग देइ तहां बहुभाग दूसरा समान भाग में मिलाएं बादर लोभ वेदक काल का द्वितीय अर्ध हो है, सो यहु सूक्ष्मकृष्टि करने का काल है। इनि दोउनि कौं मिलाएं लोभ वेदक काल का दोय तीसरा भाग किछू अधिक प्रमाण बादर लोभ वेदक काल है। यातैं आवली अधिक बादर लोभ की प्रथम स्थिति है। बहुरि लोभ वेदक काल का तीसरा भाग किछू अधिक प्रमाण बादर लोभ वेदक काल का प्रथम अर्ध है, सो अर्थ संदृष्टि करी प्रगट जानिए है। बहुरि जो एक भाग अवशेष रह्या था, ताकौं तीसरा समान भाग विषैं मिलाएं सूक्ष्मकृष्टि का वेदक काल है, सोई सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान का काल जानना। इहां बादर लोभ वेदक काल का प्रथम अर्ध को अंत समय विषैं स्थितिबंध संज्वलन लोभ का तौ पृथक्त्व दिन प्रमाण अर औरनि का पूर्वोक्त क्रम लीएं पृथक्त्व हजार वर्ष प्रमाण है।

विदियद्धे लोभावरफड्ड्यहेट्ठा करेदि रसकिट्टिं।
इगिफड्ड्यवग्गणगद, संखाणमणंत भागमिदं[1] ॥२८३॥

द्वितीयार्धे लोभावरस्पर्धकाधस्तनां करोति रसकृष्टिम्।
एकस्पर्धकवर्गणागतं, संख्यानामनंत भागमिदम् ॥ २८३ ॥

टीका – संज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का प्रथम अर्ध कौं पूर्वोक्त प्रकार व्यतीत करि द्वितीयार्ध का प्रथम समय विषैं संज्वलन लोभ का अनुभाग सत्व विषैं अपकर्षण करि सूक्ष्मकृष्टि करिए है। सो विधान कहिए है—

संज्वलन लोभ का अनुभाग सत्व विषैं जघन्य अनुभाग शक्ति सहित जो परमाणू, ताविषैं अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद जीवरशि तैं अनंत गुणे हैं। सो याकौं जघन्य वर्ग कहिए। इतने इतने अविभाग प्रतिच्छेद सहित जेते कर्म परमाणू रूप वर्ग पाइए, तिनके समूह का नाम प्रथम वर्गणा है, सो संज्वलन लोभ के सत्ता रूप सर्व परमाणू, तिनकौं अनुभाग संबंधी किछू अधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं जो प्रमाण आवै, तितने प्रथम वर्गणा विषैं परमाणू हैं। याकौं अनुभाग संबंधी दो गुण-हानि का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवै है। विशेष कौं दोगुणहानि करि गुणें

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०७, ३०८

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथम वर्गणा विषैं परिमाणूनि का प्रमाण आवै है। इस प्रथम वर्गणा कौं साधिक ड्योढ गुणहानि करि गुणें संज्वलन लोभ का सर्व सत्व द्रव्य का प्रमाण हो है। सो यातैं द्रव्य कौं अपकर्षण करि अनुभाग की सूक्ष्म कृष्टि करै है। सो जघन्य स्पर्धक की लता समान प्रथम वर्गणा विषैं अविभाग प्रतिच्छेद हैं, तिनकौं नीचैं तितने भी अनंत गुणा घाटि अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद रूप सूक्ष्मकृष्टि हो है। तिन सूक्ष्मकृष्टिनि का प्रमाण जो एक स्पर्धक विषैं वर्गणानि का प्रमाण है ,ताके अनंतवें भाग मात्र जानना। पहलैं अंतर्मुहूर्त काल करि निपजै असा अनुभाग कांडक घात होता था, तीहिं बिना अब समय समय कृष्टि घात करने का प्रारंभ करै है असा अर्थ जानना।

उक्कट्टिदइगिभागं, पल्लासंखेज्जखंडदिगिभागं।
देदि सुहुमासु किटिट्सु, फड्ढयगे सेसबहुभागं[1] ॥२८४॥

अपकर्षितैकभागं, पल्यासंख्येयखंडितैकभागं ।
ददाति सूक्ष्मासु कृष्टिषु, स्पर्धके शेषे बहुभागम् ॥२८४॥

टीका – संज्वलन लोभ का सर्व सत्वरूप द्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौं ग्रहि ताकौं बहुरि पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां बहुभाग कौं जुदा राखि, एक भाग मात्र द्रव्य कौं सूक्ष्मकृष्टि रूप परिणमावै है। तहां **"अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे"** इत्यादि विधान तैं तिस एक भाग मात्र द्रव्य कौं कृष्टनि का प्रमाणरूप जो कृष्ट्यायाम, ताका भाग दीएं मध्यधन आवै है। याकौं एक घाटि कृष्ट्यायाम का आधा करि हीन जो दो गुणहानि, ताका भाग दीएं चय का प्रमाण आवै है। याकौं दो गुणहानि करि गुणें आदि वर्गणा का द्रव्य हो है। सो इतने द्रव्य कौं तौं प्रथम कृष्टि विषैं निक्षेपण करै है याकरि प्रथम कृष्टि निपजाइए है। यहु ही प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टिनि विषैं जघन्य कृष्टि है। बहुरि यातैं द्वितीयादि कृष्टिनि विषैं एक एक चय प्रमाण घटता द्रव्य निक्षेपण करै है। अैसैं एक घाटि कृष्ट्यायाम मात्र चय करि हीन प्रथम कृष्टि मात्र द्रव्य कौं अंत कृष्टि विषैं निक्षेपण करै है। अब इनिविषैं शक्ति का प्रमाण कहिए है–

पूर्व स्पर्धकनि का जघन्य वर्ग विषैं जो अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण है, ताकौं कृष्ट्यायाम का जो प्रमाण, तितनी बार अनंत का भाग दीएं, जो प्रमाण

---

१. जयधवला, भाग–१३ पृ. ३०८,३०९।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आवै, तितने प्रथम कृष्टि विषै अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद हैं। बहुरि द्वितीयादि कृष्टि विषै क्रमतैं अनंत गुणे हैं। सो एक घाटि कृष्ट्यायाम मात्र बार अनंत करि गुणे अंतकृष्टि विषै ते अविभाग प्रतिच्छेद पूर्व स्पर्धक का जघन्य वर्ग के अनंतवां भाग मात्र हैं। ऐसैं प्रथम समय विषै कीनी सूक्ष्मकृष्टि हो है। बहुरि जे अपकर्षण कीए द्रव्य विषै बहुभाग जुदे स्थापे थे, तिनके द्रव्य कौं पूर्वैं सत्तारूप पाइएं ऐसे जे पूर्व स्पर्धक तिन संबंधी नानागुणहानि विषै निक्षेपण करै है। तहां "**दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा**" इत्यादि विधान तैं तिस बहुभाग द्रव्य कौं अनुभाग संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं जो द्रव्य आवै ताकौं प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा विषै निक्षेपण करै है। बहुरि द्वितीयादि वर्गणानि विषै एक चय घटता क्रम लीएं निक्षेपण करै है। द्वितीयादि गुणहानिनि की वर्गणानि विषै क्रम तैं पूर्व गुणहानि तैं आधा आधा द्रव्य निक्षेपण करै है। ऐसैं सूक्ष्मकृष्टि करण काल का प्रथम समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य का निक्षेपण करै है। इहां अंतकृष्टि विषैं निक्षेपण कीया द्रव्य तातैं पूर्व स्पर्धक की जघन्य वर्गणा विषै निक्षेपण कीया द्रव्य अनंत गुणा घाटि जानना। अब कृष्टि शब्द का अर्थ कहिए है–

कृश तनू करणे इस धातु करि '**कर्षणं कृष्टिः**' जो कर्म परमाणूनि की अनुभाग शक्ति का घटावना, ताका नाम कृष्टि है। अथवा '**कृश्यत इति कृष्टिः**' समय समय प्रति पूर्व स्पर्धक की जघन्य वर्गणा तैं भी अनंत गुणा घटता अनुभागरूप जो वर्गणा, ताका नाम कृष्टि है।

पडिसमयमसंखगुणा, दव्वादु असंखगुणविहीणकमे।
पुव्वगहेट्ठा हेट्ठा, करेदि किट्टिं स चरिमो त्ति[1] ॥२८५॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणा, द्रव्यात् असंख्यगुणविहीनक्रमेण।
पूर्वगाधस्तनां अधस्तनां, करोति कृष्टिं स चरमे इति ॥२८५॥

टीका–कृष्टि करण काल का द्वितीय समय तैं लगाय अंत समय पर्यंत पूर्व समय विषैं जितना द्रव्य अपकर्षण कीया, तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य कौं संज्वलन लोभ का पूर्व स्पर्धक रूप सर्व सत्व द्रव्य तैं ग्रहि करि अपूर्व कृष्टि करै है, सो पूर्व समयनि विषै भई ते पूर्व कृष्टि कहिए। विवक्षित समय विषैं नवीन कृष्टि भईं, ते

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०९, ३१०।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपूर्व कृष्टि कहिए। सो पूर्व पूर्व समय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण तैं उत्तर उत्तर समय विषैं करी कृष्टिनि का प्रमाण क्रम तैं असंख्यात गुणा घटता है अर अनुभाग अनंत गुणा घटता है। तहां कृष्टि करण काल का दूसरा समयनि विषै जो प्रथम समय विषै जो द्रव्य अपकर्षण कीया था, तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य कौं संज्वलन लोभ का सर्व सत्त्व द्रव्य तैं अपकर्षण करि, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग तौ पूर्व स्पर्धकनि विषैं निक्षेपण करने। अवशेष एक भाग विषै कितना एक द्रव्य कौं प्रथम समय विषै करी जो जघन्य कृष्टि ताके नीचैं अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं अपूर्व कृष्टि तिनि रूप परिणमावै है। अवशेष द्रव्य कौं प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टि, तिनिरूप परिणमावै है।

हेट्ठासीसे उभयग दव्वविसेसे य हेट्ठकिट्टिम्मि।
मज्झिमखंडे दव्वं, विभज्ज बिदियादिसमयेसु[1] ॥२८६॥

अधस्तनशीर्षे उभयग द्रव्यविशेषे च अधस्तन कृष्टौ।
मध्यमखंडे द्रव्यं, विभज्य द्वितीयादिसमयेषु ॥ २८६ ॥

टीका – कृष्टि करण काल का दूसरा समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य, ताकौं अधस्तन शीर्ष विशेषनि विषैं उभय द्रव्य विशेषनि विषैं अधस्तन कृष्टिनि विषैं मध्यम खंडनि विषैं च्यारि प्रकार विभाग करि निक्षेपण करै है। सोई कहिए है—

पूर्व समय विषैं कीनी जे कृष्टि, तिनि विषैं प्रथम कृष्टि विषैं तौ बहुत परमाणू है। अर द्वितीयादि कृष्टिनि विषैं एक एक चय घटता क्रम लीए है, तहां पूर्व कृष्टि विषैं संभवता चय का प्रमाण ल्याय द्वितीय कृष्टि विषैं एक चय अर तृतीय कृष्टि विषैं दोय चय असैं क्रम तैं एक एक बधता चय प्रमाण परमाणू तिन द्वितीयादि कृष्टिनि विषैं मिलाएं सर्व कृष्टि हैं, ते प्रथम कृष्टि के समान होंइ सो असैं जेता द्रव्य दीया, ताका नाम अधस्तन कृष्टि द्रव्य है। याकौं दीएं सर्व पूर्व कृष्टि प्रथम कृष्टि के समान हो है। सो इस द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है—

पूर्व समय विषैं जो कृष्टि विषैं द्रव्य दीया, ताकौं पूर्व समय विषैं कीनी जे कृष्टि, तिनका प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीएं मध्यधन आवै है। ताकौं

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ सं. ३१२ से ३१४।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि, ताका भाग दीएं चय जो एक विशेष, ताका प्रमाण आवै है। तहां एक चय कौं आदि विषैं स्थापना, जातैं द्वितीय कृष्टि विषैं एक चय देना है। बहुरि एक चय उत्तर स्थापना, जातैं तृतीयादि कृष्टिनि विषैं एक एक चय बधता देना है। बहुरि एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापना, जातैं प्रथम कृष्टि विषैं चय नाहीं मिलावना है। अैसें स्थापि **"पदमेगेण विहीणं"** इत्यादि श्रेणि व्यवहार रूप गणित सूत्र करि एक घाटि गच्छ कौं दोय का भाग देइ, ताकौं उत्तर जो एक चय, ताकरि गुणि, तामैं प्रभव जो आदि एक चय, ताकौं मिलाय बहुरि गच्छ करि गुणैं चय धन आवै है। अंक संदृष्टि करि जैसें एक घाटि कृष्टि प्रमाण गच्छ सात, तामैं एक घटाएं छह, ताकौं दोय का भाग दीएं तीन, ताकौं चय का प्रमाण सोलह करि गुणें अठतालीस, यामैं प्रभव जो एक चय सोलह ताकौं मिलाएं चौसठि, याकौं गच्छ सात करि गुणैं च्यारि सै अठतालीस चय धन होइ। तैसें विधान तैं जो प्रमाण आवैं, तितना अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य जानना। बहुरि जो पूर्व कृष्टिनि विषैं प्रथम कृष्टि, ताका प्रमाण था, ताहीके समान प्रमाण लीएं जे विवक्षित समय विषैं अपूर्व कृष्टि करी तिनि विषै जो समान प्रमाण लीएं समपटिट्का रूप द्रव्य देना। ताका नाम अधस्तन कृष्टि द्रव्य है। इस द्रव्य कौं दीएं अपूर्व कृष्टि हैं ते प्रथम पूर्व कृष्टि के समान हो हैं, याका प्रमाण ल्याइए है—

पूर्वोक्त पूर्व कृष्टि संबंधी चय, ताकौं दो गुणहानि करि गुणें, पूर्व कृष्टिनि विषैं प्रथम कृष्टि के द्रव्य का प्रमाण आवै है। सो एक कृष्टि का इतना द्रव्य होइ तौ सर्व अपूर्व कृष्टिनि का केता होइ? अैसें त्रैराशिक करि तिस प्रथम पूर्व कृष्टि का द्रव्य कौं सर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणें अधस्तन कृष्टि द्रव्य का प्रमाण हो है। इहां प्रथम, समय विषैं कीनी कृष्टिनि का प्रमाण कौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीएं द्वितीय समय विषैं कीनी कृष्टिनि का प्रमाण हो है अैसा जानना। बहुरि पूर्वोक्त अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि समान प्रमाण लीएं भई तहां अपूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि तैं लगाय उपरि उपरि अपूर्व कृष्टि स्थापि, तिनके ऊपरि प्रथमादि पूर्व कृष्टि स्थापनी अैसें स्थापि, तिनका चय घटता क्रमरूप एक गोपुच्छ करने के अर्थि सर्व कृष्टि संबंधी संभवता चय का प्रमाण ल्याइ, अंत की पूर्व कृष्टि विषैं एक चय ताके नीचैं उपांत पूर्व कृष्टि विषैं दोय चय अैसें क्रम तैं एक एक चय बधता प्रथम अपूर्व कृष्टि पर्यन्त द्रव्य देना। याका नाम उभय द्रव्य विशेष है। याकौं दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का चय घटता क्रम रूप एक गोपुच्छ हो है, याका प्रमाण ल्याइए है—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पूर्व समयनि विषैं जो कृष्टिनि विषैं दीया द्रव्य था अर इस विवक्षित समय विषैं जो कृष्टिनि विषैं देने योग्य द्रव्य है इन दोऊनि कौं मिलाएं जो द्रव्य का प्रमाण भया, ताकौं पूर्व कृष्टिनि का अर अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मिलाएं जो गच्छ होइ, ताका भाग दीएं मध्यधन आवै है। ताकौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि, ताका भाग दीएं इहां चय जो एक विशेष, ताका प्रमाण हो है। सो एक चय आदि स्थापि अर एक चय उत्तर स्थापि अर पूर्व अपूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापि **'पदमेगेण विहीणं'** इत्यादि सूत्र के अनुसारि एक घाटि गच्छ का आधा कौं चय करि गुणि, तामैं चय मिलाय ताकौं गच्छ करि गुणैं सर्व उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि जो विवक्षित समय विषैं कृष्टि रूप परिणमावने योग्य द्रव्य अपकर्षण कीया, तीहिं विषैं पूर्वोक्त अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य अर उभय द्रव्य घटाएं अवशेष द्रव्य रह्या, ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषैं समान भाग करि देना। याका नाम मध्यम खंड द्रव्य है। बहुरि याकौं दीएं तिस अपकर्षण द्रव्य की तौ समाप्तता हो है अर सर्व पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि विषैं चय घटता क्रम रूप ज्यूं का त्यूं रहै है। याका प्रमाण ल्याइए है—

विवक्षित समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र द्रव्य कृष्टिनि विषैं देने योग्य है। तीहिंविषैं पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य घटाएं किंचिदून भया सो इतना द्रव्य सर्व कृष्टिनि विषैं दीजिए तौ एक कृष्टि विषैं केता दीजिए असैं त्रैराशिक करि तिस द्रव्य कौं पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीएं एक कृष्टि विषैं देने योग्य एक खंड का प्रमाण हो है। याकौं सर्वकृष्टि प्रमाण करि गुणैं, सर्व मध्यमखंड द्रव्य का प्रमाण हो है। याप्रकार इहां विवक्षित द्वितीय समय विषैं कृष्टिरूप होने योग्य द्रव्य विषैं बुद्धिकल्पना तैं ते अधस्तन-शीर्ष विशेष आदि च्यारि प्रकार द्रव्य जुदे स्थापे। असैं ही इहां तृतीयादि समयनि विषैं कृष्टिरूप होने योग्य द्रव्य विषैं विधान जानना। वा आगैं क्षपक श्रेणी का वर्णन विषैं अपूर्व स्पर्धकनि का बादर कृष्टिनि का वा सूक्ष्मकृष्टिनि का वर्णन करतैं असैं विधान कहेंगे तहां असा ही अर्थ समझना। विशेष होइ सो विशेष जानि लेना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां संदृष्टि करि चय घटता क्रम लीएं पूर्व कृष्टिनि की रचना ऐसी—

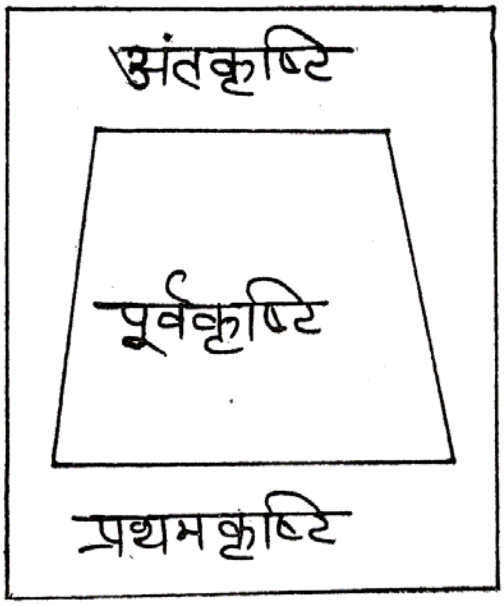

बहुरि यामैं अधस्तनशीर्ष द्रव्य मिलाएं समानरूप पूर्वकृष्टिनि की रचना ऐसी—

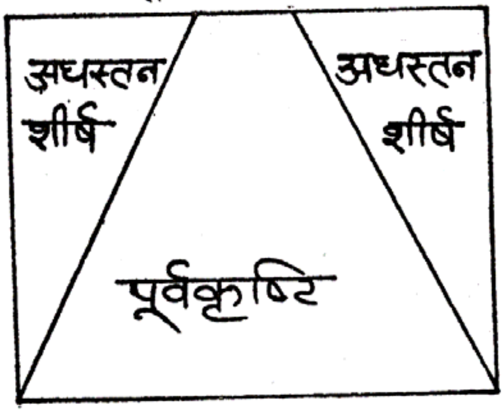

बहुरि इनके नीचैं अधस्तन कृष्टि द्रव्य करि अपूर्व कृष्टि की समपट्टिका रचना कीएं ऐसी—

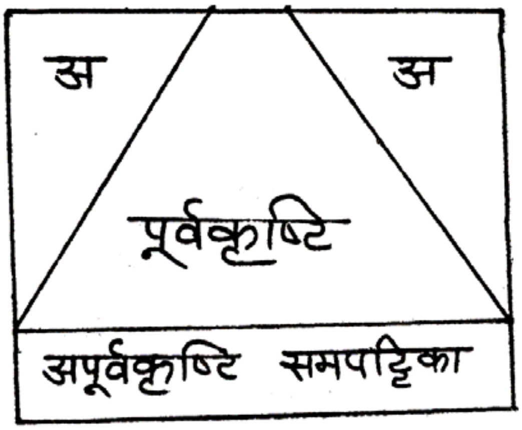

इहां उभय द्रव्य विशेष द्रव्य निक्षेपण कीएं गोपुच्छ की ऐसी हो है—

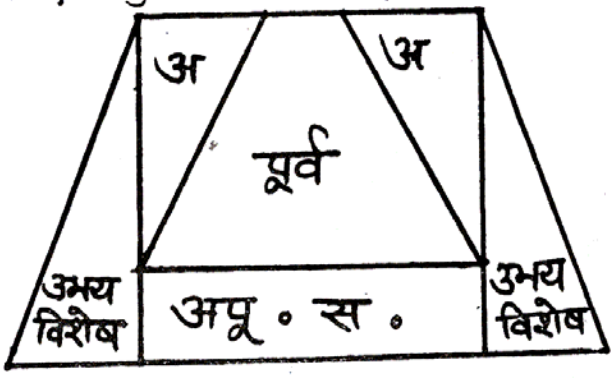

यामैं मध्यम खंड द्रव्य मिलाएं ऐसी रचना हो है—

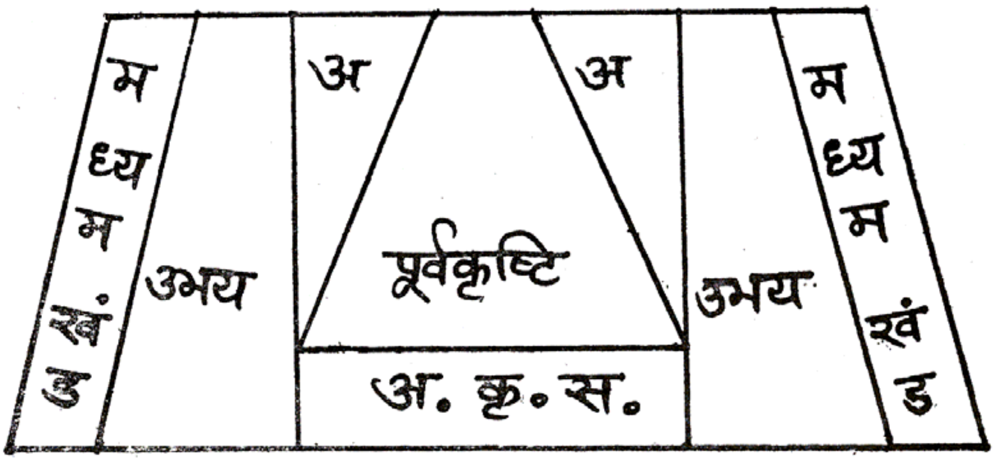

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

या प्रकार द्रव्य देने का विधान जानना । यद्यपि द्रव्य तौ युगपत् जेता देने योग्य है तितना दीजिए है तथापि समझने के अर्थि जुदा जुदा विभाग करि वर्णन किया है ।

हेट्ठासीसं थोवं, उभयविसेसे तदो असंखगुणं ।
हेट्ठा अणंतगुणिदं, मज्झिमखंडं असंखगुणं ॥२८७॥

अधस्तनशीर्षं स्तोकं, उभयविशेषे ततोऽसंख्यगुणं ।
अधस्तनमनंतगुणितं, मध्यमखंडं असंख्यगुणम् ॥२८७॥

टीका – ए कहे च्यारि द्रव्य, तिनविषैं अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य सर्व तैं स्तोक है । यातैं उभय द्रव्य विशेष असंख्यात गुणा है । यातैं अधस्तन कृष्टि द्रव्य अनंत गुणा है । यातैं मध्यम खंड द्रव्य असंख्यात गुणा है असा जानना ।

अवरे बहुगं देदि हु, विसेसहीणक्कमेण चरिमो त्ति ।
तत्तो णंतगुणूणं, विसेसहीणं तु फड्ढयगे ॥२८८॥

अवरस्मिन् बहुकं, ददाति हि विशेषहीनक्रमेण चरमे इति ।
ततोऽनंतगुणोनं, विशेषहीनं तु स्पर्धके ॥२८८॥

टीका – दूसरे समय विषैं कीनी जे अपूर्वकृष्टि, तिनविषैं जो जघन्य कृष्टि है, तिस विषैं तौ बहुत द्रव्य दीजिए है बहुरि द्वितीय अपूर्व कृष्टि तैं लगाय अपूर्व कृष्टि की अंत कृष्टि पर्यंत क्रम तैं चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है । बहुरि तातैं पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं निक्षेपण कीया द्रव्य अनंत गुणा घटता है । । तातैं परैं ताकी द्वितीयादि वर्गणा जे नाना गुणहानि सम्बन्धी अंत गुणहानि की अंत वर्गणा पर्यंत हैं, तिन विषैं अपनी अपनी गुणहानि विषैं सम्भवता चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है । सो इहां याकौं विशेष करि दिखाइए है—

तहां द्वितीय सयम विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य है, ताकौं पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि विषैं निक्षेपण करने का विधान श्रीमाधवचंद्र गुरु के अनुसार तैं कहैं हैं–द्वितीय समय विषैं कीनी जे अपूर्वकृष्टि, तिन विषैं अधस्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य तौ न दीजिए है अर अवशेष तीन द्रव्य निक्षेपण करिए है । तहां अधस्तन

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कृष्टि द्रव्य तैं एक कृष्टि का द्रव्य कौं अर मध्यम खंड का द्रव्य तैं एक खंड का द्रव्य कौं अर उभय विशेष द्रव्य तैं पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौं मिलाएं जो प्रमाण होइ तितने मात्र चयनि का द्रव्य कौं ग्रहि करि जघन्य कृष्टि विषैं निक्षेपण करै है। तातैं जघन्य कृष्टि विषैं दीया द्रव्य बहुत जानना। बहुरि तातैं ऊपरि अधस्तन कृष्टि द्रव्य तैं एक एक कृष्टि द्रव्य कौं अर मध्यम खंड द्रव्य तैं एक-एक खंड द्रव्य कौं उभय विशेष द्रव्य तै पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण तैं क्रम करि एक एक घटता प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौं ग्रहि करि अनुक्रम तैं द्वितीयादि अपूर्व कृष्टिनि विषैं निक्षेपण करै है। तहां अंत कृष्टि विषैं एक कृष्टि द्रव्य कौं अर एक मध्यम खंड द्रव्य कौं अर एक अधिक पूर्व कृष्टि का प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौं निक्षेपण कीजिए है। इहां प्रथमादि कृष्टि तैं द्वितीयादि कृष्टि विषैं दीया द्रव्य एक-एक उभय द्रव्य विशेष मात्र घटता जानना। इहां अधस्तन कृष्टि का द्रव्य समाप्त भया। ऐसैं तीन द्रव्य का स्थापन कह्या। या प्रकार इतने-इतने द्रव्य करि इहां अपूर्व कृष्टि निपजी।

बहुरि प्रथम समय विषैं करी ऐसी अपूर्व[१] कृष्टि, तिनि विषैं जो जघन्य कृष्टि तीहिं विषैं दोय ही द्रव्य का निक्षेपण हो है। तहां मध्यम खंड द्रव्य तैं एक खंड के द्रव्य कौं अर उभय विशेष द्रव्य तैं पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौं ग्रहि निक्षेपण कीजिए है। यहु अपूर्व कृष्टिनि का अंत कृष्टि विषैं निक्षेपण कीया जो द्रव्य, तातैं असंख्यातवां भाग अर अनंतवां भाग करि हीन जानना, जातैं द्वितीय समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य तैं असंख्यातवें भाग मात्र तौ अधस्तन कृष्टि के एक कृष्टि का द्रव्य अर सर्व द्रव्य के अनंतवें भाग मात्र जो उभय विशेष का चय, इनकरि घटता द्रव्य इहां निक्षेपण कीया है। बहुरि द्वितीयादि पूर्व कृष्टिनि विषैं अधस्तन शीर्ष विशेष सहित तीन द्रव्य का निक्षेपण हो है। तहां द्वितीय पूर्व कृष्टि विषैं अधस्तन शीर्ष विशेष तैं एक चय के द्रव्य कौं मध्यम खंड द्रव्य तैं एक खंड के द्रव्य कौं उभय विशेष द्रव्य तैं एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौं ग्रहि निक्षेपण करै है। बहुरि तृतीयादि पूर्व कृष्टिनि विषैं अधस्तन शीर्ष विशेष तैं दोय, तीन आदि क्रम तैं एक-एक बधता चयनि के द्रव्य कौं अर मध्यम खंड तैं एक-एक खंड के द्रव्य कौं उभय विशेष द्रव्य तैं दोय, तीन आदि घटता पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौं ग्रहि करि क्रम तैं निक्षेपण करै है। तहां पूर्व कृष्टिनि की अंत कृष्टि विषैं अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य तैं एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र चयनि के

१. 'अपूर्व' की जगह अ तथा ख प्रति में 'पूर्व' शब्द मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्रव्य कौं मध्यम खंड द्रव्य तैं एक खण्ड द्रव्य कौं उभय विशेष द्रव्य तैं एक चय के द्रव्य कौं ग्रहि करि निक्षेपरण करि निक्षेपण करै है। इहां प्रथमादि कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं द्वितीयादि कृष्टि विषैं दिया द्रव्य क्रम तैं उभय द्रव्य विशेष के अनंतवें भाग मात्र जो अधस्तन शीर्ष विशेष, ताकरि हीन उभय द्रव्य विशेष मात्र जानना। ऐसैं पूर्व कृष्टि थी, तिनविषैं इतना द्रव्य और मिलाया या प्रकार दीया द्रव्य का निक्षेपण कीएं प्रथम द्वितीय समय विषैं कीनी जे कृष्टि, तिनिका द्रव्य सर्व ही एक गोपुच्छाकार हो है।

जैसैं गाय का पूंछ क्रम तैं घटता हो है, तैसैं क्रम तैं घटता द्रव्य प्रमाण लीएं हो है। सो अर्थसंदृष्टि आदि करि विचारैं यहु प्रकट जानिए है। सो संस्कृत टीका तैं जानना। बहुरि बहुभाग मात्र जो पूर्व स्पर्धक, तिनि विषैं देने योग्य द्रव्य था, ताकौं **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तैं प्रथमादि वर्गणानि विषैं चय घटता क्रम करि दीजिए है। इहां अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य क्रम तैं प्रथम वर्गणा द्रव्य अनंतवें भाग मात्र है, जातैं इहां भागहार द्व्यर्ध गुणहानि है। या प्रकार इस गाथा का अर्थ जानना।

णवरि असंखाणंतिमभागूणं पुव्वकिट्टिसंधीसु।
हेट्ठिमखंडपमाणेणेव विसेसेण हीणादो ॥२८९॥

नवरि असंख्यानामंतिमभागोनं पूर्वकृष्टिसंधिषु।
अधस्तनखंडप्रमाणेनैव विशेषेण हीनात् ॥२८९॥

टीका – इतना विशेष जो पूर्व-अपूर्व कृष्टि की संधिनि विषै अपूर्व कृष्टि की अंत कृष्टि विषै निक्षेपण कीया द्रव्य तैं पूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषै निक्षेपण कीया द्रव्य है, सो असंख्यातवां भाग करि वा अनंतवां भाग करि घटता है। जातैं एक अधस्तन कृष्टि का द्रव्य अर एक उभय द्रव्य का विशेष ता करि हीन हो है। सो कथन पूर्वैं किया ही है।

अवरादो चरिमेत्ति य, अणंतगुणिदक्कमादु सत्तीदो।
इदि किट्टीकरणद्धा, बादरलोहस्स बिदियद्धं[1] ॥२९०॥

१. जयधवला भाग–१३; पृष्ठ ३१४, ३१५।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अवरस्मात् चरम इति च, अनंतगुणितक्रमात् शक्तितः ।
इति कृष्टिकरणाद्धा, बादरलोभस्य द्वितीयार्धम् ।।२९०।।

टीका – अपूर्वकृष्टि की जघन्य कृष्टि के अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद हैं, तिनतैं द्वितीयादि पूर्व कृष्टि की अंत कृष्टि पर्यंत के अविभाग प्रतिच्छेद क्रम तैं अनंत अनंत गुणे हैं। तहां पूर्व कृष्टि की अंत कृष्टि विषै एक घाटि पूर्व अपूर्व कृष्टि का जो प्रमाण तितनी बार अनंत का गुणकार हो है। ऐसैं द्वितीय समय विषै विधान कीया। बहुरि जैसैं द्वितीय समय विषै विधान कह्या तैसैं ही कृष्टि करण काल के तृतीयादि अंत समय पर्यन्तनि विषै क्रम तैं असंख्यात गुणा द्रव्य कौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है। इस प्रकार बादर लोभ वेदक काल का द्वितीय अर्ध मात्र रूप सूक्ष्म कृष्टि करने का काल व्यतीत हो है। जैसैं क्षपक श्रेणी विषै पूर्व-अपूर्व स्पर्धकनि का सर्व ही द्रव्य कौं अपकर्षण करि कृष्टि करै है। तैसैं उपशम श्रेणी विषै भी कृष्टि करै है। विशेष इतना––

इहां पूर्व स्पर्धक के द्रव्य तैं असंख्यातवां भाग मात्र ही द्रव्य कौं ग्रहि सूक्ष्म कृष्टि करै है। अवशेष द्रव्य अपने स्वरूप रूप ही रहता संता उपशमै है।

बिदियद्धा संखेज्जा, भागेसु गदेसु लोभठिदिबंधो ।
अंतोमुहुत्तमेत्तं, दिवसपुधत्तं तिघादीणं[1] ।।२९१।।

द्वितीयाद्धा संख्येयभागेषु गतेषु लोभस्थितिबंधः ।
अंतर्मुहूर्तमात्रं दिवसपृथक्त्वं त्रिघातिनाम् ।।२९१।।

टीका–संज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का द्वितीय अर्ध मात्र जो कृष्टि करण काल, ताकौं संख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग व्यतीत होतैं अंत समय विषै संज्वलन लोभ का अंतर्मुहूर्त मात्र अर तीन घातियानि का पृथक्त्व दिन मात्र स्थिति बंध हो है।

किट्टीकरणद्धाए, जाव दुचरिमं तु होदि ठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि अघादिठिदिबंधो[2] ।।२९२।।

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१५, ३१६।

२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१६।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कृष्टिकरणाद्धाया यावत् द्विचरमं तु भवति स्थितिबंधः ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि अघातिस्थितिबंधः ।।२९२।।

टीका – कृष्टि करण काल का यावत् द्विचरम समय प्राप्त होइ तावत् तीन अघातिया कर्मनि का स्थिति बंध यथासम्भव संख्यात हजार वर्षमात्र है । बहुरि संज्वलन लोभादिकनि का भी स्थिति बंध है सो तिस द्विचरम समय पर्यंत पूर्वोक्त प्रमाण लीएं समान रूप ही जानना ।

किट्टीयद्धाचरिमे, लोभस्संतो मुहुत्तियं बंधो ।
दिवसंतो घादीणं, बेवस्संतो अघादीणं[1] ।।२९३।।

कृष्ट्यद्धाचरमे, लोभस्यांतर्मुहूर्तकं बंधः ।
दिवसांतः घातिनां, द्विवर्षांतोऽघातिनाम् ।।२९३।।

टीका–कृष्टि करण काल का अंत समय विषैं पूर्व स्थिति बंध तैं संख्यात गुणा घाटि संज्वलन लोभ का अंतर्मुहूर्त मात्र अर तीन घातियानि का दिवसांत कहिए एक दिन किछू घाटि अर तीन अघातियानि का द्वि वर्षांत् कहिए दोय वर्ष किछू घाटि स्थिति बंध हो है । ए उपशमक अनिवृत्तिकरण के अंत समय विषै स्थिति बंध कहे ते क्षपक अनिवृत्तिकरण के अंत समय के स्थिति बंध तैं दूणे हैं ।

बिदियद्धा परिसेसे, समऊणावलितियेसु लोभदुगं ।
सट्ठाणे उवसमदि हु, ण देदि संजलणलोहम्मि[2] ।।२९४।।

द्वितीयार्धे परिशेषे, समयोनावलित्रिकेषु लोभद्विकम् ।
स्वस्थाने उपशाम्यति हि, न ददाति संज्वलनलोभे ।।२९४।।

टीका– संज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का द्वितीयार्ध विषै समय घाटि तीन आवली अवशेष रहैं अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान लोभ है सो संज्वलन लोभ विषै संक्रमण नाहीं करै है, जातैं संक्रमणावली का प्रथम समय विषै ही इस संक्रमण का विश्राम

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१६, ३१७ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३१७ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भया। तौ कहा है ? तिनि दोऊ लोभनि का द्रव्य है सो स्वस्थाने कहिए अपने रूप ही विषै होता संता उपशमै है। बहुरि संक्रमणावली व्यतीत भएं तहां दोय आवली अवशेष रहैं आगाल प्रत्यागाल की भी व्युच्छित्ति भई। बहुरि प्रत्यावली जो द्वितीयावली, ताका अंत समय पर्यंत उदीरणा वर्तै है; इनिका स्वरूप पूर्वै कह्या है तैसें जानना।

बादरलोभादिठिदी, आवलिसेसे तिलोहमुवसंतं।
णवकं किट्टिं मुच्चा, सो चरिमो थूलसंपराओ य[1] ॥२९५॥

बादरलोभादिस्थितौ आवलिशेषे त्रिलोभमुपशांतं।
नवकं कृष्टिं मुक्त्वा स चरमः स्थूलसांपरायो यः ॥२९५॥

टीका– बादर लोभ की प्रथम स्थिति विषै उच्छिष्टावली मात्र अवशेष रहैं उपशमनावली का अंत समय विषै तीनों लोभ का सर्व द्रव्य उपशम रूप भया है। तहां विशेष जो सूक्ष्म कृष्टि कौं प्राप्त भया द्रव्य अर समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धनि का द्रव्य अर उच्छिष्टावली मात्र निषेकनि का द्रव्य नाहीं उपशम्या है, अवशेष उपशम्या है। असैं कृष्टि करण काल का अंत समयवर्ती जीव कौं चरम समयवर्ती अनिवृत्ति बादर सांपराय कहिए। या प्रकार अनिवृत्तिकरण का स्वरूप कह्या।

से काले किट्टिस्स य, पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि।
लोहगपढमठिदीदो, अद्धं किंचूणयं गत्थ[2] ॥२९६॥

स्वे काले कृष्टेश्च, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति।
लोभगप्रथमस्थितितः, अर्धं किंचिदूनकं गत्वा ॥२९६॥

टीका – अनिवृत्तिकरण के अनंतरि प्रथम समयवर्ती जो सूक्ष्म सांपराय है, सो अंतर्मुहूर्त्त मात्र स्थिति लिएं जो समस्त सूक्ष्म कृष्टि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३१८, ३१९।
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१८ से ३२०।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का भाग देइ एक भाग कौं सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति विषैं निक्षेपण करै है। सो याका प्रमाण बादर लोभ वेदक काल तें किछू घाटि तीसरा भाग मात्र है। जो सूक्ष्म सांपराय का काल, सोई सूक्ष्मकृष्टि का प्रथम स्थिति का प्रमाण जानना। **सो** यहु (होय) उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम है। याके निषेकनि विषैं **'प्रक्षेपयोगोद्धतमिश्रपिंड'** इत्यादि विधान तें असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै है। सो यहु तिस प्रथम स्थिति के उपरिवर्ती है। याका प्रमाण अंतर्मुहूर्त्त मात्र है। यहु ही इहां उपरितन स्थिति है। याके निषेकनि विषैं **"श्रद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे"** इत्यादि विधान तें चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं बादर लोभ की प्रथम स्थिति का द्वितीय अर्ध तें किंचित् न्यून मात्र सूक्ष्मकृष्टिनि की प्रथम स्थिति करै है। बहुरि ज्ञानावरण आदि कर्मनि की अपूर्वकरण का प्रथम समय तें लगाय गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम पूर्ववत् प्रवर्तें है। सो ताका इहां प्रमाण किंचित् अधिक सूक्ष्म सांपराय काल मात्र है। बहुरि तिस ही सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषैं सूक्ष्मकृष्टि का उदय कौं वेदै है — भोगवै है॥

पढमे चरिमे समये, कदकिट्टीणग्गदो दु आदीदो।
मुच्चा असंखभागं, उदेदि सुहुमादिमे सव्वे[1] ॥२९७॥

प्रथम चरमे समये कृतकृष्टीनामग्रतस्तु आदितः।
मुक्त्वा असंख्यभागं, उदेति सूक्ष्मादिमे सर्वे ॥२९७॥

टीका — सूक्ष्म कृष्टि करने के काल का प्रथम समय विषैं अर अंत समय विषैं कीनी जे कृष्टि, तिनकौं पल्य का असंख्यातवां भाग दीएं एक भाग मात्र कृष्टि हैं, ते अपने स्वरूप करि उदय न हो हैं। अन्य कृष्टिरूप परिणमि उदय हो है। बहुरि अवशेष पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं बहुभाग मात्र प्रथम समय अंत समय विषैं कीनी कृष्टि अर द्वितीयादि चरम समय विषैं कीनी सर्व कृष्टि, ते अपने स्वरूप ही करि उदय हो हैं। प्रथम समय विषैं जो कीनी कृष्टि तिनि विषैं तौ अंत कृष्टि तैं लगाय पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र कृष्टि उदय कौं प्राप्त नाहीं, ते अपने स्वरुप कौं छोडि अपनी अनुभाग शक्ति तैं अनंत गुणी घाटि शक्तिरुप परिणमि उदय आवै हैं। बहुरि अंत समय विषैं कीनी जे कृष्टि, तिनविषैं जघन्य कृष्टि

---

१ — जयधवला भाग —१३ पृष्ठ ३२०से ३२३

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तैं लगाय पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एकभाग मात्र कृष्टि उदय (न) हो हैं[१]। ते अपने स्वरुप कौं छोडि, अपनी शक्ति तैं अनंत गुणी शक्तिरुप परिणमि मध्यम कृष्टि रुप होइ उदय आवै हैं। असा तात्पर्य है। तहां समस्त कृष्टिनि का जो प्रमाण, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं बहुभाग मात्र कृष्टि तो अपने स्वरुप ही करि उदय हो हैं। अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग कौं जुदा स्थापि, बहुभाग के दोय खंड करने। तहां एक खंड प्रमाण तौ अंत समय सम्बन्धी अनुदय कृष्टि है। अर एक खंड विषैं जुदा राख्या एक भाग मिलाएं जो प्रमाण होंइ तितनी प्रथम समय सम्बन्धी अनुदय कृष्टि है। अैसैं कृष्टिकरण काल का अंत समय विषैं कीनी अनुदय कृष्टि स्तोक हैं, तातैं ताका प्रथम समय विषैं कीनी अनुदय कृष्टि किछू अधिक हैं। तातैं सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषैं उदय आई कृष्टि असंख्यात गुणी है।

इहां अैसा अर्थ जानना – कृष्टि करण का प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टि ऊपरि लिखि, तहां ऊपरि अंतकृष्टि लिखि, ताके नीचैं उपांत आदि कृष्टि क्रम तैं लिखी। नीचैं ही नीचैं जघन्य कृष्टि लिखनी। बहुरि ताके नीचैं नीचैं द्वितीयादि समयनि विषैं कीनी कृष्टि भी याही प्रकार लिखनी। बहुरि लिखि नीचैं ही नीचैं अंत समय विषैं कीनी कृष्टि लिखि,तहां भी अंत कृष्टि ऊपरि लिखि, नीचैं उपांत आदि कृष्टि लिखि नीचैं ही नीचैं जघन्य कृष्टि लिखनी। अैसैं अंत समय विषैं कीनी कृष्टि की जघन्य कृष्टि तैं लगाय प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टि की अंत कृष्टि पर्यंत लिखी। तिनिविषैं ऊपरि ऊपरि क्रम तैं द्रव्य तौ एक एक चय प्रमाण घटता है। अर अनुभाग अनंत गुणा अनंत गुणा है। सो सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषैं अैसैं (अंत)[२] कृष्टि-रूप परमाणू थीं, तिनविषैं इहां जेता प्रमाण कह्या तितनी ऊपरली वा नीचली कृष्टिनि के परमाणूनि कौं बीचि की कृष्टिरुप परिणमावै है। अंक संदृष्टि करि जैसैं सर्व कृष्टि नि का प्रमाण एक हजार, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का प्रमाण पांच, ताका भाग दीएं बहु भाग मात्र आठ सै बीचि की कृष्टि हैं, ते तौ अपने रुप ही उदय हो हैं। दोय सै, ताकौं पांच का भाग दीएं, चालीस जुदा स्थापि, अवशेष एक सौ साठि के एक भाग दोय भाग कीएं, एक भाग मात्र असी तौ अंत समय विषैं कीनी कृष्टि की जघन्य कृष्टितैं लगाय जे नीचे की कृष्टि हैं, ते अनुदयरुप हैं। इनके परमाणू अनुभाग

१–'उदय न हो है।' ऐसा पाठ 'घ' हस्तलिखित प्रति में मिलता है।

२– 'अंत' शब्द हस्तलिखित 'घ' प्रति में मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बंधने तैं बीचि की कृष्टि रुप परिणमि उदय हो हैं । बहुरि एक भाग विषैं जुदा राख्या चालीस मिलाएं एक सौ बीस सो इतनी प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टि की अंतकृष्टि तैं लगायं उपरि कृष्टि हैं, ते अनुदय रुप हैं । इनके परमाणू अनुभाग घटने तैं बीचिकी कृष्टिरुप परिणमि उदय हो हैं । अैसैं ही यथार्थ कथन समझना ।

बिदियादिसु समयेसु हि, छंडदि पल्लाअसंखभागं तु ।
आफुददि हु अपुव्वा, हेट्ठा तु असंखभागं तु[1] ॥२६८॥

द्वितीयादिषु समयेषु, हि, त्यजति पल्यासंख्यभागं तु ।
आस्पृशति हि अपूर्वा अधस्तनास्तु, असंख्यभागं तु ॥२६८॥

टीका– सूक्ष्म सांपराय का द्वितीय समय विषै जे प्रथम समय विषैं उदय रूप कृष्टि हैं, तिनकी अंत कृष्टि तैं लगाय कृष्टिनि कौं छोडे है । उदय कौं प्राप्त न करै है । तिनका प्रमाण प्रथम समय विषै हीन शक्ति रूप होने योग्य जे ऊपरि की कृष्टि अनुदय रूप कही थी, तिनके प्रमाण कौं पल्य का असंख्यात का भाग दीएं एक भाग मात्र जानना । इतनी नवीन ऊपरि की कृष्टि इहां उदय रूप न हो हैं । ए कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप परिणमि अन्य नीचली कृष्टि रूप परिणमि उदय आवै हैं । और प्रकार समय समय उदय कृष्टिनि का अनंत गुणी शक्तिनि का घटना न बनै है । बहुरि प्रथम समय विषै अनंत गुणा शक्ति रूप परिणमने योग्य जे अधस्तन अनुदय रूप कृष्टि हैं, तिनकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां एक भाग प्रमाण नीचैं की नवीन कृष्टि, जे प्रथम समय विषै उदय न थीं ते उदय रूप हो हैं । अैसें होतैं प्रथम समय विषै उदय रूप कृष्टिनि का प्रमाण तैं द्वितीय समय विषै उदय रूप कृष्टिनि का प्रमाण किछू विशेष करि घटता जानना । इहां नवीन उदय रूप करी कृष्टिनि का प्रमाण कौं नवीन अनुदय रूप करी कृष्टिनि का प्रमाण विषै घटाएं अवशेष प्रमाण प्रथम समय विषै अनुकृष्टि कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र हैं । सो इतना प्रथम समय की उदय कृष्टि का प्रमाण तैं द्वितीय समय की उदय कृष्टि का प्रमाण घटता जानना । इहां अैसा अर्थ जानना—

इस सूक्ष्म सांपराय का द्वितीय समय विषै जे प्रथम समय विषै अनुदय[2] रूप कृष्टि कही थीं, तिन विषै अंत कृष्टि तैं लगाय इहां जेता प्रमाण कह्या, तितनी कृष्टि

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३२४ ।
२. अ, ख, घ हस्तलिखित प्रतिओं में उदय शब्द मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उदय रूप न हो हैं । ते अनंत गुणी घटती जे मध्यम कृष्टि तिनरूप परिणमि उदय हो हैं । बहुरि तिस प्रथम समय विषै जे नीचे की अनुदय कृष्टि कही थीं, तिन विषै अंत कृष्टि तैं लगाय इहां जेता प्रमाण कह्या, तितनी कृष्टि उदय रूप हो हैं। अंकसंदृष्टि करि जैसैं प्रथम समय विषैं उदय कृष्टि आठ सै थी, तिन विषैं प्रथम समय विषैं ऊपरि की अनुदय कृष्टि का प्रमाण एक सौ बीस था, ताकौं पांच का भाग दीएं चौईस पाये, सो अवशेष रही कृष्टि की अंत कृष्टि तें लगाय इतनी कृष्टि तौ इहां नवीन उदय रूप न हो हैं। अर तिस प्रथम समय विषै नीचे की अस्सी कृष्टि उदय रूप न थीं, तिनकौं पांच का भाग दीएं सोलह पाए, सो इतनी नीचे की अनुदय कृष्टि की अंत कृष्टि तैं लगाय इहां उदय रूपभई अैसें चौईस में सोलह घटाएं आठ रहे, सो इतनी कृष्टि प्रथम समय तें दूसरा समय विषै घाटि उदय हो हैं, तातैं दूसरे समय सात सै बाणवै कृष्टि का उदय जानना । अैसें ही यथार्थ कथन समझना । इहां बहुत अनुभाग युक्त जे ऊपरि की कृष्टि तिनिका अभाव करने तें अर स्तोक अनुभाग युक्त जे नीचे की कृष्टि तिनका सद्भाव करने तैं प्रथम समय विषै उदय आया अनुभागतैं द्वितीय समय विषैं उदय आया अनुभाग का घटना हो है अैसा जानना । अैसें ही सूक्ष्म सांपराय का तृतीय आदि अंत समय पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं कृष्टिनि का उदय क्रम तैं जानना विशेष का प्रमाण जेती पूर्व समय विषै घटी थी, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र जानना ।

किट्टि सुहुमादीदो, चरिमो त्ति असंखगुणिदसेढीए ।
उवसमदि हु तच्चरिमे, अवरट्ठिदिबंधणं छण्हं[1] ॥२६६॥

कृष्टि सूक्ष्मादितः, चरम इति असंख्यगुणितश्रेण्याः ।
उपशमयति हि तच्चरमे, अवरस्थितिबंधनं षण्णाम् ॥२६६॥

टीका– सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषै समस्त सूक्ष्म कृष्टिनि का द्रव्य कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र जो द्रव्य, ताकौं उपशमावै है । दूसरे समय तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य कौं उपशमावै है । अैसें तृतीयादि अंत पर्यंत समयनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य कौं उपशमावै है । तहां अंत समय विषै एक घाटि सूक्ष्म सांपराय काल का समय प्रमाण मात्र बार असंख्यात का

---

१. जयधवला भाग—१३ पृष्ठ ३२३, ३२४

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणकार कीएं जो अंत फालिका द्रव्य भया, ताकौं उपशमावै है । बहुरि समय घाटि दोय आवली मात्र संज्वलन लोभ के नवक समयप्रबद्ध न उपशमे थे, तिनिका द्रव्य कौं सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं उपशमावें है । बहुरि सूक्ष्म सांपराय का अंत समय विषै आयु और मोह बिना छह कर्मनि का जघन्य स्थिति बंध हो है ।

अंतोमुहुत्तमेत्तं, घादितियाणं जहण्णठिदिबंधो ।
णामदुग बेयणीये, सोलस चउवीस य मुहुत्ता[1] ॥३००॥

अंतर्मुहूर्तमात्रं, घातित्रयाणां जघन्यस्थितिबंधः ।
नामद्विकवेदनीये, षोडश चतुर्विंशश्च मुहूर्ताः ॥३००॥

टीका – तहां तीनि घातियानि का अंतर्मुहूर्त, नाम गोत्र का सोलह मुहूर्त, साता वेदनीय का चौबीस मुहूर्त मात्र जघन्य स्थितिबंध हो है । इहां उपशम श्रेणी अपेक्षा जघन्य स्थितिबंध कह्या है । बहुरि जे पूर्वै बादर लोभ के उच्छिष्टावली मात्र निषेक रहे थे, ते पूर्वोक्त थिउक्क संक्रम विधान करि कृष्टि रूप परिणमि उदय आवै हैं ।

आगें पूर्वोक्त अर्थ का उपसंहार करें हैं—

पुरिसादीणुच्छिट्ठं, समऊणावलिगदं तु पच्चिहिदि ।
सोदयपढमठिटदिणा, कोहादीकिट्टियंताणं[2] ॥३०१॥

पुरुषादीनामुच्छिष्टं समयोनावलिगतं तु प्रत्याहंति ।
सोदयप्रथमस्थितिना क्रोधादिकृष्टयंतानां ॥३०१॥

टीका – पुरुष वेदादिकनि का समय घाटि आवली मात्र निषेकनि का द्रव्य उच्छिष्टावलीरूप है, सो क्रोधादि सूक्ष्मकृष्टि पर्यंतनि के जे उदयरूप निषेक तैं लगाय प्रथम स्थिति के निषेकनि की साथि तद्रूप परिणमि करि **पक्ष्यति** कहिए उदयरूप होसी । पुरुषवेद के उच्छिष्ट मात्र निषेक रहे ते, तौ संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषैं तद्रूप परिणमि उदय हो हैं । तैसैं ही संज्वलन क्रोध का संज्वलन मान विषै

---

१. जयधवला भाग—१३ पृष्ठ ३२५, ३२६ ।
२. जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ३२४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इत्यादि क्रम तैं बादर लोभ का उच्छिष्टावली के निषेक सूक्ष्मकृष्टि विषै तद्रूप परिणमि उदय हो हैं। सो पूर्वें वर्णन कीया ही है।

पुरिसादो लोहगयं, णवकं समऊण दोण्णि आवलियं।
वसमदि हु कोहादीकिट्टीअं तसु ठाणेसु[1] ॥३०२॥

पुरुषात् लोभगतं, नवकं समयोने द्वे आवलिके।
उपशाम्यति हि क्रोधादिकृष्टयं तेषु स्थानेषु ॥३०२॥

टीका – पुरुषवेद आदि लोभ पर्यंतनि का समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समय प्रबद्धनि का द्रव्य है सो क्रोधादिक कृष्टि पर्यंत के प्रथम स्थिति के कालनि विषै समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीएं उपशमै है। सो भी पुरुषवेद का नवक समयप्रबद्ध संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति का काल विषै उपशमै है, इत्यादि पूर्वें वर्णन कीया ही है। बहुरि सूक्ष्मकृष्टि का प्रथम स्थिति विषै दोय आवली अवशेष रहैं, ताकी आगाल प्रत्यागाल क्रिया का व्युच्छेद हो है। अर समय अधिक आवली मात्र अवशेष रहैं पूर्वोक्तवत् जघन्य उदीरणा हो है। अर उच्छिष्टावली मात्र निषेक अवशेष रहे, ते अपने रूप ही विषै उदयरूप परिणमि निर्जरै हैं ऐसैं सूक्ष्म सांपराय का अंत समय विषैं सर्व कृष्टि द्रव्य कौं उपशमाय अनंतर समय विषै उपशांत कषाय हो है।

उवसंतपढमसमये, उवसंतं सयलमोहणीयं तु।
मोहस्सुदयाभावा, सव्वत्थ समाणपरिणामो[2] ॥३०३॥

उपशांतप्रथमसमये, उपशांतं सकलमोहनीयं तु।
मोहस्योदयाभावात्, सर्वत्र समानपरिणामः ॥३०३॥

टीका – उपशांतकषाय का प्रथम समय विषै सकल चारित्र मोहनीय कर्म है, सो बंध, उदय, संक्रम, उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण आदि सर्व करणनि का न उपजने तैं सर्व प्रकार उपशम्या। उदयादि विषै निक्षेपण करने कौं समर्थरूप न रह्या, तिस उपशांत कषाय का प्रथम समय तैं अंत समय पर्यंत अंतर्मुहूर्त मात्र अपने गुणस्थान का काल विषै समान रूप विशुद्धि परिणाम है, जातैं इहां हीनाधिक विशुद्धता कौं कारण कषायनि के उदय का अभाव है। ऐसा यथाख्यात चारित्र है।

---

१. जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ३२४।
२. जयधवला भाग—१३ पृष्ठ ३२६, ३२७।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंतोमुहुत्तमेत्तं, उवसंतकसायवीयरायद्धा ।
गुणसेढीदीहत्तं, तस्सद्धा संखभागो दु[1] ॥३०४॥

अंतर्मूहूर्तमात्रं, उपशांतकषायवीतरागाद्धा ।
गुणश्रेणीदीर्घत्वं, तस्याद्धा संख्यभागस्तु ॥३०४॥

टीका – उपशांत कषाय वीतराग ग्यारह्वां गुणस्थान का काल अंतर्मुहूर्त मात्र है, तातैं परैं नियम करि द्रव्यकर्म के उदय के निमित्त तैं संक्लेशरूप भावकर्म प्रकट हो है। बहुरि इस काल के संख्यातवें भाग मात्र इहां उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है। इस विषै सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषै जेता द्रव्य अपकर्षण कीया, तातैं असंख्यात गुणा आयु व मोह बिना अन्य कर्मनि का द्रव्य कौं अपकर्षण करि **"प्रक्षेपयोगोद्धतमिश्रपिंड"** इत्यादि विधान तैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षपेण करै है।

उदयादिअवट्ठिदगा, गुणसेढी दव्वमवि अवट्ठिदगं ।
पढमगुणसेढ़िसीसे, उदये जेट्ठं पदेसुदयं[2] ॥३०५॥

उदयाद्यवस्थितका, गुणश्रेणी द्रव्यमपि अवस्थितकं ।
प्रथमगुणश्रेणिशीर्षे, उदये ज्येष्ठं प्रदेशोदयम् ॥३०५॥

टीका – उपशांत कषाय का प्रथम समय विषैं उदयावली का प्रथम समय तैं लगाय गुणश्रेणी आयाम जेता प्रमाण लीएं आरम्भ किया, तितना प्रमाण लीएं ही द्वितीयादि समयनि विषैं भी गुणश्रेणी आयाम है। जातैं उदयावली विषैं एक समय व्यतीत होतैं उपरितन स्थिति का समय गुणश्रेणी आयाम विषैं मिलै है। याही तैं उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है। बहुरि उपशांत कषाय का प्रथम समय विषैं जेता द्रव्य अपकर्षण करि गुणश्रेणी विषैं दीया, तितना ही समय-समय प्रति दीजिए है, जातैं इहां परिणाम अवस्थित है, ताके निमित्त तैं अपकर्षणरूप द्रव्य का भी प्रमाण अवस्थित है। बहुरि प्रथम समय विषैं कीनी जे गुणश्रेणी, ताका शीर्ष कहिए अंत निषेक, सो जिससमय उदय आवै, तिस समय उत्कृष्ट कर्म परमाणूनि का उदय जानना, जातैं तिस समय विषैं प्रथम समय विषैं करी गुणश्रेणी का तौ अंत निषेक

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३२७।
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३२८।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अर दूसरा समय विषैं करी गुणश्रेणी का द्विचरम निषेक आदि इस समय विषैं करी गुणश्रेणी का प्रथम निषेक पर्यंत सर्व निषेक मिलि गुणश्रेणी मात्र द्रव्य भया, सो तिस समय सम्बन्धी निषेक विषैं एकट्ठा हूवा सो तिस निषेक विषैं पूर्वैं सत्तारूप तिष्ठै था जो गोपुच्छ द्रव्य, तिस करि सहित उदय हो है। बहुरि यातैं ऊपरि के समयनि विषैं भी मिलि करि गुणश्रेणी मात्र द्रव्य एकठा हो है, परन्तु गोपुच्छ द्रव्य विषैं एक-एक चय मात्र घटता द्रव्य पाइए; तातैं तहां ही उत्कृष्ट प्रदेशनि का उदय रूप कह्या है। कोऊ कहैगा कि पूर्वैं गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम था, ताका शीर्षरूप समय है, सो अब करी गुणश्रेणी आयाम के अभ्यंतरवर्ती है बीचि आय गया है, तिस समय बहुत गुणश्रेणी के निषेक अर तिस समय सम्बन्धी गोपुच्छ द्रव्य मिलि बहुत घणा द्रव्य उदय रूप हो है। तहां उत्कृष्ट द्रव्य का उदय क्यों न कहौ ? ताकौं कहिए है—पूर्वं गुणश्रेणी विषैं निक्षेपण कीया सर्व द्रव्य तैं भी इहां गुणश्रेणी का जघन्य निषेक विषैं भी निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा है, तातैं ऊपरि नीचे के सर्व निषेकनि तैं इहां प्रथम समय विषैं करी गुणश्रेणा का शीर्ष जिस समय विषैं उदय होइ तिस समय विषैं ही उत्कृष्ट द्रव्य का उदय है।

णामधुवोदयबारस, सुभगति गोदेक्क विग्घपणगं च।
केवल णिद्दाजुयलं, चेदे परिणामपच्चया होंति ॥३०६॥

नामध्रुवोदयद्वादश, सुभगत्रि गोत्रकं विघ्नपंचकं च।
केवलं निद्रायुगलं, चैते परिणामप्रत्यया भवंति ॥३०६॥

टीका – उपशांत कषाय विषैं जे उदय प्रकृति गुणसठि पाइए है, तिन विषैं तैजसकार्माण शरीर २, वर्णादि ४, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरु लघु, निर्माण ए नाम कर्म की ध्रुवोदयी बारह प्रकृति अर सुभग आदेय यशस्कीर्ति ए तीन अर उच्चगोत्र अर पांच अंतराय अर केवल ज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण अर निद्रा प्रचला ए पचीस प्रकृति परिणाम प्रत्यय हैं। इनका उदय होने के समय विषैं आत्मा के विशुद्धि संक्लेश परिणाम हानि वृद्धि लीएं जैसें पाइए तैसें ही हानि वृद्धि लीएं इनके अनुभाग का तहां उदय होइ। वर्तमान परिणाम के निमित्त तैं इनका अनुभाग उत्कर्षण अपकर्षणादिरूप होइ उदय हो है।

तेसिं रसवेदमवट्ठाणं, भवपच्चया हु सेसाओ।
चोत्तीसा उवसंते, तेसिं तिट्ठाण रसवेदं[1] ॥३०७॥

---

१. जयधवला भाग–१३ पृ. ३३० से ३३३।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेषां रसवेदमवस्थानं, भवप्रत्यया हि शेषाः ।
चतुस्त्रिंशत् उपशांते, तेषां त्रिस्थानं रसवेदं ॥३०७॥

टीका– तिन पचीस प्रकृतिनि के अनुभाग का उदय उपशांत कषाय का प्रथम समय तैं लगाय अंत समय पर्यंत अवस्थित समान रूप है; तातैं तहां परिणाम समान हैं अर इन प्रकृतिनि के अनुभाग का उदय परिणामनि के अनुसारि है; तातैं इनके अनुभाग का उदय विषैं हानि वृद्धि नाहीं है । बहुरि अवशेष ज्ञानावरण की च्यारि, दर्शनावरण की तीन, वेदनीय की दोय, मनुष्य आयु, मनुष्य गति, पंचेंद्री जाति, औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपांग, आदिके तीन संहनन, संस्थान छह, उपघात, परघात उच्छ्वास, विहायो गति दोय, प्रत्येक, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्वर की दोय असैं चौंतीस प्रकृति भवप्रत्यय हैं । आत्मा के परिणाम जैसैं होंइ तैसैं होंइ । तिनकी अपेक्षा रहित पर्याय ही का आश्रय करि इनके अनुभाग विषैं षट्स्थान रूप हानि वृद्धि पाइए है; तातैं इनका अनुभाग का उदय इहां तीन अवस्था लीएं हैं । कदाचित् हानिरूप हो है; कदाचित् वृद्धि रूप हो है; कदाचित् अवस्थित-जैसा का तैसा रहै है । असैं उपशांत कषाय गुणस्थान का अंत समय पर्यंत इकईस चारित्र मोह की प्रकृतिनि का उपशमन विधान समाप्त भया ।

अथ उपशांत कषाय तैं पडने का विधान कहैं है—

उवसंते पडिवडिदे, भवक्खये देवपढमसमयम्हि ।
उग्घाडिदाणि सव्ववि, करणाणि हवंति णियमेण[1] ॥३०८॥

उपशांते प्रतिपतिते, भवक्षये देवप्रथमसमये ।
उद्घाटितानि सर्वाण्यपि करणानि भवंति नियमेन ॥३०८॥

टीका – उपशांत कषाय तैं पडना दोय प्रकार है– भव क्षय हेतु, उपशमकाल क्षय निमित्तक तहां मरण होतैं पर्याय का नाश के निमित्त तैं पडना होइ, सो भव क्षय हेतु कहिए । अर उपशम काल के क्षय के निमित्त तैं पडना होइ सो उपशम काल क्षय निमित्तक कहिए ।

तहां भव क्षय हेतु विषैं कहिए है– उपशांत कषाय के काल विषैं प्रथमादि अंत समयनि पर्यंत विषैं जहां तहां आयु के नाशतैं मरि करि देव पर्याय सम्बन्धी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

असंयत गुणस्थान विषैं पडे, तहां असंयत का प्रथम समय विषैं बंध, उदीरणा, संक्रमण आदि समस्त करण उघाडै है। अपने अपने स्वरूप करि प्रगट वर्तें हैं। जातैं जे उपशांत कषाय विषैं उपशमे थे, ते सर्व असंयत विषैं उपशम रहित भए हैं।

सोदीरणाण दव्वं, देदि हु उदयावलिम्हि इयरं तु।
उदयावलिबाहिरगे, उंछाये देदि सेढीये ॥३०९॥

सोदीरणानां द्रव्यं, ददाति हि उदद्यावलौ इतरत्तु।
उदयावलिबाह्यके, अन्तरे ददाति श्रेण्याम् ॥३०९॥

टीका – सो देव असंयत जीव, प्रथम समय विषैं उद्यरूप जो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन रूप जे क्रोधादि च्यारि कषाय, तिनविषैं कोई एक कषाय अर पुरुषवेद, हास्य, रति, अर भय, जुगुत्सा विषैं यथासम्भव प्रकृति जे उदयरूप पाइए हैं तिनके द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग कौं ग्रहण करि ताकौं असंख्यात लोक का भाग देइ एक भाग कौं उदयावली विषैं दीजिए है अर अवशेष बहुभाग कौं उदयावली तैं बाह्य प्रथम निषेक तैं लगाय अवशेष अंतरायाम विषैं वा अंतरायाम के उपरिवर्ती द्वितीय स्थिति विषैं **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तैं चय घटता क्रम करि दीजिए है। बहुरि उदय रहित जे नपुंसक वेदादिक मोह की प्रकृति, तिनके द्रव्य कौं उपकर्षण करि उदयावली विषैं न दीजिए है; उदयावली तैं बाह्य अंतरायाम वा उपरितन स्थिति ही विषैं चय घटता क्रम करि दीजिए है। इस विधान करि चारित्र मोह का अंतर कौं पूरै है। अंतर करने विषैं निषेकनि का अभाव कीया था, तिनविषैं उपशम काल व्यतीत भएं पीछैं जे अवशेष अंतररूप निषेक रहैं, तिन विषैं इहां द्रव्य का निक्षेपण करि तिनका सद्भाव करै है। इहां गुणश्रेणी का असंयत विषैं अभाव जानना।

अद्धाखए पड़ंतो, अधापवत्तो त्ति पडदि हु कमेण।
सुज्झंतो आरोहदि, पडदि हु सो संकिलिस्संतो ॥३१०॥

अद्धाक्षये पतन्, अधःप्रवृत्त इति पतति हि क्रमेण।
शुद्धयन् आरोहति, पतति स संक्लिश्यन् ॥३१०॥

टीका– आयु विद्यमान होतैं अद्धा क्षय विषैं अंतर्मुहूर्त मात्र उपशांत कषाय का काल अंत भएं पडि करि सूक्ष्म सांपराय होइ, पीछैं अनिवृत्तिकरण होइ। पीछैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपूर्वकरण होइ । पीछैं अधःप्रवृत्तकरण रूप अप्रमत्त हो है । अैसें अधःप्रवृत्त करण पर्यंत तौ अनुक्रम तें पडना होइ ही होइ । पीछैं जो विशुद्धता युक्त होइ ऊपरि के गुणस्थान विषैं चढै अर संक्लेशता करि युक्त होइ तौ नीचे के गुणस्थाननि विषैं पडै किछू नियम नाहीं ।

बहुरि या प्रकार संक्लेश विशुद्धता के निमित्त करि उपशांत कषाय तें पडना चढना न हो है । जातें तहां परिणाम अवस्थिति विशुद्धता लीएं वर्तें हैं । बहुरि तहां तें जो पडना हो है सो तिस गुणस्थान का काल भए पीछैं नियम तें उपशम काल का क्षय होइ तिसके निमित्ततें हो है । विशुद्ध परिणामनि की हानि के निमित्त तें तहां तें नाहीं पडै है वा अन्य कोई निमित्त तें नाहीं है अैसा जानना ।

सुहुमप्पविट्ठसमयेणद्धुवसामण तिलोहगुणसेढी ।
सुहुमद्धादो अहिया, अवट्ठिदा मोहगुणसेढी ॥३११॥

सूक्ष्मप्रविष्टसमयेनाध्रुवशमं त्रिलोभगुणश्रेणी ।
सूक्ष्माद्धातोऽधिका, अवस्थिता मोहगुणश्रेणी ॥३११॥

टीका – उपशांत कषाय तें ऊपरि सूक्ष्म सांपराय विषैं प्रवेश कीया, तहां प्रथम समय विषैं नष्ट भया है उपशम करण जिनिका अैसा जो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन लोभ, तिनकी गुणश्रेणी का आरम्भ हो है । तिस गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण चढनेवाले सूक्ष्मसांपराय के काल तें एक आवलीमात्र अधिक है, सो इस अवसर विषैं मोह की गुणश्रेणी का आयाम अवस्थित रूप जानना ।

उदयाणं उदयादो, सेसाणं उदयबाहिरे देदि ।
छण्हं बाहिरसेसे, पुव्वतिगादहियणिक्खेओ ॥३१२॥

उदयानामुदयतः,शेषाणां उदयबाह्ये ददाति ।
षण्णां बाह्यशेषे, पूर्वत्रिकादधिकनिक्षेपः ॥३१२॥

टीका – तहां उदयरूप जो संज्वलन लोभ, ताकी द्वितीय स्थिति विषैं तिष्ठता द्रव्यकौं अपकर्षण करि ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग कौं उदय रूप प्रथम समय तें लगाय गुणश्रेणी आयाम का अंत निषेक पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करै है । अर बहुभाग मात्र द्रव्य कौं गुण-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

श्रेणी आयाम का अंत निषेक तैं ऊपरि पाइए है जो अंतरायाम, ताकौं छोडि ताके ऊपरि जो द्वितीय स्थिति, तीहिंविषैं चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है। बहुरि उदय रहित अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान लोभ, तिनकी द्वितीय स्थिति विषैं तिष्ठता द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली तैं बाह्य प्रथम समय तैं लगाय गुणश्रेणी आयाम का अंत पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं अर ताके ऊपरि अंतरायाम कौं छोडि द्वितीय स्थिति विषैं चय घटता क्रम करि पूर्ववत् निक्षेपण करै है। बहुरि आयु और मोह बिना छह कर्मनि का द्रव्य कौं अपकर्षण करि ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग कौं बहुरि पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग उदयावली विषैं दीजिए है। बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषैं दीजिए है। सो इनका यहु गुणश्रेणी आयाम उतरनेवाले सूक्ष्मसांपराय अनिवृत्तिकरण अपूर्वकरणनि का मिलाया हुआ काल तैं किछू अधिक प्रमाण लीएं गलितावशेष रूप जानना। याविषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं बहुभाग रहे, तिनकौं उपरितन स्थिति विषैं चय घटता क्रम लीएं दीजिए है।

ओदरसुहुमादीए, बंधो अंतोमुहुत्त बत्तीसं।
अडदालं च मुहुत्ता, तिघादिणामदुगवेयणीयाणं ॥३१३॥

अवतरसूक्ष्मादिके, बंधो अंतर्मुहूर्तं द्वात्रिंशत्।
अष्टचत्वारिंशत् च मुहूर्ताः, त्रिघातिनामद्विकवेदनीयानाम् ॥३१३॥

टीका – उतर्‍या हुवा सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषैं तीन घातियानि का अंतर्मुहूर्त, नाम गोत्र का बत्तीस मुहूर्त वेदनीय का अठतालीस मुहूर्त मात्र स्थिति-बंध जानना। जातैं आरोहक सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषैं जो स्थितिबंध हो है; तातैं अवरोहक सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषैं दूणा स्थितिबंध है। उपशमश्रेणी चढनेवाला का नाम आरोहक कहिए। उतरनेवाला का नाम अवरोहक कहिए अथवा अवतारक कहिए है; ऐसी संज्ञा आगैं भी जाननी।

गुणसेढीसत्थेदररसबंधो उवसमादु विवरीयं।
पढमुदओ किट्टीणमसंखाभागा विसेसअहियकमा ॥३१४॥

गुणश्रेणी शस्तेतररसबन्ध उपशमात् विपरीतम्।
प्रथमोदय : कृष्टीनामसंख्यभागा विशेषाधिकक्रमाः ॥३१४॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अवरोहक सूक्ष्मसांपराय का द्वितीयादि समयनि विषैं समय समय प्रति प्रथमादि समय सम्बन्धी तैं असंख्यात गुणा घाटि क्रम लीएं द्रव्य कौ अपकर्षण करि गुणश्रेणी करै है । अर प्रशस्त प्रकृतिनि का अनंत गुणा घाटि क्रम लीएं अर अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनंत गुणा बधता क्रम लीएं अनुभाग बंध हो है । जातैं इहां समय-समय विशुद्ध संक्लेश की अनंत गुणी हानि वृद्धि हो है । यातैं उपशम श्रेणी चढने से उतरने विषैं विपरीतपना कह्यया है । बहुरि स्थितिबंध है, सो तिस प्रथम समय तैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत समान ही है । बहुरि अंतर्मुहूर्त अंतर्मुहूर्त विषैं आरोहक के स्थितिबंध तैं यथा ठिकाणैं अवरोहक कैं दूणा स्थितिबंध सूक्ष्मसांपराय का अंत समय पर्यंत जानना । चढतैं जिस ठिकाने जो स्थितिबंध होता था, तातैं उतर तैं उस ठिकानैं आय दूणा स्थितिबंध हो है । जैसैं स्थितिबंधापसरण करि चढतैं स्थितिबंध घटाइ एक-एक अंतर्मुहूर्त विषैं समान बंध करै था, तैसैं इहां स्थितिबंधोत्सरण करि स्थितिबंध बधाइ एक-एक अंतर्मुहूर्त विषैं समान बंध करै है । बहुरि अवरोहक सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषैं उदय आया जे निषेक कृष्टि पाइए है, तिनकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीजिए तहां बहुभाग मात्र बीचि की कृष्टि उदय आवै है । अर अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग की सहनानी पांच का अंक, ताका भाग दीएं तहां दोय भाग मात्र तो आदि कृष्टि तैं लगाय जे नीचे की कृष्टि हैं, ते अनुदयरूप हैं अर तीन भाग मात्र अंतकृष्टि तैं लगाय जे ऊपरि की कृष्टि हैं ते अनुदयरूप है ते ये अनुदयरूप कृष्टि कहीं । ते अपने स्वरूप कौं छोडि जे आदि कृष्टि तैं लगाय नीचली कृष्टि हैं ते तो अनंत गुणा अनुभागरूप परिणमि मध्यम कृष्टिरूप होइ उदय आवै हैं । अर अंत कृष्टि तैं लगाय जे ऊपरि की कृष्टि हैं ते अनंतवें भागि अनुभागरूप परिणमि मध्यम कृष्टि रूप होइ उदय आवैं हैं । अंक संदृष्टि करि जैसैं उदय आया निषेक विषै कृष्टि हजार, तिनकौं पांच का भाग दीएं बहुभाग मात्र आठ सै बीचि की कृष्टि तौ उदयरूप जाननी । अवशेष एक भाग दोय सै, ताकौं पाँच का भाग देइ तहां एक भाग जुदा राखि अवशेष के दोय भाग करि तहां एकभाग मात्र अस्सी कृष्टि तौ जघन्य कृष्टि तैं लगाय नीचे की कृष्टि अनुदयरूप हैं, ते अनुभाग बधने तैं मध्यम कृष्टिरूप होइ परिणमि उदय हो हैं । बहुरि एकभाग विषैं जुदा राख्या भाग मिलाएं एक सौ बीस कृष्टि भई ते अंत कृष्टि तैं लगाय ऊपरि की कृष्टि अनुदयरूप हैं, ते अनुभाग घटने तैं मध्यम कृष्टिरूप होइ उदय हो हैं, ऐसा अर्थ जानना ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि दूसरा समय विषैं जे आदि कृष्टि पहले समय उदय रूप न थीं, तिनकौं पल्य का असंख्यातवां (भाग का)[१] भाग दीएं एक भाग मात्र नवीन कृष्टि अनुदय रूप करीं अर अंत की कृष्टि जे पहले समय उदय रूप न थीं, तिनकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र कृष्टिनि कौं नवीन उदय रूप करीं। इहां उदय रूप करी कृष्टिनि का प्रमाण विषैं अनुदयरूप करी कृष्टिनि प्रमाण घटाएं अवशेष जो प्रमाण रहै, तितना प्रमाण करि प्रथम समय संबंधी उदय कृष्टिनि तैं अधिक दूसरा समय विषैं उदयकृष्टि हो है।

अंक संदृष्टि करि जैसैं पहले समय उदयकृष्टि आठ सै थी, इहां द्वितीय समय विषैं पहलैं उदय ऊपरि की एक सौ बीस कृष्टि अनुदयरूप थीं, तिनकौं पांच का भाग दीएं चोईस पाए सो इतनी तौ ऊपरि की कृष्टि नवीन उदय भई अर जे नीचै की कृष्टि अस्सी अनुदयरूप थीं, तिनकौं पांच का भाग दीएं सोलह पाए, सो इतनी कृष्टि इहां नवीन उदयरूप न हो हैं। ऐसैं चौबीस में से सोलह घटाए आठ रहे, सो इतनी कृष्टि बधने तैं द्वितीय समय विषैं आठ सै आठ कृष्टि उदय हो हैं। ऐसैं ही यथार्थ कथन समझना। इहां बहुत अनुभाग युक्त ऊपरि की कृष्टि के उदय होने तैं अर स्तोक अनुभाग युक्त नीचे की कृष्टि न उदय होने तैं प्रथम समय तैं द्वितीय समय विषैं अनुभाग का बधना हो है, ऐसा अर्थ जानना। ऐसैं ही तृतीयादि अंत समय पर्यंत समयनि विषैं विशेष करि अधिक कृष्टि उदय हो है। याहीतैं समय समय प्रति कृष्टिनि का अनंत गुणा अनुभाग का उदय है। ऐसैं सूक्ष्म सांपराय का काल व्यतीत भया।

बादरपढमे किट्टी, मोहस्स य आणुपुव्विसंकमणं।
णट्ठं ण च उच्छिट्ठं, फड्ढयलोहं तु वेदयदि ॥३१५॥

बादरप्रथमे कृष्टिः, मोहस्य च आनुपूर्विसंक्रमणं।
नष्टं न च उच्छिष्टं, स्पर्धकलोभं तु वेदयति ॥३१५॥

टीका – अवरोहक अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं सूक्ष्मकृष्टि हैं, ते उच्छिष्टावली मात्र निषेक बिना अन्य सर्व ही स्वरूप करि नष्ट भईं सूक्ष्मकृष्टि की अनुभागशक्ति तैं अनंत गुणी शक्ति युक्त जो स्पर्धक, तिन स्वरूप होइ एक ही समय विषैं परिणईं। बहुरि कृष्टि के उच्छिष्टावली मात्र निषेक रहे ते समय-समय प्रति

१. 'भाग का' इतना अंश छपी प्रति में ही मिलता है, हस्तालिखित प्रतिओं में नहीं मिलता।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक-एक निषेक करि उदयमान जे स्पर्धक के निषेक, तिनविषैं थिउक्क संक्रम करि तद्रूप परिणमि उदय होसी। बहुरि तिस ही प्रथम समय विषैं मोह का आनुपूर्वी संक्रम भी नष्ट भया।

इतना विशेष – जो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान लोभ का बध्यमान जो संज्वलन लोभ, तिस ही विषैं संक्रम होने का प्रारंभ भया तथापि याविषैं आनुपूर्वी संक्रम की विवक्षा नाहीं। बहुरि संज्वलन लोभ कैं बध्यमान और कोई स्वजातीय प्रकृति नाहीं, तातैं व्यक्ति अपेक्षा आनुपूर्वी संक्रम नष्ट भया। शक्ति अपेक्षा संज्वलन लोभ के आनुपूर्वी करि अन्य प्रकृति विषैं संक्रम होने का परिणाम भया है। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषैं मोह के बंध का अभाव तैं संक्रम संभवै नाहीं। बहुरि तथैव स्पर्धकरूप जो बादर लोभ उदय आया, ताकौं भोगवता जो अनिवृत्तिकरण बादर सांपराय, ताका प्रथम समय विषैं संज्वलन लोभ का द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदय रूप समय तैं लगाय बादर लोभ वेदक काल का साधिक दोय तीसरे भाग आवली करि अधिक प्रमाण मात्र जो गुणश्रेणी आयाम, तिस विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करै है। अर प्रत्याख्यान, अप्रत्याख्यान लोभ का द्रव्य कौं उदयावली तैं बाह्य पूर्वोक्त गुणश्रेणी आयाम विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करै है। बहुरि अनिवृत्ति का द्वितीयादि समयनि विषैं असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं द्रव्य कौं अपकर्षण करि अवस्थित गुणश्रेण्यायाम विषैं पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है। अन्य कर्मनि की गलितावशेष गुणश्रेणी पूर्वैं कही है, सोई जाननी।

ओदरबादरपढमे, लोहस्संतोमुहुत्तियो बंधो।
दुदिणंतो घदितिये, चउवस्संतो अघादितिये ॥३१६॥

अवतरबादरप्रथमे, लोभस्यांतर्मुहूर्तको बंधः।
द्विदिनांतो घातित्रिके, चतुर्वर्षान्तोऽघातित्रये ॥३१६॥

टीका – उतरनेवाला बादरसांपराय अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं संज्वलन लोभ का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त मात्र है, सो चढनेवाला अनिवृत्तिकरण का अंत समय संबंधी स्थितिबंध तैं दूणा जानना। बहुरि तीन घातियानि का किछू घाटि दोय दिन, नाम-गोत्र का किछू घाटि च्यारि दिन, वेदनीय का तातैं ड्योढ गुणा स्थितिबंध है। बहुरि अंतर्मुहूर्त पर्यंत ऐसा समान बंध भया पीछैं संज्वलन लोभ का पूर्वतैं किछू अधिक, तीन घातियानि का पृथक्त्व दिन मात्र, तीन अघातियानि का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबंध भया। बहुरि ऐसें वृद्धिरूप संख्यात हजार स्थितिबंध भए लोभ वदक काल का दूसरा त्रिभाग का संख्यातवां भाग व्यतीत भया तब संज्वलन लोभ का पृथक्त्व मुहूर्त, तीन घातियानि का पृथक्त्व हजार वर्ष, तीन अघातियानि का संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबंध हो है। बहुरि हजारों स्थितिबंध गएं लोभ वेदक का काल समाप्त हो है। आरोहक के लोभ वेदक का कालतैं अवरोहक का लोभ वेदक काल किंचित् न्यून है। ऐसें ही माया वेदक कालादिकनि विषैं किंचित् न्यूनता जाननी। जिस कषाय का जेता काल विषैं उदय का भोगना होइ तिस प्रमाण ताका वेदक काल जानना।

ओदरमायापढमे, मायातिण्हं च लोभतिण्हं च।
ओदरमायावेदगकालादहियो दु गुणसेढी ॥३१७॥

अवतरमायाप्रथमे, मायात्रयाणां च लोभत्रयाणां च।
अवतरमायावेदककालादधिका तु गुणश्रेणी ॥३१७॥

टीका – लोभ वेदक काल के अनंतरि माया वेदक काल का प्रथम समय विषैं उतरनेवाला अनिवृत्ति करण है, सो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन माया के द्रव्य कौं अपनी अपनी द्वितीय स्थिति विषैं तैं अपकर्षण करि उदय रूप जो संज्वलन नाम माया, ताके द्रव्य कौं तौं उदयावली का प्रथम समय तैं लगाय अर उदय रहित दोय माया के द्रव्य कौं उदयावली तैं बाह्य प्रथम समय तैं लगाय आवली करि अधिक माया वेदक काल प्रमाण अवस्थिति आयाम विषैं गुणश्रेणी करै है। बहुरि उदय रहित तीन लोभ, तिनका भी द्वितीय स्थिति के द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली तैं बाह्य साधिक माया वेदक काल मात्र अवस्थिति आयाम विषैं गुणश्रेणी करै है। अर अवशेष छह कर्मनि की पूर्वोक्त गलितावशेष आयाम विषैं गुणश्रेणी करै है। बहुरि तिस ही माया वेदक काल का प्रथम समय विषैं तीन लोभ का द्रव्य दोय का द्रव्य है, सो संज्वलन माया विषैं संक्रमण करै है। अथवा दोय माया का द्रव्य तीन लोभ का द्रव्य है, सो संज्वलन लोभ संक्रमण करै है; जातैं इहां संज्वलन लोभ वा माया ही का बंध है। अर बंध विषैं ही संक्रमण हो है। आनुपूर्वी संक्रमण के अभावतैं ऐसैं बंध संभवै है।

ओदरमायापढमे, मायालोभे दुमासठिदिबंधो।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्सवस्साणि ॥३१८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अवतरमायाप्रथमे, मायालोभे द्विमासस्थितिबंधः ।
षण्णां पुनः वर्षाणां, संख्येयसहस्रवर्षाणि ॥३१८॥

टीका – उतरनेवाला मायावेदक काल का प्रथम समय विषैं संज्वलन माया लोभ का दोय मास, तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष, तीन अघातियानि का तातैं संख्यात गुणा स्थितिबंध हो है। अैसें संख्यात हजार स्थितिबंध भएं माया वेदक काल समाप्त भया ।

ओदरगमाणपढमे, तेत्तियमाणादियाण पयडीणं ।
ओदरगमाणवेदगकालादहियं दु गुणसेढी ॥३१९॥

अवतरकमानप्रथमे, तावन्मानादिकानां प्रकृतीनाम् ।
अवतरकमानवेदककालादधिकातु गुणश्रेणी ॥३१९॥

टीका – ताके अनंतरि मान वेदक काल का प्रथम समय विषै संज्वलन मान का द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली का प्रथम समय तैं लगाय अर दोय मान, तीन माया, तीन लोभनि के द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली तैं बाह्य प्रथम समय तैं लगाय आवली अधिक मान (माया),[१] वेदक काल का प्रमाण अवस्थित आयाम विषै गुणश्रेणी करै है। औरनि की गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम है ही। बहुरि तिस ही समय विषै अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन लोभ, माया, मानरूप नव कषायनि का द्रव्य है, सो इहां बध्यमान संज्वलन मान, माया, लोभनि विषै आनुपूर्वी रहित जहां तहां संक्रमण करै है ।

ओदरगमाणपढमे, चउमासा माणपहुदिठिदिबंधो ।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्समेत्ताणि ॥३२०॥

अवतरकमानप्रथमे चतुर्मासा मानप्रभृतिस्थितिबंधः ।
षण्णां पुनः वर्षाणां संख्येयसहस्रमात्राणि ॥३२०॥

टीका – तिस ही उतरनेवाले मान वेदक काल का प्रथम समय विषै संज्वलन मान, माया, लोभनिका चारि मास, तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष, तीन अघातियानि का तातैं संख्यात गुणा स्थितिबंध हो है। अैसैं संख्यात हजार थितिबंध भएं मान वेदक का काल समाप्त भया ।

---

१. हस्तलिखित प्रतिओं में मात्र 'माया' शब्द ही मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ओदरगकोहपढमे, छक्कम्मसमाणया हु गुणसेढी ।
बादरकसायाणं पुण, एत्तो गलिदावसेसं तु ॥३२१॥

अवतरकक्रोधप्रथमे षट्कर्मसमानिका हि गुणश्रेणी ।
बादरकषायाणां पुनः इतः गलितावशेषं तु ॥३२१॥

टीका – ताके अनंतरि उतरनेवाला अनिवृत्तिकरण है, सो संज्वलन क्रोध के उदय का प्रथम समय विषै अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ रूप बारह कषायनि की ज्ञानावरणादि छह कर्मनि के समान गलितावशेष गुणश्रेणी करै है । याके आयाम का प्रमाण उतरनेवाले का अनिवृत्तिकरण अपूर्वकरण के काल तैं किछू अधिक है । इहां तैं पहलै मोह का गुणश्रेणी आयाम अवस्थित था, अब गलितावशेषरूप प्रारंभ भया । बहुरि इतना जानना—

जिस कषाय के उदय करि उपशमश्रेणी चढ्या होई बहुरि उतरने विषै तिस कषाय का जिस समय उदय होइ तिस समय तैं लगाय सर्व मोह की गलितावशेष गुणश्रेणी करिए है । अर अंतर का पूरना करिए है, सो इहां क्रोध की विवक्षा है, तातैं तिस की अपेक्षा ही कथन करिए है—

तहां उदयवान् जो संज्वलन क्रोध, ताके द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग कौं ग्रहि, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग तौ उदय समय तैं लगाय गुणश्रेणी आयाम विषै निक्षेपण करै है । बहुरि बहुभाग मात्र द्रव्य-विषैं कितना इक द्रव्य कौं अंतरायाम विषैं **"अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे"** इत्यादि विधान तैं चय घटता क्रम लीएं निक्षेपण करि अवशेष द्रव्य कौं तिस क्रोध की द्वितीय स्थिति विषै **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तैं नाना गुणहानि विषैं अंत विषै अतिस्थापनावली छोडि निक्षेपण करै है । इहां अंतरायाम विषैं कितना द्रव्य दीया, ताके जानने कौं उपाय कहैं हैं—

द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक का जो द्रव्य का प्रमाण, ताकौं **'पदहतमुखमादिधनं'** इस सूत्र करि अंतरायाम मात्र गच्छ करि गुणैं अंतरायाम विषै समपट्टिकारूप आदिधन हो है । बहुरि द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक कौं दो गुणहानि का भाग दीएं द्वितीय स्थिति की प्रथम गुणहानि विषै चय का प्रमाण आवै है । ताकौं दोय करि गुणैं ताके नीचैं जो अंतरायाम, तीहिंविषै चय का प्रमाण आवै है । बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

"**सैकपदाहतपददलद्वयहतमुत्तरधनं**" इस सूत्र करि एक अधिक गच्छ करि गच्छ का आधा प्रमाण कौं गुणि बहुरि ताकौं चय का प्रमाण करि गुणें उत्तर धन का प्रमाण आवै है। इहां प्रथम स्थान विषै भी चय मिल्या है, तातैं अैसा सूत्र कह्या है, सो आदि धन उत्तर धन मिलाएं जो प्रमाण भया, तितना द्रव्य इहां अंतरायाम विषै दीजिए है। इहां द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक के नीचैं अंतरायाम है, तातैं ताकी अपेक्षा तैं कथन कीया है, सो इतना द्रव्य दीएं जिनि निषेकनि का अभाव कीया था तिनिका सद्भाव जैसा प्रथम स्थिति के नीचैं चय घटता क्रम लीएं संभवै तैसा हो है। अैसें निक्षेपण कीएं गुणश्रेणी शीर्ष के विषै निक्षेपण किया द्रव्य तैं अंतरायाम का प्रथम निषेक विषै निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है। बहुरि अंतरायाम का अंत निषेक विषै निक्षेपण कीया द्रव्य तैं द्वितीय स्थिति का प्रथम समय विषै निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है अैसा जानना।

बहुरि संज्वलन मानादिक तीन कषाय का द्रव्य विषै ताके अनंतवें भाग मात्र सर्व घाती अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान आठ कषायनि का द्रव्य कौं अधिक कीएं उदय रहित ग्यारह कषायनि का द्रव्य हो है। तिस द्रव्य तैं अपकर्षण करि उदयावली तैं बाह्य गुणश्रेणी आयाम विषै अंतरायाम विषै द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण पूर्वोक्त प्रकार कीजिए है। बहुरि क्रोध उदय का प्रथम समय विषै बारह कषायनि का द्रव्य कौं तत्काल बध्यमान जे संज्वलन क्रोधादिक च्यारि, तिनिविषै आनुपूर्वी बिना जहां तहां संक्रमण करै है।

ओदरगकोहपढमे, संजलणाणं तु अट्ठमासठिदी।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्सवस्साणि ॥३२२॥

अवतरकक्रोधप्रथमे, संज्वलनानां तु अष्टमासस्थितिः।
षण्णां पुनः वर्षाणां, संख्येयसहस्रवर्षाणि ॥३२२॥

टीका – उतरने वाले कैं क्रोध उदय का प्रथम समय विषै संज्वलन च्यारि कषायनि का आठ मास, तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष, नाम गोत्र का तातैं संख्यात गुणा, वेदनीय का तातैं ड्योढा स्थिति बंध हो है।

ओदरगपुरिसपढमे, सत्तकसाया पणट्ठउवसमणा।
उणवीसकसायाणं, छक्कम्माणं समाणगुणसेढी ॥३२३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अवतरकपुरुषप्रथमे, सप्तकषायाः प्रणष्टोपशमकाः ।
एकोनविंशकषायाणां, षट्कर्मणां समानगुश्रेणी ॥३२३॥

टीका – संज्वलन क्रोध वेदक काल विषैं पुरुष वेद का उदय होने का प्रथम समय विषैं पुरुषवेद अर छह हास्यादिक ए सात कषाय हैं, ते नष्ट भया है उपशम करण जिनकौं तैं असे भए । तब ही बारह कषाय अर सात नोकषायनि की ज्ञानावरणादि छह कर्मनि के समान आयाम विषैं गुणश्रेणी करै है । तहां उदयरूप पुरुषवेद संज्वलन क्रोध के द्रव्य कौं तो अपकर्षण करि उदय समय तैं लगाय अर अन्य कषायनि का द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली तैं बाह्य समय तैं लगाय पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणी आयाम अंतरायाम द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै है । बहुरि तब ही सात नोकषायनि का द्रव्य आनुपूर्वी बिना जहां तहां संक्रमण करै है । बहुरि तब ही पुरुषवेद के बंध का प्रारंभ हो है ।

पुंसंजलणिदराणं, बस्सा बत्तीसयं तु चउसट्ठी ।
संखेज्जसहस्साणि य, तक्काले होदि ठिदिबंधो ॥३२४॥

पुंसंज्वलनेतरेषां, वर्षाणि द्वात्रिंशत् चतुःषष्टिः ।
संख्येयसहस्राणि च, तत्काले भवति स्थितिबंधः ॥३२४॥

टीका – उतरनेवाले कैं पुरुषवेद उदय का प्रथम समय विषैं पुरुष वेद का बत्तीस वर्ष, संज्वलन चतुष्क का चौसठि वर्ष, तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष, नाम-गोत्र का तातैं संख्यात गुणा, वेदनीय का तातैं ड्योढा स्थितिबंध हो है ।

पुरिसे दु अणुवसंते, इत्थी उवसंतगो त्ति अद्धाए ।
संखाभागासु गदेससंखवस्सं अघादिठिदिबंधो ॥३२५॥

पुरुषे तु अनुपशांते, स्त्री उपशांतका इति अद्धायाः ।
संख्यभागेषु गतेष्वसंख्यवर्षं अघातिस्थितिबंधः ॥३२५॥

टीका – पुरुषवेद का उदय काल विषैं स्त्रीवेद का उपशम यावत् काल न विनसै तावत्काल के संख्यात बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं, अघातिया कर्मनि का स्थिति बंध असंख्यात हजार वर्ष मात्र हो है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णवरि य णामदुगाणं, बीसियपडिभागदो हवे बंधो।
तीसियपडिभागेण य, बंधो पुण वेयणीयस्स ॥३२६॥

नवरि च नामद्विकयोः, बीसियप्रतिभागतो भवेद् बंधः।
तीसियप्रतिभागेन च, बंधः पुनः वेदनीयस्य ॥३२६॥

टीका – तहां विशेष जो नाम गोत्रनि का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबंध है। अर बीसियनि का इतना भया तौ तीसीयनि का केता होइ? असैं त्रैराशिक कीएं वेदनीय का ड्योढ गुणा पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध है। बहुरि तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष मात्र, मोहनीय का तातैं संख्यात गुणा घटता संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबंध है।

थी अणुवसमे पढमे, बीसकसायाण होदि गुणसेढी।
संडुवसमो त्ति मज्झे, संखाभागेसु तीदेसु ॥३२७॥

स्त्री अनुपशमे प्रथमे, विंशकषायाणां भवति गुणश्रेणी।
षंढोपशम इति मध्ये, संख्यभागेष्वतीतेषु ॥३२७॥

टीका – तातैं बंधनेरूप संख्यात हजार स्थिति बंध भएं अंतर्मुहूर्त काल गएं स्त्रीवेद का उपशम नष्ट भया। तहां तैं लगाय स्त्रीवेद का द्रव्य संक्रम, अपकर्षणादि करने योग्य भया। तिसका प्रथम समय विषैं स्त्रीवेद का द्रव्य कौं अपकर्षण करि यहु उदय रहित है; तातैं उदय बाह्यतैं लगाय अन्य कर्मनि का गुणश्रेणी आयाम कैं समान गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषैं अर अंतरायाम विषैं अर द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै है। अर बारह कषाय, सात नोकषायनि का द्रव्य कौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है। असैं इहां बीस कषायनि की गुणश्रेणी हो है। बहुरि तिस ही काल विषैं यावत् नपुंसक वेद का उपशम पाइए है, तावत्काल का संख्यात बहुभाग व्यतीत भएं कहा? सो कहैं हैं—

घादितियाणं णियमा, असंखवस्सं तु होदि ठिदिबंधो।
तक्काले दुट्ठाणं, रसबंधो ताण देसघादीणं ॥३२८॥

घातित्रयाणां नियमात्, असंख्यवर्षस्तु भवति स्थितिबंधः।
तत्काले द्विस्थानं, रसबंधः तेषां देशघातिनाम् ॥३२८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तीन घातियानि का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र, नाम-गोत्र का तातैं असंख्यात गुणा, वेदनीय का तातैं ड्योढा, मोह का संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबंध हो है। इस ही अवसर विषैं च्यारि ज्ञानावरण, तीन दर्शनावरण, पांच अंतराय इन देश घातियानि का लता अर दारु समान द्विस्थानगत अनुभाग बंध हो है।

संढणुवसमे पढमे, मोहिगिवीसाण होदि गुणसेढी।
अंतरकदो त्ति मज्झे, संखभागासु तीदासु ॥३२९॥

षंढानुपशमे प्रथम, मोहैकविंशानां भवति गुणश्रेणी।
अंतरकृत इति मध्ये, संख्यभागेष्वतीतेषु ॥३२९॥

टीका – तातैं बधता क्रम करि संख्यात हजार स्थितिबंध गएं नपुंसक वेद का उपशम नष्ट भया, ताके प्रथम समय विषैं नपुंसक वेद के द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली तैं बाह्य समय तैं लगाय अन्य बीस मोह प्रकृतिनि के द्रव्य कौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार अन्य कर्मनि के समान गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषैं अंतरायाम विषैं द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै। बहुरि नपुंसक वेद का नाश होने के समय तैं लगाय उतरता संता चढनेवाला जिस अवसर विषैं अंतर करण का समाप्तपना करै, तिस अवसर पावने पर्यंत अंतर्मुहूर्त्त काल है, ताका संख्यात बहुभाग व्यतीत भएं कहा? सो कहैं हैं—

मोहस्स असंखेज्जा, वस्सपमाणा हवेज्ज ठिदिबंधो।
ताहे तस्स य जादं, बंधं उदयं च दुट्ठाणं ॥३३०॥

मोहस्य असंख्येयानि, वर्षप्रमाणानि भवेत् स्थितिबंधः।
तस्मिन् तस्य च जातो, बंधं उदयश्च द्विस्थानम् ॥३३०॥

टीका – मोहनीय का असंख्यात वर्ष, तीन घातियानि का तातैं असंख्यात गुणा, नाम-गोत्र का तातैं असंख्यात गुणा, वेदनीय का तातैं अधिक स्थितिबंध हो है। इस ही अवसर विषैं मोहनीय का लता-दारुरूप द्विस्थानगत बंध वा उदय भया।

लोहस्स असंकमणं, छावलितीदेसु दीरणत्तं च।
णियमेण पडंताणं, मोहस्सणुपुव्विसंकमणं ॥३३१॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लोभस्य असंक्रमणं, षडावल्यतीतेषूदीरणत्वं च ।
नियमेन पततां, मोहस्यानुपूर्विसंक्रमणम् ।।३३१।।

टीका – उतरनेवाले कैं सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तैं लगाय बंधे थे जे कर्म, तिनकी आवली व्यतीत भएं उदीरणा होने का नियम था, ताकौं छोडि अब बंधावली व्यतीत होतैं ही उदरीणा करिए है । बहुरि उतरने वाले कैं अनिवृत्ति करण का प्रथम समय तैं लगाय लोभ का संक्रमण था, सो चढनेवाले तैं विपरीत रूप करि हणिए है । संज्वलन लोभ की मायादिक विषैं संक्रम होने की शक्ति भई यहु अर्थ जानना ।

बहुरि मोह की सर्व प्रकृतिनि का जो आनुपूर्वी, संक्रम का नियम भया था, सो नष्ट भया, जहां तहां स्वजातीय कोई चारित्र मोह की प्रकृति का कोई चारित्र मोह की प्रकृतिनि विषैं संक्रमण हो है ।

विवरीयं पडिहण्णदि, विरयादीणं च देसघादित्तं ।
तह य असंखेज्जाणं, उदीरणा समयपबद्धाणं ।।३३२।।

विपरीतं प्रतिहन्यते, वीर्यादीनां च देशघातित्वम् ।
तथा च असंख्येयानामुदीरणा समयप्रबद्धानाम् ।।३३२।।

टीका – अैसैं बधता क्रमरूप हजारौं स्थितिबंध गएं वीर्यांतराय का, तातैं परै बहुत स्थिति बंध गएं मति ज्ञानावरण, उपभोगांतराय का, तातैं परै बहुत स्थिति बंध गएं चक्षुर्दर्शनावरण का, अर तातैं परै बहुत स्थिति बंध गएं श्रुतज्ञानावरणीय अर चक्षुर्दर्शनावरणीय, भोगांतराय का, बहुरि तातैं परै बहुत स्थिति बंध गएं अवधि ज्ञानावरणीय, अवधि दर्शनावरण, लाभांतरायनि का अर तातैं परै बहुत स्थितिबंध गएं मनःपर्यय ज्ञानावरण, दानांतराय का क्रम तैं पूर्वोक्त देशघाती बंध होता था, ताकौं छोडि सर्वघाती रूप अनुभागबंध होने लगा, तातैं परै हजारौं स्थिति बंध भएं असंख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा होने का अभाव भया ।

लोयाणमसंखेज्जं, समयपबद्धस्स होदि पडिभागो ।
तत्तियमेत्तद्दव्वस्सुदीरणा वट्टदे तत्तो ।।३३३।।

लोकानामसंख्येयं, समयप्रबद्धस्य भवति प्रतिभागः ।
तावन्मात्रद्रव्यस्योदीरणा वर्तते ततः ।।३३३।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – गुणश्रेणी करने के अर्थि द्रव्य अपकर्षण कीया ताकौं चढनेवाले जीव कैं उदयावली विषैं द्रव्य देने के अर्थि पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र भागहार पूर्वैं कह्या था, सो इहां पर्यंत आया अब इस अवसर विषैं नष्ट भया। अब असंख्यात लोक का भागहार तहां भया। तातैं असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा होती थी, ताका नाश होइ अब एक समयप्रबद्ध के असंख्यातवां भाग मात्र द्रव्य की उदीरणा होने लगी।

अब क्रमकरण का नाश कहै हैं—

तक्काले मोहणियं, तीसीयं बीसियं च वेयणियं।
मोहं बीसिय तीसिय, वेयणियं कमं हवे तत्तो ॥३३४॥

तत्काले मोहनीयं, तीसियं बीसियं च वेदनीयं।
मोहं बीसियं तीसियं, वेदनीयं क्रमं भवेत् ततः ॥३३४॥

टीका – तिस असंख्यात लोक मात्र भागहार संभवने का समय विषैं मोह का सर्वतैं स्तोक पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र, तातैं असंख्यात गुणा तीन घातियानि का, तातैं असंख्यात गुणा नाम-गोत्रका, तातैं साधिक वेदनीय का स्थितिबंध हो है। तातै परै संख्यात हजार स्थितिबंध गएं मोह का स्तोक पल्य के असंख्यातवां भाग मात्र, तातैं असंख्यात गुणा नाम-गोत्र का, तातैं विशेष अधिक तीन घातियानि का, तातैं विशेष अधिक वेदनीय का स्थिति-बंध हो है।

मोहं वीसिय तीसिय, तो वीसिय मोहतीसयाण कमं।
वीसिय तीसिय मोहं, अप्पाबहुगं तु अविरुद्धं ॥३३५॥

मोहं वीसियं तीसियं, ततो वीसियं मोहतीसियानां क्रमं।
वीसियं तीसियं मोहं अल्पबहुकं तु अविरुद्धम् ॥३३५॥

टीका – तातैं संख्यात हजार स्थितिबंध गएं सर्व तैं स्तोक मोह का, तातैं असंख्यात गुणा नाम गोत्र का, तातैं विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीय का स्थितिबंध हो है। बहुरि तातैं संख्यात हजार स्थिति बंध गएं सर्व स्तोक नाम-गोत्र का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र, तातैं विशेष अधिक मोह का, तातैं विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीय का स्थितिबंध हो है। बहुरि तातैं परै संख्यात हजार

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थिति बंध गएं सर्व तैं स्तोक नाम गोत्र का, तातैं विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीय का, तातैं तीसरा भाग अधिक मोह का स्थितिबंध हो है ।

कमकरणविणट्ठादो, उवरिट्ठविदा विसेसअहियाओ ।
सव्वासिं तण्णद्धे, हेट्ठा सव्वासु अहियकमं ॥३३६॥

क्रमकरणविनाशात् उपरि स्थिता विशेषाधिकाः ।
सर्वासां तदद्धायां अधस्तना सर्वासु अधिकक्रमं ॥३३६॥

टीका – क्रम करण का विनाश जिस काल विषैं भया, तिस काल के ऊपरि तिस काल का अंत समय विषैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध भया, तातैं लगाय पीछै उत्तर काल विषैं सर्व कर्म प्रकृतिनि का जे स्थितिबंध हैं, ते पूर्व स्थितिबंध तैं उत्तर स्थितिबंध विशेष अधिक स्थापे हैं । गुणकार रूप नाहीं हैं । बहुरि क्रम करण का नाश के नीचैं तिस क्रमकरण का काल की आदि विषैं असंख्यात वर्षमात्र स्थितिबंध हैं, तातैं पहिलैं संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबंध पर्यंत आयु बिना सात कर्मनि का बंध हो है । ते भी पूर्व स्थितिबंध तैं उत्तर स्थितिबंध अधिक क्रम लीएं हो हैं, गुणकार रूप नाहीं हैं ।

जत्तोपाये होदि हु, असंखवस्सप्पमाणठिदिबंधो ।
तत्तोपाये अण्णं, ठिदिबंधमसंखगुणियकमं ॥३३७॥

यदुत्पादे भवति हि, असंख्यवर्ष प्रमाणस्थितिबंधः ।
तदुपायेन अन्यं, स्थितिबंधमसंख्यगुणितक्रमम् ॥३३७॥

टीका – जहांतैं लगाय नाम गोत्रादिकनि का असंख्यात वर्ष मात्र स्थितिबंध का प्रारंभ भया, तहांतैं लगाय पहला पहला स्थितिबंध तैं पिछला पिछला और स्थितिबंध भया सो असंख्यात गुणा है, यावत् सर्व तैं पीछैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध होइ तावत् अैसा ही क्रम जानना ।

एवं पल्लासंखं, संखं भागं च होइ बंधेण ।
एत्तोपाये अण्णं, ठिदिबंधो संखगुणियकमं ॥३३८॥

एवं पल्यासंख्यं, संख्यं भागं भवति बंधेन ।
एतदुपायेन अन्यः, स्थितिबंधः संख्यगुणित क्रमः ॥३३८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – ग्रैसें यथासंभव हीनाधिक प्रमाण लीएं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध बंधता क्रम लीएं संख्यात हजार व्यतीत भएं तहां सर्वतें पीछैं जो पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध भया, तातें परैं एक एक काल विषैं सातों कर्मनि का स्थिति बंध पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र हो है ।

तहां विशेष – जो वीसियनि के तें तीसीयनि का ड्योढा, चालीसीयनि का दूणा स्थितिबंध जानना । पल्य का असंख्यातवें भाग के भेद घने, तातैं हीनाधिक रुप घने स्थितिबंधनि कौं आलाप करि पल्य का असंख्यातवां भागमात्र ही कह्या है । चढनेवाले कैं दूरापकृष्टि नामा स्थितिबंध क्रम तें भया था, इहां उतरनेवाले कैं प्रतिपाती परिणामनि करि एक ही बार दूरापकृष्टि नामा स्थितिबंध हो है, यातैं परैं अनंतर और स्थितिबंध हो है, सो सातों कर्मनि का संख्यात गुणा हो है ।

मोहस्स य ठिदिबंधो, पल्ले जादे तदा दु परिवड्ढी ।
पल्लस्स संखभागं, इगिविगलासण्णिबंधसमं ।।३३९।।

मोहस्य च स्थितिबंधः, पल्ये जाते तदा तु परिवृद्धिः ।
पल्यस्य संख्यभागं, एकविकलासंज्ञिबंधसमं ।।३३९।।

टीका – ग्रैसें संख्यात गुणा क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंधोत्सरण भएं सब तें पीछैं नाम गोत्र का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र, तातें ड्योढा तीसीयनि का, दूना मोह का स्थितिबंध होइ । ताके अनंतरि मोह का पल्य मात्र तीसीयनि का पल्य का तीन चौथा भाग मात्र, वीसीयनि का आधा पल्य मात्र स्थितिबंध हो है, पूर्व पूर्व स्थितिबंध के प्रमाण कौं उत्तर उत्तर स्थितिबंध का प्रमाण विषैं घटाएं अवशेष रहै सोई पूर्वोक्त स्थितिबंध तें उत्तर स्थिति बंध विषैं वृद्धि का प्रमाण हो है । सो इहां भी साधन करि जानना । बहुरि चालीसीयनि का स्थितिबंध पल्यमात्र होइ तौ तीसीय अथवा बीसीयनि का केता होइ ? अैसें त्रैराशिक करि तीसीयनि का पल्य का तीन चौथा भाग मात्र, बीसीयनि का आधा पल्यमात्र स्थितिबंध सिद्ध हो है । ग्रैसें अन्यत्र, भी त्रैराशिक जानना जैसें स्थिति घटावने विषैं पूर्वैं स्थिति बंधापसरण संज्ञा कही थी, तैसें स्थिति बधावने विषैं इहां स्थितिबंधोत्सरणसंज्ञा जाननी, सो एक एक स्थितिबंधोत्सरण, विषैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थिति बंधै ग्रैसें प्रत्येक संख्यात हजार स्थितिबंध होइ क्रम तें एकेंद्री, वेइंद्री, तेइंद्री, चोइंद्री, असंज्ञी पंचेंद्री का स्थितिबंध के समान स्थितिबंध हो है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मोहस्स पल्लबंधे, तिसदुगे तत्तिपादमद्धं च ।
दुतिचउसत्तमभागा, वीसतिये एयवियलठिदी ॥३४०॥

मोहस्य पल्यबंधे, त्रिंशद्द्विके तत्त्रिपादमर्धं च ।
द्वित्रिचतुः सप्तम भागा, वीसत्रिके एकविकलस्थितिः ॥३४०॥

टीका– जब मोह का स्थितिबंध पल्यमात्र भया तब तीसीयनि का पल्य का तीन चौथा भाग मात्र, बीसीयनि का आधा पल्य मात्र स्थितिबंध हो है, सोई कही आए हैं । बहुरि एकेंद्री समान स्थिति बंध भया तहां मोह का सागर के च्यारि सातवां भागमात्र तीसीयनि का सागर के तीन सातवां भागमात्र, वीसीयनि का सागर के दोय सातवां भागमात्र स्थितिबंध जानना । बहुरि बेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी समान स्थिति-बंध जहां भया तहां क्रम तैं एकेन्द्री समान बंध तैं पचीस गुणा, पचास गुणा, सौ गुणा, हजार गुणा क्रम तैं जानना ।

तत्तो अणियट्टिस्स य, अंतं पत्तो हु तत्थ उदधीणं ।
लक्खपुधत्तं बंधो, से काले पुव्वकरणो हु ॥३४१॥

ततः अनिवृत्तेश्च, अंतं प्राप्तो हि तत्र उदधीनाम् ।
लक्षपृथक्त्वं बंधः, स्वे काले अपूर्वकरणो हि ॥३४१॥

टीका – तहां पीछैं असंज्ञी समान बंध तैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंधोत्सरण भए उतरनेवाला अनिवृत्तिकरण के अंत समय को प्राप्त भया । तहां मोह, वीसीय, तीसीयनि का क्रम तैं पृथक्त्व लक्ष सागरनि का च्यारि सातवां भाग अर तीन सातवां भाग अर दोय सातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है । बहुरि ताके अनंतरि समय विषैं उतरने वाला अपूर्वकरण भया ।

उवसामणा णिधत्ती, णिकाचणुग्घाडिदाणि तत्थेव ।
चदुतीसदुगाणं च य, बंधो अद्धापवत्तो य ॥३४२॥

उपशामना निधत्तिः, निकाचना उद्घटितानि तत्रैव ।
चतुस्त्रिंशद्द्विकानां च च, बंधो अधाप्रवृत्तः च ॥३४२॥

टीका - ताके प्रथम समय तैं लगाय अप्रशस्तोपशम करण अर निधत्ति करण अर निष्काचन करण ए युगपत उघाडे प्रगट कीए इनिका लक्षण पूर्वैं कह्या

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ही था। बहुरि अपूर्वकरण काल के सात भाग कीएं तहां प्रथम भाग विषैं हास्य, रति, भय, जुगुप्सा इन च्यारि प्रकृतिनि का दूसरे भाग विषै तीर्थंकरादि तीस प्रकृतिनि का छठा भाग का अंत समय तैं लगाय निद्रा प्रचला का बंध हो है। बहुरि तातैं संख्यात हजार स्थिति बंधोत्सरण भएं उतरनेवाला अपूर्वकरण का अंत समय विषैं मोह, तीसीय, वीसीयनि का क्रम तैं पृथक्त्व लक्ष कोटि सागरनि का च्यारि सातवां भाग, तीन सातवां भाग, दोय सातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है। सर्व कर्मनि की गुणश्रेणी गलितावशेष आयाम लीएं इहां पर्यन्त वर्तै है। ताके अनंतरि समय विषैं उतरि अप्रमत्त गुणस्थान विषैं अधःकरण परिणाम कौं प्राप्त हो है।

पढमो अधापवत्तो, गुणसेढिमवट्ठिदं पुराणादो।
संखगुणं तच्चंतोमुहुत्तमेत्तं करेदी हु ।।३४३।।

प्रथमोऽधाप्रवृत्तः, गुणश्रेणीमवस्थितां पुराणात्।
संख्यगुणं तच्च अंतर्मुहूर्तमात्रं करोति हि ।।३४३।।

टीका – ताका प्रथम समय विषै उतरने वाला अपूर्वकरण का अंत समय विषै जेता द्रव्य अपकर्षण कीया, तातैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य कौं अपकर्षण करि गुणश्रेणी करै है। सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषै जाका प्रारंभ भया असा पुराणा गुणश्रेणी का आयाम तैं संख्यात गुणा है, तौ भी अंतर्मुहूर्त्त मात्र याका अवस्थित आयाम जानना। इहां विशुद्धता की हानि होने तैं गुणश्रेणी विषै द्रव्य का प्रमाण घटि गया, आयाम का प्रमाण बधि गया है।

ओदरसुहुमादीदो, अपुव्वचरिमो त्ति गलिदसेसे व।
गुणसेढी णिक्खेवो, सट्ठाणे होदि तिट्ठाणं ।।३४४।।

अवतरसूक्ष्मादितो, अपूर्वचरम इति गलितशेषो वा।
गुणश्रेणी निक्षेपः, स्वस्थाने भवति त्रिस्थानम् ।।३४४।।

टीका – उतरनेवाला सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तैं लगाय अपूर्वकरण का अंत समय पर्यंत ज्ञानावरणादिकनि का गुणश्रेणी आयाम है, सो गलितावशेष है, अवशेष अवस्थित नाहीं है।

इतना विशेष– सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तैं लगाय केते इक काल मोह का गुणश्रेणी आयाम अवस्थित हो है। पीछैं और कर्मनि का गुणश्रेणी आयाम के

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

समान मोह का भी गुणश्रेणी आयाम गलितावशेष हो है। जातैं तीन स्थाननि विषै बधि करि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम हो है। सो कहिए है—

उतरनेवाला सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तैं लगाय अवस्थित आयाम ही है। बहुरि स्पर्धक रूप बादर लोभ का द्रव्य के अपकर्षण विषै एक बार गुणश्रेणी आयाम बधिकरि बादर लोभ वेदक काल पर्यन्त अवस्थित रहै है। बहुरि माया के द्रव्य का अपकर्षण विषैं दूसरी बार बधिकरि माया का वेदक काल पर्यन्त अवस्थित गुणश्रेणी आयाम रहै है। बहुरि मान के द्रव्य का अपकर्षण विषै तीसरी बार बधि करि मान का वेदक काल पर्यन्त अवस्थित गुणश्रेणी आयाम रहै है। ऐसें तीन बार अवस्थित गुणश्रेणी आयाम हो है। बहुरि चौथी बार क्रोध का अपकर्षण विषै बधि करि अपूर्वकरण का अंत पर्यन्त अन्य कर्मनि के समान मोह का भी गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम आया। बहुरि अधःप्रवृत्तकरण का प्रथम समय तैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यन्त पुराना गुणश्रेणी आयाम तैं संख्यात गुणा ज्ञानावरणादि कर्मनि का अवस्थित गुणश्रेणी आयाम प्रवर्तै है। अधःप्रवृत्तकरण का जेता अंतर्मुहूर्त काल है, तितना काल विषै समय समय एकांतपनैं अनंत गुणी घाटि विशुद्धता करि उतरि पीछैं स्वस्थान अप्रमत्त हो है।

सट्ठाणे तावदियं, संखगुणूणं तु उवरि चडमाणे।
विरदाविरदाहिमुहे, संखेज्जगुणं तदो तिविहं ॥३४५॥

स्वस्थाने तावत्कं, संख्यगुणोनं तु उपरि चटमाने।
विरताविरताभिमुखे, संख्येयगुणं ततः त्रिविधं ॥३४५॥

टीका – तहां प्रमत्त वा अप्रमत्त गुणस्थान विषै स्वस्थान संयत होइ वृद्धि हानि रहित अवस्थित गुणश्रेणी आयाम करै है। बहुरि सोई जीव जो विरताविरत पंचम गुणस्थान कौं सन्मुख होइ तौ संक्लेशता करि पूर्वं गुणश्रेणी आयाम तैं संख्यात गुणा बधता गुणश्रेणी आयाम करै है। अर पलटि करि उपशम वा क्षपकश्रेणी चढने कौं सन्मुख होइ तो विशुद्धता करि तिस गुणश्रेणी आयाम तैं संख्यात गुणा घटता गुणश्रेणी आयाम करै है। ऐसें स्वस्थान संयमी कैं गुणश्रेणी की वृद्धि हानि अवस्थित रूप तीन स्थान कहे।

करणे अधापवत्ते, अधापवत्तो दु संकमो जादो।
विज्झादमबंधाणे, णट्ठो गुणसंकमो तत्थ ॥३४६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करणे अधःप्रवृत्ते, अधःप्रवृत्तस्तु संक्रमो जातः ।
विध्यातमबंधने, नष्टो गुणसंक्रमस्तत्र ।।३४६।।

टीका – उतरनेवाला अधःप्रवृत्तकरण विषै जिनि प्रकृतिनि का बंध पाइए, तिनकैं तौ अधःप्रवृत्त नामा संक्रम भया, इनका अन्य प्रकृत्ति विषै संक्रम होने विषै अधःप्रवृत्त नामा भागहार संभवै है । बहुरि जिनका बंध न पाइए तिनकैं विध्यात संक्रमण पाइए है । इनका अन्य प्रकृति विषै संक्रम होने विषै विध्यात नामा भागहार संभवै है अर गुण संक्रम का नाश ही भया । इनका स्वरूप पूर्वै कह्या है, सो जानना ।

चडणोदरकालादो, पुव्वादो पुव्वगोत्ति संखगुणं ।
कालं अधापवत्तं, पालदि सो उवसमं सम्मं ।।३४७।।

चटनावतरकालतोऽपूर्वात् अपूर्वक इति संख्यगुणं ।
कालं अधःप्रवृत्तं पालयति स उपशमं सम्यं ।।३४७।।

टीका – द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सहित जीव चढतैं अपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय उतरतैं अपूर्वकरण का अंत समय पर्यन्त जितना काल भया, तातैं संख्यात गुणा अैसा अंतर्मुहूर्त मात्र द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल है । सो इस काल पर्यन्त अधःप्रवृत्तकरण सहित इस द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कौं पालै है ।

तस्सम्मत्तद्धाए, असंजमं देससंजमं वापि ।
गच्छेज्जावलिछक्के, सेसे सासणगुणं वापि ।।३४८।।

तत्सम्यक्त्वाद्धायां, असंयमं देशसंयमं वापि ।
गत्वावलिषट्के, शेषे सासनगुणं वापि ।।३४८।।

टीका – तिस ही द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल विषै अधःप्रवृत्तकरण काल कौं समाप्त करि अप्रत्याख्यान के उदय तैं असंयम कौं प्राप्त होइ, तौ चौथे गुणस्थान आवै है ।

अथवा प्रत्याख्यान के उदय तैं देश संयम कौं प्राप्त होइ तौ पांचवे गुणस्थान आवै अथवा असंयत होइ तहां अंतर्मुहूर्त्त तिष्ठि देश संयम होइ अथवा देश संयत होइ तहां अंतर्मुहूर्त्त तिष्ठि असंयत होइ अथवा तिस काल विषै छह आवली अवशेष रहैं अनंतानुबंधी क्रोधादि विषै किसी का उदय तैं सासादन कौं भी प्राप्त होइ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जदि मरदि सासणो सो, णिरयतिरक्खं णरं ण गच्छेदि ।
णियमा देवं गच्छदि, जइवसहमुणिंदवयणेण ॥३४६॥

यदि म्रियते सासनः स, निरयतिर्यञ्चं नरं न गच्छति ।
नियमात् देवं गच्छति, यतिवृषभमुनींद्रवचनेन ॥ ३४९ ॥

टीका – उपशम श्रेणी तैं उतरचा जो सासादन जीव जो आयु नाश तैं मरै तौ नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य गति कौं प्राप्त न होइ, नियम तैं देवगति ही कौं प्राप्त होइ । ऐसैं उपशम श्रेणी तैं उतरचा जीव कैं सासादन गुणस्थान की प्राप्ति वा ताके मरण होने का विशेष कह्या है, सो कषाय प्राभृत नामा दूसरा महाधवल[1] शास्त्र विषै यतिवृषभ नामा आचार्य प्रतिपादन किया है । ताके अनुसारि इहां कथन कीया है ।

णरतिरियक्खणराउगसत्तो सक्को ण मोहमुवसमिदुं ।
तम्हा तिसुवि गदीसु, ण तस्स उप्पज्जणं होदि ॥३५०॥

नरकतिर्यग्नरायुष्कसत्त्वः शक्यो न मोहमुपशमयितुम् ।
तस्मात् त्रिष्वपि गतिषु, न तस्य उत्पादो भवति ॥३५०॥

टीका – नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य आयु का सत्त्व सहित जीव चारित्र मोह उपशमावने कौं समर्थ नाहीं, जातैं नरक, तिर्यञ्च, मनुष्यायु का सत्त्व सहित जीव कैं देश संयम वा सकल संयम की भी प्राप्ति का अभाव है । तातैं उपशम श्रेणी तैं उतरचा सासादन कैं देव बिना अन्य तीन गतिनि मैं उपजना न हो है । बहुरि पूर्वैं आयु जाकै बंध्या होइ तिस ही उपशम श्रेणी तैं उतर्या सासादन का मरण हो है, अबद्धायु का न हो है ।

उवसमसेढीदो पुण, ओदिण्णो सासणं ण पाउणदि ।
भुदबलिणाहणिम्मलसुत्तस्स फुडोवदेसेण ॥३५१॥

उपशमश्रेणीतः पुनरवतीर्णः सासनं न प्राप्नोति ।
भूतबलिनाथनिर्मलसूत्रस्य स्फुटोपदेशेन ॥३५१॥

---

१. 'महाधवल' के स्थान पर 'जयधवल' शब्द चाहिए ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – उपशम श्रेणी तैं उतर्‌या जीव, सासादन कौं प्राप्त न होइ, जातैं पूर्वैं अनंतानुबंधी का विसंयोजन करि उपशम श्रेणी चढ्या है, ताके अनंतानुबंधी का उदय न संभवै है । असैं भूतबलि नामा मुनिनाथ, ताका कह्या जो महाकर्म प्रकृत्ति प्राभृत नामा पहला धवल शास्त्र तिस विषै पूर्वापर दोष रहित निर्मल प्रगट उपदेश है, ताकरि हम निश्चय कीया है ।

आगें उपशम श्रेणी चढने वाले बारह प्रकार जीव हैं, तिनकी क्रिया विषै विशेष है सो कहैं हैं—

पुंकोधोदयचलियस्सेसाह परूवणा हु पुंमाणे ।
मायालोभे चलिदस्सत्थि विसेसं तु पत्तेयं ॥३५२॥

पुंक्रोधोदयचटितस्य, शेषा अथ प्ररूपणा हि पुंमाने ।
मायालोभे चटितस्यास्ति विशेषं तु प्रत्येकं ॥३५२॥

टीका – पूर्वैं कही जो सर्व प्ररूपणा, सो पुरुषवेद अर क्रोध कषाय सहित उपशम श्रेणी चढनेवाले जीव की कही है । बहुरि पुरुषवेद अर संज्वलन मान वा माया वा लोभ सहित उपशम श्रेणी चढने वालों कैं क्रिया विशेष है । सोइ कहिए है—

दोण्हं तिण्हं चउण्हं कोहादीणं तु पढमठिदिमित्तं ।
माणस्स य मायाए, बादरलोहस्स पढमठिदी ॥३५३॥

द्वयोः त्रयाणां चतुर्णां, क्रोधादीनां तु प्रथमस्थितिमात्रम् ।
मानस्य च मायाया, बादरलोभस्य प्रथमस्थितिः ॥३५३॥

टीका – पुरुषवेद अर क्रोध का उदय सहित चढ्या जीव की क्रोध अर मान की प्रथम स्थिति मिलाई हुई जेती होइ, तितनी मान का उदय सहित चढ्या जीव कैं मान की प्रथम स्थिति हो है ।

भावार्थ – जो क्रोध सहित श्रेणी चढने वाले कैं तौ पहिलैं क्रोध का उदय हो है । पीछैं मान का उदय हो है । अर मान का उदय सहित श्रेणी चढ्या कैं क्रोध का उदय न हो है मान का ही उदय हो है । ताकैं तिन दोऊनि का उदय काल के समान याकैं मान का उदय काल है, इस वास्ते तैं तिनि दोऊनि की प्रथम स्थिति समान याकैं मान की प्रथम स्थिति कही है । असैं ही आगैं समझना । बहुरि क्रोध

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का उदय सहित चढ्या जीव कैं क्रोध अर मान अर माया की प्रथम स्थिति मिलाई हुई जेती होइ तितनि माया का उदय सहित चढ्या जीव कैं लोभ की प्रथम स्थिति हो है । इहां औसा जानना—

क्रोध का उदय सहित श्रेणी चढ्या कैं तौ क्रम तैं च्यार्यों कषाय का उदय हो है । मान सहित चढ्या कैं क्रोध बिना तीन का ही उदय हो है । माया सहित चढ्या कैं माया अर लोभ का ही उदय है । लोभ सहित चढ्या कैं केवल लोभ ही का उदय हो है, तातैं पूर्वोक्त प्रकार प्रथम स्थिति कही है । बहुरि च्यार्यों विषै किसी कषाय का उदय सहित चढैं सर्व ही जीवनि का सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति समान है । अर तिन कैं नपुंसक, स्त्रीवेद सात नोकषायनि का उपशमन काल समान है ।

जस्सुदयेणारुढो, सेढीं तस्सेव ठविदि पढमठिदि ।
सेसाणावलिमेत्तं, मोत्तूण करेदि अंतरं णियमा ॥३५४॥

यस्योदयेनारूढो, श्रेणि तस्यैव स्थापयति प्रथमस्थितिः ।
शेषाणामावलिमात्रं, मुक्त्वा करोति अंतरं नियमात् ॥३५४॥

टीका – जिस वेद वा कषाय का उदय करि जीव श्रेणी चढ्या होइ, ताकी तौ अंतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है । तिस प्रथम स्थिति के ऊपरि के निषेकनि का अंतर करै है । बहुरि उदय रहित वेद वा कषायनि की आवली मात्र स्थिति छोडि, ताके ऊपर के निषेकनि का अंतर करै है ।

जस्सुदयेणारूढो, सेढिं तक्कालपरिसमत्तीए ।
पढमट्ठिदिं करेदि हु, अणंतरुवरुदयमोहस्स ॥३५५॥

यस्योदयेनारूढः, श्रेणि तत्कालपरिसमाप्तौ ।
प्रथमस्थितिं करोति हि, अनंतरोपर्युदयमोहस्य ॥३५५॥

टीका – जिस कषाय का उदय सहित श्रेणी चढ्या है, तिस कषाय की प्रथम स्थिति समाप्त भएं, ताके अनंतरवर्ती कषाय की प्रथम स्थिति करै है । सोई कहिए है– क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं क्रोध की प्रथम स्थिति का काल पूर्ण भएं पीछैं मान की प्रथम स्थिति हो है । औसैं ही ऊपरि मायादिक की जाननी ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि मान सहित चढ्या जीव कैं मान को प्रथम स्थिति समाप्त भएं पीछैं माया की प्रथम स्थिति हो है; असैं ही ऊपरि जानना। बहुरि माया सहित चढ्या जीव कैं माया की प्रथम स्थिति पूर्ण भएं पीछैं लोभ की प्रथम स्थिति करै है। असैं ही उपरि जाननी। बहुरि लोभ सहित श्रेणी चढ्या कैं लोभ की प्रथम स्थिति भएं पीछैं सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति हो है।

माणोदएण चडिदो, कोहं उवसमदि कोहअद्धाए।
मायोदएण चडिदो, कोहं माणं सगद्धाए ॥३५६॥

मानोदयेन चटितः, क्रोध उपशमयति क्रोधाद्धायाम्।
मायोदयेन चटितः, क्रोधं मानं स्वकाद्धायाम् ॥३५६॥

टीका – क्रोध का उदय सहित चढ्या जीव कैं जो क्रोध के उदय का काल है, तिस काल विषैं ही मान का उदय सहित चढ्या जीव उदय रहित तीन क्रोधनि कौं उपशमावै है। बहुरि तैसें ही माया का उदय सहित चढ्या जीव, उदय रहित तीन क्रोध अर तीन मान का क्रम तैं क्रोध सहित चढ्या जीव कैं जो क्रोध की प्रथम स्थिति अर मान की प्रथम स्थिति का काल है, तिस काल विषैं ही उपशमावै है।

लोभोदएण चडिदो, कोहं माणं च मायमुवसमदि।
अप्पप्पण अद्धाणे, ताणं पढमट्ठिदी णत्थि ॥३५७॥

लोभोदयेन चटितः, क्रोधं मानं च मायामुपशमयति।
आत्मात्मनः अध्वाने, तेषां प्रथमस्थितिर्नास्ति ॥३५७॥

टीका – लोभ का उदय सहित चढ्या जीव है, सो उदय रहित तीन क्रोध, तीन मान, तीन माया, तिनकौं क्रोध सहित चढ्या जीव कैं जो क्रोध की अर मान की अर माया की प्रथम स्थिति का काल है, तिस काल विषैं क्रम तैं उपशमावै है। अर याकैं तिन क्रोधादिकनि की प्रथम स्थिति का अभाव है, जातैं लोभ सहित चढ्या जीव कैं क्रोधादिकनि का उदय न पाइए है।

माणोदयचडपडिदो, कोहोदयमाणमेत्तमाणुदओ।
माणतियाणं सेसे, सेससमं कुणदि गुणसेढी ॥३५८॥

मानोदयचटपतितः, क्रोधोदयमानमात्रमानोदयः।
मानत्रयाणां शेषे, शेषसमं करोति गुणश्रेणीं ॥३५८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – मान का उदय सहित श्रेणी चढि पड्या जो जीव, ताकैं क्रोध उदय सहित चढ्या जीव कैं क्रोध मान का उदय काल मिलाया हुवा जितना होइ तितना मान का उदय काल है । असैं ही माया उदय सहित चढि पड्या जीव कैं क्रोध सहित चढ्या कैं क्रोध, मान, माया के उदय का जितना काल होइ, तितना माया का उदय काल है । लोभ उदय सहित चढि पड्या जीव कैं क्रोध सहित चढ्या कैं जितना क्रोध, मान, माया, लोभ का उदय काल होइ तितना एक लोभ ही का उदय काल हो है बहुरि, मान, माया सहित चढि करि पडे जीव क्रम तैं मान, माया, लोभ का द्रव्य कौं अपकर्षण करि ज्ञानावरणादिकनि की गुणश्रेणी आयाम के समान गलितावशेष आयाम करि गुणश्रेणी करै है ।

भावार्थ यहु – मान का उदय सहित चढि जो जीव पड्या, ताकैं क्रम तैं लोभ मान का उदय होइ । तहां मान का उदय भएं मोह का गुणश्रेणी आयाम और कर्मनि के समान करै है । जातैं याकैं क्रोध का उदय होना नाहीं । असैं ही माया सहित चढि पड्या, कैं लोभ का उदय आया पीछैं माया का उदय आए अर लोभ का उदय सहित चढि पड्या कैं लोभ ही का उदय है; तातैं पहलैं ही अन्य कर्मनि के समान मोह का गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम हो है ।

माणादितियाणुदये, चडपडिये सगसगुदयसंपत्ते ।
णवछत्तिकसायाणं, गलिदवसेसं करेदि गुणसेढी ॥३५६॥

मानादित्रयाणामुदये, चटपतिते स्वकस्वकोदयसंप्राप्ते ।
नवषट्त्रिकषायाणां, गलितावशेषां करोति गुणश्रेणि ॥३५६॥

टीका – मान, माया, लोभ का उदय सहित चढि पड्या जीव हैं, ते अपनी अपनी कषाय का उदय कौं प्राप्त होत संते क्रम तैं नव कषायनि की अर छह कषायनि की अर तीन कषायनि की पूर्वोक्त प्रकार गलितावशेष आयाम गुणश्रेणी करै हैं ।

भावार्थ यहु– जैसैं क्रोध का उदय सहित चढि पड्या जीव क्रोध का उदय आएं बारह कषायनि का पूर्वोक्त प्रकार गलितावशेष आयाम लीएं गुणश्रेणी करै है; तैसैं मान का उदय सहित चढि पड्या जीव मान का उदय आएं क्रोध बिना नव कषायनि का करैं है । माया सहित चढि पड्या जीव माया का उदय भएं लोभ, मायारूप

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

छह कषायनि का करै है। लोभ सहित चढि पड्या जीव लोभ का उदय आएं तीन प्रकार लोभ ही का अन्य कर्मनि के समान गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम करै है।

जस्सुदएण य चडिदो, तम्हि य उक्कट्टियम्हि पडिऊण।
अंतरमाऊरेदि हु, एवं पुरिसोदए चडिदो ॥३६०॥

यस्योदयेन च चटितः, तस्मिंश्च अपकर्षिते पतित्वा।
अंतरमापूरयति हि, एवं पुरुषोदये चटितः ॥३६०॥

टीका – जिस कषाय का उदय सहित चढि पड्या होइ, तिस ही कषाय का द्रव्य का अपकर्षण होत संतैं अंतर कौं पूरै है। नष्ट कीए निषेकनि का सद्भाव करै है।

भावार्थ यहु – जैसैं क्रोध सहित चढि पड्या जीव, क्रोध का उदय आएं द्रव्य कौं अपकर्षण करि अंतर कौं पूरै है; तैसैं मान सहित चढि पड्या जीव मान का उदय आएं अर माया सहित चढि पड्या माया का उदय आएं अर लोभ सहित चढि पड्या जीव, लोभ का उदय आएं प्रथम समय विषैं द्रव्य कौं अपकर्षण करि जे अंतरकरण विषैं निषेक नष्ट कीए थे, तिनविषैं द्रव्य का निक्षेपण करि तिनका सद्भाव करै है। इस प्रकार पुरुषवेद सहित क्रोधादि युक्त श्रेणी चढने उतरनेवाला का व्याख्यान जानना।

थी उदयस्स य एवं, अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे।
सममुवसामदि संढस्सुदए चडिदस्स वोच्छामि ॥३६१॥

स्त्री–उदयस्य च एवं, अपगतवेदो हि सप्तकर्मांशान्।
सममुपशमयति षंढस्योदये चटितस्य वक्ष्यामि ॥३६१॥

टीका – स्त्रीवेद युक्त क्रोधादिकनि का उदय सहित श्रेणी चढ्या च्यारि प्रकार जीव है, सो वेद उदय रहित होत संता पुरुषवेद अर छह हास्यादिकनि का, इन सात नोकषायनि कौं युगपत् उपशमावै है। अन्य सर्व विधान पुरुषवेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या जीव के समान जानना।

अब नपुंसक वेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या कैं विशेष है, ताहि कहस्यों—

संढुदयंतरकरणो, संढद्धाणम्हि अणुवसंतेसे।
इत्थिस्स य अद्धाए, संढं इत्थिं च समगमुवसमदि ॥३६२॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

षंढोदयांतरकरणः, षंढाद्धायां अनुपशांतांशे ।
स्त्रियः च अद्धायां, षंढं स्त्रीं च समकमुपशमयति ॥३६२॥

टीका – नपुंसक वेद युक्त क्रोधादिकनि का उदय सहित श्रेणी चढ्या च्यारि प्रकार जीव, सो नपुंसक वेद का अंतर करत संता पुरुषवेद सहित चढ्या जीव कैं नपुंसक वेद स्त्री वेद कौं उपशम करने का जितना काल है तावन्मात्र नपुंसक वेद की प्रथम स्थिति कौं स्थापै है । स्थापि करि पुरुष वेद सहित चढ्या जीव कैं नपुंसक वेद कैं उपशमन काल जो पाइए है, ताका अंत पर्यंत काल कौं नपुंसक वेद कौं उपशमावता संता प्राप्त भया परि याकैं नपुंसक वेद का उपशम समाप्त न भया । तहां पीछैं स्त्री वेद, नपुंसक वेद इनि दोऊनि का युगपत् उपशम करने लगा ।

तहां पुरुष वेद सहित चढ्या जीव कैं स्त्री वेद के उपशम करने का जो काल, तिस काल कौं प्राप्त होइ सो कहैं हैं–

ताहे चरिमसवेदो, अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे ।
सममुवसामदि सेसा, पुरिसोदयचलिदभंगा हु ॥३६३॥

तस्मिन् चरमसवेदो, अवगतवेदो हि सप्तकर्मांशान् ।
सममुपशमयति शेषाः, पुरुषोदयचलितभङ्गा हि ॥३६३॥

टीका – तहां सवेद अवस्था का अंत समय कौं प्राप्त होता संता स्त्री वेद, नपुंसक वेद के उपशमन कौं युगपत् समाप्त करै है । तातैं परैं अवगतवेदी होत संता पुंवेद अर छह हास्यादिक इन सात नोकषायनि कौं युगपत् उपशमावै है । अन्य सर्व पुरुषवेद सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं समान विधान जानना ।

पुंकोहस्स य उदए, चलपलिदेऽपुव्वदो अपुव्वो त्ति ।
एदिस्से अद्धाणं, अप्पाबहुगं तु वोच्छामि ॥३६४॥

पुंक्रोधस्य च उदये, चटपतितेऽपूर्वतः अपूर्व इति ।
एतस्य अद्धानामल्पबहुकं तु वक्ष्यामि ॥३६४॥

टीका – पुरुष वेद का अर क्रोध कषाय का उदय सहित चढि पड्या जीव कैं आरोहक अपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय अवरोहक अपूर्वकरण का अंत समय पर्यंत काल विषैं संभवते जे अल्पबहुत्व के स्थान, तिनकौं कहोंगा । इहां श्रेणी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चढनेवालो का नाम तो आरोहक जानना, उतरनेवाला का नाम अवरोहक जानना। बहुरि जहां विशेष अधिक है, तहां पूर्व तें किछु अधिक जानना असी संज्ञा है।

अवरादो वरमहियं, रसखंडुक्कीरणस्स अद्धाणं।
संखगुणं अवरट्ठिदिखंडस्सुक्कीरणो कालो ॥३६५॥

अवरात् वरमधिकं, रसखण्डोत्करणस्याध्वानम्।
संख्यगुणं अवरस्थितिखंडस्योत्करणः कालः ॥३६५॥

टीका – सर्व तें स्तोक जघन्य अनुभागकांडकोत्करण का काल अंतर्मुहूर्त मात्र है, सो यहु ज्ञानावरणादि कर्मनि का तौ आरोहक सूक्ष्म सांपराय के अंत का अनुभाग कांडकोत्करण जानना अर मोह का अंतर करत संता अंत का अनुभाग कांडकोत्करण जानना।१। तातें उत्कृष्ट अनुभागकांडकोत्करण काल विशेष अधिक है, सो यहु सर्व कर्मनि का आरोहक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवै है।२। तातैं सूक्ष्म सांपराय का अन्त समय विषैं संभवता असा ज्ञानावरणादि कर्मनि का जघन्य स्थिति कांडकोत्करण काल अर अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं संभवता असा मोहनीय का जघन्य स्थिति बंध जेते काल पडै, सो काल संख्यात गुणे हैं। अर ते दोऊ परस्पर समान हैं।३।

पडणजहण्णट्ठिदिबंधद्धा, तम अंतरस्स करणद्धा।
जेट्ठट्ठिदिबंधठिदीउक्कीरद्धा य अहियकमा ॥३६६॥

पतनजघन्यस्थितिबंधाद्धा, तथा अंतरस्य करणाद्धा।
ज्येष्ठस्थितिबंधस्थित्युत्करणाद्धा च अधिकक्रमाः ॥३६६॥

टीका – तातैं अवरोहक सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषैं संभवता ज्ञानावरणादि कर्मनि का जघन्य स्थिति बंधापसरण काल अर अवरोहक अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं संभवता मोह का जघन्य स्थिति बंधापसरण काल विशेष अधिक है। ते दोऊ परस्पर समान हैं।४। तातैं अंतरकरण करने का काल विशेष अधिक है।

इहां कोऊ कहै – पूर्वैं स्थितिकांडकोत्करण काल के समान अंतरकरण काल कह्या था, इहां अधिक कैसैं कहो हो ?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताका समाधान – पूर्वै तहां संभवता जो मध्य स्थिति कांडकोत्करण काल, ताके समान अन्तरकरण काल कह्या था, इहां जघन्य स्थिति कांडकोत्करण काल तैं अधिक कह्या है ।५। तातैं आरोहक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं संभवता असा उत्कृष्ट स्थितिबंध काल कहिए, जेते काल समानरूप उत्कृष्ट स्थितिबंध होइ असा स्थितिबंधापसरण काल अर उत्कृष्ट स्थिति कांडकोत्करणकाल विशेष अधिक है, ते दोऊ परस्पर समान हैं ।६।

सुहमंतिमगुणसेढी, उवसंतकसायगस गुणसेढी ।
पडिवदसुहुमद्धावि य, तिण्णिवि संखेज्जगुणिदकमा ।।३६७।।

सूक्ष्मांतिमगुणश्रेणी, उपशांतकषायकस्य गुणश्रेणी ।
प्रतिपतत्सूक्ष्माद्धापि च, तिस्रोऽपि संख्येयगुणितक्रमाः ।३६७।।

टीका – तातैं आरोहक सूक्ष्म सांपराय का अंत समय विषैं संभवता असा गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम संख्यात गुणा है ।७। तातै उपशांतकषाय का प्रथम समय विषैं आरंभ्या अैसा गुणश्रेणी आयाम संख्यात गुणा है ।८। तातैं पडनेवाला सूक्ष्मसांपराय का काल संख्यात गुणा है ।९।

तग्गुणसेढी अहिया, चलसुहुमो किट्टिउवसमद्धा य ।
सुहुमस्स य पढमठिदी, तिण्णिवि सरिसा विसेसहिया ।।३६८।।

तद्गुणश्रेणी अधिका, चलसूक्ष्मः कृष्टच्युपशमाद्धा च ।
सूक्ष्मस्य च प्रथमस्थितिः तिस्रोऽपि सदृशा विशेषाधिकाः ।।३६८।।

टीका – तातैं पडनेवाला सूक्ष्मसांपराय कैं सूक्ष्म लोभ का गुणश्रेणी आयाम आवली मात्र विशेष करि अधिक है ।१०। तातैं आरोहक सूक्ष्मसांपराय का काल अर सूक्ष्मकृष्टि उपशमावने का काल अर सूक्ष्म सांपराय की प्रथम स्थिति आयाम यथा-संभव अंतर्मुहूर्त मात्र विशेष करि अधिक है । ए तीनौं परस्पर समान हैं ।

किट्टीकरणद्धहिया, पडबादरलोभवेदगद्धा हु ।
संखगुणा तस्सेव य, तिलोहगुणसेढिणिक्खेओ ।।३६९।।

कृष्टिकरणाद्धाधिका, पतद्बादरलोभवेदकाद्धा हि ।
संख्यगुणं तस्यैव च, त्रिलोभगुणश्रेणिनिक्षेपः ।।३६९।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तातैं सूक्ष्म कृष्टि करने का काल विशेष अधिक है । सो यहु अनिवृत्ति करण काल का किंचित् न्यून त्रिभाग मात्र है ।१२। तातैं पडनेवाले बादर सूक्ष्म सांपराय के बादर लोभ वेदक का काल संख्यात गुणा है ।१३। तातैं पडनेवाले अनिवृत्तिकरण के तीन लोभ की गुणश्रेणी का आयाम आवली मात्र अधिक है ।१४।

चडबादरलोहस्स य, वेदगकालो य तस्स पढमठिदी ।
पडलोहवेदगद्धा, तस्सेव य लोहपढमठिदी ॥३७०॥

चटबादरलोभस्य च, वेदककालश्च तस्य प्रथमस्थितिः ।
पतल्लोभवेदकाद्धा, तस्यैव च लोभप्रथमस्थितिः ॥३७०॥

टीका – तातैं आरोहक अनिवृत्तिकरण कैं बादर लोभ का वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।१५। तातैं आरोहक अनिवृत्तकरण कैं बादर लोभ की प्रथम स्थिति का आयाम विशेष अधिक है ।१६। तातैं पडनेवाले कैं बादर लोभ का वेदक काल विशेष अधिक है ।१७। तातैं उतरनेवाले कैं लोभ की प्रथम स्थिति का आयाम आवली मात्र अधिक है ।१८।

तम्मायावेदद्धा, पडिवडछण्हं पि खित्तगुणसेढी ।
तम्माणवेदगद्धा तस्स णवण्हं पि गुणसेढी ॥३७१॥

तन्मायावेदकाद्धा, प्रतिपतत्षण्णामपि क्षिप्तगुणश्रेणी ।
तन्मानवेदकाद्धा, तस्य नवानामपि गुणश्रेणी ॥३७१॥

टीका – तातैं पडनेवाले कैं मायावेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।१९। तातैं पडनेवाले कै माया वेदक के छह कषायनि का गुणश्रेणी आयाम आवली करि अधिक है ।२०। तातैं पडनेवाले कैं मान वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।२१। तातैं तिस ही कैं नव कषायनि का गुणश्रेणी आयाम आवली करि अधिक है ।२२।

चडमायावेदद्धा, पढमट्ठिदिमायउवसमद्धा य ।
चलमाणवेदगद्धा,पढमट्ठि दिमाणउवसमद्धा य ॥३७२॥

चटमायावेदाद्धा प्रथमस्थितिमायाउपशमाद्धा च ।
चटमानवेदकाद्धा प्रथमस्थितिमानोपशमाद्धा च ॥३७२॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तातैं चढनेवाले कैं माया वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।२३। तातैं तिस तै मायाकी प्रथम स्थिति का आयाम उच्छिष्टावली करि अधिक है ।२४। तातैं माया के उपशमावने का काल समय घाटि आवली मात्र अधिक है ।२५। तातैं चढनेवाले कैं मान वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।२६। तातैं ताकी प्रथम स्थिति का आयाम आवली मात्र अधिक है ।२७। तातैं ताकैं मान उपशमावने का काल समय घाटि आवली मात्र अधिक है ।२८।

कोहोवसामणद्धा, छप्पुरिसित्थीण उवसमाणं च ।
खुद्दुभवगहणं च य, अहियकमा एक्कवीसपदा ॥३७३॥

क्रोधोपशामनाद्धा, षट्पुरुषस्त्रीनामुपशमानां च ।
क्षुद्रभवग्रहणं च च, अधिकक्रमाणि एकविंशपदानि ॥३७३॥

टीका – तातैं क्रोध के उपशमावने का काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।२९। तातैं छह नोकषायनि के उपशमावने का काल विशेष अधिक है ।३०। तातैं पुरुषवेद के उपशमावने का काल समय घाटि दोय आवली करि अधिक है ।३१। तातैं स्त्रीवेद उपशमावने का काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।३२। तातैं नपुंसकवेद उपशमावने का काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।३३। तातैं क्षुद्रभव का काल विशेष अधिक है, सो यहु एक उश्वास के अठारहवे भागमात्र है ।३४।३५।

उवसंतद्धा दुगुणा, तत्तो पुरिसस्स कोहपढमठिदी ।
मोहोवसामणद्धा, तिण्णिवि अहियक्कमा होंति ॥३७४॥

उपशांताद्धा द्विगुणा, ततः पुरुषस्य क्रोधप्रथमस्थितिः ।
मोहोपशमनाद्धा, त्रीण्यपि अधिकक्रमाणि भवंति ॥३७४॥

टीका – तिस क्षुद्रभव तैं उपशांत कषाय का काल दूणा है ।३५। तातैं पुरुष वेद की प्रथम स्थिति का आयाम विशेष अधिक है ।३६। तातैं संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति का आयाम किंचित् न्यून त्रिभाग मात्र करि अधिक है ।३७। तातैं सर्व मोहनीय का उपशमावने का काल है, सो नपुंसक वेद के उपशमावने का प्रारम्भ तैं लगाय मान, माया, लोभ का उपशम कालनि करि साधिक है ।३८।

पडणस्स असंखाणं, समयपबद्धाणुदीरणाकालो ।
संखगुणो चडणस्स य, तक्कालो होदि अहियो य ॥३७५॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पतनस्यासंख्यानां, समयप्रबद्धानामुदीरणाकालः ।
संख्यगुणः चटनस्य च, तत्कालो भवत्यधिकश्च ।।३७५।।

टीका – तातैं पडनेवाले कैं असंख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा होने का काल संख्यात गुणा है ।३९। तातैं चढनेवाले कैं असंख्यात समयप्रबद्ध का उदीरणा होने का काल अंतर्मुहूर्त मात्र अधिक है ।४०।

पडणाणियट्टियद्धा, संखगुणा चडणगा विसेसहिया ।
पडमाणा पुव्वद्धा, संखगुणा चडणगा अहिया ।।३७६।।

पतनानिवृत्त्यद्धा, संख्यगुणा चटनका विशेषाधिका ।
पतंत्यापूर्वाद्धाः, संख्यगुणाः चटनका अधिकाः ।।३७६।।

टीका – तातैं पडनेवाले कैं अनिवृत्तिकरण का काल संख्यात गुणा है ।४१। तातैं चढनेवाले कैं अनिवृत्तिकरण का काल अंतर्मुहूर्त मात्र करि अधिक है ।४२। तातैं पडनेवाले कैं अपूर्वकरण का काल संख्यात गुणा है ।४३। तातैं चढनेवाल कैं अपूर्वकरण का काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।४४।

पडिवडवरगुणसेढी, चडमाणापुव्वपढमगुणसेढी ।
अहियकमा उवसामगकोहस्स य वेदगद्धा हु ।।३७७।।

प्रतिपतद्वरगुणश्रेणी, चटदपूर्वप्रथमगुणश्रेणी ।
अधिकक्रमा उपशामकक्रोधस्य च वेदकाद्धा हि ।।३७७।।

टीका – तातैं पडनेवाले कैं सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषैं आरंभ्या असा उत्कृष्ट गुणश्रेणी आयाम सो अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।४५। तातैं चढनेवाले कैं अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जाका आरंभ भया असा उत्कृष्ट गुणश्रेणी आयाम, सो अन्तर्मुहूर्त करि अधिक है ।४६। तातैं चढनेवाले कैं क्रोध वेदक काल संख्यात गुणा है, जातैं याका आरंभ तो अधःकरण का प्रथम समय तैं ही है अर गुणश्रेणी आयाम का आरंभ अपूर्वकरण के प्रथम समय तैं है, तातैं असंख्यात गुणापना संभवै है ।४७।

संजदअधापवत्तगगुणसेढी दंसणोवसंतद्धा ।
चारित्तंतरिगठिदी, दंसणमोहंतरठिदीओ ।।३७८।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संयताधः प्रवृत्तकगुणश्रेणी दर्शनोपशांताद्धा ।
चारित्रांतरिकस्थितिः, दर्शनमोहांतरस्थितिः ॥३७८॥

टीका – तातैं पडनेवाला अप्रमत्त संयमी कैं प्रथम समय विषैं कीया गुणश्रेणी आयाम सो संख्यात गुणा है ।४८। तातैं दर्शन मोह का उपशम अवस्था का काल संख्यात गुणा है, जातैं चारित्र मोह कैं उपशमन काल तैं पीछे वा पहलैं अप्रमत्तादि असंयत पर्यंत द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का सद्भाव करैं है ।४९। तातैं चारित्र मोह का अन्तर आयाम संख्यात गुणा है ।५०। तातैं दर्शन मोह का अन्तर आयाम संख्यात गुणा है ।५१।

अवराजेट्ठाबाहा, चडपडमोहस्स अवरठिदिबंधो ।
चडपडतिघादिअवरट्ठिदिबंधंतोमुहुत्तो य ॥३७९॥

अवराज्येष्ठाबाधा, चटपतमोहस्य अवरस्थितिबंधः ।
चटपतत्रिघात्यवरस्थितिबंधांतर्मुहूर्तश्च ॥३७९॥

टीका – तातैं चढनेवाले के सूक्ष्म सांपराय का अन्त समय विषैं संभवता ज्ञानावरणादिक का अर अनिवृत्तिकरण का अन्त समय विषैं संभवता मोह का स्थितिबंध की जघन्य आबाधा, सो संख्यात गुणी है ।५२। तातैं उतरनेवाले कैं अपूर्व करण का अन्त समय विषैं संभवती सर्व कर्मनि की स्थितबंध की उत्कृष्ट आबाधा संख्यात गुणी है ।५३। तातैं चढनेवाले कैं अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं संभवता मोह का जघन्य स्थितबंध का प्रमाण, सो संख्यात गुणा है ।५४। तातैं उतरनेवाले कैं अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं संभवता मोह का जघन्य स्थितिबंध का प्रमाण संख्यात गुणा है, इहां संख्यात का प्रमाण दोय जानना ।५५। तातैं चढनेवाले कैं सूक्ष्मसांपराय का अन्त समय विषैं संभवता असा तीन घातिया कर्मनि का जघन्य स्थिति बंध, सो संख्यात गुणा है ।५६। तातैं उतरनेवाले कैं सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषैं संभवता तीन घातिया कर्मनि का जघन्य स्थितिबंध, सो संख्यात गुणा है, सो दूणा जानना ।५७। तातैं उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त संख्यात गुणा है, सो एक समय घाटि दोय घडी प्रमाण जानना ।५८। इहां अन्तदीपक न्याय करि पूर्वैं जे सर्व काल कहे थे, ते सर्व अंतर्मुहूर्त मात्र ही जानने । जातैं अंतर्मुहूर्त के भेद बहुत हैं ।

चडमाणस्स य णामागोदजहण्णट्ठिदीण बंधो य ।
तेरसपदासु कमसो, संखेण य होंति गुणियकमा ॥३८०॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चटतः च नामगोत्रजघन्यस्थितीनां बंधश्च ।
त्रयोदशपदेषु क्रमशः, संख्येन च भवंति गुणितक्रमाः ।।३८०।।

टीका – तातैं चढनेवाले कैं नामगोत्र का जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणा है, सो सोलह मुहूर्त मात्र है ।५९। सो यहु जघन्य बंध अपनी अपनी व्युच्छित्ति का अंत समय विषै जानना ।

चलतदियअवरबंधं, पडणामागोदअवरठिदिबंधो ।
पडतदियस्स य अवरं, तिण्णि पदा होंति अहियकमा ।।३८१।।

चटतृतीयावरबंधं, पतन्नामगोत्रावरस्थितिबंधः ।
पतत्तृतीयस्य च अवरं, त्रीणि पदानि भवंति अधिकक्रमाणि ।।३८१।।

टीका – तातैं चढनेवाले कैं वेदनीय का जघन्य स्थितिबंध विशेष अधिक है, सो चौईस मुहूर्त मात्र है ।६०। तातैं पडने वाले के नाम गोत्र का जघन्य स्थिति बंध विशेष अधिक है, सो बत्तीस मुहूर्त मात्र है ।६१। तातैं पडनेवाले कैं वेदनीय का जघन्य स्थितिबंध विशेष अधिक है, सो अठतालीस मुहूर्त मात्र है ।६२।

चडमायमाणकोहो, मासादीदुगुण अवरठिदिबंधो ।
पडणे ताणं दुगुणं, सोलसवस्साणि चलणपुरिसस्स ।।३८२।।

चटमायामानक्रोधो, मासादिद्विगुणावरस्थितिबंधः ।
पतने तेषां द्विगुणं, षोडशवर्षाणि चटनपुरुषस्य ।।३८२।।

टीका – तातै चढनेवाले कैं संज्वलन माया का जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणा है, सो एक मास मात्र है ।६३। तातैं तिस ही कैं मान का जघन्य स्थितिबंध दूणा है ।६४। तातैं तिस ही कै क्रोध का जघन्य स्थितिबंध दूणा है ।६५। बहुरि उतरनेवाले कैं तिन ही मायादिकनि का जघन्य स्थितिबंध चढनेवाले तैं दूणा है, सो माया का दोय मास, मान का च्यारि मास, क्रोध का आठ मास मात्र जानना । बहुरि चढनेवाले कैं पुरुषवेद का जघन्य स्थितिबंध सोलह वर्ष मात्र है ।

पडणस्स तस्स दुगुणं, संजलणाणं तु तत्थ दुट्ठाणे ।
बत्तीसं चउसट्ठी, वस्सपमाणेण ठिदिबंधो ।।३८३।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

पतनस्य तस्य द्विगुणं, संज्वलनानां तु तत्र द्विस्थाने ।
द्वात्रिंशत् चतुः षष्टिः वर्षप्रमाणेन स्थितिबंधः ॥३८३॥

टीका – पडनेवाले कैं पुरुषवेद का जघन्य स्थितिबंध तातैं दूणा बत्तीस वर्ष मात्र है । बहुरि तिस काल विषैं संज्वलन चतुष्क का स्थितिबंध चढनेवाले कैं बत्तीस वर्ष, उतरनेवाले कैं चौसठि वर्ष मात्र हो है ।

चडपडणमोहपढमं, चरिमं तु तहा तिघादियादीणं ।
संखेज्जवस्सबंधो, संखेज्जगुणक्कमो छण्हं ॥३८४॥

चटपतनमोहप्रथमं चरमं तु तथा त्रिघातकादीनाम् ॥
संख्येयवर्षबंधः संख्येयगुणक्रमः षण्णाम् ॥३८४॥

टीका – तातैं चढनेवाले कैं अंतरकरण करने की समाप्ति होने के अनंतर समय विषैं संभवता असा मोहनीय का प्रथम स्थितिबंध संख्यात गुणा है, सो संख्यात हजार वर्ष मात्र है । तातैं उतरनेवाले कैं तिस समय को समान अवस्था विषैं संभवता असा मोह का अंतस्थितिबंध है, सो संख्यात गुणा है । सो भी संख्यात हजार वर्ष मात्र है । जैसैं पूर्वैं चढनेवाले तैं उतरनेवाले कैं दूणा स्थितिबंध कह्या था, तैसैं अब न जानना । अब यथासंभव संख्यात गुणा जानना । तातैं चढनेवाले कैं तीन घातियानि का प्रथम स्थितिबंध संख्यात गुणा है । तातैं उतरनेवाले कैं तिनका तहां अंतस्थितिबंध संख्यात गुणा है । तातैं चढनेवाले कैं सप्त नोकषायनि का उपशम काल विषैं तीन अघातिया कर्मनि का प्रथम स्थितिबंध संख्यात गुणा है । तातैं उतरनेवाले कैं तहां अंत स्थितिबंध संख्यात गुणा है ।

चडपडणमोहचरिमं, पढमं तु तहा तिघादियादीणं ।
असंखेज्जवस्सबंधो, संखेज्जगुणक्कमो छण्हं ॥३८५॥

चटपतनमोहचरमं, प्रथमं तु तथा त्रिघातकादीनाम् ।
असंख्येयवर्षबंधः संख्येयगुणक्रमः षण्णाम् ॥३८५॥

टीका – तातैं चढनेवाले कैं मोहनीय का असंख्यात वर्ष मात्र अंत स्थितिबंध है, सो असंख्यात गुणा है । यहु पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है, अंतरकरण करने का प्रारंभ समय विषैं संभवै है । तातैं उतरनेवाले कैं मोह का असंख्यात वर्ष मात्र

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथम स्थितिबंध है, सो असंख्यात गुणा है। तातैं चढनेवाले कैं तीन घातियानि का असंख्यात वर्ष मात्र अंत स्थितिबंध है, सो असंख्यात गुणा है। सो यहु स्त्रीवेद का उपशम काल का संख्यात भाग गएं हो है। तातैं उतरनेवाले कैं तीन घातियानि का असंख्यात वर्ष मात्र पहिला स्थितिबंध, सो असंख्यात गुणा है। तातैं चढनेवाले कैं तीन घातियानि का अंत स्थितिबंध असंख्यात गुणा है, सो सप्त नोकषायनि का उपशम काल विषैं संख्यात भाग भएं हो है। तातैं उतरनेवाले कैं तिन ही का प्रथम स्थितिबन्ध है, सो असंख्यात गुणा है। सो यहु भी पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है। इहां उतरनेवाले कैं जे स्थितिबन्ध कहे हैं, ते सर्व ही चढनेवाले का तिस स्थितिबन्ध होने का काल कौं अंतर्मुहूर्त करि अप्राप्ति होइ संभवै हैं। चढनेवाले कैं जो प्रथम स्थितिबन्ध होइ, उतरनेवाले कैं ताके निकटवर्ती अवस्था कौं पाएं अंत स्थिति बन्ध होइ, जातैं चढनेवाला जिस अवस्था कौं पहलैं पावै, तिस अवस्था कौं उतरनेवाला अंत विषैं पावै है।

चडणे णामदुगाणं, पढमो पलिदोवमस्स संखेज्जो।
भागो ठिदिस्स बंधो, हेट्ठिल्लादो असंखगुणो ॥३८६॥

चटने नामद्विकयोः, प्रथमः पलितोपमस्यासंख्येयः।
भागः स्थितेर्बंधः, अधस्तनादसंख्यगुणः ॥३८६॥

टीका – तातैं चढनेवाले कैं नाम गोत्र का पल्य के असंख्यातवे भाग मात्र भया पहला स्थितिबन्ध, सो नीचे का घातित्रय का स्थितिबन्ध तैं असंख्यात गुणा है।

तीसियचउण्ह पढमो, पलिदोवमसंखभागठिदिबंधो।
मोहस्सवि दोण्णि पदा, विसेसअहियक्कमा होंति ॥३८७॥

तीसियचतुर्णां प्रथमः, पलितोपमासंख्यभागास्थितिबंधः।
मोहस्यापि द्वे पदे, विशेषाधिकक्रमा भवंति ॥३८७॥

टीका – तातैं चढनेवाले कैं तीसिय चतुष्क का पहलैं स्थितिबन्ध विशेष अधिक है, सो भी पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र है, तातैं चढनेवाले कैं मोह का तहां चालीसिय स्थितिबंध है, सो ताही का त्रिभाग मात्र विशेष करि अधिक है।

ठिदिखंडयं तु चरिमं, बंधोसरणट्ठिदी य पल्लद्धं।
पल्लं चडपडबादरपढमो चरिमो य ठिदिबंधो ॥३८८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थितिखंडकं तु चरमं, बंधापसरणस्थिती च पल्यार्धं ।
पल्यं चटपतद्बादरप्रथमः चरमश्च स्थितिबन्धः ॥३८८॥

टीका – तातैं अंत का स्थिति खंड, जो स्थितिकांडकायाम संख्यात गुणा है, सो ज्ञानावरणादि कर्मनि का तो सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषैं अर मोह का अंतर करण काल विषैं संभवै है, तातैं पल्य मात्र स्थिति की उत्पत्ति के निमित्त पल्य का संख्यातवां भाग पर्यंत स्थितिबंधापसरणनि करि उपजे पल्य के संख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिबंध, ते सर्व ही क्रम तैं संख्यात गुणे हैं। बहुरि पल्य का संख्यातवां भाग तैं पल्य का प्रमाण संख्यात गुणा है, तातैं चढनेवाले कैं अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं संभवता स्थितिबंध सो संख्यात गुणा है, सो पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण है। तातैं उतरनेवाले कैं अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं संभवता स्थितिबंध संख्यात गुणा है ।

चडपडअपुव्वपढमो, चरिमो ठिदिबंधओ य पडणस्से ।
तच्चरिमं ठिदिसंतं, संखेज्जगुणक्कमा अट्ठ ॥३८९॥

चटपतदपूर्वप्रथमः, चरमस्थितिबंधकश्च पतनस्य ।
तच्चरमं स्थितिसत्त्वं, संख्येयगुणक्रमं अष्ट ॥३८९॥

टीका – तातैं चढनेवाले कैं अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं स्थितिबंध संख्यात गुणा है। सो अंतः कोडाकोडी सागर मात्र है। तातैं पडनेवाला अपूर्वकरण का अंत समय विषैं स्थितिबंध संख्यात गुणा है। सो दूणा अथवा यथासंभव संख्यात गुणा जानना। तातैं पडनेवाले कैं अपूर्वकरण का अंत समय विषैं स्थिति सत्त्व संख्यात गुणा है।

तप्पढमट्ठिदिसत्तं, पडिवडअणियट्ठिचरिमठिदिसत्तं ।
अहियकमा चलबादरपढमट्ठिदिसत्तयं तु संखगुणं ॥३९०॥

तत्प्रथमस्थितिसत्त्वं प्रतिपतदनिवृत्तिचरमस्थितिसत्त्वं ।
अधिकक्रमं चटबादरप्रथमस्थितिसत्त्वकं तु संख्यगुणम् ॥३९०॥

टीका – तातैं पडनेवाले कैं अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं स्थिति सत्त्व है, सो समय घाटि अपूर्वकरण का काल मात्र विशेष करि अधिक है, जातैं उतरने विषैं प्रथम समय स्थिति सत्त्व तैं अंत समय विषैं स्थिति सत्त्व की हीनता तितने समय मात्र

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ही हो है । तातैं पडनेवाले अनिवृत्ति करण का अंत समय विषैं स्थिति सत्त्व एक समय करि अधिक है, तातैं चढनेवाला अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं स्थिति सत्त्व संख्यात गुणा है, जातैं याकौं अब भी अनिवृत्तिकरण के परिणामनि करि स्थिति सत्त्व का खंड न संभवै है ।

चडमाणअपुव्वस्स य, चरिमट्ठिदिसत्तयं विसेसहियं ।
तस्सेव य पढमठिदिसत्तं संखेज्जसंगुणियं ॥३९१॥

चटदपूर्वस्य च, चरमस्थितिसत्त्वकं विशेषाधिकम् ।
तस्यैव च प्रथमस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणितम् ॥३९१॥

टीका – तातैं चढनेवाले के अपूर्वकरण का अंत समय विषैं स्थिति सत्त्व विशेष अधिक है, जातैं तिसके अंत कांडक की अंत फालिका प्रमाण पल्य के संख्यातवें भाग मात्र संभवै है, सो इतना अधिक जानना । तातैं चढनेवाले के अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं स्थिति सत्व संख्यात गुणा है । सो अंतः कोडाकोडी प्रमाण है । जातैं अपूर्व करण का काल विषैं संख्यात हजार स्थिति कांडक हो है, तिनकरि ताका प्रथम समय विषैं जो स्थिति पाइए ताका संख्यात बहुभाग मात्र स्थिति का घात हो है । ताका अंत समय विषैं एक भाग मात्र स्थिति रहै है । अर तिस प्रथम समयवर्ती स्थिति सत्व तैं पहलैं स्थिति कांडक का घात है नाहीं तातैं ताका चरम समयवर्ती स्थिति सत्व तैं प्रथम समयवर्ती स्थिति सत्व संख्यात गुणा जानना । ऐसैं अल्प बहुत्व जानना । या प्रकार चारित्र मोह के उपशमावने का विधान समाप्त भया ।

दोहा

कर्म शांति के अर्थि जिन, नमौ शांति करतार ।
प्रशमित दुरित समूह सब, महावीर जिनसार ॥१॥

॥ इति लब्धिसारः समाप्तः ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

अथ क्षपणासार

इहां पर्यंत गाथा सूत्रनि का व्याख्यान संस्कृत टीका के अनुसारि किया, जातैं इहां पर्यंत गाथानि ही की टीकाकरि कैं संस्कृत टीकाकारने ग्रंथ समाप्त कीना है। बहुरि इहांतैं आगे गाथा सूत्र हैं तिनिविषैं क्षायिक चारित्र का वर्णन है, तिनकी संस्कृत टीका तो अवलोकने में आई नाहीं, तातैं तिनका व्याख्यान अपनी बद्धि अनुसारि इहां कीजिये है।

बहुरि भोज नामा राजा का बाहुबलि नामा मंत्री कैं ज्ञान उपजावने के अर्थि श्रीमाधवचंद्र नामा आचार्य करि विरचित एक क्षपणासार ग्रंथ है, तिसविषैं क्षायिक चारित्र ही का विधान वर्णन है, सो इहां तिस क्षपणासार का अनुसारि लीएं भी व्याख्यान करिए है। तहां प्रथम मंगलाचरण करिए हैं–

श्रीवर धर्म जलधि के नंदन रत्नाकरवर्धक सुखकार।
लोक प्रकाशक अतुल विमल प्रभु संतनिकर सेवित गुणधार ॥
माधववरबलभद्रनमितपदपद्मयुगल धारैं विस्तार।
नेमिचंद्र जिन नेमिचंद्र गुरु चंद्रसमान नमहुं सो सार ॥१॥

याके नेमिनाथ तीर्थंकर वा नेमिचंद्र आचार्य वा चंद्रमा का विशेषण करने करि तीन अर्थ हैं। तहां 'माधववरबलभद्रनमितपदपद्मयुगल' का अर्थ – नेमिचंद्र जिन-की पक्ष विषैं तो नारायण बलभद्र करि अर नेमिचंद्र गुरु की पक्ष विषैं माधवचंद्र आचार्य अर कल्याण रूप बाहुबलि मंत्री, तिनकरि अर चंद्रमा की पक्ष विषैं वसंतराज उत्कृष्ट सप्तसेना विषैं प्रधान, ताकरि नमित हैं चरण युगल जिनके असे हैं। अन्य अर्थ सुगम है ॥

अब इहां गाथा सूत्र कहिए है–

तिकरणमुभयोसरणं, कमकरणं खवणदेसमंतरयं।
संकम अपुव्वफड्ढयाकिट्टीकरणाणुभवण खमणाये ॥३९२॥

त्रिकरणमुभयापसरणं, क्रमकरणं क्षपणं देशमंतरकम्।
संक्रमं अपूर्वस्पर्धककृष्टिकरणानुभवनानि क्षपणायाम् ॥३९२॥

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, ए तीन करण अर बंधापसरण, सत्वापसरण ए दोय अपसरण, बहुरि क्रमकरण, अष्टकषाय, सोलह प्रकृतिनिको क्षपणा, देश घातिकरण, अंतरकरण, संक्रमण, अपूर्व स्पर्धककरण, कृष्टि-करण, कृष्टिअनुभवन अैसें ए चारित्र मोह की क्षपणा विषैं अधिकार जानने। तहां पीछैं ज्ञानावरणादि कर्मनि का क्षपणा अधिकार अर योग निरोध अधिकार का वर्णन होगा।

तहां प्रथम अधःकरण का वर्णन करिए है– पहलैं पूर्वोक्त प्रकार तीन करण विधान तैं सात प्रकृतिनि का नाश करि क्षायिक सम्यग्दृष्टि होइ, मोहनी की इकईस प्रकृतिनि का सत्वसहित होइ, सो जघन्य तो अंतर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सहित आठ वर्ष करि हीन दोय कोटी पूर्व, तिनिकरि अधिक तेतीस सागर काल क्षायिक सम्यग्दृष्टि संसार में रहै, तहां किसी काल विषैं चारित्र मोह की क्षपणा कौं योग्य जे विशुद्ध परिणाम, तिनकरि सहित होइ प्रमत्त तैं अप्रमत्त विषैं, अप्रमत्त तैं प्रमत्त विषैं हजारों बार गमनागमन करि महामुनि चक्रवर्ती हैं, सो यथाख्यात चारित्र रूप एकछत्र राज्य करने के अर्थि क्षपक श्रेणीरूप दिग्विजय करने के सन्मुख होत संता प्रथम सातिशय अप्रमत्त गुणस्थान विषैं अधःकरणरूप प्रस्थान करै है। ताका विशेष जानने कौं इहां प्रश्नोत्तर हो है —

कसायखवणो ठाणे, परिणामो केरिसो हवे।
कसाय उपजोगो को, लेस्सा वेदा य को हवे ॥१॥

काणि वा पुव्वबद्धाणि, को वा अंसेण बंधदि।
कदियावलि पविसंति, कदिण्हं वा पवेसगो ॥२॥

केट्ठिय सेज्झीयदे, पुव्वं बन्धेण उदयेण वा।
अंतरं वा कहिं किच्चा, के के संकामगो कहिं ॥३॥

केट्ठिदीयाणि कम्माणि, अणुभागेसु केसु वा।
उक्कट्टिठदूण सेसाणि, कं ठाणं पडिवज्जदि ॥४॥

इनि च्यारि सूत्रनि करि प्रश्न कीए।

तहां प्रश्न – जो चारित्र मोह की क्षपणा का प्रारंभक जीव कैं परिणाम कैसा होइ ?

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताका उत्तर – अति विशुद्ध होइ ।

बहुरि प्रश्न – योग कैसा होइ ?

ताका उत्तर – च्यारि मनो योगनि विषैं कोई एक वा च्यारि वचन योगनि विषैं कोई एक वा सात काय योगनि विषैं औदारिक काय योग होइ ।

बहुरि प्रश्न – कषाय कैसा होइ ?

ताका उत्तर – च्यारि संज्वलन विषैं कोई एक होइ, सो भी हीयमान होइ वृद्धिरूप न होइ ।

बहुरि प्रश्न – उपयोग कैसा होइ ?

ताका उत्तर – बहुत मुनिनि कैं प्रसिद्ध उपदेश करि तो श्रुतज्ञान ही उपयोग है । दर्शन उपयोग नाहीं है । अन्य आचार्यनि के मत करि मति, श्रुति ज्ञान विषैं एक, चक्षु वा अचक्षु दर्शन विषैं एक उपयोग है ।

बहुरि प्रश्न – लेश्या कैसी हो है ?

ताका उत्तर – शुक्ल ही हो है ।

बहुरि प्रश्न – वेद कैसा हो है ?

ताका उत्तर – भाव वेद तीन्नों विषैं कोई एक हो है । द्रव्यवेद पुरुषवेद ही है ।

बहुरि प्रश्न – पूर्वबद्ध कर्म हैं, ते सत्त्व रूप कैसें हैं ?

ताका उत्तर – सात मोहनी अर नरक, तिर्यंच, देव आयु, इन दश बिना सर्व प्रकृतिनि का सत्त्व होइ, तहां आहारक, आहारकांगोपांग, तीर्थंकर ए भजनीय हैं । कोई कैं होइ कोइ कैं न होंइ । बहुरि स्थिति सत्त्व मनुष्यायु बिना तिन प्रकृतिनि का अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण है अर तिनविषैं प्रशस्त प्रकृतिनि का गुड, खंड, शर्करा, अमृत रूप चतुःस्थानक; अप्रशस्त प्रकृतिनि का दारु, लता वा निंब, कांजीर रूप द्वि-स्थानक अनुभागसत्त्व है । अर तिनका प्रदेशसत्त्व अजघन्य वा अनुत्कृष्ट संभवै है । जघन्य उत्कृष्ट कर्म परमाणूनि का समूह इहां न पाइए है ।

बहुरि प्रश्न – जो नवीन कर्म किसा अंशकरि बंधै है ?

ताका उत्तर – ज्ञानावरण पांच, दर्शनावरण की स्त्यानगृद्धित्रिक बिना छह, साता वेदनीय, संज्वलन चतुष्क, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, उच्च गोत्र, अंत-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

राय पांच, ऐसैं सत्ताईस अर नाम कर्म विषैं देवगति, पंचेंद्री जाति, वैक्रियिक, तैजस, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वैक्रियिक अंगोपांग, प्रशस्तवर्णादिक च्यारि, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उश्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, निर्माण ए अठाईस वा कोई कैं तीर्थंकर सहित गुणतीस वा कोई कैं आहारकद्विक सहित तीस वा कोई कैं आहारक द्विक, तीर्थंकर सहित इकतीस प्रकृति बंधै हैं। अर तिनि प्रकृतिनि का स्थिति सत्त्व तैं संख्यात गुणा घटता अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थितिबंध हो है। अर तिनिविषैं अप्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय अनंत गुणा घटता क्रम लीएं द्विस्थानक अर प्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय अनंत गुणा बधता क्रम लीएं चतुःस्थानक अनुभाग बंध हो है। अर तिनिका अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध हो है। इहां जघन्य वा उत्कृष्ट समयप्रबद्ध नाहीं बंधै है।

तहां विशेष – जो प्रचला, निद्रा हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, देवानुपूर्वी, वैक्रियिक द्विक, आहारक द्विक, प्रथम संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, तीर्थंकर इनि प्रकृतिनि का किसी प्रकार करि उत्कृष्ट प्रदेश बंध भी हो है।

बहुरि प्रश्न – उदयावली प्रति कर्म कैसे प्रवेश करै है ?

ताका उत्तर – मूल प्रकृति तौ सर्व उदय रूप ही होइ खिरै हैं, उत्तर प्रकृति कोई उदय रूप होइ निर्जरै है, कोई बिना ही उदय दिये निर्जरै है।

बहुरि प्रश्न – केते कर्म उदीरणा रूप होइ उदयावली प्रति प्रवेश करै हैं ?

ताका उत्तर – साता वेदनीय का अर मनुष्यायु बिना स्वमुखोदयी सर्व ही कर्म उदयावली विषैं प्रवेश करै हैं, उदीरणारूप हो हैं।

बहुरि प्रश्न – पूर्वैं कौन कर्म उदय अर बंध करि विनशै है ?

ताका उत्तर – स्त्यानगृद्धि-त्रिक, असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, कषाय बारह, अरति, शोक, स्त्री नपुंसकवेद, आयु चारि, परावर्त अशुभ नाम की गुणतीस, मनुष्य गति, औदारिक शरीर वा अंगोपांग वज्रवृषभ नाराच, मनुष्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, नीच गोत्र इतनी प्रकृतिनि की बंध की व्युच्छित्ति पहलैं भई है। इहां नरक तिर्यंच गति, एकेंद्रियादि च्यारि, संस्थान पांच, सहंनन पांच, नरकतिर्यंचानुपूर्वी, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दुःस्वर, अनादेय, अयशस्कीर्ति ए गुणतीस प्रकृति परावर्त्त अशुभनाम कर्म की जाननी ।

बहुरि स्त्यानगृद्धि-त्रिक, दर्शन मोह ३, कषाय बारह, नरक तिर्यंच देव आयु, नरक तिर्यंच देव गति वा आनुपूर्वी ६, एकेंद्रियादि जाति च्यारि, वैक्रियिक, आहारक शरीर वा अंगोपांग ४, वज्रवृषभ नाराच बिना संहनन पांच, मनुष्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति, तीर्थंकर, नीचगोत्र, इनके उदय की व्युच्छित्ति पहलैं भई है, अवशेषनि का इहां उदय पाईए है ।

बहुरि प्रश्न – अंतरकरण कौं कहीं करिकैं कौंन कौंन कर्मनि का कहां संक्रमण करावनेवाला हो है ?

ताका उत्तर – अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवां भाग रहैं, अंतरकरण अर संक्रमण क्रिया कौं करै है । इस अवसर विषैं नाहीं करै है ।

बहुरि प्रश्न – किस स्थिति विषैं वर्तमान कर्म है, सो कांडक घात करि कैसे स्थिति स्थान कौं प्राप्त हो है ?

भावार्थ यहु – स्थिति कांडक घात का प्रश्न किया, बहुरि किसा अनुभाग विषैं वर्तमान कर्म है, सो कांडक घात करि अवशेष कैसा स्थान कौं प्राप्त हो है ।

भावार्थ यहु – अनुभाग कांडक घात का प्रश्न किया ।

इनि दऊनि का उत्तर यहु – जो स्थितिकांडक घात अनुभाग कांडक घात, इस अधःकरण विषैं नाहीं है अपूर्वकरण विषैं हो है । असा यहु चारित्र मोह की क्षपणा कौं सन्मुख भया जीव प्रथम अधःप्रवृत्तकरण करै है ।

गुणसेढी गुणसंकमठिदिरसखंडाण णत्थि पढमम्हि ।
पडिसमयमणंतगुणं, विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु ।।३९३।।

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं, स्थितिरसखंडनं नास्ति प्रथमे ।
प्रतिसमयमनंतगुणं, विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धते हि ।।३९३।।

टीका – पहलैं अधःप्रवृत्तकरण विषै गुणश्रेणी, गुणसंक्रम स्थिति कांडक घात, अनुभाग कांडक घात ए नाहीं संभवै हैं । सो जीव समय समय प्रति अनंत गुणा क्रम लीएं विशुद्धता की वृद्धि करि वर्धमान हो है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सत्थाणमसत्थाणं, चउविट्ठाणं रसं च बंधदि हु।
पडिसमयमणंतेण य, गुणभजियकमं तु रसबंधे ॥३९४॥

शस्तानामशस्तानां, चतुरपि स्थानं रसं च बध्नाति हि ।
प्रतिसमयमनंतेन च, गुणभजितक्रमं तु रसबंधे ॥३९४॥

टीका – बहुरि सो समय समय प्रति प्रशस्त प्रकृतिनि का अनंत गुणा क्रम लीएं चतु:स्थानक अनुभाग बंध करै है। अर अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनंतवां भाग का क्रम लीएं द्विस्थानिक अनुभाग बंध करै है।

पल्लस्स संखभागं, मुहुत्तअंतेण ओसरदि बंधे।
संखेज्जसहस्साणि य, अधापवत्तम्हि ओसरणा ॥३९५॥

पल्यस्य संखभागं, मुहूर्तान्तरपसरति बंधे ।
संख्येयसहस्राणि च, अधः प्रवृते अपसरणानि ॥३९५॥

टीका – पूर्व स्थितिबंध तैं पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध घटाइ एक अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत समय समय समान बंध होइ, सो यहु एक स्थिति बंधापसरण भया असैं संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण अध:प्रवृत्तकरण विषैं हो हैं।

आदिमकरणद्धाए, पढमट्ठिबंधदो दु चरिमम्हि।
संखेज्जगुणविहीणो, ठिदिबंधो होदि णियमेण ॥३९६॥

आद्यकरणाद्धायां, प्रथमस्थितिबंधतस्तु चरमे ।
संख्येयगुणविहीन, स्थितिबंधो भवति नियमेन ॥३९६॥

टीका – असैं स्थितिबंधापसरण होने तैं प्रथम अध: प्रवृत्तकरण काल विषैं प्रथम समय जो स्थितिबंध हो है, तातैं संख्यात गुणा घटता अंत समय विषैं स्थितिबंध नियम करि हो है। असैं इस अध:करण विषैं आवश्यक हो है। जहां अन्य जीव के नीचले समयवर्ती भावनि के समान अन्य जीव कैं ऊपरि समयवर्ती भाव होंहि, सो अध:प्रवृत्त करण असा सार्थक नाम जानना।

आगैं अपूर्वकरण का वर्णन करिए है–

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणसेढी गुणसंकम, ठिदिखंडमसत्थगाण रसखंडं ।
बिदियकरणादिसमए, अण्णं ठिदिबंधमारभई ॥३९७॥

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं, स्थितिखंडमशस्तकानां रसखंडम् ॥
द्वितीयकरणादिसमये अन्यं स्थितिबन्धमारभते ॥३९७॥

टीका – दूसरा जो अपूर्वकरण, ताका प्रथम समय विषैं गुणश्रेणी, गुणसंक्रम अर स्थिति खंडन अर अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग खंडन हो है । बहुरि अधःकरण का अंत समय विषैं जो स्थितिबंध होता था, तातैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र घटता और ही स्थितिबंध कौं प्रारभैं है, जातैं इहां एक स्थितिबंधापसरण होने तैं इतना स्थितिबंध घटाइए है ।

गुणसेढीदीहत्तं, अपुव्वचउक्कादु साहियं होदि ।
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेओ ॥३९८॥

गुणश्रेणीदीर्घत्वं, अपूर्वचतुष्कात् साधिकं भवति ।
गलितावशेषे उदयावलिबाह्यतस्तु निक्षेपः ॥३९८॥

टीका – इहां गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसांपराय, क्षीणकषाय इन च्यारि गुणस्थाननि का मिलाया हुआ काल तैं साधिक है । सो अधिक का प्रमाण क्षीणकषाय काल तैं संख्यातवें भागमात्र है, सो उदयावली तैं बाह्य गलितावशेष रूप जो यहु गुणश्रेणी आयाम, ताविषैं अपकर्षण किया द्रव्य का निक्षेपण हो है ।

पडिसमयं उक्कट्टदि, असंखगुणिदक्कमेण संचदि य ।
इदि गुणसेढीकरणं, पडिसमयमपुव्वपढमादो ॥३९९॥

प्रतिसमयं अतिकर्षति, असंख्यगुणितक्रमेण सिंचति च ।
इति गुणश्रेणीकरणं, प्रतिसमयमपूर्वप्रथमात् ॥३९९॥

टीका – प्रथम समय विषैं अपकर्षण किया द्रव्य तैं द्वितीयादि समयनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं समय समय प्रति द्रव्य कौं अपकर्षण करै है । अर सिंचति कहिए उदयावली विषैं गुणश्रेणी आयाम विषैं उपरितन स्थिति विषैं निक्षेपण

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करै है। ग्रैसें ग्रपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति गुणश्रेणी का करना हो है। ग्रैसें गुणश्रेणी का स्वरूप कह्या।

पडिसमयमसंखगुणं, दव्वं संकमदि अप्पसत्थाणं।
बंधुज्झियपयडीणं, बंधंतसजादिपयडीसु ॥४००॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणं, द्रव्यं संक्रामति अप्रशस्तानाम्,
बन्धोज्झितप्रकृतीनां, बध्यमानस्वजातिप्रकृतिषु ॥४००॥

टीका – ग्रपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय जिनिका इहां बंध न पाइए ग्रैसी जे ग्रप्रशस्त प्रकृति, तिनिका गुण संक्रमण हो है, सो समय समय प्रति ग्रसंख्यात गुणा क्रम लीएं लिनि प्रकृतिनि का द्रव्य है सो इहां, जिनिका बंध पाइए ग्रैसी जे स्वजाति प्रकृति तिन विषैं संक्रम करै है, तद्रूप परिणमै है। जैसै ग्रसाता वेदनीय का द्रव्य, साता वेदनीयरूप परिणमै है। ग्रैसें ही ग्रन्य प्रकृतिनि का जानना।

उव्वट्टणा जहण्णा, आउलियाऊणिया तिभागेण।
एसा ठिदिसु जहण्णा, तहाणुभागेसुणंतेसु [1] ॥४०१॥

ग्रतिस्थापना जघन्या, ग्रावलिकोनिका त्रिभागेन।
एषा स्थितिषु जघन्या, तथानुभागेष्वनंतेषु ॥४०१॥

टीका – संक्रमण विषैं जघन्य ग्रतिस्थापन ग्रपना त्रिभाग करि ऊन ग्रावली मात्र है, सो यहु ही जघन्य स्थिति है। तैसै ही ग्रनंत ग्रनुभागनि विषैं भी जानना।

संकामेदुक्कट्टदि, जे अंसे ते अवट्ठिदा होंति।
आवलियं से काले, तेण परं होंति भजियव्वा [2] ॥४०२॥

संक्रामे तु उत्कृष्यंते, ये ग्रंशास्ते ग्रवस्थिता भवंति।
आवलिकां स्वे काले, तेन परं भवंति भजितव्याः ॥४०२॥

टीका – संक्रमण विषैं जे प्रकृतिनि के परमाणू उत्कर्षणरूप करिए है, ते ग्रपने कालविषैं ग्रावली पर्यंत तौ ग्रवस्थित ही रहें। तातैं परैं भजनीय हो हैं, ग्रवस्थित भी रहें ग्रर स्थित्यादिक की वृद्धि हानि ग्रादि रूप भी होंइ।

---

(१) कषाय पाहुड गाथा–१५२–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २७७।
(२) कषाय पाहुड गाथा–१५३– जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २८३।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उक्कट्टदि जे अंसे, से काले ते च होंति भजियव्वा ।
वड्ढीए अवठाणे, हाणीए संकमे उदए[1] ॥४०३॥

उत्कृष्यंते ये अंशाः, स्वे काले ते च भवंति भजितव्याः ।
वृद्धौ अवस्थाने, हानौ संक्रमे उदये ॥४०३॥

टीका – जे प्रकृतिनि के परमाणू अपकर्षण करिए है, ते अपने काल विषैं भजनीय हो हैं; स्थित्यादिक की वृद्धि वा अवस्थान वा हानि अर संक्रमण अर उदय इनरूप होंइ भी अर न भी होंइ, किछू नियम नाहीं ।

एक्कं च ठिदिविसेसं तु, असंखेज्जेसु ठिदिविसेसेसु ।
वट्टेदि रहस्सेदि व, तहाणुभागेसुणंतेसु[2] ॥४०४॥

एकं च स्थितिविशेषं तु, असंख्येयेषु स्थितिविशेषेषु ।
वर्त्यते रहस्यते वा तथानुभागेष्वनंतेषु ॥४०४॥

टीका – एक स्थिति विशेष जो एक निषेक का द्रव्य, सो असंख्यात निषेकनि विषैं वर्तै है, निक्षेपण करिए है । तैसें ही अनंत अनुभागनि विषैं भी एक स्पर्धक का द्रव्य अनंत स्पर्धकनि विषैं निक्षेपण करिए है, असा जानना ।

इन च्यारि गाथानि का अर्थ नीकैं मेरे जानने में न आया, अर क्षपणासार विषैं भी इनका प्रयोजन किछू लिख्या नाहीं, तातैं बुद्धिमान होइ सो इनका यथासंभव विशेष अर्थ जानियो ।

असें गुणसंक्रम का स्वरूप कह्या ।

पल्लस्स संखभागं, वरं पि अवरादु संखगुणिदं तु ।
पढमे अपुव्विखवगे, ठिदिखंडपमाणयं होदि[3] ॥४०५॥

पल्यस्य संख्यभागं, वरमपि अवरात् संख्यगुणितं तु ।
प्रथमे अपूर्वक्षपके, स्थितिखंडप्रमाणकं भवति ॥४०५॥

---

१. कषायपाहुड गाथा–१५४– जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २८५ ।
२. कषायपाहुड गाथा–१५६–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २८६ ।
३. षट्खंडागमः धवला पुस्तक–६ पृष्ठ ३४४ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – क्षपक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं स्थितिखंड कहिए स्थिति-कांडकायाम, ताका जघन्य वा उत्कृष्ट प्रमाण पल्य के संख्यातवें भाग मात्र है; तथापि जघन्य तैं उत्कृष्ट संख्यात गुणा है। तहां जो जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टि होइ उपशम श्रेणी चढि पीछैं क्षपक श्रेणी चढै, ताकैं तहां उपशम श्रेणी विषैं बहुत स्थिति कांडक घात होने करि स्थिति सत्व स्तोक रहै है। तातैं ताकैं इहां स्थिति कांडकायाम जघन्य हो है। बहुरि जो जीव उपशम श्रेणी चढि क्षपकश्रेणी चढै, ताकैं तिसतैं स्थिति सत्व संख्यात गुणा है। ताकैं स्थिति कांडकायाम भी संख्यात गुणा हो है, जातैं स्थिति के अनुसारि कांडक घात हो है असैं दूसरा जघन्य कांडक तैं दूसरा उत्कृष्ट कांडक, तीसरा तैं तीसरा इत्यादि सर्वत्र जघन्य कांडक तैं उत्कृष्ट कांडक संख्यात गुणा जानना।

आउगवज्जाणं ठिदिघादो पढमादु चरिमठिदिसंतो।
ठिदिबंधो य अपुव्वे, होदि हु संखेज्जगुणहीणो ॥४०६॥

आयुष्कवर्ज्यानां स्थितिघातः प्रथमात् चरमस्थितिसत्त्वम्।
स्थितिबन्धश्च अपूर्वे, भवति हि संख्येयगुणहीनः ॥४०६॥

टीका – आयु बिना सात कर्मनि का स्थिति कांडकायाम अर स्थिति सत्व अर स्थितिबंध ए तीनों अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं जो पाइए है, तिनितैं ताके अंत समय विषैं संख्यात गुणे घाटि हो हैं।

अंतोकोडाकोडी, अपुव्वपढमम्हि होदि ठिदिबंधो।
बंधादो पुण सत्तं, संखेज्जगुणं हवे तत्थ[1] ॥४०७॥

अंतः कोटीकोटिः, अपूर्वप्रथमे भवति स्थितिबन्धः।
बन्धात् पुनः सत्त्वं, संख्येयगुणं भवेत् तत्र ॥४०७॥

टीका – अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं स्थितिबंध अंतः कोडाकोडी प्रमाण है सो पृथक्त्व लक्ष कोडि सागर प्रमाण है। बहुरि यहां स्थिति सत्त्व आलाप करि तितना ही है, तथापि स्थितिबंध तैं संख्यात गुणा है।

असैं स्थिति कांडक का स्वरूप कह्या।

---

१. षट्खंडागम धवला पुस्तक–६ पृष्ठ ३४५।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक्केक्कट्ठिदिखंडयणिवडणठिदिओसरणकाले ।
संखेज्जसहस्साणि य, णिवडंति रसस्स खंडाणि ॥४०८॥

एकैकस्थितिखंडकनिपतनस्थित्युत्करणकाले ।
संख्येयसहस्राणि च निपतंति रसस्य खंडानि ॥४०८॥

टीका – एक एक स्थितिखंडनिपतन कहिए स्थिति कांडकघात, जाविषैं होइ असा स्थितिकांडकोत्करण काल, तीहिं विषैं संख्यात हजार अनुभाग कांडकनि का निपतन कहिए घात हो है ।

भावार्थ यहु – अपूर्वकरण का प्रथम समय विषैं स्थिति कांडक का अर अनुभाग कांडक का युगपत् प्रारंभ भया । तहां यथायोग्य काल गएं प्रथम अनुभाग कांडक पूरा भया अर स्थिति कांडक सोई है । बहुरि अनुभाग कांडक दूसरा भया, बहुरि तीसरा भया असैं संख्यात हजार अनुभाग कांडक भएं प्रथम स्थिति कांडक का काल पूर्ण हो है । असैं द्वितीयादि स्थिति कांडक कालनि विषैं क्रम जानना ।

असुहाणं पयडीणं, अणंतभागा रसस्स खंडाणि ।
सुहपयडीणं णियमा, णत्थि त्ति रसस्स खंडाणि[1] ॥४०९॥

अशुभानां प्रकृतीनां, अनंतभागा रसस्य खंडानि ।
शुभप्रकृतीनां नियमात्, नास्तीति रसस्य खंडानि ॥४०९॥

टीका – अशुभ प्रकृतिनि का अनंत बहुभागमात्र अनुभाग कांडक का प्रमाण है । पूर्वै जो अनुभाग था, ताकौं अनंत का भाग दीएं, तहां बहुभाग मात्र प्रथम अनुभाग कांडक विषैं घटाइए है, अवशेष एक भागमात्र अनुभाग रहै है । बहुरि ताकौं अनंत का भाग दीएं तहां बहुभाग दूसरा अनुभाग कांडक विषैं घटाइए है, अवशेष एक भाग अनुभाग रहै है । असैं अंत अनुभाग कांडक पर्यंत क्रम जानना । या प्रकार अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग खंड इहां हो है । बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग खंड नियम तैं न हो है; जातैं **विशुद्ध परिणामनि करि शुभ प्रकृतिनि के अनुभाग का घटावना संभवता नाहीं ।**

असैं अनुभाग खंड का स्वरूप कह्या ।

---

१. षट्खंडागम धवला पुस्तक–६ पृष्ठ ३४५ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पढमे छट्ठे चरिमे, भागे दुग तीस चदुर वोच्छिण्णा।
बंधेण अपुव्वस्स य, से काले बादरो होदि ॥४१०॥

प्रथमे षट्के चरमे, भागे द्विकं त्रिंशत् चतस्रो व्युच्छिन्नाः ।
बन्धेन अपूर्वस्य च, स्वे काले बादरो भवति ॥४१०॥

टीका – पूर्वोक्त प्रकार स्थिति बंधापसरणनि करि घटिघटि संख्यात हजार स्थिति बंध भए, कहा ? सो कहिए है—

अपूर्वकरण का काल के समान सात भाग करिए, तहां प्रथम भाग का अंत समय विषैं निद्रा प्रचला इनि दोऊनि के बंध की व्युच्छित्ति भई। इहां ही निद्रा प्रचला का द्रव्य है, सो गुण संक्रमण विधान करि इहां बध्यमान स्वजातीय चक्षु-अचक्षु-अवधि-केवलदर्शनावरणीय तिन विषैं संक्रमण करै है। बहुरि यातैं परैं संख्यात हजार स्थिति बंध भएं, ताका छठा भाग का अंत समय विषैं देवगति, पंचेंद्री जाति, वैक्रियिक, तैजस, आहारक, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वैक्रियिक-आहारक अंगोपांग २, वर्णादि च्यारि, देवानुपूर्वी, अगुरु-लघु, उपघात, परघात, उश्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर इन तीस प्रकृति के बंध की व्युच्छित्ति हो है। बहुरि यातैं संख्यात हजार स्थिति बंध भएं, अपूर्वकरण का अंत समय विषैं हास्य, रति, भय, जगुप्सा इन च्यारिनि के बंध की व्युच्छित्ति हो है। अर इहां ही छह नोकषायनि के उदय की व्युच्छित्ति हो है। जहां उपरि समय संबंधी भाव सर्वदा नीचले समय संबंधी भावनि के समान न होंइ, सो कर्म नाश करनेवाला सार्थक नाम का धारक अपूर्वकरण जानना। याकौं समाप्त होतैं ताके अनंतर समय निज काल विषैं बादर कहिए अनिवृत्तिकरण हो है। ताका व्याख्यान करिए है--

अणियट्टस्स य पढमे, अण्णं ठिदिखंडपहुदिमारभई ।
उवसामणा णिधत्ती, णिकाचणा तत्थ वोच्छिण्णा ॥४११॥

अनिवृत्तेश्च प्रथमे, अन्यं स्थितिखंडप्रभृतिमारभते ।
उपशामना निधत्तिः, निकाचना तत्र व्युच्छिन्नाः ॥४११॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं और ही स्थिति खंडादिक प्रारंभिए है। तहां अपूर्वकरण का अंत समयवर्ती तैं अन्य ही पल्य का संख्यातवां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भाग मात्र तो स्थिति कांडकायाम हो है। अर यातैं पीछैं अवशेष रह्या जो अनुभाग ताका अनंत बहुभाग मात्र और ही अनुभाग कांडक हो है। अर अपूर्वकरण का अंत समय संबंधी स्थिति बंध तैं पल्य का संख्यातवां भागमात्र घटता और ही स्थिति बंध इहां हो है। बहुरि इहां ही अप्रशस्तोपशम, निधत्ति, निकाचना, इन तीन करणनि की व्युच्छित्ति भई। अब सर्व ही कर्म उदय, संक्रमण, उत्कर्षण, अपकर्षण करने कौं योग्य भए।

बादरपढमे पढमं, ठिदिखंडं विसरिसं तु बिदियादि।
ठिदिखंडयं समाणं, सव्वस्स समाणकालम्हि ॥४१२॥

बादरप्रथमे प्रथमं, स्थितिखंडं विसदृशं तु द्वितीयादि।
स्थितिखंडकं समानं, सर्वस्य समानकाले ॥४१२॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं पहला स्थिति खंड है, सो तो विसदृश है। नाना जीवनि कैं समान नाहीं। बहुरि द्वितीयादि स्थिति खंड हैं, ते समान काल विषैं सर्व जीवनि के समान हैं। अनिवृत्तिकरण मांडैं जिनकौं समान काल भया, तिन कैं परस्पर द्वितीयादि स्थिति कांडक आयाम का समान प्रमाण जानना।

पल्लस्स संखभागं, अवरं तु वरं तु संखभागहियं।
घादादिमठिदिखंडो, सेसा सव्वस्स सरिसा हु ॥४१३॥

पल्यस्य संख्यभागं, अवरं तु वरं तु संख्यभागाधिकम्।
घातादिमस्थितिखंडः शेषाः सर्वस्य सदृशा हि ॥४१३॥

टीका – सो प्रथम स्थितिखंड जघन्य तो पल्य का संख्यातवां भाग मात्र है। उत्कृष्ट ताका संख्यातवां भाग करि अधिक है। बहुरि अवशेष द्वितीयादि स्थिति खंड सर्व जीवनि कैं समान हो हैं। इहां कारण कहिए है–

कोई जीव कैं स्थिति सत्व स्तोक है। कोई कैं तातैं संख्यातवां भाग करि अधिक है तातैं स्थिति सत्व के अनुसारि स्थिति कांडक भी कोई कैं जघन्य, कोई कैं उत्कृष्ट हो है, सो अपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय अनिवृत्तिकरण विषैं यावत् प्रथम खंड का घात न होइ तावत् ऐसैं ही संभवै है। बहुरि तिस प्रथम कांडक का घात भएं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पीछैं समान समयनि विषैं प्राप्त सर्व जीवनि कैं स्थिति सत्त्व की समानता हो है, तातैं द्वितीयादि स्थिति कांडक आयामनि की भी समानता जाननी।

उदधिसहस्सपुधत्तं, लक्खपुधत्तं तु बंध संतो य।
अणियट्टीसादीए, गुणसेढी पुव्वपरिसेसा ॥ ४१४ ॥

उदधिसहस्रपृथक्त्वं, लक्षपृथक्त्वं तु बन्धः सत्त्वं च।
अनिवृत्तेरादौ, गुणश्रेणी पूर्वपरिशेषा ॥ ४१४ ॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषैं पूर्वैं स्थितिबंध अंतः कोडा कोडि सागर प्रमाण था सो अपूर्वकरण विषैं भए संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण, तिनकरि घटता होइ पृथक्त्व हजार सागर प्रमाण स्थितिबंध भया। बहुरि पूर्वैं स्थितिसत्व अंतः कोडाकोडि सागर प्रमाण था, सो अपूर्वकरण विषैं भए संख्यात हजार स्थिति कांडक घात, तिनकरि घटता होइ पृथक्त्व लक्षसागर प्रमाण स्थिति सत्व भया। बहुरि गुणश्रेणी आयाम इहां अपूर्वकरण काल व्यतीत भए पीछैं जो अवशेष रह्या, सो इहां जानना। समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं पूर्ववत् गुणश्रेणी अर गुणसंक्रम वर्तै है।

आगे स्थिति बंधापसरण का क्रम कहिए है –

ठिदिबंधसहस्सगदे, संखेज्जा बादरो गदा भागा।
तत्थासण्णिस्स ट्ठिदिसरिसं ठिदिबंधणं होदि ॥४१५॥

स्थितिबन्धसहस्रगते, संख्येया बादरो गता भागाः।
तत्र संज्ञिनः स्थितिसदृशं स्थितिबन्धनं भवति ॥४१५॥

टीका – ऐसें प्रथम समय विषैं कह्या अनुक्रम लीएं एक स्थिति बंधापसरण करि स्थितिबंध घटने तैं एक स्थिति बंध होइ, ऐसें संख्यात हजार स्थितिबंध भएं अनिवृत्तिकरण के काल का संख्यात भागनि विषैं बहुभाग व्यतीत भएं, एक भाग अवशेष रह्या, तहां असंज्ञी पंचेंद्री समान स्थिति बंध हो है, सो हजार सागर के चारि सातवां भाग मात्र मोह का, तीन सातवां भाग मात्र तीसीयनि का, दोय सातवां भाग मात्र बीसीयनि का स्थितिबंध हो है। चालीस, तीस, बीस, कोडाकोडी सागर स्थिति की अपेक्षा चारित्र मोह का नाम चालीसीय अर ज्ञानावरणादि च्यारि का नाम तीसीय, नाम -गोत्र का नाम बीसीय जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ठिदिबंधसहस्सगदे, पत्तेयं चदुरतियविएइंदी ।
ठिदिबंधसमं होदि हु, ठिदिबंधमणुक्कमेणेव ॥४१६॥

स्थितिबन्ध सहस्रगते, प्रत्येकं चतुस्त्रिद्विएकेंद्री ।
स्थितिबन्धसमं भवति हि स्थितिबंधमनुक्रमेणैव ॥४१६॥

टीका – पूर्वोक्त क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध प्रत्येक भएं अनुक्रम तैं चौंद्री, तेंद्री, बेंद्री, एकेंद्री समान स्थितिबंध हो है । तहां चौंद्री समान तौ सौ सागर का अर तेंद्री समान पचास सागर का, बेंद्री समान पचीस सागर का, एकेंद्री समान एक सागर का च्यारि सातवां भाग मात्र तौ मोह का, तीन सातवां भाग मात्र तीसीयनि का, दोय सातवां भाग मात्र वीसीयनि का स्थितिबंध हो है । तहां एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असंज्ञी कैं सत्तर कोडाकोडी उत्कृष्ट स्थिति का धारक जो मिथ्यात्व ताका क्रम तैं एक, पचीस, पचास, सौ, हजार सागर का स्थितिबंध होइ तौ चालीस, तीस, बीस, कोडाकोडी, उत्कृष्ट स्थिति का धारक जो मोह अर ज्ञानावरणादि अर नाम, गोत्र तिनका केता बंध होइ? असैं त्रैराशिक कीएं पूर्वोक्त स्थिति बंध का प्रमाण आवै है । असैं ही त्रैराशिक का क्रम आगैं भी जानना ।

एइंदियट्ठिदीदो, संखसहस्से गदे हु ठिदिबंधे ।
पल्लेकदिवड्ढदुगं, ठिदिबंधो वीसियतियाणं ॥४१७॥

एकेंद्रियस्थितितः, संख्यसहस्रे गते हि स्थितिबंधे ।
पल्यैकद्व्यर्धद्विकं, स्थितिबंधः वीसियत्रिकाणाम् ॥४१७॥

टीका – एकेंद्रिय समान स्थितिबंध तैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध गएं, वीसीयनि का एक पल्य, तीसीयनि का ड्योढ पल्य, मोह का दोय पल्य मात्र स्थिति बंध हो है ।

तक्काले ठिदिसंत्तं, लक्खपुधत्तं तु होदि उवहीणं ।
बंधोसरणा बंधो, ठिदिखंडं संतमोसरदि ॥४१८॥

तत्काले स्थितिसत्त्वं, लक्षपृथक्त्वं तु भवति उदधीनाम् ।
बंधापसरणं बंधः स्थितिखंडं सत्त्वमपसरति ॥४१८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तिस काल विषैं कर्मनि का स्थिति सत्व पृथक्त्व लक्षसागर प्रमाण हो है, सो अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय सम्बन्धी स्थितिबंध तैं संख्यात गुणा घाटि जानना ।

बहुरि सर्वत्र असा जानना – स्थिति बंधापसरणनि करि स्थितिबंध घटै है अर स्थितिकांडकनि करि स्थिति सत्व घटै है ।

पल्लस्स संखभागं, संखगुणूणं असंखगुणहीणं ।
बंधोसरणे पल्लं, पल्लासंखं असंखवस्सं ति ॥४१९॥

पल्यस्य संख्यभागं, संख्यगुणोनमसंख्यगुणहीनम् ।
बंधापसरणे पल्यं पल्यासंख्यं असंख्यवर्षमिति ॥४१९॥

टीका – पल्य का संख्यातवां भाग अर पूर्व बंध तैं संख्यात गुणा घटता अर असंख्यात गुणा घटता प्रमाण लीएं स्थितिबंधापसरणनि करि पल्यमात्र अर पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र अर असंख्यात वर्ष मात्र स्थिति बंध हो है ।

भावार्थ – पल्य मात्र स्थितिबंध होने पर्यंत तौ पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंधापसरण जानना । तहां पूर्व स्थिति बंध तैं अनंतरि स्थितिबंध किछू विशेष घटता हो है । बहुरि तातैं परैं पल्य का असंख्यातवां[1] भाग मात्र जो दूरापकृष्टि नामा स्थितिबंध, ताके होने पर्यंत पल्य कौं संख्यात का भाग दीएं, तहां एक भाग बिना बहुभाग मात्र स्थितिबंधापसरण जानना । तहां पूर्व स्थितिबंध तैं अनंतर स्थितिबंध संख्यात गुणा घटता हो है । बहुरि तातैं परैं असंख्यात[2] हजार वर्ष मात्र स्थितिबंध होने पर्यंत पल्य कौं असंख्यात का भाग दीएं तहां एक भाग बिना बहुभाग मात्र स्थिति-बंधापसरण जानना । तहां पूर्व स्थितिबंध तैं अनंतर स्थितिबंध असंख्यात गुणा हो है । असैं एक एक स्थितिबन्धापसरण विषैं स्थितिबन्ध घटाएं अवशेष स्थितिबन्ध रहै हैं । तहां पूर्व स्थितिबन्ध तैं अनंतर स्थितिबंध किछु विशेष घटता हो है । बहुरि याही प्रकार प्रमाण लीएं स्थिति कांडकनि करि स्थिति सत्व कौं घटाइ पल्यादि मात्र स्थितिसत्व का होना जानना ।

एवं पल्लं जादा, वीसीया तीसिया य मोहो य ।
पल्लासंखं च कमं, बंधेण य वीसियतियाओ ॥४२०॥

---

१ अ, ख, घ, हस्तलिखित प्रतिओं में 'संख्यात' शब्द मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एवं पल्यं जाते, बीसिया तिसीया च मोहश्च ।
पल्यासंख्यं च क्रमेण, बंधेन च बीसियत्रिकाः ॥४२०॥

टीका – अैसें वीसीयनि का पल्य मात्र स्थितिबंध भया, तहां पर्यंत तौ वीसीयनि के तैं ड्योढा तीसीयनि का अर दूणा मोह का स्थितिबंध है । अैसा ही क्रम जानना ।

बहुरि ताके अनंतरि एक स्थितिबंधापसरण होने करि वीसीयनि का तौ स्थितिबंध संख्यात गुणा घटता भया । पल्य कौं संख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग घटाएं एक भाग मात्र स्थितिबंध रह्या । बहुरि अन्य कर्मनि का पल्यमात्र स्थितिबंध न भया है, तातैं पूर्व बंध तैं पल्य का संख्यातवां भाग मात्र विशेषकरि हीन स्थितिबंध भया । तहां वीसीयनि का स्तोक स्थितिबंध है । तातैं तीसीयनि का संख्यात गुणा है । जातैं इहां वीसीयनि का तौ पल्य के संख्यातवें भाग भया अर तीसीयनि का साधिक पल्य मात्र है ।

बहुरि तीसीयनि के तैं मोह का विशेष अधिक है । अैसें अल्पबहुत्व हुआ । इस क्रम करि संख्यात हजार स्थितिबंध भएं तीसीयनि का पल्य मात्र स्थितिबंध भया । तहां तातैं तीसरा भाग अधिक मोह का स्थितिबंध हो है, जातैं तीसीयनि का पल्य मात्र स्थितिबंध होइ तौ चालीसीयनि का केता होइ अैसें त्रैराशिक करि त्रिभाग अधिक पल्य मात्र मोह का स्थितिबंध आवै है ।

बहुरि याके अनंतरि तीसीयनि का पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र एक स्थितिबंधापसरण करि पूर्व स्थितिबंध तैं संख्यात गुणा घटता स्थितिबंध हो है । तहां नाम गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का संख्यात गुणा, तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थितिबंध हो है । इहां वा आगैं अल्पबहुत्व यथासम्भव स्थितिबंधापसरण होने तैं संभवै है, सो विचारैं प्रगट भासै है ।

बहुरि इस अनुक्रम तैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं, मोह का पल्य मात्र स्थितिबंध हो है तहां अवशेष छह कर्मनि का स्थितिबंध पल्य के संख्यातवें भाग मात्र हो है । अैसें वीसीय, तीसीय मोह का पल्य मात्र स्थितिबंध होने का क्रम जानना । बहुरि ताके अनंतरि मोह का पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र एक स्थितिबंधापसरण भया तब सातौ ही कर्मनि का स्थितिबंध पल्य के संख्यातवें भाग मात्र भया । तहां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का संख्यात गुणा तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थितिबंध जानना ।

बहुरि ऐसें अनुक्रम करि संख्यात हजार स्थितिबंध भएं, नाम गोत्र का दूरापकृष्टि नामा पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है ।

बहुरि ताके अनंतरि पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र एक स्थितिबंधापसरण होने तैं नाम-गोत्र का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है । तहां अन्य कर्मनि का पल्य के संख्यातवें भाग मात्र ही स्थितिबंध है, जातैं इनकैं दूरापकृष्टि का उलंघन होने तैं स्थितिबंधापसरण पल्य के संख्यात बहुभाग मात्र ही है । तहां नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थितिबंध जानना । बहुरि इस क्रम तैं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं तीसीयनि का स्थितिबंध दूरापकृष्टि कौं उलंघि पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र भया । तहां नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातैं मोह का असंख्यात गुणा स्थितिबंध है । बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध भएं मोह का भी पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध भया । तहां सर्व ही कर्मनि का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबंध हो है । ऐसें वीसीय, तीसीय, चालीसीयनि का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबंध क्रमतैं हो है ।

उदधिसहस्सपुधत्तं, अब्भंतरदो दु सदसहस्सस्स ।
तक्काले ठिदिसंतो, आउगवज्जाण कम्माणं ॥४२१॥

उदधिसहस्रपृथक्त्वं, अभ्यंतरतस्तु शतसहस्रस्य ।
तत्काले स्थितिसत्त्वं आयुर्वजितानां कर्मणाम् ॥४२१॥

टीका – तिस मोहनीय का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध होने के काल विषै आयु बिना अन्य कर्मनि का स्थिति सत्व पृथक्त्व हजार सागर प्रमाण हो है, सो पृथक्त्व हजार शब्द करि इहां लक्ष के माही यथासम्भव प्रमाण जानना । पूर्वैं पृथक्त्व लक्ष सागर का स्थितिसत्व था, सो कांडक घातनि करि इहां इतना रह्या है ।

मोहगपल्लासंखट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु ।
मोहो तीसिय हेट्ठा, असंखगुणहीणयं होदि ॥४२२॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मोहगपल्यासंख्यस्थितिबंधसहस्रकेष्वतीतेषु ।
मोहः तीसियं अधस्तना, असंख्यगुणहीनकं भवति ॥४२२॥

टीका -- मोह का पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबंध भया, तिस काल विषै नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातैं मोह का असंख्यात गुणा स्थितिबंध हो है । बहुरि अैसा अल्पबहुत्व लीएं संख्यात हजार स्थिति बंध भएं, नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं मोह का असंख्यात गुणा, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा अैसें अन्य प्रकार स्थितिबंध हो है । इहां विशुद्धता के निमित्त तैं तीसीयनि के नीचैं अति अप्रशस्त जो मोह, ताका स्थितिबंध असंख्यात गुणा घटता भया ।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे बीसियाण हेट्ठादु ।
एक्कसराहे मोहे, असंखगुणहीणयं होदि ॥४२३॥

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वीसियानां अधस्तात् ।
एकसमये मोहोऽसंख्यगुणहीनको भवति ॥४२३॥

टीका -- बहुरि अैसा अल्पबहुत्व का क्रम लीएं, तितने ही संख्यात हजार स्थितिबंध भएं एक ही बार अन्य प्रकार स्थितिबंध भया । तहां मोह का स्तोक, तातैं नाम-गोत्र का असंख्यात गुणा, तातैं च्यारचों तीसीयनि का असंख्यात गुणा स्थितिबंध हो है । इहां विशुद्धता के बल तैं अति अप्रशस्त मोह का स्थितिबंध बीसीयनि के नीचैं असंख्यात गुणा घटता भया ।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे वेदणीयहेट्ठा दु ।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति ॥४२४॥

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वेदनीयाधस्तात् तु ।
तीसियघातित्रिका, असंख्यगुणहीनका भवंति ॥४२४॥

टीका -- बहुरि अैसा क्रम लीएं तितने ही संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं और ही प्रकार स्थितिबंध भया । तहां मोह का स्तोक, तातैं नाम गोत्र का असंख्यात गुणा तातैं, तीन घातियानि का असंख्यात गुणा तातैं वेदनीय का असंख्यात गुणा स्थितिबंध हो है । इहां विशुद्धता तैं तीसीयनि विषै भी वेदनीय तैं नीचैं अप्रशस्त तीन घातिया कर्मनि का असंख्यात गुणा घटता स्थितिबंध भया ।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे वीसियाण हेट्ठा दु ।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति ॥४२५॥

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वीसियानामधस्तात् तु ।
तीसियघातित्रिका, असंख्यगुणहीनका भवंति ॥४२५॥

टीका – बहुरि असा क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं, तहां अन्त स्थितिबंध तैं अन्य प्रकार स्थितिबंध भया । तहां मोह का स्तोक, तातैं तीन घातियानि का असंख्यात गुणा, तातैं नाम गोत्र का असंख्यात गुणा, तातैं वेदनीय का साधिक स्थितिबंध हो है । इहां विशुद्धता के बल तैं बीसीयनि के नीचैं अति अप्रशस्त तीन घातिया कर्मनि का असंख्यात गुणा घटता स्थितिबंध हो है ।

तक्काले वेयणियं, णामागोदाउ साहियं होदि ।
इदिमो हतीसवीसिय, वेयणियाणं कमो बंधे ॥४२६॥

तत्काले वेदनीयं, नामगोत्रात् साधिकं भवति ।
इति मोहतीसियवीसिय, वेदनीयानां क्रमो बंधे ॥४२६॥

टीका – तिस काल विषै वेदनीय का स्थिति बंध नाम-गोत्र के स्थितिबंध तैं साधिक है । ताका आधा प्रमाण करि अधिक हो है; जातैं वीसीयनि का स्थितिबंध तैं तीसीयनि का स्थितिबंध ड्योढ गुणा त्रैराशिक करि सिद्ध हो है । असैं मोह, तीसीय, वीसीय, वेदनीय का क्रम तैं बंध भया, सोई क्रमकरण जानना । नाम-गोत्र तैं वेदनीय का ड्योढा स्थितिबंध रूप क्रम लीएं अल्पबहुत्व होना, सोई क्रमकरण कहिए है ।

आगैं स्थिति सत्त्वापसरण कहिए है—

बंधे मोहादिकमे, संजादे तेत्तियेहिं बंधेहिं ।
ठिदिसंतमसण्णिसमं, मोहादिकमं तहा संते ॥४२७॥

बंधे मोहादिक्रमे, संजाते तावद्भिर्बंधैः ।
स्थितिसत्वमसंज्ञिसमं मोहादिक्रमं तथा सत्वे ॥४२७॥

टीका – बहुरि मोहादि का क्रम लीएं जो क्रमकरण रूप बंध भया, तातैं परैं इस ही क्रम लीएं तितने ही संख्यात हजार स्थितिबंध भए असंज्ञी पंचेंद्री समान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थिति सत्व हो है । बहुरि तातैं परैं जैसैं मोहादिक का क्रमकरण पर्यंत स्थितिबंध का व्याख्यान कीया, तैसैं ही स्थिति सत्व का होना अनुक्रम तैं जानना । तहां पल्य स्थिति पर्यंत पल्य का संख्यातवां भाग मात्र, तातैं दूरापकृष्टि पर्यंत पल्य का संख्यात बहुभाग मात्र, तातैं संख्यात हजार वर्ष स्थिति पर्यंत पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम लीएं जे स्थितिबंधापसरण, तिनकरि स्थितिबंध का घटना कह्या था, तैसैं इहां तितने आयाम लीएं स्थितिकांडकनि करि स्थिति सत्व का घटना हो है । बहुरि तहां संख्यात हजार स्थितिबंध का व्यतीत होना कह्या; तैसैं इहां भी कहिए वा तहां तितने स्थिति कांडकनि का व्यतीत होना कहिए, जातैं स्थितिबंधापसरण का अर स्थितिकांडकोत्करण का काल समान है । बहुरि तहां स्थितिबंध जहां कह्या था, इहां स्थिति सत्व तहां कहना । बहुरि अल्पबहुत्व त्रैराशिक आदि विशेष बंधापसरणवत् ही इहां जानने । सो स्थिति सत्व का क्रम कहिए है—

प्रत्येक संख्यात हजार कांडक गएं क्रम तैं असंज्ञी पंचेंद्री, चौंद्री, तेंद्री, बेंद्री, एकेंद्रीनि कैं स्थितिबंध के समान कर्मनि का स्थिति सत्व हजार, सौ, पचास, पचीस, एक सागर प्रमाण हो है ।

बहुरि संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं वीसीयनि का पल्य, तीसीयनि का ड्योढ पल्य, मोह का दोय पल्य स्थिति सत्व हो है । तातैं परैं पूर्व सत्व का संख्यात बहुभाग मात्र एक कांडक भएं वीसीयनि का पल्य के संख्यात भाग मात्र स्थिति सत्व भया, तिस काल विषैं वीसीयनि के तैं तीसीयनि का संख्यात गुणा मोह का विशेष अधिक स्थितिसत्व भया । बहुरि इस क्रम तैं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं तीसीयनि का पल्य मात्र मोह का त्रिभाग अधिक पल्य मात्र स्थिति सत्व भया । ताके परैं एक कांडक भएं तीसीयनि का भी पल्य के संख्यातवें भाग मात्र स्थिति सत्व भया तिस समय वीसीयनि का स्तोक, तातैं तीसीयनि का संख्यात गुणा, तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोह का पल्य मात्र स्थिति सत्व हो है । बहुरि एक कांडक भएं मोह का भी पल्य के संख्यातवें भाग मात्र स्थिति सत्व हो है । तीहिं समय सातौं कर्मनि का स्थिति सत्व पल्य के संख्यातवें भाग मात्र भया । तहां वीसीयनि का स्तोक, तीसीयनि का संख्यात गुणा, तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । तातैं परैं इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं वीसीयनि का स्थिति सत्व दूरापकृष्टि कौं उलंघि पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र भया, तिस समय वीसीयनि का स्तोक, तातैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है। तातैं परैं इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं तीसीयनि का स्थिति सत्व दूरापकृष्टि कौं उलंघि, पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र भया, तब सर्व ही कर्मनि का स्थिति सत्व पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र भया। तहां वीसीयनि का स्तोक, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातै मोह का असंख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रमकरि संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं मोह का असंख्यात गुणा, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोह का स्तोक, तातैं वीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोह का स्तोक, तातैं वीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातैं तोसीयनि का असंख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोह का स्तोक, तातैं वीसियनि का असंख्यात गुणा तातैं तीन घातियानि का असंख्यात गुणा, तातैं वेदनीय का असंख्यात गुणा, स्थिति सत्व हो है। बहुरि इस त्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मोह का स्तोक, तातैं तीन घातियानि का असंख्यात गुणा, तातैं नाम गोत्र का असंख्यात गुणा, तातैं वेदनीय का विशेष अधिक स्थिति सत्व हो है। असैं अंत विषैं नाम गोत्र का तैं वेदनीय का स्थिति सत्व साधिक भया तब मोहादि कैं क्रम लीएं स्थितिसत्व का क्रमकरण भया।

तीदे बंधसहस्से, पल्लासंखेज्जयं तु ठिदिबंधे।
तत्थ असंखेज्जाणं, उदीरणा समयबद्धाणं ॥४२८॥

अतीते बंधसहस्रे, पल्यासंख्येयकं तु स्थितिबंधे।
तत्र असंख्येयानां, उदीरणा समयबद्धानाम् ॥४२८॥

टीका – बहुरि इस क्रमकरण तैं परैं संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं जो पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध होइ, ताकौं होत संतैं तहां असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा हो है। इहांतैं पहलैं अपकर्षण कीया द्रव्य कौं उदयावली विषैं देने के अर्थि असंख्यात लोक प्रमाण भागहार संभवै था, तहां समयप्रबद्ध के असंख्यातवां भाग मात्र उदीरणा द्रव्य था, अब तहां पल्य का असंख्यातवां भाग प्रमाण भागहार होने तैं असंख्यात समयप्रबद्ध मात्र उदीरणा द्रव्य भया।

आगे क्षपणाधिकार का प्रारंभ हो है–

ठिदिबंधसहस्सगदे, अट्ठकसायाण होदि संकमगो।
ठिदिखंडपुधत्तेण य, तट्ठिदिसंतं तु आवलियविद्धं ॥४२९॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थितिबंधसहस्रगते, अष्टकषायाणां भवति संक्रमकः ।
स्थितिखंडपृथक्त्वेन च, तत्स्थितिसत्त्वं तु आवलिकविद्धं ।।४२९।।

टीका – असंख्यात समयप्रबद्ध मात्र उदीरणा होने तैं लगाय संख्यात हजार स्थितिकांडक व्यतीत भएं अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ रूप आठ कषायनि का संक्रमक होइ है । इहां संक्रमक का अर्थ यहु–क्षपणा का प्रारंभक हो है । ए अति अप्रशस्त थे, तातैं पहलैं इनकी क्षपणा संभवै है । सो इनका जो द्रव्य सो कितना एक क्षपणा का प्रारंभ का प्रथम समय विषैं, कितना एक दूसरा समय विषैं असैं समय समय प्रति एक एक फालि का संक्रमण होते अंतर्मुहूर्त के जेते समय तितनी फालि करि प्रथम कांडक का संक्रमण हो है । असैं ही द्वितीय कांडक का संक्रमण हो है । असैं क्रम करि संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि आठ कषायनि के द्रव्य का च्यारि संज्वलन कषाय अर पुरुष वेद विषैं संक्रमण हो है । असैं ए परमुख करि नष्ट हो हैं । अन्य प्रकृतिरूप होने करि जाका नाश होइ, सो परमुख करि नष्ट कहिए । असैं मोह राजा की सेना के नायक अष्ट कषाय, तिनका अंत कांडक का नाश होतैं अवशेष स्थिति सत्व काल अपेक्षा आवली मात्र रहै है । अर निषेक अपेक्षा समय घाटि आवली मात्र रहै है । जातैं अंत कांडक घात के समय विषैं प्रथम निषेक का स्वमुख उदय युक्त जो कोई संज्वलन, तींहिविषैं संक्रम होइ उदय हो है । बहुरि उदयावली विषैं प्राप्त निषेक का कांडकघात न होइ, तातैं समय घाटि आवली मात्र निषेक अंत फालि की साथि नाहीं विनसै हैं ।

ठिदिबंधपुधत्तगदे, सोलसपयडीण होदि संकमगो ।
ठिदिखंडपुधत्तेण य, तट्ठिदिसंतं तु आवलिपविट्ठं ।।४३०।।

स्थितिबंधपृथक्त्वगते, षोडशप्रकृतीनां भवति संक्रमकः ।
स्थितिखंडपृथक्त्वेन च, तत्स्थितिसत्त्वं तु आवलिप्रविष्टम् ।।४३०।।

टीका – यातैं ऊपरि पृथक्त्व कहिए संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला, स्त्यानगृद्धि ए तीन दर्शनावरण की अर नरक तिर्यंचगति वा आनुपूर्वी, एकेंद्रियादि च्यारि जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण ए तेरह नाम कर्म की असैं सोलह प्रकृतिनि का संक्रमक हो है । क्षपणा प्रारंभ का समय तैं लगाय समय समय प्रति इनके द्रव्य कौं पूर्वोक्त प्रकार एक एक फालि का संक्रमण होतैं प्रथम कांडक होइ, असैं संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि संक्रमण

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

हो है । तहां अंत कांडक घात होतैं अवशेष स्थिति सत्व काल अपेक्षा आवली मात्र, निषेक अपेक्षा समय घाटि आवलि मात्र रहै है । असैं इनका उदयावली तैं बाह्य सर्व निषेक द्रव्यनि का द्रव्य है, स्वजाति अन्य प्रकृतिनि विषैं संक्रमण होइ क्षय कौं प्राप्त हो है । अपनी जाति की अन्य प्रकृतिनि कौं स्वजाति कहिए है । जैसें स्त्यानगृद्धित्रिक की स्वजाति दर्शनावरण की अन्य प्रकृति हैं असैं अन्य जाननी । बहुरि यहांतैं लगाय पृथक्त्व शब्द का अर्थ संख्यात हजार जानना । या प्रकार इहां मोह की तौ आठ का नाश भएं, तेरह का सत्व रह्या अर दर्शनावरण की तीन का नाश भएं छह का सत्त्व रह्या अर नाम की तेरह का नाश भएं अस्सी प्रकृति का सत्व रह्या । ज्ञानावरण, वेदनीय, गोत्र, अंतरायनि विषैं किसी प्रकृति का नाश न भया ।

आगैं देशघाति करण कहिए है—

ठिदिबंधपुधत्तगदे, मणदाणा तत्तियेवि ओहि दुगं ।
लाभं च पुणोवि सुदं, अचक्खुभोगं पुणो चक्खु ॥४३१॥

पुणरवि मदिपरिभोगं, पुणरवि विरयं कमेण अणुभागो ।
बंधेण देशघादी, पल्लासंखं तु ठिदिबंधो ॥४३२॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते, मनोदाने तावत्यपि अवधिद्विकम् ।
लाभश्च पुनरपि श्रुतं, अचक्षुभोगं पुनः चक्षुः ॥४३१॥

पुनरपि मतिपरिभोगं, पुनरपि वीर्यं क्रमेण अनुभागः ।
बंधेन देशघातिः, पल्यासंख्यस्तु स्थितिबंधः ॥४३२॥

टीका – मनःपर्यय आदि बारह प्रकृतिनि का पूर्वै सर्वघाति द्विस्थानगत अनुभाग बंध होता था; इहांतैं परैं देशघाति दारु लतारूप द्विस्थानगत अनुभाग बंध होने लगा, सो देशघाति करण है । सोई कहिए है–

सोलह प्रकृति संक्रमण तैं परैं पृथक्त्व संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं मनःपर्यय-ज्ञानावरण अर दानांतराय का, बहुरि तितने स्थिति कांडक व्यतीत भएं अवधि-ज्ञानावरण, अवधि दर्शनावरण, लाभांतराय का, बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं श्रुतज्ञानावरण, अचक्षु दर्शनावरण, भोगांतराय का, बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं चक्षुदर्शनावरण का, बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं मतिज्ञानावरण, उपभोगांतराय

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

का, बहुरि तितने स्थिति कांडक भएं वीर्यांतराय का अनुभाग बंध देशघाति हो है। पुरुषवेद, संज्वलन कषाय का पूर्वै संयतासंयत आदि विषैं ही देशघाति अनुभागबंध भया, तातैं इहां न कह्या। इस अवसर विषैं स्थितिबंध यथासंभव पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र ही जानना।

आगे अंतरकरण कहिए है–

ठिदिखंडसहस्सगदे, चदुसंजलणाण णोकसायाणं।
एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरं कुणइ ॥४३३॥

स्थितिखंडसहस्रगते, चतुःसंज्वलनानां नोकषायाणां।
एकस्थितिखंडोत्कीरणकाले अंतरं करोति ॥४३३॥

टीका – देशघातिकरण तैं परैं संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं च्यारि संज्वलन अर नव नोकषाय, इनका अंतर करै है। औरनि का अंतर न हो है। नीचले ऊपरले निषेकनि कौं छोडि अंतर्मुहूर्त मात्र बीचि के निषेकनि का अभाव करना, सो अंतर करण जानना। तहां अंतरकरण काल का प्रथम समय विषैं पूर्व तैं अन्य प्रमाण लीएं स्थिति कांडक अनुभाग कांडक स्थिति बंध हो है। बहुरि एक स्थिति कांडकोत्करण काल का जितना काल तितने काल करि अंतर कौं पूर्ण करै है। इस काल के प्रथमादि समयनि विषैं तिन निषेकनि का द्रव्य कौं अन्य निषेकनि विषैं निक्षेपण करै है।

संजलणाणं एक्कं, वेदाणेक्कं उदेदि तद्दोण्हं।
सेसाणं पढमट्ठिदि, ठवेदि अंतोमुहुत्तआवलियं ॥४३४॥

संज्वलनानामेकं, वेदानामेकमुदेति तद्द्वयोः।
शेषाणां प्रथमस्थितिं, स्थापयति अंतर्मुहूर्तमावलिकां ॥४३४॥

टीका – संज्वलन चतुष्क विषैं कोई एक अर तीनों वेदनि विषैं कोई एक असैं उदय रूप दोय प्रकृतिनि की तौ अंतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है। इन बिना जिनका उदय न पाइए असी ग्यारह प्रकृतिनि की आवली मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है। जैसें पुरुषवेद अर क्रोध का उदय सहित श्रेणी मांडी, तातैं इनि दोउनि की तौ अंतर्मुहूर्त मात्र औरनि की आवली मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है, सो वर्तमान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

समय संबंधी निषेक तैं लगाय प्रथम स्थिति प्रमाण निषेकनि कौं नीचैं छोडि, इनके ऊपरि निषेकनि का अंतर करै है।

उक्कीरिदं तु दव्वं, संत्ते पढमट्ठिदिम्हि संथुहदि ।
बंधेवि य आबाधमदित्थिय उक्कट्टदे णियमा ॥४३५॥

अपकर्षितं तु द्रव्यं, सत्त्वे प्रथमस्थितौ संस्थापयति ।
बंधेऽपि च आबाधामतिक्रम्योत्कर्षति नियमात् ॥४३५॥

टीका – तिनि अंतर रूप निषेकनि के द्रव्य कौं अंतर करण काल का प्रथम समय विषैं ग्रह्या सो प्रथम फालि, यातैं असंख्यात गुणा दूसरे समय ग्रह्या, सो द्वितीय फालि असैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं अंतर्मुहूर्त मात्र फालिनि करि सर्व द्रव्य अन्य निषेकनि विषै निक्षेपण करै है। अंतररूप निषेकनि विषैं नाहीं निक्षेपण करै है। कहां निक्षेपण करिए सो कहिए है–

बंध-उदय रहित वा केवल बंध सहित, उदय रहित, जे प्रकृति, तिनिकी प्रथम स्थिति समय घाटि आवली मात्र कही, तिनके द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयरूप अन्य प्रकृतिनि की प्रथम स्थिति विषैं संक्रमणरूप करि निक्षेपण करै है। अर बंध-उदय रहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौं अपनी द्वितीय स्थिति विषै नाहीं निक्षेपण करै है, जातैं बंध बिना उत्कर्षण होना संभवै नाहीं। बहुरि केवल बंध सहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौं उत्कर्षण करि अपनी द्वितीय स्थिति विषैं निक्षेपण करै है वा बधती जो अन्य प्रकृति, ताकी द्वितीय स्थिति विषैं संक्रमण रूप करि निक्षेपण करै है। बहुरि जे प्रकृति केवल उदय सहित हैं वा बंध-उदय सहित हैं, तिनकी प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त मात्र कही, तिन विषैं जे केवल उदय सहित ही हैं, तिनका द्रव्य कौं अपकर्षण करि अपनी प्रथम स्थिति विषैं निक्षेपण करै है। अन्य प्रकृतिनि का भी द्रव्य इनकी प्रथम स्थिति विषैं संक्रमण रूप निक्षेपण करिए है। बहुरि इनका द्रव्य है, सो उत्कर्षण करि बंधती जे अन्य प्रकृति, तिनकी अंतरायाम तैं संख्यात गुणा जो आबाधा, ताकौं छोडि द्वितीय स्थिति विषैं जो जघन्य निषेक, तींहिस्यों लगाय बंधती स्थिति के सर्व निषेकनि विषैं निक्षेपण करिए है। केवल उदयमान प्रकृतिनि का द्रव्य अपना द्वितीय स्थिति विषैं नाहीं निक्षेपण करिए है। बहुरि बंध-उदय सहित प्रकृतिनि के द्रव्य कौं प्रथम स्थिति विषैं वा बंधती द्वितीय स्थितिनि विषैं निक्षेपण करिए है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां अंतरायाम के नीचैं निषेक रूप तौ प्रथम स्थिति अर अंतरायाम के उपरिवर्ती निषेक रूप द्वितीय स्थिति जाननी। तहां छह तौ नोकषाय अर पुरुषवेद सहित श्रेणी चढचा कैं तौ अन्य दोय वेद अर स्त्रीवेद सहित श्रेणी चढचा कैं नपुंसक वेद अर नपुंसकवेद सहित श्रेणी चढचा कैं स्त्रीवेद ए तौ बंध-उदय रहित हैं। बहुरि स्त्री वा नपुंसकवेद सहित श्रेणी चढचा-कैं पुरुषवेद है, सो अर सबनि कैं जिस कषाय सहित श्रेणी चढ्या तीहिं बिना तीन संज्वलन कषाय ए उदय रहित केवल बंध सहित हैं। बहुरि स्त्री वा नपुंसक वेद सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं स्त्री वा नपुंसक वेद केवल उदय सहित हैं। बहुरि पुरुष वेद सहित श्रेणी चढचा कैं पुरुष वेद अर सबनि कैं जिस कषाय सहित श्रेणी चढ्या, सो कषाय ए बंध-उदय सहित हैं। सो इनका अंतररूप निषेकनि का द्रव्य कौं पूर्वोक्त प्रकार सत्त्व विषैं अपकर्षण करि तौ प्रथम स्थिति विषैं अर उत्कर्षण कीएं आबाधा छोडि बंधरूप स्थिति विषैं निक्षेपण करिए है। इस अंतरकरण काल विषैं अनुभाग कांडक हजारौं हो हैं। अर स्थिति कांडक अर समान स्थिति बंध अर अंतरकरण, इन तीनौं का काल समान है, तातैं युगपत् समान हो हैं।

आगैं संक्रमण कहिए है—

सत्त करणाणि यंतरकदपढमे ताणि मोहणीयस्स।
इगिठाणियबंधुदओ, तस्सेव य संखवस्सठिदिबंधो ॥४३६॥

तस्साणुपुव्विसंकम, लोहस्स असंकमं च संढस्स।
आवेत्तकरणसंकम, छावलितीदेसुदीरणदा ॥४३७॥

सप्तकरणानि अंतरकृतप्रथमे तानि मोहनीयस्य।
एकस्थानिकबंधोदयौ तस्यैव च संख्यवर्षस्थितिबंधः ॥४३६॥

तस्यनुपूर्विसंक्रमं, लोभस्यासंक्रमं च षंढस्य।
आवृत्तकरणसंक्रमं षडावल्यतीतेषूदीरणता ॥४३७॥

टीका — अंतर जानैं कीया ऐसा अंतरकृत जीव, ताकैं प्रथम समय विषैं सात करणनि का प्रारंभ भया। ते कहिए है—

मोहनीय का बंध-उदय है सो दारुपना छोडि, केवल लतारूप एक स्थानगत भए ए दोय करण बहुरि तिस ही मोहनीय का स्थितिबंध पल्य का असंख्यातवां भाग

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रमाण तैं घटि संख्यात वर्ष मात्र भया एक यहु करण बहुरि मोह प्रकृतिनि का पूर्वैं जहां तहां स्वजातीय प्रकृतिनि विषैं संक्रमण होता था अब आगैं कहिए है तैसैं आनुपूर्वी संक्रमण होइ अन्यथा न होइ एक यहु करण, बहुरि पूर्वैं लोभ का अन्य प्रकृतिनि विषैं संक्रमण होता था अब न होइ एक यहु करण, बहुरि नपुंसकवेद का आवृत्त करण संक्रमक भया, याकौं अन्य प्रकृतिरूप परिणमाइ नाश करने का उद्यमी भया एक यहु करण; बहुरि पूर्वैं कर्म बंध पीछैं आवली व्यतीत भएं ही उदीरणा होती थी अब छह आवली व्यतीत भएं पीछैं ही उदीरणा होइ एक यहु करण इन सात करणनि का अंतर करने के अनंतर समय विषैं युगपत् प्रारंभ भया।

संछुहदि पुरिसवेदे, इत्थीवेदं णउंसयं चेव ।
सत्तेव णोकसाए, णियमा कोहम्हि संछुहदि[1] ।।४३८।।

कोहं च छुहदि माणे, माणं मायाए णियमि संछुहदि ।
मायं च छुहदि लोहे, पडिलोमो संकमो णत्थि[2] ।।४३९।।

संक्रामति पुरुषवेदे, स्त्रीवेदं नपुसंकं चैव ।
सप्तैव नोकषायान्, नियमात् क्रोधे संक्रामति ४३८।।

क्रोधश्च क्रामति माने, मानो मायायां नियमेन संक्रामति ।
माया च क्रामति लोभे, प्रतिलोमः संक्रमो नास्ति ।।४३९।।

टीका – स्त्रीवेद अर नपुंसक वेद का द्रव्य तौ पुरुषवेद विषैं संक्रमण करै है। पुरुषवेद छह हास्यादि असैं सात नोकषायनि का द्रव्य संज्वलन क्रोधविषैं संक्रमण करै है। क्रोध का द्रव्य मान विषैं संक्रमण करै है। मान का द्रव्य माया विषैं संक्रमण करै है। माया का द्रव्य लोभ विषैं संक्रमण करै है असैं संक्रमण करि अन्य रूप परिणामि आप नाश कौं प्राप्त हो है यहु आनुपूर्वी संक्रमण जानना। प्रतिलोम कहिए अन्यथा प्रकार संक्रमण अब न हो है।

इहां तैं आगैं स्थितिबंध तैं संख्यात गुणा घाटि स्थितिबंधापसरण का प्रमाण मोहनीय का भया, जातैं संख्यात वर्ष स्थितिबंध होने तैं परैं स्थितिबंधापसरण का

---

१. कषाय पाहुड गाथा १३८–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २५० ।
२. कषाय पाहुड गाथा १३८–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २५१ ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रमाण स्थितिबंध तैं संख्यात गुणा घटता हो है । अर बत्तीस वर्ष मात्र स्थितिबंध भए पीछैं स्थितिबंधापसरण का प्रमाण अंतर्मुहूर्त मात्र हो है, असी व्याप्ति सर्वत्र जाननी ।

ठिदिबंधसहस्सगदे, संढो संकामिदो हवे पुरिसे ।
पडिसमयमसंखगुणं, संकामगचरिमसमओ त्ति ॥४४०॥

स्थितिबंधसहस्रगते, षंढः संक्रामितो भवेत् पुरुषे ।
प्रतिसमयमसंख्य गुणं, संक्रामकचरमसमय इति ॥४४०॥

टीका – अंतरकरण के अनंतर समय तैं लगाय संख्यात हजार स्थितिबंध व्यतीत भएं नपुंसक वेद है, सो पुरुषवेद विषैं संक्रमित हो है । नपुंसकवेद की क्षपणा का प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं संक्रम काल का अंत समय विषैं नपुंसक वेद के द्रव्य का पुरुषवेद विषैं संक्रमण हो है । सो समय समय विषैं जेता द्रव्य संक्रमण भया सो फालि है अर अंतर्मुहूर्त मात्र फालिनि का समूह रूप कांडक है सो असैं गुण संक्रमणरूप अनुक्रम तैं संख्यात हजार कांडक भएं अंत समय विषैं जो अंत कांडक की अंत फालि, ताकौं सर्व संक्रमण करि संक्रमावै है । असैं नपुंसक वेद कौं पुरुषवेदरूप परिणमाइ नाश कौं प्राप्त करै है । असा अर्थ स्त्रीवेद की क्षपणा आदि विषैं भी जोडना ।

बंधेण होदि उदओ, अहिओ उदएण संकमो अहिओ ।
गुणसेढि असंखेज्जापदेसअंगेण बोधव्वा[1] ॥४४१॥

बंधेन भवति उदयः, अधिक उदयेन संक्रमोऽधिकः ।
गुणश्रेणिरसंख्येयप्रदेशांगेन बोद्धव्या ॥४४१॥

टीका – नपुंसकवेद का संक्रमण काल विषैं पुरुषवेद का बंध द्रव्य तैं उदय द्रव्य अधिक है अर उदय द्रव्य करि संक्रम द्रव्य अधिक है, सो अधिकता असंख्यात प्रदेश समूह करि गुणश्रेणी कहिए गुणकार की पंक्ति तिस रूप जाननी ।

भावार्थ – इहां पुरुषवेद का जितने प्रदेशनि का बंध हो है तातैं असंख्यात गुणा अधिक ताके प्रदेशनि का उदय हो है । अर तातैं असंख्यात गुणा अधिक प्रदेशनि का तहां संक्रमण हो है । सोई कहिए है–

१. कषाय पाहुड गाथ १४४– जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २६३

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रदेश शब्द करि परमाणू रूप द्रव्य जानना, सो इहां समयप्रबद्ध बंधै है, तीहिं कौं सात का भाग दीएं मोह का द्रव्य होइ, ताकौं कषाय-नोकषाय का भाग के अर्थि दोय का भाग दीएं पुरुषवेद का द्रव्य होइ, सो इतना तौ प्रदेशनि का बंध हो है। बहुरि सर्व सत्तारूप पुरुषवेद का द्रव्य विषैं गुणश्रेण्यादि करि दीया द्रव्य सहित इस समय विषैं उदय आवने योग्य निषेक का द्रव्य जेता होइ तितने प्रदेशनि का उदय हो है, ते ए बंध प्रदेशनि तैं असंख्यात गुणे हैं। बहुरि नपुंसकवेद का सर्व द्रव्य कौं गुण संक्रम का भाग दीएं जो प्रमाण आवै तितने नपुंसकवेद के प्रदेशनि का पुरुषवेद विषैं संक्रमण हो है। ते ए उदय प्रदेशनि तैं असंख्यात गुणे जानने। अैसैं अल्प बहुत्व कहने करि गुण संक्रमण द्रव्य का प्रमाण जानिए है।

गुणसेढिअसंखेज्जापदेसअंगेण संकमो उदओ।
से काले से काले, भज्जो बंधो पदेसंगो[1] ॥४४२॥

गुणश्रेण्यसंख्येयप्रदेशांगेन संक्रम उदयः।
स्वे काले स्वे काले, योग्यो बंधः प्रदेशांगः ॥४४२॥

टीका – अपने काल विषैं स्वस्थान अपेक्षा संक्रम तैं संक्रम अर उदय तैं उदय है, सो प्रदेश अपेक्षा करि असंख्यातरूप गुणकार की पंक्ति लीएं है।

भावार्थ – नपुंसकवेद क्षपणा काल विषैं प्रथम समय विषैं जेते नपुंसकवेद के प्रदेशनि का पुरुषवेद विषैं संक्रमण हो है, तातैं दूसरा समय विषैं असंख्यात गुणा हो है। तातैं तीसरा समय विषैं असंख्यात गुणा हो है अैसैं अन्त समय पर्यंत जानना। बहुरि अपना पुरुषवेद का उदय काल विषैं प्रथम समय विषैं जितने पुरुषवेद के प्रदेशनि का उदय हो है, तातैं दूसरे समय असंख्यात गुणा तातैं तीसरे समय असंख्यात गुणा अैसैं अन्त समय पर्यंत जानना। बहुरि अपने पुरुषवेद का बन्धकाल विषैं प्रदेशरूप बन्ध है सो भजनीय है। जातैं प्रदेश बन्ध है सो योगनि के अनुसारि है, तातैं प्रथमादि समय तैं द्वितीयादि समयनि विषैं पुरुषवेद का बन्ध कदाचित् संख्यातवें भागि, असंख्यातवें भागि, संख्यात गुणा, असंख्यात गुणा बधता कदाचित् अैसें ही घटता कदाचित् जितने का तितने अवस्थित रूप पुरुषवेद के प्रदेश बन्ध इहां हो हैं।

इन अठाईस गाथानि का अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासार विषैं नाहीं लिख्या। इहां मोकूं प्रतिभास्या तैसैं लिख्या है।

---

१. कषायपाहुड गाथा १४६, जयधवला भाग– १४ पृष्ठ २७२।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इदि संढं संकामिय, से काले इत्थिवेदसंकमगो ।
अण्णंठिदिरसखंडं, अण्णं ठिदिबंधमारभई ।।४४३।।

इदि षंढं संक्राम्य, स्वे काले स्त्रीवेदसंक्रमकः ।
अन्यस्थितिरसखंडमन्यं स्थितिबंधमारभते ।।४४३।।

टीका – ऐसें नपुंसकवेद का संक्रमण करि अपने काल विषैं स्त्रीवेद का संक्रमक कहिए पुरुषवेद विषैं संक्रमण करि क्षपणा करनेवाला हो है । तहां प्रथम समय विषैं पूर्वतैं अन्य प्रमाण धरैं स्थितिकांडक, अनुभाग कांडक, स्थितिबन्ध कौं आरंभै है ।

थी अद्धा संखेज्जभागेपगदे तिघादिठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जं, थी संकंतापगद्धंते ।।४४४।।

स्त्री अद्धा संख्येयभागेपगते त्रिघातिस्थितिबंधः ।
वर्षाणां संख्येयं, स्त्री संक्रमोपगताधांते ।।४४४।।

टीका – तहां संख्यात हजार स्थितिकांडकनि करि स्त्रीवेद क्षपणा काल का संख्यातवां भाग व्यतीत भएं ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय इन तीन घातियानि का स्थितिबन्ध पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र होता था, ताकौं समाप्त करि संख्यात वर्ष प्रमाण स्थितिबन्ध करै है । तातैं परैं संख्यात हजार स्थितिकांडक व्यतीत भएं स्त्रीवेद क्षपणा काल के अवशेष बहुभाग व्यतीत भएं जो घात कीएं पीछैं स्त्रीवेद का स्थिति सत्व अवशेष पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र रह्या, ताकौं अंत स्थिति कांडक रूप करै है, तिस ही काल विषैं अवशेष कर्मनिका स्थितिकांडक पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थिति सत्व के असंख्यातवें भाग मात्र था, सो ताका असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरैं है । तहां अंत कांडक कौं सम्पूर्ण भएं स्त्रीवेद भी संक्रमण रूप भया । द्वितीय स्थिति विषैं तिष्ठता ऐसा पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र आयाम धरैं जो अन्तस्थिति कांडक, ताकी अन्त फालि कौं पुरुषवेद विषैं संक्रमण करि स्त्रीवेद की सत्ता का नाश करै है ।

ताहे संखसहस्सं, वस्साणं मोहणीयठिदिसंतं ।
से काले संकमगो, सत्तण्हं णोकसायाणं ।।४४५।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तस्मिन् (अ) संख्यसहस्रं, वर्षाणां मोहनीयस्थितिसत्त्वम् ।
स्वे काले संक्रमकः, सप्तानां नोकषायाणाम् ॥४४५॥

टीका – तहां स्त्रीवेद क्षपणा काल का अंत विषैं मोहनीय का स्थितिसत्व असंख्यात वर्ष प्रमाण हो है। बहुरि ताके अनंतरि अपने काल विषैं सात नोकषायनि का संक्रमक कहिए संज्वलन क्रोधरूप परणमाइ नाश करणहारा हो है।

ताहे मोहो थोवो, संखेज्जगुणं तिघादिठिदिबंधो ।
तत्तो असंखगुणियो, णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥४४६॥

तत्र मोहः स्तोकः, संख्येयगुणं त्रिघातिस्थितिबंधः ।
ततोऽसंख्येयगुणितो, नामद्विकं साधिकं तु वेदनीयम् ॥४४६॥

टीका – तहां प्रथम समय विषैं मोह का स्तोक, तातैं तीन घातियानि का संख्यात गुणा, बहुरि तातैं नाम-गोत्र का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है, तातैं बहुरि असंख्यात गुणा, तातैं वेदनीय का त्रैराशिक तैं आधा प्रमाण करि साधिक स्थितिबंध हो है।

ताहे असंखगुणियं, मोहादु तिघादिपयडिठिदिसंतं ।
तत्तो असंखगुणियं, णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥४४७॥

तस्मिन् असंख्यगुणितं, मोहात् त्रिघातिप्रकृतिस्थितिसत्त्वम् ।
ततोऽसंख्यगुणितं, नामद्विकं साधिकं तु वेदनीयं ॥४४७॥

टीक – तहां ही प्रथम समय विषैं संख्यात वर्ष मात्र मोह का स्थिति सत्व स्तोक है। तातैं असंख्यात गुणा तीन घातियानि का स्थिति सत्व पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है। तातैं असंख्यात गुणा नाम गोत्र का स्थिति सत्व है। तातैं साधिक वेदनीय का स्थिति सत्व है। क्रम करण के अल्पबहुत्व का अनुक्रम इहां पर्यंत भी प्रवर्तैं है। ऐसा जानना।

सत्ताण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे दु मोहठिदिसंतं ।
संखेज्जगुणविहीणं, सेसाणमसंखगुणहीणं ॥४४८॥

सप्तानां प्रथमस्थितिखंडे पूर्णे तु मोहस्थितिसत्त्वं ।
संख्येयगुणविहीनं, शेषाणामसंख्यगुणहीनम् ॥४४८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सात नोकषायनि का पहिला स्थिति कांडक कौं पूर्ण भए पूर्व स्थिति सत्त्व तैं मोह का तौ स्थिति सत्व संख्यात गुणा घटता भया, जातैं संख्यात वर्ष स्थिति सत्व होने तैं स्थिति कांडक आयाम पूर्वस्थिति सत्व का संख्यात बहुभाग मात्र है। बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थिति सत्व पूर्व स्थिति सत्व तैं असंख्यात गुणा घटता भया, जातैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थिति सत्व होने तैं स्थिति कांडक आयाम पूर्वस्थिति सत्व के असंख्यात बहुभाग मात्र है।

सत्तण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे ति घादिठिदिबंधो।
संखेज्जगुणविहीणं, अघादितियाणं असंखगुणहीणं ॥४४६॥

सप्तानां प्रथमस्थितिखंडे पूर्णे इति घातिस्थितिबंधः।
संख्येयगुणविहीनो, अघातित्रयाणामसंख्यगुणहीनः ॥४४९॥

टीका – सात नोकषायनि का प्रथम स्थिति खंड कौं संपूर्ण होत संतैं पूर्व स्थिति बंध तैं च्यारि घातिया कर्मनि का तौ संख्यात गुणा घटता अर तीन अघातिया-नि का असंख्यात गुणा घटता स्थिति बंध हो है। जातैं एक स्थितिबंधापसरण करि इतनी स्थिति का घटना संभवै है।

ठिदिबंधपुधत्तगदे, संखेज्जदिमं गतं तदद्धाए।
एत्थ अघादितियाणं, ठिदिबंधो संखवस्सं तु ॥४५०॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते, संख्येयं गतं तदद्धायाम्।
अत्र अघातित्रयाणां, स्थितिबंधः संख्यवर्षस्तु ॥४५०॥

टीका – तातैं परै पृथक्त्व कहिए संख्यात हजार स्थिति बंध गएं तिस सप्त नोकषाय क्षपणा काल का संख्यातवां भाग व्यतीत भया, तहां नाम, गोत्र, वेदनीय इन तीन अघातियानि का स्थिति बंध पल्य का असंख्यातवां भागपना कौं छोडि संख्यात हजार वर्ष मात्र हो है।

ठिदिखंडपुधत्तगदे, संखाभागा गदा तदद्धाए।
घादितियाणं तत्थ य, ठिदिसंतं संखवस्सं तु ॥४५१॥

स्थितिखंडपृथक्त्वगते, संख्यभागा गता तदद्धायाः।
घातित्रयाणां तत्र च, स्थितिसत्त्वं संख्यवर्षं तु ॥४५१॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तातैं परैं संख्यात हजार स्थिति कांडक गएं सात नोकषाय काल का संख्यात बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं, तीन घातियानि का स्थिति सत्त्व संख्यात वर्ष प्रमाण भया। तातैं आगे च्यारि घातियानि का स्थितिबंध अर स्थितिसत्व एक कांडक काल पर्यंत समान रूप होइ। बहुरि केई स्थितिबंध अर स्थितिसत्व पूर्व तैं संख्यात गुणे घटते हो हैं, जातैं घातिकर्मनि का स्थितिबंध वा स्थिति सत्व संख्यात वर्ष मात्र होने तैं स्थितिबंधापसरण वा स्थिति कांडक का प्रमाण पूर्व स्थितिबंध वा स्थिति सत्व तैं संख्यात बहु भाग मात्र है। बहुरि नाम गोत्र वेदनीय का स्थिति कांडक पूर्ण होतैं पूर्व स्थिति सत्व तैं असंख्यात गुणा घटता स्थिति सत्व हो है। अर इनका स्थितिबंधापसरण पूर्ण होतैं पूर्व स्थिति बंध तैं संख्यात गुणा घटता स्थिति बंध हो है, ऐसा अनुक्रम सप्त नोकषाय क्षपणा काल का अंत पर्यंत जानना।

पडिसमयं असुहाणं, रसबंधुदया अणंतगुणहीणा।
बंधो वि य उदयादो, तदणंतरसमय उदयोथ ॥४५२॥

प्रतिसमयमशुभानां, रसबंधोदयौ अनंतगुणहीनौ।
बंधोऽपि च उदयात्, तदनंतरसमय उदयोथ ॥४५२॥

टीका – अशुभ प्रकृतिनि का अनुभाग बंध अर अनुभाग का उदय, सो समय समय प्रति अनंत गुणा घटता हो है। प्रथम समय तैं दूसरे समय, दूसरा समयतैं तीसरे समय ऐसैं क्रम तैं अनुभाग का बंध अर उदय अनंत गुणा घटता इहां जानना। बहुरि पूर्व समय संबंधी उदय तैं उत्तर समय का बंध भी अर अनंतरवर्ती समय का उदय हो है। सो अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप जानना।

बंधेण होदि उदओ, अहियो उदएण संकमो अहियो।
गुणसेढि अणंतगुणा, बोधव्वा होदि अणुभागे[1] ॥४५३॥

बंधेन भवति उदयोऽधिक उदयेन संक्रमोऽधिकः।
गुणश्रेणिरनंतगुणा, बोद्धव्या भवति अनुभागे ॥४५३॥

टीका – बंध करि तो उदय अधिक कहिए है अर उदय करि संक्रम अधिक है, ऐसैं अनुभाग विषैं अनंत गुणा गुणश्रेणी कहिए गुणकार की पंक्ति जाननी।

१. कषायपाहुड गाथा १४३–जयधवला भाग १४, पृष्ठ २६१

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भावार्थ –विवक्षित एक समय विषैं अनुभाग के बंध तैं अनंत गुणा अनुभाग का तो उदय है अर तातैं अनंत गुणा अनुभाग का संक्रम हो है ।

गुणसेढि अणंतगुणेणूणा य वेदगो दु अणुभागो ।
गणणादिकंतसेढी, पदेसअंगेण बोधव्वा[1] ॥४५४॥

गुणश्रेणिरनंतगुणेनोना च वेदकस्तु अनुभागः ।
गणनातिक्रांतश्रेणी, प्रदेशांगेन बोद्धव्या ॥ ४५४ ॥

टीका – यद्यपि वेदक कहिए उदयरूप अनुभाग सो समय समय प्रति अनंत गुणा घटतारूप गुणाकार पंक्ति लीएं है तथापि प्रदेश अंग (अंश) करि गणनातिक्रांत कहिए असंख्यात गुणा गुणाकार की पंक्तिरूप जानना ।

भावार्थ – समय समय प्रति अनुभाग का उदय अनंत गुणा घटता है तथापि प्रदेश जे कर्म परमाणू, तिनका उदय समय समय प्रति असंख्यात गुणा बधता जानना ।

बंधोदएहि णियमा, अणुभागो होदि णंतगुणहीणो ।
से काले से काले, भज्जो पुण संकमो होदि[2] ॥४५५॥

बंधोदयाभ्यां नियमादनुभागो भवति अनंतगुणहीनः ।
स्वे काले स्वे काले, भाज्यः पुनः संक्रमो भवति ॥ ४५५ ॥

टीका – अपने काल विषैं अनुभाग है, सो बंध अर उदय करि तो समय समय प्रति अनंत गुणा घटता ही है ।बहुरि अपने काल विषैं संक्रम है, सो भजनीय है– घटने का नियम करि रहित है ।

संकमणं तदवट्ठं, जाव दु अणुभागखंडयं पडिदि ।
अण्णाणुभागखंडे, आढंते णंतगुणहीणं ॥४५६॥

संक्रमणं तदवस्थं, यावत्तु अनुभागखंडकं पतति ।
अन्यानुभागखंडे, आरब्धे अनंत गुणहीनम् ॥ ४५६ ॥

---

१. कषायपाहुड गाथा १४६, जयधवला भाग – १४ पृष्ठ २६७.
२. कषायपाहुड गाथा १४८, जयधवला भाग – १४ पृष्ठ २७०.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – जिस अनुभाग कांडक विषैं संक्रमण होइ, तिस अनुभाग कांडक का घात न होइ निवरै तावत् समय समय प्रति अवस्थित समान रूप ही अनुभाग का संक्रमण हो है। बहुरि अन्य नवीन अनुभाग कांडक का प्रारम्भ भएं पूर्व तैं अनंत गुणा घटता अनुभाग का संक्रम हो है।

इन पांच गाथानि का अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासार विषैं लिख्या नाहीं, इहां जैसैं प्रतिभास्या तैसैं अर्थ लिख्या है। बुद्धिमान होइ, सो स्पष्ट अर्थ जैसा होइ तैसा जानियो।

सत्तण्हं संकामगचरिमे पुरिसस्स बंधमडवस्सं।
सोलस संजलणाणं, संखसहस्साणि सेसाणं ॥४५७॥

सप्तानां संक्रामकचरमे पुरुषस्य बंधोऽष्टवर्षम्।
षोडश संज्वलनानां, संख्यसहस्राणि शेषाणाम् ॥४५७॥

टीका – सात नोकषाय संक्रमक काल का अंत समय विषैं पुरुषवेद का अन्त स्थिति बन्ध अष्ट वर्ष प्रमाण हो है। बहुरि संज्वलन चतुष्क का सोलह वर्ष मात्र, अवशेष मोह, आयु बिना छह कर्मनि का संज्वलन हजार वर्ष मात्र स्थितिबन्ध हो है।

ठिदिसंतं घादीणं, संखसहस्साणि होंति वस्साणं।
होंति अघातियाणं, वस्साणमसंखमेत्ताणि ॥४५८॥

स्थितिसत्त्वं घातिनां, संख्यसहस्राणि भवंति वर्षाणां।
भवंति अघातित्रयाणां, वर्षाणामसंख्यमात्राणि ॥४५८॥

टीका – तहां ही स्थितिसत्व है, सो च्यारि घातियानि का संख्यात हजार वर्ष मात्र अर तीन अघातिनि का असंख्यात वर्ष प्रमाण जानना।

पुरिसस्स य पढमट्ठिदि, आवलिदोसुवरिदासु आगाला।
पडिआगाला छिण्णा, पडिआवलियादुदीरणदा ॥४५९॥

पुरुषस्य च प्रथमस्थितौ, आवलिद्वयोरुपरतयोरागालाः।
प्रत्यागालाः छिन्नाः, प्रत्यावलिकाया उदीरणता ॥ ४५९ ॥

टीका – पुरुषवेद की प्रथम स्थिति विषैं आवली प्रत्यावली ए दोय उवरैं अवशेष रहैं आगाल प्रत्यागाल नष्ट भएं। द्वितीय स्थिति विषैं तिष्ठते परमाणूनि कौं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपकर्षण वश तैं प्रथम स्थिति विषैं प्राप्त करना, सो आगाल कहिए। प्रथम स्थिति विषैं तिष्ठते परमाणूनि कौं उत्कर्षण वश तैं द्वितीय स्थिति विषैं प्राप्त करना सो प्रत्यागाल कहिए। बहुरि प्रत्यावली जो द्वितीयावली तैं उदीरणा वर्तै है। प्रत्यावली के निषेकनि का द्रव्य उदयावली विषैं दीजिए है। बहुरि एक समय अधिक प्रत्यावली अवशेष रहैं जघन्य स्थिति की उदीरणा हो है, जातैं प्रत्यावली का प्रथम एक निषेक की उदीरणा हो है, उदयावली विषैं ताकौं प्राप्त कीजिए है। बहुरि तीहिं समय विषैं वेद सहितपना का अंत समय विषैं हो है, जातैं उच्छिष्टावली है नाम जाका असी जो प्रत्यावली, ताके निषेकनि का उदय न हो है।

अंतरकदपढमादो, कोहे छण्णोकसाययं छुहदि।
पुरिसस्स चरिमसमए, पुरिसवि एणेण सव्वयं छुहदि ॥४६०॥

अंतरकृतप्रथमात् क्रोधे षण्णोकषायकं संक्रामति।
पुरुषस्य चरमसमये, पुरुषमपि एतेन सर्वं संक्रामति ॥४६०॥

टीका – अंतरकरण करने के अनन्तरवर्ती प्रथम समय तैं लगाय संक्रमण होता था, सो पुरुषवेद के उदय काल का अंत समय विषैं छह नोकषायनि का सर्व सत्त्व कौं संज्वलन क्रोध विषैं संक्रमण करै है। तहां अन्त समय विषैं द्वितीय स्थिति विषैं प्राप्त संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति सत्त्वरूप अन्त फालि, ताकौं सर्व संक्रमण तैं संज्वलन क्रोध विषैं निक्षेपण करि तिन छह नोकषायनि की सत्ता नाश करै है। बहुरि तिस ही समय विषैं पुरुषवेद भी सर्व संज्वलन क्रोध विषैं निक्षेपण करै है।

किछू अवशेष रहै है, सो कहिए है–

समऊणदोण्णिआवलिपमासमयप्पबद्धणवबंधो।
बिदिये ठिदिये अत्थि हु, पुरिसस्सुदयावली च तदा ॥४६१॥

समयोनद्व्यावलिप्रमाणसमयप्रबद्धनवबन्धः।
द्वितीयस्यां स्थितौ अस्ति हि, पुरुषस्योदयावली च तदा ॥४६१॥

टीका – तहां द्वितीय स्थिति विषैं तो समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध अर प्रथम स्थिति विषैं असंख्यात समयप्रबद्ध मात्र उदयावली कहिए उच्छिष्टावली के निषेक पुरुषवेद का सत्त्व विषैं अवशेष रहैं अन्य सर्व संख्यात हजार

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वर्ष मात्र स्थितिबंध लीए पुरुषवेद का पुरातन सत्त्व था, सो संज्वलन क्रोध विषैं संक्रमण रूप कीया। इहां द्वितीय स्थिति विषैं समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध कैसैं अवशेष रहै ? सो कहिए है–

नवीन बन्ध्या समयप्रबद्ध कौं नवक समयप्रबद्ध कहिए, सो क्षपणाकाल बन्धे पीछैं आवली पर्यंत जो बन्धावली, तिसविषैं तो क्षपावें नाहीं, पीछैं समय समय विषैं एक एक फालि करि आवली विषैं एक एक समयप्रबद्ध कौं खिपावैं है, तातैं पुरुषवेद की प्रथम स्थिति विषैं बन्धावली, क्षपणावली, उच्छिष्टावली ग्रैसैं तीन आवली अवशेष रहैं बन्धावली का प्रथम समय विषैं जो समयप्रबद्ध बन्ध्या, ताकौं बन्धावली गमाइ क्षपणावली विषैं एक एक फालि करि सर्व क्षपाया अर बंधावली का द्वितीय, तृतीयादि समयनि विषैं जे समयप्रबद्ध बंधे तिनकी क्रम तैं एक दोय, तीन आदि फालि अवशेष राखि क्षपणावली विषैं तिनकौं खिपाए। ग्रैसैं बंधावली का अंत समय विषै बंध्या समयप्रबद्ध को क्षपणावली का अंत समय विषैं एक ही फालि खिपाई। समय घाटि आवली मात्र फालि अवशेष रही। बहुरि क्षपणावली के प्रथमादि समयनि विषैं बंधे समयप्रबद्ध, तिनकी एक हू फालि न खिपाई। बहुरि उच्छिष्टावली विषैं बंध है ही नाहीं। ग्रैसैं इहां 'एकदेश कौं सर्व कहिए' इस न्याय तैं अवशेष रही फालिनि कौं समयप्रबद्ध संज्ञा कहने करि बंधावली विषैं बंधे ग्रैसे एक घाटि आवली मात्र समयप्रबद्ध अर क्षपणावली विषैं बंधे संपूर्ण आवली मात्र समयप्रबद्ध मिलि समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध अवशेष रहै हैं। सो अपगत वेद होइ उच्छिष्टावली का प्रथम समय तैं लगाय एक एक समय विषैं एक एक समयप्रबद्ध कौं संज्वलन क्रोधरूप परिणमाइ, समय घाटि दोय आवली काल विषैं इन नवक समयप्रबद्धनि कौं भी नाश करै है। अब सवेद अनिवृत्तिकरण के अनंतरि अपगत वेदी होइ, अश्वकर्ण क्रिया सहित अपूर्व स्पर्धक करण का प्रारंभ करे है। तहां घातैं पीछैं अवशेष रह्या जो संज्वलन चतुष्क का सत्त्व तिसविषैं स्थिति अनुभाग कांडक की प्रवृत्ति जाननी।

अब अश्वकर्ण करण का स्वरूप कहिए है—

से काले ओवट्टणिउट्टण, अस्सकण्ण आदोलं।
करणं तियसण्णगयं, संजलणरसेसु वट्टिहिदि ॥४६२॥

स्वे काले अपवर्तनोद्वर्तनं, अश्वकर्णमांदोलं।
करणं त्रिसंज्ञागतं, संज्वलनरसेषु वर्तयति ॥४६२॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अपने काल विषैं अपवर्तनोद्वर्तन करण, अश्वकर्ण करण, आंदोल करण अैसैं तीन संज्ञा कौं प्राप्त किया है, सो संज्वलन चतुष्क का अनुभाग विषैं प्राप्त हो है। तहां इहां आरंभ्या जो प्रथम अनुभागकांडक, ताका घात भए पीछैं अवशेष अनुभाग क्रोध तैं लगाय लोभ पर्यंत अनंत गुणा घटता वा लोभ तैं लगाय क्रोध पर्यंत अनंत गुणा बधता हो है। तातैं अपवर्तनोद्वर्तन करण संज्ञा कहिए। बहुरि जैसैं घोडे का कान मध्य प्रदेश तैं आदि पर्यंत क्रम तैं घटता हो है, तैसैं प्रथम अनुभाग कांडक का घात भए पीछैं क्रोध आदि लोभ पर्यंत का क्रम तैं अनुभाग घटता हो है, तातैं अश्वकर्ण संज्ञा कहिए। बहुरि जैसैं ही वाकैं रज्जु बंधे है, सो रज्जु के बीचि का प्रदेश आदि तैं अंत पर्यंत क्रम तैं घटता हो है, तैसैं पूर्ववत् क्रोध तैं लोभ पर्यंत अनुभाग घटता हो है, तातैं आंदोल करण संज्ञा कहिए है।

ताहे संजलणाणं, ठिदिसंतं संखवस्सयसहस्सं।
अंतोमुहुत्तहीणो, सोलसवस्साणि ठिदिबंधो ॥४६३॥

तत्र संज्वलनानां, स्थितिसत्त्वं संख्यवर्षसहस्रम्।
अंतर्मुहूर्तहीनः, षोडशवर्षाणि स्थितिबन्धः ॥४६३॥

टीका – तहां अश्वकर्ण का प्रारंभ समय विषैं संज्वलन चतुष्क का स्थितिसत्त्व संख्यात हजार वर्ष मात्र है। बहुरि स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि सोलह वर्ष मात्र है। एक स्थितिबंधापसरण करि पूर्व स्थितिबंध तैं अंतर्मुहूर्त हीन स्थितिबंध इहां भया और कर्मनि के बंध सत्त्व का आलाप पूर्ववत् इहां ही कहना।

रससंतं आगहिदं, खंडेण समं तु माणगे कोहे।
मायाए लोभेवि य, अहियकमा होदि बंधे वि ॥४६४॥

रससत्त्वमागृहीतं, खंडेन समं तु मानके क्रोधे।
मायायां लोभेऽपि च, अधिकक्रमं भवति बन्धेऽपि ॥४६४॥

टीका – अपगत वेदी होइ, जो प्रथम अनुभागकांडक आगृहीतं कहिए प्रारंभ किया तिस सहित इस प्रथम अनुभाग कांडक का घात होने तैं पहिले मान विषैं क्रोध विषैं माया विषैं लोभ विषैं अनुभाग सत्त्व है सो अधिक क्रम लीएं है। एक गुणहानि विषैं जेते स्पर्धक पाइए तिस प्रमाण कौं नानागुणहानि का प्रमाण करि गुणे मान के

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्पर्धक हो हैं, ते स्तोक हैं, तिनतैं क्रोध के विशेष अधिक हैं, तिनतैं माया के विशेष अधिक हैं। तिनतैं लोभ के विशेष अधिक हैं। इहां अपने अपने स्पर्धकनि का प्रमाण स्थापि, अनंत का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवै है, सो यहु विशेष भी अनंत स्पर्धक मात्र है, याकरि अधिक अधिक जानने। जैसें अंक संदृष्टि करि मान के स्पर्धक पांच सै बारा अर तातैं क्रोध, माया, लोभके क्रम तैं तीन तीन अधिक–क्रोध–५१५, मान–५१२, माया–५१८, लोभ–५२१ बहुरि इस अश्वकर्ण का प्रारंभ समय विषैं जो अनुभाग बंध हो है, तिसविषैं भी असैं ही अल्पबहुत्व का क्रम जानना। बहुरि यहु अनुभाग का कथन अंत दीपक समान है, तातैं याके पहिले गुणस्थाननि विषैं जो अनुभाग सत्व है, तिस विषैं भी असैं ही अल्पबहुत्व है असैं जानना।

रसखंडफड्ढयाओ, कोहादीया हवंति अहियकमा।
अवसेसफड्ढयाओ, लोहादि अणंतगुणियकमा ॥४६५॥

रसखंडस्पर्धकानि, क्रोधादिकानां भवंति अधिकक्रमाणि।
अवशेषस्पर्धकानि, लोभादेः अनंतगुणितक्रमाणि ॥४६५॥

टीका – घात करने कौं प्रथम अनुभाग कांडकरूप ग्रहे जे स्पर्धक, ते क्रोध के स्तोक हैं। तातैं मान के विशेष अधिक हैं। तातैं माया के विशेष अधिक हैं। तातैं लोभ के विशेष अधिक हैं। इहांतैं पहिले जे अनुभाग कांडक भए, तिनविषैं अनुभाग सत्व के अनुसारि मान के स्तोक, तातैं क्रोध, माया, लोभ के क्रम तैं विशेष अधिक स्पर्धक ग्रहण होते थे, अब परिणामनि के विशेष तैं विशेष घात पाइ अपने अपने अनुभाग सत्व कौं अनंत का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र अब कीया इस कांडक करि गृहीत जो अनुभाग है, सो क्रोध का स्तोक, तातैं मान, माया लोभ के क्रम तैं विशेष अधिक हो हैं। अंक संदृष्टि करि इस कांडक करि ग्रहें क्रोध के तीन सै सित्यासी, मान के च्यारि सै अस्सी, माया के पांच सै दश, लोभ के पांच सै उगणीस, स्पर्धक जानने (क्रोध–३८७, मान–४८०, माया–५१०, लोभ–५१९) बहुरि प्रथम अनुभाग कांडक का घात भए पीछैं अवशेष स्पर्धक रहे, ते लोभ के स्तोक, तातैं माया के अनंत गुणे तातैं मान के अनंत गुणे, तातैं क्रोध के अनंत गुणे जानने। अंक संदृष्टि करि जैसें प्रथम कांडक का घात भए पीछैं अवशेष रहे स्पर्धक, ते लोभ के दोय, तातैं माया, मान, क्रोध के क्रम तैं चौगुणे चौगुणे जानने। क्रोध-१२८, मान-३२, माया-८, लोभ-२।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इहां आशंका – जो कांडक विषैं विशेष अधिकपना कह्या तो अवशेष अनुभाग विषैं अनंत गुणापना कैसैं संभवैं ?

ताका समाधान – अंक संदृष्टि अपेक्षा कहिए है। मान का अनुभाग सत्व पांच से बारह, तातैं क्रोध का तीन अधिक, माया का छह अधिक, लोभ का नव अधिक है। तहां अधिक प्रमाण कौं जुदे राखि, पांच सै बारह कौं अनंत की संदृष्टि च्यारि, ताका भाग देइ, तहां एक भाग बिना बहुभाग $\frac{५१२}{४}$ तीन सै चौरासी, तामैं क्रोध विषैं तीन अधिक कहे थे, ते मिलाएं क्रोध कांडक विषैं तीन सै सित्यासी स्पर्धकनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भागमात्र $\frac{५१२}{४}$ एक सौ अठाईस स्पर्धक प्रमाण क्रोध का अवशेष अनुभाग सत्व हो है। बहुरि इस अवशेष एक भाग कौं च्यारि का भाग देइ तहां बहुभाग $\frac{५१२।३}{४।४}$ छिनवै, तिनकौं पहले बहुभाग तीन सै चौरासी कहे थे, तिनमें जोडें मान कांडक का प्रमाण च्यारि सै अस्सी (४८०) हो है। अवशेष एक भाग $\frac{५१२}{४।४}$ मात्र बत्तीस स्पर्धक प्रमाण मान का अवशेष अनुभाग सत्व हो है। बहुरि यहु अवशेष एक भाग रह्या, ताकौं च्यारि का भाग देइ, तहां बहुभाग $\frac{५१२।३}{४।४।४}$ चौईस, तिनकौं पूर्वै मान कांडक च्यारि सै अस्सी कह्या था, तामैं जोडें अर माया का अधिक प्रमाण छह, तिनकौं अधिक कीएं माया कांडक का प्रमाण पांच सै दश (५१०) हो है। अवशेष एक भागमात्र $\frac{५१२}{४।४।४}$ आठ स्पर्धक प्रमाण माया का अवशेष सत्व हो है। बहुरि इस अवशेष एक भाग कौं च्यारि का भाग देइ तहां बहुभाग– $\frac{५१३।३}{४।४।४।४}$ छह, तिनकौं अधिक प्रमाण रहित जो माया कांडक पांच सै च्यारि, तामैं जोडि इहां लोभ का अधिक प्रमाण नव, तिन कौं अधिक कीएं लोभ कांडक का प्रमाण पांच सै उगणीस (५१९) आवै है। अवशेष एक भाग मात्र $\frac{५१२}{४।४।४।४}$ दोय स्पर्धक प्रमाण लोभ के अवशेष अनुभाग सत्व का प्रमाण हो है। असैं क्रोध, मान, माया, लोभ कांडक का प्रमाण तो विशेष अधिक क्रम लीएं हो है। अर अवशेष रह्या अनुभाग का प्रमाण अनंत गुणा क्रम लीएं हो है, तिनकी रचना असी –

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

नाम	क्रोध	मान	माया	लोभ
पूर्व अनुभाग	५१५	५१२	५१८	५२१
कांडक अनुभाग	३८७	४८०	५१०	५१६
अवशेष अनुभाग	१२८	३२	८	२

इहां कांडक अनुभाग अर अवशेष अनुभाग के बीचि ड्योढी लीक (लकीर) करी है, सो हीनाधिक अनुभाग प्रगट करने के अर्थि जानना। ऐसैं क्रोधादिक विषैं घटता क्रम लीएं अनुभाग कांडक करना, सो अश्वकर्ण करण है, ताका वर्णन कीया।

अब अश्वकर्ण करण अवस्था विषै ही भए अर पूर्वैं संसार अवस्था विषै संभवते थे जे पूर्व स्पर्धक, तिनतैं अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं ऐसे जे अपूर्व स्पर्धक, तिनका स्वरूप कहिए है। सो पहिले पूर्व स्पर्धकनि का स्वरूप जाने बिना अपूर्व स्पर्धकनि का ज्ञान न होइ, तातैं इहां पूर्व स्पर्धकनि का किछू स्वरूप कहिए है–

सर्व कर्म परमाणू विषै जाविषै अनुभाग के थोरे अविभाग प्रतिच्छेद पाइए है ऐसे जो परमाणू सो जघन्य वर्ग कहिए। ऐसे ऐसे समान परमाणूनि का पुंज, ताका नाम जघन्य वर्गणा है। बहुरि जघन्य वर्गणा तैं एक अविभाग प्रतिच्छेद जिनमें अधिक पाइए ऐसे एक एक वर्ग कहिए परमाणू, तिनका पुंज कौं द्वितीय वर्गणा कहिए। ऐसैं क्रम तैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेद करि बधती जे वर्ग कहिए वर्गनि का पुंजरूप एक एक वर्गणा यावत् होइ तावत् पर्यंत जेती वर्गणा भईं तिन सर्व वर्गणानि का पुंज कौं जघन्य स्पर्धक कहिए। बहुरि ताके अनंतरि जघन्य वर्ग तैं दूणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग, तिनका समूहरूप द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा हो है। बहुरि पूर्ववत् यातैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधती लीएं वर्गनि का पुंजरूप, ताकी द्वितीयादि वर्गणा हो हैं। बहुरि ऐसैं ही जघन्य वर्गणा तैं तिगुणा, चौगुणा आदि जेथवां स्पर्धक होइ तितना गुणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप जो वर्गणा होइ, सो तो तृतीय, चतुर्थ आदि स्पर्धकनि की

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथम वर्गणा जाननी । अर ऊपरि एक एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक क्रम लीएं वर्गनि का समूह रूप अपनी अपनी द्वितीयादि वर्गणा जाननी । इहां सर्व कर्म परमाणूनि का प्रमाण कौं किंचित् अधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं प्रथम वर्गणा के वर्गनि का प्रमाण आवे है । याकौं दोगुणहानि का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवे है, सो एक विशेष करि घटता द्वितीयादि वर्गणानि विषै वर्गनि का प्रमाण हो है, असैं प्रथम गुणाहानि विषै क्रम जानना ।

बहुरि प्रथम गुणहानि तैं द्वितीयादि गुणहानिनि विषै आधा आधा प्रमाण लीएं वर्गणा के वर्गनि का अर विशेष का प्रमाण जानना । असैं कर्म परमाणूनि विषै नाना गुणहानि पाइए है । इहां अनुभाग रचना विषै गुणाहानि वा नाना गुणहानिनि का प्रमाण यथासम्भव अनंत है । तहां एक एक गुणहानि विषै पूर्वोक्त प्रकार स्पर्धक अनंत हैं । एक एक स्पर्धक विषै वर्गणा अनंती हैं । सो एक गुणहानि विषै जो वर्गणानि का प्रमाण, सोई गुणहानि आयाम का प्रमाण जानना । असी गुणहानि जेती पाइए, तिनके प्रमाण का नाम नानागुणहानि है ।

अंकसंदृष्टि करि सर्व कर्म प्रदेशरूप द्रव्य इकतीस सै (३१००) गुणहानि प्रमाण आठ, नानागुणहानि पांच, तहां सर्व द्रव्य कौं किंचित् अधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै वर्ग दोय सै छप्पन है । याकौं दो गुणहानि का भाग दीएं विशेष का प्रमाण सोलह, सो इतना इतना घाटि द्वितीयादि वर्गणा होइ । बहुरि असैं क्रम तैं जिस वर्गणा विषै प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा तैं आधा एक सौ अठाईस वर्ग पाइए, सो द्वितीय गुणहानि की प्रथम वर्गणा है । इस ही चय का प्रमाण भी आधा आठ है । तातैं आठ आठ घटते द्वितीयादि वर्गणा के वर्ग जानने । असैं गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा प्रमाण जानना । असी पांच गुणहानि सर्वत्र जाननी । असै ही यथार्थ कथन का अर्थ जानना ।

तहां जघन्य स्पर्धक तैं लगाय अनंत स्पर्धक लता भागरूप हैं । तिनके ऊपरि अनंत स्पर्धक दारु भागरूप हैं । तिनके ऊपरि अनंत स्पर्धक अस्थिभागरूप हैं । तिनके ऊपरि उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत अनंत स्पर्धक शैल भागरूप हैं । तहां प्रथम स्पर्धक देशघाति का जघन्य स्पर्धक है । तातैं लगाय लताभाग के सर्व स्पर्धक अर दारु भाग के अनंतवां भाग मात्र स्पर्धक देशघाति हैं । तहां अंत विषै देशघाति उत्कृष्ट स्पर्धक भया ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि ताके ऊपरि सर्वघाति का जघन्य स्पर्धक है। तातैं लगाय ऊपरिके सर्व स्पर्धक सर्वघाति हैं। तहां अंत स्पर्धक उत्कृष्ट सर्वघाति जानना। तहां केवल बिना च्यारि ज्ञानावरण, तीन दर्शनावरण अर सम्यक्त्व मोहनी, संज्वलन चतुष्क, नोकषाय नव, अंतराय पांच इन छब्बीस प्रकृतिनि की लता समान स्पर्धक की प्रथम वर्गणा, सो एक एक वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा समान है।

बहुरि वेदनीय आयु नाम गोत्र इन अघाति कर्मनि की भी प्रथम वर्गणा तैसैं ही परस्पर समान है।

बहुरि मिथ्यात्व बिना केवल ज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण, निद्रा पांच, मिश्रमोहनी, संज्वलन बिना बारह कषाय इन सर्वघाति बीस प्रकृतिनि के देशघाति स्पर्धक हैं नाहीं, तातैं सर्वघाति जघन्य स्पर्धक वर्गणा तैसैं ही परस्पर समान जाननी। तहां पूर्वोक्त देशघाति छब्बीस प्रकृतिनि की अनुभाग रचना देशघाति जघन्य स्पर्धक तैं लगाय उत्कृष्ट देशघाति स्पर्धक पर्यंत होइ। तहां सम्यक्त्व मोहनी का तो इहां ही उत्कृष्ट अनुभाग होइ निवर्या, अवशेष पचीस प्रकृतिनि की रचना तहां तैं ऊपरि सर्वघाति उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत जाननी। बहुरि सर्वघाति बीस प्रकृतिनि की रचना सर्वघाति का जघन्य स्पर्धक तैं लगाय उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत है।

तहां विशेष इतना – सर्वघाति दारु भाग के स्पर्धकनि का अनंतवां भाग मात्र स्पर्धक पर्यंत मिश्रमोहनी के स्पर्धक जानने; ऊपरि नाहीं हैं। बहुरि इहां पर्यंत मिथ्यात्व के स्पर्धक नाहीं हैं। इहांतैं ऊपरि उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत मिथ्यात्व के स्पर्धक हैं। बहुरि च्यारि अघातिया कर्मनि की भी देशघाति जघन्य तैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत वा सर्वघाति जघन्य तैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत परस्पर समान अनुभाग रचना जाननी। ऐसैं संसार अवस्था विषै संभवते पूर्व स्पर्धक जानने।

अब इहां अश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषै भए ऐसे अपूर्व स्पर्धक, तिनिका व्याख्यान करिए है –

ताहे संजलणाणं, देसावरफड्ढयस्स हेट्ठादो।
णंतगुणूणमपुव्वं, फड्ढयमिह कुणदि हु अणंतं ।।४६६।।

तस्मिन् संज्वलनानां, देशावरस्पर्धकस्य अधस्तनात्।
अनंतगुणोनमपूर्वं, स्पर्धकमिह करोति हि अनंतं ।। ४६६ ।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तहां अश्वकर्ण का प्रारंभ समय विषैं च्यारचों संज्वलन कषायनि का युगपत् अपूर्व स्पर्धक देशघाति जघन्य स्पर्धक तैं नीचैं अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप करे है। पूर्व स्पर्धकनि विषैं जघन्य स्पर्धक की जो जघन्य वर्गणा थी, ताके नीचैं घटता अनुभाग लीएं कोई वर्गणा थी नाहीं, सो अब इहां जघन्य स्पर्धक की जघन्य वर्गणा के नीचैं अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा की रचना भई। तहां पूर्व स्पर्धकनि की जघन्य वर्गणा तैं भी अपूर्व स्पर्धकनि की उत्कृष्ट वर्गणा विषैं भी अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद अंनतवां भाग मात्र हो हैं। असें अपूर्व स्पर्धक हो हैं, तिनका प्रमाण अनंत जानना।

गणणादेयपदेसगगुणहाणिट्ठाणफड्ढयाणं तु।
होदि असंखेज्जदिमं, अवराडु वरं अणंतगुणं ॥४६७॥

गणनादेकप्रदेशकगुणहानिस्थानस्पर्धकानां तु।
भवति असंख्येयं, अवरतो वरमनंतगुणं ॥ ४६७ ॥

टीका – सो अनंत कैसा है ? सो कहिए है– गणना करि कैं प्रदेश गुणहानि कहिए अनुभाग रचना विषैं जे वर्गणा, तिनविषैं प्रदेश जे परमाणू, तिनका प्रमाण एक एक विशेष घटतैं संतैं जहां आधा होइ, तहांतैं पहलैं एक गुणहानि कहिए। तिस एक गुणहानि विषैं स्पर्धकनि का प्रमाण अभव्यराशि तैं अनंत गुणा वा सिद्ध राशि के अनंतवें भाग मात्र है। ताकौं अपकर्षण भागहार तैं असंख्यात गुणा जो भागहार, ताका भाग दीएं एक भाग मात्र अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनंत संख्यातमात्र जानना। तहां जघन्य अपूर्व स्पर्धक तैं उत्कृष्ट अपूर्व स्पर्धक विषैं अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद अनंत गुणे जानना। सो अनुभाग के अल्पबहुत्व का विशेष इहां कहिए–

अपूर्व स्पर्धकनि विषैं प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद जीवराशि तैं अनंत गुणे हैं, तथापि औरनि तैं स्तोक हैं। बहुरि याकौं अनंत का भाग देइ तहां बहुभाग तिस ही मैं मिलाएं, द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं। असैं ही अंत स्पर्धक पर्यंत क्रम जानना। सो यहु अल्पबहुत्व वर्गणानि विषैं पाइए है। जे सर्व परमाणु रूप वर्ग, तिन सबनि कैं अविभाग प्रतिच्छेद मिलाय करि कह्या है। बहुरि एक एक वर्ग की अपेक्षा प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं द्वितीय तृतीयादि स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषैं दूणे, तिगुणे आदि अविभाग प्रतिच्छेद जानने। जातैं आदि वर्ग तैं आदिवर्ग के अविभाग प्रतिच्छेद का प्रमाण जेथवां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्पर्धक होइ तितना गुणा ही हो है । कषायप्राभृत द्वितीय नाम महाधवल[1] विषैं भी ऐसैं ही कह्या है । सोई विशेष करि कहिए है–

स्थिति संबंधी असंख्यात प्रमाण लीएं जो द्व्यर्ध गुणहानि, ताकरि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण अपना अपना द्रव्य स्थापि, ताकौं अनुभाग संबंधी अनंत प्रमाण लीएं जो किंचिदून ड्योढ गुणहानि, ताका भाग दीएं प्रथम वर्गणा विषैं परमाणूनि का प्रमाण आवै है । एक गुणहानि विषैं जेता स्पर्धकनि का प्रमाण सो एक गुणहानि स्पर्धक शलाका कहिए है । एक स्पर्धक विषैं जेता वर्गणानि का प्रमाण, सो एक स्पर्धक वर्गणा शलाका कहिए । इन दोऊनि कौं परस्पर गुणैं अनुभाग संबंधी गुणहानि आयाम का प्रमाण होइ । बहुरि प्रथम वर्गणा कौं गुणहानि तैं दूणा प्रमाण लीएं जो दोगुणहानि, ताका भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवै है । वर्गणा वर्गणा प्रति जितने परमाणू घटैं, ताका नाम इहां विशेष जानना, सो विशेष कौं दोगुणहानि करि गुणें प्रथम वर्गणा होइ । बहुरि एक परमाणू विषैं जेते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए, तिनके समूह का नाम वर्ग है, याकरि प्रथम वर्गणा कौं गुणैं प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है । बहुरि यातैं दूणे द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद हैं । यातैं द्वितीय भाग अधिक तृतीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के हैं, यातैं तृतीय भाग अधिक चतुर्थ स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के हैं ऐसैं क्रमतैं उत्कृष्ट संख्यातवां भाग अधिक पर्यंत तौ संख्यात भाग वृद्धि, ताके ऊपरि उत्कृष्ट असंख्यातवां भाग अधिक पर्यंत असंख्यात भाग वृद्धि, ताके ऊपरि अंत पर्यंत अनंत बृद्धि हो है । तहां द्विचरम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि कौं एक घाटि अपूर्व स्पर्धक प्रमाण का भाग देइ तहां एक भाग तामें जोडैं, चरम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है । सो प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि तैं द्वितीय तृतीयादि स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रम तैं दोय गुणा, तिगुणा आदि होइ; अंतस्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं अपूर्व-स्पर्धक प्रमाण करि गुणित अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं । सो यहु स्थूलपनैं कथन है ।

सूक्ष्मपने करि जेते विशेष घटैं, तिन विशेषनि के जेते वर्ग होंइ, तिनके अविभाग प्रतिच्छेद घटावने कौं द्वितीयादि स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणानि का स्थूलपनै जो अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कह्या, तामैं किंचित् न्यूनपना जानना । तहां

१.–यहां जयधवल शब्द चाहिए ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं द्वितीय वर्गणा विषैं एक विशेष, तृतीय वर्गणा विषैं दोय विशेष, चतुर्थ वर्गणा विषैं तीन विशेष असैं क्रम तैं विशेष घाटि घाटि पाइए है, तातैं सिद्धराशि के अनंतवें भागि वा अभव्य राशि तैं अनंत गुणी जो एक स्पर्धक वर्गणा शलाका, तितने विशेष प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं घटते जानने। सो विशेषनि के परमाणूनि का प्रमाण कौं दूणा जघन्य वर्ग करि गुणैं जो प्रमाण होइ, तितना द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं ऋण जानना। बहुरि तृतीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणानि विषैं प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं दूणा एक स्पर्धक वर्गणा शलाका मात्र विशेष घटैं, तिनके परमाणूनि का प्रमाण कौं तिगुणा जघन्य वर्ग करि गुणैं तहां ऋण हो है। असैं क्रम तैं अंत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं एक घाटि अपूर्व स्पर्धक प्रमाण करि गुणित एक स्पर्धक वर्गणा शलाका मात्र विशेष घटैं, तिनके परमाणूनि का प्रमाण कौं अपूर्व स्पर्धक का प्रमाण करि गुणित जो जघन्य वर्ग, ताकरि गुणैं तहां ऋण हो है। असैं कह्या अपना अपना ऋण, ताकी पूर्वोक्त अपना अपना स्थूल प्रमाण मैं घटाएं सूक्ष्म तारतम्यरूप अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण आवै है। असैं अव्यवधान कहिए निरंतरानै स्पर्धकनि का अल्पबहुत्व कह्या। बहुरि व्यवधान कहिए सांतर ताहिं करि कहिए है –

प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं अंत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद अनंत गुणे हैं। किंचित् ऊन अपूर्व स्पर्धक प्रमाण करि गुणित जानने। असैं क्रोध मान माया लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि विषैं अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि का अल्पबहुत्व का व्याख्यान समान जानना।

पुव्वाण फड्ढयाणं, छेत्तूण असंखभागदव्वं तु।
कोहादीणमपुव्वं, फड्ढयमिह कुणदि अहियकमा ॥४६८॥

पूर्वान् स्पर्धकान्, छित्वा असंख्यभागद्रव्यं तु।
क्रोधादीनामपूर्वं, स्पर्धकमिह करोति अधिकक्रमं ॥ ४६८ ॥

टीका – संज्वलन क्रोध मान माया लोभ के पूर्व स्पर्धकनि का जो सर्व द्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार मात्र असंख्यात का भाग दीएं, तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौं ग्रहि इहां अपूर्व स्पर्धक करै है। सोई कहिए है —

स्थिति सम्बंधी द्व्यर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र मोहनीय का देशघाति द्रव्य है; जातैं मोह के सर्वघाति द्रव्य का इहां अभाव है। ताकौ अनुभाग संबंधी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

किंचित् अधिक द्वयर्धगुणहानि का भाग दीएं प्रथम वर्गणा होइ, तातैं प्रथम वर्गणा कौं किंचित् अधिक ड्योढगुणहानि करि गुणें मोहनीय के सर्व द्रव्य का प्रमाण हो है। ताकौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग कौं जुदा राखि बहुभागनि के समान दोय भाग करिए। तहां एक भाग समान भाग विषैं जुदा राख्या, एक भाग मिलाएं कषायनि का द्रव्य साधिक आधा है। बहुरि एक समान भाग मात्र नोकषायनि का द्रव्य किंचिदून आधा है। तहां कषायनि के द्रव्य कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग जुदा राखि बहुभागनि के च्यारि समान भाग करने बहुरि जुदा राख्या एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभागनि कौं प्रथम समान भाग विषैं जोडैं, लोभ का द्रव्य हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, बहुभाग द्वितीय समान भाग विषैं जोडैं, माया का द्रव्य हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, बहुभाग तृतीय समान भाग विषैं मिलाएं, क्रोध का द्रव्य हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौं चतुर्थ समान भाग विषैं मिलाएं, मान का द्रव्य हो है। बहुरि नोकषायनि का सर्वद्रव्य क्रोधरूप संक्रमण भया, तातैं याकौं क्रोध का द्रव्य विषैं मिलाइए अैसैं सर्व मोह के द्रव्य का साधिक आठवां भागमात्र लोभ का द्रव्य भया। किंचिदून आठवां भाग मात्र माया का द्रव्य भया। किंचिदून आठवां भाग मात्र मान का द्रव्य भया। किंचिदून पांच गुणा आठवां भाग मात्र क्रोध का द्रव्य भया अैसैं अपने अपने द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि, अपूर्व स्पर्धक करिए है, ते क्रोधादिकनि अपूर्व स्पर्धक अधिक क्रम लीएं हैं तहां क्रोध के अपूर्व स्पर्धक स्तोक हैं। यातैं याकौं अनंत का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक मान के अपूर्व स्पर्धक हैं। बहुरि यातैं याकौं पूर्व भागहार तैं एक अधिक भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक माया के अपूर्व स्पर्धक हैं। बहुरि यातैं याकौं पूर्व भागहार तैं एक अधिक भागहार का भाग दीएं, तहां एक भाग मात्र अधिक लोभ के अपूर्व स्पर्धक हैं।

अंकसंदृष्टि करि जैसें क्रोध के अपूर्व स्पर्धक अठारह (१८) याकौं छह का भाग दीएं तीन पाए, तिनकौं तहां अधिक कीएं मान के इकईस हो हैं। याकौं पूर्व भागहार तैं एक अधिक सात, ताका भाग दीएं, तीन पाए तिनकरि अधिक माया के चौईस हो हैं। इनकौं पूर्व भागहार तैं एक अधिक आठ, तिनिका भाग दीएं, तीन पाए, तिनकरि अधिक लोभ के सत्ताईस हो हैं। अैसैं यथार्थकरि क्रोधादिकनि के अपूर्व स्पर्धक क्रम तैं अधिक अधिक जानने। अैसैं अपूर्व स्पर्धक करने के काल के प्रथमादि समयनि विषैं अपूर्व स्पर्धक करिए है।

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

समखंडं सविसेसं, णिक्खवियोकट्टिदादु सेसधणं ।
पक्खेवकरणसिद्धं, इगिगोउंछेण उभयत्थ ॥४६६॥

समखंडं सविशेषं, निक्षिप्यापकर्षितात् शेषधनं ।
प्रक्षेपकरणसिद्धं, एकगोपुच्छेन उभयत्र ॥ ४६६ ॥

टीका – अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिसविषैं कितने इक द्रव्य तो विशेष सहित समखण्डरूप अपूर्व स्पर्धकनि विषैं निक्षेपण करि अवशेष धन हैं, सो असैं एक गोपुच्छ करि उभयत्र कहिए पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषैं निक्षेपण करना सिद्ध भया । सोई कहिए है—

अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिसबिषैं केता इक द्रव्य करि तो अपूर्व स्पर्धक पूर्वें न थे, ते नवीन सद्भावरूप करिए है अर अवशेष द्रव्य रहे, सो पूर्वस्पर्धक पूर्वें थे अर अपूर्व स्पर्धक नएं भए, तिनविषैं निक्षेपण करिए है ।

तहां अपूर्व स्पर्धक केते द्रव्य करि करिए है ? सो कहिए है —

पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं तिस द्रव्य करि केते इक वर्ग करिए है । बहुरि असैं ही दोय घाटि अपकर्षण भाग मात्र पूर्व स्पर्धक की द्वितीयादि वर्गणानि के परमाणूनिकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भागमात्र द्रव्यकौं ग्रहि, अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं निक्षेपण करिए है । इनकौं मिलाएं वर्गणा के द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं तहां एक भाग बिना बहुभाग मात्र द्रव्य भया, सो वर्गणा का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देने तैं अर एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र वर्गणा का द्रव्य ग्रह्या, तातैं एक घाटि अपकर्षण भागहार करि गुणने तैं यहु द्रव्य पूर्व स्पर्धक की वर्गणा का द्रव्य के समान हो है; जातैं पूर्व स्पर्धकनि की सर्व वर्गणानि के द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग मात्र द्रव्य अपकर्षण कीया तब तहां बहुभाग मात्र द्रव्य रह्या सो पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का द्रव्य भी वर्गणाद्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए बहुभाग मात्र रह्या, सो इतना ही यहु द्रव्य भया, सो इतने द्रव्य करि तौ अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा भई । बहुरि ताके ऊपरि इतने इतने द्रव्य ही करि अपूर्व स्पर्धक की अन्य द्वितीयादि वर्गणा भई, सो अपूर्व स्पर्धकनि का जो प्रमाण अर एक स्पर्धकनि विषैं जो वर्गणानि का प्रमाण इन दोऊनि कौं परस्पर

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणें, जेता प्रमाण होइ, तितनी अपूर्वस्पर्धकनि की वर्गणा हैं, सो एक वर्गणा का पूर्वोक्त प्रमाण द्रव्य होइ तो इतनी वर्गणा का केता द्रव्य होइ ऐसैं त्रैराशिक करि पूर्वोक्त द्रव्यकौं अपूर्व स्पर्धक की वर्गणानि का प्रमाण करि गुणें अपूर्व स्पर्धक की वर्गणानि के आदि धनका प्रमाण हो है। सो यहु तौ पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के सदृश अपूर्व स्पर्धकनि की सर्व वर्गणानि की समान अपेक्षा करि समपट्टिका द्रव्य भया। अब इनविषै जो विशेष[1] कहिए चय, ते जैसें बधती पाइए है सो कहिए है—

पूर्व स्पर्धकनि विषैं गुणहानि गुणहानि प्रति उपरि तैं नीचै दूणा विशेष का प्रमाण है, सो इहां पूर्वस्पर्धक की प्रथम गुणहानि के नीचैं अपूर्वस्पर्धकनि की रचना भई; तातैं पूर्वस्पर्धकनि की प्रथम गुणहानि विषैं जो विशेष का प्रमाण पूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा कौं दोगुणहानि का भाग दीएं हो है, तातैं दूणां अपूर्वस्पर्धकनि विषैं विशेष का प्रमाण जानना, सो ऐसा एक विशेष तौ अपूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा के नीचैं भई, जो अंत अपूर्वस्पर्धक की अंत वर्गणा, तीहिंविषैं अधिक हो है। बहुरि ताके नीचैं द्विचरम वर्गणा विषैं दोय विशेष अधिक हो हैं, ऐसैं क्रमतैं एक एक विशेष अधिक होइ, अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का जेता प्रमाण, तितने विशेष प्रथम अपूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं हो है, सो इहां आदि एक, उत्तर एक, गच्छ अपूर्वस्पर्धक वर्गणा मात्र स्थापि **"सैकपदाहतपददले"** इत्यादि सूत्र करि जेता संकलन धन होइ तितना उत्तर धन जानना। सो पूर्वोक्त आदि धन अर इस उत्तरधन कौं जोड़ैं जो प्रमाण होइ तितना द्रव्य कौं तिस अपकर्षण कीया द्रव्यतैं ग्रहि करि ऐसैं अपूर्वस्पर्धकनि की रचना करिए है। पूर्वस्पर्धक तो पूर्वैं थे अपूर्व स्पर्धक पूर्वैं थे, तातैं तिनका सद्भाव होने कौं इतना द्रव्य तौ जुदा ही अपूर्वस्पर्धकनि विषैं दीया, सो जैसैं गऊ का पूंछ क्रम तैं मोटाई की अपेक्षा घटता हो है, तैसैं इहां चय घटता क्रम होने तैं अपूर्वस्पर्धकनि का एक गोपुच्छ भया। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वस्पर्धकनि की भी रचना चय घटता क्रम लीएं हैं। तातैं पूर्व अपूर्वस्पर्धकनि का मिल करि भी एक गोपुच्छ हो है, सो ऐसैं एक गोपुच्छ होने करि तिस अपकर्षण किया द्रव्य विषैं पूर्वोक्त द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या सो पूर्वस्पर्धक वा अपूर्वस्पर्धकनि विषैं सर्वत्र विभाग करि देना। तहां अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण एक शलाका स्थापि, ताका भाग अपूर्वस्पर्धक वर्गणा प्रमाण कौं दीएं, अपूर्वस्पर्धक संबंधी तौ एक शलाका भई

---

१. 'विशेष' के स्थान पर 'अवशेष' शब्द ख व घ हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अर ताहीका भाग ड्योढ गुणहानि गुणित पूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण कौं दीएं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार कौं ड्योढ गुणा करिए इतनी पूर्व स्पर्धक की वर्ग[1] शलाका भई। इहां पूर्व स्पर्धक की एक गुणहानि विषैं जो स्पर्धकनि का प्रमाण है, ताकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीएं अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण हो है, तातैं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार कह्या। अर पूर्व स्पर्धकनि विषैं नाना गुणहानि अनंती हैं, तथापि द्रव्य की अपेक्षा ड्योढ गुणहानि गुणित वर्गणा मात्र ही है, तातैं ड्योढ का गुणकार कीया है, असा जानना। सो पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि की शलाकानि कौं मिलाय ताका भाग तिस अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं जो अवशेष द्रव्य रह्या था, ताकौं दीएं जो प्रमाण आया, ताकौं पूर्व स्पर्धक संबंधी बहुशलाका करि गुणैं पूर्व स्पर्धकनि विषैं देने योग्य द्रव्य का विभाग आवै है अर तिसही कौं अपूर्व स्पर्धक संबंधी एक शलाका करि गुणैं अपूर्व स्पर्धकनि विषैं देने योग्य द्रव्य का विभाग आवै है, सो इस अपूर्व स्पर्धक का विभागरूप द्रव्य अर जिस द्रव्य करि पूर्वैं अपूर्व स्पर्धक की रचना करनी कही थी, असैं चयधन सहित समपट्टिकारूप धन इन दोऊनि कौं मिलाएं अपूर्व स्पर्धक संबंधी सर्व द्रव्य भया। सो **'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे'** इत्यादि सूत्र करि ताकौं अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण जो गच्छ, ताका भाग दीएं मध्यधन होइ। याकौं एक घाटि जो गच्छ, ताका आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताका भाग दीएं विशेष होइ, सो एक घाटि गच्छ का आधा जो प्रमाण होइ, तितने विशेष तिस मध्यधन विषैं जोडें जो होइ, तितना द्रव्य अपूर्व स्पर्धकनि की आदि वर्गणा विषैं दीजिए है। तातैं एक एक विशेष घटता क्रम लीएं द्वितीयादि वर्गणानि विषैं क्रमतैं दीजिए है। असैं एक घाटि गच्छ प्रमाण चयनि करि हीन द्रव्य अंत वर्गणा विषैं दीजिए है, असैं तौ अपूर्व स्पर्धक नवीन कीए।

बहुरि पूर्व स्पर्धकनि की रचना तौ पूर्वैं थी ही अब इनविषैं इहां पूर्वोक्त बहुशलाकानि का जो विभाग रूप द्रव्य कह्या था, सो देना। सो **'दिवड्ढगुणहाणि-भाजिदे पढमा'** इत्यादि सूत्र करि तिस पूर्व स्पर्धक संबंधी विभाग रूप द्रव्य कौं साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं जेता प्रमाण होइ तितना द्रव्य तो पूर्व स्पर्धकनि की आदि वर्गणा विषैं निरूपण करिए है। बहुरि याकौं दो गुणहानि का भाग दीएं अवशेष का प्रमाण होइ सो ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानि विषैं प्रथम गुणहानि पर्यंत एक एक विशेष घटता क्रम लीएं अर गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम लीएं द्रव्य निक्षेपण करिए है।

---

१. हस्तलिखित ध प्रति में 'वर्गणा' मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उक्कट्टिदं तु देदि, अपुव्वादिमवग्गणाउ हीणकमं ।
पुव्वादिवग्गणाए, असंखगुणहीणयं तु हीणकमा ॥४७०॥

अपकर्षितं तु ददाति, अपूर्वादिमवर्गणा हीनक्रमं ।
पूर्वादिवर्गणायामसंख्यगुणहीनकं तु हीनक्रमाः ॥ ४७० ॥

टीका – पूर्वोक्त विधान करि अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिसविषैं ते अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा विषैं बहुत द्रव्य दीजिए है, तातैं ताकी द्वितीयादि अंत वर्गणा पर्यंत विषैं विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषैं जो द्रव्य दीया, तातैं साधिक अपकर्षण भागहार मात्र जो असंख्यात तितना गुणा घटता पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं द्रव्य दीजिए है । इहां नवीन द्रव्य दीया तिस ही की विवक्षा जाननी । इस पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का पुरातन द्रव्य वर्गणा के द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं बहुभाग मात्र है । तिस सहित नवीन दीया द्रव्य है, सो अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा के द्रव्य तैं एक विशेष मात्र ही घटता जानना । जातैं पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि का एक गोपुच्छ भया है । बहुरि तिस पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं उपरि द्वितीयादि वर्गणानि विषैं एक एक चय घटता द्रव्य निक्षेपण करिए है । इस ही कथन के विशेष निर्णय करने कौं क्षेत्र रूप कल्पना करि स्थापि कथन कीजिए है—

पूर्व स्पर्धकनि का सर्व द्रव्य ड्योढ गुणहानि गुणित प्रथम वर्गणा मात्र है; सो ड्योढ गुणहानि का जेता प्रमाण तितना लंबा अर प्रथम वर्गणा का जेता परमाणूनि का प्रमाण तितना चौडा क्षेत्र असा स्थापना □ । यामैं अपकर्षण कीया द्रव्य कौं जुदा करने के अर्थि चौडाई विषैं अपकर्षण का भागहार का जेता प्रमाण तितने खंड करिए, तब असा हो है— 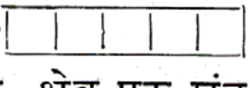 । तहां असैं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र चौडा क्षेत्र एक खंड का है, सो अपकर्षण कीया द्रव्य का स्वरूप जानना । अवशेष बहुभाग मात्र चौडा क्षेत्र अवशेष खंडनि का रह्या, सो अपकर्षण कीएं पीछैं अवशेष पूर्व स्पर्धक स्वरूप जानने । लंबे ते दोऊ ही स्पर्धक गुणहानि मात्र हैं । ते एक खंड बहुखंड असैं भए 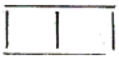 । बहुरि तहां एक खंड असा □ तींहिविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य का विभाग करने के अर्थि एक गुणहानि का स्पर्धक प्रमाण कौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीएं अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण होइ अर तहां लंबाई ड्योढ गुणहानि मात्र थी, तातैं असंख्यात गुणा जो

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपकर्षण भागहार, ताकौं ड्योढ गुणा कीएं जेता प्रमाण होइ तितना तिस एक खंड की लंबाई विषैं खंड असे 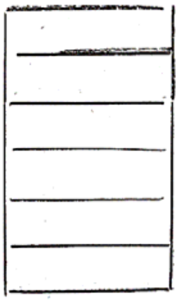 करने । तहां एक खंड विषैं लम्बाई का प्रमाण अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण मात्र आया, चौडे पूर्वोक्त प्रमाण मात्र है ही । बहुरि इन खंडनि विषैं जिस द्रव्य करि अपूर्व स्पर्धक नवीन बनैं, तिस द्रव्य रूप साधिक एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र खंड ग्रहण करने । इहां अपूर्व स्पर्धक प्रमाण गच्छ का एक बार संकलन धन मात्र जे पूर्व स्पर्धक सम्बन्धी विशेष तैं दूणा प्रमाण लीएं विशेष, तिनका अधिकपना साधिक शब्द करि जानना । सो तिन खंडनि कौं ग्रहण करि पूर्वै जे अवशेष बहुखंड मात्र पूर्व स्पर्धक स्वरूप क्षेत्र असा□रह्या था, ताके नीचैं अविरोधपने जोडिए, सो जोडने योग्य तैं सर्व खंडनि कौं चौडाई विषैं बरोबरि आगैं असे 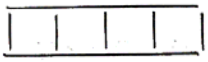 स्थापिए तब प्रथम वर्गणा कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक खंड की चौडाई है, ताकौ इहां ग्रहे हुए खंडनि का प्रमाण एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र ताकरि गुणें चौडाई का प्रमाण हो है, सो अवशेष पूर्वस्पर्धकरूप क्षेत्र की चौडाई के समान हो है । बहुरि इहां ग्रहै हुए खंडनि का प्रमाण विषैं विशेषनि का साधिकपना कह्या है, तातैं तिस पूर्व स्पर्धकस्वरूप क्षेत्र तैं चौडाई का प्रमाण क्रम तैं किछू साधिक जानना । अर इहां जोडने योग्य खंडनि की लम्बाई अपूर्व स्पर्धक प्रमाण मात्र है, तातैं नीचैं जोड्या क्षेत्र का लम्बाई का प्रमाण अपूर्व स्पर्धक प्रमाण मात्र भया, सो असैं पूर्व स्पर्धकनि का क्षेत्र के नीचैं तिस द्रव्य करि अपूर्व स्पर्धक की रचना भई तिस द्रव्यरूप जो ग्रहे खंडनि का अपूर्व स्पर्धकरूप क्षेत्र, ताकौं जोडैं असा

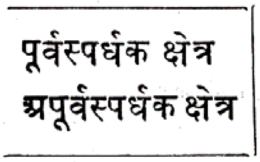

भया । असैं पूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं अपूर्वस्पर्धकनि की वर्गणा अनुक्रम तैं विशेष अधिक जाननी । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं जितना द्रव्य करि अपूर्वस्पर्धक बनैं, तिनरूप क्षेत्र जोडने का विधान तौ कह्या अब अवशेष रह्या द्रव्य पूर्व अपूर्वस्पर्धकनि विषैं देना, तिसरूप क्षेत्र जोडने का विधान कहिए है—

असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार तैं ड्योढ गुणा प्रमाण लीएं खंड कीएं थे, तिनविषैं साधिक एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र खंड ग्रहण कीएं पीछैं

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अवशेष जे खंड रहे, तिन विषैं एक खंड अैसा □ । ताकौं सकल खंड कहिए। ताकी चौडाई विषैं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार तैं ड्योढ गुणा प्रमाण मात्र खंड अैसें □□□□□ करने, सोइ तितने खंडनि कौं विकल खंड कहिए। तहां एक विकल खंड कौं अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी क्षेत्र की चौड़ाई विषैं क्रम तैं जोडना अर अवशेष विकल खंडनि कौं तैसें ही पूर्व स्पर्धक सम्बन्धी क्षेत्र की चौडाई विषैं अनुक्रम परिपाटी लीएं जोडना। याही प्रकार जेते अवशेष सकल खंड रहे, तिनकौं पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी क्षेत्र विषैं अविरोधपने चौड़ाई विषैं जानने। अैसें जोडें अैसा

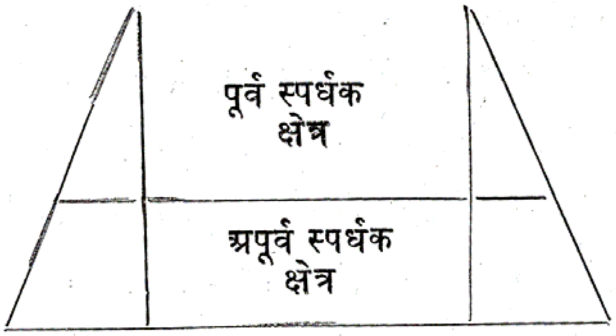

क्षेत्र भया। इहां पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं जोडैं समस्त विकल खंड ते मिलि करि भी एक सकल खंड प्रमाण न भए, जातैं अपकर्षण भागहार मात्र विकल खंडनि करि हीन हो है। अैसें पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं दीया किंचिदून एक सकल खंड है। अर अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषैं पहिले वा पीछै दीए हुए एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र सकल खंड हैं, तातैं अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषैं दीया द्रव्य तैं पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं दीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है। असंख्यात का प्रमाण इहां साधिक अपकर्षण भागहार मात्र जानना अैसें पूर्वोक्त कथन कौं क्षेत्ररूप स्थापि प्रगट कीया।

कोहादीणमपुव्वं, जेट्ठं सरिसं तु अवरमसरित्थं।
लोहादिआदिवग्गणअविभागा होंति अहियकमा ॥४७१॥

क्रोधादीनामपूर्वं, ज्येष्ठं सदृशं तु अवरमसदृशं।
लोभादिआदिवर्गणाअविभागा भवंति अधिकक्रमाः ॥४७१॥

टीका – क्रोधादि के चारयों कषायनि का अपूर्व स्पर्धकनि की उत्कृष्ट वर्गणा जो अंत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा, सो अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि के प्रमाण की अपेक्षा समान है। बहुरि जघन्य वर्गणा जो प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा, सो

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

असमान है। तहां लोभादिक की जघन्य वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रम करि अधिक हैं। लोभ की जघन्य वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद तौं स्तोक हैं, तातैं मायाकी के अधिक है, तातैं मानकी के अधिक हैं, तातैं क्रोधकी के अधिक हैं।

सगसगफड्ढयएहिं, सगजेट्ठे भाजिदे सगीआदि ।
मज्झेवि अणंताओ, वग्गणगाओ समाणाओ ॥४७२॥

स्वकस्वकस्पर्धकैः स्वकज्येष्ठे भाजिते स्वकीयादि ।
मध्येऽपि अनंता, वर्गणाः समानाः ॥४७२॥

टीका – सामान्य आलाप करि अभव्य राशि तैं अनंत गुणा वा सिद्ध राशि के अनंतवें भाग मात्र हीनाधिकरूप जो अपना अपना स्पर्धकनि का जो प्रमाण, ताका भाग अपनी अपनी उत्कृष्ट वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कौं दीएं अपनी अपनी आदि वर्गणा का प्रमाण आवै है।

अंकसंदृष्टि करि जैसें च्यारचों कषायनि के समान प्रमाण लीएं उत्कृष्ट वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद पन्द्रह सौ बारह (१५१२) इनकौं लोभ, माया, मान, क्रोध के स्पर्धकनि का प्रमाण क्रम तैं सत्ताइस, चौबीस, इकईस, अठारह का भाग दीएं लोभ की जघन्य वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद छप्पन (५६), मायाकी के तरेसठि (६३), मानकी के बहत्तरि (७२), क्रोधकी के चौरासी (८४) हो हैं। अथवा अपनी अपनी जघन्य वर्गणानि के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कौं अपनी अपनी स्पर्धकनि का प्रमाण करि गुणैं अपनी अपनी उत्कृष्ट वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है। कैसें ? सो कहिए है—

लोभादिक की प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद समूह तैं दूसरे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के दूणे, तीसरे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के तिगुणे, चौथे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के चौगुणे ऐसें क्रम तैं जितने अपने स्पर्धकनि का प्रमाण, तितने गुणे अंत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है, सो च्यारचों कषायनि का समान है। बहुरि मध्य विषैं भी अनंत वर्गणा च्यारचों कषायनि की परस्पर समान हो है, सो कथन आगैं करिए है।

जे हीणा अवहारे, रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।
हीणवहारेणहियं, अद्धं पुव्वं फलेणहियं ॥४७३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ये हीणा अवहारे, रूपाः तैः गुणितं पूर्वफलं ।
हीनावहारेणाधिके, अर्धं पूर्वं फलेनाधिकं ॥४७३॥

टीका – इस गाथा का अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासार विषैं किछू कीया नाहीं अर मेरे जानने में भी स्पष्ट न आया, तातैं इहां न लिख्या है । बुद्धिमान होइ यथार्थ याका अर्थ होइ सो जानियो ।

कोहदुसेसेणवहिदकोहे तक्कंडयं तु माणतिए ।
रूपहियं सगकंडयहिदकोहादी समाणसला ॥४७४॥

क्रोधद्विशेषेणावहितक्रोधे तत्कांडकं तु मानत्रयं ।
रूपाधिकं स्वककांडकहितक्रोधादि समानशलाकाः ॥४७४॥

टीका – क्रोधद्विक अवशेष कहिए क्रोध के स्पर्धकनि का प्रमाण कौं मान के स्पर्धकनि का प्रमाण विषैं घटाएं जो अवशेष रहै, ताका भाग क्रोध के स्पर्धकनि का प्रमाण कौं दीएं जो प्रमाण आवै ताका नाम क्रोधकांडक है । बहुरि मानत्रिक विषैं एक एक अधिक है, सो क्रोधकांडक तैं एक अधिक का नाम मानकांडक है । यातैं एक अधिक का नाम मायाकांडक है । यातैं एक अधिक का नाम लोभकांडक है ।

अंकसंदृष्टि करि जैसैं क्रोध के स्पर्धक अठारह, ते मान के इकईस स्पर्धक विषैं घटाएं अवशेष तीन, ताका भाग क्रोध के अठारह स्पर्धक कौं दीएं क्रोध कांडक का प्रमाण छह, यातैं एक अधिक मान, माया, लोभ के कांडकनि का प्रमाण क्रम तैं सात, आठ, नवरूप जानने । बहुरि अपने अपने कांडकनि का भाग अपने अपने स्पर्धकनि का प्रमाण कौं दीएं, जो नाना कांडकनि का प्रमाण आवै, तितनी वर्गणानि के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्यों कषायनि के परस्पर समान हो हैं । कैसे ? सो कहिए है–

क्रोधादिक की प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तैं द्वितीय तृतीयादि स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रमतैं दूणे, तिगुणे इत्यादि होइ अपना अपना कांडक का जेता प्रमाण, तितना स्थान भएं जो स्पर्धक, ताकी प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्यों कषायनि के समान[1] हो हैं । बहुरि तहांतैं ऊपरि प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के जेते अविभाग प्रतिच्छेद, तितने तितने एक एक स्पर्धक

[1] समान के स्थान पर घ प्रति में 'असमान' पाठ मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

की प्रथम वर्गणा विषैं बधते अपने अपने कांडक प्रमाण स्थान भएं जो स्पर्धक, ताकी प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद समान हो हैं। या प्रकार अपना अपना कांडक मात्र स्पर्धक भएं च्यार्‌यों कषायनि की वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि की समानता होतैं नाना कांडक वर्गणानि विषैं समानता हो है।

अंकसंदृष्टि करि जैसें क्रोध, मान, माया, लोभ के प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रमतैं चौरासी, बहत्तरि, तरेसठि, छप्पन हैं। बहुरि ताके ऊपरि एक एक स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं तितने तितने बधते अपना कांडक मात्र छह, सात, आठ, नव स्पर्धक भए। तहां प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्‌यों कषायनि के परस्पर समान पांचसैं च्यारि हैं। बहुरि ताके ऊपरि तैसैं ही बधती होतैं अपने कांडक मात्र स्पर्धक भए तहां प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यारयों कषायनि के समान एक हजार आठ हो हैं। बहुरि ताके ऊपरि तैसैं ही बधती होतैं अपने कांडक मात्र स्थान भए तहां प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्‌यों कषायनि के समान पन्द्रह सौ बारह हो हैं। असैं अपना अपना कांडक का भाग अपना अपना स्पर्धक प्रमाण कौं दीएं नाना कांडक का प्रमाण तीन आया सो तीन ही स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा परस्पर समानरूप हैं और वर्गणानि का समान रूप नाहीं है।

क्रोध	मान	माया	लोभ
१५१२	१५१२	१५१२	१५१२
०	०	०	०
०	०	०	०
१०९२	१०८०	१०७१	१०६४
१००८	१००८	१००८	१००८
०	०	०	०
०	०	०	०
५८८	५७६	५६७	५६०
५०४	५०४	५०४	५०४
४२०	४३२	४४१	४४८
३३६	३६०	३७८	३९२
२५२	२८८	३१५	३३६
१६८	२१६	२५२	२८०
८४	१४४	१८९	२२४
	७२	१२६	१६८
		६३	११२
			५६

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ग्रैसें इहां ग्रविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कह्या है । सो विवक्षित वर्गणा विषैं जो एक परमाणू रूप वर्ग तीहिं विषैं जेते ग्रविभाग प्रतिच्छेद पाइए, ताकी ग्रपेक्षा कथन कीया है । सर्व वर्गनि का समूह रूप वर्गणा के ग्रविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण यथासंभव जानना ।

ताहे दव्ववहारो, पदेसगुणहाणिफड्ढयवहारो ।
पल्लस्स पढममूलं, ग्रसंखगुणियक्कमा होंति ।।४७५।।

तत्र द्रव्यावहारः प्रदेशगुणहानिस्पर्धकावहारः ।
पल्यस्य प्रथममूलं ग्रसंख्यगुणितक्रमा भवंति ।।४७५।।

टीका – ग्रश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषैं ग्रपूर्व स्पर्धक करने का द्रव्य ग्रहण करने के ग्रर्थि सर्व द्रव्य कौं तिस ग्रपकर्षण भागहार का भाग दीया, तातैं प्रदेश संबंधी एक गुणहानि विषैं जेता स्पर्धकनि का प्रमाण, ताकौं ग्रपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण ल्यावने के ग्रर्थि जाका भाग दीया, सो ग्रसंख्यात गुणा है । तातैं पल्य का प्रथम वर्गमूल ग्रसंख्यात गुणा है । इहां ग्रैसा प्रयोजन जानना–

जो ग्रपकर्षण भागहार तैं ग्रसंख्यात गुणा वा पल्य का प्रथम वर्गमूल के ग्रसंख्यातवें भाग मात्र जो भागहार, ताका भाग ग्रनुभाग संबन्धी एक गुणहानि की स्पर्धक शलाका कौं दीएं प्रथम समय विषैं कीए जो ग्रपूर्व स्पर्धक, तिनका प्रमाण ग्रावै है ।

ताहे ग्रपुव्वफड्ढयपुव्वस्सादीदणंतिमुवदेदि ।
बंधो हु लताणंतिमभागो त्ति ग्रपुव्वफड्ढयदो ।।४७६।।

तस्मिन् ग्रपूर्वस्पर्धकपूर्वस्यादितोऽनंतिममुदेति ।
बंधो हि लतानंतिमभाग इति ग्रपूर्वस्पर्धकतः ।।४७६।।

टीका – तिस ग्रश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषैं उदय निषेक संबंधी सर्व ग्रपूर्व स्पर्धक ग्रर पूर्व स्पर्धक को ग्रादि तैं लगाय ताका ग्रनंतवां भाग उदय हो है । कैसें ? सो कहिए है–

ग्रपूर्व स्पर्धकरूप परिणया है ग्रनुभाग सत्त्व जाका ग्रैसा जो कर्म, ताका ग्रसंख्यातवां भाग मात्र प्रदेशनि कौं ग्रपकर्षण करि उदीरणा कर्ता जो जीव, ताकैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वर्तमान समय विषैं उदय आवने योग्य जो उदय निषेक, तींहि विषैं सर्व ही अनुभाग सत्व अपूर्व स्पर्धक स्वरूप हैं। तातैं ते तौ सर्व ही स्पर्धक उदीरणारूप हैं अर उदय निषेक तैं ऊपरि के निषेक, तिनके समान अनुभाग शक्ति धरैं जे अपूर्व स्पर्धक ते उदय न हो हैं। तातैं ते अनुदीर्ण रूप हैं। असैं केई अपूर्वस्पर्धकनि का उदय अर केई अपूर्व स्पर्धकनि का अनुदय जानना। बहुरि पूर्व स्पर्धकनि विषैं भी जे प्रथम स्थिति विषैं लता दारुरूप स्पर्धक हैं, तिन विषैं लता समान अनुभाग का अनंतवां भाग मात्र स्पर्धक उदय हो है, सो उदीरणारूप है। बहुरि उदय निषेक तैं ऊपरि के निषेकनि के समान शक्ति लीएं लता भाग का अनंतवां भाग उदय न हो है, सो अनुदीर्णरूप है। बहुरि ताके उपरिवर्ती लताभाग का अनंत बहुभागनि विषैं बहुभाग अर समस्त दारु भाग है सो उदय कौं न प्राप्त हो है। असैं पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा तैं लगाय अनंतवां भाग उदयरूप हो है, अन्य अनुदयरूप है। असें अश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषैं उदय होने का स्वरूप कह्या। बहुरि इस समय विषैं संज्वलन का बंध हो है। तहां पूर्वं लता भाग के अनंतवें भाग मात्र बंध होता था, सो अब तातैं अनंतवें भाग मात्र अपूर्व स्पर्धक का प्रथम स्पर्धक तैं लगाय अंत स्पर्धक पर्यंत अर पूर्व स्पर्धकनि का लता भाग का अनंतवां भाग पर्यंत जे स्पर्धक, तिनरूप होइ बंध रूप स्पर्धक परिणमैं हैं। इहां उदय रूप अनुभाग तैं बंधरूप अनुभाग अनंत गुणा घटता है। असा जानना।

असैं यहु कही सो अश्वकर्ण करण काल की प्रथम समय संबन्धी प्ररूपणा जाननी।

बिदियादिसु समयेसु वि, पढमं व अपूव्वफड्ढयाण विही।
णवरि य संखगुणूणं........[1] ....पडिसमयं ॥४७७॥

द्वितीयादिषु समयेषु अपि प्रथमं व अपूर्वस्पर्धकानां विधिः।
नवरि च संख्यगुणोनं............तु प्रतिसमयम् ।४७७॥

टीका – अश्वकर्ण करण का द्वितीयादि समयनि विषैं अपूर्व स्पर्धकनि का विधान, ताके प्रथम समयवत् जानना। तहां विशेष है सो कहिए है – इस गाथा विषैं लिखनेवाले ने अक्षर केते इक न लिखे, तातैं आधा गाथा का अर्थ न जानि इहां नाहीं लिख्या है।

---

१ छहों हस्तलिखित प्रतियों में असा ही मिला। हमने कुछ जोडने का अभिप्राय नहीं रखा।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णवफड्ढयाण करणं, पडिसमयं एवमेव णवरिं तु ।
दव्वमसंखेज्जगुणं, फड्ढयमाणं असंख्यगुणहीणं ।।४७८।।

नवस्पर्धकानां करणं, प्रतिसमयं एवमेव नवरिं तु ।
द्रव्यमसंख्येयगुणं, स्पर्धकमानं असंख्यगुणहीनम् ।।४७८।।

टीका – असैं ही प्रथम समयवत् समय समय प्रति नवीन स्पर्धकनि कौं करै है । विशेष इतना– तहां द्रव्य तौं क्रम तें असंख्यात गुणा बधता अपकर्षण करिए है । अर नवीन स्पर्धक कीएं तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता हो है । सोई कहिए है–

अश्वकर्ण का द्वितीय समय विषें जो प्रथम समय विषें पूर्व स्पर्धकनि के द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य अपकर्षण किया था, तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य कौं पूर्व स्पर्धक अर प्रथम समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धक, तिनका जो द्रव्य था, तातैं अपकर्षणकरि तिस द्रव्य का असंख्यातवां भाग मात्र द्रव्य करि तौ इहां नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है । ते प्रथम समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धक तिनकी प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के नीचैं घटता अनुभाग लीएं करिए है ।

तहां तिस प्रथम वर्गणा तें एक एक वर्गणा प्रति एक एक विशेष मात्र द्रव्य की अधिकता द्वितीय समय संबंधी नवीन अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा पर्यंत जाननी । तहां पूर्वोक्त प्रकार समपट्टिका धन, चयधन जोडैं जेता द्रव्य होइ तितने द्रव्य करि तौ इहां नवीन स्पर्धक बनैं । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या ताकौं द्वितीय समय विषैं कीने नवीन अपूर्व स्पर्धक अर पूर्वस्पर्धक, अर अपूर्व स्पर्धक तिनिका एक गोपुच्छ भया, तिसविषैं चय घटता क्रम करि सर्वत्र देना । प्रथम समय विषैं कीने बहुरि प्रथम समय विषैं कीएं अपूर्व स्पर्धक, तिनिके प्रमाण तें द्वितीय समय विषैं कीएं नवीन अपूर्वस्पर्धक तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता जानना । बहुरि अश्वकर्ण करण का तृतीय समय विषैं जो द्वितीय समय विषैं द्रव्य अपकर्षण कीया, तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य पूर्व स्पर्धक अर प्रथम द्वितीय समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धक, तिनके द्रव्य तें अपकर्षण करिए है, ताके असंख्यातवां भागमात्र द्रव्य करि तौ द्वितीय समय विषैं कीए स्पर्धक, तिनके नीचैं इहां नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है अर अवशेष द्रव्य कौं तृतीय, द्वितीय, प्रथम समय संबंधी अपूर्व स्पर्धकनि का एक गोपुच्छ भया ताविषैं क्रम

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि निक्षेपण करिए है। इहां द्वितीय समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण तैं तृतीय समय विषैं कीए नवीन अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण असंख्यात गुणा घटता जानना। अैसैं ही अपूर्व स्पर्धक करण काल का अंत समय पर्यंत समय समय प्रति असंख्यात गुणा द्रव्य कौं अपकर्षण करै है अर नवीन अपूर्व स्पर्धक नीचैं नीचैं हो हैं, तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता हो है। अन्य विशेष जैसें प्रथम समय विषैं कह्या है तैसें जानना।

पढमादिसु दिज्जकमं, तक्कालजफड्ढयाण चरिमो त्ति।
हीणकमं से काले, असंखगुणहीणयं तु हीणकमं ॥४७६॥

प्रथमादिषु देयक्रमं, तत्कालजद्रव्यस्पर्धकानां चरम इति।
हीनक्रमं स्वे काले, असंख्यगुणहीनकं तु हीनक्रमम् ॥४७९॥

टीका – अपकर्षण कीया द्रव्य कौं जैसें दीया तैसें जो अनुक्रम सो देय क्रम कहिए; सो अैसैं हैं–

अपूर्व स्पर्धक करणकाल का प्रथमादि समयनि विषैं तिस काल कीए स्पर्धकनि का अंत पर्यंत तौ विशेष हीन क्रम लीएं अर ताके अनंतरि असंख्यात गुणा घटता ताके ऊपरि विशेष हीन क्रम लीएं जानना। सो कहिए है–

प्रथम समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य, तिसविषैं तिस समय कीए अपूर्व स्पर्धक, तिनकी प्रथम वर्गणा बिषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। तातैं तिनकी द्वितीय वर्गणा आदि अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषैं दीया द्रव्य तैं अपूर्वस्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषैं असंख्यात गुणा घटता है। तातैं ताके ऊपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए बहुरि ? द्वितीय समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य, तिसविषैं तिस समय कीए नवीन अपूर्वस्पर्धक तिनकी प्रथम वर्गणा विषैं बहुत द्रव्य अर द्वितीयादि अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है। बहुरि तिसकी अंत वर्गणा के द्रव्य तैं प्रथम समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। तातैं ताके ऊपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत वा ताके ऊपरि स्पर्धकनि की प्रथमादि अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है। बहुरि तृतीय समय विषैं नवीन बने अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं बहुत द्रव्य, ताके ऊपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि द्वितीय समय विषैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कीए अपूर्व स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। ताके उपरि तिनकी अंत वर्गणा पर्यंत वा प्रथम समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धक की प्रथमादि अनंत वर्गणा पर्यंत वा पूर्व स्पर्धकनि की प्रथमादि अंत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ऐसैं ही चतुर्थादि समयनि विषैं भी जानना। इहां विवक्षित समय विषैं जे अपूर्व स्पर्धक बनैं, ते तौ अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं केते इक द्रव्य तैं बनै अर तिनके ऊपरि जे स्पर्धक हैं, ते पूर्वै थे ही। बहुरि तिन सबनि विषैं अवशेष द्रव्य विभाग करि दीया, तातैं निजकाल विषैं बने अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषैं दीया द्रव्य तैं अनंतर वर्गणा विषैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य दीया कह्या, अन्यत्र चय घटता क्रम लीएं कह्या है।

पढमादिसु दिस्सकमं, तक्कालजफड्ढयाण चरिमो त्ति।
हीणकमं से काले, हीणं हीणं कमं तत्तो ॥४८०॥

प्रथमादिषु दृश्यक्रमं, तत्कालजस्पर्धकानां चरम इति।
हीनक्रमं स्वे काले, हीनं हीनं क्रमं ततः ॥४८०॥

टीका – अपूर्व स्पर्धक करण काल का प्रथमादि समयनि विषैं दृश्य कहिए देखने में आवै ऐसा परमाणूनि का प्रमाण, तिनका अनुक्रम सो दृश्यक्रम कहिए। सो कैसें है ? सो कहिए है–

तहां तिस विवक्षित समय विषैं बने अपूर्व स्पर्धक, तिनका तो जो देय द्रव्य, सो ही दृश्य द्रव्य है। जातैं तिस समय अपकर्षण कीया द्रव्य ही तैं तिनकी रचना भई है। सो तिनकी प्रथम वर्गणा तैं लगाय अंत वर्गणा पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दृश्य है। बहुरि तिस अंत वर्गणा के द्रव्य तैं ताके ऊपरि जो वर्गणा, तिसका भी दृश्य द्रव्य एक चय मात्र घटता है जातैं दिया द्रव्य तौ तिस अंत वर्गणा द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता है तथापि दीया द्रव्य अर पूर्वै वाका सत्तारूप पुरातन द्रव्य दोऊ मिलि तिसतैं एक चय मात्र घटता दृश्य द्रव्य हो है। बहुरि ताके उपरि पूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा पर्यंत दीया द्रव्य अर पूर्व द्रव्य मिलि क्रम तैं चय प्रमाण करि घटता दृश्य द्रव्य जानना। ऐसैं विवक्षित समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धक तिनकी प्रथम वर्गणा तैं लगाय पूर्व स्पर्धकनि की अंत वर्गणा पर्यंत एक गोपुच्छ भया, तातैं तहां चय घटता क्रम लीएं ही दृश्य द्रव्य जानना।

ऐसैं अश्वकर्ण करण काल का प्रथमादि समयनि विषैं यावत् प्रथम अनुभाग कांडक का घात न होइ तावत् स्थितिकांडक, अनुभाग कांडक, स्थितिबंध, अनुभाग

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सत्त्व तौ तिन समयनि विषैं समान रूप है। अर अप्रशस्तकर्मनि का अनुभाग बंध समय समय अनंत गुणा घटता है। अर गुणश्रेणी विषैं समय समय असंख्यात गुणा द्रव्य कौं अपकर्षण करि दीजिए है। अर अतीत समय संबंधी स्पर्धकनि के नीचैं अपूर्व शक्ति लीएं नवीन अपूर्व स्पर्धक समय समय प्रति करिए है।

असैं प्रथम अनुभाग कांडक का घात भएं कहा हो है ? सो कहैं हैं-

पढमाणुभागखंडे, पडिदे अणुभागसंतकम्मं तु ।
लोभादणंतगुणिदं, उवरिं पि अणंतगुणिदकमं ॥४८१॥

प्रथमानुभागखंडे, पतिते अनुभागसत्त्वकर्म तु ।
लोभादनंतगुणितमुपर्यपि अनंतगुणितक्रमं ॥४८१॥

टीका – असे प्रथम अनुभाग खंड का पतन होतैं लोभ तैं अनंत गुणा क्रम लीएं अनुभाग सत्त्वरूप कर्म हो है। तहां लोभ का स्तोक, तातैं माया का अनंत गुणा, तातैं मान का अनंत गुणा, तातैं क्रोध का अनंत गुणा अनुभाग सत्व हो है; असा जानना जातैं तहां अश्वकर्ण क्रिया करि प्रथम अनुभाग कांडक का घात भए पीछैं अवशेष अनुभाग सत्व हो है बहुरि यातैं उपरिवर्ती अश्वकर्ण काल के सर्व समयनि विषैं भी असैं ही अल्प बहुत्व का क्रम लीएं अनुभाग सत्व जानना।

आदोलस्स य पढमे, णिव्वात्तिदअपुव्वफड्ढयाणि बहू ।
पडिसमयं पलिदोवममूलासंखेज्जभागभजियकमा ॥४८२॥

आंदोलस्य च प्रथमे, निर्वर्तितापूर्वस्पर्धकानि बहूनि ।
प्रतिसमयं पलितोपममूलासंख्येयभागभजितक्रमं ॥ ४८२ ॥

टीका – आंदोल कहिए अश्वकर्ण, ताका प्रथम समय विषैं जे अपूर्व स्पर्धक कीए ते बहुत हैं। पीछे समय समय प्रति पल्य के वर्गमूल का असंख्यातवां भाग करि भाजित क्रम लीएं जानने। प्रथम समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण कौं पल्य के वर्गमूल का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं द्वितीय समय विषैं नवीन कीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण हो है। याकौं पल्य वर्गमूल का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तृतीय समय विषैं कीए नवीन अपूर्वस्पर्धकनि का प्रमाण हो है। असैं ही अपूर्वस्पर्धक करण काल का अंत समय पर्यंत क्रम जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आदोलस्स य चरिमे, अपुव्वादिमवग्गणाविभागादो ।
दोचढिमादीणादी, चढिदव्वा मेत्तणंतगुणा ॥४८३॥

आंदोलस्य च चरमेऽपूर्वादिमवर्गणाविभागात् ।
द्विचटितादीनामादिः, चटितव्यामात्रानंतगुणा ॥ ४८३ ॥

टीका – ऐसें क्रम तैं अपूर्व स्पर्धक होतैं अपूर्व स्पर्धक सहित अश्वकर्ण काल का अंत समय विषैं सर्व अपूर्व स्पर्धक भए। तहां प्रथम समय स्पर्धक की आदि वर्गणा विषैं अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद स्तोक हैं। तातैं दूसरे स्पर्धक की आदि वर्गणा विषैं दूणे, तीसरे स्पर्धक की आदि वर्गणा विषैं तिगुणे ऐसें जेथवा स्पर्धक होइ, तिसकी आदि वर्गणा विषैं तितने गुणे होंइ सो अनंतगुणा पर्यंत चढना। अंत स्पर्धक की आदि वर्गणा विषैं अनंत गुणे हो हैं, ऐसा जानना। इहां विवक्षित वर्गणा की एक एक परमाणू विषैं पाइए है, जे अविभाग प्रतिच्छेद, तिनिकी अपेक्षा अल्प बहुत्व कह्या है। सर्व परमाणू अपेक्षा किंचित् ऊन दूणा, तिगुणा क्रम जानना। ऐसैं पूर्वैं ही यतिवृषभ आचार्य करि प्रतिपादन कीया है। चार्‌यों कषायनि विषैं ऐसैं ही क्रम जानना।

आदोलस्स य पढमे, रसखंडे पाडिदे अपुव्वादो ।
कोहादो अहियकमा, पदेसगुणहाणिफड्ढया तत्तो ॥४८४॥

होदि असंखेज्जगुणं, इगिफड्ढयवग्गणा अणंतगुणा ।
तत्तो अणंतगुणिदा, कोहस्स अपुव्वफड्ढयाणं च ॥४८५॥

माणादीणहियकमा, लोभगपुव्वं च वग्गणा तेंसि ।
कोहो त्ति य अट्ठपदा, अणंतगुणिदक्कमा होंति ॥४८६॥

आंदोलस्य च प्रथमे, रसखंडे पातिते अपूर्वात् ।
क्रोधात् अधिकक्रमाः, प्रदेशगुणहानिस्पर्धकास्ततः ॥ ४८४ ॥

भवति असंख्येयगुणं, एकस्पर्धकवर्गणा अनंतगुणा ।
ततः अनंतगुणितं क्रोधस्य अपूर्वस्पर्धकानां च ॥ ४८५ ॥

मानादीनामधिकक्रमं, लोभगपूर्वं च वर्गणा तेषां ।
क्रोध इति च अष्ट पदानि, अनंतगुणितक्रमाणि भवंति ॥ ४८६ ॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अश्वकर्ण का प्रथम समय अनुभाग कांडक का घात होत संतै भएं असे क्रोध के अपूर्व स्पर्धक स्तोक हैं। तातैं मान के अपूर्व स्पर्धक विशेष अधिक हैं। तातैं माया के अपूर्व स्पर्धक विशेष अधिक हैं। तातैं लोभ के अपूर्व स्पर्धक विशेष अधिक हैं। बहुरि तातैं प्रदेश सम्बन्धी एक गुणहानि विषैं स्पर्धकनि का प्रमाण असंख्यात गुणा है, जातैं याकौं असंख्यात का भाग दीएं अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण आवै है। तातैं अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण कौं असंख्यात करि गुणें याका प्रमाण भया कह्या। बहुरि तातैं एक स्पर्धकविषैं पाइए जे वर्गणा, तिनका प्रमाण अनंत गुणा है, जातैं पूर्व वा अपूर्वस्पर्धक विषैं वर्गणा अभव्य राशि तैं अनंत गुणी वा सिद्ध राशि के अनंतवें भाग मात्र पाइए है। तातैं अनंत का गुणकार संभवै है। बहुरि तिनतैं क्रोध के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का प्रमाण अनंत गुणा है; जातैं एक स्पर्धक की वर्गणा का प्रमाण कह्या, ताकौं क्रोध के अपूर्वस्पर्धकनि का प्रमाण प्रदेश सम्बन्धी गुणहानि विषैं स्पर्धकनि के प्रमाण के असंख्यातवां भाग मात्र प्रमाण करि गुणैं यहु हो है। बहुरि तातैं मान के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा विशेष अधिक है। तिनतैं माया के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा विशेष अधिक है। तातैं लोभ के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा विशेष अधिक है। इहां इनके अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण विशेष अधिक क्रम लीएं है। तातैं तिनकी वर्गणानिका प्रमाण भी विशेष अधिक क्रम लीएं कह्या। बहुरि लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण तैं लोभ के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनंत गुणा है; जातैं लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण प्रदेश गुणहानि की स्पर्धक शलाका के असंख्यातवें भाग मात्र, ताकौं एक स्पर्धक की वर्गणा का प्रमाण करि गुणैं लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण हो है अर एक गुणहानि की स्पर्धक शलाका कौं प्रदेश सम्बन्धी नाना गुणहानि करि गुणें लोभ के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण हो है। सो इहां एक स्पर्धक वर्गणा का प्रमाण तैं नाना गुणहानि का प्रमाण अनंत गुणा है। तातैं अनंत का गुणकार संभवै है। बहुरि तातैं लोभ के पूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का प्रमाण अनंत गुणा है; जातैं ताकौं एक स्पर्धक की वर्गणा शलाका करि गुणैं यहु हो है। बहुरि तिसतैं माया के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनंत गुणा है; जातैं प्रथम अनुभाग कांडक का घात कीए पीछैं अनुभाग सत्व अश्वकर्ण के आकार भया है; तातैं अनंतगुणापना संभवै है। बहुरि तातैं माया के पूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का प्रमाण अनंत गुणा है। तातैं मान के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनंत गुणा है। तातैं मान के पूर्वस्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण अनंत गुणा है। तातैं क्रोध के पूर्व स्पर्धकनि का

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रमाण अनंत गुणा है । तातैं क्रोध के पूर्व स्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण अनंत गुणा है । इन विषैं कारण पूर्वोक्त हो है । असैं अल्पबहुत्व जानना ।

रसठिदिखंडाणेवं, संखेज्जसहस्सगाणि गंतूणं ।
तत्थ य अपुव्वफड्ढयकरणविही णिट्ठिदा होई ॥४८७॥

रसस्थितिखंडानामेवं, संख्येयसहस्रकाणि गत्वा ।
तत्र च अपूर्वस्पर्धककरणविधिर्निष्ठिता भवति ॥४८७॥

टीका – असैं क्रम करि हजारौं अनुभाग कांडक गएं एक स्थिति कांडक होइ असैं संख्यात हजार स्थितिकांडक जाविषैं होंइ असा अंतर्मुहूर्त मात्र अश्वकर्णकरण का काल भएं तहां अपूर्व स्पर्धक करण की विधि है, सो निष्ठिता कहिए पूर्ण भई ।

भावार्थ यहु– अपूर्व स्पर्धक क्रिया सहित अश्वकर्ण का काल समाप्त भया । आगैं कृष्टि क्रिया सहित अश्वकर्ण क्रिया होसी असा यतिवृषभ आचार्य का तात्पर्य जानना ।

हयकण्णकरणचरिमे, संजलणाणट्ठवस्सठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति सेसाणं ॥४८८॥

हयकर्णकरणचरमे, संज्वलनानामष्टवर्षस्थितिबंधः ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति शेषाणां ॥४८८॥

टीका – अपूर्वस्पर्धक सहित अश्वकर्ण करण काल का अंत समय विषैं संज्वलन चतुष्टय का आठ वर्ष मात्र स्थितिबंध है । ताका प्रथम समय विषैं सोलह वर्ष मात्र था, सो एक एक स्थितिबंधापसरण विषैं अंतर्मुहूर्त मात्र घाटि इहां अवशेष आठ वर्ष मात्र रहै है । बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है । ताका प्रथम समय विषैं संख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो एक एक स्थिति बंधापसरण विषैं संख्यात गुणा घाटि संख्यात हजार स्थितिबंधापसरणनि करि घट्या परंतु आलाप करि इतना ही कहिए है ।

ठिदिसत्तमघादीणं, असंखवस्साण होंति घादीणं ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण ॥४८९॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थितिसत्त्वमघातिनामसंख्यवर्षा भवंति घातिनाम् ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ।।४८९।।

टीका – बहुरि तिस ही अंत समय विषैं अघातिया नाम, गोत्र, वेदनीय तिनका स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्ष मात्र है । प्रथम समय विषैं असंख्यात वर्ष मात्र था, सो असंख्यात गुणा घटता क्रम लीए संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि घट्या तथापि आलाप करि इतना ही कहिए । बहुरि च्यारि घातिया कर्मनि का स्थिति सत्त्व संख्यात वर्ष मात्र है । प्रथम समय विषैं भी संख्यात वर्ष मात्र था, सो संख्यात गुणा घटता क्रम लीए संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि घट्या; परंतु सामान्य आलाप करि इतना ही कहिए है ।

इति अपूर्वस्पर्धक अधिकार समाप्त ।।

अब अपूर्व स्पर्धक करने का काल के अनंतरि समय तैं लगाय कृष्टि करण का काल है । जिस करण तैं कर्म का अनुभाग कृष कहिये हीन करिए, सो सार्थक नाम कृष्टि जानना, सो दोय प्रकार है –बादरकृष्टि, सूक्ष्मकृष्टि । तहां संज्वलन कषायनि के पूर्व-अपूर्व स्पर्धक जैसैं ईंटनि की पंक्ति होइ तैसैं अनुभाग का एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधती लीएं परमाणूनि का समूह रूप जो वर्गणा, तिनके समूह रूप है । तिनके अनंत गुणा घटता अनुभाग होने करि स्थूल खंड करिए, सो बादर कृष्टि करण है, अर तिन स्थूल खंडनि कौं अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप करि सूक्ष्म सूक्ष्म खंड करिए, सो सूक्ष्मकृष्टि करण है । तहां बादरकृष्टि करण का काल प्रमाण जानने कौं सूत्र कहै हैं–

छक्कम्मे संछुद्धे, कोहे कोहस्स वेदगद्धा जा ।
तस्स य पढमतिभागो, होदि हु हयकण्णकरणद्धा ।।४९०।।

बिदियतिभागो किट्टीकरणद्धा किट्टिवेदगद्धा हु ।
तदियतिभागो किट्टीकरणो हयकण्णकरणं च ।।४९१।।

षट्कर्मणि संक्षुब्धे, क्रोधे क्रोधस्य वेदकाद्धा या ।
तस्य च प्रथमत्रिभागः, भवति हि हयकर्णकरणाद्धा।।४९०।।

द्वितीयत्रिभागः कृष्टिकरणाद्धा किट्टीवेदकाद्धा हि ।
तृतीयत्रिभागः कृष्टिकरणं हयकर्णकरणं च ।।४९१।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – छह नोकषायनि कौं संज्वलन क्रोध विषैं संक्रमण करि नाश करने के अनंतरि समय तैं लगाय जो अंतर्मुहूर्त मात्र क्रोध वेदक काल है, ताकौं संख्यात का भाग देइ, तहां बहुभाग के समान रूप तीन भाग करिए। बहुरि अवशेष एक भाग कौं संख्यात का भाग देइ तहां बहुभाग कौं प्रथम त्रिभाग विषैं जोडिए। बहुरि अवशेष एक भाग कौं संख्यात का भाग देइ, तहां बहुभाग दूसरा त्रिभाग विषैं जोडिए। अवशेष एक भाग तीसरा त्रिभाग विषैं जोडिए ऐसें करतैं पहिला त्रिभाग साधिक भया, सो तौ अपूर्व स्पर्धक सहित अश्वकर्ण करण का काल है, सो पूर्वै होइ गया। बहुरि दूसरा त्रिभाग किंचित् ऊन है, सो च्यारि संज्वलन कषायनि का कृष्टि करने का काल है, सो अब वर्तै है। बहुरि तीसरा त्रिभाग किंचिदून है, सो क्रोध कृष्टि का वेदक काल है, आगें प्रवर्तसी। बहुरि इस कृष्टि करण काल विषैं भी अश्वकर्ण करण पाइए है। जातैं इहां भी अश्वकर्ण के आकारि संज्वलन कषायनि का अनुभागसत्व वा अनुभाग-कांडक वर्तै है। तातैं इहां कृष्टि सहित अश्वकर्ण करण पाइए है, ऐसा जानना। तहां प्रथम समय विषैं एक स्थिति बंधापसरण होने करि संज्वलन चतुष्क का अंतर्मुहूर्त घाटि आठ वर्ष प्रमाण अन्य कर्मनि का पूर्वस्थिति बंध तैं संख्यात गुणा घटता संख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति बंध हो है। बहुरि एक स्थिति कांडक घात होने करि घातिया च्यारि कर्मनि का पूर्व स्थिति सत्व तैं संख्यात बहुभाग मात्र घटता संख्यात हजार वर्ष मात्र अर तीन अघातियानि का पूर्व स्थिति सत्व तैं असंख्यात बहुभाग मात्र घटता असंख्यात वर्ष मात्र स्थिति सत्व पाइए है।

कोहादीणं सगसगपुव्वापुव्वगयफड्ढयेहिंतो।
उक्कड्डिदूण दव्वं, ताणं किट्टी करेदि कमे ॥४९२॥

क्रोधदीनां स्वकस्वकपूर्वापूर्वगतस्पर्धकान्।
अपकर्षयित्वा द्रव्यं, तेषां कृष्टि करोति क्रमेण ॥४९२॥

टीका - संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभनि का अपना अपना पूर्व अपूर्वस्पर्धक रूप जो सर्व द्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि यथाक्रम लीए तिन क्रोधादिकनि की कृष्टि करै है।

उक्कट्टिददव्वस्स य, पल्लासंखेज्जभागबहुभागो।
बादरकीट्टिणिबद्धो फड्ढयगे सेसइगिभागो ॥४९३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपकर्षितद्रव्यस्य च, पल्यासंख्येयभागबहुभागः ।
बादरकृष्टिनिबद्धः स्पर्धके शेषैकभागः ।।४६३।।

टीका – अपकर्षण कीया जो द्रव्य, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग मात्र द्रव्य तौ बादर कृष्टि सम्बन्धी है । याकरि बादर कृष्टि निपजै है । अवशेष एक भाग मात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै निक्षेपण करिए है ।

किट्टीयो इगिफड्ढयवग्गणसंखाणणंतभागो दु ।
एक्केक्कम्हि कसाये, तिग-तिग अहवा अणंता वा ।।४९४।।

कृष्टय एकस्पर्धकवर्गणासंख्यानामनंतभागस्तु ।
एकैकस्मिन् कषाये, त्रिकत्रिकमथवा अनंता वा ।।४९४।।

टीका– एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बंधने का क्रम लीएं प्रत्येक सिद्धराशि का अनंतवां भाग मात्र परमाणूनि का समूहरूप ईंटनि की पंक्ति के आकार जे वर्गणा, ते एक स्पर्धक विषै एक गुणहानि विषै जेते स्पर्धक पाइए, तिनतें अनंत गुणे पाईए है । सो असैं एक स्पर्धक विषैं जो वर्गणानि का प्रमाण, ताकौं वर्गणा शलाका कहिए । ताके अनंतवें भाग मात्र सर्व कृष्टिनि का प्रमाण है । अनुभाग का स्तोक बहुत अपेक्षा कृष्टिनि का विभाग करिए है । तहां एक एक कषाय विषै संग्रह कृष्टि तीन तीन हैं । बहुरि एक एक संग्रह कृष्टि विषै अंतर कृष्टि अनंत अनंत हैं । तहां नीचैं ही नीचै लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि है, तिसविषै अन्तर कृष्टि अनंत हैं । ताके ऊपरि लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि है । तहां अंतर कृष्टि अनन्त हैं । ताके ऊपरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि है । तहां अन्तर कृष्टि अनंत हैं । असैं ही क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि पर्यंत अवशेष नव संग्रह कृष्टि जाननी । तहां एक एक संग्रह कृष्टि विषै अनंत अनंत अंतर कृष्टि जाननी । एक प्रकार बंधता गुणाकार रूप जो अंतर कृष्टि, तिनके समूह ही का नाम संग्रह कृष्टि जानना ।

अकसायकसायाणं, दव्वस्स विभंजणं जहा होई ।
किट्टिस्स तहेव हवे, कोहो अकसायपडिबद्धं ।।४९५।।

अकषायकषायाणां द्रव्यस्य विभंजनं यथा भवति ।
कृष्टेस्तथैव भवेत् क्रोधः अकषायप्रतिबद्धः।। ४९५।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – अकषाय कहिए नोकषाय, अर कषाय इनिके द्रव्य का विभाग जैसे हो है तैसैं ही इन कृष्टिनि के प्रमाण का विभाग जानना। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टि हैं ते क्रोध की कृष्टिनि विषैं जोडनी; जातैं नोकषायनि का सर्व द्रव्य संज्वलन क्रोधरूप संक्रमण भया है। तहां द्रव्य विभाग कैसैं हो है? सो कहिए है–

पूर्वै अपूर्वस्पर्धक करण काल विषै जैसैं अनुक्रम कहि आए हैं, तिस अनुक्रम करि सर्व चारित्र मोह का द्रव्य साधिक द्वयर्ध गुणहानि गुणित प्रथम वर्गणा मात्र है। तहां लोभ का द्रव्य साधिक आठवां भाग मात्र, माया का किंचिदून आठवां भाग मात्र, मान का किंचिदून आठवां भाग मात्र, क्रोध का किंचिदून आठवां भाग मात्र अर याही में किंचिदून द्वितीय भाग मात्र नोकषाय का द्रव्य मिलाएं क्रोध का द्रव्य पांच गुणा किंचिदून आठवां भाग मात्र हो है। बहुरि इस अपने अपने द्रव्य कौं अपकर्षण भाग-हार का भाग दीएं अपना अपना अपकर्षण कीया द्रव्य का प्रमाण आवै है। याकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै देना है। ताकौं जुदा राखि अवशेष बहुभागनि विषै क्रोध विषै जो नोकषायनि का द्रव्य मिल्या, ताकौं जुदा कीएं जो अपना अपना द्रव्य रह्या, ताकौं जुदा जुदा पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां बहुभागनि के समान रूप तीन पुंज करने। बहुरि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग प्रथम पुंज विषै जोडने। बहुरि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग द्वितीय पुंज विषै जोडने। अवशेष एक भाग तृतीय पुंज विषै जोडना। ऐसैं साधिक त्रिभाग मात्र प्रथम पुंज भया, सो अपनी अपनी प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य है। किंचिदून त्रिभाग मात्र द्वितीय पुंज सो अपनी अपनी द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य है। किंचिदून त्रिभाग मात्र तृतीय पुंज सो अपनी अपनी तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य है। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी सर्व द्रव्य कौं क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि विषै मिलावना। या प्रकार कृष्टि सम्बन्धी सर्व द्रव्य कौं चौईस का भाग दीएं क्रोध की तृतीय कृष्टि का तेरह भाग मात्र अर अन्य ग्यारह कृष्टिनि का एक एक भाग मात्र द्रव्य हो है। यहां लोभ की कृष्टि विषै साधिकपना अन्यत्र किंचित् न्यूनपना यथासम्भव जानना। ऐसैं द्रव्य का विभाग कीया। बहुरि याही प्रकार अब कृष्टि के प्रमाणका विभाग करिए है—

एक स्पर्धक की वर्गणा शलाका के अनंतवें भाग मात्र सर्व कृष्टिनि का प्रमाण है। ताकौं आवली के असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां बहुभाग के समान

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दोय भाग करि अवशेष एक भाग कौं प्रथम समान भाग विषै मिलाएं साधिक आधा तौ कषायनि के द्रव्य करि कीया कृष्टिनि का प्रमाण हो है अर द्वितीय समान भाग मात्र किंचिदून आधा नोकषायनि के द्रव्य करि कीया कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि कषाय सम्बन्धी कृष्टिनि के प्रमाण कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग जुदा राखि बहुभागनि के समानरूप च्यारि भाग करने। बहुरि अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां बहुभाग प्रथम समान भाग विषै मिलाएं साधिक चौथा भाग मात्र लोभ की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां बहुभाग दूसरे समान भाग विषै मिलाएं किंचिदून चतुर्थ भाग मात्र माया की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग तीसरा समान भाग विषै मिलाएं किंचिदून चौथा भाग मात्र क्रोध की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भाग चौथा समान भाग विषै मिलाएं किंचिदून चौथा भाग मात्र मान की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टिनि का प्रमाण क्रोध की कृष्टिनि का प्रमाण विषै जोडना। ऐसैं सर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौं आठ का भाग देइ तहां एक एक भाग मात्र लोभ, माया, मान की पांच भाग मात्र क्रोध की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। तहां लोभ की विषै साधिकपना अन्य की विषै किंचित् न्यूनपना यथा संभव जानना। बहुरि क्रोध की कृष्टिनि विषै नोकषाय सम्बन्धी कृष्टि जुदी कीएं अवशेष अपना अपना कृष्टिनि का जो प्रमाण, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग के समान तीन भाग करिए। बहुरि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग प्रथम समान भाग विषै मिलाएं अपना अपना प्रथम संग्रह कृष्टिनि का आयाम साधिक हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग द्वितीय समान भाग विषै जोडैं, अपना अपना द्वितीय संग्रह कृष्टि का आयाम किंचित् ऊन हो है। बहुरि अवशेष एक भाग तीसरा समान भाग विषै जोडैं अपनी अपनी तृतीय संग्रहकृष्टि का आयाम किंचित् ऊन हो हैं। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टिनि का प्रमाण, ताकौं क्रोध की तृतीय संग्रहकृष्टि का आयाम विषै जोडना। ऐसैं सर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौं चौईस का भाग देइ तहां क्रोध की तृतीय संग्रहकृष्टि का आयाम तेरह भाग मात्र अन्य ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आयाम एक भाग मात्र हो है। तहां लोभ की विषै

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

साधिकपना अन्यत्र किंचित् न्यूनपना यथासम्भव जानना । इहां संग्रह कृष्टि विषै जितनी अंतर कृष्टि का प्रमाण होइ, तीहिंका नाम संग्रह कृष्टि का आयाम है ।

पढमादिसंगहाओ, पल्लासंखेज्जभागहीणाओ ।
कोहस्स तदीयाए, अकसायाणं तु किट्टीओ ॥४९६॥

प्रथमादिसंग्रहाः पल्यासंख्येयभागहीनाः ।
क्रोधस्य तृतीयायामकषायानां तु कृष्टयः ॥४९६॥

टीका – पूर्वोक्त प्रकार करि प्रथम आदि बारह संग्रह कृष्टिनि का आयाम है सो पल्य का असंख्यातवां भाग का क्रम करि घटता जानना । बहुरि नोकषाय संबंधी सर्वकृष्टि तैं क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं प्राप्त जानना ।

कोहस्स य माणस्स य, मायालोभोदएण चडिदस्स ।
बारस णव छत्तिण्णि य, संगहकिट्टी कमे होंति ॥४९७॥

क्रोधस्य च मानस्य च मायालोभोदयेन चटितस्य ।
द्वादश नव षट् त्रीणि च संग्रहकृष्टयः क्रमेण भवंति ॥४९७॥

टीका – संज्वलन क्रोध का उदय सहित जो जीव श्रेणी चढै ताकैं तो च्यारचों कषायनि की बारह संग्रह कृष्टि हो है । बहुरि मान का उदय सहित श्रेणी चढै ताकैं क्रोध का पहिले ही संक्रमण करि क्षय होइ, तातैं अवशेष तीन कषायनि की नव संग्रह कृष्टि हो है । बहुरि माया का उदय सहित जो श्रेणी चढै ताकैं क्रोध मान का पहलैं ही संक्रमण करि क्षय होइ, तातैं दोय कषायनि की छह संग्रह कृष्टि हो हैं । बहुरि लोभ का उदय सहित जो श्रेणी चढै ताकैं क्रोध, मान, माया का पहलैं ही संक्रमण करि क्षय होइ, तातैं एक लोभ ही की तीन संग्रह कृष्टि हो है । तहां जेती संग्रह कृष्टि होंइ, तिन ही विषैं कृष्टि प्रमाण का विभाग यथासंभव जानना ।

संगहगे एक्केक्के, अन्तरकिट्टी हवदि हु अणंता ।
लोभादि अणंतगुणा, कोहादि अणंतगुणहीणा[1] ॥४९८॥

संग्रहके एकैकस्मिन्, अंतरकृष्टिः भवति हि अनंता ।
लोभादौ अनंतगुणा, क्रोधादौ अनंतगुणहीना ॥४९८॥

१–षट्खंडागमः धवला पुस्तक–६ पृष्ठ ३७५, ३७६,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – एक एक संग्रह कृष्टि विषै अंतर कृष्टि अनंत पाइए हैं, जातैं अनंती कृष्टिनि के समूह का ही नाम संग्रह कृष्टि है। बहुरि तहां कृष्टिनि विषैं लोभ तैं लगाय क्रम तैं अनंत गुणा बधता अर क्रोध तै अनंत गुणा घटता अनुभाग पाइए है, सोई कहिए है–

लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं जो जघन्य कृष्टि है, सो स्तोक है। सर्व तैं मंद अनुभाग सहित है। तातैं ताकी दूसरी कृष्टि अनंत गुणी है। अभव्य राशि तैं अनंत गुणा वा सिद्ध राशि के अनंतवें भाग मात्र अनंत प्रमाण लीएं जो गुणकार, तिस करि जघन्य कृष्टि के अनुभाग कौं गुणैं द्वितीय कृष्टि का अनुभाग हो है अैसें ही आगे भी जानना। बहुरि दूसरी कृष्टि तैं तीसरी कृष्टि अनंत गुणी है। अैसें ही प्रथम संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि पर्यंत अनुक्रम जानना। बहुरि तिस प्रथम संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि तैं द्वितीय संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है, सो इहां गुणकार का प्रमाण अन्य प्रकार हो है, जातैं इहां परस्थान गुणकार भया, सो सर्व स्वस्थान गुणकारनि तैं यहु अनंत गुणा है, सो अैसें गुणकार का भेद ही करि संग्रह कृष्टिनि का भेद भया है। कृष्टिनि का अनुभाग विषैं गुणकार का प्रमाण यावत् एक प्रकार बधता भया तावत् सो ही संग्रह कृष्टि कही। बहुरि जहां नीचली कृष्टि तैं ऊपरली कृष्टि का गुणकार अन्यत्र प्रकार भया तहां तैं अन्य संग्रह कृष्टि कही है। सो इस कथन कौं आगैं व्यक्त करि दिखाइएगा। बहुरि द्वितीय कृष्टि की जघन्य कृष्टि तैं ताकी द्वितीय कृष्टि अनंत गुणी है। अैसें अंत कृष्टि पर्यंत क्रम जानना। बहुरि द्वितीय कृष्टि की अंत कृष्टि तैं तृतीय कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनंत गुणी हैं। इहां परस्थान गुणकार जानना। तातैं ताकी द्वितीयादि अंत पर्यंत कृष्टि क्रम तैं अनंत गुणी हैं, अैसें लोभ की तीन संग्रह कृष्टि भईं। बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि तैं माया की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है। बहुरि लोभवत् क्रम जानना। बहुरि माया की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंतकृष्टि तैं मान की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार क्रम जानना। बहुरि मान की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि तैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार क्रम जानना। बहुरि क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि तैं अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा अनंत गुणी है, जातैं कृष्टि का अनुभाग तैं स्पर्धक का अनुभाग अनंत गुणापने कौं लीए है। इहां गुणकार अनुभाग अपेक्षा ही जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अब इस कथन कौं स्पष्ट करने कौं सूत्र कहै हैं—

लोभादी कोहो त्ति य, सट्ठाणंतरमणंतगुणिदकमं ।
तत्तो बादरसंगहकिट्टी अंतरमणंतगुणिदकमं ॥४६६॥

लोभादितः क्रोधांतं च, स्वस्थानांतरमनंतगुणितक्रमं ।
ततो बादरसंग्रहकृष्टेसंतरमनंतगुणितक्रमं ॥४६६॥

टीका – लोभ तैं लगाय क्रोध पर्यंत स्वस्थान अंतर है सो अनंत गुणा क्रम लीएं है। बहुरि तिस स्वस्थान अंतर तैं बादर संग्रह कृष्टि, तिनका अंतर अनंत गुणा क्रम लीएं है। सोई कहिए है–

बादर संग्रह कृष्टि है, तहां एक एक संग्रह कृष्टि विषैं अंतर कृष्टि सिद्ध राशि के अनंतवें भाग मात्र है। बहुरि तिनके अंतराल एक घाटि कृष्टि प्रमाण हैं, जातैं दोय बीचि अंतराल एक होइ, तीनि बीचि दोय होंइ, असैं विवक्षित प्रमाण विषैं अंतराल एक घाटि तिस प्रमाण मात्र हो है। बहुरि इहां अंतर की उत्पत्ति कौं कारण जे गुणकार तिनकौं अंतर कहिए। जातैं कारण विषैं कार्य का उपचार हो है। बहुरि इहां कृष्टिनि विषैं गुणकार ही का नाम अंतर भया तातैं तिन का नाम कृष्टयंतर कहिए। बहुरि नीचली संग्रह कृष्टि अर ऊपरली संग्रह कृष्टिनि विषैं ग्यारह अंतर हो हैं; जातैं संग्रह कृष्टि बारह विषैं एक घाटि अंतरनि का प्रमाण हो है, सो इनका नाम संग्रह कृष्टयंतर कहिए।

भावार्थ यहु – जेते अंतराल होंइ तितनी बार गुणकार होंइ तहां स्वस्थान गुणकारनि का नाम कृष्ट्यंतर है। परस्थान गुणकारनि का नाम संग्रह कृष्ट्यंतर है। एक ही संग्रह कृष्टि विषैं नीचली अंतर कृष्टि तैं ऊपरली अंतर कृष्टि विषैं गुणकार होइ, ताकौं तौ स्वस्थान गुणकार कहिए है। बहुरि तहां नीचली संग्रह कृष्टि की अंत की अंतर कृष्टि तैं अन्य संग्रह कृष्टि की आदि अंतर कृष्टि विषैं जो गुणकार होइ, ताकौं परस्थान गुणकार कहिए है। असैं संज्ञा कहि कृष्टयंतर वा संग्रह कृष्टनि का अल्प बहुत्व कहिए है। तहां निस्संदेह होने कौं अंकसंदृष्टि करि भी कथन करिए है–

तहां अनंत की संदृष्टि दोय अर एक संग्रह कृष्टनि विषैं अंतर कृष्टि के प्रमाण की संदृष्टि च्यारि जाननी। तहां प्रथम लोभ की प्रथम संग्रहकृष्टि की जघन्य कृष्टि स्थापि, ताकौं जिस अनंत गुणकार करि गुणैं, ताकी द्वितीय कृष्टि होइ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिस गुणाकार का नाम जघन्य कृष्ट्यंतर है, ताकी संदृष्टि दोय का अंक, बहुरि द्वितीय कृष्टि कौं जिस गुणाकार करि गुणें तृतीय कृष्टि होई तिस गुणाकार का नाम द्वितीय कृष्ट्यंतर है। सो यहु जघन्य कृष्ट्यंतर तैं अनंत गुणा है। ताकी संदृष्टि च्यारि का अंक, अैसैं क्रम तैं तृतीयादि कृष्ट्यंतर क्रम तैं अनंत गुणे होंइ, जिस गुणकार करि द्विचरम कृष्टि कौं गुणैं अंत कृष्टि होइ, सो अनंत का गुणकार द्विचरम गुणाकार तैं अनंत गुणा है, ताकी संदृष्टि आठ का अंक।

बहुरि इस प्रथम संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि कौं जिस गुणाकार करि गुणैं, द्वितीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि होइ, सो परस्थान गुणाकार है। तातैं याकौं छोडि द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि कौं जिस गुणाकार करि गुणैं, ताकी द्वितीय कृष्टि होइ, सो प्रथम गुणाकार पूर्वोक्त अंत का स्वस्थान गुणाकार तैं अनंत गुणा है; ताकी संदृष्टि सोलह का अंक अैसैं ही बीचि बीचि परस्थान गुणाकार छोडि, एक एक कृष्टि प्रति गुणाकार का प्रमाण अनंत गुणा जानना। सो कृष्टिनि का जेता प्रमाण तिन में एक घाटि तो अंतराल पाइए अर तहां ग्यारह परस्थान गुणाकार पाइए अर एक जघन्य गुणकार हो है। अैसैं तेरह घटाएं अवशेष जेता प्रमाण, तितनी बार जघन्य गुणाकार कौं अनंत करि गुणैं, जो गुणाकार भया, तिस करि क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की द्विचरम कृष्टि कौं गुणैं, ताकी अंतर कृष्टि हो है। अंक संदृष्टि करि अठतालीस कृष्टिनि विषैं तेरह घटाएं पैंतीस रहें, सो पैंतीस बार दोय कौं दोय करि गुणैं, सोलह गुणा बादाल प्रमाण हो है। बहुरि इहां तैं स्वस्थान गुणाकार छोडि बहुरि करि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की अंत वर्गणा कौं जिस गुणाकार करि गुणै द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम वर्गणा होइ, सो परस्थान गुणकार पूर्वोक्त अंत का स्वस्थान गुणाकार तै अनंत गुणा है। ताकी संदृष्टि बत्तीस गुणा बादाल है। बहुरि लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि की अंतकृष्टि कौं जिस गुणकार करि गुणें लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि होइ, सो द्वितीय परस्थान गुणाकार सो प्रथम परस्थान गुणाकार तै अनंत गुणा है। बहुरि लोभ की तृतीय कृष्टि की अंत कृष्टि कौं जिस गुणकार करि गुणैं, माया की प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम संग्रह कृष्टि होइ सो तीसरा परस्थान गुणाकार द्वितीय परस्थान गुणाकार तैं अनंत गुणा है। याही प्रकार ग्यारह परस्थान गुणाकारनि कौं क्रम तैं अनंत करि गुणें क्रोध की द्वितीय कृष्टि की अंत कृष्टि कौं जिस गुणाकार करि गुणै क्रोध की तृतीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि होइ तिस गुणाकार का प्रमाण आवै है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

यहु गुणकारनि का यंत्र है, तहां पण्णट्ठी की संदृष्टि ऐसी ६५–बादाल की ऐसी ४२ अर इनके आगै जितने का अंक, तितने का इनकौं गुणकार जानना ।

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध	
तृतीय संग्रहकृष्टि-विषैं स्वस्थान गुणकार	५१२ २५६ १२८	६५ = ४ ६५ = २ ६५ = १	६५ = २०४८ ६५ = १०२४ ६५ = ५१२	४२ = १६ ४२ = ८ ४२ = ४	
परस्थान गुणकार	४२=६४	४२=५१२	४२ = ४०९६	४२ = ३२७६८	
द्वितीय संग्रहकृष्टि-विषैं स्वस्थान गुणकार	६४ ३२ १६	३२७६८ १६३८४ ८१९२	६५ = २५६ ६५ = १२८ ६५ = ६४	४२ = २ ४२ = १ ६५ = ३२७६८	
परस्थान गुणकार	४२=३२	४२=२५६	४२ = २०४८	४२ = १६३८४	
प्रथम संग्रहकृष्टि-विषैं स्वस्थान गुणकार	८ ४ २	४०९६ २०४८ १०२४	६५ = ३२ ६५ = १६ ६५ = ८	६५ = १६३८४ ६५ = ८१९२ ६५ = ४०९६	अपूर्व स्पर्धक वर्गणा गुणकार
परस्थान गुणकार	जघन्य	४२=१२८	४२ = १०२४	४२ = ८१९२	४२ = ६५ =

अंकसंदृष्टि करि ग्यारह परस्थान गुणकारनि कौं दूणा दूणा कीएं जैसें बत्तीस हजार सात सै अडसठि गुणा बादाल ४२९४९६७२९६ प्रमाण होइ । बहुरि यातैं जिस गुणकार करि क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि कौं गुणें लोभ के अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अनुभाग का अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है । तिस परस्थान गुणकार का प्रमाण अनंत गुणा जानना । ताकि संदृष्टि पण्णट्ठी गुणा बादाल है । ऐसैं गुणकारनि का प्रमाण कह्या ।

इहां ऐसा अर्थ जानना – अंक संदृष्टि करि जैसें लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषैं जो अनुभाग पाइए है, तातैं दूणा द्वितीय कृष्टि विषैं, तातैं चौगुणा तृतीय कृष्टि विषैं है । तातैं आठ गुणा अंत कृष्टि विषैं है । तातैं बत्तीस गुणित

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बादाल गुणा लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषैं अनुभाग है। इहां तैं पहलैं अन्य प्रकार गुणकार था, तातैं तहां पर्यंत प्रथम संग्रह कृष्टि का ही इहां अन्य प्रकार गुणकार भया तातैं इहां तैं लगाय द्वितीय संग्रह कृष्टि कही। अैसें ही अंत पर्यंत विधान जानना। बहुरि याही प्रकार यथार्थ कथन जानना। दोय की जायगा अनंत जानना। अर संग्रह कृष्टि विषैं च्यारि अंतर कृष्टि कही हैं, तहां अनंती जाननी।

अैसें अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा कृष्टिनि का कथन जानना।

लोहस्स अवरकिट्टीगदव्वादो कोधजेट्ठकिट्टिस्स।
दव्वोत्ति य हीणकमं, देदि अणंतेण भागेण ॥५००॥

लोभस्य अवरकृष्टिगद्रव्यात् क्रोधज्येष्ठकृष्टेः।
द्रव्यांतं च हीनक्रमं, दीयते अनंतेन भागेन ॥५००॥

टीका – लोभ की जघन्य कृष्टि का द्रव्य तैं लगाय क्रोध की उत्कृष्ट कृष्टि का द्रव्य पर्यंत हीन क्रम लीए द्रव्य दीजिये है। सोई कहिए है–

कृष्टि विषैं देने योग्य अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं जो द्रव्य सो सर्वधन है। याकौं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीएं मध्य कृष्टि विषैं जितना द्रव्य दीया, ताका प्रमाण मात्र मध्य धन हो है। याकौं एक घाटि गच्छ का आधा करि हीन, जो दो गुणहानि, ताका भाग दीएं एक विशेष का प्रमाण आवै है। याकौं दो गुणहानि करि गुणैं जो प्रमाण आवै, तितना द्रव्य तौ लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै दीजिए है। याके आगें द्वितीयादि कृष्टि तैं लगाय सर्व संग्रह कृष्टिनि की अंतर कृष्टि उल्लंघि क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि पर्यन्त एक एक विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। इहां पूर्व पूर्व कृष्टि तैं उत्तर उत्तर कृष्टि विषै द्रव्य दीया सो ही दृश्यमान है, सो अनंत भाग घटता क्रम लीएं है, पूर्व कृष्टि कौं अनंत का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र घटता उत्तर कृष्टि का द्रव्य प्रमाण हो है।

लोभस्स अवरकिट्टिगदव्वादो कोधजेट्ठकिट्टिस्स।
दव्वं तु होदि हीणं, असंखभागेण जोगेण ॥५०१॥

लोभस्यावरकृष्टिगद्रव्यतः क्रोधज्येष्ठकृष्टेः।
द्रव्यं तु भवति हीनं, असंख्यभागेन योगेन ॥५०१॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य जो प्रदेश समूह, तातैं क्रोध की तृतीय कृष्टि की उत्कृष्ट कृष्टि का द्रव्य एक घाटि कृष्टि प्रमाण मात्र विशेषनि करि घटता भया सो अनंतवां भाग मात्र घटता भया जानना। जातैं सर्व कृष्टिनि का प्रमाण एक स्पर्धक की वर्गणा के अनंतवें भाग मात्र है सो एक घाटि इतने चय घटने तैं लोभ की जघन्य कृष्टि का द्रव्य के अनंतवें भाग मात्र ही द्रव्य घटता भया है। बहुरि पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै जो देने योग्य द्रव्य कह्या था, ताकौं साधिक द्वयर्ध गुणहानि का भाग दीएं अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा विषैं दीया द्रव्य का प्रमाण हो है। सो यहु क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है। बहुरि तिस तैं तिनकी द्वितीय वर्गणा आदि पूर्व स्पर्धकनि की अंत वर्गणा पर्यंतनि विषैं विशेष घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है।

अैसें कृष्टिकारक का प्रथम समय का निरूपण जानना।

पडिसमयमसंखगुणं, कमेण उक्कट्टिदूण दव्वं खु।
संगहहेट्ठापासे, अपुव्वकिट्टी करेदी हु ॥५०२॥

प्रथमसमयमसंख्यगुणं, क्रमेणापकृष्य द्रव्यं खलु।
संग्रहाधस्तनपार्श्वे, अपूर्वकृष्टि करोति हि ॥५०२॥

टीका – बहुरि प्रथम समय तैं द्वितीयादि समयनि विषै असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य कौं अपकर्षण करि संग्रह कृष्टि के नीचैं वा पार्श्व विषै अपूर्व कृष्टि कौं करै है। पूर्व समय विषै जे कृष्टि करि थीं, तिन विषै बारह बारह संग्रह कृष्टिनि की जे जघन्य कृष्टि, तिन तैं अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं नीचैं केतीकइक नवीन कृष्टि अपूर्व शक्ति युक्त करिए है। याही तैं इनका नाम अधःस्तन कृष्टि जानना। बहुरि पूर्व समयनि विषै जे कृष्टि करी थीं, तिन ही के समान शक्ति लीएं, तिनके पास केतीकइक कृष्टि करिए है।

भावार्थ यहु – पूर्व समयनि विषै करि कृष्टिनि विषै जो नवीन द्रव्य का निक्षेपण करिए, सो पार्श्व विषैं करी कृष्टि कहिए है।

हेट्ठा असंखभागं, फासे वित्थारदो असंखगुणं।
मज्झिमखंडं उभयं, दव्वविसेसे हवे फासे ॥५०३॥

अधस्तनमसंख्यभागं, पार्श्वे विस्तारतोऽसंख्यगुणं।
मध्यमखंडमुभयं, द्रव्यविशेषे भवेत् पार्श्वे ॥५०३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – संग्रह कृष्टि के नीचैं करी हुई कृष्टिनि का प्रमाण तौ सर्व कृष्टिनि का प्रमाण के असंख्यातवें भाग मात्र है। बहुरि पार्श्व विषै करि हुई कृष्टिनि का प्रमाण तिन तैं असंख्यात गुणा है। तहां पार्श्व विषै करी कृष्टि, तिन विषै मध्यम खंड अर उभय द्रव्य विशेष हो है। अर स्तोक जानि न कह्या तथापि तहां अधःस्तन शीर्ष का भी होना जानना। कैसैं ? सो कहिए है—

द्वितीयादि समयनि विषै समय समय प्रति असंख्यात गुणा द्रव्य कौं पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी द्रव्य तैं अपकर्षण करि तहां पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै देने योग्य द्रव्य जुदा कीएं अवशेष कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य हो है। तिस विषै अधःस्तन शीर्ष , अधःस्तन कृष्टि, मध्यम खंड, उभय द्रव्य विशेष असैं च्यारि विभाग करिए, सो अधःस्तन शीर्षादिक का स्वरूप उपशम चारित्र विषै सूक्ष्म कृष्टि का वर्णन करने तैं पूर्वैं विशेष करि कह्या है, सो जानना। वा इहां भी किछू कहिए है—

तहां पूर्व समय विषै करी कृष्टि, तिन विषै प्रथम कृष्टि तैं लगाय विशेष घटता क्रम है सो सर्व पूर्व कृष्टिनि कौं आदि कृष्टि समान करने के अर्थि घटे विशेषनि का द्रव्य मात्र जो द्रव्य तहां दीजिए, ताका नाम अधःस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य है। बहुरि पूर्वैं न थी असी करीं जे नवीन कृष्टि तिनि कौं पूर्व कृष्टि की आदि कृष्टि के समान करने के अर्थि जो द्रव्य दीया, ताका नाम अधःस्तन कृष्टि द्रव्य है। बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषै आदि कृष्टि तैं लगाय अंत कृष्टि पर्यंत विशेष घटता क्रम करने के अर्थि जो द्रव्य दीया, ताका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि इन तीनों को जुदा कीएं अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताकौं सर्व कृष्टिनि विषै समान रूप दीजिए, ताका नाम मध्यम खंड है। असैं संग्रह कृष्टिनि के पार्श्ववर्ती कृष्टिनि विषै तौ अधःस्तन शीर्ष मध्यम खंड उभय द्रव्य विशेष रूप तीन प्रकार द्रव्य दीजिए है। अर संग्रह कृष्टिनि के नीचें जे नवीन कृष्टि करी, तिन विषै अधःस्तन कृष्टि,[1] मध्यम खंड, उभय द्रव्य विशेष रूप तीन प्रकार द्रव्य दीजिए है। अब याका विशेष दिखाइए है—तहां द्वितीय समय विषै कैसैं द्रव्य दीजिए है, सो वर्णन कीजिए है—

क्रोध मान माया लोभ के पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी द्रव्य तैं पहले समय जो अपकर्षण कीया द्रव्य, तातैं असंख्यात गुणा द्रव्य अपकर्षण करै है। तहां सर्व द्रव्य कौं आठ का भाग दीएं एक एक भाग मात्र लोभ माया मान का पांच भाग मात्र क्रोध का द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार यथासम्भव साधिक वा किंचित् न्यूनपना लीएं जानना।

१–कलकत्ता से छपी प्रति में 'कृष्टि' के स्थान पर 'शीर्ष' शब्द मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि याकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै देना। ताकौं जुदा राखि अवशेष द्रव्य का (पल्य का) प्रथम समयवत् बारह संग्रह कृष्टिनि विषै विभाग करिए तब सर्व द्रव्य कौं चौईस का भाग दीएं तहां ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का एक एक भाग मात्र अर क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि का तेरह भाग मात्र द्रव्य हो है। इहां साधिकपना वा न्यूनपना यथासम्भव जानि लेना।

अब द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिस विषै एक एक संग्रह कृष्टि का द्रव्य जो कह्या, तिस विषै अधःस्तन शीर्षादि च्यारि प्रकार द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है–तहां प्रथम समय विषै अंत कृष्टि तैं लगाय कृष्टि कृष्टि प्रति जितना द्रव्य बध्या, सो एक विशेष है। ताका प्रमाण पूर्वं कह्या था, सो आदि विषै जो विशेष का प्रमाण सो आदि अर एक एक विशेष कृष्टि कृष्टि प्रति बध्या, तातैं एक विशेष उत्तर अर प्रथम समय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ, सो ऐसैं आदि उत्तर गच्छ स्थापि श्रेणी व्यवहार नाम गणित के अनुसारि—

रूपेणोनो गच्छो दलीकृतः प्रचयताडितो मिश्रः।
प्रभवेण पदाभ्यस्तः संकलितं भवति सर्वेषां ॥१॥

इस सूत्र तैं एक घाटि गच्छ का आधा कौं विशेष करि गुणि, ताकौं आदि विषैं जोडि ताकौं गच्छ करि गुणें सबनि का संकलित धन कहिए जोड्या हुवा प्रमाण हो है। सो जो जो प्रमाण होइ तितना तितना अधःस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। सोई कहिए है—

एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर प्रथम कृष्टि विषैं विशेष मिल्या नाहीं, तातैं एक घाटि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै प्रथम समय विषै कीनी अंतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि का जो द्वितीय समय विषै अपकर्षण द्रव्य विषैं द्रव्य कह्या था, तिस द्रव्य कौं द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया, ताहि विषैं जो कृष्टिनि विषै देने योग्य द्रव्य कह्या था, तीहि विषै अधःस्तन शीर्ष द्रव्य हो है।

बहुरि ऐसैं ही लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर द्वितीय संग्रह कृष्टि की अंतर संग्रह

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कृष्टि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धन मात्र लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषैं अध:स्तन शीर्ष द्रव्य हो है ।

बहुरि लोभ की प्रथम द्वितीय संग्रह कृष्टिनि विषै जो अंतर कृष्टिनि का प्रमाण तितने विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध:स्तन शीर्ष द्रव्य हो है ।

बहुरि लोभ की प्रथम, द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टिनि की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर माया की प्रथम संग्रह कृष्टि की अंतर कृष्टि प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र माया की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध:स्तन शीर्ष द्रव्य हो है । असैं ही अवशेष आठ संग्रह कृष्टिनि विषै अपने अपने नीचैं की संग्रह कृष्टिनि की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपना अपना अंतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र अपना अपना संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध:स्तन शीर्ष का द्रव्य हो है । इस सर्व कौ जोडैं एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर, एक घाटि प्रथम समय विषै कीनी सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापैं, जो संकलन धन होइ, तितना सर्व अध:स्तन शीर्ष विशेष द्रव्य जानना ।

बहुरि प्रथम समय विषै जो लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै द्रव्य का प्रमाण कह्या था, तीहिं प्रमाण एक एक (घाटि) कृष्टि का द्रव्य स्थापि, ताकौं अपनी अपनी संग्रह कृष्टिनि विषै करी जे (अंतर कृष्टि) नवीन कृष्टि, तिनका प्रमाण करि गुणैं अपनी अपनी संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध:स्तन कृष्टि का द्रव्य प्रमाण हो है । सर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि ताही कौं गुणैं सर्व अध:स्तन कृष्टि द्रव्य हो है । बहुरि प्रथम समय, द्वितीय समय सम्बन्धी जो कृष्टि विषै देने योग्य द्रव्य, ताकौं जोडैं सर्व धन होइ, याकौं पुरातन वा नवीन करी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीएं मध्य धन हो है । ताकौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि न्यून दोगुणहानि का भाग दीएं एक उभय द्रव्य का विशेष हो है । सो एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापि, तहां पूर्वोक्त सूत्र अनुसारि संकलन धन मात्र क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि विषै जो द्वितीय समय विषै कृष्टिनि विषै देने योग्य अपकर्षण द्रव्य कह्या था, तिस विषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य का प्रमाण हो है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि एक अधिक क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि का पुरातन नवीन कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर क्रोध की प्रथम, द्वितीय कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि मात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धन मात्र क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि एक अधिक क्रोध की तृतीय द्वितीय संग्रह कृष्टिनि का पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है।

बहुरि एक अधिक क्रोध की तीनों संग्रह कृष्टिनि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर मान की तृतीय संग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र मान की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं उभय द्रव्य विशेष हो है। ऐसें एक अधिक अपनी ऊपरि की संग्रह कृष्टिनि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी संग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, संकलन की अवशेष आठ संग्रह कृष्टिनि विषै भी उभय द्रव्य, विशेष द्रव्य का प्रमाण आवै है। इस सर्व कौं जोडैं एक उभय द्रव्य विशेष आदि, एक उभय द्रव्य विशेष उत्तर, सब पुरातन नवीन कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि संकलन धन कीएं सर्व उभय द्रव्य विशेष द्रव्य का प्रमाण आवै है।

बहुरि द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य तीहिं विषै पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या, ताकौं सर्व पुरातन नवीन कृष्टि के प्रमाण का भाग दीएं एक खंड का प्रमाण आवै, ताकौं अपनी अपनी पुरातन नवीन कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणें अपनी अपनी संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै मध्यम खंड का प्रमाण आवै है। बहुरि तिस एक खंड कौं सर्व पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण करि गुणें, सर्व मध्यम खण्ड का द्रव्य हो है। इहां प्रथम समय विषै कीनी कृष्टिनि कौं पुरातन कहिए। द्वितीय समय विषै करिए है, तिनकौं नवीन कहिए है। ऐसें द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य, तिसविषै च्यारि प्रकार कहे। अब इनके देने का विधान कहिए है—

लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि के नीचैं जे अपूर्व नवीन कृष्टि करी, तिनकी जघन्य कृष्टि विषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। तहां अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य तौ न दीजिए

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

है अर अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य तैं एक कृष्टि का द्रव्य अर मध्यम खंड का द्रव्य तैं एक खंड का द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेष का द्रव्य तैं सर्व नवीन पुरातन कृष्टिनि का जेता प्रमाण तितने विशेषनि का द्रव्य ग्रहि तहां ही दीजिए है। ऐसा यतिवृषभ आचार्य का तात्पर्य है।

बहुरि द्वितीयादि अंतपर्यन्त जे नवीन कृष्टि, तिनविषै अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य तैं एक कृष्टि का द्रव्य अर मध्यम खंड तैं एक खंड तौ समान रूप सर्वत्र दीजिए है अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्य विषै एक एक विशेष मात्र द्रव्य घटता क्रम तैं दीजिए है। सो कृष्टि कृष्टि प्रति उभय द्रव्य का एक विशेष जो घट्या, सो अनंतवें भाग मात्र घट्या, तातैं पूर्व कृष्टि तैं उत्तर कृष्टि विषैं अनंतवें भाग मात्र घटता द्रव्य दीया कहिए है, इहां प्रथम संग्रह कृष्टि का अधःस्तन कृष्टि द्रव्य तौ समाप्त भया। बहुरि नवीन कृष्टि की अंत कृष्टि के ऊपरि पुरातन कृष्टि की जघन्य कृष्टि है, तीहिंविषै मध्यम खंड का द्रव्य तैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष तैं जितनी कृष्टि नीचैं नवीन होइ आई तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य दीजिए है। सो इहां नवीन कृष्टि की अंतकृष्टि विषै दीया द्रव्य तैं एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य अर एक उभय द्रव्य का विशेष का द्रव्य घटता दीया, सो तिस नवीन अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तैं एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य तौ असंख्यातवें भाग मात्र अर एक उभय द्रव्य का विशेष अनंतवें भाग मात्र है, तातैं तिस नवीन अंत कृष्टि तैं असंख्यातवां भाग मात्र द्रव्य पुरातन कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै दीया कहिए है। इहां पुरातन जघन्य कृष्टि विषै प्रथम समय विषै दीया द्रव्य एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य के समान है। ताकौं जोडैं एक गोपुच्छाकार होइ जाइ, परंतु ताकी इहां विवक्षा नाहीं। इहां द्वितीय समय विषै दीया द्रव्य ही की विवक्षा है, तातैं असंख्यातवां गुणा[1] घटता कह्या ऐसैं आगैं भी जहां नवीन अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तैं पुरातन जघन्य कृष्टि विषै दीया द्रव्य असंख्यात बहुभाग मात्र घटता है, तहां ऐसी ही युक्ति जाननी। बहुरि याके ऊपरि पुरातन कृष्टि की द्वितीय कृष्टि, तिस विषै अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य तैं एक विशेष का द्रव्य अर मध्यम खंड तैं एक खंड का द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेष तैं जितनी कृष्टि नीचैं नवीन अर एक पुरातन होइ आईं, तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य दीजिए है। सो इहां पुरातन

१–'गुणा' शब्द के स्थान पर छपी प्रति में 'भाग' शब्द मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जघन्य कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं एक अधःस्तन शीर्ष के विशेष का द्रव्य बध्या अर एक उभय द्रव्य का विशेष घट्या, सो उभय द्रव्य का विशेष विषै प्रथम समय सम्बन्धी विशेष मात्र अधःस्तन शीर्ष का विशेष घटाएं जो अवशेष रह्या सो पुरातन प्रथम कृष्टि विषै दीया द्रव्य के अनंतवें भाग मात्र है। तातैं तिस पुरातन प्रथम कृष्टि विषै दीया द्रव्य तैं इस द्वितीय कृष्टि विषै दीया द्रव्य अनंतवें भाग मात्र घटता कहिए है, बहुरि पुरातन कृष्टि की तृतीयादि अंत पर्यंत कृष्टिनि विषै मध्यम खंड तैं एक एक खंड का द्रव्य तौ समान रूप अर अधःस्तन शीर्ष द्रव्य तैं एक एक विशेष का द्रव्य क्रम तैं बधता अर उभय द्रव्य विशेष तैं (एक एक विशेष तैं)[1] एक एक विशेष का द्रव्य क्रम तैं घटता दीजिए है। तातैं अनंतवां भाग मात्र घटता द्रव्य दीया कहिए। ऐसैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार द्रव्य देने का विधान कह्या। बहुरि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की पुरातन अंत कृष्टि के ऊपरि लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि की नवीन कृष्टि की जघन्य कृष्टि है, तिस विषै लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार द्रव्य विषै अधःस्तन शीर्ष द्रव्य तौ न दीजिए है अर अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य तैं एक कृष्टि का द्रव्य अर मध्यम खंड द्रव्य तैं एक खंड का अर उभय द्रव्य विशेष तैं नीचैं होइ आई जे प्रथम संग्रह कृष्टि की जे नवीन पुरातन कृष्टि, तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य दीजिए है। सो इहां प्रथम संग्रह कृष्टि की पुरातन अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तैं एक अधःस्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य अर एक उभय द्रव्य विशेष का द्रव्य तौ घटता अर एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य बधता दीया, सो एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य विषै एक अधःस्तन शीर्ष का विशेष अर एक उभय द्रव्य विशेष का द्रव्य घटाएं जो अवशेष रह्या सो प्रथम संग्रह कृष्टि की पुरातन अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है तातैं तिस पुरातन अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र बधता कहिए है। ऐसैं इहां दीयमान द्रव्य की अपेक्षा गोपुच्छ का अभाव भया। ऐसैं ही आगैं भी जहां पुरातन कृष्टि की अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तैं नवीन कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषैं दीया द्रव्य असंख्यातवां भाग मात्र बधता है, तहां ऐसी ही युक्ति जाननी। बहुरि याके उपरि नवीन कृष्टि की द्वितीयादि अंत पर्यंत कृष्टिनि विषैं एक एक उभय द्रव्य विशेष मात्र घटता द्रव्य दीजिए है। तहां

१–यह मात्र छपी प्रति में ही मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

क्रम तैं अनंतवां भाग घटता दीया द्रव्य क्रम तैं जानना । इहां अधःस्तन कृष्टि द्रव्य समाप्त भया ।

बहुरि द्वितीय संग्रह कृष्टि की तिस नवीन अंत कृष्टि के ऊपरि पुरातन जघन्य कृष्टि है, तिस विषैं अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य तैं तौ नीचैं होइ आई जे प्रथम संग्रह संबंधी पुरातन कृष्टि, तिनके प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य अर मध्यम खंड द्रव्य तैं एक खंड का द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेष तैं नीचैं होइ आई जे सर्व नवीन पुरातन कृष्टि, तिनका प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य दीजिए । सो एक एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य विषैं इहां अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य दीया, सो घटाएं अवशेष द्वितीय संग्रह की जघन्य कृष्टि के समान होइ उभय द्रव्य का विशेष मिलाएं जो द्रव्य भया, सो नवीन अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है, तातैं नवीन अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं इहां जघन्य पुरातन कृष्टि विषैं दीया द्रव्य असंख्यातवां भाग मात्र घटता द्रव्य दीया कहिए ।

बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत पुरातन कृष्टिनि विषैं क्रम तैं एक एक अधःस्तन शीर्ष का विशेष बधता अर एक एक उभय द्रव्य का विशेष घटता दीजिए है । तहां अनंतवां भाग मात्र घटता अनुक्रम पूर्वोक्त प्रकार है । ऐसैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि का च्यारि प्रकार द्रव्य देने का विधान है ।

बहुरि ताके ऊपरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की नवीन पुरातन कृष्टि है, तिन विषैं द्रव्य देने का विधान लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का च्यारि प्रकार द्रव्य स्थापि, तहां द्वितीय कृष्टिवत् जानना ।

विशेष इतना – पुरातन कृष्टिनि विषैं अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य तैं जेती नीचैं पुरातन कृष्टि भईं तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य देना अर नवीन वा पुरातन कृष्टिनि विषैं उभयद्रव्य का विशेष तैं जेती नीचैं नवीन पुरातन कृष्टि भईं, तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का प्रमाण द्रव्य देना । इहां लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का च्यारि प्रकार द्रव्य समाप्त भया ।

बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की पुरातन अंतकृष्टि के ऊपरि माया की प्रथम संग्रह कृष्टि की नवीन जघन्य कृष्टि है, तिस विषैं माया की प्रथम संग्रह कृष्टि की च्यारि प्रकार द्रव्य विषैं अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य बिना एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य एक मध्यम खंड का द्रव्य अर लोभ की सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनि का प्रमाण

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेषनि का द्रव्य दीजिए है सो एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य विषै लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं जो अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य दिया, ताकौं घटाएं अवशेष लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि का प्रथम समय विषैं जो द्रव्य था, ताका प्रमाण होइ, तामैं एक उभय द्रव्य का विशेष घटाएं अवशेष द्रव्य लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि के असंख्यातवें भाग मात्र है, तातैं लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं इहां माया की जघन्य नूतन कृष्टि विषैं दीया द्रव्य असंख्यातवां भाग मात्र बधता जानना ।

बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत नवीन कृष्टिनि विषैं एक एक उभय द्रव्य का विशेष प्रमाण अनंतवां भाग घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि माया की प्रथम संग्रह कृष्टि की पुरातन जघन्य कृष्टि तैं लगाय क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि का पुरातन अंत कृष्टि पर्यंत पूर्वोक्त प्रकार विधान द्रव्य देने का जानना । तहां सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनि विषै एक एक मध्यम खंड का द्रव्य कौं देना अर जेती नीचैं नूतन पुरातन कृष्टि भईं तिनके प्रमाण करि हीन सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेषनि का द्रव्य कौं देना अर नवीन कृष्टिनि विषैं एक एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य देना अर पुरातन कृष्टि विषैं जेती नीचैं पुरातन कृष्टि भईं, तिनके प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेषनि का द्रव्य देना । अैसैं द्वितीय समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य, तिस विषैं जो कृष्टि संबंधी द्रव्य था, तिसके निक्षेपण करने का विधान कह्या ।

बहुरि जो अपना अपना पूर्व अपूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य था, ताकौं **"दिवड्ढगुणहाणिभ जिदे पढमा ।"** इत्यादि विधानकरि तिस द्रव्य कौं साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं लब्ध प्रमाण मात्र अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं बहुत द्रव्य दीजिए है ।

बहुरि ऊपरि प्रथम गुणहानि पर्यन्त चय घटता क्रम करि दीजिए है । बहुरि ऊपरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा द्रव्य दीजिए है । या प्रकार जैसैं यहु द्वितीय समय विषैं वर्णन कीया तैसैं ही कृष्टि करण काल का तृतीयादि अंत पर्यंत समयनि विषैं विधान जानना ।

विशेष इतना – समय समय प्रति अपकर्षण कीया द्रव्य का प्रमाण क्रम तैं असंख्यात गुणा बधता जानना । अर नीचैं नीचैं जे नवीन कृष्टि करिए है, तिनका प्रमाण क्रम तैं असंख्यात गुणा घटता जानना ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पुव्वादिम्हि अपुव्वा, पुव्वादि अपुव्वपढमगे सेसे ।
दिज्जदि असंखभागेणूणं अहियं अणंतभागूणं ।।५०४।।

पूर्वादौ अपूर्वा पूर्वादौ अपूर्वप्रथमके शेषे ।
दीयते असंख्यभागेनोनमधिकं अनंतभागोनं ।।५०४।।

टीका – अपूर्व जो नवीन कृष्टि, ताकी अंत कृष्टि तैं पूर्वै जो पुरातन कृष्टि, ताकी आदि कृष्टि विषैं तौ असंख्यातवें भाग घटता द्रव्य दीजिए है । बहुरि पूर्वैं जो पुरातन कृष्टि की अंत कृष्टि, तातैं अपूर्व जो नवीन कृष्टि, ताकी प्रथम कृष्टि विषैं असंख्यातवां भाग मात्र अधिक द्रव्य दीजिए है । बहुरि अवशेष सर्व कृष्टिनि विषैं पूर्व कृष्टि तैं उत्तर कृष्टि विषैं द्रव्य अनंतवां भाग मात्र घटता दीजिए है । सो कथन करिही आए हैं ।

वारेक्कारमणंतं, पुव्वादि अपुव्वआदि सेसं तु ।
तेवीस ऊंटकूडा, दिज्जे दिस्से अणंतभागूणं ।।५०५।।

द्वादशैकादशमनंतं, पूर्वादि अपूर्वादि शेषं तु ।
त्रयोविंशतिरुष्ट्रकूटा देये दृश्ये अनंतभागोनम् ।।५०५।।

टीका – तहां पुरातन प्रथम कृष्टि तौ बारह अर प्रथम संग्रह की बिना नवीन संग्रह कृष्टि ग्यारह अर अवशेष कृष्टि अनंत जाननी । असैं देय जो देने योग्य द्रव्य, तिसविषैं तेईस स्थाननि विषैं उष्ट्रकूट रचना हो है ।

जैसैं ऊंट की पीठि पिछाड़ी तौ ऊंची अर मध्य विषैं नीची अर आगैं ऊंची वा नीची हो है, तैसैं इहां पहलैं नवीन जघन्य कृष्टि विषैं बहुत, बहुरि द्वितीयादि नवीन कृष्टिनि विषैं क्रम तैं घटता अर आगैं पुरातन कृष्टिनि विषैं अधःस्तन शीर्ष विशेष करि बधता अर अधःस्तन कृष्टि अथवा उभय द्रव्य विशेष करि घटता द्रव्य दीजिए है । तातैं देयमान द्रव्य विषैं तेईस उष्ट्र कूट रचना हो हैं ।

बहुरि दृश्यमान विषैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की नवीन जघन्य कृष्टि तैं लगाय क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की पुरातन अंत कृष्टि पर्यन्त अनंतवें भाग मात्र घटता क्रम लीएं द्रव्य जानना । जातैं नवीन कृष्टिनि विषैं तौ विवक्षित समय विषैं दीया द्रव्य, सोई दृश्यमान है अर पुरातन कृष्टिनि विषैं पूर्व समयनि विषैं दीया द्रव्य

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अर विवक्षित समय विषैं दीया द्रव्य, मिलाएं दृश्यमान द्रव्य हो है, सो नूतन कृष्टिनि विषैं तौ अध:स्तन कृष्टि का द्रव्य दीएं अर पुरातन कृष्टिनि विषैं अध:स्तन शीर्ष का द्रव्य दीएं तौ सर्वकृष्टि पुरातन प्रथम कृष्टि के समान हो है। तहां एक एक मध्यम खंड कौं दीएं तिनका समान प्रमाण ही रह्या।

बहुरि उभय द्रव्य विशेष क्रम तैं एक एक विशेष घटता दीया सो यहु विशेष विवक्षित कृष्टि की नीचली कृष्टि का द्रव्य के अनंतवें भाग मात्र है। तातैं दृश्यमान द्रव्य की अपेक्षा सर्वत्र अनंतवां भाग मात्र घटता क्रम कह्या है। बहुरि अंत कृष्टि तैं अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं दीया द्रव्य अनंत गुणा घटता है; जातैं तहां एक भाग विषैं द्व्यर्ध गुणहानि का भाग दीएं, ताका प्रमाण हो है।

किट्टीकरणद्धाए, चरिमे अंतमुहुत्तसंजुत्तो।
चत्तारि होंति मासा, संजलणाणं तु ठिदिबंधो ॥५०६॥

कृष्टिकरणाद्धायाः, चरमे अंतर्मुहूर्तसंयुक्ताः।
चत्वारो भवंति मासाः संज्वलनानां तु स्थितिबंधः ॥५०६॥

टीका – कृष्टिकरण काल अंतर्मुहूर्त मात्र है, ताका अंत समय विषैं अंतर्मुहूर्त अधिक च्यारि मास प्रमाण संज्वलन चतुष्क का स्थितिबंध है। अपूर्व स्पर्धक करण काल का अंत समय विषैं आठ वर्ष मात्र था, सो एक एक स्थितिबंधापसरण विषैं अंतर्मुहूर्त मात्र घटि इहां इतना रहै है।

सेसाणं वस्साणं, संखेज्जसहस्सगाणि ठिदिबंधो।
मोहस्स य ठिदिसंतं, अडवस्संतोमुहुत्तहियं ॥५०७॥

शेषाणां वर्षाणां, संख्येयसहस्रकानि स्थितिबंधः।
मोहस्य च स्थितिसत्त्वं, अष्टवर्षोऽतर्मुहूर्ताधिकः ॥५०७॥

टीका – बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थिति बंध संख्यात हजार वर्ष मात्र है। पूर्वैं भी संख्यात हजार वर्ष मात्र ही था, सो संख्यात गुणा घटता क्रमरूप संख्यात हजार स्थितिबंधापरसरण भएं भी आलाप करि इतना ही कह्या।

बहुरि मोहनीय का स्थितिसत्व पूर्वैं संख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो घटिकरि इहां अंतर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष मात्र रह्या।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घादितियाणं संखं, वस्ससहस्साणि होदि ठिदिसंतं।
वस्साणमसंखेज्जसहस्साणि अघादितिण्णं तु ॥५०८॥

घातित्रयाणां संख्यं, वर्षसहस्राणि भवति स्थितिसत्त्वम् ।
वर्षाणामसंख्येयसहस्राणि अघातित्रयाणां तु ॥५०८॥

टीका – तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिसत्त्व है। बहुरि तीन अघातियानि का असंख्यात हजार वर्ष मात्र इहां स्थिति सत्त्व है।

पडिपदमणंतगुणिदा, किट्टीयो फड्ढया विसेसहिया ।
किट्टीण फड्ढयाणं, लक्खणमणुभागमासेज्ज ॥५०९॥

प्रतिपदमनंतगुणिता, कृष्ट्यः स्पर्धका विशेषाधिकाः ।
कृष्टीनां स्पर्धकानां, लक्षणमनुभागमासाद्य ॥५०९॥

टीका – कृष्टि हैं ते तौ प्रतिपद अनंत गुणा अनुभाग लीए हैं। प्रथम कृष्टि का अनुभाग तैं द्वितीय कृष्टि का अनुभाग अनंत गुणा, तातैं तृतीय कृष्टि का, ऐसैं अंत कृष्टि पर्यंत क्रम तैं अनंत गुणा अनुभाग पाइए है। बहुरि स्पर्धक हैं ते प्रतिपद विशेष अधिक अनुभाग लीए हैं। स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा तैं द्वितीय विषैं तातैं तृतीय वर्गणा विषैं ऐसैं अनंत वर्गणा पर्यंत क्रम तैं किछू विशेष अधिक अनुभाग पाइए है। ऐसैं अनुभाग कौं आश्रय करि कृष्टि अर स्पर्धकनि का लक्षण है। द्रव्य अपेक्षा तौ चय घटता क्रम दोऊनि विषैं ही है, परंतु अनुभाग का क्रम की अपेक्षा इनका लक्षण जुदा जानि जुदापना कह्या है।

पुव्वापुव्वफड्ढयमणुहवदि हु किट्टिकारओ णियमा ।
तस्सद्धा णिट्ठायदि, पढमट्ठिदि आवलीसेसे ॥५१०॥

पूर्वापूर्वस्पर्धकमनुभवति हि कृष्टिकारको नियमात् ।
तस्याद्धा निष्ठापयति, प्रथमस्थितौ आवलिशेषे ॥५१०॥

टीका – कृष्टि करने वाला तिसकाल विषैं पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि ही के उदय कौ नियम करि भोगवै है। जैसैं अपूर्व स्पर्धक करने तैं पूर्वस्पर्धक सहित अपूर्व स्पर्धकनिकौं भोगवै है, तैसैं कृष्टि करतैं कृष्टि कौं नाहीं भोगवै है, ऐसा जानना। या प्रकार

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संज्वलन क्रोध का प्रथम स्थिति विषैं उच्छिष्टावलि मात्र काल अवशेष रहैं, तिस कृष्टिकरण काल कौं निष्ठापन करै, समाप्त करै है।

इति कृष्टिकरणाधिकारः।

अथ कृष्टिवेदनाधिकार कहिए है—

से काले किट्टीओ, अणुहवदि हु चारिमासमडवस्सं।
बंधो संतं मोहे, पुव्वालावं तु सेसाणं ॥५११॥

स्वे काले कृष्टीन्, अनुभवति हि चतुर्मासमष्टवर्षं।
बंधः सत्त्वं मोहे, पूर्वालापस्तु शेषाणाम् ॥५११॥

टीका – कृष्टिकरण काल के अनंतरि अपने कृष्टिवेदक काल विषैं कृष्टिनि के उदय कौं अनुभवे है। द्वितीय स्थिति के निषेकनि विषैं तिष्ठती कृष्टिनि कौं प्रथम स्थिति के निषेकनि विषैं प्राप्त करि भोगवै है। तिस भोगवने ही का नाम वेदना है। ताके काल का प्रथम समय विषैं च्यारि संज्वलनरूप मोह का स्थितिबंध च्यारि मास है अर स्थिति सत्त्व आठ वर्ष मात्र है। पूर्वैं अंतर्मुहूर्त अधिक थे, सो अंतर्मुहूर्त घाटि इतने रहे। बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थितिबंध, स्थिति सत्व यद्यपि घटता भया है, तथापि आलाप करि पूर्वोक्त प्रकार जैसें कृष्टिकरण काल का अंत समय विषैं करै तैसें ही जानना।

ताहे कोहुच्छिट्ठं, सव्वं घादी हु देसघादी हु।
दोसमऊणदुआवलिणवकं ते फड्डयगदाओ ॥५१२॥

तत्र क्रोधोच्छिष्टं, सर्वं घाति हि देशघाति हि।
द्विसमयोनद्व्यावलिनवकं तत् स्पर्धकगतम् ॥५१२॥

टीका – इहां अनुभाग बंध तौ गुड, खंड, शर्करा, अमृतरूप यथा संभव उत्कृष्ट है। बहुरि अनुभाग सत्व है, सो क्रोध की उच्छिष्टावली का तौ सर्वघाती है। काहेतैं? समय घाटि आवली प्रमाण क्रोध के निषेक उदयावली कौं प्राप्त भये हैं। तिनविषैं पूर्वस्पर्धक रूप अनुभाग सत्त्व लता, दारु समान शक्ति युक्त है। सो असी शक्ति की अपेक्षा इहां सर्वघाती कहे हैं। शैल समानादि की अपेक्षा सर्वघाति न कहै हैं। सो ए निषेक उदय काल विषैं कृष्टि रूप परिणमि जो वर्तमान समय में उदय आवने योग्य निषेक, तिनविषैं उदयरूप होइ निर्जरै हैं। इहां आवलि विषैं एक समय

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घाटि कह्या है, सो उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक वर्तमान समय-विषैं कृष्टिरूप परिणमने तैं परमुखरूप होइ उदय आवैं है, तातैं कह्या है। बहुरि संज्वलन चतुष्क का जे दोय समय घाटि दोय आवलि मात्र नवक समयप्रबद्ध रहै हैं, तिनविषैं अनुभाग देशघाती शक्ति करि संयुक्त है। जातैं कृष्टिकरण काल विषैं कृष्टिरूप बंध नाहीं, तातैं ते स्पर्धकरूप शक्ति करि युक्त हैं, ते दोय समय घाटि दोऊ आवली काल विषैं कृष्टिरूप परिणमि सत्ता नाश कौं प्राप्त होसी। नवक समयप्रबद्ध का स्वरूप वा अन्यरूप परिणमने का विधान पूर्वैं कह्या है, सोई जानना। नवक बंध अर उच्छिष्टावली मात्र निषेक अवशेष रहे थे तिनका तौ असैं स्वरूप जानना। अवशेष सर्व निषेक कृष्टि करण काल का अंत समय विषैं ही कृष्टिरूप परिणमै हैं।

लोहादो कोहादो, कारउ वेदउ हवे किट्टी।
आदिमसंगहकिट्टिं, वेदयदि ण बिदीय तिदियं च ॥५१३॥

लोभात् क्रोधात्, कारको वेदको भवेत् कृष्टेः।
आदिमसंग्रहकृष्टिं, वेदयति न द्वितीयां तृतीयां च ॥५१३॥

टीका – कृष्टि का कारक तौ लोभ तैं लगाय क्रम लीएं है। अर वेदक है सो क्रोध तैं लगाय क्रम लीए है।

भावार्थ यहु – कृष्टिकरण विषै तौ पहिले लोभ की, पीछै मान की, पीछै माया की, पीछै क्रोध की असैं क्रम लीएं कृष्टि कही थी। इहा कृष्टि का वेदने विषै पहिले क्रोध की, पीछै मान की, पीछै माया की, पीछै लोभ की कृष्टिनि का अनुभवन हो है।

बहुरि इतना जानना। कृष्टिकरण विषै जाकौं तृतीय संग्रह कृष्टि कही है, ताकौं तौ इहां कृष्टि वेदन विषै प्रथम कृष्टि कहनी अर जाकौं तहां प्रथम कृष्टि कही, ताकौं इहां तृतीय कृष्टि कहनी, जो असैं न होइ तौ पहलैं स्तोक शक्ति लीएं कृष्टिनि का अनुभवन होइ, पीछैं बहुत शक्ति लीएं कृष्टिनि का अनुभव होइ, सो बनै नाहीं, जातैं समय समय अनंत गुणा घटता अनुभाग का उदय हो है। तातैं संग्रह कृष्टिनि विषैं कृष्टिकारक तैं कृष्टिवेदक कैं उलटा क्रम जानना। बहुरि तहां अंतर कृष्टिनि विषै पूर्वोक्त प्रकार ही क्रम जानना। बहुरि इहां पहलैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि कौं ही अनुभवै है; द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टि कौं नाहीं अनुभवै है, असा जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

किट्टीवेदगपढमे, कोहस्स य पढमसंगहादो दु ।
कोहस्स य पढमठिदी, पत्तो उव्वट्टगो मोहे ॥५१४॥

कृष्टिवेदकप्रथमे, क्रोधस्य च प्रथमसंग्रहात् तु ।
क्रोधस्य च प्रथमस्थितिः, प्राप्तः अपवर्तको मोहे ॥५१४॥

टीका – कृष्टिवेदक काल का प्रथम समय विषै क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं क्रोध की प्रथम स्थिति करै है, कैसें ? सो कहिए है—

कृष्टिकरण काल का अंत समय पर्यंत तौ कृष्टिनि का तौ दृश्यमान प्रदेशनि का समूह है सो चय घटता क्रम लीएं गोपुच्छाकाररूप अपने स्थान विषै तिष्ठै है । अर स्पर्धकनि का अपने स्थान विषै प्रदेश समूह एक गोपुच्छाकार रूप तिष्ठै है । तहां कृष्टिनि का द्रव्य तैं स्पर्धकनि का द्रव्य असंख्यात गुणा है, तातैं कृष्टि अर स्पर्धकनि कैं एक गोपुच्छाकार है नाहीं । बहुरि कृष्टिकरण काल की समाप्तता के अनंतरि सर्व ही द्रव्य (लीए एक भूमि)[१] कृष्टिरूप परिणमि एक गोपुच्छाकार तिष्ठै है । तहां संज्वलन के सर्व द्रव्य कौं आठ का भाग देइ तहां एक एक भाग मात्र लोभ, माया, मान का, पांच भाग मात्र क्रोध का द्रव्य जानना ।

बहुरि बारह संग्रह कृष्टिनि विषै विभाग कीजिए तौ सर्व संज्वलन द्रव्य कौं चौईस का भाग दीएं तहां अन्य संग्रह कृष्टिनि का एक एक भाग मात्र क्रोध का प्रथम संग्रहकृष्टि का तेरह भाग मात्र द्रव्य है, इहां साधिकपना न्यूनपना है, सो यथा-सम्भव पूर्वोक्त प्रकार जानना । पूर्वं कृष्टिकरण काल का द्वितीय समय विषै जैसें विधान कह्या है, तैसें कहना ।

बहुरि प्रथम समय विषै करी कृष्टिनि का प्रमाण विषैं ताके असंख्यातवें भाग मात्र द्वितीयादि समयनि विषै करी कृष्टिनि का प्रमाण जोडैं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण हो है । सो कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का जो द्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग ग्रहि ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौं ग्रहि प्रथम स्थिति कौं करै है । सो क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक का काल तैं

१–घ प्रति में "लीए एक भूमि" इतना अंश मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

उच्छिष्टावली मात्र अधिक प्रथम स्थिति के निषेकनि का प्रमाण है। सोई इहां गुण-श्रेणी आयाम जानना। ताके वर्तमान उदयरूप प्रथम निषेक विषैं तौ स्तोक द्रव्य दीजिए है। तातैं द्वितीयादि अंत समय पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। असैं तिस एक भाग मात्र द्रव्य का गुणश्रेणी रूप देना हो है। इहां प्रथम स्थिति का जो अंत का निषेक ताही का नाम गुणश्रेणी शीर्ष है। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कह्या। ताकौं स्थिति की अपेक्षा क्रोध की द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि तैं भी अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तामैं मिलाएं जो द्रव्य भया, ताकौं इहां आठ वर्ष मात्र स्थिति है, ताकी संख्यात आवली भई सोई गच्छ, ताका भाग दीएं मध्यधन होइ। तामै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र चय मिलाएं द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषैं दीया द्रव्य का प्रमाण हो है, सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। बहुरि ताके असंख्यातवां भाग मात्र विशेष का प्रमाण है, सो द्वितीयादि निषेकनि विषै अतिस्थापनावली के नीचैं एक एक विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। असैं क्रम करि समय समय प्रति उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी कीजिए है। बहुरि इहां मोह का अपवर्तन घात हो है। इहां तैं पहलैं अश्वकर्णरूप अनुभाग का अंतर्मुहूर्त करि संपूर्ण होइ असा कांडकघात वर्तै था। अब संज्वलन की बारह संग्रह कृष्टि तिनका समय समय प्रति अनंत गुणा घटता अनुभाग होने करि अपवर्तन घात वर्तै है।

पढमस्स संगहस्स य, असंखभागा उदेदि कोहस्स।
बंधेवि तहा चेव य, माणतियाणं तहा बंधे ॥५१५॥

प्रथमस्य संग्रहस्य च, असंख्यभागान् उदयति क्रोधस्य।
बंधेऽपि तथा चैव च, मानत्रयाणां तथा बंधे ॥५१५॥

टीका – कृष्टिवेदक का प्रथम समय विषैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी जे अंतर कृष्टि, तिनके प्रमाण कौं असंख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र कृष्टि उदय आवै है। तहां एक भाग मात्र नीचे की ऊपरि की कृष्टि कौं छोडि बीचि की बहुभाग मात्र कृष्टिनि का उदय हो है। जे प्रथम द्वितीयादि कृष्टि, तिनकौं नीचली कृष्टि कहिए। बहुरि अंत उपांत आदि जे कृष्टि, तिनकौं ऊपरली कृष्टि कहिए है। तहां उदयरूप न होइ असी नीचली कृष्टि ते तौ अनंत गुणा बधता अनुभाग रूप होइ करि अर ऊपरि की कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभागरूप होइ करि ते कृष्टि बीचि की कृष्टिरूप परिणमि उदय आवै है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि बंध विषैं भी नीचली ऊपरली असंख्यातवां भाग मात्र कृष्टि छोडि बीचि की असंख्यात बहुभाग मात्र कृष्टि जाननी। उदयरूप कृष्टिनि विषै जो ऊपरली अनुदय कृष्टिनि का प्रमाण तातैं साधिक दूणा प्रमाण लीएं नीचली ऊपरली कृष्टिनि का प्रमाण घटाएं बंधरूप कृष्टिनि का प्रमाण हो है। इनका बंध इहां हो है। बहुरि इहां मानादिक की अपनी अपनी प्रथम संग्रह कृष्टि की नीचली ऊपरली कृष्टि प्रमाण का असंख्यातवां भाग मात्र कृष्टिनि कौं नीचैं ऊपरि छोडि बीचि की बहुभाग मात्र कृष्टि बंधै है। बहुरि इहां मानादिकनि की तीनों ही संग्रह कृष्टिनि का उदय नाहीं है अर क्रोध की द्वितीय, तृतीय संग्रहकृष्टि का बंध वा उदय नाहीं है, असा जानना।

कोहस्स पढमसंगहकिट्टिस्स य हेट्ठिमणुभयट्ठाणा।
तत्तो उदयट्ठाणा, उवरिं पुण अणुभयट्ठाणा ॥५१६॥

उवरिं उदयट्ठाणा, चत्तारि पदाणि होंति अहियकमा।
मज्झे उभयट्ठाणा, होंति असंखेज्जसंगुणिया ॥५१७॥

क्रोधस्य प्रथमसंग्रहकृष्टेश्चाधस्तनानुभयस्थानानि।
तत उदयस्थानानि, उपरि पुनरनुभयस्थानानि ॥५१६॥

उपरि उदयस्थानानि, चत्वारि पदानि भवंति अधिकक्रमाणि।
मध्ये उभयस्थानानि, भवंति असंख्येयसंगुणितानि ॥५१७॥

टीका – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की अंतर कृष्टिनि विषैं अध:स्तन कहिए प्रथम द्वितीयादि नीचली जे अनुभय स्थान कहिए जिनिका उदय अर बंध दोऊ नाहीं असी नीचली कृष्टि, तिनिका प्रमाण स्तोक है, ताकी संदृष्टि दोय का अंक। बहुरि तातैं ताही कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग मात्र विशेष करि अधिक तीन अनुभय कृष्टिनि के ऊपरिवर्ती जे नीचली उदयस्थान कहिए जिनिका उदय पाइए बंध न पाइए असी कृष्टि, तिनिका प्रमाण है। ताकी संदृष्टि तीन का अंक। बहुरि तातैं ताही कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र विशेष करि अधिक उपरितन कहिए अन्त उपांत आदि ऊपरिकी अनुभयस्थाना कहिए बंध-उदय रहित कृष्टि, तिनका प्रमाण है। ताकी संदृष्टि च्यारि का अंक। बहुरि तातैं ताहीकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग मात्र विशेषकरि अधिक तिनि कृष्टिनि के नीचैं पाइए अैसी ऊपरली उदयस्थाना

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कहिए उदय सहित बंध रहित कृष्टि, तिनका प्रमाण है। ताकी संदृष्टि सात का अंक असैं च्यारि पद तौ अधिक क्रम लीएं हैं। बहुरि तातैं असंख्यात गुणा बीचिकी उभय-स्थाना कहिए जिनिका बंध भी पाइए असी कृष्टिनि का प्रमाण है। सोई कहिए है–

क्रोध की प्रथम संग्रहकृष्टि विषै जो कृष्टिनि का प्रमाण, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग मात्र तौ बीचिकी उभय कृष्टिनि का प्रमाण है। बहुरि अवशेष एक भाग रह्या ताकौं 'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंडः' इत्यादि सूत्र विधान तैं अंक संदृष्टि अपेक्षा दोय, तीन, च्यारि, सात शलाकानि कौं जोडैं सोलह भया, ताका भाग देइ जो एक भाग का प्रमाण आया, ताकौं अपनी अपनी दोय आदि शलाकानि करि गुणैं, नीचली अनुभय कृष्टि आदिकनि का प्रमाण आवै है। असैं ही बारह संग्रह कृष्टिनि का वेदक काल का प्रथम समय विषै अल्प बहुत्व जानना।

बिदियादिसु चउठाणा, पुव्विल्लेहिं असंखगुणहीणा।
तत्तो असंखगुणिदा, उवरिमणुभया तदो उभया[1] ॥५१८॥

द्वितीयादिषु चतुःस्थानानि, पूर्वेभ्योऽसंख्यगुणहीनानि।
ततः असंख्यगुणितानि, उपर्यनुभयानि तत उभयानि ॥५१८॥

टीका – अब कृष्टिकरण काल का द्वितीयादि समयनि विषै कहिए है–पूर्व समय विषै जे नीचली बंध रहित केवल उदय कृष्टि थीं, ते तौ उत्तर समय विषै उभय कृष्टि रूप हो है। अर अपूर्व समय विषै अनुभय कृष्टि थीं, तिन विषै अंत की केतीक कृष्टि उभयरूप तिनतैं नीचली केतीक केवल उदय रूप उत्तर समय विषै हो हैं। बहुरि पूर्व समय विषै जे ऊपरिकी केवल उदय कृष्टि थीं, ते सर्व उत्तर समय विषै अनुभय रूप हो हैं। बहुरि पूर्व समय विषै जे उभय कृष्टि थीं, तिनविषै अंत की केतीक कृष्टि अनुभय रूप, तिनतैं नीचै केतीक केवल उदय रूप कृष्टि उत्तर समय विषै हो हैं। असैं समय समय प्रति बंध अर उदय विषै अनुभाग का घटना हो है, जातैं नीचली कृष्टिनि विषै अनुभाग स्तोक पाइए है, ऊपरिकी कृष्टिनि विषै अनुभाग बहुत पाइये है। असैं होतैं अल्प-बहुत्व कहिए है—

नीचे की अनुभय कृष्टि तौ स्तोक हैं, तातैं तिनके ऊपरि जे नीचली केवल उदय कृष्टि ते विशेष अधिक हैं। तातैं परैं पूर्व समय विषै जो उत्कृष्ट अनुभाग लीएं

१–षट्खंडागम: धवला पुस्तक–६, पृष्ठ ३८४.

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंत की बंध रूप कृष्टि थीं, तातैं लगाय नीचैं जे उत्तर समय विषै अनुभय कृष्टि भईं, ते विशेष अधिक हैं। तातैं तिनके नीचैं जे विवक्षित समय विषै केवल उदय रूप कृष्टि भईं, ते विशेष अधिक हैं। ऐसें ए च्यारि स्थान तौ पूर्व समय विषै नीचली अनुभय कृष्टि आदिका प्रमाण जो था, तातैं असंख्यात गुणे घाटि हैं।

बहुरि तिन उदय कृष्टिनि तैं पूर्व समय विषै जो ऊपरि की उदय कृष्टि थीं, तिनविषै स्तोक अनुभाग लीएं जो आदि की जघन्य कृष्टि, तीहिं-समान कृष्टि तैं लगाय जे उत्तर समय विषै सर्व अनुभय कृष्टि भईं, ते असंख्यात गुणी हैं। जातैं पूर्व समय विषै जो ऊपरिकी अनुभय कृष्टिनि का प्रमाण था, ताके असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टि पूर्व समय संबधी ऊपरि की जघन्य उदय कृष्टि तैं नीचैं उत्तर उत्तर समय विषै ऊपरि की जघन्य अनुभय कृष्टि हो हैं। बहुरि तातैं पूर्व समय संबधी ऊपरि की उदय कृष्टि का प्रमाण के असंख्यावें भाग मात्र कृष्टि नीचैं उतरैं इस विवक्षित समय विषै ऊपरि की जघन्य उदय कृष्टि हो हैं। बहुरि तिन अनुभय कृष्टिनि का प्रमाण तैं बीचि विषै जे बंध उदय युक्त उभय कृष्टि हैं, ते असंख्यात गुणी हैं। ऐसें द्वितीयादि समयनि विषै कृष्टिनि का अल्प-बहुत्व जानना।

पुव्विल्लबंधजेट्ठा, हेट्ठासंखेज्जभागमोदरिय।
संपडिगो चरिमोदयवरमवरं अणुभयाणं च ॥५१९॥

पौर्विकबंधज्येष्ठात्, अधस्तनमसंख्येयभागमवतीर्य।
सांप्रतिकः चरमोदयवरमवरं अनुभयानां च ॥५१९॥

टीका – पूर्व समय संबंधी बंध की उत्कृष्ट कृष्टि कहिए अंत की बंध कृष्टि तातैं लगाय पूर्व समय संबंधी उभयकृष्टिनि के असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टि नीचैं उतरि करि सांप्रतिक कहिए वर्तमान उत्तर समय संबंधी अंत की केवल उदय रूप उत्कृष्ट कृष्टि हो है। अर ताके अनंतरि उपरि अनुभय कृष्टि की जघन्य कृष्टि पाइए है। बहुरि तिस उत्कृष्ट उदय कृष्टि तैं नीचैं पूर्व समय संबंधी उदय कृष्टि के असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टि नीचैं उतरि सांप्रतिक उदय की जघन्य कृष्टि हो है। ताके अनंतर नीचैं उभयकृष्टि की उत्कृष्ट कृष्टि हो है, ऐसैं तौ ऊपरि भी कृष्टिनि विषैं विधान जानना।

हेट्ठिमणुभयवरादो, असंखबहुभागमेत्तमोदरिय।
संपडिबंधजहण्णं, उदयुक्कस्सं च होदि त्ति ॥५२०॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अधःस्तनानुभयवरान् असंख्यबहुभागमात्रमवतीर्य ।
संप्रतिबंधजघन्यं, उदयोत्कृष्टं च भवतीति ।।५२०।।

टीका – पूर्व समय सम्बन्धी अनुभय कृष्टि की जो उत्कृष्ट कृष्टि कहिए अंत कृष्टि, तातैं पूर्व समय सम्बन्धी अनुभय कृष्टिनि का असंख्यात बहुभाग मात्र कृष्टि नीचैं उतरि सांप्रतिक बंध कृष्टि, जो बंध उदय युक्त उभय कृष्टि, ताकी जघन्य कृष्टि हो है । बहुरि ताके अनंतरि नीचली कृष्टि सो केवल उदय कृष्टिनि की उत्कृष्ट कृष्टि है तातैं लगाय पूर्व समय सम्बन्धी उदय कृष्टिनि के असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टि उतरि करि सांप्रतिक उदय कृष्टि की जघन्य कृष्टि हो है । ताके नीचैं पूर्व समय संबंधी अनुभय कृष्टिनि के असंख्यातवें, भाग मात्र कृष्टि नीचैं उतरि सांप्रतिक जघन्य अनुभय कृष्टि हो है । सोई सर्व कृष्टिनि विषै जघन्य कृष्टि है । असैं नीचली कृष्टिनि विषैं विधान जानना । असैं समय समय प्रति पूर्व समय संबंधी नीचली अनुभय उदय कृष्टि ऊपरली उदय अनुदय कृष्टिनि का प्रमाण तैं उत्तर समय संबंधी तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता है । अर बीचि विषैं जो उभय कृष्टि हैं, तिनका प्रमाण विशेष अधिक हो है, असा जानना ।

पडिसमयं अहिगदिणा, उदये बंधे च होदि उक्कस्सं ।
बंधुदये च जहण्णं, अणंतगुणहीणया किट्टी ।।५२१।।

प्रतिसमयमहिगतिना, उदये बंधे च भवति उत्कृष्टं ।
बंधोदये च जघन्यं, अनंतगुणहीनका कृष्टिः ।।५२१।।

टीका – समय समय प्रति सर्प की गतिवत् उत्कृष्ट कृष्टि तौ उदय अर बंध विषैं बहुरि जघन्य कृष्टि बंध अर उदय विषैं अनंत गुणा घटता क्रम लीएं अनुभाग अपेक्षा जाननी । सोई कहिए है—

सर्व कृष्टिनि के अनंत बहुभाग मात्र बीचि की कृष्टि बंधरूप हैं, तिनतैं साधिक उदय रूप हैं । तिन विषैं जो सर्व तैं स्तोक अनुभाग लीएं प्रथम कृष्टि, सो जघन्य कृष्टि कहिए । सर्व तैं अधिक अनुभाग लीएं अंत कृष्टि, सो उत्कृष्ट कृष्टि कहिए । तहां कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषैं जो उदय की उत्कृष्ट कृष्टि, सो बहुत अनुभाग युक्त है । तातैं तिसही समय विषैं बंध की उत्कृष्ट कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग लीए है । तातैं द्वितीय समय विषैं उदय की उत्कृट कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं है । तातैं तिस ही समय विषैं बंध की उत्कृष्ट कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लीएं है। तातैं तीसरा समय विषैं उदय की उत्कृष्ट कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं है। तातैं तिस ही समय विषैं बंध की उत्कृष्ट कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं है। या प्रकार जैसें सर्प इधर तैं उधर, उधर तैं इधर गमन करै है तैसें विवक्षित समय विषैं उदय की तैं बंध की अर पूर्व समय संबंधी बंध की तैं उत्तर समय सम्बन्धी उदय की उत्कृष्ट कृष्टि विषै अनंत गुणा घटता अनुभाग क्रम तैं जानना। बहुरि कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषैं बंध की जघन्य कृष्टि बहुत अनुभाग युक्त है। तातैं तिस समय विषैं उदय की जघन्य कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग युक्त है। तातैं दूसरा समय विषैं बंध की जघन्य कृष्टि अनन्त गुणा घटता अनुभाग युक्त है, तातैं तिस समय विषैं उदय की जघन्य कृष्टि अनन्त गुणा घटता अनुभाग युक्त है। ऐसैं सर्प की चालवत् एक समय विषै बंध की तैं उदय की अर पूर्व समय संबंधी उदय की तैं उत्तर समय संबंधी बंध की जघन्य कृष्टि विषैं अनंत गुणा घटता अनुभाग जानना। ऐसी प्ररूपणा क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक काल का अंत समय पर्यंत है। बहुरि ताकी द्वितीय तृतीय संग्रह कृष्टि वेदक कैं भी ऐसैं ही क्रम जानना।

अब संक्रमण द्रव्य का विधान कहिए है—

संकमदि संगहाणं, दव्वं सगहेट्ठिमस्स पढमोत्ति।
तदणुदये संखगुणं, इदरेसु हवे जहाजोग्गं ॥५२२॥

संक्रामति संग्रहाणां, द्रव्यं स्वकाधस्तनस्य प्रथम इति।
तदनुदये संख्यगुणमितरेषु भवेत् यथायोग्यम् ॥५२२॥

टीका – संग्रह कृष्टिनि का द्रव्य है, सो विवक्षित स्वकीय कषाय के नीचैं जो कषाय, ताकी प्रथम सन्ग्रह कृष्टि पर्यंत संक्रमण करै है।

भावार्थ यहु – जो स्वस्थान विषैं विवक्षित कषाय की संग्रह कृष्टि का द्रव्य, तिस ही कषाय की अन्य संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण करै तौ तीसरी संग्रह कृष्टि पर्यंत करै। अर परस्थान विषैं जो अन्य कषाय विषैं संक्रमण करैं तौ तिस विवक्षित कषाय तैं लगती जो कषाय, ताकी प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण करै जो द्रव्य जिस विषैं संक्रमण करै, सो द्रव्य तिस ही रूप परिणमै है। तहां जिस संग्रह कृष्टि कौं भोगवै है, ताका अपकर्षण कीया हुवा द्रव्य तैं ताके अनंतरि भोगने योग्य जो संग्रह कृष्टि तिस विषैं संख्यात गुणा द्रव्य संक्रमण हो है। औरनि विषै यथायोग्य संक्रमण हो है। सोई कहिए है—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जैसैं प्रवृत्ति विषै जमाखरच कहिए, तैसैं इहां आय द्रव्य, व्यय द्रव्य कहिए है। जो अन्य संग्रह कृष्टिनि का द्रव्य संक्रमण करि विवक्षित संग्रह कृष्टि विषैं आया-प्राप्त भया, ताका नाम आय द्रव्य है। बहुरि विवक्षित संग्रह कृष्टि का द्रव्य संक्रमण करि अन्य संग्रह कृष्टिनि विषैं गया, ताका नाम व्यय द्रव्य है।

बहुरि इहां क्रोध को प्रथम संग्रह कृष्टि बिना अन्य ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का अपना अपना जो द्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं जो एक भाग मात्र द्रव्य संक्रमण करै है, सो एक द्रव्य कहिए है। बहुरि क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं जो एक भाग मात्र द्रव्य संक्रमण करै, सो तेरह द्रव्य कहिए है; जातैं अन्य संग्रह कृष्टि का द्रव्य तैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य नोकषाय के द्रव्य मिलने तैं तेरह गुणा है। तहां लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि अर द्वितीय संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है, तातैं ताकैं आय द्रव्य दोय हैं। बहुरि लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि का ही अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है, तातैं ताके आय द्रव्य एक है, बहुरि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै माया की प्रथम, द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है; तातैं ताकैं आय द्रव्य तीन हैं। बहुरि माया की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं माया की द्वितीय प्रथम संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है; तातैं ताकैं आय द्रव्य दोय हैं। बहुरि माया की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं माया की प्रथम संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है; तातैं ताकैं आय द्रव्य एक है। बहुरि माया की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं मान की प्रथम, द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण करै है, तातैं ताकैं आय द्रव्य तीन हैं। बहुरि मान की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं मान की द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है। तातैं ताकैं आय द्रव्य दोय हैं। बहुरि मान की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषै मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का ही अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है, तातैं ताकैं आय द्रव्य एक है। बहुरि मान की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं क्रोध की प्रथम, द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है, तातैं ताकैं आय द्रव्य पंद्रह हैं। बहुरि क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं क्रोध की प्रथम, द्वितीय कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य संक्रमण हो है; तातैं ताकैं आय द्रव्य चौदह हैं। बहुरि क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं क्रोध को प्रथम संग्रह कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य तेरह, तातैं चौदह

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणा संक्रमण हो है। तातैं ताकैं आय द्रव्य एक सौ बियासी है। इहां चौदह गुणा करने का प्रयोजन कहिए है—

अनंतरि भोगने योग्य संग्रह कृष्टि विषैं संख्यात गुणा द्रव्य का संक्रमण होना कह्या है, सो इहां संख्यात का प्रमाण अपने गुणाकार तैं एक अधिक जानना। सो यहु क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि कौं भोगवै है। अर ताके अनंतरि क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि कौं भोगवैगा। तातैं क्रोध की प्रथम कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य तैं संख्यात गुणा द्रव्य का द्वितीय संग्रह कृष्टि विषै संक्रमण हो है। बहुरि इहां प्रथम कृष्टि का द्रव्य विषै तेरह का गुणकार है; तातैं एक अधिक कीएं संख्यात का प्रमाण चौदह इहां जानना। अन्य संग्रह कृष्टि वेदक विषै संख्यात का प्रमाण अन्य होगा, सो आगैं कहैंगे। बहुरि क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य है नाहीं; जातैं आनुपूर्वी संक्रमण पाइए है। इहां संक्रमण द्रव्य कौं अपकर्षण द्रव्य का अनुभाग घटने की अपेक्षा हानि होने तैं कह्या है।

ऐसैं आय द्रव्य का विभाग कह्या।

अब व्यय द्रव्य का विभाग कहिए है—

क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य क्रोध की द्वितीय, तृतीय मान की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै गया, तातैं एक सौ बियासी तेरह तेरह द्रव्य मिलि, ताकैं व्यय द्रव्य दोय सै आठ हो हैं। बहुरि क्रोध की द्वितीय कृष्टि का द्रव्य क्रोध की तृतीय, मान की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै गया, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हो हैं। बहुरि क्रोध की तृतीय कृष्टि का द्रव्य मान की प्रथम संग्रह कृष्टि ही विषै गया, तातैं ताके व्यय द्रव्य एक है। बहुरि मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य मान की द्वितीय, तृतीय माया की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै गया तातैं ताकैं व्यय द्रव्य तीन हैं। बहुरि मान की द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य मान की तृतीय, माया की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै गया, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हैं। बहुरि मान की तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य माया की प्रथम संग्रह कृष्टि ही विषै गया, तातैं ताके व्यय द्रव्य एक है। बहुरि माया की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य माया की द्वितीय, तृतीय लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै गया, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य तीन हैं। बहुरि माया की द्वितीय कृष्टि का द्रव्य, माया की तृतीय, लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै गया, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हैं। बहुरि माया की तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै ही गया, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य एक है। बहुरि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य लोभ की द्वितीय,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तृतीय संग्रह कृष्टि विषै गया, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य दोय हैं। बहुरि लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य, लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषै गया, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य एक है। बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य अन्यत्र न जाय है, जातैं विपरीत संक्रमण का अभाव है, तातैं ताकैं व्यय द्रव्य नाहीं है।

ऐसैं व्यय द्रव्य का विभाग कह्या।

आगैं अनुसमय अपवर्तन की प्रवृत्ति का क्रम कहिए है—

पडिसमयं संखेज्जदिभागं णासेदि कंडयेण विणा।
बारससंगहकिट्टीणग्गादो किट्टिवेदगो णियमा ॥५२३॥

प्रतिसमयं संख्येयभागं नाशयति कांडकेन विना।
द्वादशसंग्रहकृष्टीनामग्रतः कृष्टिवेदको नियमात् ॥५२३॥

टीका – कृष्टि वेदक जीव है, सो कांडक बिना बारह संग्रह कृष्टिनि का अग्र भाग तैं सर्व कृष्टिनि के असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टिनि कौं नष्ट करै है नियम तैं।

भावार्थ – कृष्टिकरण काल का अंत समय पर्यंत तौ अंतर्मुहूर्त काल करि निष्पन्न जो कांडक विधान, ताकरि अनुभाग का नाश होता था, अब कृष्टि भोगने का प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति अग्रघात होने लगा। तहां बारह संग्रह कृष्टिनि का जे अंतर कृष्टि, तिन विषै अंत कृष्टि तैं लगती जे बहुत अनुभाग युक्त ऊपरि की केतीक कृष्टि, तिनका नाश करि तिनि कृष्टिनि के द्रव्य कौं स्तोक अनुभाग युक्त नीचली कृष्टिनि विषै निक्षेपण करिए है। तहां जिनि कृष्टिनि का नाश कीया, तिनिका नाम घात कृष्टि है, सो अपनी अपनी संग्रह कृष्टि विषै अंतर कृष्टिनि का प्रमाण स्थापि, ताकौं अपकर्षण भागहार के असंख्यातवें भाग मात्र जो असंख्यात ताका भाग दीएं अपनी अपनी घात कृष्टिनि का प्रमाण आवै है। बहुरि इन घात कृष्टिनि के जे परमाणू, ताका नाम घात द्रव्य है, सो अपनी अपनी अंत कृष्टि का द्रव्य कौं घात कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणें अंत कृष्टि के नीचैं एक एक विशेष बधता है। तातैं विशेष अधिक कीएं घात द्रव्य का प्रमाण आवै है।

णासेदि परट्ठाणिय, गोउच्छं अग्गकिट्टिघादादो।
सट्ठाणियगोउच्छं, संकमदव्वादु घादेदि ॥५२४॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नाशयति परस्थानकं, गोपुच्छमग्रकृष्टिघातात् ।
स्वस्थानिकगोपुच्छं, संक्रमद्रव्यात् घातयति ।।५२४।।

टीका – अग्रकृष्टि घात तैं तौ परस्थान गोपुच्छ कौं नष्ट करै है अर संक्रम द्रव्य जो अन्य संग्रहरूप भया अैसा पूर्वोक्त व्यय द्रव्य, तातैं स्वस्थान गोपुच्छ कौं नष्ट करै है । कैसें ? सो कहिए है —

विवक्षित एक संग्रह कृष्टि विषैं जो अंतर कृष्टिनि कैं विशेष घटता क्रम पाइए है, सो इहां स्वस्थान गोपुच्छ कहिए है । बहुरि नीचली विवक्षित संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि तैं ऊपरि की अन्य संग्रह कृष्टि की आदि कृष्टि कैं विशेष घटता क्रम पाइए है, सो इहां परस्थान गोपुच्छ कहिए । तहां कृष्टिनि कौं हीन अधिक द्रव्य का संक्रमण होने तैं चय घटता क्रम नष्ट भया, तातैं पूर्वैं स्वस्थान गोपुच्छ था, ताका संक्रमण द्रव्य करि नाश भया । बहुरि नीचली संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि अर ऊपरली संग्रह कृष्टि की आदि कृष्टि, तिनिके बीचि कृष्टिनि का घात होने तैं एक विशेष घटता क्रम न रह्या, तातैं पूर्वैं परस्थान गोपुच्छ था, ताका घातद्रव्य करि नाश भया ।

आयादो वयमहियं, हीणं सरिसं कहिंपि अण्णं च ।
तम्हा आयद्दव्वा, ण होदि सट्ठाणगोउंच्छं ।।५२५।।

आयतो व्ययमधिकं, हीनं सदृशं कुत्रापि अन्यच्च ।
तस्मादायद्रव्यान्न भवति स्वस्थानगोपुच्छम् ।।५२५।।

टीका – इहां कोऊ कहै व्यय द्रव्य गया अर आय द्रव्य आया, तातैं व्यय द्रव्य करि स्वस्थान गोपुच्छ का नाश कह्या, आय द्रव्य करि स्वस्थान गोपुच्छ का होना कह्या, तहां कहिए है—

कहीं संग्रह कृष्टि विषैं आय द्रव्य तैं व्यय द्रव्य अधिक है, कहीं हीन है, कहीं समान है, कहीं आय द्रव्य है, व्यय नाहीं, कहीं व्यय द्रव्य है, आय द्रव्य नाहीं । तातैं आय द्रव्य तैं स्वस्थान गोपुच्छ न हो है ।

अब जैसें स्वस्थान परस्थान गोपुच्छ का सद्भाव हो है, तैसें कहिए है—

घादयदव्वादो पुण, वय आयदखेत्तदव्वगं देदि ।
सेसासंखाभागे अणंतभागूणयं देदि ।।५२६।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घातकद्रव्यात् पुनर्व्ययमायतक्षेत्रद्रव्यकं ददाति ।
शेषासंख्यभागं अनंतभागोनकं ददाति ।।५२६।।

टीका – घात द्रव्य तैं व्यय द्रव्य अर आयतक्षेत्र द्रव्य कौं दीएं एक गोपुच्छ हो है । कैसैं ? सो कहिए है—

पूर्वै जो व्यय द्रव्य कह्या, तामैं जिनि कृष्टिनि का घात कीया, तिनि कृष्टिनि का व्यय द्रव्य घटाएं अवशेष रहै, तितना द्रव्य घात द्रव्य तैं ग्रहण करि जिन कृष्टिनि का जितना जितना व्यय द्रव्य भया था, तिन कृष्टिनि का तितना तितना देइ पूरण कीएं स्वस्थान गोपुच्छ का सद्भाव हो है ।

घात कृष्टि सम्बन्धी व्यय द्रव्य कितना ? सो कहिए है—

अपनी अपनी संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं तिस अंत कृष्टि का व्यय द्रव्य का प्रमाण आवै है । ताकौं अपनी अपनी घात कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं अर तहां विशेष अधिक कीएं सर्वघात कृष्टि सम्बन्धी व्यय द्रव्य का प्रमाण हो है, सो घात कृष्टिनि का तौ नाश ही भया, सो तहां द्रव्य देना ही नाहीं । तातैं याकौं व्यय द्रव्य विषैं घटाइ अवशेष व्यय द्रव्य मात्र द्रव्य देने करि स्वस्थान गोपुच्छ की सिद्धि हो है । बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं जे कृष्टि, तिन विषैं जो अंत कृष्टि, तिसतैं लोभ की द्वितीय संग्रह की प्रथम संग्रह कृष्टि है, सो बीचि की कृष्टि का घात होने तैं एक अधिक लोभ की तृतीय संग्रह की घात कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जे विशेष कहिए चय, तिन करि हीन भई सो अपने नीचैं लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की घात कृष्टिनि का जो प्रमाण तितने विशेषनि का जेता द्रव्य होइ तितना द्रव्य कौं अपने घात द्रव्य तैं ग्रहण करि तहां लोभ की द्वितीय संग्रह की प्रथम कृष्टि विषै दीएं यहु प्रथम कृष्टि तिस तृतीय संग्रह की अंत कृष्टि तैं एक विशेष मात्र घटती हो है । ऐसैं ही याकी द्वितीयादि घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं कृष्टिनि की अंत कृष्टि पर्यंत कृष्टिनि विषैं तितना तितना द्रव्य घात द्रव्य तैं ग्रहण करि दीएं लोभ की तृतीय, द्वितीय संग्रह विषैं एक गोपुच्छ भया, सो इहां आय तैं नीचैं तृतीय संग्रह ताकी घात कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जे विशेष, तिनका द्रव्य प्रमाण तौ चौड़ा अर अपनी घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र लंबा क्षेत्र कल्पना कीएं एक आयत चतुरस्र क्षेत्र भया । बहुरि ऐसैं ही आय तैं नीचैं द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि तिन

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दोऊनि की घात कृष्टिनि का जेता प्रमाण तितना विशेष प्रमाण तौ जुदा जुदा चौडा अर अपनी घात कीएं पीछैं अवशेष रहीं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र लम्बा अैसा दोय आयत चतुरस्र क्षेत्र प्रमाण द्रव्य कौं अपनी घात द्रव्य तैं ग्रहण करि लोभ की प्रथम संग्रह की प्रथमादि कृष्टिनि विषैं दोएं लोभ की तीनों संग्रह कृष्टिनि का एक गोपुच्छ भया। अैसैं ही क्रम करि अपने नीचली संग्रह कृष्टिनि की घात कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि करि तौ जुदा जुदा चौडा अर अपना घात कीएं पीछै अवशेष रहीं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र लम्बा अैसैं क्रम तैं तीन, च्यारि, पांच, छह, सात, आठ, नव, दश, ग्यारह आयत चतुरस्र क्षेत्ररूप द्रव्य, ताकौं अपने अपने घात द्रव्य तैं ग्रहण करि क्रम तै माया की तृतीय संग्रहादि क्रोध की प्रथम संग्रह पर्यंत संग्रह कृष्टिनि विषैं दीएं बारह संग्रह कृष्टिनि का एक गोपुच्छ हो है। अैसैं आयत चतुरस्र क्षेत्र रूप द्रव्य देने करि परस्थान गोपुच्छ की सिद्धि भई। या प्रकार स्वस्थान, परस्थान गोपुच्छ सम्पूर्ण हो है।

बहुरि इहाँ सर्व मोहनीय का द्रव्य साधिक द्वयर्ध गुणहानि गुणित आदि वर्गणा मात्र है, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं अर साधिक नव गुणा कीएं समस्त व्यय द्रव्य का प्रमाण आवै है। जातैं सर्व मोह के द्रव्य कौं चौईस का अर अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक व्यय द्रव्य का प्रमाण होइ अर पूर्वोक्त समस्त व्यय द्रव्यनि कौं जोडैं दोय सै छब्बीस होंइ। तहां दोय सै छब्बीस गुणकार का चौईस करि अपवर्तन कीएं साधिक नव का गुणकार हो है। बहुरि सर्व मोहनीय के द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार के असंख्यातवां भाग का भाग दीएं सर्व घात द्रव्य का प्रमाण हो है। सो इस घात द्रव्य तैं पूर्वोक्त व्यय द्रव्य अर आयत चतुरस्र क्षेत्ररूप जो द्रव्य ग्रहण कीया सो याके असंख्यातवें भाग मात्र है, सो घटाएं अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य रह्या, ताकौं अनंतवां भाग मात्र जो एक विशेष ताकरि घटता क्रम लीएं दीजिए है। कैसैं ? सो कहिए है—सर्व अवशेष घात द्रव्य का घात कीएं पीछैं अवशेष रही कृष्टि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीएं मध्यधन हो है। बहुरि ताकौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताका भाग दीएं विशेष का प्रमाण हो है। बहुरि गच्छ का एक बार संकलन धन करि तिस चय कौं गुणैं उत्तरधन हो है। बहुरि याकौं तिस द्रव्य में घटाएं अवशेष आदि धन हो है। ताकौं गच्छ का भाग दीएं एक खण्ड का प्रमाण हो है। तहां एक खंड कौं अर उत्तरधन तैं गच्छ प्रमाण विशेषनि कौं ग्रहि लोभ की जघन्य कृष्टि विषैं दीजिए है। बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताकी द्वितीय कृष्टि तैं लगाय क्रोध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत एक एक खंड समान रूप अर उत्तर धन विषैं एक एक विशेष घटता दीजिए है। अर अैसें अवशेष घात द्रव्य सर्व समाप्त हो है। अैसें होतैं सर्वत्र एक गोपुच्छ हो है।

उदयगदसंगहस्स य, मज्भिमखंडादिकरणमेदेण।
दव्वेण होदि णियमा, एवं सव्वेसु समयेसु ॥५२७॥

उदयगतसंग्रहस्य च मध्यमखंडादिकरणमेतेन।
द्रव्येण भवति नियमादेवं सर्वेषु समयेषु ॥५२७॥

टीका – उदय कौं प्राप्त जो संग्रह कृष्टि ताका इस घात द्रव्य ही करि मध्यम खंडादिक करना हो है।

भावार्थ – जिस संग्रह कृष्टि कौं वेदे है, ताविषै आय द्रव्य का अभाव है। तातैं संक्रमण द्रव्य करि कीएं तौ मध्यम खंडादिक होइ नाहीं। तातैं मध्यम खंड उभय द्रव्य विशेष इत्यादि वक्ष्यमाण विधान करने के अर्थि तिस भोगवनेरूप संग्रह कृष्टिनि का घात द्रव्य तैं ताका असंख्यातवां भाग मात्र द्रव्य कौं जुदा स्थापि, अवशेष घात द्रव्य ही कौं पूर्वोक्त प्रकार विशेष घटता क्रम लीएं एक गोपुच्छाकार करि दीजिए है। एक भाग का आगैं मध्यम खंडादि विधान तैं द्रव्य देना कहैंगे, सो जानना। अैसें समय समय प्रति सर्व समयनि विषैं विधान हो है।

या प्रकार घात द्रव्य करि एक गोपुच्छ भया। अब जो अन्य संग्रह का विवक्षित संग्रह विषैं द्रव्य आया, ताकौं पूर्वैं आय द्रव्य कह्या था, ताका नाम इहां संक्रमण द्रव्य कहिए। बहुरि जो नवीन समयप्रबद्ध विषैं द्रव्य बंधि करि कृष्टि रूप हो है, सो बंध द्रव्य कहिए। ताका विधान कैसें है ? सो कहिए है—

केता इक संक्रमण द्रव्य अर बंध द्रव्य करि केती इक नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है। तहां संक्रमण द्रव्य करि तौ तिनि संग्रह कृष्टिनि की जो जघन्य कृष्टि, ताके नीचैं केतीक नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है। सो इनका नाम अधःस्तन कृष्टि है। बहुरि केतीक तिनि संग्रह कृष्टिनि की पूर्व अवयव कृष्टिनि के बीचि बीचि नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है। इनका नाम अंतर कृष्टि है। बहुरि बंध द्रव्य करि अवयव कृष्टिनि के बीचि बीचि ही नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है, सो इनका भी

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

नाम अंतर कृष्टि है । बहुरि केताइक संक्रमण द्रव्य वा बंध द्रव्य कौं पूर्व कृष्टिनि ही विषै निक्षेपण करै है, सो यहु विधान कहिए है ।

हेट्ठाकिट्टिप्पहुदिसु, संकमिदासंखभागमेत्तं तु ।
सेसा संखाभागा, अंतरकिट्टिस्स दव्वं तु ॥५२८॥

अधःस्तनकृष्टिप्रभृतिषु, संक्रमितासंख्यभागमात्रं तु ।
शेषा असंख्यभागा, अंतरकृष्टेर्द्रव्यं तु ॥५२८॥

टीका – संक्रमण द्रव्य कौं असंख्यात का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र द्रव्य तौ नीचली कृष्टि आदि विषैं दीजिए है ।

भावार्थ यहु – या द्रव्य करि अधःस्तन अपूर्व कृष्टि करिए है । बहुरि अवशेष असंख्यात बहुभाग हैं, ते अंतर कृष्टिनि का द्रव्य है । याकरि अंतर कृष्टि करिए है ।

बंधदव्वाणंतिमभागं पुण पुव्वकिट्टिपडिबद्धं ।
सेसाणंता भागा, अंतरकिट्टिस्स दव्वं तु ॥५२९॥

बंधद्रव्यानंतिमभागं पुनः पूर्वकृष्टिप्रतिबद्धं ।
शेषानंता भागा, अंतरकृष्टेर्द्रव्यं तु ॥५२९॥

टीका – बंध द्रव्य कौं अनंत का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र तौ पूर्व कृष्टि संबंधी है । या द्रव्य कौं पूर्वैं कृष्टि कही थीं, तिन ही विषैं निक्षेपण करिए है । बहुरि अवशेष अनंत बहुभाग हैं, ते अंतर कृष्टिनि का द्रव्य है । या द्रव्य करि नवीन अंतर कृष्टि करिए है ।

कोहस्स पढमकिट्टि, मोत्तूणेकारसंगहाणं तु ।
बंधणसंकमदव्वादपुव्वकिट्टिं करेदी हु ॥५३०॥

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिं, मुक्त्वा एकादशसंग्रहाणां तु ।
बंधनसंक्रमद्रव्यायपूर्वकृष्टिं करोति हि ॥५३०॥

टीका – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि बिना अवशेष ग्यारह संग्रह कृष्टिनि कौं यथासंभव बंध द्रव्य अथवा संक्रमण द्रव्य तैं अपूर्व कृष्टि करै है । क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण द्रव्य के अभाव तैं बंध द्रव्य करि ही[१] अपूर्व कृष्टि करिए है ।

---

१ ख प्रति में 'ही' के स्थान पर 'हीन' पाठ मिलता है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बंधणदव्वादो पुण, चदुसुट्ठाणेसु पढमकिट्टीसु ।
बंधापुव्वकिट्टीदो, संकमकिट्टी असंखगुणा ।।५३१।।

बंधनद्रव्यात्पुनः, चतुर्षु स्थानेषु प्रथमकृष्टिषु ।
बंधापूर्वकृष्टितः, संक्रमकृष्टिः असंख्यगुणा ।।५३१।।

टीका – बहुरि बंध द्रव्य तैं क्रोधादि च्यारि कषायनि की प्रथम संग्रह कृष्टि रूप जे च्यारि स्थान, तिन ही विषै अपूर्व कृष्टि करिए है । संक्रमण द्रव्य करि पूर्वं ग्यारह स्थाननि विषैं कृष्टि करनी कही है । बहुरि बंध द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टिनि तैं संक्रमण द्रव्य करि निपजी कृष्टि पल्य का असंख्यातवां भाग गुणी हैं, जातैं बंध द्रव्य समयप्रबद्ध मात्र है, तातैं संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा है । अर कृष्टि हैं, ते द्रव्य के अनुसारि निपजै हैं ।

संखातीदगुणाणि य, पल्लस्सादिमपदाणि गंतूण ।
एक्केक्कबंधकिट्टी किट्टीणं अंतरे होदि ।।५३२।।

संख्यातीतगुणानि च, पल्यस्यादिमपदानि गत्वा ।
एकैकबंधकृष्टिः, कृष्टीनामंतरं भवति ।।५३२।।

टीका – जिनि संग्रह कृष्टिनि का बंध संभवै तिनकी जे अवयव कृष्टि हैं, तिनि विषैं तिनका असंख्यातवां भाग मात्र नीचै की वा उपरि की कृष्टि तौ बंध योग्य ही नाहीं अर बीचि मैं जे बहुभाग मात्र बध्यमान कृष्टि हैं, तिनकी दोय कृष्टिनि के बीचि एक अंतराल बहुरि एक कृष्टि यहु अर एक कृष्टि ऊपरि की, तिनिके बीचि एक अंतराल अैसैं जे अंतराल हैं, तिनि विषैं पहला, दूसरा आदि संख्यात पल्य का प्रथम वर्गमूल मात्र अंतराल उल्लंघि जो अंतराल है, तिस विषैं नवीन एक अपूर्व कृष्टि करिए है । बहुरि ताके ऊपरि तितने ही अंतराल उल्लंघि, जो अंतराल आवै, तहां दूसरी अपूर्व कृष्टि करिए है । अैसैं ही बंध की उत्कृष्ट कृष्टि के नीचैं पल्य का असंख्यात का वर्गमूल मात्र कृष्टि उतरैं तहां अंतराल विषैं जो उत्कृष्ट अपूर्व कृष्टि करिए है, तहां पर्यंत अैसैं ही क्रम लीएं कृष्टिनि के बीचि अपूर्व कृष्टिनि का होना जानना ।

दिज्जदि अणंतभागेणूणकमं बंधगे य णंतगुणं ।
तण्णंतरे णंतगुणूणं तत्तोणंतभागूणं ।।५३३।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दीयते अनंतभागेनोनक्रमं बंधके चानंतगुणं ।
तदनंतरेऽनंतगुणोनं ततोऽनंतभागोनं ।।५३३।।

टीका – बंध द्रव्य कृष्टिनि विषैं कैसैं दीजिए है ? सो कहिए है–पूर्व कृष्टि विषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। बहुरि दूसरी पूर्व कृष्टि विषैं ताके अनंतवें भाग मात्र जो एक विशेष, ताकरि घटता द्रव्य दीजिए है। असैं यावत् अपूर्व कृष्टि न प्राप्त होइ तावत् अनंत भाग रूप विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। बहुरि तहां अंत कृष्टि विषैं जो दीया द्रव्य, तातैं अपूर्व कृष्टि विषै अनंत गुणा द्रव्य दीजिए है। जातैं यहु कृष्टि इस ही द्रव्य करि नवीन निपजै है। बहुरि यातैं याके अनंतरवर्ती जो पूर्व कृष्टि तिस विषैं अनंत गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। तातैं उपरि अनंतवां भागरूप विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य यावत् अपूर्व कृष्टि प्राप्त न होइ तावत् दीजिए। अैसैं ही अनुक्रम लीएं बंध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत बंध द्रव्य देने का विधान जानना। नवीन बंध द्रव्य करि करीं अपूर्व कृष्टि भी अनंत हैं।

अैसैं बंध कृष्टिनि का स्वरूप कह्या है।

संकमदो किट्टीणं, संगहकिट्टीणमंतरे होदि ।
संगह अंतरजादो, किट्टी अंतरभवा असंखगुणा ।।५३४।।

संक्रमतः कृष्टीनां, संग्रहकृष्टीनामंतरे भवति ।
संग्रहे अंतरजातः, कृष्टिरंतर्भवा असंख्यगुणा ।।५३४।।

टीका – संक्रमण द्रव्य तैं निपजीं जे अपूर्व कृष्टि, केतीक इक कृष्टि तौ संग्रह कृष्टिनि के नीचैं निपजै हैं। अर केतीक पूर्व अवयव कृष्टि थीं, तिनि का अंतराल विषैं निपजैं हैं। तहां संग्रह कृष्टिनि का अंतराल विषैं निपजी कृष्टिनि तैं अवयव कृष्टिनि का अंतराल विषैं निपजी कृष्टि असंख्यात गुणी हैं।

संगहअंतरजाणं, अपुव्वकिट्टिं व बंधकिट्टिं वा ।
इदराणमंतरं पुण, पल्लपदासंखभागं तु ।।५३५।।

संग्रहांतरजानामपूर्वकृष्टिमिव बंधकृष्टिमिव ।
इतरेषामंतरं पुनः, पल्यपदासंख्यभागस्तु ।।५३५।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – संग्रह कृष्टिनि के नीचैं जे कृष्टि कीनी, तहां द्रव्य देने का विधान तौ जैसैं कृष्टि कारक का द्वितीय समय विषैं अपूर्व कृष्टिनि का विधान कह्या था, तैसैं जानना। विशेष इतना—

तहां अधःस्तन अपूर्व कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं पूर्व कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषैं दीया द्रव्य असंख्यातवें भाग घटता कह्या था, इहां असंख्यात गुणा घटता जानना, जातैं इहां अधःस्तन कृष्टि द्रव्य तैं मध्यम खंड द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है। बहुरि तहां पूर्व कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं अपूर्व कृष्टि की आदि कृष्टि विषैं दीया द्रव्य संख्यात भाग अधिक कह्या था। इहां असंख्यात गुणा बधता जानना, जातैं इहां मध्यम खंड के द्रव्य तैं अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य असंख्यात गुणा है। बहुरि जे अवयव कृष्टिनि के बीचि नवीन कृष्टि कीनीं, तहां द्रव्य देने का विधान जैसैं बंध द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टिनि विषैं विधान कह्या तैसैं जानना। विशेष इतना—

तहां असंख्यात पल्य का वर्गमूल प्रमाण अंतरालरूप स्थान जाइ जाइ बंध द्रव्य करि निपजी एक एक अपूर्व कृष्टि कही थी। इहां पल्य का प्रथम वर्गमूल का असंख्यातवां भाग मात्र जो उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार ताका जितना प्रमाण तितना तितना अंतराल भएं संक्रमण द्रव्य करि एक एक अपूर्व कृष्टि निपजाइए है।

अब इहां प्रथम द्रव्य देने का विशेष तात्पर्य निरूपण करिए है–तहां प्रथम ही क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि बिना अन्त ग्यारह संग्रह कृष्टिनि विषैं जो आय द्रव्य ताही का नाम संक्रमण द्रव्य है, ताका अर क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं आय द्रव्य का तौ अभाव है, तातैं पूर्वैं कह्या था जो वेद्यमान कृष्टि विषैं घात द्रव्य का असंख्यातवां भाग मात्र द्रव्य ताकौं जुदा स्थापना, तिस जुदा स्थाप्या घात द्रव्य कौं देने का विधान कहिए है–पूर्व कृष्टिनि विषैं एक एक विशेष घटता क्रम है, तिस विशेष का प्रमाण ल्याइए है–

इहां घात कीए पीछैं अवशेष सर्व कृष्टि का प्रमाण मात्र जे गच्छ, तिस एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताकरि गुणित जो गच्छ, ताका भाग सर्व द्रव्य कौं दीएं एक विशेष हो है। सो लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं एक एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि अपनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, श्रेणी व्यवहार गणित तैं जो संकलन धन आवै तितना अधःस्तन शीर्ष द्रव्य है। अर अन्य संग्रह कृष्टिनि विषैं जेती नीचली संग्रह संबंधी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कृष्टि का प्रमाण तितने विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापिं, जो संकलन धन आवै तितना तितना अधः-स्तन शीर्ष द्रव्य है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आय द्रव्य तैं अर क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य तैं ग्रहि करि जुदा स्थापना। याकौं यथायोग्य कृष्टिनि विषैं दीएं सर्व पूर्व कृष्टि लोभ की तृतीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि के समान होइ। बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि कौं अपकर्षण भागहार तैं असंख्यात गुणा अैसा जो पल्य का असंख्यातवां भाग, ताका भाग दीएं एक खंड का प्रमाण आवै, ताकौं अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं अपना अपना मध्यम खंड द्रव्य हो है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आय द्रव्य तैं अर क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना। याकौं एक एक खंड करि कृष्टिनि विषैं दीएं सर्व कृष्टि समान ही रहैं हैं। बहुरि एक मध्यम खंड करि अधिक जो लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि का द्रव्य तीहिं प्रमाण एक अधःस्तन कृष्टि का द्रव्य स्थापि, ताकौं अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण कौं अपकर्षण भाग-हार तैं असंख्यात गुणा जो पल्य का असंख्यातवां भाग ताका भाग दीएं जो संग्रह कृष्टिनि के नीचैं करी अधःस्तन कृष्टिनि का प्रमाण ताकरि गुणैं अधःस्तन अपूर्व कृष्टि संबंधी द्रव्य हो है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आय द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना। याकरि संग्रह कृष्टिनि के नीचैं नवीन अपूर्व कृष्टि निपजै है। क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण द्रव्य के अभाव तैं नीचैं अपूर्व कृष्टि न हो है। बहुरि पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ सो एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताकरि गुणित गच्छ का भाग इहां संभवता सर्व द्रव्य कौं दीएं उभय द्रव्य का एक विशेष होइ सो क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर अपनी भोगवने रूप क्रोध की प्रथम संग्रह की सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां जेता संकलन धन भया, तितना उभय द्रव्य विशेष द्रव्य भया, ताविषैं अपना एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र द्रव्य घटाएं जो द्रव्य भया, ताकौं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य तैं ग्रहि करि जुदा स्थापना। इहां क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य जुदा स्थाप्या था, सो पूर्ण भया। बहुरि जो पहलैं संग्रह कृष्टि भई, तिनकी कृष्टिनि का प्रमाण तैं एक अधिक विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि संकलन कीएं अपना अपना उभय द्रव्य विशेष द्रव्य

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

हो है। याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का अपना अपना आय द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना।

विशेष इतना – जो संग्रह कृष्टि बंधै है, ताका उभय द्रव्य विशेष विषैं एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र द्रव्य घटावना। यह घटाया द्रव्य है, सो बंध द्रव्य तैं ग्रहि करि दीजिएगा। याकौं यथायोग्य कृष्टिनि विषैं दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि कैं विशेष घटता क्रमरूप गोपुच्छ हो है। बहुरि इन कहे च्यारि द्रव्यनि कौं घटाएं अवशेष जो अपना अपना आय द्रव्य रह्या, ताकौं अपनी अपनी संक्रमण द्रव्य करीं अपूर्व अंतर कृष्टिनि का प्रमाण का भाग दीएं एक अंतर कृष्टि संबंधी एक खंड होइ, ताकौं अपनी अपनी संक्रमण द्रव्य करि अंतर कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं अपना अपना द्रव्य करि निपजीं जे अंतर कृष्टि, तिनके समान द्रव्य हो है। ताकौं जुदा स्थापना। याकरि पूर्व कृष्टिनि के बीचि बीचि नवीन अपूर्व कृष्टि निपजाइए है।

इहां संक्रमण द्रव्य करि भईं अंतर कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने कौं उपाय कहिए है। एक मध्यम खंड करि अधिक लोभ की तृतीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि का द्रव्य मात्र द्रव्य करि एक कृष्टि होइ तौ पूर्वोक्त च्यारि प्रकार द्रव्य करि हीन अपना अपना आय द्रव्य करि केती कृष्टि होंइ ?

असैं त्रैराशिक कीएं लब्ध मात्र संक्रमण द्रव्य करि करीं अंतर कृष्टिनि का प्रमाण आवै है। बहुरि याका भाग, अपनी अपनी पूर्व कृष्टिनि का भाग दीएं अपनी अंतर कृष्टि के अंतराल का प्रमाण आवै है। दोय अपूर्व अंतर कृष्टिनि के बीचि इतनी पूर्व कृष्टि पाइए है। असैं संक्रमण द्रव्य करि निपजी कृष्टिनि का द्रव्य विभाग कह्या।

अब बंध द्रव्य करि निपजी कृष्टिनि का द्रव्य विभाग कहिए है। मोहनीय का एक समयप्रबद्ध, ताकौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां बहुभाग के च्यारि समान पुंज करि अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां बहुभाग प्रथम पुंज विषैं जोड़ैं, लोभ का बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग द्वितीय पुंज विषैं जोड़ैं, माया का बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां बहुभाग तृतीय पुंज विषैं जोड़ैं क्रोध का बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भाग चतुर्थ पुंज विषैं जोड़ैं मान का बंध द्रव्य हो है। अब बंध द्रव्य

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

करि अंतर कृष्टिनि का वा तहां अंतरालनि का प्रमाण ल्यावने के अर्थि इन द्रव्य विषैं बंध द्रव्य करि करीं अंतर कृष्टिनि का विशेष संकलन रूप द्रव्य अर पूर्व एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र द्रव्य आगैं कहिए है, तिनकौं घटाएं अवशेष जेता जेता द्रव्य रह्या, ताकौं इच्छाराशि करि त्रैराशिक करिए है–

एक मध्यम खंड करि अधिक लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य मात्र द्रव्य करि एक अंतर कृष्टि द्रव्य होइ तौ पूर्वोक्त द्रव्य करि केती अंतर कृष्टि होंइ ? असैं त्रैराशिक कीएं लब्ध मात्र बंध द्रव्य करि निपजीं अंतर कृष्टिनि का प्रमाण सर्व पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौं छह गुणहानि का भाग दीएं जितना प्रमाण होइ तितना हो है। ते अंतर कृष्टि मान विषैं स्तोक, तातैं क्रोध विषैं विशेष अधिक तातैं माया विषै विशेष अधिक तातैं लोभ विषैं विशेष अधिक जाननी, जातैं इनके द्रव्य विषैं भी असा ही क्रम है। इहां एक एक कषाय की एक एक संग्रह कृष्टि ही का बंध है, तातैं च्यारि ही संग्रह कृष्टिनि विषैं बंध कृष्टि की रचना जाननी। इन बंध द्रव्य करि करीं अंतर कृष्टिनि का प्रमाण है, सो पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्य करि करीं अंतर कृष्टिनि का प्रमाण तैं असंख्यात गुणा घटता है। जातैं संक्रमण की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने कौं सर्व कृष्टिनि कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीया, तातैं इहां बंध की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने कौं सर्व कृष्टिनि कौं असंख्यात पल्य का प्रथम वर्गमूल का भाग दीया, सो यहु भागहार तिस भागहार तैं असंख्यात गुणा है। बहुरि अपनी अपनी संग्रह कृष्टि की उपरि नीचैं असंख्यातवां भाग मात्र कृष्टि छोडि संक्रमण की अन्तर कृष्टि सहित जे बीचि की असंख्यात बहुभाग मात्र बंधरूप पूर्व कृष्टि तिनकौं बंध द्रव्य करि करीं अपनी अपनी अपूर्व अंतर कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीएं लोभ, माया, मान विषैं गुणहानि का चौथा भाग मात्र अर क्रोध विषैं यातैं तेरह गुणा अंतरालनि का प्रमाण हो है। बंध द्रव्य करि असी दोय अपूर्व अंतर कृष्टि, तिनके बीचि जेती पूर्व कृष्टि पाइए, तिनके प्रमाण का नाम इहां अंतराल जानना, सो यहु संक्रमण की अंतर कृष्टिनि का अंतराल तैं असंख्यात गुणा है। असैं प्रमाण ल्याइ, अब बंध द्रव्य का विभाग कहिए है–

अपना अपना पूर्वोक्त बंध द्रव्य कौं स्थापि, ताकौं अनंत का भाग देइ, तहां एक भाग जुदा राखि अवशेष बहुभाग रहे, तिनतैं बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना, ताका प्रमाण कहिए है– बंध द्रव्य करि करीं जे अपूर्व अंतर कृष्टि,

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिनि विषैं जो अंत की कृष्टि तिस विषैं पूर्व अंत की कृष्टि तैं जेती कृष्टि नीचै यहु पाइए तितने विशेष यामैं चाहिये ताकौं तौ आदि स्थापिए । अर बीचि में जो अंतराल का प्रमाण, तितने विशेष उत्तर स्थापिए अर अपनी अपनी बंध द्रव्य करि करी अंतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापिए असैं स्थापैं जो संकलन धन आवै, तितना बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य जानना । इस द्रव्य करि बंध द्रव्य तैं जे नवीन अपूर्व कृष्टि करीं, तिनि विषैं जैसैं अन्य कृष्टिनि का अर इनका एक गोपुच्छ होइ तैसैं विशेषनि का सद्भाव हो है । सो एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र (बंध द्रव्य)[१] करि घटते पूर्वं उभय द्रव्य विशेष कहे थे, तिन विषैं इनका अवस्थान जानना ।

भावार्थ यहु – जो अन्य कृष्टिनि विषैं तो पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्य का उभय द्रव्य विशेष द्रव्य देना । अर बंध की अंतर कृष्टिनि विषैं इहां कह्या, बंधांतर विशेष द्रव्य सो देना । इहां भी एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र घटतापना जानना । जातैं इहां भी आगै कहिए है, जो एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र बंध द्रव्य ताका निक्षेपण हो है । असैं दीएं अन्य कृष्टिनि कैं अर बंध करि करीं नवीन कृष्टिनि कैं एक गोपुच्छ हो है । बहुरि तिन बहुभागनि विषैं इतना द्रव्य घटाएं अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताकौं बंध की नवीन अंतर कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीएं एक खंड मात्र एक कृष्टि का द्रव्य होइ । ताकौं बंध की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं सर्व-कृष्टि संबंधी द्रव्य होइ, सो याका नाम बंधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य है । इस द्रव्य करि समान प्रमाण लीएं बंध की नवीन अपूर्व अंतर कृष्टि निपजै है ।

बहुरि पूर्वं जो बंध द्रव्य कौं अनंत का भाग देइ एक भाग जुदा राख्या था, तिसतैं बंध विशेष द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना सो कितना है ? सो कहिए है–

पूर्व अपूर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र इहां गच्छ, सो एक गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि ताकरि गुणित गच्छ का भाग, तिस जुदा राख्या एक भाग कौं दीएं एक विशेष होइ, ताकौं अपना सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं बंध विशेष द्रव्य हो है । इस द्रव्य कौं जहां उभय द्रव्य विशेष द्रव्य विषैं अनंतवां भाग घटाया था, तहां देना । बहुरि जुदा राख्या एक भाग विषैं इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष रह्या, ताकौं अपनी सर्व बंध कृष्टि कौं प्रमाण का भाग दीएं एक खंड होइ, ताकौं अपनी बंध कृष्टिनि का प्रमाण करि ही गुणैं जो द्रव्य होइ सो बंध का मध्यम

---

१. 'बंध द्रव्य' इतना हस्तलिखित प्रतिओं में नहीं मिलता ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

खंड द्रव्य जानना। यहु द्रव्य अवशेष रह्या, ताकौं बंध कृष्टिनि विषैं समानरूप जहां उभय द्रव्य विशेष द्रव्य विषैं एक विशेष का अनंतवां भाग घटाया तहां ही दीजिए है।

भावार्थ यहु – बंध का विशेष अर मध्यम खंड का द्रव्य दीएं उभय द्रव्य का विशेष विषैं घटाया था द्रव्य सो पूर्ण हो है। असैं बंध द्रव्य का (विशेष)[1] विभाग जानना। अब इन संक्रमण द्रव्य का वा बंध द्रव्य देने का विधान कहिए है–तहां लोभ की तृतीय, संग्रह कृष्टि विषैं तो बंध द्रव्य का अभाव है, तातैं तहां संक्रमण द्रव्य ही कौं देने का विधान कहिए है—

लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं पंच प्रकार द्रव्य कह्या। तहां नीचैं जे अपूर्व कृष्टि करीं, तिनकी जघन्य कृष्टि विषैं अध:स्तन खंड तैं एक खंड अर मध्यम खंड तैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष तैं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि मात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करै है, सो यहु आगै कृष्टिनि विषैं दीजिए है द्रव्य तातैं बहुत है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत जे अध:स्तन अपूर्व कृष्टि, तिन विषैं एक एक अध:स्तन खंड अर एक एक मध्यम खंड तौ समानरूप अर उभय द्रव्य विशेष विषैं एक एक विशेष घटता असा द्रव्य दीजिए है। इहां अध:स्तन खण्ड द्रव्य तौ समाप्त भया। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि, तिस विषैं मध्यम खंड तैं एक खंड उभय द्रव्य विशेष तैं जेती कृष्टि होइ आईं, तितनी करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करिए है। सो यहु अपूर्व कृष्टिनि की अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता है; जातैं मध्यम खंड तैं अध:स्तन कृष्टि खंड असंख्यात गुणा है। अर एक उभय द्रव्य विशेष भी इहां घटया है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि पूर्व कृष्टि, तिन विषैं एक दोय आदि एक एक बधता अध:स्तन शीर्ष का विशेष अर एक एक मध्यम खंड अर होइ गईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण उभय द्रव्य का विशेष क्रम तै यावत् अपकर्षण भागहार का अर्ध प्रमाण मात्र पूर्व कृष्टि होइ तावत् निक्षेपण करिए है। इहां कृष्टिनि विषैं (मध्य) एक उभय द्रव्य का विशेष विषैं एक अध:स्तन शीर्ष विशेष घटाएं जो प्रमाण होइ, तितना विशेष करि घटता दीया द्रव्य का क्रम जानना। बहुरि तिनके ऊपरि संक्रमण द्रव्य करि करीं अपूर्व अंतरकृष्टि हैं। तीहिं विषैं अंतरकृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य तैं

---

१. इतना हस्तलिखित प्रतिओं में नहीं मिलता।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष तैं भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र विशेषनि कौं ग्रहि निक्षेपण करें है। सो यहु नीचली पूर्व कृष्टि विषैं दीया, द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। जातैं एक घाटि भईं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र पूर्व विशेष अर एक मध्यम खण्ड, इन करि हीन जो यहु अंतर कृष्टि सम्बन्धी एक खंड है, सो पूर्व कृष्टि के समान है, सो तिस दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। तहां एक उभय द्रव्य का हीनपना जानना। बहुरि ताके ऊपरि जो पूर्व कृष्टि, तिस विषैं भईं पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है, सो यहु संक्रमण की अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता है, जातैं इहां मिलैं अधःस्तन शीर्ष विशेष अर मध्यम खंड का द्रव्य है सो इन करि हीन अंतर कृष्टि संबंधी समान खंड का द्रव्य जो पूर्व कृष्टि के समान है, तातैं असंख्यात गुणा घटता है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टिनि विषैं एक एक अधःस्तन शीर्ष बधता अर एक एक मध्यम खंड समानरूप अर एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता असैं क्रम तैं यावत् आधा अपकर्षण भागहार मात्र पूर्व कृष्टि होइ तावत् निक्षेपण करिए है। बहुरि तिनके ऊपरि संक्रमण की अपूर्व अंतर कृष्टि है, तिस विषैं संक्रमण अंतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य तैं एक खंड उभय द्रव्य विशेष तैं भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र विशेषनि कौं ग्रहि निक्षेपण करें है। सो यहु यातैं नीचली पूर्व कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं पूर्वोक्त प्रकार असंख्यात गुणा है। बहुरि याके ऊपरि पूर्व कृष्टि, तिस विषैं भईं अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है। सो यहु तिनि अंतर कृष्टिनि विषैं दीया द्रव्य तैं पूर्वोक्त प्रकार असंख्यात गुणा घटता जानना। याही प्रकार अपूर्व कृष्टि तैं पूर्व कृष्टि विषैं असंख्यात गुणा घटता अर पूर्व कृष्टि तैं अपूर्व कृष्टि विषैं असंख्यात गुणा बधता क्रम करि लोभ की तृतीय कृष्टि की अंत कृष्टि पर्यंत द्रव्य देने का विधान जानना। बहुरि ताके ऊपरि लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि, तिसके पंच प्रकार द्रव्य स्थापि, तहां ताके नीचैं संक्रमण द्रव्य करि करीं जो अधःस्तन अपूर्व कृष्टि, तिनकी जघन्य कृष्टि विषैं अधःस्तन खंड तैं एक खंड मध्यम खंड तैं एक खंड उभय द्रव्य विशेष तैं भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करै है। सो यह लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। कारण पूर्वोक्त प्रकार जानना। बहुरि यातैं ऊपरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

एक एक अधःस्तन खंड, एक मध्यम खंड समान रूप एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता क्रम लीएं अधःस्तन अपूर्व कृष्टि की चरम कृष्टि पर्यंत द्रव्य देना। इहां अधः-स्तन कृष्टि द्रव्य समाप्त भया।

बहुरि इनके ऊपरि पूर्व कृष्टि की आदि कृष्टि तिस विषैं भईं पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है, सो यहु अपूर्व कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता है। कारण पूर्वोक्त प्रकार जानना। तातैं आगैं जैसैं लोभ को तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं विधान कह्या है, तैसैं ही सर्व जानना।

विशेष इतना – इहां अपकर्षण भागहार मात्र बीचि में पूर्व कृष्टि भएं अपूर्व कृष्टि कौं निपजावै है। बहुरि ताके ऊपरि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि है, सो याका बंध भी है अर याकैं आय द्रव्य भी है। तातैं इहां पंच प्रकार संक्रमण द्रव्य अर च्यारि प्रकार बंध द्रव्य स्थापि देने का विधान कहिए है। संक्रमण द्रव्य करि करीं नीचैं अधःस्तन अपूर्व कृष्टि, ताकी जघन्य कृष्टि विषै एक एक अधःस्तन खंड अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष निक्षेपण करिए है। सो यहु लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं दीय द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत अधः-स्तन कृष्टिनि विषैं एक एक अधःस्तन खंड एक एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि मात्र उभय द्रव्य कौं विशेष करि क्रम तैं दीजिए है। बहुरि तिनके ऊपरि पूर्व कृष्टिनि की प्रथम कृष्टि विषैं भईं पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है। सो यहु अपूर्व अधःस्तन कृष्टि की अंत कृष्टि का दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता है, सो इहां असंख्यात गुणा का वा असंख्यात गुणा घटता का कारण पूर्वोक्त ही जानना। बहुरि ताके ऊपरि संक्रमण अंतर कृष्टि का अंतराल तैं एक घाटि कृष्टि पर्यंत कृष्टिनि विषैं एक एक अधःस्तन शीर्ष का विशेष बधता अर एक एक उभय द्रव्य का विशेष घटता ऐसैं क्रम करि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि संक्रमण द्रव्य करि करीं अपूर्व अंतर कृष्टि तीहिं विषैं संक्रमण अंतर संबंधी समान खंड तैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष तैं भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष दीजिए है। बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ताके उपरि असैं ही क्रम तैं अपकर्षण भागहार मात्र बीचि मैं पूर्व कृष्टि भएं एक संक्रमण की अंतर कृष्टि निपजाइए है। तहां पूर्व कृष्टि विषैं तौ भई पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अध:स्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय कृष्टि के द्रव्य के विशेष दीजिए है। अर संक्रमण की अंतर कृष्टिनि विषैं संक्रमण अंतर कृष्टि संबंधी समान एक खंड अर भईं, कृष्टि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है।

तहां इतना विशेष जानना – इन विषैं बंध होने योग्य कृष्टि की जघन्य कृष्टि तैं लगाय जे पूर्व कृष्टि अर संक्रमण द्रव्य करि करीं अपूर्व कृष्टि हैं, तिन विषैं पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्य अपना एक निषेक का अनंतवां भाग मात्र घाटि दीजिए है। अर तहां बंध द्रव्य तैं पूर्व जघन्य बंध कृष्टि विषैं तो बंध द्रव्य संबंधी मध्यम खंड तैं एक खंड अर बंध विशेष द्रव्य तैं सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष द्रव्य दीजिए है। अर ताके ऊपरि कृष्टिनि विषैं यातैं एक एक बंध का विशेष मात्र घटता क्रम लीएं दीजिए है। ऐसे द्रव्य जो संक्रमण द्रव्य विषैं एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र घटता द्रव्य दीया था, सो पूर्ण हो है। बहुरि या प्रकार द्रव्य दीया, तहां अपूर्व कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तौ आय तैं नीचली पूर्व कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा बधता अर पूर्व कृष्टि विषैं दीया द्रव्य, आय तैं नीचली अपूर्व कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता जानना। असैं एक अधिक संक्रमण कृष्टि का अंतराल का भाग गुणहानि का चौथा भाग मात्र जो बंध कृष्टि का अंतराल, ताकौं दीएं जो प्रमाण आवै तितनी संक्रमण की अपूर्व अंतर कृष्टि यावत् पूर्ण होंइ तावत् असैं ही क्रम जानना। बहुरि इहां जो संक्रमण की अंतर कृष्टि अंत विषैं भई, ताके उपरि जो अंतराल विषैं बंध करि अपूर्व अंतर कृष्टि निपजाइए है, तिस विषैं संक्रमण द्रव्य न दीजिए है।

बंध द्रव्य ही के बंधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य तैं एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष की जायगा जो अंतर कृष्टि संबंधी विशेष द्रव्य कह्या, तिस तैं भईं सर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष जानना एक विशेष का अनंतवां भाग करि हीन अर मध्यम खंड तैं एक खंड अर बंध विशेष द्रव्य तैं भईं बंध कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है, सो यहु याके नीचैं जो संक्रमण द्रव्य की अंतर कृष्टि तिस विषैं दीया जो बंध द्रव्य, तातैं अनंत गुणा जानना। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि तिस विषैं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संक्रमण द्रव्य तैं भई कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खंड अर भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष अपने एक विशेष का अनंतवां भाग करि दीजिए है। तहां ही बंध द्रव्य तैं एक मध्यम खंड अर बंध विशेष तैं भई बंध कृष्टिनि करि हीन सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए। सो याके नीकैं बंधांतर कृष्टिनि विषैं दिया बंध द्रव्य अनंत गुणा घाटि है।

इहां अनंत गुणा वा अनंत गुणा घाटि द्रव्य कह्या, ताका कारण यहु जो इहां दीया बंध द्रव्य तैं बंधांतर का द्रव्य अनंत गुणा है। बहुरि ताके उपरि पूर्वोक्त प्रकार बीचि बीचि पूर्व कृष्टि होइ संक्रमण का अपूर्व कृष्टि होइ असैं एक अधिक संक्रमण का अंतराल करि बंध के अंतराल का भाग दीएं जो प्रमाण आवै, तितनी संक्रमण की अपूर्व अंतर कृष्टि भये एक बंध की अपूर्व अंतर कृष्टि होंइ, तहां द्रव्य देने का विधान पूर्वोक्त प्रकार जानना। याही प्रकार तावत् बंधांतर कृष्टिनि की अंत कृष्टि होइ तावत् विधान जानना। इहां बंध द्रव्य के अंतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य अर बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य समाप्त भया। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वोक्त चार प्रकार, संक्रमण द्रव्य दोय प्रकार बंध द्रव्य ही का यथायोग्य निक्षेपण हो है। सो बंध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत जानना। इहां सर्व बंध द्रव्य समाप्त भया। बहुरि ताके ऊपरि च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्य ही का यथायोग्य निक्षेपण हो है, सो अंत कृष्टि पर्यंत जानना। इहां सर्व संक्रमण द्रव्य भी समाप्त भया।

बहुरि जैसें लोभ की तीन संग्रह कृष्टिनि विषैं द्रव्य देने का विधान कह्या, तैसें ही मान, माया विषैं भी कहना।

विशेष इतना ही – जो मान की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टिनि के बीचि अंतराल अपकर्षण भागहार का पंद्रहवां भाग मात्र है। बहुरि क्रोध की तृतीय, द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं भी लोभवत् विधान जानना।

विशेष इतना ही – संक्रमण की अंतर कृष्टिनि का अंतराल इहां तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं अपकर्षण भागहार का चौदहवां भाग मात्र द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं अपकर्षण भागहार का एक सौ बियासीवां भाग मात्र जानना। बहुरि लोभ, मान, माया की बध्यमान संग्रह कृष्टिनि कैं बंध रहित जे नीचैं उपरि कृष्टि, तिनके बीचि संक्रमण द्रव्य करि अपूर्व अंतर कृष्टि करिए है, असा जानना। बहुरि ताके ऊपरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि, तिस विषैं संक्रमण द्रव्य का तौ अभाव है, तातैं घात द्रव्य का एक भाग जुदा स्थाप्या था, ताका तीन प्रकार द्रव्य अर बंध द्रव्य का च्यारि प्रकार द्रव्य स्थापि, तहां अधःस्तन अपूर्व कृष्टि होने का तौ अभाव है । (क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि होने का तौ अभाव है ।)[१] क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि के ऊपरि प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम पूर्व कृष्टि है, तिस विषैं घात द्रव्य की भईं पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष निक्षेपण करिए है । सो यहु दीया द्रव्य क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि विषैं दिया संक्रमण द्रव्य के अनंतवें भाग मात्र घटता है । बहुरि ताके ऊपरि एक एक अधःस्तन शीर्ष विशेष बधता एक एक उभय द्रव्य का विशेष घटता असैं क्रम तैं द्रव्य दीजिए है ।

इहां विशेष इतना – बंध होने योग्य कृष्टि की जघन्य कृष्टि समान पूर्व कृष्टि तैं लगाय कृष्टिनि विषैं उभय द्रव्य का विशेष द्रव्य अपने विशेष का अनंतवां भाग मात्र घटता दीजिए है । तहां जघन्य बंध कृष्टि विषैं बंध द्रव्य का एक मध्यम खंड अर, अपनी बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र बंध के विशेष दीजिए है । अर ताके ऊपरि कृष्टिनि विषैं एक एक बंध का विशेष घटता क्रम करि दीजिए है । असैं एक जघन्य बंध कृष्टि के ऊपरि सवा तीन गुणहानि मात्र कृष्टि भएं ताके ऊपरि अंतराल विषैं बंध द्रव्य करि अपूर्व अंतर कृष्टि निपजाइए है । तहां बंधांतर कृष्टि संबंधी समान खंड तैं एक खंड अर बंधांतर कृष्टि के विशेष द्रव्य तैं जेती सर्व कृष्टि होइ आईं, तिन करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष अपने एक विशेष के अनंतवें भाग करि हीन सर्व अर मध्यम खंड तैं एक खंड अर भईं सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष असैं च्यारि प्रकार बंध द्रव्य ही दीजिए है । घात द्रव्य न दीजिए है । सो यहु दीया द्रव्य याके नीचली पूर्व कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं अनंत गुणा है । बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि, तिस विषैं घात द्रव्य तैं अहि पूर्वैं भईं सर्व पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खंड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष अपने अपने विशेष का अनंतवां भाग करि हीन निक्षेपण करै है । तहां बंध द्रव्य का एक मध्यम खंड अर भईं बंध कृष्टिनि करि हीन बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र बंध विशेष निक्षेपण करिए है । सो यहु बंध द्रव्य बधांतर कृष्टि का बंध द्रव्य तैं अनंत गुणा घटता है । याका सर्व पूर्व द्रव्य वा दीया द्रव्य मिलि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तिस बंधांतर कृष्टि तैं उभय द्रव्य का एक विशेष मात्र घटता हो है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वोक्त प्रमाण पूर्व कृष्टि भए बंध द्रव्य करि एक अपूर्व कृष्टि निपजै है, तिन विषैं द्रव्य का देना पूर्वोक्त प्रकार जानना। असैं बंध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत जानना। ताके ऊपरि कृष्टिनि विषैं घात द्रव्य ही का निक्षेपण अपनी उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत हो है। असैं दीयमान द्रव्य की पंक्ति का अनुक्रम जानना। सो इहां जैसैं ऊंट की पीठ आदि विषैं ऊंची, आगैं नीची, आगैं कहीं ऊंची, कहीं नीची तैसैं कहीं बहुत, कहीं स्तोक, कहीं किछू हीन, किछू अधिक द्रव्य देने तैं अनंत जायगा उष्ट्र-कूट रचना हो है, जातैं असैं दीएं ही सर्व कृष्टिनि का एक गोपुच्छ होइ। असैं ही यतिवृषभ मुनि का उपदेश है। असैं दीयमान प्रदेशनि का निरूपण किया।

बहुरि दृश्यमान कहिए पूर्वैं था वा दीया द्रव्य मिलि जैसैं भया, सो लोभ की तृतीय संग्रह की जघन्य कृष्टि विषैं बहुत द्रव्य है, तातैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात कीए पीछैं जो उत्कृष्ट कृष्टि रही, तहां पर्यंत कृष्टि के द्रव्य के अनंतवें भाग मात्र जो एक एक उभय द्रव्य का विशेष तीहिं करि घटता अनुक्रम तैं दृश्यमान द्रव्य जानना।

या प्रकार असैं प्रथम समय विषैं दीयमान द्रव्य का निरूपण कीया, तैसैं ही द्वितीयादि समय विषैं भी जानना। असैं तात्पर्य निरूपण कीया।

कोहादिकिट्टिवेदगपढमे तस्स य असंखभागं तु।
णासेदि हु पडिसमयं, तस्सासंखेज्जभागकमं ॥५३६॥

क्रोधादिकृष्टिवेदकप्रथमे तस्य च असंख्यभागस्तु।
नाशयति हि प्रतिसमयं, तस्यासंख्य भागक्रमम् ॥५३६॥

टीका – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदक जीव है, सो प्रथम समय विषैं सर्व कृष्टिनि का असंख्यातवां भाग मात्र कृष्टिनि कौं नासैं है– घात करै है। बहुरि द्वितीय समय विषैं ताके असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टिनि का घात करैं है, असैं ही क्रम तैं समय समय प्रति असंख्यातवां भाग मात्र क्रम करि घात कृष्टिनि का प्रमाण क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्विचरम समय पर्यंत जानना, जातैं अंत समय विषैं नवक बंध अर उच्छिष्टावली बिना विवक्षित संग्रह की सर्व ही कृष्टिनि का अभाव हो है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कोहस्स य जे पढमे, संगहकिट्टम्हि णट्ठकिट्टीओ।
बंधुज्झियकिट्टीणं, तस्स असंखेज्जभागो हु ॥५३७॥

क्रोधस्य च याः प्रथमे, संग्रहकृष्टौ नष्टकृष्टयः।
बंधोज्झितकृष्टीनां, तस्यासंख्येय भागो हि ॥५३७॥

टीका – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक का सर्व काल विषैं जे नष्ट कृष्टि भईं, जिनि कृष्टिनि का घात कीया, तिनि का प्रमाण कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषैं क्रोध का प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं को ऊपरि की बंध रहित कृष्टिनि का पूर्वं प्रमाण कह्या था, ताके असंख्यातवें भाग मात्र जानना ।

कोहादिकिट्टियादिट्ठिदिम्हि समयाहियावलीसेसे ।
ताहे जहण्णुदीरइ, चरिमो पुण वेदगो तस्स ॥५३८॥

क्रोधादिकृष्टिकादिस्थितौ समयाधिकावलीशेषे ।
तत्र जघन्यमुदीरयति, चरमः पुनर्वेदकस्तस्य ॥५३८॥

टीका – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति विषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं, तहां जघन्य स्थिति उदीरणा करने वाला हो है । जो आवली के उपरि एक समय है, तिस संबंधी निषेक कौं अपकर्षण करि उदयावली विषैं निक्षेपण करै है । बहुरि तहां ही क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि, वेदक का अंत समय विषैं हो है ।

ताहे संजलणाणं, बंधो अंतोमुहुत्तपरिहीणो ।
सत्तो वि य सदिवसा, अडमासब्भहियछव्वरिसा ॥५३९॥

तत्र संज्वलनानां, बंधोऽन्तर्मुहूर्तपरिहीनः ।
सत्त्वमपि च शतदिवसा, अष्टमासाभ्यधिकषड्वर्षाः ॥५३९॥

टीका – तहां संज्वलन चतुष्क का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि शत दिवस कहिए सौ दिन, ताका तीन महिना अर दश दिन है । पहले समय च्यारि मास था, सो संख्यात स्थिति बंधापसरणनि करि घटि इहां इतना रह्या । क्रोध की तीनौं संग्रह कृष्टिनि का वेदक काल विषैं जो दोय मास घटै तौ एक संग्रह कृष्टि वेदक काल विषैं कितना घटै असैं त्रैराशिकतैं स्थितिबंध घटने का प्रमाण पूर्वोक्त आया है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तहां संज्वलन चतुष्क का स्थितिसत्त्व अंतर्मुहूर्त घाटि आठ महीना अधिक छह वर्ष है। प्रथम समय आठ वर्ष था, सो घटि करि इहां इतना रह्या। क्रोध की तीनौं संग्रह कृष्टिनि का वेदक काल विषैं जो च्यारि वर्ष घटै तौ एक संग्रह कृष्टि वेदक काल विषैं कितना घटै असैं त्रैराशिक तैं स्थिति सत्त्व घटने का प्रमाण पूर्वोक्त आवै है।

घादितियाणं बंधो, दसवासंतोमुहुत्तपरिहीणा।
सत्तं संखं वस्सा, सेसाणं संखऽसंखवस्साणि ॥५४०॥

घातित्रयाणां बंधो, दशवर्षा अंतर्मुहूर्तपरिहीनाः।
सत्त्वं संख्यं वर्षाः शेषाणां संख्यासंख्यवर्षाः ॥५४०॥

टीका – घाति कर्मनि का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि दश वर्ष मात्र है। प्रथम समय विषैं संख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो इहां संख्यात गुणा क्रम तैं घटि इतना रह्या। बहुरि घाति कर्मनि का स्थिति सत्त्व संख्यात हजार वर्ष मात्र है। पूर्वैं संख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि संख्यात गुणा घटता क्रम लीएं घटया, तथापि आलाप करि संख्यात हजार वर्ष मात्र ही रह्या। बहुरि अघाति कर्मनि का स्थिति बंध संख्यात हजार वर्ष मात्र है। इहां भी पूर्ववत् तात्पर्य जानना। बहुरि आयु बिना तीन अघातियानि का स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्ष मात्र है। यद्यपि पूर्व तैं असंख्यात गुणा घटता क्रम करि घटया तथापि आलाप करि इतना ही रह्या असैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक का निरूपण किया।

से काले कोहस्स य, बिदियादो संगहादु पढमठिदी।
कोहस्स विदियसंगहकिट्टस्स य वेदगो होदि ॥५४१॥

स्वे काले क्रोधस्य च, द्वितीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः।
क्रोधस्य द्वितीयसंग्रहकृष्टेश्च वेदको भवति ॥५४१॥

टीका – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक का अनंतर समयरूप अपने काल विषैं क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि समूह का अपकर्षण करि उदयादि गुणश्रेणीरूप प्रथम स्थिति करै है। ताका प्रमाण क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि का वेदक काल तैं आवली मात्र अधिक है। याके प्रथमादि समयनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपकर्षण किया हुआ द्रव्य दीजिए है । बहुरि तहां ही क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टिनि का वेदक हो है ।

कोहस्स पढमसंगहकिट्टिस्सावलिपमाण पढमठिदी ।
दोसमऊणदुआवलिणवकं च वि चेउदे ताहे ॥५४२॥

क्रोधस्य प्रथम संग्रहकृष्टेरावलिप्रमाणं प्रथमस्थितिः ।
द्विसमयोनद्व्यावलिनवकं चापि चतुर्दश तत्र ॥५४२॥

टीका – तिस समय विषैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति विषैं उच्छिष्टावली मात्र निषेक अर द्वितीय स्थिति विषैं दोय समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धरूप निषेक अवशेष सत्त्वरूप रहै हैं । इन बिना क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का अन्य सर्व प्रदेश क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि के नीचैं अनंत गुणा घटता अनुभागरूप होइ, ताकी अपूर्व कृष्टि होइ परिणमै है । तब ही अन्य संग्रह कृष्टिनि विषैं भी यथासंभव संक्रमण हो है । तीहिं काल विषैं क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य चौदह गुणा हो है । एक गुणा आय का था, तातैं तेरह गुणा प्रथम संग्रह का आया, मिल चौदह गुणा भया ।

पढमादिसंगहाणं, चरिमे फालिं तु बिदियपहुदीणं ।
हेट्ठा सव्वं देदि हु, मज्झे पुव्वं व इगिभागं ॥५४३॥

प्रथमादिसंग्रहाणां, चरमे फालिं तु द्वितीयप्रभृतीनाम् ।
अधस्तनं सर्वं ददाति हि, मध्ये पूर्वं इव एकभागम् ॥५४३॥

टीका – प्रथमादि संग्रह कृष्टिनि का अंत समय विषैं जो संक्रमण द्रव्यरूप फालि, ताहि द्वितीयादि संग्रह कृष्टिनि के नीचैं सर्व दे है अर मध्य विषैं पूर्ववत् एक भाग कौं दे है ।

भावार्थ – जिस संग्रह कृष्टि कौं भोगवै है, ताका नवक समयप्रबद्ध बिना सर्व द्रव्य सो सर्व संक्रमणरूप है । जो उच्छिष्टावली, सो अंत फालि है । ताकौं अनंतर समय विषैं याके अनंतर जो संग्रह कृष्टि भोगिए, ताके नीचैं अर बीचि में अपूर्व कृष्टिरूप परिणमावै है । तहां तिस संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि के बीचि जे अपूर्व कृष्टि करिए है, ते पूर्ववत् अंत समय विषैं अपने द्रव्य का असंख्यातवां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भाग मात्र द्रव्य करि निपजाइए है। बहुरि अवशेष सर्व द्रव्य करि तिस संग्रह के नीचैं अपूर्व कृष्टि निपजाइए है, ऐसैं विधान है। जातैं इहां क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि के अनंतरि द्वितीय संग्रह कृष्टि भोगिए है, सो इहां भी ऐसा ही विधान जानना।

इहां प्रश्न – जो पूर्वैं कृष्टि वेदक का प्रथम समय का व्याख्यान विषैं नीचैं करी कृष्टिनि का प्रमाण तैं बीचि करी कृष्टिनि का प्रमाण असंख्यात गुणा कह्या था, इहां बीचि करि कृष्टिनि विषैं दीया द्रव्य तैं नीचैं करी कृष्टिनि विषैं दीया द्रव्य असंख्यात गुणा कह्या, तातैं विरुद्ध आवै है ?

ताका समाधान – तहां तो संग्रह कृष्टि के द्रव्य का असंख्यातवां भाग मात्र द्रव्य ग्रह्या था ताका विधान कह्या था, इहां सर्व संग्रह कृष्टि के द्रव्य की अपेक्षा वर्णन है, तातैं इहां ऐसा विधान जानना। बहुरि जो इहां भी पूर्ववत् विधान करिए तौ अंतर कृष्टिनि के बीचि नवीन कृष्टि बहुत निपजैं सर्व अवयव कृष्टिनि के बीचि बीचि अपूर्व कृष्टि होंइ, तब पूर्व कृष्टिनि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य जो कृष्टि विषैं दिया, तातैं अनंतरवर्ती कृष्टिनि विषैं दीया द्रव्य असंख्यात गुणा होइ, सो ऐसा द्रव्य देना। सूत्र विषैं नाहीं कह्या है, तातैं इहां विधान कह्या है, सोई अंगीकार करना।

कोहस्स बिदियकिट्टी, वेदयमाणस्स पढमकिट्टि वा।
उदओ बंधो णासो, अपुव्वकिट्टीण करणं च ॥५४४॥

क्रोधस्य द्वितीयकृष्टिः, वेदकस्य प्रथम कृष्टिरिव।
उदयो बंधो नाशः, अपूर्वकृष्टीनां करणं च ॥५४४॥

टीका – क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि का वेदक कैं कृष्टिनि का उदय अर बंध अर घात अर संक्रमण द्रव्य करि वा बंध द्रव्य करि अपूर्व कृष्टि का करना इत्यादि विधान जैसैं प्रथम संग्रह कृष्टि का कह्या, तैसैं ही समस्त कहना।

कोहस्स बिदियसंगहकिट्टी वेदंतयस्स संकमणं।
सट्ठाणे तदियो त्ति य तदणंतरहेट्ठिमस्स पढमं च ॥५४५॥

क्रोधस्य द्वितीयसंग्रहकृष्टि वेद्यमानस्य संक्रमणं।
स्वस्थाने तृतीयांतं च, तदनंतरमधस्तनस्य प्रथमं च ॥५४५॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि का वेदक कैं स्वस्थान कहिए विवक्षित कषाय ही विषैं संक्रमण तौ तीसरी संग्रह (कृष्टि)[१] पर्यंत होइ अर परस्थान कहिए अन्य कषाय विषैं संक्रमण सो आय के नीचैं जो कषाय, ताकी प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं होइ, सोई कहिए है–

पढमो बिदिये तदिये, हेट्ठिमपढमे च बिदियगो तदिये ।
हेट्ठिमपढमे तदियो, हेट्ठिमपढमे च संकमदि ॥५४६॥

प्रथमो द्वितीये तृतीये, अधस्तनप्रथमे च द्वितीयकस्तृतीये ।
अधस्तनप्रथमे तृतीयोऽधस्तनप्रथमे च संक्रामति ॥५४६॥

टीका – विवक्षित कषाय की पहली संग्रह कृष्टि का द्रव्य तौ अपनी दूसरी तीसरी अर नीचली कषाय की पहली संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण करै है अर दूसरी संग्रह कृष्टि का द्रव्य अपनी तीसरी अर नीचली कषाय की पहली संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण करै है। अर तीसरी संग्रह कृष्टि का द्रव्य नीचली कषाय की पहली संग्रह कृष्टि विषैं ही संक्रमण करै है । इहां वेदक अपेक्षा जाकौं भोगवै है, ताके पीछैं जाकौं भोगवै, ताकौं नीचली कषाय कह्या है, सो क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि तैं प्रदेश समूह है सो क्रोध की तीसरी, मान की पहली संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण करैं है । अर क्रोध की तीसरी संग्रह कृष्टि का द्रव्य तैं मान की पहली ही विषैं संक्रमण करै है । अर मान की पहली का द्रव्य मान की दूसरी, तीसरी, माया की पहली विषैं संक्रमण करै है । मान की दूसरी का द्रव्य मान की तीसरी, माया की पहली विषैं संक्रमण करै है । अर मान की तीसरी का द्रव्य, माया की पहली विषैं संक्रमण करै है । अर माया की पहली का द्रव्य, माया की दूसरी, तीसरी, लोभ की पहली विषैं संक्रमण करै है । अर माया की दूसरी का द्रव्य, माया की तीसरी, लोभ की पहली विषैं संक्रमण करै है अर माया की तीसरी का द्रव्य लोभ की पहली विषैं संक्रमण करै है । अर लोभ का पहली का द्रव्य लोभ की दूसरी, तीसरी विषैं संक्रमण करै है । अर लोभ की दूसरी का द्रव्य लोभ की तीसरी विषैं संक्रमण होइ प्रवेश करै है । इहां स्वस्थान विषैं तौ विवक्षित संग्रह का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र अपनी अन्य संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण करै है । अर परस्थान विषैं तिस ही कौं अधः

---

१. 'कृष्टि' शब्द हस्तलिखित प्रतियों में नहीं मिलता ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रवृत्त भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र द्रव्य वा अन्य कषाय की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण करै है, अैसा विशेष जानना ।

कोहस्स पढमकिट्टी, सुण्णो त्ति ण तस्स अत्थि संकमणं ।
लोभंतिमकिटिट्स्स य, णत्थि पडित्थावणूणादो ॥५४७॥

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिः, शून्या इति न तस्या अस्ति संक्रमणं ।
लोभांतिमकृष्टेश्च, नास्ति प्रतिस्थापनमूनतः ॥५४७॥

टीका – **इहां लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि तौ शून्य भई**–नास्ति भई, तातैं ताकैं संक्रमण नाहीं अर लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का भी संक्रमण नाहीं, जातैं प्रतिलोम जो ऊलटा संक्रमण ताका अभाव है ।

अैसैं दोय बिना अवशेष दश संग्रह कृष्टिनि का संक्रमण कीया । तहां भोगने-रूप द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं आय द्रव्य का अभाव है । तहां घात द्रव्य ही का पूर्व कृष्टिनि विषैं देना पूर्वोक्त प्रकार हो है । बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं व्यय द्रव्य नाहीं, परन्तु आय द्रव्य है, तातैं दश संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण द्रव्य का पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषैं देना पूर्वोक्त प्रकार हो है । अैसा जानना ।

जस्स कसायस्स जं, किटिट् वेदयदि तस्स तं चेव ।
सेसाण कसायाणं, पढमं किट्टिं तु बंधदि हु ॥५४८॥

यस्य कषायस्य यां कृष्टिं वेदयति तस्य तां चैव ।
शेषाणां कषायाणां, प्रथमा कृष्टिं बध्नाति हि ॥५४८॥

टीका – जिस कषाय की जिस संग्रह कृष्टि कौं वेदै भोगवै है, तिस कषाय की तौ तिस ही संग्रह कृष्टि कौं बाधैं है । बहुरि अन्य कषायनि की प्रथम संग्रह कृष्टि कौं बाधै है, अैसी व्याप्ति है । तातैं बंध द्रव्य की च्यारि ही संग्रह कृष्टि विषैं जानना, सो इहां क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि कौं अर कषायनि की प्रथम संग्रह कृष्टि कौं बाधै है ।

माणतिय कोहतदियै, मायालोहस्स तिसतिये अहिया ।
संखगुणं वेदिज्जे, अंतरकिट्टि पदेसो य ॥५४९॥

---

१. 'कृष्टि' शब्द हस्तलिखित प्रतियों में नहीं मिलता ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मानत्रयं क्रोधतृतीये, मायालोभस्य त्रिकत्रिके अधिका ।
संख्यगुणं वेद्यमाने, अंतरकृष्टिः प्रदेशश्च ॥५४६॥

टीका – इहां संग्रह कृष्टि विषैं अवयव कृष्टिनि का वा द्रव्य का अल्प बहुत्व कहिए है, सो मान को तीन अर क्रोध की एक तीसरी ही अर माया लोभ की तीन तीन संग्रह कृष्टिनि विषैं तौ विशेष अधिक अर वेद्यमान क्रोध की दूसरी कृष्टि विषैं संख्यात गुणा कृष्टिनि का वा प्रदेशनि का प्रमाण क्रम तैं है । सोई कहिए है–

मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का स्तोक, तातैं मान की दूसरी का, तातैं मान की तीसरी का, तातैं क्रोध की तीसरी का, तातैं माया की तीसरी का, तातैं क्रोध की प्रथम का, तातैं लोभ की दूसरी का, तातैं लोभ की तीसरी का अवयव कृष्टिनि का प्रमाण क्रम तैं विशेष करि अधिक है । तहां विशेष का प्रमाण स्वस्थान विषैं तौ पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं आवै है । जैसें मान की प्रथम संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण तैं याही कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं जो एक भाग मात्र विशेष ताकरि अधिक मान की द्वितीय संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण हो है, असैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि परस्थान विषैं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवै है । जैसें मान की तीसरी संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टि प्रमाण याही कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र विशेष करि अधिक क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण हो है । असैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण क्रम तै वेद्यमान क्रोध की द्वितीय संग्रह को अवयव कृष्टिनि का प्रमाण संख्यात गुणा है सो चौदह गुणा जानना । असैं अवयव कृष्टिनि के प्रमाण का अल्प बहुत्व कह्या । याही प्रकार प्रदेश जे इन संग्रह कृष्टिनि के परमाणू, तिनके प्रमाण का ही अल्प बहुत्व जानना, जातैं बंध द्रव्य, संक्रमण द्रव्य मिलि असा क्रम हो है । बहुरि इस द्रव्य ही के अनुसारि कृष्टिनि का भी अल्प बहुत्व जानना । यातैं थोडे द्रव्य करि थोरी, बहुत द्रव्य करि बहुत निपजैं हैं ।

वेदिज्जादिट्ठिदिए, समयाहियआवलीयपरिसेसे ।
ताहे जहण्णुदीरणचरिमो पुण वेदगो तस्स ॥५५०॥

वेद्यमानादिस्थितौ, समयाधिकावलिक परिशेषे ।
तत्र जघन्योदीरणचरमः पुनः वेदकस्तस्य ॥५५०॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – जिस संग्रह कृष्टि कौं वेदै है, तिसकी प्रथम स्थिति विषैं दोय आवली अवशेष रहैं तौ आगाल प्रत्यागाल का नाश हो है। बहुरि समय अधिक आवली अवशेष रहैं जघन्य स्थिति जो उदयावली तैं ऊपरि एक निषेक, ताका उदीरक कहिए उदयाली विषैं देनेरूप उदीरणा करनेवाला हो है। तहां ही तिसके वेदक काल का अंत समय हो है, सो इहां क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति विषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं जघन्य स्थिति का उदीरक अर ताके वेदक का अंत समय भया।

ताहे संजलणाणं, बंधो अंतोमुहुत्तपरिहीणो।
सत्तोवि य दीणसीदी, चउमासब्भहियपणवस्सा ॥५५१॥

तत्र संज्वलनानां, बंधोऽअंतर्मुहूर्तपरिहीनः।
सत्त्वमपि च दिनाशीतिः, चतुर्मासाभ्यधिकपंचवर्षाः ॥५५१॥

टीका – तहां संज्वलन चतुष्क का स्थितिबंध चतुष्क का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि असी दिन, ताका दोय मास अर बीस दिन मात्र है। अर तिनका सत्व अंतर्मुहूर्त घाटि, च्यारि मास अधिक पंच वर्ष मात्र है। इहां भी पूर्ववत् निरूपण जानना।

घादितियाणं बंधो, वासपुधत्तं तु सेसपयडीणं।
वस्साणं संखैज्जसहस्साणि हवंति णियमेण ॥५५२॥

घातित्रयाणां बंधो, वर्षपृथक्त्वं तु शेषप्रकृतिनाम्।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ॥५५२॥

टीका – तीन घातियानि का स्थितिबंध पृथक्त्व वर्ष मात्र है। तीनके ऊपरि यथायोग्य पृथक्त्व संज्ञा जाननी। बहुरि अवशेष अघातियानि का स्थितिबंध संख्यात हजार वर्ष मात्र है नियमकरि।

घादितियाणं सत्तं, संखसहस्साणि होंति वस्साणं।
तिण्हं पि अघादीणं, वस्साणि असंखमेत्ताणि ॥५५३॥

घातित्रयाणां सत्वं संख्यसहस्राणि भवंति वर्षाणां।
त्रयाणामपि अघातिनां, वर्षा असंख्यमात्राः ॥५५३॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – तीन घातियानि की स्थिति सत्त्व संख्यात हजार वर्ष मात्र है । आयु बिना तीन अघातियानि का स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्ष मात्र है ।

से काले कोहस्स य, तदियादो संगहादु पढमाठिदी ।
अंते संजलणाणं, बंधं सत्तं दुमास चउवस्सा ॥५५४॥

स्वे काले क्रोधस्य च, तृतीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः ।
अंते संज्वलनानां, बंधं सत्त्वं द्विमासं चतुर्वर्षाः ॥५५४॥

टीका – ताके अनंतरि अपने काल विषैं क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि का वेदक हो है । तहां याका द्रव्य एक गुणा था अर याकैं चौदह गुणा द्वितीय संग्रह का उच्छिष्टावली नवक समयप्रबद्ध बिना द्रव्य मिलने तैं पंद्रह गुणा हो है । तिस द्रव्य तिसके वेदक का काल तैं आवली मात्र अधिक प्रथम स्थिति करै है । तहां वर्णन क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि वेदकवत् जानना । तहां अंत समय विषैं संज्वलन चतुष्क का स्थितिबंध दोय मास अर स्थिति सत्त्व च्यारि वर्ष मात्र जानना । अवशेष कर्मनि का पूर्ववत् आलाप है ।

से काले माणस्स य, पढमादो संगहादु पढमठिदी ।
माणोदयअद्धाये, तिभागमेत्ता हु पढमठिदी ॥५५५॥

स्वे काले मानस्य च, प्रथमात् संग्रहात् प्रथमस्थितिः ।
मानोदयाद्धायाः, त्रिभागमात्रा हि प्रथमस्थितिः ॥५५५॥

टीका – क्रोध की वेदक कौं अनंतरि अपने काल की विषैं मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य एक गुणा था अर पंद्रह गुणा क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य मिल्या, सो मिल करि सोलह गुणा भया । ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग दिए एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि गुणश्रेणी रूप प्रथम स्थिति करै है । सो क्रोध वेदक काल तैं किछू घाटि जो मान का वेदक काल, ताका तीसरा भाग आवली करि अधिक तिस प्रथम स्थिति का प्रमाण है । तहां मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदक हो है ।

कोहपढमं व माणो, चरिमे अंतोमुहुत्तपरिहीणो ।
दिणमासपण्णचत्तं, बंधं सत्तं तिसंजलणाणं ॥५५६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

क्रोधप्रथमं व मानः, चरमे अंतर्मुहूर्तपरिहीनः ।
दिनमासपंचाशच्चत्वारिंशत् बंधः सत्त्वं त्रिसंज्वलनानां ।।५५६।।

टीका – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदकवत् मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदक का विधान जानना ।

विशेष इतना – क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदक के बंध द्रव्य करि उपजीं जे नवीन अंतर कृष्टि, तिनका प्रमाण ल्यावने कौं भागहार का प्रमाण छह गुणहानि मात्र कह्या था, इहां तातैं चौथाई घाटि है, तातैं साढा च्यारि गुणहानि मात्र है । आगै लोभ इतना इतना ही घाटि जानना । सो इहां माया की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक कैं तीन गुणहानि मात्र, लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं ड्योढ गुणहानि मात्र भागहार जानना । याका भाग सर्व कृष्टिनि कौं दीएं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक कैं तौ गुणहानि का चौथा भाग मात्र अंतराल का प्रमाण कह्या था । इहां वा आगैं तातैं सोहलवां भाग मात्र क्रम तैं घटता जानना । सो मान, माया, लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक कै बंध द्रव्य करि निपजीं नवीन कृष्टिनि के बीचि जे कृष्टि पाइए, तिनका प्रमाण मात्र अंतराल सो क्रम तैं गुणहानि का तीन सोलह्वां भाग मात्र, दोइ सोलह्वां भाग मात्र, एक सोलहवां भाग मात्र गुणा स्थापिए । बहुरि क्रोध की प्रथम, द्वितीय, तृतीय कृष्टि वेदक कै गुणकार क्रम तैं तेरह चौदह, पंद्रह का अर मान की प्रथमादि संग्रह कृष्टि वेदक कैं गुणकार क्रम तैं सोहल, सतरह, अठारह का वा माया की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक कैं गुणकार क्रम तैं उगणीस, बीस, इकईस का, लोभ की प्रथमादि संग्रह कृष्टि वेदक कैं गुणकार क्रम तैं बाईस का है । तहां अपने अपने गुणकार करि गुण्य कौं गुणैं अंतराल का प्रमाण आवै है । बहुरि इतना जानना—

क्रोध वेदक कैं च्यारचों कषायनि का, मान वेदक कैं क्रोध बिना तीन कषायनि का, माया वेदक कैं क्रोध, मान बिना कषायनि का, लोभ वेदक कैं लोभ ही का बंध है । तातैं इनके ही बंध द्रव्य करि अंतर कृष्टि निपजै हैं । बहुरि जिस कृष्टि कौं भोगिए है, ताका द्रव्य जिन कृष्टिनि विषैं संक्रमण करै है, तिन विषैं संक्रमण द्रव्य करि निपजी जे कृष्टि, तिनका अंतराल विषैं भी यथासंभव जानना । बहुरि मान प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक की प्रथम स्थिति विषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं अंत समय होइ । तहां क्रोध बिना तीन संज्वलन का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि पचास दिन है । अर स्थितिसत्त्व अंतर्मुहूर्त घाटि चालीस मास मात्र है । इहां क्रोध

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

की प्रथम संग्रह कृष्टिवत् त्रैराशिक आदि विधान जानना। इहां तैं आगैं पूर्व संग्रह कृष्टि का द्रव्य मिलने तैं वेद्यमान कृष्टि का द्रव्य विषैं एक एक गुणकार क्रम तैं बंधै है। तहां मान की द्वितीय, तृतीय अर माया की प्रथम, द्वितीय, तृतीय अर लोभ की प्रथम, द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य क्रम तैं सतरह, अठारह, उगणीस, बीस, इकईस, बाईस, तेईस, चौईस गुणा है, सो अपने अपने द्रव्य कौं अपकर्षण करि अपने वेदक काल तैं, आवली मात्र अधिक प्रथम स्थिति करिए है। तहां पूर्वोक्त विधान तैं तिस प्रथम स्थिति विषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं अपनी अपनी वेदक काल का अंत समय हो है।

तहां स्थितिबंध स्थितिसत्त्व का विशेष कहिए है—

बिदियस्स माणचरिमे, चत्तं बत्तीसदिवसमासाणि।
अंतमुहुत्तहीणा, बंधो सत्तो तिसंजलणगाणं ॥५५७॥

द्वितीयस्य मानचरमे, चत्वारिंशद्द्वात्रिंशद्दिवसमासाः।
अंतर्मुहुर्तहीना, बंधः सत्त्वं त्रिसंज्वलनानां ॥५५७॥

टीका – ताके अनंतरि मान की द्वितीय संग्रह कृष्टि का वेदक हो है। ताका अंत समय विषैं तीन संज्वलन का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि चालीस दिन अर स्थितिसत्त्व अंतर्मुहूर्त घाटि बत्तीस मास मात्र है।

तदियस्स माणचरिमे, तीसं चउवीस दिवसमासाणि।
तिण्हं संजलणाणं, ठिदिबंधो तह य सत्तो य ॥५५८॥

तृतीयस्य मानचरिमे, त्रिंशद्चतुर्विंशद्दिवसमासाः।
त्रयाणां संज्वलनानां स्थितिबंधस्तथा च सत्त्वं च ॥५५८॥

टीका – ताकै अनंतरि मान की तृतीय संग्रह कृष्टि का वेदक हो है। ताका अंत समय विषैं तीन संज्वलननि का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि तीस दिन अर स्थिति सत्त्व अंतर्मुहूर्त घाटि चौवीस मास मात्र हो है।

पढमगमायाचरिमे, पणवीसं वीसदिवसमासाणि।
अंतोमुहुत्तहीणा, बंधो सत्तो दुसंजलणगाणं ॥५५९॥

प्रथमगमायाचरिमे, पंचविंशतिः विंशतिः दिवसमासाः।
अंतर्मुहूर्तहीनाः, बंधः सत्त्वं द्विसंज्वलनकयोः ॥५५९॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – ताके अनंतरि माया की प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदक हो है। सो याका काल माया वेदक काल के तीसरे भाग मात्र है। ताका अंत समय विषैं संज्वलन माया-लोभ का स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि पचीस दिन स्थितिसत्त्व अंतर्मुहूर्त घाटि वीस मास मात्र हो है।

बिदियगमायाचरिमे, वीसं सोलं च दिवसमासाणि।
अंतोमुहुत्तहीणा, बंधो सत्तो दुसंजलणगाणं ॥५६०॥

द्वितीयगमायाचरिमे, विंशं षोडश च दिवसमासाः।
अंतर्मुहूर्तहीनाः, बंधः सत्त्वं द्विसंज्वलनकयोः ॥५६०॥

टीका – ताके अनंतरि माया की द्वितीय संग्रह कृष्टि का वेदक हो है। ताका अंत समय विषैं दोय संज्वलननि का स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि वीस दिन अर स्थिति सत्त्व अंतर्मुहूर्त घाटि सोलह मास मात्र हो है।

तदियगमायाचरिमे, पण्णर बारसय दिवसमासाणि।
दोण्हं संजलणाणं, ठिदिबंधो तह य सत्तो य ॥५६१॥

तृतीयकमायाचरमे, पंचदश द्वादश दिवसमासाः।
द्वयोः संज्वलनयोः, स्थितिबंधस्तथा च सत्त्वं च ॥५६१॥

टीका – ताके अनंतर माया की तृतीय संग्रह कृष्टि का वेदक हो है। ताका अंत समय विषैं दोय संज्वलननि का स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त घाटि पंद्रह दिन अर स्थिति सत्त्व अंतर्मुहूर्त घाटि बारह मास प्रमाण हो है।

मासपुधत्तं वासा, संखसहस्साणि बंध सत्तो य।
घादितियाणिदराणं, संखमसंखेज्जवस्साणि ॥५६२॥

मासपृथक्त्वं वर्षाः, संख्यसहस्राः बंधः सत्त्वं च।
घातित्रयाणामितरेषां संख्यमसंख्येयवर्षाः ॥५६२॥

टीका – तहां ही तीन घातियानि का स्थितिबंध पृथक्त्व मास प्रमाण है। स्थिति सत्त्व यथा योग्य संख्यात हजार वर्ष मात्र है। बहुरि तीन अघातियानि का स्थिति बंध यथा योग्य संख्यात वर्ष मात्र है। स्थिति सत्त्व यथायोग्य असंख्यात वर्ष मात्र है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लोहस्स पढमचरिमे, लोहस्संतोमुहुत्त बंधदुगे ।
दिवसपुधत्तं वासा, संखसहस्साणि घादितिये ॥५६३॥

लोभस्य प्रथमचरिमे, लोभस्यांतर्मुहूर्तं बंधद्विके ।
दिवसपृथक्त्वं वर्षाः, संख्यसहस्रा घातित्रये ॥५६३॥

टीका – ताके अनंतरि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि का वेदक हो है । ताका काल समस्त लोभ वेदक काल के तीसरे भाग मात्र वा बादर लोभ वेदक काल तैं आधा है । ताका अंत समय विषैं संज्वलन लोभ का स्थितिबंध वा स्थितिसत्त्व अंतर्मुहूर्त मात्र है । तहां स्थितिबंध तैं स्थितिसत्त्व संख्यात गुणा जानना । बहुरि तीन घातियानि का स्थितिबंध पृथक्त्व दिन मात्र अर स्थितिसत्त्व संख्यात हजार वर्ष मात्र है ।

सेसाणं पयडीणं, वासपुधत्तं तु होदि ठिदिबंधो ।
ठिदिसत्तमसंखेज्जा, वस्साणि हवंति णियमेण ॥५६४॥

शेषाणां प्रकृतीनां, वर्षपृथक्त्वं तु भवति स्थितिबंधः ।
स्थितिसत्त्वमसंख्येया, वर्षा भवंति नियमेन ॥५६४॥

टीका – अवशेष तीन अघातिया प्रकृतिनि का स्थिति बंध पृथक्त्व वर्ष मात्र अर स्थितिसत्त्व यथायोग्य नियम करि असंख्यात वर्ष मात्र है ।

से काले लोहस्स य, बिदियादो संगहादु पढमठिदी ।
ताहे सुहुमं किट्टिं, करेदि तव्विदियतदियादो ॥५६५॥

स्वे काले लोभस्य च, द्वितीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः ।
तत्र सूक्ष्मां कृष्टिं, करोति तद्द्वितीयतृतीयतः ॥५६५॥

टीका – बहुरि ताके अनंतरि अपने काल विषैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि के द्रव्य तैं प्रदेश समूह का अपकर्षण करि उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी रूप प्रथम स्थिति करै है । ताका प्रमाण अवशेष रह्या अनिवृत्तिकरण काल तैं आवली मात्र अधिक है । बहुरि तिस ही काल विषैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि अर तृतीय संग्रह कृष्टि का जो द्रव्य, तातैं प्रदेश समूह को अपकर्षण करि सूक्ष्म है अनुभाग शक्ति जिन विषैं असी सूक्ष्म कृष्टि करै है । सो बादर लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य सर्व

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मोह का द्रव्य का चौईस का भाग तैं तेईस गुणा है । तातैं अपकर्षण कीया द्रव्य, अनुभाग की अपेक्षा सर्व मोह द्रव्य का चौईसवां भाग को अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग, तातैं पांच सै पिचहत्तरि गुणा है । तहां तेईस गुणा तौं लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि रूप द्रव्य है । अर अवशेष पांच सै बावन गुणा द्रव्य रह्या, ताकरि सूक्ष्म कृष्टि करिए है । इहां अपकर्षण कीया द्रव्य विषैं तेईस का गुणकार था, ताकौं तातैं एक अधिक चौईस, ताकरि गुणैं ताके अनंतरि भोगवने योग्य सूक्ष्म कृष्टि, ता विषैं संक्रमण होने योग्य द्रव्य पांच सै बावन गुणा हो है । जातै अनंतरि भोगवने योग्य कृष्टि विषैं संक्रमण द्रव्य संख्यात गुणा कह्या है । बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि कौं द्रव्य तैं अपकर्षण कीया द्रव्य है, सो सर्व मोह द्रव्य का चौईसवां भाग कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक भागहार मात्र है, ताकरि सूक्ष्म कृष्टि करिए है । मिलि करि मोह द्रव्य का चौईसवां भाग कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं, तातैं पांच सैं तरेपण गुणा द्रव्य भया । सो इतने द्रव्य करि सूक्ष्म कृष्टि करिए है, असा तात्पर्य जानना ।

लोहस्स तदियसंगहकिट्टीए हेट्ठदो अवट्ठाणं ।
सुहुमाणं किट्टीणं, कोहस्स य पढमकिट्टिणिभा ।।५६६।।

लोभस्य तृतीयसंग्रहकृष्ट्या अधस्तनतः अवस्थानम् ।
सूक्ष्मानां कृष्टीनां, क्रोधस्य च प्रथमकृष्टिनिभा ।।५६६।।

टीका – तिनि सूक्ष्म कृष्टिनि का लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि के नीचैं अवस्थान है । बहुरि ते सूक्ष्म कृष्टि क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि के समान हो हैं । कैसें ? सो कहिए है—

जैसें अपूर्व स्पर्धकनि के नीचैं अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि है, तैसें बादर कृष्टि के नीचैं अनंत गुणा घटता अनुभाग लीएं सूक्ष्म कृष्टिनि की रचना हो है । बहुरि जैसें क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण या बिना अवशेष बादर कृष्टिनि का जो प्रमाण, तातैं संख्यात गुणा है । तैसें ही सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि बिना अवशेष कृष्टिनि का प्रमाण तैं संख्यात गुणा है । बहुरि जैसें क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि जघन्य कृष्टि तैं लगाय उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत अनंत गुणा अनुभाग क्रम लीएं है, तैसें ही सूक्ष्म कृष्टि भी जघन्य तैं लगाय उत्कृष्ट पर्यंत अनंत गुणा अनुभाग लीएं है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कोहस्स पढमकिट्टी, कोहे छुद्धे दु माणपढमं च ।
माणाछुद्धे मायापढमं मायाए संछुद्धे ॥५६७॥

लोहस्स पढमकिट्टी, आदिमसमयकदसुहुमकिट्टी य ।
अहियकमा पंचपदा, सगसंखेज्जदिमभागेण ॥५६८॥

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिः, क्रोधे क्षुब्धे तु मानप्रथमं च ।
मानक्षुब्धे मायाप्रथमं मायायां संक्षुब्धायाम् ॥५६७॥

लोभस्य प्रथमकृष्टिरादिमसमयकृतसूक्ष्मकृष्टिश्च ।
अधिकक्रमाणि पंचपदानि, स्वकसंख्येयभागेन ॥५६८॥

टीका – प्रथम समय विषैं कीन्ही सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने के अर्थि अल्पबहुत्व कहिए है—

क्रोध की प्रथम संग्रह की अवयव कृष्टि स्तोक है । कृष्टि प्रमाण का चौईसवां भाग तैं तेरह गुणी है । बहुरि क्रोध की तीनों संग्रह कृष्टि मान की के ऊपरि मिलाएं मान की प्रथम संग्रह की अवयव कृष्टि विशेष अधिक हो है । पूर्व राशि कौं त्रिभाग अधिक च्यारि का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक है, सो सोलह गुणी हो है । बहुरि मान की तीनों संग्रह कृष्टि माया के ऊपरि मिलाएं माया की प्रथम संग्रह की अवयव कृष्टि विशेष अधिक है, सो पूर्व राशि कौं त्रिभाग अधिक पांच का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक है, सो तेरह की जायगा उगणीस गुणी हो है । बहुरि माया की तीनों संग्रह कृष्टि लोभ ऊपरि मिलाएं लोभ की प्रथम संग्रह की अवयव कृष्टि विशेष अधिक हो है । सो पूर्व राशि कौं त्रिभाग अधिक छह का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक हो है, सो बाईस गुणी हो है । बहुरि तातैं प्रथम समय विषै कीन्ही सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण विशेष अधिक है । पूर्व राशि कौं ग्यारह का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक हो है, सो चौईस गुणी हो है, असैं पंच स्थान संख्यातवां भाग अधिक क्रम लीएं जानने ।

सुहुमाओ किट्टिओ, पडिसमयमसंखगुणविहीणाओ ।
दव्वमसंखेज्जगुणं, बिदियस्स य लोहचरिमो त्ति ॥५६९॥

सूक्ष्माः कृष्टयः, प्रतिसमयमसंख्यगुणविहीनाः ।
द्रव्यमसंख्येयगुणं, द्वितीयस्य च लोभचरम इति ॥५६९॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सूक्ष्म कृष्टि का प्रथम समय विषैं कीनी ते बहुत हैं। तातैं द्वितीय समय विषैं कीनी अपूर्व सूक्ष्म कृष्टि संख्यात गुणी घाटि हैं। ऐसैं क्रम तै समय समय प्रति करीं नवीन अपूर्व कृष्टि संख्यात गुणी घाटि जाननी। बहुरि सूक्ष्म कृष्टि विषै दिया द्रव्य प्रथम समय विषै स्तोक है। तातैं दूसरा समय विषै संख्यात गुणा है। ऐसैं समय समय प्रति सूक्ष्म कृष्टि विषैं दीया द्रव्य क्रम तैं संख्यात गुणा जानना। सो द्वितीय संग्रह कृष्टि वेदक कालरूप जो सूक्ष्म कृष्टि करने का काल, ताक अंत समय पर्यंत जानना।

दव्वं पढमे समये, देदि हु सुहुमेसणंतभागूणं।
थूलपढमे असंखगुणूणं तत्तो अणंतभागूणं ॥५७०॥

द्रव्यं प्रथमे समये, ददाति हि सूक्ष्मेष्वनंतभागोनं।
स्थूलप्रथमे असंख्यगुणोनं तत अनंतभागोनं ॥५७०॥

टीका – सूक्ष्म कृष्टि करण काल का प्रथम समय विषै सूक्ष्म कृष्टि की जघन्य कृष्टि तैं लगाय अनंतवां भाग घटता क्रम लीएं अर उत्कृष्ट सूक्ष्म कृष्टि तैं प्रथम जघन्य बादर कृष्टि विषैं असंख्यात गुणा घटता अर तातैं द्वितीयादि बादर कृष्टिनि विषैं अनंतवां भाग घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। सो इहाँ विशेष निर्णय के अर्थि व्याख्यान करिए है-सो बादर कृष्टि करण का द्वितीय समय विषैं जो विधान कह्या था, ताकौं स्मरण करि इहां जो विधान कहिए है, ताकौं समझना।

तहां प्रथम आय द्रव्य, व्यय द्रव्य, घात द्रव्यनि का स्वरूप कहिए है–

लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं आय द्रव्य है। बहुरि इतना ही लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषै व्यय द्रव्य हैं। आनुपूर्वी संक्रमण के नियम तैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं आय द्रव्य है नाहीं। बहुरि अपनी अपनी संग्रह की अंत कृष्टि का द्रव्य कौं अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण कौं अपकर्षण भागहार का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र जो अंत विषैं नष्ट करीं ऐसी घात कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं अर विशेष अधिक कीएं घात द्रव्य का प्रमाण हो है। तहां घात कृष्टि संबंधी व्यय द्रव्य सर्व व्यय द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र है। ताकौं घटाएं जो व्यय द्रव्य रह्या, तितना घात द्रव्य तैं ग्रहण करि जिन कृष्टिनि का व्यय द्रव्य भया था, तहां ही दीएं स्वस्थान गोपुच्छ हो है। बहुरि घात कृष्टिनि का प्रमाण

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मात्र जे विशेष, तिनकौं घात कीएं पीछे अवशेष रहीं जे कृष्टि तिन एक एक विषैं देना। तातैं ताकौं अवशेष कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं जो द्रव्य होइ तितना द्रव्य घात द्रव्य तैं ग्रहि करि दीएं परस्थान गोपुच्छ भी होइ है। असैं सर्व कृष्टिनि का एक गोपुच्छ भया।

बहुरि पूर्वोक्त दोय प्रकार द्रव्य दीएं पीछे अवशेष जो घात द्रव्य रह्या, तिस विषैं कीएं पीछे अवशेष रहीं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ का भाग दीएं जो एक खंड मध्यम धन रूप भया, ताकौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र जे विशेष, तिन करि अधिक कीएं जो द्रव्य भया, ताकौं तृतीय संग्रह कृष्टि का अवशेष घात द्रव्य तैं ग्रहि तृतीय संग्रह का जघन्य कृष्टि विषैं दीजिए है। अवशेष द्रव्य विषैं घटता क्रम लीएं अन्य कृष्टिनि विषैं दीजिए है। असैं अपने अपने अवशेष घात द्रव्य कौं दीएं अवशेष घात द्रव्य एक गोपुच्छाकार हो है। असैं एक गोपुच्छाकार तिष्ठती जे कृष्टि तिनि विषैं संक्रमण द्रव्य अर बंध द्रव्य करि निपजीं कृष्टिनि विषैं संक्रमण द्रव्य अर बंध द्रव्य देने का विधान कहिए है—

तहां द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं आय द्रव्य का अभाव है। तातैं घात द्रव्य तैं किछू द्रव्य जुदा राखि इहां कहिए है तैसैं देना। अवशेष कौं पूर्वोक्त प्रकार देना। तहां बादर कृष्टि संबंधी एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर घात कीएं पीछें तृतीय संग्रह की अवशेष रहीं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापैं जो संकलन धन[१] होइ, तितना द्रव्य तृतीय संग्रह कृष्टि का आय द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना। अर जितनी तृतीय संग्रह कृष्टि भईं, तितने विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी अवशेष कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापैं, जो संकलन धन होइ, तितना द्रव्य द्वितीय संग्रह का घात द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना, इनि दोऊनि का नाम अध-स्तन शीर्ष द्रव्य है। बहुरि तृतीय संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य कौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र जो गुण्य, सो एक खंड है। ताकौं तृतीय संग्रह संबंधी कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं जो होइ तितना द्रव्य कौं तृतीय संग्रह के आय द्रव्य तैं ग्रहि स्थापना। अर तिस ही गुण्य कौं द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं जो होइ, तितना द्रव्य कौं द्वितीय संग्रह के घात द्रव्य तैं ग्रहि स्थापना। इनि का नाम मध्यमखंड द्रव्य है। बहुरि उभय द्रव्य

१. अ और ख प्रति में 'धन' शब्द मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

संबंधी एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र उभय द्रव्य के विशेष तिन विषैं अपने एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र घटाएं अवशेष रह्या तितना द्वितीय संग्रह की कृष्टि के घात द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना। यहु वेद्यमान कृष्टि है। तातैं याका बंध नाम भी है। सो घटाया द्रव्य कौं बंध द्रव्य विषैं देइ पूर्ण करेंगे, इहां द्वितीय संग्रह का घात द्रव्य पूर्ण भया। बहुरि एक अधिक द्वितीय संग्रह की जेती कृष्टि भईं तितने विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर संक्रमण द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टि सहित सर्व तृतीय संग्रह कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापैं, तहां संकलन धन मात्र उभय द्रव्य के विशेषनि कौं तृतीय संग्रह के आय द्रव्य तैं ग्रहि स्थापने। इनि दोऊनि का नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि इन तीन तीन प्रकार द्रव्य करि हीन जो तृतीय संग्रह का आय द्रव्य, ताकरि अपूर्व नूतन कृष्टि निपजाइए है, तिनका प्रमाण ल्याइए है—

एक मध्यम खंड अधिक जो तृतीय संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य, तिस प्रमाण द्रव्य करि एक संक्रमण संबंधी अंतर कृष्टि निपजै तौ पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य रहित संक्रमण द्रव्य करि केती नवीन कृष्टि निपजै असैं त्रैराशिक कीएं संक्रमण द्रव्य करि निपजी कृष्टिनि का प्रमाण आवै है। याका भाग तृतीय संग्रह की पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौं दीएं संक्रमण कृष्टिनि के बीचि अंतराल का प्रमाण आवै है, सो संक्रमण कृष्टिनि के प्रमाण का भाग अवशेष संक्रमण द्रव्य कौं दीएं एक खंड होइ। ताकौं संक्रमण कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणें जो द्रव्य भया ताका नाम संक्रमण अंतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है। अब बंध द्रव्य का विभाग कहिए है—

बंध द्रव्य करि निपजीं जे अपूर्व अंतर कृष्टि, तिनि विषैं जो अंतरकृष्टि, तिस तैं लगाय ताके ऊपरि जेती कृष्टि पाइए, तितने विशेष तौ आदि अर बंधांतर कृष्टिनि का अंतराल मात्र विशेष उत्तर अर बंधांतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन मात्र द्रव्य कौं मोहनीय का समयप्रबद्ध तै ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य है। इहां एक मध्यम खंड अधिक तृतीय संग्रह की जघन्य कृष्टि का द्रव्य मात्र द्रव्य तैं एक कृष्टि निपजै तौ किंचित् ऊन मोह का समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य करि केति निपजै ? असैं त्रैराशिक कीएं बंध द्रव्य करि करीं अपूर्व अंतर कृष्टिनि का प्रमाण आवै है। याका भाग किंचिदून सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण, ताकौं दीएं बंधांतर कृष्टिनि के बीचि अंत-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

राल का प्रमाण आवै है । बहुरि बंध द्रव्य तैं पूर्वोक्त बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य अर बंध द्रव्य का अनंतवां भाग मात्र द्रव्य जुदा स्थापि अवशेष रह्या द्रव्य कौं बंधांतर कृष्टि का भाग दीएं एक खंड होइ । अर याकौं बंधांतर कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं पूर्वोक्त द्रव्य होइ, ताका नाम बंधांतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है । बहुरि पूर्वै जो समयप्रबद्ध का एक भाग मात्र द्रव्य जुदा राख्या, ताकौं बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो इहां गच्छ, तिसका एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताकरि गुणी ताका भाग दीएं इहां विशेष का प्रमाण होइ, ताकौं सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ का एक बार संकलन धन मात्र प्रमाण करि गुणैं जो द्रव्य होइ, तितना द्रव्य जुदा स्थाप्या, बंध द्रव्य का अनंतवां भाग मात्र द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम बंध विशेष द्रव्य है । बहुरि बंध द्रव्य का अनंतवां भाग विषैं इतना घटाएं जो अवशेष रह्या, ताकौं सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण का भाग दीएं एक खंड होइ । ताकौं बंध कृष्टिनि का प्रमाण ही करि गुणैं जो द्रव्य होइ, ताका नाम बंध द्रव्य मध्यम खंड है । बहुरि इहां सूक्ष्म कृष्टि विषैं संक्रमण होने योग्य जो द्वितीय, तृतीय संग्रह का द्रव्य अपकर्षण कीया ताका विभाग कहिए है—

सूक्ष्मकृष्टि सम्बन्धी जो द्रव्य, ताकौं प्रथम समय विषैं करीं सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ कौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन दो गुणहानि करि गुणी ताका भाग दीएं एक विशेष होइ, ताकौं सूक्ष्म कृष्टि का प्रमाण मात्र गच्छ का एक बार संकलन धन मात्र प्रमाण करि गुणैं जो होइ, तितना द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी विशेष द्रव्य है । बहुरि याकौं घटाएं जो अवशेष सूक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्य रह्या, ताकौं सूक्ष्म कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीएं एक खंड होइ अर याकौं सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण करि ही गुणैं जो द्रव्य होइ, सो सूक्ष्म कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है । असैं क्रम करि विभाग रूप दिया जो द्रव्य, ताके देने का विधान कहिए है—

सूक्ष्म कृष्टि की जो जघन्य कृष्टि, तिस विषैं बहुत द्रव्य दीजिए है । तहां सूक्ष्म कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य तैं एक खंड अर सूक्ष्म कृष्टि संबंधी विशेष तैं सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत सूक्ष्म कृष्टिनि विषै कृष्टि द्रव्य का अनंतवां भाग मात्र जो एक सूक्ष्म कृष्टि संबंधी विशेष, ताकरि घटता अनुक्रम तैं द्रव्य दीजिए है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

भावार्थ यहु – एक एक तौ सूक्ष्म कृष्टि संबंधी समान खंड अर बीचि होइ गईं कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र सूक्ष्म कृष्टि संबंधी विशेष क्रम तें तिन विषै दीजिए है। इहां सूक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्य समाप्त भया।

बहुरि अंत सूक्ष्म कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तें ताके ऊपरि जघन्य बादर कृष्टि विषैं दीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है। तहां तृतीय संग्रह का च्यारि प्रकार द्रव्य विषैं मध्यम खंड तें अर उभय द्रव्य विशेष तें सर्व बादर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि तहां जघन्य बादर कृष्टि विषैं दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि बादर कृष्टिनि विषैं अनंतवां भाग मात्र विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है।

भावार्थ – द्वितीयादि बादर कृष्टिनि विषैं एकादि एक एक बंधता क्रम लीएं अधस्तन शीर्ष के विशेष अर एकादि एक अधिक करि हीन सर्व बादर कृष्टि प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष अर एक एक मध्यम खंड तहां दीजिए है। सो एक उभय द्रव्य का विशेष विषैं एक अधःस्तन शीर्ष विशेष घटाइए है; इतना इतना क्रम तैं घटता द्रव्य दीजिए है, सो संक्रमण द्रव्य करि निपजीं अपूर्व कृष्टि पर्यंत यहु अनुक्रम जानना। बहुरि जहां संक्रमण द्रव्य तें नवीन अपूर्व कृष्टि निपजीं, तिस विषैं संक्रमणांतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य तें एक खंड उभय द्रव्य विशेष द्रव्य तें भईं कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। सो यहु अपनी नीचली पूर्व कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तें असंख्यात गुणा है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि विषैं भईं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्ष के विशेष एक मध्यम खंड भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है। सो यहु यातैं नीचली अपूर्वकृष्टि विषै दीया द्रव्य तें असंख्यात गुणा घाटि हैं। बहुरि ताके ऊपरि भी पूर्वोक्त प्रकार द्रव्य दीजिए है। बहुरि द्वितीय संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि भईं कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्ष के विशेष एक मध्यम खण्ड भईं कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है। ताके ऊपरि एक एक अधस्तन शीर्ष विशेष बधता अर एक उभय द्रव्य का विशेष घटता क्रम करि दीजिए है।

विशेष इतना – बंध कृष्टि की जघन्य कृष्टि तें लगाय उभय द्रव्य कौं विशेष विषैं एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है। अर तहां बंध द्रव्य तें एक एक मध्यम खंड अर भईं बंध कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र बंध विशेष कौं ग्रहि दीजिए है। असैं क्रम होतें जहां बंध द्रव्य करि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अपूर्व कृष्टि निपजाइए है, तहां बंध द्रव्य तैं बंधांतर कृष्टि संबंधी समान खण्ड द्रव्य तैं एक खण्ड अर बंधांतर कृष्टि संबंधी विशेष द्रव्य तैं भई सर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि करि दीजिए है। सो यहु नीचली कृष्टि विषैं दीया बंध द्रव्य तैं अनंत गुणा है। ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि विषैं तीन प्रकार घात द्रव्य दोय प्रकार बंध द्रव्य दीजिए है। सो इहां दीया बंध द्रव्य अपूर्व अंतर कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं अनंत गुणा घाटि है। ताके ऊपरि बंधरूप पूर्व कृष्टि वा बंध करि निपजीं अपूर्व कृष्टि वा बंध रहित पूर्व कृष्टिनि विषैं द्रव्य देने का विधान पूर्वोक्त प्रकार ही जानना। असैं प्रथम समय विषैं सूक्ष्म कृष्टि संबंधी प्ररूपणा समाप्त भया।

बिदियादिसु समययेसु, अपुव्वाओ पुव्वकिट्टिहेट्ठाओ।
पुव्वाणमंतरेसु वि, अंतरजणिदा असंखगुणा ॥५७१॥

द्वितीयादिषु समयेषु, अपूर्वाः पूर्वकृष्टयधस्तनाः।
पूर्वाणामंतरेष्वपि, अंतरजनिता असंख्यगुणाः ॥५७१॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषैं अपूर्व नवीन सूक्ष्म कृष्टि करिए है। ते पूर्वसमय विषैं कीनी जे सूक्ष्म कृष्टि, तिनके नीचैं करिए है अर तिनके बीचि बीचि करिए है। नीचैं करिए, तिनकौं अधःस्तन कृष्टि कहिए। बीचि करिए, तिनकौं अंतर कृष्टि कहिए। तहां अधःस्तन कृष्टिनि का प्रमाण स्तोक है। तिन तैं अंतर कृष्टिनि का प्रमाण असंख्यात गुणा है।

दव्वगपढमे समये, देदि अपुव्वेसणंतभागूणं।
पुव्वापुव्वपवेसे, असंखभागूणमहियं च ॥५७२॥

द्रव्यगप्रथमे समये, ददाति अपूर्वेष्वनंतभागोनम्।
पूर्वापूर्वप्रवेशे, असंख्यभागोनमधिकं च ॥५७२॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषैं प्रथम समयवत् द्रव्य दीजिए है।

विशेष इतना–सूक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्य कौं अधःस्तन अपूर्व कृष्टिनि विषैं अनंतवां भाग घटता क्रम लीएं बहुरि अपूर्व कृष्टि का प्रवेश विषैं असंख्यातवां भाग मात्र घटता अर अपूर्व कृष्टि का प्रवेश होतैं असंख्यातवां भाग मात्र अधिक द्रव्य दीजिए है। सोई विशेष करि कहिए है—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्वितीयादि समयनि विषैं घात द्रव्य अर संक्रमण द्रव्य का विभाग तौ पूर्ववत् करना। बहुरि सूक्ष्म कृष्टि के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य समय समय प्रति असंख्यात गुणा है। ताका विभाग विषैं विशेष है, सो कहिए है—

तिस अपकर्षण कीया द्रव्य तैं पूर्वसमय विषैं कीनी कृष्टि संबंधी एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर पूर्वसमय विषैं कीनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन धन मात्र द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अधःस्तन शीर्ष विशेष है। बहुरि पूर्वसमय विषैं कीनी कृष्टिनि विषैं जो जघन्य कृष्टि, ताका द्रव्य मात्र एक खंड, ताकौं इस वर्तमान समय विषै कीनी अधःस्तन कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं जो द्रव्य होइ, ताकौं ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अधःस्तन (शीर्ष) अपूर्व कृष्टि सम्बन्धी समान खंड द्रव्य है। बहुरि तिस ही जघन्य पूर्व कृष्टि का द्रव्य मात्र एक खंड कौं वर्तमान समय विषैं कीनी अंतर अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणैं जो द्रव्य होइ ताकौं ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अंतर अपूर्व कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है। बहुरि पूर्व समय अर इस विवक्षित समय सम्बन्धी सर्व सूक्ष्म कृष्टि के द्रव्य कौं पूर्व अपूर्व सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताकौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन दो गुणहानि गुणि, ताका भाग दीएं एक उभय द्रव्य सम्बन्धी विशेष होइ। ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व सूक्ष्म कृष्टि प्रमाण गच्छ का एक बार संकलन धन मात्र प्रमाण करि गुणैं जो द्रव्य होइ, ताकौं ग्रहि, जुदा स्थापना। याका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि ऐसैं कह्या च्यारि प्रकार द्रव्य कौं इस विवक्षित समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य मैं घटाएं अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व सूक्ष्म कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीएं एक खंड होइ, ताकौं तिस भागहार मात्र प्रमाण करि गुणैं जो द्रव्य होइ, ताकौं जुदा स्थापना। याका नाम मध्यम धन खण्ड द्रव्य है। ऐसैं सूक्ष्म कृष्टि के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य के पांच प्रकार विभाग कहे। तिनके सूक्ष्म कृष्टिनि विषैं देने का विधान अर पूर्वोक्त बादर कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्य का तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं देने का विधान अर च्यारि प्रकार बंध द्रव्य, तीन प्रकार घात द्रव्य का अनंतवां भाग का द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं देने का विधान इस विवक्षित समय विषैं निरूपण कीजिए है—

विवक्षित समय विषैं कीनी अधस्तन अपूर्व कृष्टि, तिनकी जघन्य कृष्टि विषैं बहुत द्रव्य दीजिए है। तहां पंच प्रकार सूक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्यनि विषैं अधःस्तन कृष्टि संबंधी समान खण्ड द्रव्य तैं एक खण्ड मध्यम खण्ड द्रव्य तैं एक खण्ड उभय द्रव्य

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विशेष द्रव्य तें सर्व पूर्व अपूर्व (सूक्ष्म)[१] कृष्टि मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि द्वितीय कृष्टि विषें अनंतवां भाग घटता द्रव्य दीजिए है। तहां एक अधस्तन कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड, एक मध्यम खण्ड, एक घाटि सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि मात्र उभय द्रव्य विशेष ग्रहि दीजिए है। असैं ही तृतीयादि अंत पर्यंत अधस्तन अपूर्व कृष्टिनि विषें एक एक उभय द्रव्य का विशेष मात्र घटता क्रम करि दीजिए है।

बहुरि तिस अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं पूर्व समय सम्बन्धी सूक्ष्म कृष्टिनि की जो जघन्य कृष्टि, तिस विषै असंख्यातवां भाग मात्र घटता द्रव्य दीजिए है। तहां मध्यम खंड तैं एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष द्रव्य तैं भई कृष्टिनि करि हीन सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष द्रव्य ग्रहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय पूर्व कृष्टि विषै अनंतवां भाग घटता द्रव्य दीजिए है। तहां अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य तैं एक विशेष मध्यम खण्ड तैं एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष तैं भई कृष्टिनि करि सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। असैं ही तृतीयादि पूर्व कृष्टिनि विषैं एक एक अध:स्तन शीर्ष विशेष बधता अर एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता अर एक एक मध्यम खण्ड समान रूप द्रव्य दीजिए है। यावत् अपूर्व अंतर कृष्टि प्राप्त न होइ तावत् असा क्रम जानना। बहुरि असैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र कृष्टि भएं, तहां अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं ताके ऊपरि नवीन निपजाई जो अपूर्व अंतर कृष्टि तिस विषैं असंख्यातवां भाग मात्र अधिक द्रव्य दीजिए है। तहां अंतर कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड द्रव्य तैं एक खण्ड अर मध्यम खण्ड तैं एक खण्ड तैं एक खण्ड अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्य तैं भई कृष्टिनि करि हीन सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि तातैं ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि, तिस विषैं असंख्यातवां भाग मात्र घटता द्रव्य दीजिए है, तहां अधस्तन शीर्ष विशेष तैं एक घाटि भई पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष अर मध्यम खण्ड तैं एक खण्ड अर उभय द्रव्य विशेष तैं भई सर्व कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक अध:स्तन शीर्ष विशेष बधता एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता एक एक मध्यम खण्ड समान रूप दीजिए है, यावत् अपूर्व अंतर कृष्टि न प्राप्त होइ। बहुरि ताके ऊपरि अपूर्व अंतर कृष्टि विषैं एक अंतर कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड एक मध्यम खण्ड भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र उभय द्रव्य विशेष दीजिए है। सो यहु दीया द्रव्य अपनी नीचली कृष्टिनि विषैं

---

१. 'सूक्ष्म' शब्द अ और ख प्रति में मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

दीया द्रव्य तैं असंख्यातवां भाग मात्र अधिक है । बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि विषैं एक घाटि भईं पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष विशेष एक मध्यम खण्ड भईं सर्व कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीजिए है, सो यहु तिस अपूर्व अंतर कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यातवां भाग मात्र घटता है । ताके ऊपरि पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषैं अैसैं ही अनुक्रम करि द्रव्य का देना जानना । यावत् प्रथम समय कृत सूक्ष्म कृष्टिनि की अंत कृष्टि होइ । बहुरि ताके ऊपरि लोभ की तृतीय बादर संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि, तिस विषैं अंत सूक्ष्म कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घटता दीजिए है । तहां च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्य विषैं मध्यम खण्ड तैं एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष तैं सर्व बादर कृष्टि मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्य देने का अर द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं च्यारि प्रकार बंध द्रव्य, तीन प्रकार घात द्रव्य देने का विधान द्वितीय संग्रह की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत जैसैं प्रथम समय विषैं द्रव्य देने का विधान कह्या तैसैं ही जानना । या प्रकार द्वितीयादि समयनि विषैं द्रव्य देने का विधान जानना ।

पढमादिसु दिस्सकमं, सुहुमेसु अणंतभागहीणकमं ।
बादरकिट्टिपदेसो, असंखगुणिदं तदो हीणं ॥५७३॥

प्रथमादिषु दृश्यक्रमं, सूक्ष्मेष्वनंतभागहीनक्रमं ।
बादरकृष्टिप्रदेशः, असंख्यगुणितस्ततो हीनः ॥५७३॥

टीका – अब दीया द्रव्य वा पूर्व द्रव्य मिलैं कृष्टिनि विषैं देखने में आया अैसा दृश्यमान द्रव्य, ताका क्रम कहिए है ।

प्रथमादि समयनि विषैं जघन्य सूक्ष्म कृष्टि विषैं दृश्यमान द्रव्य बहुत है । ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत सूक्ष्म कृष्टिनि विषैं अनंत गुणा घटता क्रम लीएं दृश्यमान द्रव्य है । एक एक विशेष मात्र घटता है । बहुरि ताके ऊपरि तृतीय संग्रह की बादर जघन्य कृष्टि, ताका प्रवेश होतैं तिस विषैं दृश्यमान द्रव्य अंत सूक्ष्म कृष्टि का दृश्यमान द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है । ताके ऊपरि द्वितीयादि द्वितीय संग्रह की अंत बादर कृष्टि पर्यंत दृश्यमान द्रव्य अनंत गुणा घटता क्रम लीएं एक एक विशेष मात्र घटता है अैसा जानना ।

लोहस्सयतदियादो, सुहुमगदं बिदियदो दु तदियगदं ।
बिदियादो सुहुमगदं, दव्वं संखेज्जगुणिदकमं ॥५७४॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लोभस्य च तृतीयतः, सूक्ष्मगतं द्वितीयस्तु तृतीयगतं ।
द्वितीयतः सूक्ष्मगतं, द्रव्यं संख्येयगुणितक्रमं ।।५७४।।

टीका – लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि तै जो द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परिणम्या सो स्तोक है । तातैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि तैं जो द्रव्य लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि रूप परिणम्या, सो संख्यात गुणा है । तातैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि तैं जो द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परिणम्या, सो संख्यात गुणा है, जातैं लोभ की तृतीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण तैं सूक्ष्म कृष्टि का प्रमाण संख्यात गुणा है ।

किट्टीवेदगपढमे, कोहस्स य बिदियदो दु तदियादो ।
माणस्स य पढमगदो, माणतियादो दु माणपढमगदो ।।५७५।।

मायतियादो लोभस्सादिगदो लोभपढमदो बिदियं ।
तदियं च गदा दव्वा, दसपदमहियकमा होंति ।।५७६।।

कृष्टिवेदकप्रथमे, क्रोधस्य च द्वितीयतस्तु तृतीयतः ।
मानस्य च प्रथमगतं, मानत्रयात् तु मानप्रथमगतः ।।५७५।।

मायात्रिकात् लोभस्यादिगता लोभप्रथमतो द्वितीयं ।
तृतीयं च गतानि द्रव्याणि, दशपदमधिकक्रमाणि भवंति ।।५७६।।

टीका – इहां सूक्ष्म कृष्टिनि विषैं संक्रमण भया द्रव्य के प्रमाण ल्यावने का साधक असा बादर कृष्टि विषैं संक्रमण भया प्रदेशनि का अल्प बहुत्व कहिए है ।

बादर कृष्टि वेदक काल का प्रथम समय विषैं क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि तैं मान को प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया द्रव्य स्तोक है । तातैं क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि तैं मान की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया द्रव्य, विशेष अधिक है । जातैं स्तोक अनुभाग युक्त तृतीय संग्रह विषैं कृष्टिनि का प्रमाण है, सो बहु अनुभाग युक्त द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण तैं विशेष अधिक है, तातैं संक्रमण द्रव्य भी विशेष अधिक जानना । इहां पात्र के अनुसारि अधिकपना जानना । पात्र के अनुसारि कहा ? द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण तैं तृतीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण जैसैं अधिक कह्या, तैसैं ही संक्रमण द्रव्य भी अधिक कहना । सो इहां पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक जानना । बहुरि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तातैं मान की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं माया की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया द्रव्य, विशेष अधिक है। इहां भी पात्रानुसारि क्रोध की तृतीय संग्रह की कृष्टिनि तैं मान की प्रथम संग्रह की कृष्टि जैसै अधिक है तैसैं ही आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक जानना। बहुरि तातैं मान की द्वितीय संग्रह कृष्टि तैं माया की संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया द्रव्य विशेष अधिक है। तातैं मान की तृतीय संग्रह कृष्टि तैं माया की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया द्रव्य विशेष अधिक है, इहां दोऊ जायगा पात्रानुसारि अधिक का प्रमाण पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र है। बहुरि तातैं माया की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक है। इहां पात्रानुसारि विशेष का प्रमाण आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र है। बहुरि तातैं माया की द्वितीय संग्रह तैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक हैं। तातैं माया की तृतीय संग्रह तैं लोभ की प्रथम संग्रह विषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक हैं। इहां दोऊ जायगा विशेष का प्रमाण पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र है। तातैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया प्रदेश समूह विशेष अधिक है। इहां पात्रानुसारि विशेष का प्रमाण आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र है।

इहां प्रश्न – जो अन्य कषाय की संग्रह कृष्टि का द्रव्य अन्य कषाय की संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण होना कह्या, तहां परस्थान संक्रमण विषैं अपने अपने द्रव्य कौं अधः प्रवृत्त भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र द्रव्य संक्रमण हो है, तातैं अन्य कषाय विषैं संक्रमण द्रव्य तैं विशेष अधिक का क्रम कह्या, सो तौ बनै है। बहुरि लोभ की प्रथम संग्रह तैं ताही की द्वितीय संग्रह विषैं संक्रमण भया सो इहां स्वस्थान संक्रमण हो है। सो इहां अपने द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र द्रव्य संक्रमण हो है। अर अधः प्रवृत्त भागहार तैं अपकर्षण भागहार असंख्यात गुणा घटता है, तातैं पूर्वोक्त संक्रमण द्रव्य तैं याका संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा कहौ, विशेष अधिक कैसै कहौ हो ?

ताका समाधान – इहां परिणाम के अतिशय तैं अधः प्रवृत्त भागहार भी अपकर्षण भागहार ही के अनुसारि वर्तै है सो ऐसा विशेष इहां ही संभवै है अन्यत्र सर्वत्र अधः प्रवत्त भागहार तैं अपकर्षण भागहार असंख्यात गुणा घटता ही जानना।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि तातैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक हैं। इहां पात्रानुसारि विशेष का प्रमाण पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र है। असैं दश स्थान अधिक क्रम लीएं जानने।

कोहस्स य पढमादो, माणादी कोधतदियबिदियगदं।
तत्तो संखेज्जगुणं, अहियं संखेज्जसंगुणियं ॥५७७॥

क्रोधस्य च प्रथमात्, मानादौ क्रोधतृतीयद्वितीयगतम्।
ततः संख्येयगुणमधिकं संख्येयसंगुणितम् ॥५७७॥

टीका – बहुरि तिस पूर्वोक्त क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं मान की प्रथम संग्रह विषैं संक्रमण भया द्रव्य संख्यात गुणा है। जातैं लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य तैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं लोभ की प्रथम संग्रह का द्रव्य तेरह गुणा है। बहुरि तातैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया प्रदेश विशेष अधिक हैं। इहां विशेष का प्रमाण पात्रानुसारि पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र है। बहुरि तातैं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि तैं क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण भया प्रदेश समूह असंख्यात गुणा है। यद्यपि इहां पूर्वोक्त तैं पात्र अल्प है, स्तोक कृष्टिनि का प्रमाण है तथापि वेदिये है जो संग्रह कृष्टि ताका द्रव्य है सो ताके अनंतरि जो संग्रह कृष्टि वेदने में आवै तहां संक्रमण होने योग्य औरनि तैं संख्यात गुणा कह्या है; तातैं इहां वेद्यमान क्रोध की प्रथम संग्रह का ताके अनंतरि वेद्यमान द्वितीय संग्रह विषैं संक्रमण भया द्रव्य संख्यात गुणा कह्या है। असैं इस कथन का अवसर उल्लंघि आए तो भी इहां कथन कीया, सो सूक्ष्म कृष्टि का प्रमाण ल्यावने कौं पूर्वैं कथन कीया ताकर्म मिलावने कौं कह्या है। कैसैं ? लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि तैं जो ताकी तृतीय संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण प्रदेश भया, तातैं संख्यात गुणा प्रदेश सूक्ष्म कृष्टि रूप हो है। असैं यह अनुक्रम कह्या, सो इहां ही यह गुणकार की प्रवृत्ति नाहीं भई है। पूर्वैं बादर कृष्टि विषैं भी संख्यात गुणी द्रव्य तैं संक्रमण भया द्रव्य संख्यात गुणा कहा है। असैं क्रोध का द्रव्य तेरह गुणा था, तातैं संक्रमण भया द्रव्य चौदह गुणकार लीएं कह्या था, असैं ही क्रम तैं इहां लोभ की द्वितीय कृष्टि का द्रव्य तेईस गुणा है, तातैं संक्रमण भया द्रव्य चौईस का गुणकार लीएं जानना। या इस अनुक्रम जानने कौं इहां यह कथन कीया है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लोभस्स बिदियकिट्टिं, वेदयमाणस्स जाव पढमठिदी ।
आवलितियमवसेसं, आगच्छदि बिदियदो तदियं ॥५७८॥

लोभस्य द्वितीयकृष्टिं, वेद्यमानस्य यावत् प्रथमस्थितिः ।
आवलित्रिकमवशेषमागच्छति द्वितीयतस्तृतीयं ॥५७८॥

टीका – या प्रकार लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि कौ वेदता जीवकै, ताकी प्रथम स्थिति विषैं यावत् तीन आवली अवशेष रहैं तावत् द्वितीय संग्रह तै तृतीय संग्रह कौं द्रव्य का संक्रमण रूप होइ प्राप्त हो है । सो कहिए है—

लोभ की द्वितीय संग्रह की प्रथम स्थिति विषैं विश्रमणावली, संक्रमणावली, उच्छिष्टावली ए तीन अवशेष रहै तावत् लोभ की द्वितीय संग्रह का द्रव्य, लोभ की तृतीय संग्रह विषैं दीजिए है । जातैं तृतीय संग्रह विषैं संक्रमण भया जो द्रव्य, सो तहां विश्रमणावली पर्यंत तौ तहां विश्राम करि तिष्ठैं, पीछैं संक्रमणावली विषैं सूक्ष्म कृष्टिरूप होइ संक्रमण करैं तब उच्छिष्टावली मात्र प्रथम स्थिति अवशेष रहि जाय, तातैं तीन आवली अवशेष रहैं तावत् द्वितीय संग्रह का द्रव्य, तृतीय संग्रह विषै संक्रमण होना कह्या । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय संग्रह का द्रव्य अपकर्षण संक्रमण करि सूक्ष्म कृष्टि ही विषैं संक्रमण करै है । यावत् दोय आवली अवशेष रहैं तावत् ऐसे जानना । बहुरि तहां आगाल प्रत्यागाल की व्युच्छित्ति करि बहुरि समय घाटि आवली मात्र निषेकनि कौं अधोगलनरूप क्रम तैं भोगि समय अधिक आवली अवशेष राखै है ।

तत्तो सुहुमं गच्छदि, समयाहियआवलीयसेसाए ।
सव्वं तदियं सुहुमे, णव उच्छिट्ठं विहाय बिदियं च ॥५७९॥

ततः सूक्ष्मं गच्छति, समयाधिकावलीशेषायां ।
सर्वं तृतीयं सूक्ष्मे, नवकमुच्छिष्टं विहाय द्वितीयं च ॥५७९॥

टीका – बहुरि तहां द्वितीय संग्रह की प्रथम स्थिति विषैं समय अधिक आवली अवशेष रहैं अनिवृत्तिकरण का अंत समय हो है । तहां लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का तौ सर्व द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि कौ प्राप्त हो है । बहुरि लोभ की द्वितीय संग्रह का द्रव्य विषैं समय अधिक उच्छिष्टावली मात्र निषेक अर समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध ए तौ बादर कृष्टिरूप रहैं हैं । अन्य सर्व द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

रूप द्रव्यार्थिक नय अपेक्षा तो इस समय विषैं परिणमैं है। बहुरि पर्यायार्थिक नय अपेक्षा अगले समय विषैं उच्छिष्टावली मात्र निषेक अर दोय समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध बिना अन्य सर्व द्वितीय संग्रह का द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परिणमैं है, अैसा जानना।

लोभस्स तिघादीणं, ताहे अघादितियाण ठिदिबंधो।
अंतो दु मुहुत्तस्स य, दिवसस्स य होदि वरिसस्स ॥५८०॥

लोभस्य त्रिघातिनां तत्राघातित्रयाणां स्थितिबंधः।
अंतस्तु मुहूर्तस्य च, दिवसस्य च भवति वर्षस्य ॥५८०॥

टीका – तहां अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषैं संज्वलन लोभ का जघन्य स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त मात्र है। इहां ही मोहबंध की व्युच्छित्ति भई। बहुरि तीन घातियानि का एक दिन तैं किछू घाटि अर तीन अघातियानि का एक बंध तैं किंचित् न्यून स्थिति बन्ध हो है।

ताणं पुण ठिदिसंतं, कमेण अंतोमुहुत्तयं होइ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि असंखवस्साणि ॥५८१॥

तेषां पुनः स्थितिसत्त्वं, क्रमेणांतर्मुहूर्तकं भवति।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि असंख्यवर्षाणि ॥५८१॥

टीका – तहां तिनका स्थिति सत्त्व क्रम करि लोभ का अंतर्मुहूर्त, तीन घातियानि का यथायोग्य संख्यात हजार वर्ष मात्र, तीन अघातियनि का यथायोग्य असंख्यात वर्ष मात्र है।

से काले सुहुमगुणं, पडिवज्जदि सुहुमकिट्टिठिदिखंडं।
आणायदि तद्दव्वं, उक्कट्टिय कुणदि गुणसेढिं ॥५८२॥

स्वे काले सूक्ष्मगुणं, प्रतिपद्यते सूक्ष्मकृष्टिस्थितिखंडं।
आनयति तद्द्रव्यं, अपकृष्य करोति गुणश्रेणिं ॥५८२॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का अंत समय के अनंतरि सूक्ष्मकृष्टिनि कौं वेदतौं संतौ अपने काल विषैं सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान कौं प्राप्त हो है। इहां ताका प्रथम समय विषैं लोभ की सूक्ष्मकृष्टिनि की अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति है, ताके संख्यातवें भाग

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मात्र स्थिति कांडक आयाम लांछित हो है। बहुरि मोह का कृष्टि कौं प्राप्त भया अनुभाग, ताका तौ अनुसमयापवर्तन अर ज्ञानावरणादिकनि का स्थितिकांडक घात वा अनुभाग कांडक घात सो पूर्वोक्तवत् वर्तै है। बहुरि तिस समय विषैं द्रव्य निक्षेपण का विधान कहिए है–

सूक्ष्मकृष्टि संबंधी स्थिति विषैं प्राप्त जो मोह का सर्वद्रव्य, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग अपकर्षण करि गुणश्रेणी करै है।

गुणसेढि अंतरट्ठिदि, बिदियट्ठिदि इदि हवंति पव्वतिया।
सुहुमगुणादो अहिया, अवट्ठिदुदयादि गुणसेढी ॥५८३॥

गुणश्रेणिरंतरस्थितिः, द्वितीयस्थितिरिति भवंति पर्वत्रयाणि।
सूक्ष्मगुणतोऽधिका, अवस्थितोदयादि गुणश्रेणिः ॥५८३॥

टीका – गुणश्रेणी, अंतर स्थिति, द्वितीय स्थिति ए तीन पर्व हैं। अपकर्षण कीया हुआ द्रव्य इन तीन विषैं विभाग करि दीजिए है। इहां यावत् अपकर्षण कीया द्रव्य कौं असंख्यात गुणा क्रम लीएं दीजिए है, ताका नाम गुणश्रेणी है। बहुरि ताके ऊपरिवर्ती जिनि निषेकनि का पूर्वैं अभाव कीया था, तिनका प्रमाणरूप अंतर स्थिति है। ताके उपरिवर्ती अवशेष सर्वस्थिति, ताका नाम द्वितीय स्थिति है। तहां सूक्ष्म सांपराय का जो काल तातैं किछू विशेष करि अधिक है, तौ भी इहां संभवता ज्ञाना-वरणादिकनि का गुणश्रेणी आयाम तैं अन्तर्मुहूर्त मात्र घटता असा इहां गुणश्रेणी है, सो यहु उदयादि अवस्थित है। उदयरूप जो वर्तमान समय, तातैं लगाय यहु पाइए है। पूर्ववत् उदयावली भए पीछैं नाहीं है, तातैं उदयादि कहिए है। बहुरि अवस्थिति प्रमाण लीए है। पूर्व गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषैं एक एक समय व्यतीत होतैं गुणश्रेणी आयाम विषैं घटता होता था, अब एक एक समय व्यतीत होतैं ताके अनंतरवर्ती अंतरायाम का एक एक समय मिलि गुणश्रेणी आयाम का जेता का तेता रहै है, तातैं अवस्थित कहिए।

उक्कट्टिदइगिभागं, गुणसेढीए असंखबहुभागं।
अंतरहिद बिदियठिदी, संखसलागा हि अवहरिया ॥५८४॥

अपकर्षितैकभागं, गुणश्रेण्यामसंख्यबहुभागम्।
अंतरहिते द्वितीयस्थितिः, संख्यशलाका हि अपहरिताः ॥५८४॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गुणिय चउरादिखंडे, अंतरसयलट्ठिदिम्हि णिक्खिवदि ।
सेसबहुभागमावलिहीणे बिदियट्ठिदीए हु ॥५८५॥

गुणित्वा चतुरादिखंडे अंतरसकलस्थितौ निक्षिपति ।
शेषबहुभागमावलिहीने द्वितीयस्थितौ हि ॥५८५॥

टीका– अपकर्षण कीया जो द्रव्य ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र असंख्यात का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौं गुणश्रेणी आयाम विषैं दीजिए है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं अंतर स्थिति का भाग द्वितीय स्थिति कौं दीएं जो संख्यात प्रमाण लीएं एक शलाका का प्रमाण आवै, ताका भाग दीजिए तहां एक भाग कौं संदृष्टि अपेक्षा च्यारि करि गुणिय, इतना द्रव्य अंतर स्थिति विषैं दीजिए है । बहुरि अवशेष सर्व द्रव्य सो अंत विषैं अतिस्थापनावली करि हीन जो द्वितीय स्थिति, तींहि विषैं दीजिए है । सोई दिखाइए है–

अंतर स्थिति प्रमाण सर्व तैं स्तोक सो संदृष्टि करि चौगुणा अंतर्मुहूर्त मात्र बहुरि तातैं स्थितिकांडकायाम का प्रमाण संख्यात गुणा, सो संदृष्टि करि सोलह गुणा अंतर्मुहूर्त मात्र बहुरि तातैं स्थिति कांडक के नीचैं जो अवशेष स्थिति रहै, ताका प्रमाण संख्यात गुणा, सो संदृष्टि करि चौसठि गुणा अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति कांडकायाम अर अवशेष स्थिति जोडैं सर्व द्वितीय स्थिति का प्रमाण होइ, सो असी गुणा अंतर्मुहूर्त मात्र यहाँ अंतर स्थिति कांडकायाम का भाग द्वितीय स्थिति आयाम कौं दीएं संदृष्टि करि बीस पाए, सो असा संख्यात प्रमाण लीएं जो शलाका, ताका भाग असंख्यात बहुभाग मात्र अपकर्षण द्रव्य कौं दीएं, तहां एक खंड कौं अंतर स्थिति विषैं देना कहिए, तौ अंतर स्थिति का अंत निषेक विषै दीया द्रव्य तैं द्वितीय स्थिति विषैं दीया द्रव्य किंचित् ऊन होइ, अर दोय खण्ड देना कहिए तौ किंचित् न्यून त्रिभाग मात्र होइ । असैं क्रम करि यथायोग्य संख्यात खंड ग्रहि अंतर स्थिति विषैं दीजिए है । सो यहु अपकर्षण कीया सर्वद्रव्य के संख्यातवें भाग मात्र होइ । संदृष्टि करि तिस संख्यात बहुभाग मात्र द्रव्य कौं बीस का भाग देइ च्यारि करि गुणैं अंतर स्थिति विषै दीया द्रव्य का प्रमाण आवै है । बहुरि तिस असंख्यात बहुभाग मात्र द्रव्य विषैं इतना घटाएं जो अवशेष रहा, सो द्वितीय स्थिति विषैं अंत विषैं अतिस्थापनावली छोडि सर्वत्र दीजिए है । संदृष्टि करि तिस असंख्यात बहुभाग मात्र द्रव्य कौं बीस का भाग देइ, तहां सोलह भाग मात्र द्रव्य द्वितीय स्थिति विषैं दीजिए है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु।
हीणकमं संखेज्जगुणूणं हीणक्कमं तत्तो ॥५८६॥

अंतरप्रथमस्थित्यंतं, असंख्यगुणितक्रमेण दीयते हि।
हीनक्रमं संख्येयगुणोनं हीनक्रमं ततः ॥५८६॥

टीका – अंतरायाम की प्रथम स्थिति जो प्रथम निषेक, तहां पर्यंत तौ असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि हीन क्रम लीएं संख्यात गुणा घटता बहुरि हीन क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। सोई कहिए—

गुणश्रेणी आयाम का प्रथम निषेक विषैं दीया द्रव्य की एक शलाका तातैं द्वितीय निषेक विषैं दीया द्रव्य की शलाका पल्य की असंख्यातवां भाग गुणी है। अैसैं क्रम तैं गुणकार लीएं अंत निषेक पर्यंत जेती शलाका होइ, तिनका जोड दीएं जो प्रमाण होइ, ताका भाग गुणश्रेणी विषैं देने योग्य पूर्वोक्त द्रव्य कौं देइ, तहां एक भाग कौं अपनी अपनी शलाका प्रमाण करि गुणैं प्रथमादि निषेकनि विषैं द्रव्य देने का प्रमाण आवै है। अंक संदृष्टि करि जैसैं एक तैं लगाय चौगुणी चौगुणी शलाका च्यारि निषेकनि विषैं स्थापि १।४।१६।६४। जोडैं पिचासी होइ। ताका भाग द्रव्य कौं देइ; एक, च्यारि आदि करि गुणैं प्रथमादि निषेकनि विषैं दीया द्रव्य का प्रमाण आवै है। इहां गुणकार विषैं जोड़ देने का प्रमाण करणसूत्र यह जानना—

पदमितगुणहतिगुणितप्रभेदः स्याद्गुणधनं तदा तदा द्व्यूनं।
एकोनगुणविभक्तं गुणसंकलितं विजानीयात् ॥१॥

गच्छ मात्र गुणकारनि कौं परस्पर गुणैं गुणधन होइ। तहां प्रथम स्थान घटाइ अवशेष कौं एक घाटि गुणकार का भाग दीएं गुणकार विषैं संकलन धन आवै है। जैसैं इहां संदृष्टि विषैं गच्छ च्यारि, गुणकार च्यारि सो च्यारि जायगा च्यारि च्यारि मांडि परस्पर गुणैं दोय सैं छप्पन होइ, तामैं आदि एक घटाइ अवशेष कौं एक घाटि गुणकार तीन, ताका भाग दीएं जोड पिच्यासी हो है। सो अैसैं वर्तमान उदयरूप गुणश्रेणी का प्रथम निषेक तैं लगाय गुणश्रेणी शीर्ष पर्यंत दीजिए है। गुणश्रेणी का अंत का निषेक कौं गुणश्रेणी शीर्ष कहिए है। सो सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषैं तो इहां कह्या गुणश्रेणी आयाम, ताका जो अन्त निषेक सोई गुणश्रेणी शीर्ष है। बहुरि द्वितीयादि समयनि विषैं एक एक समय व्यतीत होतैं जो अंतरायाम का प्रथ-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

मादि निषेकं गुणश्रेणी विषैं (आणि) मिल्या, सो गुणश्रेणी शीर्ष है। जातैं इहां अवस्थित गुणश्रेणी आयाम है। बहुरि गुणश्रेणी के ऊपरिवर्ती जो अंतरायाम के निषेक, तिनि विषैं द्रव्य देने का विधान कहिए है-

अन्तरायाम विषैं देने योग्य जो पूर्वोक्त द्रव्य, ताकौं अन्तरायाम मात्र गच्छ का भाग दीएं मध्यम धन होइ। तींहि विषैं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडैं, जो होइ तितना द्रव्य अन्तरायाम का प्रथम निषेक विषैं दीजिए है, सो यहु द्रव्य गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। तातैं सूत्र विषैं अतरायाम का प्रथम निषेक पर्यंत असंख्यात गुणा देय द्रव्य कह्या। बहुरि ताके ऊपरि अन्तरायाम के द्वितीयादि निषेकनि विषैं एक एक विशेष करि घटता क्रम लीएं दव्य दीजिए है, सो यावत् अन्तरायाम का अंत निषेक होइ तावत् ऐसा क्रम जानना।

अब द्वितीय स्थिति निषेकनि विषैं द्रव्य देने का विधान कहिए है—

द्वितीय स्थिति विषैं देने योग्य जो पूर्वोक्त द्रव्य, ताकौं आवली रहित द्वितीय स्थिति का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीएं मध्य धन होइ। यामै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडैं जो होइ, तितना द्रव्य द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषैं दीजिए है। सो यहु दीया द्रव्य अंतरायाम का अंत निषेक विषै दीया द्रव्य तैं संख्यात गुणा घटता है। तातैं सूत्र विषैं इहां दीया द्रव्य संख्यात गुणा घटता कह्या। बहुरि ताके उपरि द्वितीय स्थिति के द्वितीयादि निषेकनि विषैं एक-एक विशेष घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है। ऐसें देयद्रव्य का विधान कह्या।

अंतरपढमठिदित्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु।
हीणकमेण असंखेज्जेण, गुणं तो विहीणकमं ॥५८७॥

अंतरप्रथमस्थित्यंतं च, असंख्यगुणितक्रमेण दृश्यते हि।
हीनक्रमेण असंख्येयेन, गुणमतो विहीनक्रमम् ॥५८७॥

टीका – पूर्व द्रव्य वा दीया द्रव्य मिलि जो दृश्यमान होइ, ताका विधान कहिए है। वर्तमान समय संबंधी निषेक विषैं दृश्यमान द्रव्य स्तोक है, तातैं अंतरायाम का प्रथम निषेक पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं है। बहुरि ताके ऊपरि अंतरायाम का अंत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं है। इहां पर्यंत देय द्रव्य का जैसें क्रम कह्या तैसें ही दृश्यमान द्रव्य का भी क्रम जानना। बहुरि तातैं ताके उपरि द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक का दृश्यमान द्रव्य असंख्यात गुणा है। बहुरि ताके

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

ऊपरि ताका अंत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दृश्यमान द्रव्य है। याप्रकार सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तैं लगाय प्रथम स्थिति कांडक का घात यावत् न होइ निवरै तावत् अैसा क्रम जानना। विशेष इतना अपकर्षण कीया द्रव्य का प्रमाण समय समय असंख्यात गुणा जानना।

तहां प्रथम कांडक की अंत फालि के द्रव्य का प्रमाण ल्यावने निमित्त कहिए है—

कंडयगुणचरिमठिदी, सविसेसा चरिमफालिया तस्स।
संखेज्जभागमंतरठिदिम्हि सव्वे तु बहुभागं ॥५८८॥

कांडकगुणचरमस्थितिः, सविशेषा चरमस्फालिका तस्य।
संख्येयभागमंतरस्थितौ सर्वायां तु बहुभागम् ॥५८८॥

टीका – कांडकायाम करि गुणित जो विशेष सहित अंतस्थिति, तीहिं प्रमाण अंत फालि का द्रव्य है। ताका संख्यातवां भाग तौ अंतरस्थिति विषैं, बहुभाग सर्वस्थिति विषैं दीजिए है, सोइ कहिए है—

द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषैं एक घाटि द्वितीय स्थिति आयाम मात्र विशेष घटाएं, ताका अंत निषेक का द्रव्य होइ तिसतैं लगाय नीचे के कांडक आयाम मात्र निषेकनि का द्रव्य अंत फालि विषैं ग्रहण करिए है। तातैं तिस अंत निषेक के द्रव्य कौं जो कांडक आयाम, सोई फालि का आयाम ताकरि गुणैं तहां नीचले निषेकनि विषैं जे विशेष अधिक पाइए हैं, तिनकौं अधिक कीएं अंत फालि के सर्व द्रव्य का प्रमाण हो है, यामें नीचले निषेकनि का अपकर्षण कीया जो द्रव्य, ताकौं जोडैं जो द्रव्य होइ, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ एक भाग कौं गुणश्रेणी आयाम विषैं दीएं पीछैं अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताके देने का विधान कहिए हैं–

अंतरायाम का भाग फालि के आयाम कौं दीएं जो संख्यात मात्र प्रमाण होइ, ताका भाग तिस अवशेष द्रव्य कौं दीएं जो एक खंड होइ, तामै पूर्वैं जो अंतरस्थिति विषैं द्रव्य दीया था, ताकौं घटाय अवशेष को अंगीकार करि, बहुरि इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष द्रव्य रह्या, ताकौं कांडक के नीचैं अवशेष स्थिति जो पाइए, ताकौं अंतरायाम का भाग दीएं जो संख्यात का प्रमाण आवै, तामैं एक अधिक करि, ताका भाग दीएं जो एक खंड का प्रमाण होइ, ताकौं पूर्वैं अंगीकार किया द्रव्य विषैं जोडैं जेता होइ तितना द्रव्य अंतरायाम विषैं पूर्वोक्त प्रकार गोपुच्छ आकार करि चय

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घटता क्रम लीएं देना। बहुरि तिस बहुभाग मात्र द्रव्य विषैं इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष रह्या, ताकौं द्वितीय स्थिति विषैं पूर्वोक्त प्रकार गोपुच्छ आकार करि चय घटता क्रम लीएं देना। तहां अंतरस्थिति का अंत निषेक विषैं दीया द्रव्य तैं द्वितीय स्थिति का आदि निषेक विषैं दीया द्रव्य संख्यात गुणा घटता जानना। असैं ही अंत फालि का द्रव्य का संख्यातवां भाग अंतरायाम विषैं बहुभाग द्वितीय स्थिति विषैं देने का विधान जानना। इहां संदृष्टि विषैं संख्यात की सहनानी च्यारि जानि कथन समझना। इहां इतना जानना—

जो कांडक विषैं स्थिति घटाइए, तिसके द्रव्य कौं नीचले निषेकनि विषैं देने के अर्थि समय समय जेता ग्रहण करिए सो तौ फालि द्रव्य कहिए। अर गुणश्रेणी आदि के अर्थि जो सर्व स्थिति के द्रव्य को अपकर्षण करि ग्रहिए, सो अपकृष्टि द्रव्य कहिए है। तहां कांडक की प्रथमादि फालि पतन समय विषैं तौ अपकृष्टि द्रव्य बहुत है। फालि द्रव्य स्तोक है, तातैं अपकृष्टि द्रव्य ही का मुख्यपनैं देने का विधान कह्या, बहुरि अंत फालि विषैं फालि द्रव्य बहुत है। अपकृष्टि द्रव्य स्तोक है, तातैं फालि द्रव्य विषैं अवशेष रही स्थिति का अपकृष्टि द्रव्य कौं साधिक करि द्रव्य देने का विधान कह्या है। या प्रकार प्रथम कांडक काल संपूर्ण होतैं अंतर पूरण भया। जिनि बीचि के निषेकनि का अभाव भया था, तिनका सद्भाव भया तब अंतर पूरण होने करि गुणश्रेणी आयाम बिना ऊपरि के सर्व निषेकनि विषै एक गोपुच्छ भया, असैं सूक्ष्म सांपराय काल का प्रथम समय तैं लगाय प्रथम कांडक की अंत फालि पतन पर्यंत तौ तीन स्थाननि विषैं द्रव्य देने का विधान समान रूप कह्या।

अब द्वितीयादि कांडकनि विषैं देयद्रव्य दृश्यद्रव्य का विधान कहिए है—

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु।
हीणं तु मोहबिदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति ॥५८६॥

अंतरप्रथमस्थितिरिति च, असंख्यगुणितक्रमेण दीयते हि।
हीनं तु मोहद्वितीयस्थितिकांडकतो द्विघात इति ॥५८६॥

टीका – मोह की द्वितीय स्थिति कांडकघात तैं लगाय द्विचरम कांडकघात पर्यंत कांडक करि गृहीत स्थिति तैं नीचैं अर उदयावली तैं उपरि जे निषेक, तिनिका द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, तहां एक भाग कौं पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणी

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

आयाम विषैं प्रथम उदयनि निषेक विषैं तौ स्तोक अर द्वितीयादि निषेकनि विषैं गुणश्रेणी शीर्ष पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं गुणश्रेणी तैं ऊपरि की अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति मात्र जो गच्छ ताका भाग देइ तहां एक खंड विषैं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष मिलाए जो द्रव्य होइ, तितना गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपरि जो निषेक, तीहिं विषैं दीजिए है। सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। ऐसैं अंतर का प्रथम निषेक पर्यंत तौ असंख्यात गुणा क्रम करि द्रव्य दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। सो यावत् अतिस्थापनावली प्राप्त होइ तावत् ऐसा क्रम जानना। यहां प्रथम स्थिति कांडक काल का अंत समय विषैं ही अंतर है, सो पूरण भया, तातैं अंतरायाम विषैं जुदा द्रव्य देने का विधान न कह्या।

बहुरि सर्वस्थिति कांडकनि विषैं अंत फालि पर्यंत जो अपकृष्ट द्रव्य है, सो तौ सकल द्रव्य के असंख्यातवें भाग मात्र जानना। बहुरि अंत फालि का पतन समय विषैं कांडक स्थिति तैं आयाम जो फालि द्रव्य है, सो सर्व द्रव्य के संख्यातवें भाग मात्र जानना।

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु।
हीणं तु मोहबिदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति ॥५९०॥

अंतरप्रथमस्थितिरिति च, असंख्यगुणितक्रमेण दृश्यते हि।
हीनं तु मोहद्वितीयस्थितिकांडकतो द्विघातांतम् ॥५९०॥

टीका – मोह का द्वितीय स्थिति कांडक घात तैं लगाय द्विचरम कांडक घात पर्यंत दृश्यमान द्रव्य गुणश्रेणी का प्रथम निषेक विषैं स्तोक है, तातैं गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपरि जो अंतरायाम का प्रथम निषेक तहां पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं है। ताके ऊपरि अंत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दृश्यमान द्रव्य है, जातैं प्रथम कांडक की अंत फालि का पतन समय विषैं गुणश्रेणी तैं ऊपरि सर्व स्थिति का एक गोपुच्छ हो है।

पढमगुणसेढिसीसं, पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं।
उवरिमसमये दिस्सं, विसेसअहियं हवे सीसे[1] ॥५९१॥

१–पं. फूलचंदजी कृत अर्थ इस प्रकार है–इसप्रकार प्रथम गुणश्रेणी शीर्ष तक जानना चाहिए। गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपर पूर्व के द्रव्य से उपरिम समय में असंख्यात गुणा दृश्यद्रव्य है। आगें मोहनीय के प्राप्त होने तक विशेष हीन प्रदेश पुंज दिखाई देता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रथमगुणश्रेणिशीर्षं पूर्वस्मात् असंख्यसंगुणितं ।
उपरिमसमये दृश्यं, विशेषाधिकं भवेत् शीर्षे ।।५९१।।

टीका – प्रथम समय विषैं जो गुणश्रेणी शीर्ष है, सोई गाथा का अर्थ की जायगा चाहिए ।

सुहुमद्धादो अहिया, गुणसेढी अंतरं तु तत्तो दु ।
पढमे खंडं पढमे संतो मोहस्स संखगुणिदकमा ।।५९२।।

सूक्ष्माद्धातः अधिका, गुणश्रेणि अंतरं तु ततस्तु ।
प्रथमं खंडं प्रथमे, सत्त्वं मोहस्य संख्यगुणितक्रमं ।।५९२।।

टीका – अंतर्मुहूर्त मात्र जो सूक्ष्मसांपराय का काल, तातैं ताही का असंख्यातवां भाग करि अधिक सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषैं मोह की गुणश्रेणी का आयाम है । तातैं अंतरायाम संख्यात गुणा है । तातैं सूक्ष्म सांपराय के मोह का प्रथम स्थितिकांडक आयाम संख्यात गुणा है । तातैं सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषै मोह का स्थितिसत्त्व संख्यात गुणा है ।

एदेणप्पाबहुगविधाणेण बिदीयखंडयादीसु ।
गुणसेढिमुज्झियेया, गोपुच्छा होदि सुहुमम्हि ।।५९३।।

एतेनाल्पबहुकविधानेन द्वितीयकांडकादिषु ।
गुणश्रेणिमुज्झित्वा, एकं गोपुच्छं भवति सूक्ष्मे ।।५९३।।

टीका – इस अल्प-बहुत्व विधान करि सूक्ष्मसांपराय विषैं द्वितीय आदि स्थिति कांडकनि का काल विषैं गुणश्रेणी कौं छोडि, ताके उपरिवर्ती सर्व स्थिति का एक गोपुच्छ हो है । कैसें ? सो कहिए है—

इहां अंतरायाम तैं प्रथम स्थिति कांडकायाम संख्यात गुणा कह्या । तातैं प्रथम स्थिति कांडक की जो अंत फालि, ताका द्रव्य विषैं अंतरायाम विषैं देने योग्य गोपुच्छ रूप द्रव्य कौं अंतरायाम विषैं देइ द्वितीय स्थिति कैं अर इस अंतरायाम कैं एक गोपुच्छ कीया जो प्रथम स्थिति कांडक आयाम तैं अंतरायाम बहुत होता तो तहां अंतरायाम पूर्ण न होता तब अंतर स्थिति कैं अर द्वितीय स्थिति कैं एक गोपुच्छ न होता । सो इहां अंतरायाम तैं प्रथम स्थिति कांडकायाम बहुत कह्या, तातैं अंतरायाम कैं अर द्वितीय स्थिति कैं एक गोपुच्छ प्रथम स्थितिकांडक की अंत फालि का पतन समय विषैं ही भया । जहां विशेष घटता क्रम लीएं होइ, तहां गोपुच्छ संज्ञा है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सुहुमाणं किट्टीणं, हेट्ठा अणुदिण्णगा हु थोवाओ ।
उवरिं तु विसेसहिया, मज्झे उदया असंखगुणा ।।५६४।।

सूक्ष्माणां कृष्टीनामधस्तना अनुदीर्णका हि स्तोकाः ।
ऊपरि तु विशेषाधिका, मध्ये उदया असंख्यगुणाः ।।५६४।।

टीका – सूक्ष्मसांपराय विषैं जे सूक्ष्म कृष्टि हैं, तिनि विषैं जे जघन्य कृष्टि आदि नीचै की कृष्टि उदय रूप न हो हैं । तिनिका प्रमाण स्तोक है । बहुरि यातैं याही कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र करि अधिक जे अंत कृष्टि तैं लगाय ऊपरली कृष्टि उदय रूप न होइ, तिनिका प्रमाण है । बहुरि यातैं पल्य का असंख्यातवां भाग गुणा जे बीचि का कृष्टि उदय रूप हो हैं, तिनिका प्रमाण है । इहां सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं बहुभाग मात्र बीचि की उदय कृष्टिनि का प्रमाण है । एक भाग कौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पांच का भाग दीएं दोय भाग मात्र नीचली, तीन भाग मात्र ऊपरली अनुदय कृष्टिनि का प्रमाण है । यहां जे अनुदयरूप कृष्टि कहीं, ते बीचि की कृष्टि रूप परिणमि उदय हो है, असा जानना ।

सुहुमे संखसहस्से, खंडे तीदे वसाणखंडेण ।
आगायदि गुणसेढी, आगादो संखभागे च ।।५६५।।

सूक्ष्मे संख्यसहस्रे, खंडेऽतीतेऽवसानखंडेन ।
आगाप्यते गुणश्रेणी, अग्रतः संख्यभागे च ।।५६५।।

टीका – पूर्वोक्त क्रम करि सूक्ष्मसांपराय विषैं ताका काल का संख्यात बहु-भाग गएं संख्यातवां भाग अवशेष रहैं संख्यात हजार स्थिति कांडक व्यतीत होतैं अवसान खंड जो अंत का स्थिति कांडक, ताकरि पूर्व गुणश्रेणी आयाम के संख्यातवें भाग मात्र आयाम विषैं गुणश्रेणी करै है । इहां तैं पहलैं सर्व सूक्ष्मसांपराय काल तैं साधिक अवस्थित गुणश्रेणी आयाम था, अब जेता अवशेष सूक्ष्म सांपराय का काल रह्या, तितना गुणश्रेणी आयाम जानना ।

एत्तो सुहुमंतो त्ति य, दिज्जस्स य दिस्समाणगस्स कमो ।
सम्मत्तचरिमखंडे, तक्कदिकज्जे वि उत्तं च ।।५६६।।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

इतः सूक्ष्मांत इति च, देयस्य च दृश्यमानस्य क्रमः ।
सम्यक्त्वचरमखंडे, तत्कृतकार्येऽपि उक्तमिव ॥५६६॥

टीका – इहां तैं लगाय सूक्ष्म सांपराय का अंत पर्यंत देयद्रव्य अर दृश्यमान द्रव्य का क्रम है । जैसें क्षायिक सम्यक्त्व विधान विषैं सम्यक्त्व मोहनीय का अंत स्थिति कांडक विषैं वा ताका कृतकृत्यपना विषैं कह्या था तैसें ही जानना । सो कहिए है—

इहां सर्व मोह की स्थिति विषैं सूक्ष्म सांपराय का जितना काल अवशेष रह्या तितनी स्थिति बिना अवशेष सर्व स्थिति का घात अंत कांडक करि कीजिए है । तहां इस कांडक की स्थिति के निषेकनि का द्रव्य विषैं जो द्रव्य अंत कांडकोत्करण काल का प्रथम समय विषैं ग्रह्या, ताकौं प्रथम फालि कहिए है । ताके देने का विधान कहिए है —

प्रथम फालि द्रव्य कौं अपकर्षण करि ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग मात्र द्रव्य कौं इहां सम्बन्धी सूक्ष्मसांपराय काल का अंत समय पर्यंत तौ गुणश्रेणी आयामरूप प्रथम पर्व, तिस विषैं दीजिए है । तहां तिसके उदय रूप प्रथम निषेक विषै स्तोक, तातैं द्वितीयादि निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है । तहां सर्व गुणकार शलाका के जोड का भाग तिस द्रव्य कौं देइ अपनी अपनी गुणकार शलाका करि गुणैं निषेकनि विषैं द्रव्य देने का प्रमाण आवै है । इहां सूक्ष्मसांपराय का जो अन्त समय, ताका नाम गुणश्रेणी शीर्ष है । बहुरि अवशेष एक भाग मात्र जो द्रव्य, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग मात्र द्रव्य कौं तिस गुणश्रेणी शीर्ष तैं उपरि पहलैं जो गुणश्रेणी आयाम था ताका शीर्ष पर्यंत जो द्वितीय पर्व, तिस विषैं दीजिए है । तहां तिस द्रव्य कौं द्वितीय पर्व मात्र गच्छ का भाग देइ तहां एक भाग विषैं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडैं गुणश्रेणी शीर्ष के अनंतरि जो निषेक, तीहिं विषैं दीया द्रव्य का प्रमाण आवै है । सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घाटि है, ताके ऊपरि ताके द्वितीयादि निषेकनि विषैं चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है । बहुरि अवशेष एक भाग मात्र द्रव्य रह्या, ताकौं द्वितीय पर्व के ऊपरि जो सर्वस्थिति, ताका अंत विषैं अतिस्थापनावली छोडि सर्व निषेकरूप जो तृतीय पर्व, तिस विषैं दीजिए है । तहां तिस द्रव्य कौं तृतीय पर्व मात्र गच्छ का भाग देइ तहां एक भाग विषैं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडैं जो होइ तितना द्रव्य पुरा-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तन गुणश्रेणी का शीर्ष के अनंतरिवर्ती जो निषेक, तिस विषैं दीजिए है। सो यहु पुरातन गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा घाटि है। बहुरि ताके ऊपरि चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। असैं अंत कांडक की प्रथम फालि पतन समय विषैं द्रव्य देने का विधान कह्या। याही प्रकार अंत कांडक की द्विचरम फालि पतन पर्यंत द्रव्य देने का विधान जानना। बहुरि अंत कांडक की अंत फालि के द्रव्य का विधान कहिए है–

किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र अंत फालि का द्रव्य है। ताकौं असंख्यात गुणा पल्य का वर्गमूल मात्र पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौं वर्तमान उदयरूप जो समय, तातैं लगाय सूक्ष्मसांपराय का द्विचरम समय पर्यंत जो प्रथम पर्व, तिस विषैं दीजिए है। तहां प्रथम निषेक (पर्व)[1] विषैं स्तोक, द्वितीयादि निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। तहां सर्व गुणकार शलाकानि के जोड का भाग द्रव्य कौं देइ अपनी अपनी गुणकार शलाका करि गुणें निषेकनि विषैं देने योग्य द्रव्य का प्रमाण आवै है। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं सूक्ष्मसांपराय का अंत समय संबंधी निषेकरूप जो द्वितीय पर्व, तिस विषैं दीजिए है। यहु द्विचरम समय विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात पल्य वर्गमूल करि गुणित जानना। अैसें देयद्रव्य का विधान कह्या। दृश्यमान द्रव्य का विधान भी यथासंभव जानना।

उक्किण्णे अवसाणे, खंडे मोहस्स णत्थि ठिदिघादो।
ठिदिसत्तं मोहस्स य, सुहुमद्धासेसपरिमाणं ॥५६७॥

उत्कीर्णेऽवसाने, खंडे मोहस्य नास्ति स्थितिघातः।
स्थितिसत्त्वं मोहस्य च, सूक्ष्माद्धाशेषपरिमाणं ॥५६७॥

टीका – या प्रकार मोहराजा का मस्तक समान जो लोभ का अंत कांडक, ताका घात करते संतैं अब मोह का स्थिति घात न हो है। अब सूक्ष्मसांपराय का जेता काल अवशेष रह्या तितना ही मोह का स्थित सत्त्व रह्या है, सो अनुसमयापवर्तमान सूक्ष्म कृष्टि रूप अनुभाग कौं प्राप्त हो है, ताके एक एक निषेक कौं एक एक समय विषै भोगवता संता सूक्ष्मसांपराय का अंत समय कौं प्राप्त हो है।

१–'पर्व' इतना घ प्रति में मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णामदुगे वेयणीये, अडबारमुहुत्तयं तिघादीणं ।
अंतोमुहुत्तमेत्तं, ठिदिबंधो चरिम सुहमम्हि ॥५६८॥

नामद्विके वेदनीये अष्टद्वादशमुहूर्तकं त्रिघातिनाम् ।
अंतर्मुहूर्तमात्रं स्थितिबंधः चरमे सूक्ष्मे ॥५९८॥

टीका – तहां सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषैं नाम गोत्र का आठ मुहूर्त, वेदनीय का बारह मुहूर्त, तीन घातियानि का अंतर्मुहूर्त मात्र जघन्य स्थिति बंध हो है ।

तिण्हं घादीणं, ठिदिसंतो अंतोमुहुत्तमेत्तं तु ।
तिण्हमघादीणं, ठिदिसंतमसंखेज्जवस्साणि ॥५९९॥

त्रयाणां घातिनां, स्थितिसत्त्वमंतर्मुहूर्तमात्रं तु ।
त्रयाणामघातिनां, स्थितिसत्त्वमसंख्येयवर्षाः ॥५९९॥

टीका – तहां हा तीन घातियानि का स्थिति सत्त्व अंतर्मुहूर्त मात्र है । सो क्षीणकषाय के काल तैं संख्यात गुणा है । बहुरि तीन अघातियानि का स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्ष मात्र है । मोह का स्थिति सत्त्व क्षय कौं सन्मुख है । द्रव्यार्थिक नय करि इस समय विषैं विद्यमान है । तथापि नष्ट ही भया जानना । असैं क्षय कौं सन्मुख जो लोभ की संग्रह कृष्टि, ताकौं अनुभवे है । असा पांचवां सूक्ष्म सांपराय चारित्र करि संयुक्त सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्ती जीव जानना ।

असैं कृष्टिवेदना अधिकार समाप्त भया ।

से काले सो खीणकसाओ, ठिदिरसगबंधपरिहीणो ।
सम्मत्तडवस्सं वा, गुणसेढी दिज्ज दिस्सं च ॥६००॥

स्वे काले स क्षीणकषायः, स्थितिरसगबंधपरिहीणः ।
सम्यक्त्वाष्टवर्षमिव, गुणश्रेणी देयं दृश्यं च ॥६००॥

टीका – समस्त चारित्र मोह का क्षय के अनंतरि अपने काल विषैं सो जीव क्षीण भए हैं द्रव्य भावरूप समस्त कषाय जाकैं असा क्षीणकषाय हो है, सो स्थिति अनुभाग बंध रहित है । योग निमित्त तैं प्रकृति प्रदेश बंध याकैं साता वेदनीय का संभवे है, सो ईर्यापथ बंध है । प्रथम समय विषैं बंधि अनंतर समय विषैं निर्जर है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बहुरि जैसैं क्षायिक सम्यक्त्व का विधान विषैं सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष की स्थिति अवशेष रहैं कथन कीया था, तैसैं इहां गुणश्रेणी वा देयद्रव्य वा दृश्यमान द्रव्य जानना। सो कहिए है–

छह कर्मनि का प्रदेश समूह कौं अपकर्षण करि ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां एक भाग कौं गुणश्रेणी आयाम विषैं दीजिए है। ताका प्रमाण क्षीणकषाय के काल तैं ताही का संख्यातवां भाग मात्र अधिक है। तहां पूर्वोक्त क्रम करि उदय रूप प्रथम निषेक विषैं स्तोक, द्वितीयादि गुणश्रेणी शीर्ष पर्यंत निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं दीजिए हैं। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपरि जो अतिस्थापनावली रहित अवशेष स्थिति, तींहि प्रमाण इहां गच्छ। ताकौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि करि गुणी, ताका भाग दीएं, तहां एक खंड कौं दो गुणहानि करि गुणैं जो होइ तितना द्रव्य गुणश्रेणी शीर्ष के अनंतरवर्ती निषेक विषैं दीजिए है, सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा है। बहुरि ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है, सो यावत् अतिस्थापनावली न प्राप्त होइ तावत् ऐसा क्रम जानना। बहुरि सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य तैं इहां अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा जानना, जातैं सकषाय परिणाम संबंधी गुणश्रेणी निर्जरा तैं निष्कषाय गुणश्रेणी निर्जरा कैं असंख्यात गुणापना संभवै है। बहुरि इहां क्षीणकषाय के प्रथमादि समयनि विषैं अपकर्षण किया द्रव्य का प्रमाण समानरूप है, जातैं इहां विशुद्धता समान पाइए है। बहुरि इहां दीयमान वा दृश्यमान द्रव्य का अन्य विशेष निरूपण जैसैं सम्यक्त्व मोहनी की क्षपणा विषैं कीया था, तैसैं इहां तीन घातिया कर्मनि का जानना।

इहां ऐसा जानना–क्षीणकषाय का प्रथम समय तैं लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत तौ पहला पृथक्त्व-वितर्क वीचार नामा शुक्लध्यान वर्तै है। अर क्षीणकषाय काल का संख्यातवां भाग अवशेष रहैं एकत्ववितर्क अविचार दूसरा शुक्लध्यान वर्तै है।

घादीण मुहुत्तंतं, अघादियाणं असंखगा भागा।
ठिदिखंडं रसखंडो, अणंतभागा अपसत्थाणं ॥६०१॥

घातिनां मुहूर्तांतमघातिकानामसंख्यका भागाः।
स्थितिखंडं रसखंडं, अनंतभागा अप्रशस्तानाम् ॥६०१॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – इहां क्षीणकषाय विषैं तीन घातियानि का तौ अंतर्मुहूर्त मात्र अर तीन अघातियानि का पूर्व सत्त्व का असंख्यात बहुभाग मात्र स्थितिकांडक आयाम है। बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनि का पूर्व अनुभाग कौं अनंत का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र अनुभागकांडक आयाम है।

बहुठिदिखंडे तीदे, संखा भागा गदा तदद्धाए।
चरिमं खंडं गिण्हदि, लोभं वा तत्थ दिज्जादि ॥६०२॥

बहुस्थितिखंडेऽतीते, संख्यभागा गतास्तद्धायाः।
चरमं खंडं गृह्णाति, लोभ इव तत्र देयादि ॥६०२॥

टीका – पूर्वोक्त प्रकार क्रम लीएं संख्यात हजार स्थिति कांडक व्यतीत भए क्षीणकषाय काल कौं संख्यात का भाग देतैं तहां बहुभाग गएं एक भाग अवशेष रह्या, तब तीन घातियानि का अंत कांडक कौं ग्रहण करै है। तहां देयादिक द्रव्य का विधान सूक्ष्म लोभ विषैं कह्या था, तैसैं जानना। सो कहिए है—

इहां क्षीणकषाय काल जितना अवशेष रह्या, तीहिं बिना तीन घातियानि की अवशेष रही सर्व स्थिति कौ अंत कांडक करि घातैं है। क्षीणकषाय संबंधी गुणश्रेणी शीर्ष तैं लगाय ताके नीचला क्षीणकषाय काल का संख्यातवां भाग मात्र निषेक अर तातैं संख्यात गुणा गुणश्रेणी शीर्ष के उपरिवर्ती निषेकनि कौं ग्रहि अंत कांडक करि लांछित करै है, ऐसा जानना। ताके द्रव्य देने का विधान जैसैं लोभ का अंत कांडक विषैं कह्या तैसैं जानना। बहुरि ऐसैं अंत कांडक की प्रथमादिक फालिनि कौं घात करि पीछैं किंचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र जो अंत फालि का द्रव्य, ताकौ उदय निषेक तैं लगाय क्षीणकषाय का द्विचरम समय पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं अर द्विचरम समय विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात पल्य वर्गमूल गुणा (क्षीण)[1] क्षीणकषाय का अंत समय संबंधी निषेक विषैं द्रव्य दीजिए है।

चरिमे खंडे पडिदे, कदकरणिज्जयो त्ति भण्णदे एसो।
तस्स दुचरिमे णिद्दा, पयला सत्तुदयवोच्छिण्णा ॥६०३॥

चरिमे खंडे पतिते, कृतकरणीय इति भण्यते एषः।
तस्य द्विचरमे निद्रा, प्रचला सत्त्वोदयव्युच्छिन्ना ॥६०३॥

---

१. 'क्षीण' इतना घ प्रति में मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका–ऐसैं अंत कांडक का घात होतैं याकौं कृतकृत्य छद्मस्थ कहिए। जातैं याके ऊपरि तीनि घातियानि का स्थितिकांडक घात नाहीं है। केवल उदयावली के बाह्य तिष्ठता द्रव्य कौं उदयावली विषैं प्राप्त करणे रूप उदीरणा ही करै है, सो यावत् अधिक समय आवली अवशेष रहै, तहां पर्यंत वर्तै है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक समय विषैं एक एक निषेक का क्रम तैं उदय ही पाइए है। जातैं उदयावली विषैं प्राप्त द्रव्य की उदीरणा न हो है। बहुरि ऐसैं क्षीणकषाय का द्विचरम समय प्राप्त भया तब निद्रा प्रचला कर्म का सत्त्व अर उदय का व्युच्छेद भया। इहां शुक्लध्यान होतैं भी अव्यक्त निद्रा वा प्रचला का उदय संभवै था, सो भी नाश भया। अब इहां क्षपकश्रेणी चढ़ने वाले जीव, तीन वेद विषैं एक वेद अर च्यारि कषाय विषैं एक कषाय का उदय सहित श्रेणी चढने की अपेक्षा बारह प्रकार हैं। तहां पूर्वोक्त सर्व प्ररूपणा पुरुष वेद अर क्रोध कषाय सहित श्रेणी चढने वाले की जाननी। बहुरि अवशेष ग्यारह प्रकार जीवनि विषैं विशेष है, सो कहिए है।

तहां पुरुषवेद अर मानादिक कषाय सहित श्रेणी चढने वाले कैं विशेष है, सो कहिए है—

कोहस्स य पढमठिदीजुत्ता कोहादिएक्कदोतीहिं।
खवणद्धा हि कमसो, माणतियाणं तु पढमठिदी ॥६०४॥

क्रोधस्य च प्रथमस्थितियुक्ता क्रोधादि एकद्वित्रयाणाम्।
क्षपणाद्धा हि क्रमशो, मानत्रयाणां तु प्रथमस्थिति ॥६०४॥

टीका – पुरुषवेद युक्त मानादि कषाय सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं अधःकरण तैं लगाय अंतरकरण की समाप्ति पर्यंत तौ सर्व प्ररूपणा पुरुष वेद क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं समान जाननी। ताके अनंतरि क्रोध की प्रथम स्थिति सहित क्रोधादिक एक, दोय, तीन कषायनि का क्षपणाकाल, सो क्रम तै मानादिक तीन कषायनि की प्रथम स्थिति हो है, सोई कहिए है—

मान सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सोई अंतरकरण की समाप्ति के अनंतर क्रोध की प्रथम स्थिति न स्थापै है। मान की प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त मात्र स्थापै है। सो क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कैं नपुंसकवेद का क्षपणाकाल तैं लगाय कृष्टि कारक काल पर्यंत तो क्रोध की प्रथम स्थिति अर क्रोध की तीनों संग्रह कृष्टि का वेदक काल मात्र क्रोध का क्षपणा काल इनि दोऊनि कौं मिलाएं जेता प्रमाण होइ

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

तितना मान सहित श्रेणी चढ्या कैं मान की प्रथम स्थिति का प्रमाण जानना । बहुरि माया सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सो अंतरकरण की समाप्ति के अनंतरि क्रोध अर मान की प्रथम स्थिति नाहीं स्थापै है । माया की प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त मात्र स्थापै है, सो क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं जो पूर्वोक्त क्रोध की प्रथम स्थिति अर क्रोध क्षपणाकाल अर मान की तीनों संग्रह कृष्टि का वेदक काल मात्र मान क्षपणाकाल इन तीनौं कौं मिलाएं जो होइ, तेता माया सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं माया की प्रथम स्थिति का प्रमाण हो है । बहुरि लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सो अंतरकरण की समाप्ति के अनंतरि क्रोध अर मान अर माया की प्रथम स्थिति नाहीं स्थापै है, लोभ की प्रथम स्थिति स्थापै है । सो क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कैं जो पूर्वोक्त क्रोध की प्रथम स्थिति अर क्रोध क्षपणाकाल अर मान क्षपणा काल अर माया का वेदककाल मात्र जो माया का क्षपणा काल इन च्यारों कौं मिलाएं, जो होइ तितना लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं लोभ की प्रथम स्थिति का प्रमाण जानना ।

माणतियाणुदयमहो, कोहादिगिदुतिय खवियपणिधम्हि ।
हयकण्णकिट्टिकरणं, किच्चा लोहं विणासेदि ।।६०५।।

मानत्रयाणामुदयमथ, क्रोधाद्येकद्वित्रयं क्षपकप्रणिधौ ।
हयकर्णकृष्टिकरणं, कृत्वा लोभं विनाशयति ।।६०५।।

टीका – मानादिक तीन कषायनि का उदय सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सो क्रम तैं क्रोधादिक एक, दोय, तीन कषायनि का क्षपणाकाल के निकटि अश्वकर्ण सहित कृष्टिकरण कौं करि लोभ कौं विनाशे है । सोई कहिए है–

तहां प्रथम मान सहित श्रेणी चढ्या का व्याख्यान करिए है, क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव जिस काल विषै च्यारों कषायनि का अश्वकर्ण करण अर अपूर्व स्पर्धक विधान कौं करै है तिस काल विषैं मान सहित श्रेणी चढ्या जीव, पूर्व स्पर्धक रूप जो क्रोध था, ताकौं मान कषाय रूप परिणमाय क्षय करै है । तातैं क्रोध सहित श्रेणी चढचा के बारह संग्रह कृष्टि हो हैं । मान सहित श्रेणी चढचा कैं तीन कषायनि की नव ही संग्रह कृष्टि हो हैं । बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढचा जिस काल विषैं बादर कृष्टि करैं है, तिस काल विषैं मान सहित श्रेणी चढचा जीव तीन कषायनि की अश्वकर्ण सहित अपूर्व स्पर्धक क्रिया करै है । बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढचा जीव, जिस

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

काल विषैं क्रोध की तीन संग्रह कृष्टि कौं वेद क्षपावै है, तिस काल विषैं मान सहित श्रेणी चढ्या जीव मानादि तीन कषायनि की नव बादर संग्रह कृष्टि करै है। बहुरि ताके ऊपरि मान कषाय का वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कैं अर मान सहित श्रेणी चढ्या कैं समान है।

अब माया सहित श्रेणी चढ्या जीव का व्याख्यान करिए है—क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषैं अश्वकर्ण क्रिया करै है, तिस काल विषैं यह क्रोध कौं मान रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषै कृष्टि करै है, तिस काल विषैं यह मान को माया रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषैं क्रोध की तीन संग्रह कृष्टि कौं वेदि क्षपावै है, तिस काल विषैं यह माया अर लोभ की छह बादर संग्रह कृष्टि का वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कैं अर याकैं समान है।

अब लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीव का व्याख्यान कहिए है—क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषैं अश्वकर्ण करै है, तिस काल विषैं यहु पूर्व स्पर्धक रूप क्रोध कौं मानरूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव जिस काल विषैं कृष्टि करै है तिस काल विषैं यहु पूर्व स्पर्धक रूप मान कौं माया रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषैं क्रोध की तीन संग्रह कृष्टिनि कौं वेदि क्षय करै है तिस काल विषैं यहु पूर्व स्पर्धक रूप माया कौं लोभ रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव, जिस काल मान की तीन संग्रह कृष्टिनि कौं वेदि क्षय करै है, तिस काल विषैं यहु लोभ की तीन बादर संग्रह कृष्टि करै है। तातैं उपरि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कैं अर याकैं समान है।

ऐसैं पुरुषवेद सहित चढ्या च्यारि प्रकार जीवनि के विशेष का वर्णन कीया।

अब स्त्रीवेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि कैं विशेष कहिए है—

पुरिसोदएण चडिदस्सित्थी, खवणद्धउ त्ति पढमठिदी।
इत्थिस्स सत्तकम्मं, अवगदवेदो समं विणासेदि ॥६०६॥

पुरुषोदयेन चटितस्य स्त्री, क्षपणाद्धांतं प्रथमस्थितिः।
स्त्रिया सप्तकर्माणि, अपगतवेदः समं विनाशयति ॥६०६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – स्त्रीवेद सहित चढ्या जीव कैं यावत् अंतरकरण न होइ, तावत् प्ररूपणा सर्व समान है। बहुरि अंतरकरण करत संता यहु पुरुष वेद की प्रथम स्थिति नाहीं करै है। स्त्रीवेद ही की प्रथम स्थिति स्थापै है, जातैं जिस वेद का कषाय के उदै श्रेणी चढै ताही का प्रथम स्थिति स्थापै है। तिस स्त्री वेद की प्रथम स्थिति का प्रमाण पुरुष वेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या जीव कैं जितना नपुंसक वेद का क्षपणाकाल सहित स्त्री वेद का क्षपणाकाल होइ तितना जानना। बहुरि नपुंसक वेद की वा स्त्री वेद की क्षपणा करने विषैं स्त्री वेद सहित चढ्या जीव कैं पुरुषवेद सहित चढ्या जीव कैं समान काल है। बहुरि ताके ऊपरि पुरुषवेद सहित चढ्या जीव है सो तौ पुरुष वेद का उदय युक्त हुवा सप्त नोकषाय का क्षपणाकाल विषैं सप्त नोकषायनि कौं क्षपावै है। तहां पुरुष वेद के नवक समयप्रबद्धनि कौं, ताके पीछे समय घाटि दोय आवली काल विषैं क्षपावै है। बहुरि यह स्त्री वेद सहित चढ्या जीव है, सो वेद उदय करि रहित होत संता सप्त नोकषाय का क्षपणाकाल विषैं सर्व सप्त नोकषायनि कौं क्षपावै है। पुरुष वेद का बंध याकैं नाहीं है, तातैं नवक समयप्रबद्ध का पीछैं खिपावना याकैं न संभवे है। बहुरि ताके ऊपरि अश्वकर्णादि क्रियानि विषैं जैसैं पुरुष वेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि का विशेष कह्या तैसैं ही स्त्रीवेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि का विशेष वर्णन जानना।

अब नपुंसक वेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि का व्याख्यान करिए है–

थीपढमट्ठिदिमेत्ता, संढस्स वि अंतरादु संढेक्क।
तस्सद्धा त्ति तदुवरिं, संढा इत्थि च खवदि थीचरिमे ॥६०७॥
अवगयवेदो संतो, सत्त कसाये खवेदि कोहुदये।
पुरिसुदये चडणविही, सेसुदयाणं तु हेट्ठुवरिं ॥६०८॥

स्त्रीप्रथमस्थितिमात्रा, षंढस्यापि अंतरात् षंढैकः।
तस्याद्धा इति तदुपरि, षंढं स्त्रीं च क्षपयति स्त्रीचरमे ॥६०७॥

अपगतवेदः संतः, सप्त कषायान् क्षपयति स्त्रीचरमे।
पुरुषोदयेन चटनविधिः शेषोदयानां तु अधस्तनोपरि ॥६०८॥

टीका – नपुंसक वेद सहित श्रेणी चढ्या जीव कै यावत् अंतरकरण न करिए तावत् सर्व प्ररूपणा समान है; ताके ऊपरि पुरुष वेद की प्रथम स्थिति नाहीं

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थापै है, नपुंसक वेद ही की प्रथम स्थिति स्थापै है; ताका प्रमाण स्त्रीवेद सहित चढ्या कैं जितना स्त्री वेद की प्रथम स्थिति, ताका प्रमाण कह्या तावन्मात्र ही है। बहुरि अंतरकरण कीएं पीछैं यावत् पुरुष वेद सहित चढ्या जीव कैं नपुंसक वेद का क्षपणाकाल है, तावत् याकैं एक नपुंसक वेद ही की क्षपणा हुआ करै है, परन्तु तहां नपुंसक वेद की क्षपणा होइ निवरै नाहीं, तहां पीछैं पुरुष वेद सहित श्रेणी चढ्या कैं जो स्त्री वेद का क्षपणाकाल है, तिस विषैं याकैं नपुंसक वेद अर स्त्री वेद इन दोऊनिकी क्षपणा होने लगै, सो स्त्रीवेद क्षपणाकाल का अंत समय विषैं सर्व नपुंसक, स्त्री वेद कौं युगपत् क्षय करै है। इहां द्रव्यार्थिकनय विद्यमान का नाश कौं कहै है, तिस अपेक्षा इस समय नष्ट भया कह्या। पर्यायार्थिक अविद्यमान वस्तु का नाश कौं कहैं है, तिस अपेक्षा इस समय विषैं एक निषेक का सत्त्व है, सो अगले समय विषैं नष्ट होगा ऐसा जानना। ताके अनंतरि स्त्री वेद सहित चढ्या जीववत् अपगत वेद होत संता सप्त नोकषायनि का क्षपणाकाल विषैं सर्व सप्त नोकषायनि कौं क्षपावै है। इहां भी पुरुष वेद का बंध का अभाव है। तातैं नवक समयप्रबद्ध का पीछैं क्षिपावना न संभवै है। ताके ऊपरि जैसैं पुरुष वेद सहित श्रेणी चढे च्यारि प्रकार जीवनि का वर्णन कीया, तैसैं ही नपुंसक वेद सहित श्रेणी चढे च्यारि प्रकार जीवनि का वर्णन जानना। ऐसैं तीन प्रकार पुरुष वेद सहित श्रेणी चढे, च्यारि प्रकार स्त्री वेद सहित चढे, च्यारि प्रकार नपुंसक वेद सहित श्रेणी चढे; ए ग्यारह प्रकार जीव, तिनके बीचि की क्रियानि विषैं इहां विशेष वर्णन कीया, सो विशेष जानना। अब शेष नीचैं वा ऊपरी सर्व विधान क्रोध का उदय अर पुरुष वेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या कैं जैसैं कह्या तैसैं ही अवशेष ग्यारह प्रकार उदय सहित जीवनि कैं जानना।

इहां तर्क – जो अनिवृत्तिकरण विषैं एक समयवर्ती सब जीवनि कैं परिणाम समान कहे हैं, इहां तुम परस्पर विशेष कैसैं कहो हो?

ताका समाधान–परिणामनि की विशुद्धता की अपेक्षा समान नाहीं है; परंतु नाना प्रकार वेद कषाय का उदय रूप सहकारी कारण का निकट होतैं नाना प्रकार क्षपणा कार्य हो है। ऐसैं अवसर पाइ विशेष का कथन करि पूर्वैं क्षीणकषाय का द्विचरम समय पर्यंत कथन कीया था, अब आगै कथन करिए है—

चरिमे पढमं विग्घं, चउदंसण उदयसत्त वोच्छिण्णा।
से काले जोगिजिणो, सव्वण्हू सव्वदरसी य ॥६०६॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

चरमे प्रथमं विघ्नं, चतुर्दर्शनं उदयसत्त्वव्युच्छिन्नाः ।
स्वे काले योगिजिनः, सर्वज्ञः सर्वदर्शी च ॥६०६॥

टीका – क्षीणकषाय का अंत समय विषैं पहला पंच प्रकार ज्ञानावरण अर विघ्न कहिए पंच प्रकार अंतराय अर चउदंसण कहिए च्यारि प्रकार दर्शनावरण, ए उदय तैं अर सत्त्व तैं व्युच्छित्ति रूप भए। इहां अघातिकर्मनि का स्थितिसत्त्व पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र असंख्यात वर्ष का है। जैसें घाति कर्मनि विषैं मोह विशेष अप्रशस्त था, ताका पहलैं नाश भया, अवशेषनि का इहां नाश भया, तैसें कर्मनि विषैं विशेष अप्रशस्त घाति कर्म थे, तिनका इहां नाश भया। अघातियानि का आगैं नाश होगा।

बहुरि इहां कोऊ पूछै कि छद्मस्थ का तौ शरीर निगोद सहित था, अर केवली का शरीर निगोद रहित कहिए है, सो कैसें भया ?

ताका समाधान–क्षीणकषाय का प्रथम समय विषैं निगोद जीव अनंत मरैं हैं, दूसरे समय तिनकौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक मरै हैं। ऐसैं पृथक्त्व आवली पर्यंत क्रम जानना। ताके ऊपरि पूर्व समय विषैं मरे जीवनि तैं तिनकौं संख्यात का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक जीव मरैं हैं। सो ऐसें क्षीणकषाय का काल आवली का असंख्यातवां भाग मात्र अवशेष रहै तावत् क्रम जानना। बहुरि इस विशेष अधिक रूप मरणकाल का अंत समय विषैं मरे जीवनि का प्रमाण कौं पल्य का असंख्यातवां भाग करि गुणैं, ताकौं अनंतरि गुणकार की श्रेणी लीएं मरण काल का जो प्रथम समय तीहिं विषैं मरे जीवनि का प्रमाण हो है। तातैं परैं क्षीणकषाय का अंत समय पर्यंत समय समय पल्य का असंख्यातवां भाग गुणा निगोद जीव मरैं हैं, ऐसें सर्व निगोद जीवनि का अभाव होतैं केवली का शरीर निगोद रहित है।

इहां तर्क – जो ऐसें मरण होतैं यथाख्यात चारित्र कैसें कहिए ?

ताका समाधान–इहां शुक्लध्यान बल करि तिनके निपजने का निरोध हो है; बहुरि उपजे थे, ते स्वयमेव अपनी आयु नाश तैं मरै है। यावत् निगोद जीवनि का जघन्य आयु मात्र क्षीणकषाय का काल अवशेष रहै तावत् निगोद जीव तहां उपजैं भी हैं। अर पूर्वैं उपजे जीव मरैं हैं, तहां पीछैं उपजै नाहीं। आयु नाश तैं केवल मरैं ही हैं, तातैं इनकौं किछू दोष नाहीं उपजै हैं। ऐसें क्षीणकषाय का अंत समय विषैं कर्मनि का नाश करि ताके अनंतरि अपने काल विषैं सयोग केवली जिन हो हैं। सो

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सर्वज्ञ अर सर्वदर्शी हो हैं। सर्व पदार्थनि कौं आकार रूप विशेष ग्रहण करै हैं। तातैं सर्वज्ञ कहिए। बहुरि सर्व पदार्थनि कौं निराकार रूप सामान्य ग्रहण करै हैं, तातैं सर्वदर्शी कहिए हैं।

खीणे घादिचउक्के, णंतचउक्कस्स होदि उप्पत्ती।
सादी अपज्जवसिदा, उक्कस्साणंतपरिसंखा ॥६१०॥

क्षीणे घातिचतुष्केऽनंतचतुष्कस्य भवति उत्पत्तिः।
सादिरपर्यवसिता, उत्कृष्टानंतपरिसंख्या ॥६१०॥

टीका – घातिया कर्मनि का चतुष्क का नाश होतैं अनंत चतुष्टय की उत्पत्ति हो है। अनंतपना कैसें सभवे है ? सो कहिए है—

सादि कहिए उपजने काल विषै आदि सहित है, तथापि अपर्यवसिता कहिए **अवसान** जो अंत, ताकरि रहित है, तातैं अनंत कहिए। अथवा अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा इनकी उत्कृष्ट अनंतानंत मात्र संख्या है; तातैं भी अनंत कहिए।

अब किस कर्मनि का नाश कैं कौंन गुण हो है, सो कहिए है—

आवरणदुगाण खये, केवलणाणं च दंसणं होइ।
विरियंतरायियस्स य, खएण विरियं हवे णंतं ॥६११॥

आवरणद्विकयोः क्षये, केवलज्ञानं च दर्शनं भवति ॥
वीर्यांतरायिकस्य च, क्षयेण वीर्यं भवेदनंतम् ॥६११॥

टीका – ज्ञानावरण, दर्शनावरण इन दोऊनि का नाश करि केवलज्ञान अर केवलदर्शन हो है। तहां केवलज्ञान है सो इंद्रिय, मन, प्रकाशादिक की सहाय रहित है। सो सूक्ष्म, अंतरित, दूर आदि सर्व पदार्थनि कौं प्रत्यक्ष युगपत् जाने है। तहां परमाणू आदि सूक्ष्म कहिए। अतीत, अनागत काल संबंधी अंतरित कहिए। दूर क्षेत्रवर्ती दूर कहिए। बहुरि तैसें ही केवलदर्शन है, सो देखे है। जैसें चंद्र विषैं शीत स्पर्श, श्वेत वर्णपनौं युगपत् हैं, तैसें जिनेंद्र विषैं केवलज्ञान, केवलदर्शन युगपत् प्रवर्तैं हैं, छद्मस्थवत् क्रमवर्ती नाहीं हैं। बहुरि वीर्यांतराय कर्म का क्षय करि अनंत वीर्य हो है, सो समस्त ज्ञेयनि कौं सदा काल जानते भी खेद उपजने का अभाव कौं उपकारी काहू करि घाती न जाय असी समर्थतारूप है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

णवणोकसायविग्घचउक्काणं च य खयादणंतसुहं ।
अणुवममव्वाबाहं, अप्पसमुत्थं णिरावेक्खं ॥६१२॥

नवनोकषायविघ्नचतुष्काणां च क्षयादनंतसुखम् ।
अनुपममव्याबाधमात्मसमुत्थं निरपेक्षम् ॥६१२॥

टीका – नव नोकषाय अर दानादि अंतराय चतुष्क का क्षय तै अनंत सुख हो है, सो अन्यत्र असा न पाइए है, तातैं अनौपम्य है । बहुरि काहू करि बाधित नाहीं, तातैं अव्याबाध है । बहुरि आत्मा करि उत्पन्न है, तातैं आत्मसमुत्थ है । बहुरि इंद्रिय विषय प्रकाशादिक की अपेक्षा रहित है, तातैं निरपेक्ष है, असा ज्ञानवैराग्य ताकी उत्कृष्टता कौं प्राप्त भया जो केवली, तिनकैं अनाकुल लक्षण अनंत सुख जानना ।

सत्तण्हं पयडीणं, खयादु खइयं तु होदि सम्मत्तं ।
वरचरणं उवसमदो, खयदो दु चरित्तमोहस्स ॥६१३॥

सप्तानां प्रकृतीनां, क्षयात् क्षायिकं तु भवति सम्यक्त्वम् ।
वरचरणं उपशमतः, क्षयतस्तु चारित्रमोहस्य ॥६१३॥

टीका – च्यारि अनंतानुबंधी, तीन मिथ्यात्व, इन सात प्रकृतिनि के क्षय तैं क्षायिक सम्यक्त्व हो है, सो तत्त्वार्थनि का यथार्थ श्रद्धानरूप जानना । बहुरि चारित्र मोह की इकईस प्रकृतिनि के उपशम तैं वा क्षय तैं उत्कृष्ट यथाख्यात चारित्र हो है, सो निष्कषाय आत्मचरण रूप है । इहां क्षायिक यथाख्यात चारित्र ही है । तथापि यथाख्यात का प्रसंग पाइ उपशांत कषाय विषैं पाइए है जो उपशम यथाख्यात, ताका भी कारण दिखाया है ।

अब इहां कोऊ कहै कि केवली कैं असाता वेदनीय के उदय तैं क्षुधादि परिषह पाइए हैं, तातैं आहारादि क्रिया संभवै हैं, तिस प्रति कहै हैं—

जं णोकसायविग्घचउक्काण बलेण दुक्खपहुदीणं ।
असुहपयडिणुदयभवं, इंदियखेदं हवे दुक्खं ॥६१४॥

यत् नोकषायविघ्नचतुष्काणां बलेन दुःखप्रभृतीनाम् ॥
अशुभप्रकृतीनामुदयभवं इंद्रियखेदं भवेत् दुःखं ॥६१४॥

टीका – जो नोकषाय अर अंतरायचतुष्क, इनका उदय के बल करि दुःख रूप असाता वेदनीय आदि अशुभ प्रकृतिनि का उदय करि उपज्या असा इंद्रिय कैं खेद आकुलता, ताका नाम दुःख है । सो केवली कैं नाहीं संभवै है ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

जं णोकसायविग्घचउक्काण बलेण सादपहुदीणं ।
सुहपयडीणुदयभवं, इंदियतोसं हवे सोक्खं ॥६१५॥

यत् नोकषाय विघ्नचतुष्काणां बलेन सातप्रभृतीनां ।
शुभप्रकृतीनामुदयभवं, इंद्रियतोषं भवेत् सौख्यं ॥६१५॥

टीका – जो नोकषाय अर अंतराय चतुष्क का उदय के बल करि साता वेदनीय आदि शुभ प्रकृतिनि का उदय करि उपज्या इंद्रियनि के संतोष किछू निराकुलता ताका नाम इंद्रिय जनित सुख है; सो भी केवली के नाहीं संभवै है ।

णट्ठा य रायदोसा, इंदियणाणं च केवलिम्हि जदो ।
तेण दु सातासादजसुहदुक्खं णत्थि इंदियजं ॥६१६॥

नष्टौ च रागद्वेषौ, इंद्रियज्ञानं च केवलिनि यतः ।
तेन तु सातासातजसुखदुःखं नास्ति इंद्रियजं ॥६१६॥

टीका – जातैं केवली विषै राग द्वेष नष्ट भए हैं । बहुरि इंद्रिय जनित ज्ञान भी नष्ट भया है तातैं साता असाता वेदनीय का उदय करि निपज्या असा इंद्रिय जनित सुख दुःख नाहीं हैं । इस हेतु तैं यहु सिद्ध भया जो कारण के सद्भाव तैं केवली कैं असातावेदनीय के उदय तैं उपजे असैं परिषह उपचार मात्र कहिए है, तथापि तिनका दुःख नाहीं व्यापै है, जातैं घातिकर्मनि का उदय के बल होतैं वेदनीय का उदय तैं सुख दुःख व्यापै हैं । जैसैं उपघात परघात नाम कर्म का उदय होतैं भी घाति कर्मनि के बल बिना अपना वा अन्य का घात न हो है, जो असैं न होइ तो परिषहनि के निमित्त तैं केवली कौं दुःख होइ तब लाभ के अर्थि कार्य करते जैसैं मूल नाश होइ तैसैं यहु कार्य भया, सो न संभवै है; तातैं केवली कैं भोजन है असा वचन अयुक्त है ।

अब अन्य हेतु कहैं हैं—

समयट्ठिदिगो बंधो, सादस्सुदयाप्पिगो जदो तस्स ।
तेण असादस्सुदओ, सादसरूवेण परिणमदि ॥६१७॥

समयस्थितिको बंधः, सातस्योदयात्मको यतः तस्य ।
तेन असातस्योदयः, सातस्वरूपेण परिणमति ॥६१७॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – जातैं केवली कैं एक समय मात्र स्थिति लीएं साता वेदनीय का बंध हो है, सो उदयरूप ही है, तातैं ताकैं असाता का उदय है सो भी सातारूप होइ परिणमै है, जातैं इहां परम विशुद्धता करि साता का अनुभाग की बहुत अधिकता पाइए है, तातैं असाताजनित क्षुधादि परिषह की वेदना नाहीं है। वेदना बिना ताका प्रतिकार रूप आहार कैसें संभवै है ?

इहां कोऊ कहै कि जो आहार न संभवै तौ शास्त्रनि विषैं केवली कैं आहारमार्गणा का सद्भाव कैसें कह्या है ? सो कहिए है—

पडिसमयं दिव्वतमं, जोगी णोकम्मदेहपडिबद्धं ।
समयपबद्धं बंधदि, गलिदवसेसाउमेत्तठिदी ।।६१८।।

प्रतिसमयं दिव्यतमं, योगी नोकर्मदेहप्रतिबद्धम् ।
समयप्रबद्धं बध्नाति, गलितावशेषायुर्मात्रस्थितिः ।।६१८।।

टीका – सयोगी जिन है, सो समय समय प्रति नोकर्म, जो औदारिक शरीर तीहि संबंधी जो समयप्रबद्ध, ताकौं बांधे है, ग्रहण करै है। ताकी स्थिति, आयु व्यतीत भएं पीछे जेता अवशेष रह्या तावन्मात्र जाननी। सो नोकर्म वर्गणा का ग्रहण ही का नाम आहारमार्गणा है, ताका सद्भाव केवली कैं है, जातैं ओज, लेप्य, मानस, केवल, कर्म, नोकर्म भेद तैं छह प्रकार आहार है। तहां केवली कैं कर्म नोकर्म ए दोय आहार संभवै हैं। साता वेदनीय का समयप्रबद्ध कौं ग्रहै है, सो कर्म आहार है। औदारिक शरीर का समयप्रबद्ध ग्रहै है, सो नोकर्म आहार है।

णवरि समुग्घादगदे, पदरे तह लोगपूरणे पदरे ।
णत्थि तिसमये णियमा, णोकम्माहारयं तत्थ ।।६१९।।

नवरि समुद्घातगते प्रतरे तथा लोकपूरणे प्रतरे ।
नास्ति त्रिसमये नियमात् नोकर्माहारकस्तत्र ।।६१९।।

टीका – इतना विशेष जो केवल समुद्घात कौं प्राप्त केवली विषैं दोय तौ प्रतर के समय अर एक लोक पूरण का समय, इनि तीन समयनि विषैं नोकर्म का आहार नियम तै नाहीं है। अन्य सर्व काल विषैं सयोगी जिन को नोकर्म का आहार है।

अब इहां समुद्घात कब हो है, सो कहना—तहां क्षीणकषाय के अंनतरि ईर्यापथ बंध कौं कारण जो योग, तिन करि सहित जो तीर्थंकर केवली भया, सो समव-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

शरण विषैं मंडप के मध्य तीन पीठिका ऊपरि जो सिंहासन तीहि विषैं विराजमान है। अष्ट प्रातिहार्य, चौंतीस अतिशय सहित है। धातु मल रहित, परम औदारिक शरीर सहित है। सर्वलोक पूज्य है। बहुरि एक योजन विषैं तिष्ठते असैं दूर वा निकटवर्ती तिर्यंच वा मनुष्य वा देव, तिनको अठारह महाभाषा, सात सै क्षुल्लक भाषा ताके आकारि तद्रूप परिणम्या अैसा जो दिव्यध्वनि, ताकरि आसन्न भव्य जीवनि कौं संसार तैं पार करै है। जैसें बिना इच्छा चंद्रमा समुद्र कौं बधावै है, तैसें अबुद्धिपूर्वक पनैं केवली जगत का हित कौं करै हैं। जातैं सर्व जीवनि का उपकार रूप परिणामनि तैं असा कर्म पूर्वैं बंध्या है, जाके उदय तैं सर्व जीवनि का स्वयमेव उपकार हो है अर भव्य जीवनि का भला होना है, तातैं ऐसा निमित्त बना है। बहुरि भगवान विहार करैं, तब आकाश विषैं दोय सै पचीस कमलनि कैं ऊपरि स्वयमेव गमन करै हैं। सो याप्रकार उत्कृष्ट तौ किंचित ऊन कोडि पूर्व अर जघन्य पृथक्त्व वर्ष प्रमाण तीर्थंकर केवली की स्थिति सयोग गुणस्थान विषै जाननी। सामान्य केवलीनि कैं अतिशयादिक यथासंभव जानना अर जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त जाननी। तहां सयोगी का प्रथम समय तैं लगाय उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी निर्जरा पाइए है। तहां प्रथम समय विषैं वेदनीय नाम गोत्र का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहां एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणी विषैं देनें योग्य द्रव्य कौं उदय रूप प्रथम निषेक विषै तौ स्तोक अर द्वितीयादि गुणश्रेणी शीर्ष पर्यंत निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करिए है। बहुरि उपरितन स्थिति विषैं देने योग्य द्रव्य को प्रथम निषेक विषैं गुणश्रेणी शीर्ष विषैं दीया द्रव्य तैं असंख्यात गुणा अर द्वितीयादि अतिस्थापनावली यावत् न प्राप्त होइ तावत् निषेकनि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं निक्षेपण करिए है। इहां क्षीणकषाय करि अपकर्षण कीया द्रव्य तैं सयोग केवली करि अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा जानना। बहुरि ताके गुणश्रेणी आयाम तैं याका गुणश्रेणी आयाम संख्यात गुणा घटता जानना। बहुरि सयोग केवली का द्वितीयादि समयनि विषैं भी असा ही विधान जानना। परिणाम अवस्थित है, तहां अपकर्षण कीया द्रव्य की अर गुणश्रेणी आयाम की समानता जाननी। इतना ही विशेष गुणश्रेणी आयाम अवस्थित है, तातैं ज्यूं ज्यूं गुणश्रेणी आयाम का एक एक समय व्यतीत हो है, त्यूं त्यूं उपरितन स्थिति का एक एक समय गुणश्रेणी विषैं मिलै है।

या प्रकार सयोगी का काल बहुत व्यतीत होतैं समुद्घात क्रिया जिस काल विषैं हो है, सो कहिए है—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंतोमुहुत्तमाऊ, परिसेसे केवली समुग्घादं ।
दंड कवाटं पदरं, लोगस्स य पूरणं कुणई ॥६२०॥

अंतर्मुहूर्तमायुषि, परिशेषे केवली समुद्घातं ।
दंडं कपाटं प्रतरं, लोकस्य च पूरणं करोति ॥६२०॥

टीका – अपनी आयु अंतर्मुहूर्त मात्र अवशेष रहैं केवली समुद्घात क्रिया करै है । तहां दंड, कपाट, प्रतर, लोकपूरणरूप समुद्घात क्रिया कौं करै है ।

हेट्ठा दंडस्संतोमुहुत्तमावज्जिदं हवे करणं ।
तं च समुग्घादस्स य, अहिमुहभावो जिणिंदस्स ॥६२१॥

अधस्तनं दंडस्यांतर्मुहूर्तमावर्जितं भवेत् करणं ।
तच्च समुद्घातस्य च, अभिमुखभावो जिनेंद्रस्य ॥६२१॥

टीका – दंड समुद्घात करने का काल कैं अंतर्मुहूर्त काल आधा कहिए पहलैं आवर्जित नामा करण हो है, सो जिनेंद्र देव कैं जो समुद्घात क्रिया कौं सन्मुखपना, सोई आवर्जितकरण कहिए ।

सट्ठाणे आवज्जिदकरणेवि य णत्थि ठिदिरसाण हदी ।
उदयादि अवट्ठिदया, गुणसेढी तस्स दव्वं च ॥६२२॥

स्वस्थाने आवर्जितकरणेऽपि च नास्ति स्थितिरसयोः हतिः ।
उदयादिः, अवस्थितौ, गुणश्रेणिः, तस्य द्रव्यं च ॥६२२॥

टीका – आवर्जितकरण करने तैं पहलैं जो स्वस्थान, तीहिं विषै अर आवर्जित करण विषैं भी सयोग केवली कैं कांडकादि विधान करि स्थिति अनुभाग का घात नाहीं है । बहुरि उदयादि अवस्थितरूप गुणश्रेणी आयाम है अर तिस गुणश्रेणी का द्रव्य भी अवस्थित है । तहां विशेष इतना जो स्वस्थान केवली का गुणश्रेणी आयाम तैं आवर्जितकरण युक्त केवली का गुणश्रेणी आयाम संख्यात गुणा घाटि है । बहुरि स्वस्थान केवली करि अपकर्षण कीया द्रव्य तैं आवर्जितकरण युक्त केवली करि अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा है, जातैं गुणश्रेणी निर्जरा के ग्यारह स्थान कहै है । तहां ऐसा ही क्रम कह्या है । यद्यपि केवली कैं परिणामनि की समानता है तथापि आयु का अंतर्मुहूर्त मात्र अवशेष रहने का निमित्त पाइ विशेष होने तैं स्व-

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

स्थान जिन तैं समुद्घात कौं सन्मुख जिन कैं[1] गुणश्रेणी आयाम वा अपकर्षण कीया द्रव्य की समानता नाहीं कही है। बहुरि स्वस्थान जिन कैं प्रथमादि अंत समय पर्यंत गुणश्रेणी आयाम अर अपकर्षण कीया द्रव्य समान है, तातैं अवस्थित जानना। बहुरि आवर्जितकरण का प्रथम समय तैं लगाय सयोगी कै द्विचरम स्थितिकांडक की अंत फालि का पतन जिस समय होगा, तहां पर्यंत गुणश्रेणी आयाम अर अपकर्षण कीया द्रव्य समान है तातैं अवस्थित जानना।

अब आवर्जितकरण विषैं गुणश्रेणी आयाम कितना है ? सो कहिए है—

जोगिस्स सेसकाले, गयजोगी तस्स संखभागो य।
जावदियं तावदिया, आवज्जिदकरणगुणसेढी ॥६२३॥

योगिनः शेषकाले, गतयोगी तस्य संख्यभागश्च।
यावत् तावत्कं, आवर्जितकरणगुणश्रेणिः ॥६२३॥

टीका – आवर्जितकरण करने के पहले समय जो सयोगी का अवशेष काल रह्या अर अयोगी का सर्व काल अर अयोगी के काल का संख्यातवां भाग, इनकौं मिलाएं जितना होइ, तितना आवर्जितकरण काल का प्रथम समय तैं लगाय द्विचरम कांडक की अंत फालि का पतन समय पर्यंत समयनि विषैं अवस्थित गुणश्रेणी आयाम जानना। तहां अपकर्षण कीया द्रव्य देने का विधान जैसैं स्वस्थान जिन विषैं कह्या तैसैं जानना।

या प्रकार अंतर्मुहूर्त मात्र आवर्जितकरण काल विषै क्रिया विशेष कहे, ताके अनंतरि समुद्घात क्रिया हो है। सो अघाति कर्मनि की स्थिति समान करने के अर्थि जीव के प्रदेशनि का समुद्गमन फैलना, ताका नाम समुद्घात है। सो दंड, कपाट, प्रतर, लोकपूरण भेद तैं च्यारि प्रकार है। सो समुद्घात करने वाले जीव पूर्व कौं सन्मुख वा उत्तर कौं सन्मुख हो हैं। बहुरि पद्मासन वा कायोत्सर्ग आसन युक्त हो हैं सो प्रथम समय विषै दंड समुद्घात करै हैं। तहां उत्कृष्ट अवगाह युक्त केवली का शरीर एक सौ आठ प्रमाणांगुल प्रमाण ऊंचो होइ, ताके नवमें भाग चौडाई होइ, सो बारह अंगुल चौडाई की सूक्ष्म परिधि सैंतीस अंगुल अर एक अंगुल का एक सौ तेरह भाग में पिच्याणवै भाग मात्र हो है, सो यहु तो कायोत्सर्ग स्थित केवली के परिधि का प्रमाण जानना। बहुरि पद्मासन स्थिति के चौडाई का प्रमाण तातैं तिगुणा,

१–'जिन के' स्थान पर 'जिनि के' ऐसा पाठ घ प्रति में मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

छत्तीस अंगुल है । ताके सूक्ष्म परिधि का प्रमाण एक सौ तेरह अंगुल अर एक अंगुल का एक सौ तेरह भाग सत्ताईस भाग मात्र हो है । अैसें परिधि रूप होइ किंचिदून चौदह राजू ऊंचे प्रदेश हो हैं । इहां नीचले ऊपरले वातवलयनि विषें जीव के प्रदेश न फैले हैं, तातें तिनके घटावने के अर्थि किंचिदून कह्या है । अैसें दंड के आकारि प्रदेश फैलने तें दंड समुद्घात कह्या ।

बहुरि द्वितीय समय विषै कपाट समुद्घात करै है । तहां पूर्व दिशा सन्मुख कायोत्सर्ग आसन युक्त केवली के प्रदेश किंचिदून चौदह राजू ऊंचे, सात राजू चौडे, बारह अंगुल मोटे हो हैं । बहुरि पूर्व सन्मुख पद्मासन स्थित केवली के प्रदेश ऊंचे, चौड़े, पूर्वोक्त मोटे छत्तीस अंगुल हो हैं । बहुरि उत्तर सन्मुख कायोत्सर्ग स्थित केवली के प्रदेश किंचिदून चौदह राजू ऊंचे अर नीचे सात राजू क्रम तें घटि मध्यलोक निकटि एक राजू क्रम तें बधि ब्रह्म स्वर्ग निकटि पांच राजू क्रम तै घटि ऊपरि एक राजू चौड़े अर बारह अंगुल मोटे प्रदेश हो हैं । बहुरि उत्तर सन्मुख पद्मासन स्थित केवली के प्रदेश ऊंचे, चौड़े तैसें ही अर मोटे छत्तीस अंगुल हैं । अैसें कपाट आकारि प्रदेश फैलने तें कपाट कह्या—

बहुरि तीसरे समय प्रतर करै है । तहां वातवलय बिना अवशेष सर्व लोक विषैं आत्मा के प्रदेश फैले हैं । सो याका नाम मंथान भी है—

बहुरि चतुर्थ समय विषैं लोकपूरण हो है । तहां वातवलय सहित सर्व लोक विषैं आत्मा के प्रदेश फैले हैं । अैसें च्यारि समयनि विषैं दंड, कपाट, प्रतर, लोकपूरण क्रम तें प्रदेश फैलै हैं ।

तहां कार्य विशेष हो है, सो कहिए है—

ठिदिखंडमसंखेज्जे, भागे रसखंडमप्पसत्थाणं ।
हणदि अणंता भागा, दंडादी चउसु समएसु ॥६२४॥

स्थितिखंडमसंख्येयान्, भागान् रसखंडमप्रशस्तानां ।
हंति अनंतान् भागान्, दंडादिचतुर्षु समयेषु ॥६२४॥

टीका – दंडादिक के च्यारि समयनि विषै स्थिति खंड तौ असंख्यात बहुभाग मात्र, अप्रशस्तनि का अनुभाग खंड अनंत भाग मात्र, ताकौं घातै है, सोई कहिए है—

दंडरूप प्रथम समय विषैं जो नाम, गोत्र, वेदनीय का स्थिति सत्त्व पूर्वै पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र था, ताकौं असंख्यात का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

घटाइ, एक भाग मात्र अवशेष राखे है। बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनि कौं क्षीणकषाय का अंत समय विषैं जो अनुभाग रह्या था, ताकौं अनंत का भाग दीएं तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखै है। बहुरि कपाट रूप द्वितीय समय विषैं जो दंड समय विषैं स्थिति अनुभाग रहे थे, तिनकौं क्रम तैं असंख्यात अनंत का भाग दीएं तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखे है। बहुरि प्रतर रूप तीसरा समय विषैं कपाट समय विषैं जो स्थिति अनुभाग रह्या, ताकौं असंख्यात अनंत का भाग क्रम तैं दीएं तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखै है। बहुरि लोकपूरण रूप चौथा समय विषै जो प्रतर समय विषैं स्थिति अनुभाग रह्या था, ताकौं असंख्यात अनंत का भाग क्रम तैं दीएं तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखै है। प्रशस्त प्रकृतिनि का स्थिति घात हो है, अनुभाग घात न हो है असा जानना। बहुरि गुणश्रेणी निर्जरा आवर्जितकरणवत् हो है।

चउसमएसु रसस्स य, अणुसमओवट्टणा असत्थाणं।
ठिदिखंडस्सिगिसमयिगघादो अंतोमुहुत्तुवरिं ॥६२५॥

चतुः समयेषु रसस्य च, अनुसमयापवर्तनमशस्तानां।
स्थितिखंडस्यैकसमयिकघातो अंतर्मुहूर्तोपरि ॥६२५॥

टीका – असैं च्यारि समयनि विषैं अप्रशस्त प्रकृतिनि के अनुभाग का अनुसमयापवर्तन भया। समय समय अनुभाग का घटना भया। बहुरि स्थिति खंड का एक समय करि घात भया। एक एक समय विषैं एक एक स्थिति कांडक घात कीया सो यह माहात्म्य समुद्घात क्रिया का जानना। बहुरि लोकपूरण के अनंतरि अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति कांडक वा अनुभाग कांडक का आयाम जानना। अंतर्मुहूर्त काल करि स्थिति अनुभाग का घटावना जानना।

जगपूरणम्हि एक्का, जोगस्स य वग्गणा ठिदी तत्थ।
अंतोमुहुत्तमेत्ता, संखगुणा आउआ होदि ॥६२६॥

जगत्पूरणे एका, योगस्य च वर्गणा स्थितिस्तत्र।
अंतर्मुहूर्तमात्रा, संख्यगुणा आयुषो भवति ॥६२६॥

टीका – लोकपूरण का समय विषैं योगनि की एक वर्गणा है। पूर्वै आत्मा के प्रदेशनि विषैं हीनाधिक योगनि के अविभाग प्रतिच्छेद थे। इहां आत्मा के सर्व

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रदेशनि विषैं समान प्रमाण लीएं योगनि के अविभाग प्रतिच्छेद भए । याका नाम समयोग परिणाम है । सो यहु सूक्ष्म निगोदिया कैं जो जघन्य योगस्थान है, ताकी जघन्य वर्गणा तैं असंख्यात गुणी जो यथायोग्य मध्यम वर्गणा, ताका वर्गनि के समान इहां सर्व आत्मप्रदेशनि विषैं समान रूप अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं । सो यहु एक समय ही रहै हैं । पीछे हीनाधिकता लीएं पूर्वस्पर्धक रूप योग परिणमि जाय हैं । बहुरि तहां लोकपूरण समय विषैं अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति अवशेष राखिए है । सो यहु अवशेष रह्या आयु तैं संख्यात गुणा जानना । इहां पूर्व स्थिति थी, तामैं इतनी स्थिति बिना अवशेष सर्व स्थिति का कांडक करि घात भया है ।

इस लोकपूरण क्रिया के अनंतरि समुद्घात क्रिया कौं समेटैं है, सो क्रम कहिए है—

एत्तो पदर कवाडं, दंडं पच्चा चउत्थसमयम्हि ।
पविसिय देहं तु जिणो, जोगणिरोधं करेदीदि ॥६२७॥

अतः प्रतरं कपाटं, दंडं प्रतीत्य चतुर्थसमये ।
प्रविश्य देहं तु जिनो, योगनिरोधं करोतीति ॥६२७॥

टीका – इस लोकपूरण के अनंतरि प्रथम समय विषै लोकपूरण कौं समेटि प्रतररूप आत्मप्रदेश करै है । द्वितीय समय विषैं प्रतर समेटि कपाट रूप आत्मप्रदेश करै है । तीसरे समय कपाट समेटि दंड रूप आत्मप्रदेश करै है । ताके अनंतरि चौथा समय विषैं दंड समेटि सर्व प्रदेश मूल शरीर विषैं प्रवेश करै है । इहां समुद्घात क्रिया के करने समेटने विषैं सात समय भए । तहां दंड के दोय समयनि विषैं औदारिक काययोग है, जातै इहां अन्य योग न संभवै हैं । बहुरि कपाट के दोय समयनि विषैं औदारिक मिश्रकाययोग है, जातै इहां मूल औदारिक शरीर अर कार्माण शरीर इन दोऊनि का अवलंबन करि आत्मप्रदेश चंचल हो हैं । बहुरि प्रतर के दोय समय अर लोकपूरण का एक समय विषैं कार्माणकाययोग है, जातैं तहां मूल शरीर का अवलंबन करि आत्मप्रदेश चंचल न हो हैं । वा शरीर योग्य नोकर्मरूप पुद्गल कौं नाहीं ग्रहण करैं हैं । तहां अनाहारक है असा जानना । पीछैं मूल शरीर विषैं प्रवेश करि तिस शरीर प्रमाण आत्मा भया, तहां औदारिक योग ही है । असैं समुद्घात क्रिया का वर्णन किया ।

बहुरि लोकपूरण पीछैं स्थिति अनुभाग कांडक घात का आरंभ कीया था, सो मूल शरीर विषैं प्रवेश करि शरीर प्रमाण आत्मा होइ अंतर्मुहूर्त काल तहां

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

विश्राम कीया । तहां संख्यात हजार स्थिति कांडक भएं पीछैं योगनि का निरोध करै है । इहां निरोध नाम नाश का जानना ।

बादरमण वचि उस्सास, कायजोगं तु सुहुमजचउक्कं ।
रुंभदि कमसो बादरसुहुमेण य कायजोगेण ॥६२८॥

बादरमनो वच उच्छ्वास, काययोगं तु सूक्ष्मजचतुष्कं ।
रुणद्धि क्रमशो बादरसूक्ष्मेण च काययोगेन ॥६२८॥

टीका – बादर काययोग रूप होइ बादर मनोयोग, वचन योग, उश्वास, काय योग इन च्यारचों कौं क्रम तें नष्ट करै है । बहुरि सूक्ष्म काययोग रूप होइ तिन चारचों सूक्ष्मनि कौं क्रम तें नष्ट करै है । सोई कहिए है—

केवली भगवान बादर काययोग प्रवर्ततौ संतौ पहले बादर मनोयोग कौं नष्ट करि सूक्ष्म रूप करै है । पीछै बादर वचन योग कौं नष्ट करि सूक्ष्म रूप करै है । पीछैं बादर उश्वास कौं नष्ट करि सूक्ष्मरूप करै है । पीछै बादर काययोग कौं नष्ट करि सूक्ष्मरूप करै है, या प्रकार जो बादर रूप इनकी शक्ति पूर्वै थी, ताकौं घटाइ सूक्ष्म करी । बहुरि केवली सूक्ष्म काययोग रूप प्रवर्ततौ संतौ पहलैं सूक्ष्म मनोयोग कौं, पीछैं सूक्ष्म वचन योग कौं, पीछैं सूक्ष्म उश्वास कौं, पीछैं सूक्ष्म काययोग कौं नष्ट करै है ।

इहां प्रश्न—जो विद्यमान का नाश संभवै । इहां काययोग रूप प्रवर्तना अन्य योग है नाहीं, जातै सिद्धांत विषैं एकै कालि एक योग कह्या है । बहुरि जे योग नाहीं, तिनका नाश कैसैं करै है ?

ताका समाधान – जो वर्तमान व्यक्तरूप काय योग ही प्रवर्तै है; परंतु मन वचन योग की वर्गणानि विषैं मन वचन योग उपजावने की शक्ति तहां पाइए है; ताकौं नष्ट करै है । तिनकी पहलैं बादर योग उपजावने की शक्ति दूर करि सूक्ष्म कृष्टि योग उपजावने की शक्तिरूप तिनकौं करै है । पीछैं ताकौं भी मिटाइ योग उपजावने की शक्ति करि रहित करै है; ऐसा अर्थ जानना ।

इहां कारण विषैं कार्य का उपचार हो है; इस न्याय करि योग कौं कारण जो वर्गणानि विषैं शक्ति, ताकौं योग कहिए है ।

इहां पूर्वै बादर योग थे, तिनकौं सूक्ष्म रूप परिणमाएं, ते कैसैं भएं ? सो कहिए है—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सण्णिविसुहुमणि पुण्णे, जहण्णमणवयणकायजोगादो ।
कुणदि असंखगुणूणं, सुहुमणिपुण्णवरदो वि उस्सासं ।।६२६।।

संज्ञिद्विसूक्ष्मे पूर्णे, जघन्यमनोवचनकाययोगतः ।
करोति असंख्यगुणोनं, सूक्ष्मनिपूर्णावरतोऽपि उच्छ्वासं ।।६२६।।

टीका – संज्ञी पर्याप्त कैं जो जघन्य मनो योग पाइए है, तातैं असंख्यात गुणा घटता असा सूक्ष्म मनोयोग करै है । अर बेंद्रिय पर्याप्त कैं जो जघन्य वचन योग पाइए है, तातैं असंख्यात गुणा बादर वचन योग था, ताकौं घटाइ तातैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म वचन योग करै है । बहुरि सूक्ष्म निगोद पर्याप्त का जघन्य काय योग तैं असंख्यात गुणा बादर काययोग था, ताकौं मिटाइ तातैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म काययोग करै है । बहुरि सूक्ष्म निगोदिया पर्याप्त का जघन्य उश्वास तैं असंख्यात गुणा बादर उश्वास था, ताकौं मिटाइ तातैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म उश्वास करै है ।

एक्केक्कस्स णिठंभणकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो हु ।
सुहुमं देहणिमाणमाणं हियमाणि करणाणि ।।६३०।।

एकैकस्य निष्टंभनकालो अंतर्मुहूर्तमात्रो हि ।
सूक्ष्मं देहनिर्माणं आनं हीयमानं करणानि ।।६३०।।

टीका – एक एक बादर वा सूक्ष्म मनोयोगादिक के निरोध करने का काल प्रत्येक अंतर्मुहूर्त मात्र जानना । बहुरि सूक्ष्म काययोग विषैं तिष्ठता सूक्ष्म उश्वास कौं नष्ट करने के अनंतरि सूक्ष्म काययोग नाश करने कौं प्रवर्तै है ।

ताकैं बिना इच्छा अबुद्धिपूर्वक आगैं कहिए है, ते कार्य हो हैं ।

सुहुमस्स य पढमादो, मुहुत्तअंतो त्ति कुणदि हु अपुव्वे ।
पुव्वगफड्ढगहेट्ठा, सेढिस्स असंखभागमिदो ।।६३१।।

सूक्ष्मस्य च प्रथमात्, मुहूर्तांतरिति करोति हि अपूर्वान् ।
पूर्वस्पर्धकाधस्तनं, श्रेण्या असंख्यभागमितं ।।६३१।।

टीका – सूक्ष्म काय योग होने का प्रथम समय तैं लगाय अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत पूर्व स्पर्धकनि के नीचैं जगच्छ्रेणि के असंख्यातवें भाग मात्र अपूर्व स्पर्धक करै है । सोई कहिए है—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पूर्व स्पर्धकनि का स्वरूप गोम्मटसार का कर्मकांड विषै जो बंध, सत्त्व, उदय अधिकार है, तिस विषैं प्रदेश बंध का कथन का प्रसंग पाइ योगनि का वर्णन कीया है, तहां तै जानना; इहां भी किछू कहिए है—

जघन्य योगस्थान युक्त जीव, ताके लोक मात्र प्रदेश तिन विषैं जिस प्रदेश विषैं सब तैं स्तोक योग शक्ति पाइए ताकौं स्थापि, ताके उपरि तिस तैं बधती अर अन्य प्रदेशनि तैं हीन जिस अन्य प्रदेश विषैं योग शक्ति पाइए, ताकौं स्थापैं, तिस प्रदेश तैं विषैं जितनी योग शक्ति बधती है, ताका नाम अविभाग प्रतिच्छेद है। बुद्धि विषैं इतने प्रमाण खंड कल्पि याकरि योगशक्ति का प्रमाण कीजिए तब जघन्य शक्ति युक्त प्रदेशनि विषैं असंख्यात लोक मात्र अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं। इनका समूह रूप जो एक प्रदेश, ताकौं जघन्य वर्ग कहिए है। बहुरि इतने-इतने अविभाग प्रतिच्छेद जिनि प्रदेशनि विषैं समान रूप पाइए, तिनिके समूह का नाम जघन्य वर्गणा है। ते प्रदेश कितने हैं ?

सर्व जीव के प्रदेशनि कौं साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं एक भाग मात्र हैं, सो असंख्यात जगत्प्रतर प्रमाण हैं। इहां एक गुणहानि विषैं जो स्पर्धकनि का प्रमाण, ताकौं एक स्पर्धक विषैं जो वर्गणानि का प्रमाण, ताकौं गुणैं जो होइ, सो एक गुणहानि का प्रमाण जानना। बहुरि ताके उपरि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तैं एक अविभाग प्रतिच्छेद जिनि विषैं अधिक पाइए, असैं वर्गनि का समूह रूप द्वितीय वर्गणा है। ते वर्गरूप प्रदेश कितने हैं ?

जघन्य वर्गणा के प्रदेशनि तैं एक विशेष मात्र घटती हैं। विशेष का प्रमाण जघन्य वर्गणा कौं दोय गुणहानि का भाग दीएं, जो होइ, सो जानना। बहुरि इहां तैं ऊपरि द्वितीय गुणहानि की प्रथम वर्गणा पर्यंत वर्गणानि विषैं प्रदेश रूप वर्गणानि का प्रमाण एक एक विशेष मात्र घटता क्रम तैं जानना।

तहां द्वितीय वर्गणा का वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तैं एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप तृतीय वर्गणा होइ असैं एक एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का क्रम लीएं जगच्छ्रेणि का असंख्यातवां भाग मात्र वर्गणानि की रचना करिए, इनका समूह का नाम जघन्य स्पर्धक है। बहुरि ताके ऊपरि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तैं दूणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा हो है। ताके ऊपरि तातैं एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप, ताकी द्वितीय वर्गणा है, असैं क्रम

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

लीएं श्रेणी का असंख्यातवां भाग मात्र वर्गणा होइ, तिनके समूह का नाम द्वितीय स्पर्धक है। बहुरि ताके ऊपरि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तैं तिगुणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप तृतीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा होइ। ताके ऊपरि पूर्वोक्तवत् एक एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीयादि वर्गणा होइ, अैसैं श्रेणी का असंख्यातवां भाग मात्र वर्गणा होइ, तिनके समूह का नाम तृतीय स्पर्धक है। या प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद बधने का यावत् अनुक्रम होइ तावत् सोई स्पर्धक अर युगपत् अनेक स्पर्धक बधै, अन्य स्पर्धक होंइ। सो अैसैं जगच्छ्रेणि के असंख्यातवें भाग मात्र स्पर्धक भएं, तिनिका समूह रूप प्रथम गुणहानि हो है। बहुरि ताके ऊपरि एक गुणहानि विषैं जो स्पर्धकनि का प्रमाण तातैं एक अधिक प्रमाण करि गुणित जो जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण होइ तितने अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय गुणहानि का प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा होइ। या विषैं वर्गनि का प्रमाण प्रथम गुणहानि की प्रथम वर्गणा के वर्गनि का प्रमाण तैं आधा जानना। बहुरि ताके ऊपरि प्रथम गुणहानिवत् अनुक्रम जानना। वर्गणानि विषै वर्गनि का प्रमाण एक एक विशेष घटता है। सो इहां विशेष का प्रमाण प्रथम गुणहानि के विशेष तैं आधा जानना। अैसैं द्वितीय गुणहानि समाप्त होइ है।

अैसैं जघन्य स्पर्धक तैं लगाय जितने स्पर्धक होंइ तितना गुणाकार करि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि कौं गुणैं विवक्षित स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का वर्ग विषैं अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण होइ। ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानि विषैं एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधता क्रम लीएं वर्ग पाइए है। असंख्यात लोक मात्र अविभाग प्रतिच्छेदनि का समूह रूप एक प्रदेश का नाम वर्ग है। असंख्यात जगत्प्रतर मात्र वर्गनि का समूह रूप एक वर्गणा है। जगच्छ्रेणि के असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणानि का समूह रूप एक स्पर्धक है। ताके असंख्यातवें भाग मात्र जगच्छ्रेणि का असंख्यातवां भाग प्रमाण स्पर्धकनि का समूह रूप एक गुणहानि हो है। गुणहानि गुणहानि प्रति वर्गणानि विषैं वर्गनि का प्रमाण वा विशेष का प्रमाण क्रम तैं आधा आधा हो है। याही तैं गुणहानि अैसा नाम है। अैसैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र नाना गुणहानि का समूह रूप जघन्य योगस्थान हो है। स्पर्धकनि की संदृष्टि इहां जघन्य वर्ग विषैं अविभाग प्रतिच्छेद आठ, सो अैसैं वर्गनि का समूह रूप प्रथम वर्गणा है, ताके ऊपरि नव नव अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय वर्गणा

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अैसें एक एक बधता क्रम ग्यारह अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्ग पर्यंत कीया; इहां प्रथम स्पर्धक भया। बहुरि दूसरे स्पर्धक के प्रथम वर्गणा के वर्गनि विषै सोलह सोलह अविभाग प्रतिच्छेद ऊपरि एक एक बधता बहुरि तीसरे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के वर्गनि विषैं चौईस चौईस ऊपरि एक एक बधता अविभाग प्रतिच्छेद है। अैसें अंक संदृष्टि करि पूर्वोक्त कथन के अनुसारि रचना जाननी—

	अंतर		अंतर		अंतर		अंतर	
११	०	१९	०	२७	०	३५	०	४३
१० १०	०	१८ १८	०	२६ २६	०	३४ ३४	०	४२ ४२
९ ९ ९	०	१७ १७ १७	०	२५ २५ २५	०	३३ ३३ ३३	०	४१ ४१ ४१
८ ८ ८ ८	०	१६ १६ १६ १६	०	२४ २४ २४ २४	०	३२ ३२ ३२ ३२	०	४० ४० ४० ४०

अैसें जघन्य योगस्थान सूक्ष्म निगोदिया लब्धि अपर्याप्त का विग्रहगति विषैं प्रथम समयवर्ती जीव कैं हो है। ताके प्रदेशनि विषैं योगशक्ति की हीन-अधिकता पूर्वोक्त प्रकार जाननी। बहुरि या विषैं सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग मात्र जे जघन्य स्पर्धक, तिनके जेते अविभाग प्रतिच्छेद होंइ, तितने मिलाएँ दूसरा स्थान हो है। तिस जघन्य योगस्थान तैं बधता औरनि तैं घटता योगस्थान कोई जीव के होइ तो दूसरा स्थान होइ, यातैं घाटि न होइ। या प्रकार एक एक स्थान प्रति सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग मात्र जघन्य स्पर्धक बधै। अैसें जगच्छ्रेणि का असंख्यातवां भाग मात्र स्थान भएं सर्वोत्कृष्ट योगस्थान हो है। सो संज्ञी पर्याप्तक कैं संभवै है। याप्रकार योगस्थान है, तिन विषैं सयोगि जिन हैं, सो पहिली संज्ञी पर्याप्त कैं संभवता जो बादर काययोग रूप स्थान, तिस रूप प्रवर्तती ताकौ नष्ट करि सूक्ष्म निगोदिया का जघन्य स्थान तैं असंख्यात गुणा घटता सूक्ष्म काययोग तिसरूप प्रवर्त्या। बहुरि तिस पूर्व स्पर्धक रूप सूक्ष्म काययोग की शक्ति कौं अपूर्व स्पर्धक रूप परिणमावे है। इहां तैं पहले कबहूं अैसी क्रिया न भई, तातैं सार्थक अपूर्व स्पर्धक नाम है। ते अपूर्व स्पर्धक योगनि का जघन्य स्थान संबंधी जघन्य स्पर्धक के नीचै असंख्यात गुणा घटता अविभाग प्रतिच्छेद लीएं हो हैं। तिनका प्रमाण जगच्छ्रेणि के असंख्यातवां भाग प्रमाण है।

पुव्वादिवग्गणाणं, जीवपदेसा विभागपिंडादो।
होदि असंखं भागं, अपुव्वपढमम्हि ताण दुगं ॥६३२॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पूर्वादिवर्गणानां, जीवप्रदेशाविभागपिंडतः ।
भवति असंख्यं भागमपूर्वप्रथमे तयोर्द्विकम् ॥६३२॥

टीका – पूर्वस्पर्धकनि के जीव के प्रदेशनि का पिंड तैं अर आदि वर्गणा का अविभाग प्रतिच्छेदनि का पिंड तैं अपूर्व स्पर्धक का प्रथम समय विषैं तिनके ते दोऊ असंख्यातवें भाग मात्र हो हैं।

भावार्थ–पूर्व स्पर्धकनि के सर्व प्रदेश साधिक द्वयर्धगुणहानि गुणित प्रथम वर्गणा मात्र हैं। तिनकौं अपकर्षण भागहार मात्र असंख्यात का भाग दीएं जो एक भाग मात्र प्रदेश, तिनकौं अपूर्व स्पर्धक रूप करे हैं। बहुरि पूर्व स्पर्धकनि की जो आदि वर्गणा, ताका वर्ग विषैं जेते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए है, ताकौं पल्य के असंख्यातवां भाग मात्र असंख्यात का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र अपूर्वस्पर्धक की अंत वर्गणा का वर्ग विषैं अविभाग प्रतिच्छेद पाइए हैं। इहां प्रथम समय विषैं अपकर्षण कीए जे जीव के प्रदेश, तिनि विषैं अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं तो बहुत प्रदेश दीजिए है। अर द्वितीयादि अंत पर्यंत वर्गणानि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। इहां विशेष का प्रमाण प्रथम वर्गणा कौं जगच्छ्रेणि का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं आवै है। बहुरि अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषैं दीया प्रदेश समूह कौं साधिक अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र पूर्वस्पर्धक[1] की प्रथम वर्गणा विषैं दीया प्रदेश समूह हो है। ताके ऊपरि यथोचित विशेष घटता क्रम लीएं प्रदेश दीजिए है। इहां प्रदेश देने का अर्थ यहु जानना। जो प्रदेशनि कौं अैसें योगरूप परिणमाइए है। इहां प्रथम समय विषैं कीने अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण जो एक गुणहानि विषैं पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण है, ताके असंख्यातवें भाग मात्र जानना।

ओक्कट्टदि पडिसमयं, जीवपदेसे असंखगुणियकमे ।
कुणदि अपुव्वफड्ढयं, तग्गुणहीणक्कमेणेव ॥६३३॥

अपकर्षति प्रतिसमयं, जीव प्रदेशान् असंख्यगुणितक्रमेण ।
करोति अपूर्वस्पर्धकं, तद्गुणहीनक्रमेणैव ॥६३३॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषैं समय-समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम करि जीव प्रदेशनि कौं अपकर्षण करै है। बहुरि असंख्यात गुणा घटता क्रम करि नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है। तहां द्रव्य देने का विधान कहिए है—

१–पूर्वस्पर्धक के स्थान पर ख प्रति में अपूर्वस्पर्धक पाठ मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्वितीय समय विषैं जेते प्रथम समय विषैं प्रदेश अपकर्षण कीए, तिनि तैं असंख्यात गुणा प्रदेशनि कौं अपकर्षण करि प्रथम समय विषैं कीने थे जे अपूर्वस्पर्धक, तिनके नीचैं इस समय विषैं नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है। तहां अपकर्षण कीए प्रदेशनि विषैं तिन नवीन कीए अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं बहुत प्रदेश दीजिए है। ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत वर्गणानि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। यहां प्रथम समय विषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकनि तैं द्वितीय समय विषैं कीएं नवीन अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण असंख्यात गुणा घटता जानना। बहुरि तिसकी अंत वर्गणा के ऊपरि प्रथम समय विषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा, तीहि विषैं तातैं असंख्यात गुणा घटता दीजिए है। ताके ऊपरि पूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। बहुरि तृतीयादि समयनि विषैं भी असैं ही विधान जानना।

विशेष इतना—समय-समय प्रति अपकर्षण कीए प्रदेशनि का प्रमाण असंख्यात गुणा क्रम तैं जानना। अर नीचैं-नीचैं नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है, तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता क्रम तैं जानना। बहुरि तहां अपकर्षण कीया प्रदेशनि विषैं नवीन स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं बहुत प्रदेश देइ। ताके ऊपरि ताकी अंत वर्गणा पर्यंत तौ विशेष घटता क्रम लीएं देना। अर ताके ऊपरि पूर्व समय विषैं कीने स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषैं असंख्यात गुणा घटता दीजिए है। ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। असैं देय प्रदेशनि का विधान कह्या अर दृश्यमान प्रदेश सर्व समयनि विषैं पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि कैं विशेष घटता क्रम लीएं ही जानना।

सेढिपदस्स असंखं, भागं पुव्वाण फड्ढयाणं वा।
सव्वे होंति अपुव्वा, हु फड्डया जोगपडिबद्धा ॥६३४॥

श्रेणिपदस्यासंख्यं, भागं पूर्वेषां स्पर्धकानां वा।
सर्वे भवंति अपूर्वा, हि स्पर्धका योगप्रतिबद्धाः ॥६३४॥

टीका – सर्व समयनि विषै कीए योग संबंधी अपूर्व स्पर्धक, तिनिका जो प्रमाण सो जगच्छ्रेणि का प्रथम वर्गमूल के असंख्यातवें भाग मात्र है। अथवा सर्व पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण के असंख्यातवें भाग मात्र है। जातैं पूर्व स्पर्धकनि विषैं पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र गुणहानि पाइए है। तहां एक गुणहानि विषैं जो स्पर्धकनि का प्रमाण, ताके असंख्यातवें भाग मात्र सर्व अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण है। (ऐसे

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

अंतर्मुहूर्त काल विषै अपूर्वस्पर्धकनि का प्रमाण है।)[१] असैं अंतर्मुहूर्त काल विषैं अपूर्व स्पर्धक क्रिया हो है। इहां स्थिति अनुभाग कांडक का घात गुणश्रेणी निर्जरा पूर्ववत् ही प्रवर्ते है।

एत्तो करेदि किट्टिं, मुहुत्तअंतो त्ति ते अपुव्वाणं।
हेट्ठा दु फड्ढयाणं, सेढिस्स असंखभागमिदं ॥६३५॥

इतः करोति कृष्टि मुहूर्तांतरिति ता अपूर्वेषाम्।
अधस्तनात् स्पर्धकानां श्रेण्या असंख्यभागमितं ॥६३५॥

टीका – याके अनंतरि अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत अपूर्व स्पर्धकनि के नीचैं सूक्ष्म कृष्टि करै है। जो पूर्व अपूर्व स्पर्धकरूप योग शक्ति थी, ताकौं घटाइ असंख्यात गुणी घाटि करै है। तिन सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण जगच्छ्रेणि के असंख्यातवें भाग मात्र है। एक स्पर्धक विषैं जो वर्गणानि का प्रमाण, ताके असंख्यातवें भाग मात्र है।

अपुव्वादिवग्गणाणं, जीवपदेसाविभागपिंडादो।
होंति असंखं भागं, किट्टीपढमम्हि ताण दुगं ॥६३६॥

अपूर्वादिवर्गणानां, जीवप्रदेशाविभागपिंडतः।
भवंति असंख्यं भागं, कृष्टिप्रथमे तयोर्द्विकम् ॥६३६॥

टीका – अपूर्व स्पर्धक संबंधी सर्व जीव प्रदेशनि कै अर अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि के असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टिकरण का प्रथम समय विषैं तिनके ते दोऊ हो हैं।

भावार्थ–सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि का जो प्रदेश समूह, ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक भाग मात्र प्रदेश प्रथम समय विषैं ग्रहि कृष्टि करिए है। सो इनिका प्रमाण सर्व अपूर्व स्पर्धकनि के प्रदेशनि का प्रमाण के असंख्यातवें भाग मात्र है। बहुरि अपूर्व[२] स्पर्धकनि की जघन्य वर्गणा के वर्ग के जेते अविभाग प्रतिच्छेद हैं, तिनके असंख्यातवें भाग मात्र उत्कृष्ट अंतकृष्टि के एक प्रदेश संबंधी अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है।

बहुरि इहां प्रथम समय विषैं अपकर्षण कीया प्रदेश देने का विधान कहिए है–जघन्य कृष्टि विषैं बहुत प्रदेश दीजिए है। ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत

१–इतना वाक्य घ प्रति में मिलता है।
२–अपूर्व के स्थान पर अ और ख प्रति में पूर्व पाठ मिलता है।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

कृष्टिनि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं (द्रव्य) दीजिए है। इहां विशेष का प्रमाण प्रथम कृष्टि कौं जगच्छ्रेणि का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं आवै है। बहुरि अंत कृष्टि तैं अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै असंख्यात गुणा घाटि दीजिए है। बहुरि उपरि विशेष घटता क्रम लीएं प्रदेश दीजिए है। इहां प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टिनि का प्रमाण है, सो एक स्पर्धक विषैं जितना वर्गणानि का प्रमाण, ताके असंख्यातवें भाग मात्र है।

उक्कट्टदि पडिसमयं, जीवपदेसे असंखगुणियकमे।
तंगुणहीणकमेण य, करेदि किट्टिं तु पडिसमए ॥६३७॥

अपकर्षति प्रतिसमयं, जीवप्रदेशान् असंख्यगुणितक्रमेण।
तद्गुणहीनक्रमेण च, करोति कृष्टिं तु प्रतिसमयं ॥६३७॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषैं समय-समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम करि जीव के प्रदेशनि कौं अपकर्षण करै है। बहुरि समय-समय प्रति पूर्व समय विषैं कीनी जे कृष्टि, तिनके नीचैं असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं नवीन कृष्टि करै है।

इहां अपकर्षण कीया प्रदेश देने का विधान कहिए है-नवीन कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषैं जो बहुत प्रदेश दीजिए है, ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत कृष्टिनि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। ताके ऊपरि पूर्व समय विषैं कीनी कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषैं असंख्यात गुणा घटता दीजिए है। इस कृष्टि विषैं पूर्व जेते प्रदेश थे, तितने अर एक विशेष इतना प्रदेश नवीन अंत कृष्टि तैं या विषै घाटि दीजिए है है। बहुरि ताके ऊपरि अंत कृष्टि पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं दीजिए है। इहां मध्यम खंडादि विधान पूर्वोक्त प्रकार जानना। बहुरि अंत कृष्टि विषैं दीया द्रव्य तैं अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा विषैं दीया प्रदेश संख्यात गुणा जानना। ताके ऊपरि अंत पूर्वस्पर्धक वर्गणा पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं प्रदेश दीजिए है।

सेढिपदस्स असंखं, भागमपुव्वाण फड्ढयाणं व।
सव्वाओ किट्टीओ, पल्लस्स असंखभागगुणिदकमा ॥६३८॥

श्रेणिपदस्य असंख्यं, भागं अपूर्वेषां स्पर्धकानां वा।
सर्वाः कृष्टयः पल्यस्य, असंख्यभागगुणितक्रमाः ॥६३८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सर्व समयनि विषैं कीनी कृष्टिनि का प्रमाण जगच्छ्रेणि का असंख्यातवां भाग मात्र है। अथवा अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण के असंख्यातवां भाग मात्र है।

इहां कोऊ कहै–स्पर्धक अर कृष्टि विषैं विशेष कहा ?

ताका समाधान–अविभाग प्रतिच्छेद अपेक्षा स्पर्धक तौ विशेष बधता क्रम लीएं है। अपूर्व स्पर्धकनि विषैं भी पूर्व स्पर्धकवत् ही अविभाग प्रतिच्छेदनि का क्रम पाइए है। बहुरि कृष्टि है सो गुणकार बधता क्रम लीएं है असा विशेष है। कृष्टिनि विषै गुणकार पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र जानना। अंत कृष्टि विषैं समान अविभाग प्रतिच्छेद युक्त असंख्यात जगत्प्रतर प्रमाण जीव प्रदेश हैं। तिन विषैं जो एक प्रदेश तींहि विषैं जेते अविभाग प्रतिच्छेद हैं, तिनतैं द्वितीय कृष्टि का एक प्रदेश विषैं पल्य का असंख्यातवां भाग गुणै हैं। तातैं तृतीय कृष्टि का एक प्रदेश विषैं तितने गुणे हैं; असैं अंत कृष्टि पर्यंत क्रम जानना। अंत कृष्टि तैं अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का एक प्रदेश विषैं अविभाग प्रतिच्छेद पल्य का असंख्यातवां भाग गुणा है। इस गुणकार कौं कृष्टि स्पर्धक संबंधी कहिए, ताके ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानि के प्रदेशनि विषैं यथासंभव स्पर्धक विधानवत् विशेष बधते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए हैं; असैं एक एक प्रदेश अपेक्षा कथन कीया। नाना प्रदेशनि की अपेक्षा जघन्य कृष्टि के सर्व प्रदेश संबंधी अविभाग प्रतिच्छेदनि कौं पल्य का असंख्यातवां भाग करि गुणें द्वितीय कृष्टि के सर्व अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है। असैं अंत कृष्टि पर्यंत गुणकार जानना। बहुरि अंत कृष्टि तैं अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के सर्व प्रदेश संबंधी अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात गुणे घाटि हैं। जातैं अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै अविभाग प्रतिच्छेद अंत कृष्टि तैं जेते गुणे हैं, तिस गुणकार तैं असंख्यात गुणे गुणकार करि गुणित तिस प्रथम वर्गणा के प्रदेश मात्र अंत कृष्टि के प्रदेश पाइए हैं।

एत्थापुव्वविहाणं, अपुव्वफड्ढयविहिं व संजलणे।
बादरकिट्टिविहिं वा, करणं सुहुमाण किट्टीणं ॥६३९॥

अत्रापूर्वविधानं, अपूर्वस्पर्धकविधिरिव संज्वलने।
बादरकृष्टिविधिरिव, करणं सूक्ष्माणां कृष्टीनां ॥६३९॥

टीका – इहां योगनि के अपूर्व स्पर्धक करने का विधान जैसें पूर्वैं संज्वलन कषाय के अपूर्व स्पर्धक करने का विधान कह्या, तैसें जानना। बहुरि इहां योगनि की

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सूक्ष्म कृष्टि करने का विधान पूर्वं जैसें संज्वलन कषाय की बादर कृष्टि करने का विधान कह्या है, तैसें जानना। प्रमाणादिक का विशेष है, सो विशेष जानना।

किट्टीकरणे चरमे, से काले उभयफड्ढये सव्वे।
णासेइ मुहुत्तं तु, किट्टीगदवेदगो जोगी ॥६४०॥

कृष्टिकरणचरमे, स्वे काले उभयस्पर्धकान् सर्वान्।
नाशयति मुहूर्तं तु, कृष्टिगतवेदको योगी ॥६४०॥

टीका – कृष्टि करण काल का अंत समय भएं, ताके अनंतरि अपने काल विषैं सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धक रूप प्रदेशनि कौं नष्ट करै है। कृष्टि करण काल का अंत समय पर्यंत पूर्व अपूर्व स्पर्धक दृश्यमान थे, अब ते सर्व ही कृष्टि रूप परिणमे, बहुरि इस समय तैं लगाय सयोगी गुणस्थान का अंत पर्यंत जो अंतर्मुहूर्त काल, तिस विषैं कृष्टि को प्राप्त योग, ताकौं वेदे है–अनुभवे है। प्रदेशनि विषै जो कृष्टि रूप योग शक्ति भई, सो अब वह प्रगट परिणामै है।

प्रथमे असंखभागं, हेट्ठुवरिं णासिदूण बिदियादी।
हेट्ठुवरिमसंखगुणं, कमेण किट्टिं विणासेदि ॥६४१॥

प्रथमे असंख्यभागं, अधस्तनोपरि नाशयित्वा द्वितीयादौ।
अधस्तनोपर्यसंख्यगुणं, क्रमेण कृष्टिं विनाशयति ॥६४१॥

टीका – कृष्टि वेदक काल का प्रथम समय विषैं स्तोक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त नीचैं की अर बहुत अविभाग प्रतिच्छेद युक्त ऊपरि की जे कृष्टि, तिनकौं बीचि की कृष्टि रूप परिणमाइ नष्ट करै है। तिनका प्रमाण सर्व कृष्टिनि के असंख्यातवें भाग मात्र है। बहुरि द्वितीयादि समयनि विषैं तिनतैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं नीचैं ऊपरि की कृष्टिनि कौं तैसें ही नष्ट करै है। इहां ऐसा जानना—

नीचै ऊपरि की कृष्टिनि कौं नाहीं वेदै है। बीचि की कृष्टिनि कौं वेदै है। वेदक काल विषै नीचै ऊपरि की कृष्टि है, तिनिकौं बीचि कौं कृष्टि रूप परिणमाइ वेदै है।

मज्झिम बहुभागुदया, किट्टिं पक्खिय विसेसहीणकमा।
पडिसमयं सत्तीदो, असंखगुणहीणया होंति ॥६४२॥

मध्या बहुभागोदयाः, कृष्टिमपेक्ष्य विशेषहीनक्रमाः।
प्रतिसमयं शक्तितः, असंख्यगुणहीनका भवंति ॥६४२॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

टीका – सर्व कृष्टिनि कौं असंख्यात का भाग दीए तहां बहुभाग मात्र जे बीचि की कृष्टि, ते उदय रूप हो हैं। ते प्रथम समय तैं द्वितीयादि समयनि विषैं विशेष घटता क्रम लीएं जाननी। ऐसैं कृष्टि नाश करने तैं अविभाग प्रतिच्छेद रूप शक्ति अपेक्षा प्रथम समय तैं द्वितीयादि सयोगी का अंत समय पर्यंत असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं योग पाइए हैं।

किट्टिगजोगी झाणं, झायदि तदियं खु सुहुमकिरियं तु।
चरिमे असंखभागे, किट्टीणं णासदि सजोगी ॥६४३॥

कृष्टिगयोगी ध्यानं ध्यायति तृतीयं खलु सूक्ष्मक्रियं तु।
चरमे असंख्यभागान् कृष्टीनां नाशयति सयोगी ॥६४३॥

टीका – ऐसैं सूक्ष्मकृष्टि का वेदक, जो सयोगी जिन, सो तीसरा सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति नामा शुक्लध्यान कौं ध्यावै है। सूक्ष्म कृष्टि कौं प्राप्त काययोग जनित इहां क्रिया जो परिस्पंद सो पाइए है। अर अप्रतिपाति कहिए पडने तैं रहित है, तातैं तिस ध्यान का नाम सार्थ है। याका फल योग निरोध होना ही जानना। यद्यपि प्रत्यक्ष निरंतर ज्ञानी कैं चिंता निरोध लक्षण रूप ध्यान संभवै नाहीं तथापि योगनि का निरोध होतैं आस्रव निरोध होने रूप ध्यान फल कौ देखि उपचार तैं केवली कैं ध्यान कह्या है। अथवा छद्मस्थनि कैं चिंता का कारण योग है, तातैं कारण विषैं कार्य का उपचार करि योग का भी नाम चिंता है। ताका इहां निरोध हो है। तातैं भी ध्यान कहना संभवै है। छद्मस्थनि कैं चिंता का निरोध का नाम ध्यान है, केवली के योग निरोध का नाम ध्यान है ऐसा जानना। ऐसैं पूर्वोक्त प्रकार समय-समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं कृष्टिनि कौं नष्ट करता संता सयोगी का अंत समय विषै जे कृष्टिनि का संख्यात बहुभाग मात्र बीचि की कृष्टि अवशेष रहीं, तिनि कौं नष्ट करै है। जातैं याके अनंतरि अयोगी होना है।

जोगिस्स सेसकालं, मोत्तूण अजोगिसव्वकालं च।
चरिमं खंडं गेण्हदि, सीसेण य उवरिमठिदीओ ॥६४४॥

योगिनः शेषकालं, मुक्त्वा अयोगिसर्वकालं च।
चरमं खंडं गृह्णाति, शीर्षेण च उपरिस्थितिः ॥६४४॥

टीका – सयोगी गुणस्थान का अंतर्मुहूर्त मात्र काल अवशेष रहैं वेदनी, नाम, गोत्र का अंतस्थिति कांडक कौं ग्रहै है। ताकरि सयोगी का जो अवशेष काल रह्या

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

सो अर अयोगी का सर्व काल मिलाएं जो होइ तितने निषेकनि कि छौंडो अवशेष सर्व स्थिति के गुणश्रेणी शीर्ष सहित जे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनकौं लांछित करै है। नष्ट करने कौं प्रारंभै है।

तत्थ गुणसेढिकरणं, दिज्जादिकमो य सम्मखवणं वा।
अंतिमफालीपडणं, सजोगगुणठाणचरिमम्हि ॥६४५॥

तत्र गुणश्रेणिकरणं, देयादिक्रमश्च सम्यक्षपणमिव।
अंतिमस्फालिपतनं, सयोगगुणस्थानचरमे ॥६४५॥

टीका – तहां गुणश्रेणी का करना वा तहां देय द्रव्यादिक का अनुक्रम सो जैसैं पूर्वं क्षायिक सम्यक्त्व होतें सम्यक्त्व मोहनी का क्षपणाविधान विषैं कह्या था, तैसैं जानना। अंत कांडक के द्रव्य कौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त क्रम तैं उदय निषेक विषैं स्तोक द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि कांडक घात भए पीछैं जो अवशेष स्थिति रहेगी, ताका अंत समय पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। यहां यहु गुणश्रेणी आयाम प्रारंभ भया, सो गलितावशेष जानना। बहुरि इसका अंत समय संबंधी निषेक ही का नाम गुणश्रेणी शीर्ष है। बहुरि इसतैं याके ऊपरि जो स्थिति कांडक का प्रथम निषेक, ताविषै असंख्यात गुणा द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि पूर्वैं जो गुणश्रेणी आयाम था, ताका अंत पर्यंत विशेष घटता क्रम करि दीजिए है, ताके ऊपरि जो अनंतरवर्ती निषेक, ता विषैं असंख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। असैं अंत कांडकोत्करण का प्रथमादि समय विषैं द्रव्य देने का विधान है। सो ऐसे अंत कांडक की द्विचरम फालि का पतन रूप जो सयोगी का द्विचरम समय तहां पर्यंत तौ असैं ही विधान है। बहुरि सयोगी का अंत समय विषैं तिनकी अंत फालि का पतन हो है। तहां तिस अंत फालि के द्रव्य कौं उदय निषेक विषैं स्तोक अर द्वितीयादि अयोगी का अंत समय संबंधी पर्यंत निषेकनि विषैं असंख्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। तहां विशेष है सो जानि लेना। असैं सयोगी का अंत समय विषैं अघातियानि के अंत कांडक की अंत फालि का पतन अर योग का निरोध अर सयोग गुणस्थान की समाप्ति युगपत् हो है। यातैं उपरि गुणश्रेणी अर स्थिति अनुभाग का घात न हो है। अधः स्थिति गलन करि एक एक समय विषैं एक एक निषेक क्रम तैं उदय रूप होइ निर्जरै है। सो समय समय असंख्यात गुणा द्रव्य की निर्जरा प्रवर्तै है। असैं सयोग गुणस्थान का प्ररूपण समाप्त भया।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

से काले जोगिजिणो, ताहे आउगसमा हि कम्माणि ।
तुरियं तु समुच्छिण्णं, किरियं झायदि अयोगिजिणो ॥६४६॥

स्वे काले योगिजिनः, तत्र आयुष्कसमानि कर्माणि ।
तुरीयं तु समुच्छिन्नक्रियं ध्यायति अयोगिजिनः ॥६४६॥

टीका – ताके अनंतरि अपने काल विषैं अयोगी जिन हो है । तहां आयु समान तीन अघातियानि की स्थिति हो है । सो अयोगी जिन; चौथा समुच्छिन्न क्रियानिवृत्ति नामा शुक्ल ध्यान कौं ध्यावै है । सो समुच्छिन्न कहिए उच्छेद भई मन, वचन, काय की क्रिया अर निवृत्ति जो प्रतिपात, ताकरि रहित यहु ध्यान है; तातैं याका नाम सार्थ है । इहां भी ध्यान का उपचार पूर्वोक्त प्रकार जानना, जातैं वस्तु वृत्ति करि एकाग्र चितानिरोध ध्यान का लक्षण है, सो केवली विषैं संभवै नाहीं । **समस्त आस्रव रहित केवली कैं अवशेष कर्म निर्जरा को कारण जो स्वात्मा विषैं प्रवृत्ति, ताही का नाम ध्यान है ।**

सीलेसिं संपत्तो, णिरुद्धणिस्सेसआसओ जीवो ।
बंधरयविप्पमुक्को, गयजोगो केवली होइ ॥६४७॥

शीलेशत्वं संप्राप्तो, निरुद्धनिःशेषास्रवो जीवः ।
बंधरजोविप्रमुक्तः, गतयोगः केवली भवति ॥६४७॥

टीका – गया है योग जाका अैसा अयोग केवली जीव है, सो समस्त शील गुण का स्वामीपना होने तैं शैलेश्य अवस्था को प्राप्त हो गया है । यद्यपि सयोगी जिन कौं समस्त शील गुण का स्वामीपना संभवै है, परंतु योगनि का आस्रव पाइए है । तातैं सकल संवर के न संभवनै तैं ताके शैलेश्य अवस्था न संभवै है । अयोगी कैं योगास्रव भी न पाइए है तातैं सकल संवर होने तैं ताके शैलेश्य अवस्था संभवै है । बहुरि सो अयोगी जीव निरोधे है, समस्त आस्रव जानैं अैसा है । बहुरि कर्मबंधरूपी रजकरि विप्रमुक्त कहिए रहित है ।

भावार्थ यहु – अयोगी जिन सर्वथा निरास्रव निर्बंध भया है ।

बाहत्तरिपयडीओ, दुचरिमगे तेरसं च चरिमम्हि ।
झाणजलणेण कवलिय, सिद्धो सो होदि से काले ॥६४८॥

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

द्वासप्तति प्रकृतयः द्विचरमके त्रयोदश च चरमे ।
ध्यानज्वलनेन कवलितः सिद्धः स भवति स्वे काले ।।६४८।।

टीका – अयोगी का काल पांच ह्रस्व अक्षर जेते काल करि उच्चारण करिए तितना है । तहां एक एक समय विषैं एक एक निषेक गलन रूप जो अधः स्थिति गलन ताकरि क्षीण हुई तिस काल का द्विचरम समय विषैं बहत्तरि प्रकृति अर अंत समय विषै तेरह प्रकृति शुक्लध्यान रूपी ज्वलन जो अग्नि, ताकरि कवलित कहिए ग्रासीभूत हो हैं । तहां अनुदयरूप वेदनीय, देवगति, शरीर ५, बंधन ५, संघात ५, संस्थान ६, अंगोपांग ३, संहनन ६, वर्णादिक २०, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उश्वास, अप्रशस्त प्रशस्त विहायोगति, अपर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, सुस्वर, दुःस्वर, अनादेय, अयशस्कीर्ति, निर्माण, नीच गोत्र ए बहत्तरि प्रकृति तौ द्विचरम विषैं क्षय भईं । बहुरि उदयरूप वेदनीय, मनुष्य आयु, मनुष्य गति, पंचेंद्री जाति, मनुष्यानुपूर्वी, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति तीर्थंकर, उच्चगोत्र ए तेरह प्रकृति अंत समय विषैं क्षय भईं । असैं क्षय करि अनंतर समय विषैं सिद्ध हो है । जैसें कालिमा रहित शुद्ध सोना निष्पन्न होइ, तैसें सर्व कर्म मल रहित कृतकृत्य दशारूप निष्पन्न आत्मा हो है ।

तिहुवणसिहरेण मही, वित्थारे अट्ठजोयणुदयथिरे ।
धवलच्छत्तायारे, मणोहरे ईसिपब्भारे ।।६४९।।

त्रिभुवनशिखरेण मही, विस्तारे अष्ट योजनान्युदयस्थिरा ।
धवलछत्राकारा मनोहरा ईषत्प्रभारा ।।६४९।।

टीका – सो जीव ऊर्ध्वगमन स्वभाव करि तीन लोक के शिखर विषैं ईषत्प्राग्भार है नाम जाका असी जो आठवी पृथ्वी, ताके ऊपरि एक समय मात्र काल करि जाइ तनुवातवलय का अंत विषैं विराजमान हो है । कैसी है वह पृथ्वी ? मनुष्य पृथ्वी के समान पैंतालीस लाख योजन चौडी गोल आकार है । बहुरि आठ योजन ऊंची है । बहुरि स्थिर है । बहुरि श्वेत छत्र के आकारि है, सो श्वेत वर्ण है । बीचि में मोटी छेहडैं पतली असी है । बहुरि मनोहर है । यद्यपि ईषत्प्राग्भार नामा पृथ्वी घनोदधि-वातवलय पर्यंत है, परंतु इहां तिस पृथ्वी के बीचि पाइए है जो सिद्धशिला, ताकी अपेक्षा असा प्ररूपण कीया है । धर्मास्तिकाय के अभाव तैं तहां तैं ऊपरि गमन न हो है । तहां ही चरम शरीर तैं किंचित् ऊन आकार रूप जीव द्रव्य अनंत ज्ञानानंदमय विराजै हैं ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

पुव्वण्हस्स तिजोगो, संतो खीणो य पढमसुक्कं तु ।
बिदियं सुक्कं खीणो इगिजोगो झायदे झाणी ॥६५०॥

पूर्वज्ञस्य त्रियोगः शांतः क्षीणश्च प्रथमशुक्लं तु ।
द्वितीयं शुक्लं क्षीण एकयोगो ध्यायति ध्यानी ॥६५०॥

टीका – शुक्लध्यान च्यारि प्रकार है, तहां सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति, व्युरतक्रिया-निर्वृति ए दोऊ तो सयोगी अयोगी केवली के हो हैं, ते पूर्वे कहे । अर दोय शुक्लध्यान कौन कैं हो है ? सो गाथा में वर्णन न कीया था, सो अब इहां वर्णन करिए है—

जो महामुनि पूर्वनि का ज्ञाता, तीन योगनि का धारक, उपशम श्रेणी वा क्षपक श्रेणीवर्ती सो पृथक्त्व वितर्क विचार नामा पहला शुक्लध्यान कौं ध्यावैं है । बहुरि दूसरे शुक्लध्यान कौं क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती तीन योगनि विषैं एक योग का धारक होइ, सो ध्यावै है । इहां पृथक्त्व कहिए जुदा जुदा वितर्क कहिए भावश्रुतज्ञान, ताकरि विचार कहिए अर्थव्यंजन योगनि का संक्रमण, तहां अर्थ नें ध्यावने योग्य द्रव्य वा गुण वा पर्याय, तिनका अर व्यंजन श्रुत के शब्द, तिनका अर योग मन वा वचन वा काय, तिनिका जो पलटना, सो विचार है । असैं जिस ध्यान विषैं प्रवृत्ति होइ, सो पृथक्त्व वितर्क विचार जानना । बहुरि जहां एकत्व कहिए एकता लीएं वितर्क कहिए भावश्रुत, ताकरि अविचार कहिए जिस अर्थ कौं जिस श्रुत शब्द रूप जिस योग की प्रवृत्ति लीएं ध्यावै, ताकौं तैसें ही ध्यावै पलटना न होइ, असैं एकत्व वितर्क अविचार ध्यान विषैं प्रवृत्ति जाननी ।

सो मे तिहुणमहियो, सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो ।
दिसदु वरणाणदंसणचरित्तसुद्धिं समाहिं च ॥६५१॥

स मे त्रिभुवनमहितः, सिद्धः बुद्धो निरंजनो नित्यः ।
दिशतु वरज्ञानदर्शनचारित्रशुद्धिं समाधिं च ॥६५१॥

टीका – सो सिद्ध भगवान त्रिभुवन करि पूजित अर बुद्ध कहिए सब का ज्ञाता अर निरंजन कहिए कर्म रहित अर नित्य कहिए विनाश रहित असा है, सो मुझको उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन चारित्र की शुद्धता अर समाधि कहिए अनुभव दशा वा सन्यास मरण, ताकौं द्यो प्राप्त करो । इहां सिद्धनि कैं जो मोक्ष अवस्था भई, ताकौं स्वरूप सर्व कर्म का सर्वथा नाश तैं संपूर्ण आतमस्वरूप की प्राप्ति रूप जानना । बहुरि अन्यमति अन्यथा कहै है, सो न श्रद्धान करना । तहां—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

बौद्ध तौ कहै जैसें दीपक का निर्वाण कहिए बुझना, तैसें आत्मा का स्कंध संतान का नाश होने तें जो अभाव होना, सो निर्वाण है, ताकौं कहिए है–

जहां मूल वस्तु का नाश होइ तौ ताके अर्थि उपाय काहे कौं करिए ? ज्ञानी तौ अपूर्व लाभ के अर्थि उपाय करै तातैं अभाव मात्र मोक्ष कहना युक्त नाहीं ।

बहुरि योगमतवाला कहै है–बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार ए नव आत्मा के गुण हैं, तिनका नाश, सोइ मोक्ष है । ताकौं भी तिस पूर्वोक्त वचन ही करि निराकरण-समाधान कीया । जहां विशेषरूप गुणनि का अभाव भया, तहां आत्मवस्तु का अभाव आया, सो बनै नाहीं ।

बहुरि सांख्यमतवाला कहै हैं–दूरी भया है कार्य-कारण संबंध जाका असा जो आत्मा, ताकैं बहुत सूता पुरुष की ज्यो अव्यक्त चैतन्यता रूप होना, सो निर्वाण है । ताका भी पूर्वोक्त वचन करि निराकरण भया । इहां भी अपना चैतन्य गुण था, सो उलटा अव्यक्त भया । असैं नाना प्रकार अन्यथा प्ररूपै हैं । तिनिका निराकरण जैन के न्यायशास्त्रनि मैं कीया है, सो जानना ।

मोक्ष अवस्था कौं प्राप्त सिद्ध भगवान हैं, ते निरंतर अनंत अतींद्रिय आनंद कौं अनुभवैं है । जातैं इंद्रिय मन करि किंचित् जानना होइ अर किछू निराकुलता होइ, तब ही आत्मा आप कौं सुखी मानै है । तौ जहां सर्व का जानना भया अर सर्वथा निराकुलपनां भया तौ तहां परम सुख कैसे न हो है ? तीन लोक के तीन काल संबंधी पुण्यवंत जीवनि का सुख तैं भी अनंत गुणा सुख सिद्धनि कैं एक समय विषैं हो है । जातैं संसार विषैं सुख असैं हैं जैसें महारोगी किंचित् रोग की हीनता भएं आप कौ सुखी मानै अर सिद्धनि कैं सुख असैं है जैसें रोग रहित निराकुल पुरुष सहज ही सुखी है । असैं अनंत सुख बिराजमान सम्यक्त्वादि अष्ट गुण सहित लोकाग्र विषैं विराजमान सिद्ध भगवान हैं, सो कल्याण करो ।

या प्रकार बाहुबलि नामा मंत्री करि पूजित जो माधवचंद्र नामा आचार्य, ताकरि यतिवृषभ नामा आचार्य जाका मूल कर्ता, वीरसेन आचार्य टीका कर्ता असा धवल, जयधवल शास्त्र ताके अनुसारि क्षपणासार ग्रंथ कीया, ताके अनुसारि इहां क्षपणा का वर्णन रूप जे लब्धिसार की गाथा, तिनका व्याख्यान कीया ।

अब आचार्य लब्धिसार शास्त्र की समाप्ति करने विषैं अपना नाम प्रगट करै हैं—

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

वीरिंदणंदिवच्छेणप्पसुदेणभयणंदिसिस्सेण ।
दंसणचरित्तलद्धी, सुसूयिया णेमिचंदेण ।।६५२।।

वीरेंद्रनंदिवत्सेनाल्पश्रुतेनाभयनंदिशिष्येण ।
दर्शनचारित्रलब्धिः सुसूत्रिता नेमिचन्द्रेण ।।६५२।।

टीका – नेमिचंद्र आचार्य करि इस लब्धिसार नाम शास्त्र विषैं दर्शन चारित्र की लब्धि, सो सुसूत्रिता कहिए भले प्रकार कही है । कैसा है नेमिचंद्र, वीरनंदि अर इंद्रनंदि नामा आचार्य तिनिका वत्स है । ज्ञानदानकरि पोष्या है । बहुरि अभयनंदि नामा आचार्य, तिनिका शिष्य है ।

अब आचार्य अपने गुरु कौं नमस्कार रूप अंत मंगल करै हैं—

जस्स य पायपसाए, णणंतसंसारजलहिमुत्तिण्णो ।
वीरिंदणंदिवच्छो, णमामि तं अभयणंदिगुरुं ।।६५३।।

यस्य च पादप्रसादेनानंतसंसारजलधिमुत्तीर्णः ।
वीरेंद्रनंदिवत्सो, नमामि तमभयनंदिगुरुम् ।।६५३।।

टीका – वीरनंदि अर इंद्रनंदि का वत्स जो मैं नेमिचंद्र आचार्य, सो जाके चरणनि का प्रसाद करि अनंत संसार समुद्रतैं पार भया, तिस अभयनंदि नामा गुरु कौं मैं नमस्कार करौं हौं ।

ऐसैं लब्धिसार नामा शास्त्र के जे गाथासूत्र, तिनका अर्थ उपशम श्रेणी का व्याख्यान पर्यंत संस्कृत टीका के अनुसारि अर क्षपणा का व्याख्यान क्षपणासार के अनुसारि इहां अपनी बुद्धि माफिक मैं कीया है । इहां जो चुक होइ, ताकौं सम्यग्ज्ञानी जीव शुद्ध करियो । बहुरि इस शास्त्र का अभ्यास तैं दर्शन चारित्र की लब्धि का स्वरूप जानि आप स्वरूप श्रद्धान आचरण तैं सम्यग्दर्शन, चारित्र का धारक होइ केवलज्ञान कौं पाइ सर्व कर्म कौं नाश कर उत्कृष्ट ज्ञानानंदमय कृतकृत्य अवस्थारूप सिद्ध पद कौं प्राप्त होइ ।

दोहा—सम्यग्दर्शन चरण के, कारण कर्ता कर्म ।
फल भोक्ता मम देहु सब, अपनौ अपनौ धर्म ।।१।।

चौपाई

मंगल तत्त्वनि कौ श्रद्धान, मंगल है फुनि सम्यग्ज्ञान ।
मंगल शुद्ध चरित्र अनूप इनके धारक मंगलरूप ।।१।।

इति श्रीलब्धिसार-क्षपणासारव्याख्यानं संपूर्ण ।

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

गाथा-सूची

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
अ		
अकसाय-कसायाणं	४६५	३७५
अजहण्णमणुक्कस्स	३०	११२
अजहण्णमणु	३२	११३
अट्ठ-अपुण्णपदेसु वि	१२	१०४
अडवस्सादो उवरि	१३०	१६५
अडवस्से उवरिमि	१३२	१६६
अडवस्से य ठिदीदो	१३६	१७१
अडवस्से संपहियं	१३५	१७०
अडवस्से संपहियं	१३३	१६७
अणियट्टी अद्धाए	११३	१५५
अणियट्टिकरणपढमे	११८	१५६
अणियट्टिस्स य पढमे	४११	३१८
अणियट्टिस्स य पढमे	२२६	२१७
अणियट्टी संखगुणो	६५	१४६
अणियट्टी संखेज्जा	११५	१५७
अणुभयगाणंतरजं	२४७	२२८
अणुसमओवट्टणयं	१४८	१७८
अंथिरसुभगसअरदी	१५	१०५
अद्धाखए पडंतो	३१०	२६८
अपुव्वादिवग्गणाणं	६३४	४९२
अमणं ठिदिसत्तादो	११६	१५६
अवगयवेदो संतो	६०८	४७३
अवर-वरदेसलद्धी	१८४	१९३
अवराजेट्ठाबाहा	३७६	३०१
अवरादो चरिमो त्ति	२६०	२५५
अवरादो वरमहियं	३६५	२९६
अवरा मिच्छतिअद्धा	१८०	१९१
अवरे देसट्ठाणे	१८५	१९४
अवरे बहुगं देदि हु	२८८	२५३
अवरे विरदट्ठाणे	१९२	१९९
असुहाणं पयडीणं	८०	१३८
असुहाणं पयडीणं	४०९	३१७
असुहाणं रसखंड-	२२३	२१४
अहवावलिगदवरठिदि	६५	१२६
आ		
आउगवज्जाणं ठिदि-	७८	१३७
आउगवज्जाणं ठिदि-	४०६	३१६
आऊ पडिणिरदुगे	११	१०३
आणुपुव्वीसंकमणं	२४८	२२९
आदिमकरणद्धाए	४०	११६
आदिमकरणद्धाए	४२	११६
आदिमकरणद्धाए	३९६	३१२
आदिमलद्धिभवो जो	५	१०१
आदोल्लस्स य चरिमे	४८३	३७०
आदोल्लस्स य पढमे	४८२	३६९
आदोल्लस्स य पढमे	४८४	३७०
आयादो वयमहियं	५२५	४०८
आवरणदुगाण खये	६११	४७६
इ		
इति संढं संकामिय	४४३	३३७
उ		
उक्कस्सट्ठिदि बंधिय	५९	१२५
उक्कस्सट्ठिदिबंधे	६६	१३०
उक्कस्सट्ठिदिबंधो	५६	१२२
उक्किण्णे अवसाणे	५९७	४६६
उक्कीरिदं तु दव्वे	४३५	३३२
उदइल्लाणं उदये	२९	११२
उदधिसहस्सपुधत्तं	४१४	३२०
उदधिसहस्सपुधत्तं	४२१	३२४
उदयगदसंगहस्स य	५२७	४११
उदयबहिंओक्कट्टि य	१४९	१७९
उदयाणमावलिम्हिय	६८	१३२
उदयाणं उदयादो	३१२	२६९
उदयादिअवट्ठिदगा	३०५	२६५

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
उदयादिगलिदसेसा	१४३	१७५
उदयावलिस्स दव्वं	७१	१३३
उदयावलिस्स बाहिं	२२४	२१६
उदयिल्लाणंतरजं	२४६	२२७
उदये चउदसघादी	२८	११०
उवणेउ मंगलं	१६७	१८६
उवरि समं उक्कीरइ	२४३	२२६
उवरि उदयट्ठाणा	५१७	४००
उवसमचरियाहिमुहा	२०५	२०६
उवसमसम्मत्तद्धा	१००	१४८
उवसमसम्मत्तुवरिं	१०३	१५०
उवसमसेढीदो पुण	३५१	२८६
उवसामगो य सव्वो	९९	१४८
उवसामणा णिधत्ती	३४२	२८५
उवसंतद्धा दुगुणा	३७४	२९९
उवसंतपढमसमये	३०३	२६४
उवसंते पडिवडिदे	३०८	२६७
उवहिसहस्सं तु	११६	१५७
ए		
एयंदियट्ठिदीदो	२३०	२१९
एइंदियट्ठिदीदो	४१७	३२१
एयंदियट्ठिदिखंडय--	४०८	३१७
एक्केक्कयट्ठिदिखंडय	७९	१३७
एक्कं च ट्ठिदिविसेसं	४०४	३१५
एत्तो उवरिं विरदे	१९१	१९८
एत्तो करेदि किट्टि	६३५	४९३
एत्तोसमऊणावलि-	५७	१२३
एत्तो सुहुमंतोत्तिय	५९६	४६४
एत्था पुव्वविहाणं	६३९	४९५
एदेणप्पाबहुग–	५९३	४६३
एदेहिं विहीणाणं	२६	१०९
एयट्ठिदिखंडुक्क	८५	१४०
एय णावुं सयवेदं	२५१	२३०
एवं पमत्तमियर	२१९	२१३
एवं पल्लसंखं पल्लं	३३८	२८३
एवं पल्ले जादे	२३२	२२०
एवं पल्लं जादा	३४०	२८५
एवंविहसंकमणं	७६	१३६
एवं संखेज्जसु ट्ठिदि–	२५८	२४८
ओ		
ओकट्टिदइगिभागं	५८४	४५६
ओकड्डदि पडिसमयं	६२७	४८५
ओकड्डिदइगिभागे	६९	१३२
ओकड्डिदं तु देदि	४७०	३५८
ओकड्डिदम्हि य देदि	७३	१३४
ओक्कड्डिदइगिभाग	१०४	१५०
ओक्कड्डिदइगिभागं	२८४	२४७
ओक्कड्डिदि जे अंसे	४०३	३१५
ओक्कड्डिदबहुभागे	१४२	१७४
ओक्कड्डिददव्वस्स य	४९३	३७४
ओदरगकोहपढमे	३२१	२७६
ओदरगकोहपढमे	३२२	२७७
ओदरगपुरिसपढमे	२२३	२१४
ओदरगमाणपढमे	३१९	२७५
ओदरगमाणपढमे	३२०	२७५
ओदरबादरपढमे	३१६	२७३
ओदरमायापढमे	३१७	२७४
ओदरमायापढमे	३१८	२७४
ओदरसुहमादीए	३१३	२७०
ओदरिय तदो	६७	१३१
ओव्वट्टणा जहण्णा	४०१	३१४
अं		
अंतरकदपढमादो	८७	१४१
अंतरकदपढमादो	२५२	२३०
अंतरकदपढमादो	४६०	३४३
अंतरकदादु छण्णो	२६५	२३७
अंतरकरणादवरिं	२५४	२३१
अंतरकरणुक्कीरण	१७८	१९१
अंतरपढमट्ठिदि त्ति	५८६	४५८
अंतरपढमठिदि त्ति	५८७	४५९
अंतरपढमठिदि त्ति	५८९	४६१
अन्तरपढमट्ठिदि त्तिय	५९०	४६२
अंतरपढमादु कम्मे	२५०	२३०
अंतरपढमे अण्णो	२४४	२२६

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
अंतरपढमं पत्ते	८९	१४३
अंतरहेदुक्कीरिद	२४५	२२७
अंतिमरसखंडुक्की	९३	१४५
अंतिमरसखंडुक्की	१७८	१९१
अंतोकोडाकोडी	७	१०२
अंतोकोडाकोडी	२४	१०८
अंतोकोडाकोडी	९७	१४७
अंतोकोडाकोडी	२२७	२१८
अंतोकोडाकोडी	४०७	३१६
अंतोमुहूत्तकाला	३४	११४
अंतोमुहुत्तकाले	१६९	१८७
अंतोमुहुत्तकालं	११७	१५८
अंतोमुहुत्तमद्धं	१०२	१४९
अंतोमुहुत्तमाऊ	६२०	४८१
अंतोमुहुत्तमेत्तं	२१०	२०८
अंतोमुहुत्तमेत्तं	३००	२६३
अंतोमुहुत्तमेत्तं	३०४	२६५
क		
कदकरणसम्मखवणा	१५४	१८१
कम्मकरणविणट्ठादो	३३६	२८३
कम्ममलपडलसत्ती	४	१००
करणपढमादु जावय	१४७	१७७
करणे अधापवत्ते	३४६	२८७
किट्टिगजोगीझाणं	६४३	४९७
किट्टिं सुहुमादीदो	२९९	२६२
किट्टीकरणद्धहिया	३६९	२९७
किट्टीकरणद्धाए	२९२	२५६
किट्टीकरणद्धाए	५०६	३९४
किट्टीकरणे चरिमे	६४०	४९६
किट्टीयद्धाचरिमे	२९३	२५७
किट्टीयो इगिफड्ढय	४९८	३७५
किट्टीवेगदपढमे	५१४	३९८
किट्टीवेगदपढमे	५७५	४५१
कोहदुगं संजलणग	२७०	२४०
कोहदुसेसेणवहिद	४७४	३६२
कोहपढमं पमाणो	५५६	४३५

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
कोहस्स पढमकिट्टी	५६७	४४१
कोहस्स पढमकिट्टी	५४७	४३२
कोहस्स पढमकिटटी	५३०	४१२
कोहस्स पढमसंग्रह	५१६	४००
कोहस्स पढमट्ठिदी	२७१	२४०
कोहस्स य जे पढमे	५३७	४२७
कोहस्स य पढमठिदी	६०४	४७०
कोहस्स य पढमादो	५७७	४५३
कोहस्स य माणस्स य	४९६	३७८
कोहस्स विदियकिट्टी	५४४	४३०
कोहस्स विदियसंगह	५४५	४३०
कोहादि किट्टियादि	५३८	४२७
कोहादिकिट्टिवेदग	५३६	४२६
कोहादीणं सग-सग	४९२	३७४
कोहादीणमपुव्वं	४७१	३६०
कोहोवसामणद्धा	३७३	२९९
कोहं च छुहदि माणे	४३९	३३४
कंडयगुणचरिमठिदी	५८८	४६०
ख		
खयउवसमियविसोही	३	१००
खवगसुहुमस्स चरिमे	२०४	२०३
खीणे घादिचउक्के	६१०	४७६
खुज्जद्धं णाराए	१४	१०५
ग		
गणणादेयपदेसे	४६७	३५१
गुणसेढि अणंतगुणे	४५४	३४१
गुणसेढिअसंखेज्जा	४४२	३३६
गुणसेढिअंतरट्ठिदि	५८३	४५६
गुणसेढिसंखभीणा	१३९	१७३
गुणसेढीए सीसं	८६	१४१
गुणसेढी गुणसंकम	३७	११५
गुणसेढी गुणसंकम	५३	१२१
गुणसेढी गुणसंकम	३९३	३११
गुणसेढी गुणसंकम	३९७	३१३
गुणसेढीदीहत्तं	३९८	३१३
गुणसेढीदीहत्तय	५५	१२२
गुणसेढीसत्थेदर	३१४	२७०

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
गुणियचउरादिखंडे	५८५	४५७
घ		
घादयदव्वादो पुण	५२६	४०८
घादितियाणं णियमा	३२८	२७६
घादितियाणं संखं	५०८	३९५
घादितियाणं बंधो	५४०	४२८
घादितियाणं बंधो	५५२	४३४
घादितियाणं सत्तं	५५३	४३४
घादिलिसादं मिच्छं	२०	१०७
घादीणं मुहुत्तंतं	६०१	४६८
च		
चडसमयेसु रसस्स य	६२५	४८४
चडपणमोहचरिमं	३८५	३०३
चडपडअपुव्वपढमो	३८९	३०५
चडपडणमोहपढमं	३८४	३०३
चडणे णामदुगाणं	३८६	३०४
चडणोदरकालादो	३४७	२८८
चडबादरलोहस्स य	३७०	२९८
चडमाणस्स य णामा	३८०	३०१
चडमाणअपुव्वस्स य	३९१	३०६
चडमायमाणकोहो	३८२	३०२
चडमायावेदद्धा	३७२	२९८
चदुगदिमिच्छो सण्णी	२	९९
चलतदियअवरबंधं	३८१	३०२
चरिमणिसेओक्कड्डे	६०	१२५
चरिमाबाहा तत्तो	१८१	१९१
चरिमे खंडे पडिदे	६०३	४६९
चरिमे पढमं विग्घं	६०९	४७४
चरिमे फालिं दिण्णे	१२४	१६१
चरिमे सव्वे खंडा	४७	११८
चरिमं फालिं देदि दु	१४४	१७६
छ		
छक्कम्मे संछुद्धे	४९०	३७३
छछव्वणपपत्थो	६	१०१
ज		
जगपूरम्हि एक्का	६२६	
जत्तोपाये होदि दु	३३७	२८३
जत्तोपाये होदि हु	१५५	१८१
जत्थ असंखेज्जाणं	१२३	१६१
जदि गोउच्छविसेसं	१३७	१७१
जदि मरदि सासणो सो	३४९	२८९
जदि वि असंखेज्जाणं	१५१	१७९
जदि संकिलेसजुत्तो	१५०	१७९
जदि होदि गुणिदकम्मो	१२७	१६३
जम्हा उवरिमभावा	५१	१२०
जम्हा हेट्ठिमभावा	३५	११४
जस्स कसायस्स जं	५४८	४५६
जस्स य पायपसाए	६५३	५०३
जस्सुदयेणारूढो	३५४	२९१
जस्सुदयेणारूढो	३५५	२९१
जस्सुदयेण य चडिदो	३६०	२९४
जावंतरस्स दुचरिम	८	१०२
जेट्ठवरिट्ठिदिबंधे	२१४	२११
जे हीणा अवतारे	४७३	३६१
जोगिस्स सेसकाले	६२३	४८२
जोगिस्स सेसकालं	६४४	४९७
जं णोकसायविग्घ	६१४	४७७
ठ		
ठिदिखंडपुधत्तगदे	४५१	३३९
ठिदिखंडयं तु खइये	२२२	२१४
ठिदिखंडयं तु चरिमं	३८८	३०४
ठिदिखंडसहस्सगदे	४३३	३३१
ठिदिखंडाणुक्कीरण	१३४	१७०
ठिदिबंधपुधत्तगदे	२२९	२१८
ठिदिबंधपुधत्तगदे	४३०	३२९
ठिदिबंधपुधत्तगदे	४३१	३३०
ठिदिबंधपुधत्तगदे	४५०	३३९
ठिदिबंधसहस्सगदे	२३९	२२४
ठिदिबंधसहस्सगदे	४१५	३२०
ठिदिबंधसहस्सगदे	४१६	३२१
ठिदिबंधसहस्सगदे	४२९	३२८
ठिदिबंधसहस्सगदे	४४०	३३५
ठिदिबंधसहस्सपदे	२८८	२५३
ठिदिबंधाणोसरण	२५७	२३३

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
ठिदिबंधोसरणं	५४	१२१
ठिदिरसघादोणत्थि	१७५	१९०
ठिदिसत्तमघादीणं	४८९	३७२
ठिदिसत्तमपुव्वदुगे	२०८	२०७
ठिदिसंतं घादीणं	४५८	३४२
ण		
णट्ठा य रायदोसा	६१६	४७८
णरतिरियक्खवणराउग	३५०	२८९
णवलोकसायविग्घ	६१२	४७७
णरतिरियाणं ओघो	१६	१०५
णरतिरिये तिरियणरे	१८७	१९५
णवफड्ढयाण करणे	४७८	३६६
णवरि असंखाणंतिम	२८९	२५५
णवरि य पुंवेदस्स य	२६२	२३५
णवरि य णामदुणाणं	३२६	२७९
णवरि समुग्घादगदे	६१९	४७९
णामदुगत्रेयणीय	२६१	२३४
णामदुगे वेयणीये	५९८	४६७
णाममधुवोदयबारस	३०६	२६६
णादेसि परट्ठाणिय	५२४	४०७
णिक्खेवमदित्थावण	५६	१२२
णिट्ठवगो तट्ठाणे	१११	१५४
त		
तक्कालवज्जमाणे	६४	१२७
तक्काले ठिदिसंतं	४१८	३२१
तक्काले मोहणियं	३३४	२८२
तक्काले वेयणियं	२३७	२२३
तक्काले वेयणियं	४२६	३२६
तग्गुणसेढो अहिया	३६८	२९७
तच्चरिमे ठिदिबंधो	४१	११६
तच्चरिमे पुबंधो	२६३	२३६
तट्ठाणे ठिदिसंतो	९८	१४८
तत्तक्काले दिस्सं	१३८	१७२
तत्तो अणियाट्टिस्स य	३४१	२८५
तत्तो अभव्वजोग्गं	३३	११३
तत्तो उदहिसदस्स य	१०	१०३
तत्तोणुभयट्ठाणे	१९६	२०१
तत्तो तियरविहिणा	२०६	२०६
तत्तोदित्थावणगं	६२	१२६
तत्तो पडिवज्जनया	१९५	२०१
तत्तो पढमो अहियो	९४	१४६
तत्तो य सुहुमसंजम	१९७	२०२
तत्तो सुहुमं गच्छदि	५७९	४५४
तत्था असंखेज्जगुणं	१४१	१७४
तत्थ गुणसेढिकरणं	६४५	४९८
तत्थ य पडिवादगया	१८६	१९४
तत्थ य पडिवादगया	१९३	२००
तदियगमायाचरिमे	५६१	४३८
तदियस्स माणचरिमे	५५८	४३७
तप्पढमट्ठिदिसत्तं	३९०	३०५
तम्मामावेदद्धा	३७१	२९८
तस्सम्मत्तद्धाए	३४८	२८८
तस्साणुपुव्विसंकम	४३७	३३३
ताए अधापवत्त	४३	११७
ताणं पुण ठिदिसंतं	५८१	४५५
ताहे अपुव्बपड्ढय	४७६	३६४
ताहे असंखगुणियं	४४७	३३८
ताहे कोहुच्छिट्ठं	५१२	३९६
ताहे चरिमसवेदो	३६३	२९५
ताहे दव्ववहारो	४७५	३६४
ताहे मोहो थोवो	४४६	३३८
ताहे संखसहस्सं	४४५	३३७
ताहे संजलणाणं	४६३	३४५
ताहे संजलणाणं	४६६	३५०
ताहे संजलणाणं	५३९	४२७
ताहे संजलणाणं	५५१	४३४
तिकरणबंधासरणं	२२०	२१३
तिकिरणमुभयोसरणं	३९२	३०७
तिण्हं घादीणं ठिदि	५९९	४६७
तिरियदुगुज्जोवो वि य	१३	१०४
तिहुवणसिहरेण मही	६४९	५००
तीदे बंधसहस्से	२३८	२२३
तीदे बंधसहस्से	४२८	३२८
तीसियचउण्ह पढमो	३८७	३०४

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
ते चेव चोदसपदा	१७	१०६
ते चेवेक्कारपदा	१९	१०७
तेण परं हायदि वा	२१८	२१३
तेत्तियमेत्ते बंधे	१३६	१७१
तेत्तियमेत्ते बंधे	२३४	२२२
तेत्तियमेत्ते बंधे	२३५	२२२
तेत्तियमेते बंधे	४२३	३२५
तेत्तियमेते बंधे	४२४	३२५
तेत्तियमेते बंधे	४२५	३२६
ते तेरसविदियेण य	१८	१०६
तेसिं रसवेदमव	३०७	२६६
तो देसघादिकरणा	२४१	२२५
तं णरदुगुच्चहीणं	२३	१०८
तं सुरचउक्कहीणं	२२	१०८
थ		
थीअणुवसमे पढमे	३२७	२७९
थीअद्धासंखेज्जा	४४४	३३७
थीउदयस्स य एवं	३६१	२९४
थीउवसमिदोणंतर	२६०	२३४
थीपढमट्ठिदिमेत्ता	६०७	४७३
थीयद्धासंखेज्जदि	२५९	२३४
द		
दव्वपढमे सेसे	५७१	४४७
दव्वं असंखगुणि यं	१७४	१८९
दव्वं पढमे समये	५७०	४४२
दिज्जदि अणंतभागे	५३३	४१३
दुतिआउतित्थाहार	३१	११२
दुविहा चरित्तलद्धी	१६८	१८७
दूरावकिट्टिपढमं	१५९	१८२
देवतसवण्णाअगुरु	२१	१०७
देवेसु देवमणुए	१४६	१७७
देसो समये समये	१७६	१९०
दोण्हं तिण्हं चउण्हं	३५३	२९०
दंसणमोहक्खवणा	११०	१५४
दंसणमोहणाणं	१६३	१८२
दंसणमोहुवसमणं	२०७	२०७
दंसणमोहे खविदे	१६५	१८५

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
प		
पडचरिमे गहणादी	१९८	२०३
पडणजहण्णट्ठिदि	३६६	२९६
पडणस्स असंखाणं	३७५	२९९
पडणस्स तस्स दुगुणं	३८३	३०२
पडणाणियट्टियद्धा	३७६	३००
पडिखंडगपडिणामा	४५	११८
पडिपदमणंतगुणिदा	५०९	३९५
पडिवज्जहण्णंदुगं	२०१	२०३
पडिवडवरगुण सेढी	३७७	३००
पडिवादगया मिच्छे	१९४	२००
पडिवादादितिदयं	१९९	२०३
पडिवाददुगवरवरं	१८८	१९६
पडिसमयगपरिणामा	४४	११७
पडिसमयसंखगुणा	२८५	२४८
पडिसमयसंखगुणं	४००	३१४
पडिसमयसंखगुणं	७६	१३६
पडिसमयसंखगुणं	५०२	३८४
पडिसमयसंखज्जदि	५२३	४०७
पडिसमयं असुहाणं	४५२	३४०
पडिसमयं अहिगदिणा	५२१	४०३
पडिसमयं ओक्कड्डिदि	३९९	३१३
पढमगमायाचरिमे	५५९	४३७
पढमगुणसेढिसीसं	५९१	४६२
पढमट्ठिदिअद्धंते	२८२	२४५
पढमट्ठिदिखंडुक्की	१७९	१९१
पढमट्ठिदियावलि	८८	१४२
पढमट्ठिदिसीसादो	२७३	२४१
पढमस्स संगहस्स य	५१५	३९९
पढमाणुभागे खंडे	४८१	३६९
पढमादिसु दिज्जकमं	४७९	३६७
पढमादिसु दिस्सकमं	४८०	३६८
पढमादिसु दिस्सकमं	५७३	४५०
पढमादिसंगहाओ	४९६	३७८
पढमादिसंगहाणं	५४३	४२९
पढमाक्षे गुणसंकम	९१	१४४
पढमापुव्वजहण्णं	९६	१४७

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
पढमापुव्वरसादो	८२	१३९
पढमावेदे संजलणा	२६७	२३८
पढमावेदो तिविहं	२६८	२३९
पढमे अवरो पल्लो	१९३	२००
पढमे असंखभागं	६४१	४९६
पढमे करणे अवरा	४८	११९
पढमे करणे पढमा	४९	१२०
पढमे चरिमे समये	४६	११८
पढमे चरिमे समये	२९७	२५९
पढमे छट्ठे चरिमे	२२५	२१७
पढमे छट्ठे चरिमे	४१०	३१८
पढमे सव्वे विदिये	२७	१०९
पढमो अधापवत्तो	३४३	२८६
पढमो विदिये तदिये	५४६	४३१
पढमं अवरवट्ठिदि	७७	१३६
पढमं वि विदियकरणं	५०	१२०
पढमाणुभागखंडे	४८१	३६९
परिहारस्स जहण्णं	२०२	२०३
पलिदोवमसंतादो	१६०	१८२
पलिदोवमसंतादो	१६१	१८२
पल्लट्ठिदिदो उवरिं	१२०	१६०
पल्लस्स संखभागो	११४	१५६
पल्लस्स संखभागं	३९	११६
पल्लस्स संखभागं	१२१	१६०
पल्लस्स संखभागं	१८२	१९२
पल्लस्स संखभागं	२३१	२१९
पल्लस्स संखभागं	३९५	३१२
पल्लस्स संखभागं	४१३	३१९
पल्लस्स संखभागं	४१९	३२२
पुणरवि मदिपरिभोगं	२४०	२२४
पुणरवि मदिपरिभोगं	४३२	३३०
पुरिसस्स उत्तणवकं	२६६	२३७
पुरिसस्स य पढमट्ठिदि	४५९	३४२
पुरिसस्स य पढमट्ठिदी	२६४	२३६
पुरिसादीणुच्छिट्ठं	३०१	२६३
पुरिसादो लोहगयं	३०२	२६४
पुरिसे दु अजुसंते	३१५	२७२
पुरिसोदयेण चढिद	६०६	४७२
पुव्वण्हस्त तिजोगो	६५०	५०१
पुव्वाण पड्डयाणं	४६८	३५३
पुव्वादिम्मि अपुव्वा	५०४	३९३
पुव्वादिवग्गणाणं	६३२	४९०
पुव्वापुव्वप्फड्ढय	५१०	३९५
पुव्विल्लबंधजेट्ठ	५१९	४०२
पुव्वं तिरयणविहिणा	११२	१५५
पुंकोधोदयचलिय	३५२	२९०
पुंकोहस्स य उदये	३६४	२९५
पुसुंजलणिदराणं	३२४	२७८
ब		
बहुठिदिखंडे तीदे	६०१	४६८
बादरपढमे किट्टी	३१५	२७२
बादरपढमे पढमं	४१२	३१९
बादरमणचिउस्सा	६२८	४८६
बादरलोभादिठिदी	२९५	२५८
बाहत्तरिपयडीओ	६४८	४९९
बंधणदव्वादो पुण	५३१	४१३
बंधपीदव्वाणंत्तिम	५२९	४१२
बंधेण होदि उदओ	४४१	३३५
बंधेण होदि उदओ	४५३	३४०
बंधे मोहादिकमं	४२७	३२६
बंधोदएहिं णियमा	४५५	३४१
म		
मज्झिमधणमवहरिदे	७२	१३३
मज्झिमबहुभागुदया	६४२	४९६
माणतियकोहतदिये	५४९	४३२
माणतियाणुदयमहो	६०५	४७१
माणदुगं संजलणग	२७५	२४२
माणस्स य पढमठिदी	२७४	२४२
माणस्स य पढमठिदी	२७६	२४३
माणदितियाणुदये	३५९	२९३
माणादीणहियकमा	४८६	३७०
माणोदयचडपडिदो	३५८	२९२
माणोदयेण चडिदो	३५६	२९२
मायतियादो लोभ	५७६	४५१
मायदुगं संजलण	२७९	२४४

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
मायाए पढमठिदी	२७८	२४४
मायाए पढमठिदी	२८०	२४४
मासपुधत्तं वासा	५६१	४३८
मिच्छणथीणतिसुरचउ	२५	१०६
मिच्छत्तमिस्ससम्म	६०	१४३
मिच्छयदवेसभिण्णे	२००	२०३
मिच्छंतिमठिदिखंडो	१५८	१८२
मिच्छंतं वेदंतो	१०८	१५३
मिच्छस्स चरिमफालिं	१२६	१६२
मिच्छाइट्ठीजीवो	१०६	१५३
मिच्छुच्छिट्ठादुवरिं	११४	१५६
मिच्छे खविदे सम्भदु	१५७	१८२
मिच्छो देसचरित्तं	१७०	१८७
मिच्छो देसचरित्तं	१७१	१८८
मिस्सुच्छिट्ठे समये	१२५	१६२
मिस्सुदये सम्मिस्सं	१०७	१५३
मिस्सदुगचरिमफाली	१२८	१६३
मोहगपल्लासंख	४२२	३२४
मोहस्स असंखेज्जा	३३०	२८०
मोहस्स य ठिदिबंधो	३३६	२८४
मोहं वीसिय तीसिय	३१५	२७२
मोहस्स पल्लबंधे	३४०	२८५
र		
रलखंडड्ढयाओ	४६५	३४६
रसगदपदेसगुणहा	८१	१३८
रसठिदिखंडाणेवं	४८७	३७२
रसठिदिखंड्डक्कीरण	१५३	१८१
रससंतं आगहिदं	४६४	३४५
ल		
लोभस्स तिघादीणं	५८०	४५५
लोभस्स विदियकिट्टिं	५७८	४५४
लोभादी कोहो त्ति य	४६६	३८०
लोभोदएण चडिदो	३५७	२९२
लोयाणमसंखेज्जं	३३३	२८१
लोहस्स अवरकिट्टिग	५००	३८३
लोहस्स अवरकिट्टिग	५०१	३८३
लोहस्स असंकमणं	३३१	२८०
लोहस्स तदियसंगह	५६६	४४०
लोहस्स पढमकिट्टी	५६८	४४१
लोहस्स पढमचरिमे	५६३	४३६
लोहस्स य तदियादो	५७४	४५०
लोहादो कोहादो	५१३	३६७
व		
वस्साणं बत्तीसा	२५१	२३०
वारेक्कारमणंतं	५०५	३६३
विदियकरणस्स पढमे	१६२	१८२
विदियकरणादिमादो	६२	१४५
विदियकरणादिमादो	१५२	१८१
विदियकरणादिसमये	२२१	२१४
विदियकरणादु जावय	१७७	१९१
विदियगमायाचरिमे	५६०	४३८
विदियट्ठिदिस्स दव्वं	२१२	२०६
विदियद्धापरिसेसे	२६४	२५७
विदियद्धा संखेजा	२६१	२५६
विदियद्धे लोभावर	२८३	२४६
विदियस्स माणचरिमे	५५७	४३७
विदियादिसु चउठाणा	५१८	४०१
विदियादिसु समयेसु	२६८	२६१
विदियादिसु समयेसु	५७१	४४७
विदियादिसु समयेसु वि	४७७	३६५
विदियावलिस्स पढमं	१३१	१६५
विवरीयं पडिहण्णादि	३३२	२८१
वीरिंदणंदिवच्छे	६५२	५०३
वेदगजोग्गो मिच्छो	१६०	१९८
वेदज्जादिट्ठिदिए	५५०	४३३
वोलिय बंधावलियं	६३	१२६
स		
सगसगफड्ढएहिं	४७२	३६१
सट्ठाणे आबज्जिद	६२२	४८१
सट्ठाणे तावदीयं	३४५	२८७
सण्णिविसुहमणिपुण्णे	६२६	४८७
सत्तकरणाणि अन्तर	२४८	२२६
सत्तकरणाणि अन्तर	४३६	३३३
सत्तगट्ठिदिबन्धे	६१	१२६

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या	गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
सत्तण्हं पढमट्ठिदि	४४८	३३८	सुहुमंतिमगुणसेढी	३६७	२९७
सत्तण्हं पढमट्ठिदि	४४९	३३९	से काले ओवट्टणु	४६२	३४४
सत्तण्हं पयडीणं	१६४	१८५	से काले किट्टिस्स य	२९६	२५८
सत्तण्हं पयडीणं	१६६	१८५	से काले किट्टीओ	५११	३९६
सत्तण्हं पयडीणं	६१३	४७७	से काले कोहस्स य	५५४	४३५
सत्तण्हं संकामग	४५७	३४२	से काले कोहस्स य	५४१	४२८
सत्थाणमसत्थाणं	३८	११५	से काले जोगिजिणो	६४६	४९९
सत्थाणमसत्थाणं	३६४	३१२	से काले देसवदी	१७३	१८९
समऊणदोण्णि आवलि	४६१	३४३	से काले माणस्स य	५५५	४३५
समए समए भिण्णा	३६	११४	से काले माणस्स य	२७२	२४१
समखंडं सविसेसं	४६९	३५५	से काले मायाए	२७७	२४३
समयट्ठिदिगो बन्धो	६१७	४७८	से काले लोहस्स य	२८१	२४५
सम्मत्तचरिमखंडे	१४०	१७४	से काले लोहस्स य	५६५	४३९
सम्मत्तपयडिपढम	२११	२०९	से काले सुहुमगुणं	५८१	४५५
सम्मत्तपयडिपढम	२१३	२१०	से काले सो खीणं	६००	४६७
सम्मत्तहिमुहमिच्छो	९	१०२	सेढिपदस्स असंखं भागं	६३४	४९२
सम्मत्तुप्पत्तिं वा	१७२	१८८	सेढिपदस्स असंखे	६३५	४९३
सम्मत्तुप्पत्तीए	२१७	२१२	सेसिगभागे भजिदे	७०	१३३
सम्मदुचरिमे चरिमे	१५५	१८१	सेसाणं पयडीणं	५६४	४३९
सम्मस्स असंखेज्जा	२०९	२०७	सेसाणं वस्साणं	५०७	३९४
सम्मस्स असंखाणं	१२२	१६०	सेसं विसेसहीणं	१२९	१६४
सम्माठिदिज्झीणे	२१६	२१२	सोदीरणाण दव्वं	३०९	२९८
सम्मुदए चलमलिण	१०५	१५२	सो मे तिहुवणमहिओ	५५१	४३४
सम्मे असंखवस्सिय	१५६	१८१	संकमणं तदवत्थं	४५६	३४१
सयलचरित्तं तिविहं	१८९	१९८	संकमदि संगहाणं	५२२	४०४
सामयियदुगजहण्णं	२०३	२०३	संकमदो किट्टीणं	५३४	४१४
सायारे पट्ठवगो	१०१	१४९	संकामेदुक्कड्डि	४०२	३१४
सिद्धे जिणिंदचन्दे	१	९९	संखातीदगुणाणि य	५३२	४१३
सीलेसिं संपत्तो	६४७	४९९	संखेज्जदिमे सेसे	८४	१४०
सुत्तादो तं सम्मं	१०६	१५२	संगहअंतरजाणं	५३५	४१४
सुहुमद्धादो अहिया	५९२	४६३	संगहणे एक्केक्के	४९७	३७८
सुहुमप्पविट्ठसमये	३११	२९९	संघुहदि पुरिसवेदे	४३८	३३४
सुहुमस्स य पढमादो	६३१	४८७	संजदअधापवत्तम	३७८	३००
सुहुमाओ किट्टीओ	५६९	४४१	संजलणचउक्काणं	२९९	२३९
सुहुमाणं किट्टीणं	५९४	४६४	संजलणाणं एक्कं	२४२	२२५
सुहुमे संखसहस्से	५९५	४६४	संजलणाणं एक्कं	४३४	३३१

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या	गाथा	गाथा संख्या	पृष्ठ संख्या
संढामदिमउवसमगे	२५३	२३१	हेट्ठा असंखभागं	५०३	३८४
संढुदयंतरकरणे	३६२	२८४	हेट्ठा दंडस्संतो	६२१	४८१
संढुवसमे पढमे	३२६	२८०	हेट्ठा सीसे उभयग	२८६	२४६
ह			हेट्ठासीस थोवं	२८७	२५३
हयकण्णकरणचरिमे	४८८	३७२	हेट्ठिमणुभयवरादो	५२०	४०२
हेट्ठगकिट्टिप्पहुदिसु	५२८	४१२	होदि असंखेज्जुगुणं	५५	१२२

प्रस्तुत संस्करण की कीमत कम करनेवाले दातारों की सूची

नाम	राशि
१. श्री भगवानजीभाई कचराभाई शाह ट्रस्ट, थाणा	६६५१.००
२. श्री वृन्दावनदासजी भगवानदासजी जैन, मौ	२००१.००
३. श्रीमती सुधा वी. पाटनी, भोपाल	२००० ००
४. श्रीमती पतासीदेवी ध० प० स्व० श्री इन्दरचन्दजी पाटनी, लाडनू	१०००.००
५. श्री सौभाग्यमलजी पाटनी, बम्बई	१०००.००
६. श्रीमती बसन्तीदेवी ध० प० श्री हरकचन्दजी छाबड़ा, बम्बई	५०१.००
७. श्रीमती नारायणीदेवी ध० प० श्री गुलाबचन्दजी रारा, दिल्ली	५०१.००
८. श्री हुलासमलजी कासलीवाल, कलकत्ता	५०१.००
९. श्रीमती सत्यवती जैन ध० प० श्री रतनचन्दजी जैन, दिल्ली	५०१.००
१०. चुन्नीलाल लल्लूभाई पटेल, अहमदाबाद	५०१.००
११. मंजुलाबेन चिमनलाल शाह, बम्बई	५००.००
१२. श्रीमति स्मिता दीपकभाई दोशी, बम्बई	५००.००
१३. श्री डॉ० सुमतिचन्दजी जैन, मलकापुर	५००.००
१४. श्री पं. रखबचन्दजी चपरोत, मन्दसौर	५००.००
१५. श्री रतनलालजी कुचडोदवाले, मन्दसौर	५००.००
१६. श्रीमती तारावती जैन, हरिद्वार	५००.००
१७. श्रीमती रंगूबाई ध० प० श्री उम्मेदमलजी भण्डारी, सायला	३००.००
१८. श्री तखतराजजी जैन एवं परिवार, कलकत्ता	३००.००
१९. श्रीमती अमृतबेन प्रेमजी जैन, मलाड़ बम्बई	२५१.००
२०. श्री शामजी भाणजी शाह, गोरेगांव-बम्बई	२५१.००
२१. श्री धनकुमारजी जैन, जयपुर	२५१.००
२२. फुटकर राशि	१२०८ ००
योग	२३७१८.००

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com